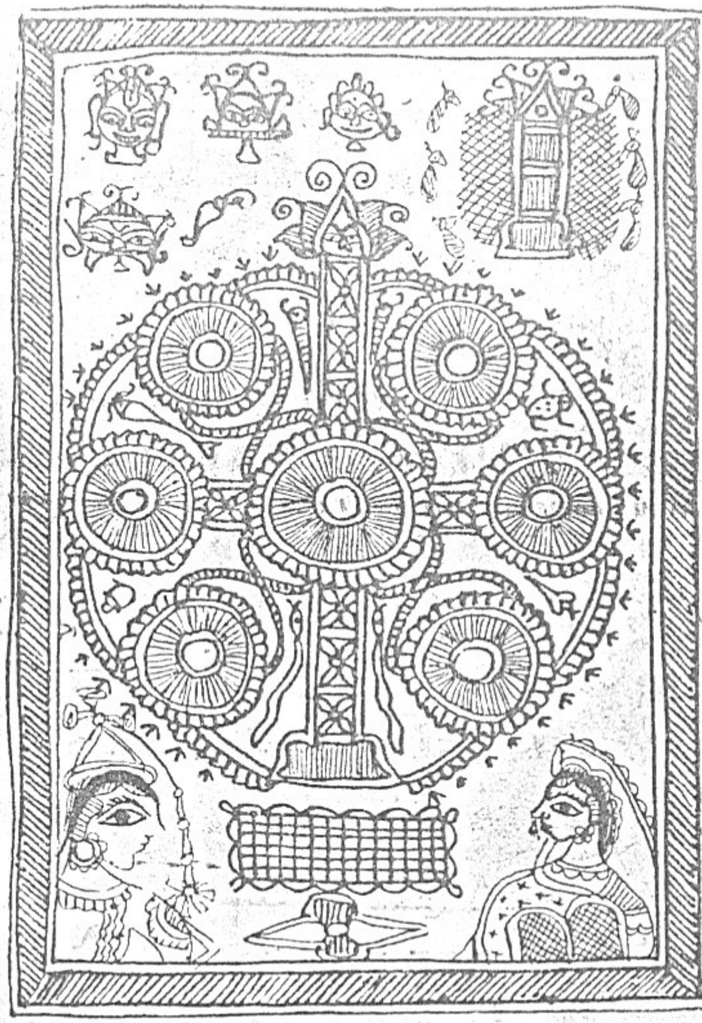


MITHILA ART BY G. DUTTA : RANTI

अग्निजीवी लेखकक अपन वक्तव्य : भाषा आओर चिंतन : प्रो० राधाकृष्ण चौधरी ॥ किछु आग्नेय कविता : जीवकान्त ॥ रामलोचन ठाकुर ॥ शिवशंकर झा 'क्रान्त' ॥ मधुसूदन मणि ॥ डा० उमारमण झा ॥ प्रो० महेन्द्र ॥ नव हस्ताक्षर : धीरेन्द्र 'बच्चन' ॥ देश-देशान्तर : स्वतंत्रता : वाल्ट क्योटे (जर्मन) चौकोनमाक शहीदक नाम : पाब्लो नेरुदा (चीले) ॥ कथा समवेत : मिस लाल : वीरेन्द्र मल्लिक ॥ भूख : कमलेश ॥ चिंतन समवाय : कथा परिसंवाद : प्रभास कुमार चौधरी ॥ सुभाषचन्द्र यादव ॥ घनचक्र ॥ पोथी समीक्षा : जुआयल कनकनी : महेन्द्र ॥ लतमारा : प्रो० धीरेन्द्र 'धीर' ॥

सम्पादक :

वीरेन्द्र मल्लिक ॥

:५+६:

सहयोगी :

सुकान्त सोम ॥

फरवरी+मई १९७४

रामलोचन ठाकुर ॥

सम्पादकीय पता : १९/२/ए, बैकुण्ठ घोष रोड, बालीगंज, कलकत्ता-४२ ॥

कविता मे आत्मरति बेसी अछि, तँ ओ कविता नाड्ट देहक कविता सँ आग अछि आ मोन केँ छुबैत अछि। मन्त्रेश्वर झा जीक कविता बेगारीक काज सन उसट्ठ अछि। निम्बार्क अपन कथा मे वातावरण केँ सजीव करबा मे सफल भेल छथि। चिट्ठी-पत्री स्तंभ बेस चोटगर अछि। हम मानैत छी जे वैयक्तिक पत्र मे कोनो लेखक अपन रचनाक अपेक्षा बेसो वस्तु-निष्ठ भऽ पबैत अछि। मुदा हमर एहि पत्र-सन प्रकाशनार्थ कोनो पत्र मे पत्र लेखक असत्य-मूर्त्ति भऽ जाइत छथि। ओ अपन पत्र केँ खाहे तऽ धूप-दीप बना दैत छथि, खाहे ओकरा प्रतिशोधक एसिड बल्ब बना दैत छथि। मणिपद्म केँ समर्पित कऽ देला सँ ई अंक पवित्र भेल अछि।

खजौली —जीवकान्त

● अगस्त + नवम्बर '७३ अग्निपत्र'क लेल हमर बधाइ। स्तंभ सभक नवीनता एवं सामग्री-चयन सराहनीय लागल। अगिला अंकक लेल हमर वक्तव्य शीघ्र भेटतह। लोकप्रियताक लोभ मे नव लेखन केँ लक्ष्य-च्युत नहि होयबाक चाही। आन भाषा जकाँ मैथिलीयो मे व्यावसायिक एवं लोकप्रिय लेखन हो से नीक, मुदा लेखन केँ बलि दऽ केँ नहि।

चितावालसा, विशाखापट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश) —कीर्तिनारायण मिश्र

● अग्निपत्र (३+४) अंक भेटल। मैथिली साहित्य केँ नव प्रकाश एवं दिशा देब युवा-वर्गक दायित्व थिक। ई अंक देखला सँ ई विश्वास होइछ जे एकरा द्वारा ओहि आशा एवं अकांक्षाक आपूर्ति होएत।

चौसा (सहरसा) —डा० गोपालकृष्ण दास

● अग्निपत्र ३+४) भेटल। व्रजकिशोर वर्मा एवं उदयचन्द्र झा 'विनोद'क वक्तव्य एक्कहि बेरि मे पढ़ि गेलहुँ। व्रजकिशोर वर्मा पंडिताउ साहित्य आ' प्राचीन साहित्यिक मध्य कोनो पार्थक्य नहि रखलन्हि। जखन साहित्यिक कृति मे पांडित्यक प्रतिफलन होइछ, तखन तकर निधनक स्वर स्पष्ट होइछ। मुदा हमरा सन्देह होइछ जे प्राचीन कवि-वर्गक संस्कृत चर्चा अथवा प्राचीनतर अभिव्यक्तिक ज्ञानहिक लक्षण सँ अभियोक्त साहित्यक अदालत मे विवादक उपस्थापन कैलन्हि अछि। पहिने देवतन्त्र छल, राजतंत्र सेहो छल। जौं कविता केँ लोकक आँगन मे लाबऽ चाहैत छी तऽ कवियो सभक लेल मनुष्यत्वक आरोपन करब उचित एवं से यदि सत्य हो तखन मनुष्यक दोष-गुण सभकिछु कवियो मे रहत। भय, भूख आ साधन—सब मनुक्ख मे रहैत अछि। क्यो भय आ भूख (देहक वा खाद्यक) केँ अतिक्रान्त करैछ भोग करैत आ' क्यो जय करैत। उदाहरणस्वरूप सामाजिक सम्मान केँ क्यो भोग करैत अछि आ' क्यो उपेक्षा करैत अछि। मुदा, ताहि सँ एहि दुनू वर्ग मे सँ क्यो असम्मान्य नहि भऽ जाइत छथि। एक तृतीय वर्ग सेहो

अछि, जकरा सामाजिक व्यवस्था भोग वा उपेक्षा कोनो-किछु करबाक सुयोग नहि दैत अछि। जे पुरान साहित्य स्रष्टासभ आइ अपरिचयक कोठरी मे बन्द छथि, ओसभ एहो वर्गक प्रतिनिधि छथि! मुदा प्रथम दुइ वर्गक साहित्यिक प्राचीन किंवा अधुनातन—दुनू युग मे छलाह आ' छथि। सम्मान आ' साहित्य दुनू अन्तर्सम्पर्कित रहितहु पृथक वस्तु थिक। साहित्यक उत्कर्ष साहित्यकार कें सम्मान प्रदान कऽ सकैत अछि आ' सम्मान साहित्य-स्रष्टाक साधना मे बाधा सेहो भऽ सकैत अछि। हेबे करत से हमर कथ्य नहि। तें के कोना मूल प्रवृत्तिक संग निर्वाह कएलक ताहि सँ साहित्यक नामकरण सर्वथा भ्रान्त होएत। देवता आ राजा दुनू एखन बदलल अछि, तन्त्र नहि बदलल। भोग वा इच्छाक निर्वाचन वर्माजी करैत छथि, हमहूँ करब। मुदा काल्हि कोनो समालोचक यदि मणिपद्मक पंकिलताक अभियोग मात्र एहि लेल करय जे ओ शोषक वर्गक प्रतिनिधि अकादमी सँ पुरस्कार ग्रहण (वा उपेक्षा) कयलन्हि, तऽ हम तकर विरोध अवश्य करब।

मनुक्खक लेल आवहमान सँ उत्तराधिकार एकटा समस्याक सृष्टि करैत आयल अछि। जौं अहाँ मे पुरखाक कोनो नीक लक्षण परिलक्षित होअ-ए, तऽ निन्दक कहत—'एहि मे हुनकर कोन कृतित्व, ई तऽ उत्तराधिकारे थिक' अथवा 'ई तऽ एखनधरि पुरखेक वस्तु सब घयने छथि' इत्यादि। जौं ओ लक्षण अहाँ मे नहि रहय, तऽ सएह निन्दक कहत—'अरे जे किछु बाप-पित्तीक अर्जित छलैक, सेहो नहि छन्हि हिनका मे, तऽ—' ई हमरा दुर्भाग्य लगैछ जे मणिपद्म किएक से कहताह। स्वर्ण सएह रहैत अछि, लोक अभिरुचिक अनुसार गहनाक रूप बदलैत अछि। पुष्प ओएह रहैत अछि, युगक परिवर्त्तन सँ क्यो कमल, क्यो पद्म कहैत अछि। शब्द तहिना साहित्यक खजाना मे रहैत अछि, कवि पर निर्भर अछि कोना तकर चयन आ' ग्रन्थन होएत। संस्कृत साहित्य मे कोनो छन्द वा अलंकारक व्यवहार भेल छल, तें तकर दुर्चिन्हीकरण अथवा Stigmatization करब कतबा दूर धरि उचित होएत, से पहिने विचारब आवश्यक होएत। अकवि साहित्य-रसिक कें ओ सब छन्द-अलंकार मे सँ कोनो टा नीक नहि लगैत छन्हि, से नहि। जौं नीक लगैत अछि तऽ ताहि लेल तेहन-पाठक-श्रोता कें अज्ञ कहब मडता होएत। हम सब जे छन्दोबद्ध रूपें छन्द तोड़बाक आन्दोलन कऽ रहल छी, तकर विचार आगामी कालक समालोचक पर छोड़ि दियऽ चाहैत छी। भऽ सकैछ साहित्य सरस्वतीक खजाना मे ई हमरासभक अवदान होयत। भऽ सकैछ नहि होयत। मुदा जे छन्द आ अलंकार खजाना मे अछि (जकर सर्जनमे हमरहि सन्त्रसन कविक एकान्तिक निष्ठा छल, भनहि किछु पंडित तकर अनुपयुक्त व्यवहार कऽ हिय कवि आख्या पयबाक प्रयास कएलन्हि) तकरा उठाकऽ बाहर फेकबाक कोनो साधु प्रयोजन बुझना नहि जाइछ। अपन संग्रहालय हमर सीमित

अछि, तँ किछु नव नोक वस्तुकें ग्रहण करबाक पहिने किछु पुरान वस्तुकें कूड़ा मे फेंकि दैत छी। ई मनुक्खक स्वभाव अछि। एहन विश्वास करब मनुक्खक लेल संभव आ' अनुचित जे प्रकृतिक स्वभाव सेहो तेहने अछि। अहाँ निश्चिन्त भए सृष्टि करू, प्रकृति नव कृतिक हेतु ने पुरान सृष्टिकें विस्मृतिक खाधिमे फेंकत, ने पुरानक लेल नवक अवहेलना करत। एहि अस्वास्थकर चिंता सँ मुक्त होएबाक चाही।

एकदम विपरीत स्वर सुनलहुँ 'विनोद'क निबन्धक नन्दीपाठ मे—'लोक आब सोझ नहि रहल।' जेना लोक पहिने बड़ु सोझ छल। ओम्हर वर्माजी कहैत छथि एखन नवलेखन पछाँ बिना घुरने आसपास सँ आगत वा सम्भाव्य वाधाक अवहेलना करैत तीनटा लक्ष्य पूर्तिक हेतु तीव्र गति सँ आगाँ बाढ़ रहलाह अछि, वरेण्य आग्नेय अविक्रम पथ धय। लोकक प्रति अभिनय करबाक दोषारोपण 'विनोद' भऽ सकैछ; सरस्वतक आँचर तर अपन अभिनयकें नुकौने अतिभाषण भऽ सकैछ, ताहि सं बेसी किछु नहि। ई अभ्यास राजनैतिक सभ मे बेसी आछ। मतदानक पूर्व आ क्षमता प्राप्तिक पहिने जन गुण-गान एवं तकर बाद कोनो अनिच्छित जन संघटन कें टाटक वहब, ई अभ्यास अपनौने लाभ नहि होएत। आरो एकटा बात, नारा निरर्थक तऽ होइते अछि कारण तकर उपयोगिता अछि मात्र उद्देश्यक विज्ञापन करबा मे। अहाँ जे चाहैत छी तकर प्रचारार्थ नारा लगबैत छी। हमरा सबकें देखबाक उचित अछि, हमर प्रार्थनामे कोनो धोखा तऽ नहि रहि गेल अछि, उद्देश्य मे कोनो आविलता तऽ नहि रहि गेल अछि। कमलक एक्कहि चंचु-हिल्लोल मे सब वादकें निरर्थक करबाक प्रयास मे कतबा दूर धरि सार्थकता अछि, तकर विचार पहिने होयब उचित आछ। बी० डी० ओ०, मुखिया आ डीलर हमरा सभक देल नब नाम थिक। पहिने नाम छल जमिन्दार, सुबादार आ' वणिक। ताहू सँ पहिने आओर किछु नाम रहल होएत। हमरा नहि पता अछि। मुदा, लेखक की कहय चाहैत छथि जे 'पेट पूजा' आइ परम सत्य भऽ गेल अछि। सब दिनसँ युद्ध, अनशन, आक्रोश छल। दोसर-दोसर नामसँ ई सब प्रवृत्ति आ' स्थिति छल। लोक 'सब क्षेत्र मे' 'सब दिन' बन्धनहीन होमय चाहैत' आयल अछि। सामाजिक मूल्य, दर्शन आ सामान्य स्वार्थ (Common interest) लोक सबकें समेटि कए एकठाम रखबाक चेष्टा कएलक। 'गाँधीवाद नपुंसकक आत्म दर्शन अछि' से ठीक, मुदा ताहि सँ कहाँ साबित होइत अछि जे अहाँक 'वाद' पुंसक अछि आ' यात्री'क मेहायल कविता साम्यवाद नहि, साम्यवादीक पदच्युत थीक! उदयचन्द्र झाक निबन्धक अंतिम पृष्ठ मे आबि कऽ पता चलल हुनका मे सत्साहित्यिकोचित भाव प्रवणता बेसी अछि, समालोचनात्मक विश्लेषी मोन

नहि। जे होइ, ई जानब आवश्यक अछि जे शेनन आ' वीभर क विचारक अनुसार कोनो तरहक सृजन मे नव किछुक परिमाण मात्र बारह प्रतिशत रहैत अछि। एहि भावोघोषक मतवाद (redundancy theory) एखन समस्त विज्ञान मे स्वीकृत अछि आ' सब किछुक संग साहित्यहुक वैज्ञानिक विश्लेषण करबाक समय ई मोन राखब आवश्यक अछि। घोष-योग्य (redun--dent) एवं ज्ञात (informative) क विरेख (distinctive feature) निकाललासँ भाषाक स्वरूप होएत (ग) प्रकल्प।

घोष योग्य	ज्ञात
(क) +	—
(ख) —	+
(ग) +	—
(घ) —	—

कारण भाषा पूर्ण घोषयोग्य नहि, पूर्ण ज्ञातो नहि भऽ सकैछ। आ' कोनो प्राकृतिक वस्तु, घटना वा साधन अघोषयोग्य एवं अज्ञात नहि भऽ सकैछ तर्क-शास्त्रक विचारें। आ' अधुनातन वैज्ञानिक सभक निरीक्षाक माध्यमे स्थिरीकृत सिद्धान्तक विचारे 'नव शिल्प', 'नव शब्द', 'नव शैली आ नव भाषा'क नाराकें सहजे बुझल जा सकैछ। समालोचना करबा लेल बैसबाक पहिने एहि साधारण ज्ञानक अभाव समालोचना कें नारा बना दैत अछि, जे विवादास्पदो होएबामे असमर्थ रहैत अछि। कारण, नारा वाद नहि, वाद बाद दऽ कए जे किछु भऽ सकैछ, दर्शनक से अंश थिक। 'हम कम्यूनिस्ट छी' कहबाक असारता जाहि रूपें सहजहि प्रमाणित कएल गेल अछि 'हम नव, हम सुन्दर छी'क आवृत्तियो कें तहिना समालोचनाक अगुण आ' अवगुण प्रमाणित केनाइ किछु मात्र कठिन नहि होएत। हँ, नवलेखनक उद्देश्य अवश्य छैक आ रहबाक चाही—'मनुक्खक अन्तर कें जगाएब'। आ' वर्माजीक तीन मोर्चाक प्रथम टूटा 'नारा'क विषयमे हमरा एतबहि कहबाक अछि जे लिखा-पढ़ी कऽ कय क्यो ने राज-स्वीकृति पौलक अछि, ने पाओत। दुहराव सभक मुँह परक मुखौटा अछि, तकर उन्मूलन लेखनी सँ नहि होएत। भाषा आ भाषा-गोष्ठीक स्वीकृति एवं कंस सभक निधन करबाक लेल हमरा सभकें अपन-अपन सामाजिक सत्ताकें जगाबऽ पड़त, साहित्यिक चरित्र कें नहि। नहि तऽ ने स्वीकृति भेटत, आ' ने भेटबो कएला उत्तर तकरा सार्थक बना सकब. ने तकर रक्षा कऽ सकब। तें एहि विषय पर नहि लिखी, से सुझाव नहि। किन्तु जौं एहि अवस्थाक उन्मूलन चाहैत छी तऽ लेखने पर ताहि लेल निर्भर करब उचित नहि होयत। तेसर 'नारा'कें उद्देश्यमे आत्मसात करबामे बिलम्ब करब साहित्यिक

अपराध कहाओत उत्तर पुरुषक द्वारा। नीक रचना आ' बेजाय बात—दुनू एहि अंक मे भेटल। मैथिलीक एखुनका स्थिति मे आन कोनो पत्रिकाक समालोचना लेल समय आ मनः संयोग देबाक आन्तरिक इच्छा नहि होइ, सेँ एहि पत्रिकाक सब सँ बेसी मूल्य अछि। कंसक अभाव नहि रहल मिथिला मे। कतेको पत्र जीयल, कतेको मरल—कृष्णक सातो भाइक उल्लेख रहत पुराण मे. आर किछु नहि। 'अग्निपत्र' वंसक अष्टम भागिनेय होअय, तऽ कल्याण होएत।

दिल्ली विश्वविद्यालय —नचिकेता

● अग्निपत्र ३+४ भेटल। मणिपद्मक अभिनन्दन मे एकटा शब्द हमरो जोड़ि देल जाए। पौरहित्यवादसँ एहि बेर जेना मुक्ति भेल ओ अकादमी उचित मूल्यांकन कऽ सकल। ओ नील सरोवरक मणिपद्म छथि। हुनक सान्निध्य ओ निर्देश सँ हम प्रभावित रहलहुँ अछि। जँ हमरा लोकनिक स्वप्न—पूर्वांचल संस्थान—पूरा भऽ सकल तँ मिथिलाक सर्वांगीण गरिमाकेँ विश्व-साहित्यक समकक्ष गर्व सँ राखि सकब। मणिपद्मक वक्तव्य बड़ ठोस छनि। बिना संघर्ष कयने आगाँ बढ़ब असंभव। आब एकटा ऐतिहासिक वक्तव्य अहाँ सब अवश्य छापू—" 'आखर' सँ अग्निपत्र' धरिक यात्रा"। मैथिली नवलेखनक प्रतिनिधित्वक अधिकारी मात्र 'अग्निपत्र' अछि ओ रहत। एखनधरिक अङ्क सभ एकर प्रमाण अछि। भाइ सोमदेव ओ मंत्रेश्वर झाक कविता ओ परिसंवादक क्रम मे राजमोहन झाक वक्तव्य बड़ महत्वपूर्ण। जौं 'अग्निपत्र'क माध्यम सँ मैथिली नवलेखनक सम्बन्ध मे प्रत्येक कवि ओ कथाकारक वक्तव्य यथासमय प्रकाशित भऽ सकय तऽ ओ ऐतिहासिक दृष्टिएँ अमूल्य मानल जायत। एहि क्रमकेँ आगाँ बढ़ाउ।

चकेयाज (वैशाली) —प्राचार्य प्रफुल्ल कुमार मौन

● 'अग्निपत्र ३+४ भेटल। रचना सभमे किछु रुचल, किछु अ-रूचल। किछु सार्थक लागल तऽ किछु अनन्वित। खास कऽ नवलेखनक सम्बन्धमे जे किछु कहल गेल से हमरा बूझऽमे नहि आबि सकल। की ? किएक आ ककरा लेल ओ छलैक ? से बड़का प्रश्न। हमरा विचारे एहि अङ्कक दूटा उपलब्धि 'कलकत्ता रङ्गमंच : तीनटा नाट्य प्रस्तुति' एवं राजमोहन जीक 'परिसंवाद-उत्तर। परिसंवाद परिपत्रक प्रश्नमे कतोक विषयमे समीचीनता प्रष्टव्य भऽ सकैछ किन्तु राजमोहन जीक उत्तर पूर्ण संतुष्ट करैछ। निष्कर्ष अपन-अपन भऽ सकैछ किन्तु शैली ओ स्तर मे एहने निर्वाह भविष्योक उत्तरदाता कऽ सकथि तँ ओ लेखक-सम्पादक-पाठकक हेतु पैघ बात होयत। यामिनी रायक मुख-चित्र अपीलिंग लागल।

दरभंगा —डा० रामदेव झा

अग्निपत्र (३+४) प्राप्त भेल। भरोस नहि छल। देरो भेलैक तऽ आब तकर कोनो दुःख नहि। ई अङ्क सभ सँ दभगर अछि। 'मैथिली नवलेखन : स्वरूप आ दिशा' सम्बन्धी दुनू टिप्पणी हमरा विचारित सँ अधिक अविचारित बुझि पड़ल। आशीर्वादी लय मे। यात्री जी, किसुनजी आ राजकमल नवलेखन दिस जे मोड़ लेलनि से खुदा हाफिज आ 'पारो' आ 'आदिकथा'मे सेक्सक रभसब— ई कहि मणिपद्मजी की कहय चाहैत छथि? नवलेखनक आइ धरिक उपलब्धिकें गरिया कऽ एहि पर पूर्वाग्रह-मुक्त विचार नहि भऽ सकैछ। 'पारो' मे सेक्स आ 'बलचनमा'क चर्चो नहि। वहिना 'पत्रहीन नग्न गाछ' यदि विनोद जी कें 'चित्रा' सँ आगाँक कविता नहि बुझि पड़ैत छन्हि, मात्र 'प्रोपगैण्डा' लगैत छन्हि, तऽ दोष ककरा देल जाए? बहुत दिन बाद सोमदेवक एकटा नीक कविता पढ़बा लेल भेटल। शांति सुमन तऽ केहन बढ़ियाँ हिन्दीक उपकार मे लागल छथि, ई कखनो काल मात्र बाना बदलि लेला सँ कोन लाभ? ब्रेख्टक कविताक अनुवादक लेल अनेक धन्यवाद। अङ्कक एकमात्र कथा, बीच मे उखड़ि गेल लगैछ। कथा-परिसंवाद आगुओ चलाबो। राजमोहन जीक अधिकांश उत्तर सटीक छन्हि। प्रश्न-४क उत्तर हमरा कम संतुलित लागल। प्रश्न मे 'महत्वपूर्ण' वा 'नीक' जे शब्द रहओ, जीवकान्त कें प्रभासजीक सङ्ग 'ब्रैकेटेड' होमय चाही।

पटना

—कुलानन्द मिश्र

प्रिय प्रवासी मित्र,
प्रिय मैथिल सुपुत्र,
भेल हमरा प्राप्त तोहर पठाओल अग्नि-पत्र।
हम करै छी हृदय सँ ई कामना।
(यैह होएत हमरे जकाँ कतोक व्यक्तिक भावना)॥

सार्थक होअ-ओ तोहर अग्निपत्रक नाम।
ई पसार-ओ प्रेरणा केर आगि गाम गाम॥

अग्नि कें बुझल गेल अछि ज्ञान केर उपमान।
गीता मे कएल गेल अछि ज्ञान केर गुणगान॥

देश मे भए रहल अछि ज्ञान-यज्ञ अनिवार्य।
मार्क्स ओ कृष्णक समन्वय भऽ सकैछ व्यवहार्य॥

एहि लेल चाही त्याग, निष्ठा ओ मनन।
एहि लेल चाही लोक-संग्रह ओ लगन॥

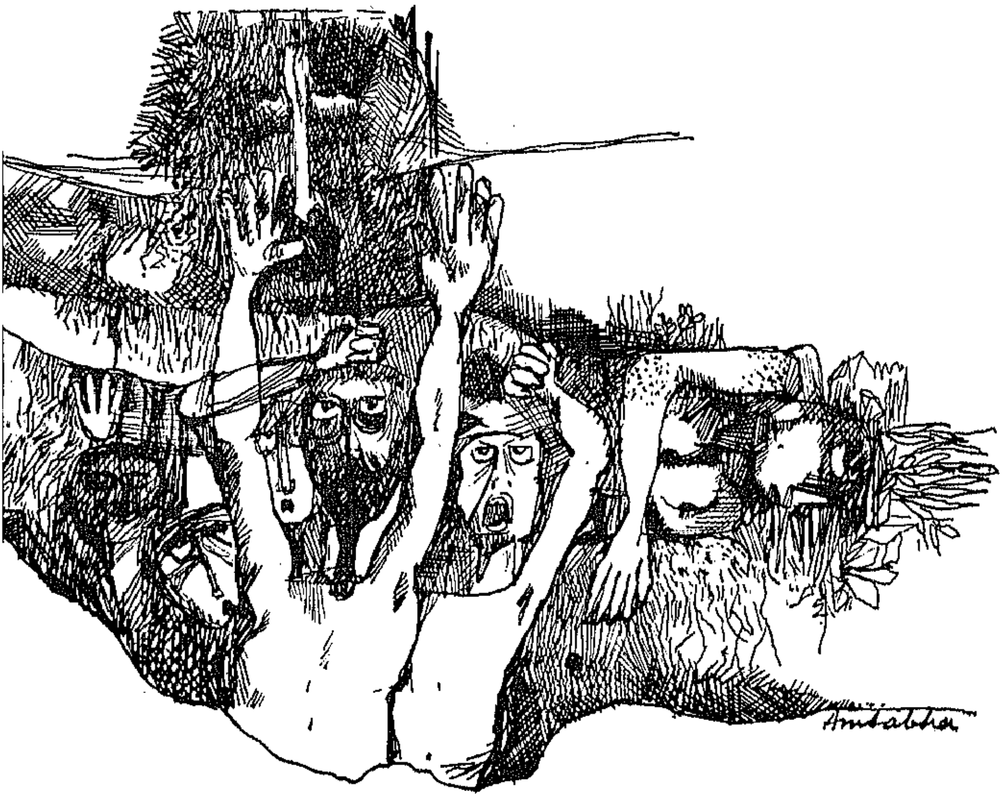
करओ तोहर पत्र ओ ज्ञान-यज्ञ आरम्भ।
जाहि मे जरि भस्म होएत मैथिल-मैथिलक बीच
पसरल द्वेष, इर्ष्या, डाह, पिशुनता दम्भ॥

दरभंगा

—हरिहर झा

आन्दोलन

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'



आन्दोलन

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता—७०० ०४५

● प्रथम संस्करण : १९७७ ई०

● रचनाकाल : जनवरी, १९७४

● प्रकाशक :
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०० ०४५

● आवरण :
अमिताभ वन्द्योपाध्याय

● मुद्रक :
सिंह प्रेस
कलकत्ता-७०० ०४५

● मूल्य :
तीन टाका

अभिन्न कवि-साहित्यकार

श्री अंजन सेन कें,

जे अयाचित भावें अमित एवं अशेष मैत्री देने छथि—

—उदय

पात्र-पात्री

जानकी, भरत, सुन्दर, नारद, नन्दी,
निर्लोभ, निर्मल, सुधीर और
पश्चस्वर

सुन्दर—हुनक ई पंक्ति अहाँ अनेको बेर आवृत्ति कैने छियन्हि। ई अहाँ कें एत्तेक नीक कियैक लगैत अछि ?

भरत—किछु कविता बुझबाक लेल काने सँ काज नहि चलि सकैत छैक, तकरा लेल आँखियोक प्रयोजन पड़ैत छैक; आ' किछु कविता क लेल दिमाग सँ सेहो काज लेमै पड़ैत छैक। मुदा किछु कविता एहन होइत छैक, जकर अर्थ बुझबाक हेतु समय केर पहिया तर आपन हृदय दान कए लहू बहाबै पड़ैत छैक......

सुन्दर—मुदा मास्टर साहेब! एखन धरि अहाँ क मुहें जाहि सब कविता क प्रशंसा सुनल, सबटा मे कत्तहु ने कत्तहु प्रच्छन्न निराशाक स्वर अवश्य रहैत छैक। से कियैक ?

भरत—सुन्दर! किछु घटना एहन होइत छैक जकरा बूझै लेल जीवन कें समय क ओछाओन पर बिछाबै पड़ैछ। ईश्वर करथु अहाँ क परिचय निराशा सँ नहि होइक!

सुन्दर—ई हम नहि मानबई! हमरा पहिरबाक लेल वस्त्र अछि, खेबाक लेल खाद्य आ' बाजबाक लेल भाषा। मुदा हम चाहैत छी, देश भरि मे चलि रहल आन्दोलनक रूप किछु एहन होइक जे हमर अहाँक आ' सभक सबटा उद्वृत्त अधिकार छीनि कए बाँटि दी निराश लोकनिक भीड़ मे। ताहू लेल हमरा जानै पड़त, चीन्है पड़त जीवन क दुनू मुँह कें— आशा आ' निराशा दुनू कें।

भरत—आन्दोलन! आन्दोलन क सफलता लोगक मृत्युक मोलें भेंटैत अछि।

सुन्दर—मुदा कोनो आन्दोलन मे किछु दुर्घटना, किछु मृत्यु त अछिये!

भरत—कोनो-कोनो मृत्यु बड़ दुखद होइत छैक सुन्दर! तकर एकटा उदाहरण त हमहीं छी।

सुन्दर—अहाँ कियैक मृत हैब।

भरत—कारण हमरहु जीवन मे एहन एकटा आन्दोलन आयल छल जे बिहाड़ि जकाँ आयल आ' हमर सुख-चैन, देह-मन—सब किछुक हत्या क' कए चलि गेल।

सुन्दर—मुदा कथीक लेल छल ओ आन्दोलन ? तकर परिणतिये की भेलैक ?

भरत – जे भेल ताहि लेल हमर एहन हाल भेल अछि।

सुन्दर—भ' सकैछ 'अहाँ' क किछु क्षति भेल होइक, मुदा ताहि लेल आन्दोलन क कोन दोष ? बिनु आन्दोलनक त किछु भेंटबे नहि करैत अछि! [भरत हँसैत छथि।] हँसैत कियैक छी ?

भरत —अहाँ क गपसप सुनि कए ओ नाटकीय दिन सब मन पड़ि जाइत अछि। [मृदु-मन्द हँसैत] एक दिन हम सब सपने टा देखैत छलहुँ—हमर भाषा कें आन सब भाषा क समान मर्यादा देल गेल अछि; मिथिला क घर-घर मे शिशु मातृभाषा क माध्यमे पढ़ि रहल अछि, हमर साहित्य, शिल्प, संगीत विश्व क दरबार मे स्थान बना लेलक अछि। आइ सँ तीस बरस पहिने एहन सपना हमहीं नहि, बहुत गोटे देखैत छलथिन्ह। चारूकात जुलूस, हड़ताल, नारा... मैथिली भाषा जिन्दाबाद... हम्मर भाषा—मैथिली... ताहि दिन मे हजारो लोग एकस्वर मे कहैत छल......

[नेपथ्य सँ नारा आ' कोलाहलक स्वर क्रमशः स्पष्ट भ' उठैत अछि। मंच क आलोक-रेख बुता जाइत अछि। मात्र टेबुल लैम्प बरैत रहैत अछि। शिक्षक-छात्र दुनू गोटे निस्पंद रहैत छथि। नेपथ्य सँ अनेक कंठ क नारा सुनल जाइत अछि—

"मैथिली भाषा जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद, जिन्दाबाद !!
हमर भाषा अमर हो ! अमर हो, अमर हो !!
मैथिलीक शत्रुक नाश हो ! नाश हो, विनाश हो !!"

इति मध्य 'आबि गेलाह... हे इयैह आबि रहल छथि' आदि ध्वनि सुनल जाइत अछि। पुनः नारा सुनल जाइछ :

"मिथिलाक नेता निर्लोभ-जी; युग युग जीबथि, युग युग जीबथि !
निर्लोभ बाबू जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद, जिन्दाबाद !"

नाराबाजी धीरे-धीरे मद्धिम होइत-होइत बन्द भ' जाइछ।]

पश्चस्वर—[अन्धकारहि मे नाटक क भूमिका-स्वरूप एकटा कंठस्वर सुनल जायत।] आइनस्टाइन कहने छलाह जे स्थान क संगहि संग कालो पदार्थक रूपक परिवर्त्तन क कारण भ' सकैत अछि। असल मे ई बात हुनकहु सँ पहिने कोनो नाट्यकार कें कहबाक छलन्हि। ओना कखनहु-कखनहु हमरा सन्देह होइत अछि आइनस्टाइन नाट्यकारे छलाह। जे हो! हमर त विचार इयैह जे कतबो समय क व्यवधान राखू— किछु घटना बदलैत नहि अछि; आ' दोसर दिसि, कखनहु ईहो होइत छैक जे किछुये काल मे मनुष्य क अनेक नीक-बेजाय बात वास्तव-वसन्तक बिहाड़ि मे झरि जाइत अछि। किछु मनुष्य बदलैत छथि, किछु घटना; किछु आन्दोलन क उद्येश्य-विधेय क्रिया कें बिनु कहनहि बदलि जाइत अछि। [किछु काल चुप रहि कए] एतय, एहि नाटक क पात्र सब कें आइ सँ तीस बरस बादक मंच पर राखल गेल अछि। अर्थात्, असल मे ई नाटक तीस बरस बाद लिखब उचित छल; किन्तु एकर जन्म अवांछित शिशु जकाँ पहिनहि भ' गेल अछि। तैयहु, शिशु जखन बेबस असहाय शिशुए थीक, तखन तकरा ग्रहण त करहिटा पड़त। तँ, कल्पना क संदूक मे तीस बरस नुका कए चलू चुप्पेचाप आगाँ बढ़ी!

[वक्तव्य शेष हैबाक संगहि संग कुर्सी पर उपविष्ट भरत टेबुल लैंप कें लेसि दैत छथि। मंच क एक कात एक टेबुल आ' टूटा कुर्सी दृश्यमान होइत अछि। सुन्दर, भरत क छात्र, प्रविष्ट होइत छथि।]

भरत—सुन्दर! आइ अहाँ आबै मे बड़ देर कैलहुँ।

सुन्दर—मास्टर साहेब! हमरा देर भ' गेल—किताब क दोकान मे। देखि-

औक ने—आइ कालिह मैथिली क छात्र संख्या तत्तेक ने बढ़ि गेल छैक जे कोर्सक कविता-संग्रह बजार मे अबितहि बिका जाइत अछि !

भरत—त अहाँ कीनि सकलहुँ कि नहि ?

सुन्दर—जी हँ हमरा भेंटि गेल। मुदा लाईन मे ठाढ़ होमै पड़ल छल, तैं...

भरत—देखू त एहिबेरुका संकलन केहन भेल अछि ! [सुन्दर सँ पुस्तक हाथ मे लैत] पोशाक सँ त नीके लगैत अछि। [सुन्दर सँ] एहि बेरि कविता क सूची मे कोनो परिवर्त्तनो भेल अछि की ?

सुन्दर—जी हँ ! राजकमल चौधरी क दोसरे एकटा कविता लेल गेल छन्हि।

भरत—कोन ?

सुन्दर—फुटनोट मे देखलहुँ इयैह हुनक अन्तिम कविता छलन्हि। अबैत-अबैत ओ पढ़ियहु लेलियन्हि !

भरत—अहाँ कें कोन पंक्ति बेसी नीक लागल ?

सुन्दर—"...हमर चारू कात पसरल ई नील-लोहित आकाश
हमर ई काव्यकन्या, हमर ई पृथ्वीवधू, हमर ई लौकिक आ' दृश्य प्रकृति
हमर जीवन आ' हमर कविता मे
जीवित छथि, जागल छथि
एहि नागरिक यान्त्रिक निरीह पशुवत् जीवन कें
कविता बनयबा मे
हमरे जकाँ, हमरे कवि जकाँ लागल छथि, जागल छथि
प्रकृति।"

भरत—आइ मन पड़ैत अछि... जखन कलकत्ता मे कालेज मे पढ़ैत छलहुँ, कहियहु-कखनहु चाह क अड्डा पर भेंट होइत छलाह ओ। हमरा सभक अनुरोध पर ओ कखनहु आपन नवीनतम कविता सेहो सुना दैत छलाह। हुनक स्वर जेना एखनहु गूँजि रहल होइन्ह :

"देबा-लेबाक ई सांसारिक व्यवस्था
आब एहि वयस मे
स्वाभाविक नहि हैत"

सुन्दर—ई त सैह अमरनाथ 'निर्लोभ' जी छथि ने जे आइ मैथिलीक केन्द्रीय साहित्य संसदक प्रधान छथि ?

भरत—हँ; ई एखन साहित्य-सर्जन-कारखानाक एकच्छत्र अधिपति छथि।

सुन्दर—सुनल अछि, आइ मैथिली कें जे सम्मान प्राप्त छैक ताहि लेल हुनक त्याग सब सँ बेसी छलन्हि ?

भरत—एक समय हमहूँ सैह सुनने छलियन्हि।

[संगहि संग टेबुल लैम्पक प्रकाशो बन्द भ' जाइत अछि। दरबाजा पर कराघात क शब्द सुनल जाइछ। सुन्दर प्रस्थान करैत छथि एवं संपूर्ण मंच आलोकित होइत अछि। मंच क दोसर भाग मे एकटा छोटछीन चौकी पर भरत सूतल देखल जाइत छथि। दरबाजा पर पुनः शब्द होइत अछि। भरत क नीन टूटि जाइत छन्हि।]

भरत—[औंघाइत] के ? [उत्तर नहि पाबि] जानकी !! [चारूकात देखैत] ई कतय गेलीह भोरे भोर ?

जानकी—[प्रविष्ट होइत] की कहैत छी ?

भरत—कनेक देखू त के आयल अछि !

जानकी—जखन अहाँ के उठै पड़बे करत, त आलस्य कैने कोन लाभ ? हम ओम्हर......

भरत—[अर्धोत्थित भए दुनू कान पर हाथ धरैत] बाप रे बाप ! ई हमरा बूझल रहितैक जे भोरे भोर अहाँ क मधुर भषण सुनै पड़त त अहाँ सँ दरबाजा खोलै कहितहुँ थोड़बे ? हे, हमरा माफ करू आ' अहाँ जाउ भनसा घर मे ! [पुनः कराघात क शब्द] हमहीं जाइत छी !

[जानकी कपट क्रोध देखा कए प्रस्थान करैत छथि। भरत हुनकहि दिसि देखैत रहि जाइत छथि।]

नारद—[नेपथ्य सँ कराघात करैत] भरतबाबू छी यौ ? भरतबाबू ?

भरत—इयैह ऐलहुँ। [दरबाजा खोलि कए] आ हा-हा-हा-हा ! आयल जाउ ! आयल जाउ !!

नारद—[प्रविष्ट भए] 'जय मैथिली' कहू ! हमरा सभक हेतु त सैह सही अभ्यर्थना भेल, कि नहि ?

भरत—ठीक ! जय मैथिली !! त आउ ने, भीतर आउ ! ओत्तहि कियैक ठाढ़ छी ?

नारद—हँ, इयैह...

भरत—[कुर्सी पर बैसा कए] आब कहू, की समाचार ? बहुत दिन बाद दर्शन देलहुँ !

नारद—ओना त सबटा कुशले-मंगल......

भरत—[बाधा दैत] थम्हू ! पहिने हम अहाँ क लेल चाह क बन्दोबस्त करी। जानकी ! हे ये ! सुनैत छियैक ?... [ई कहैत निष्क्रान्त होइत छथि ।] [नारद टेबुल पर सँ एकटा पत्रिका उठा कए देखैत रहैत छथि । दरबाजाक बाहर सँ क्यो विचित्र स्वरें न्यूजपेप' एतबा कहैत घर क मध्य अखबार फेंकैत अछि । नारद अखबार पढ़ै लगैत छथि भरत प्रविष्ट होइत अछि।]

नारद—लियह ! अखबारो आबि गेल अछि।

भरत—की सब खबरि छैक ?

नारद—[अखबार कें टेबुल पर धरैत] खबरि एहि मे की रहत ? से त हमरा सँ पूछू !

भरत—से कोन संवाद आनलियैक अछि ?

नारद—बैसू ने, त कहैत छी ! [भरत चौकी पर बैसि जाइत छथि ।] अहाँ त एहि बीच मे संघक मीटिंगो आर मे नहियें ऐलहुँ !

भरत—अहाँ त जानितहि छी, एहि समय मे स्कूल क काज कत्तेक बढ़ि जाइत छैक। परीक्षा क समय थिकैक।

नारद—नहि, ताहि लेल कोनो अथी नहि ! तखन पहिलुका मीटिंग मे रहितहुँ त नीक हैतैक ।

भरत—ई कहू— पछिलुका मीटिंग मे की सिद्धान्त लेलहुँ...... फंशन भ' रहल अछि कि नहि ?

नारद—हँ हँ, से त भइये रहल अछि। आ' ताहि लेल त हम ऐवे कैलहुँ। संघ क फंशन त कालिह आ' परसू— दुनू दिन हैत।

भरत—कालिहये सँ शुरू हैत ?

नारद—हँ! ओम्हरुका सब व्यवस्था भ' गेल अछि। हमहीं सब सबटा क' लेने छियैक।

भरत—[हँसैत] त हमरा लेल कोन काज छोड़लहुँ, से ने कहू !

नारद—[हँसैत] सैह त कहै ऐलहुँ। [थम्हैत] मन अछि, गत वर्ष सब क्यो अहीं क घर मे ठहरल छलाह ?

भरत—हँ, हँ... ओसब हमर पहिलुका बासा मे ठहरल छलाह, वैह चौक लगबला......

नारद—ओसब अहाँ क आतिथेयताक एत्तेक जय-जयकार कैने रहथि जे ऐहि बेरि जखन प्रश्न उठल जे बाहर क अतिथि लोकनिक ठहरबाक व्यवस्था कतय कैल जाइन्हि त हमहीं सब सँ कहलियन्हि जे लोगक प्रशंसा सुनबाक हो त भरत बाबू क डेरा सँ नीक जगह कत्तहु नहि भेंटत।

भरत—[किछु चिन्तित जकाँ] से त नीक बात ! मुदा... हम सोचैत छी जे...

नारद—की सोचि रहल छी ?

भरत—बात ई अछि जे ओ सब बाहर सँ आबि रहल छथि, तैं हुनका सब कें कोनो वस्तुक अभाव नहि हैबाक चाहियन्हि। आ' एखन त हमर......

नारद—त अहाँ क घर मे अभाव कियैक हैतन्हि हुनका लोकनि कें ?

भरत—पहिने जतय रहैत छलहुँ, ओतय त दूटा बेस बड़-बड़ कमरा आ' भनसा घर छल और ताहि पर एसगरे छलहुँ। मुदा एहि एक मास सँ त एहन ने छोट एकटा कमरा मे आबि गेल छियैक जे...। ताहि पर हमर पत्नी सेहो गाम सँ......

नारद—[जानकी चाह नेने प्रविष्ट होइत छथि। नारद हुनका देखि कए कहैत छथि] ऐहि बेरि त और नीके बात जे बहिन दाइ छथि। पाहुन सब कें एहि बेरि खुऐबा मे असुविधे नहि हैत— पछिलुका बेरि जकाँ......

भरत—से त ठीके ! [जानकी चाह टेबुल पर राखैत छथि ।] लियह ! चाह पीबू ! [दुनू गोटे चाह क प्याला उठा लैत छथि ।]

नारद—[चाह पीबैत] इयैह देखू ने ! एहन चाह अहाँ बना पाबितहुँ ? ई त बहिने दाइ छथि जे...

भरत—से त भाइ, स्त्री जाति हाथ मे मौधक पुरिये नेने एहि धरती पर पैर राखैत छथि । तें हमर चाह अहाँ कें नीक कियैक लागत ?

[दुनू गोटे एहि बात पर हँसि दैत छथि । जानकी लजा जाइत छथि ।]

नारद—हमरा पहिने पता रहितैक जे ई गाम सँ आबि गेल छथि त अहाँ सँ हम बात करितहुँ थोड़बे ?

जानकी—कोन बात क चर्च भ' रहल अछि ? पाहुनो सब दय की ने कहैत छलहुँ ?

नारद—[भरत सँ] अहीं कहियन्हु ने !

भरत—[गला खखारैत] कालिह आ' परसू एतहुका मैथिल सेवी संघ क फंशन अछि । एतहि आगाँ क कार्यक्रम ठीक कैल जैतैक, आन्दोलन क कोना की रूप देल जाइक ताहि पर बात-विचार हैतैक !

जानकी—से त नीक बात !

भरत—गत वर्ष एहि लेल बाहर सँ जे क्यो आयल छलाह, हमहीं तनिका सभक ठहरबाक भार गछने छलियन्हि !

नारद—और से एत्तेक सफल रहलैक जे अहू बेरि हम सब हिनकहि पुनः से भार उठाबै कहैत छियन्हि !

जानकी—[हँसैत] जखन अतिथि लोकनि हिनक भानस खा' कए 'प्रशंसा' कैने छलथिन्ह त हुनका लोकनि कें प्रसन्न करब कोनो कठिन काज नहि !

भरत—[कपट क्रोधें] कियैक ? अहाँ की सोचैत छियैक हमर भानस खराब होइत छैक ?

जानकी—चलू ! कम सँ कम एकहु बेरि त हमर मन क बात बूझि गेलहुँ !

[कहि कए हँसि दैत छथि ।]

भरत—[नारद सँ] अच्छा; अहीँ कहू त— गत वर्ष अहूँ त एक साँझ हमरहि घर मे खैने छलहुँ ! हमर भानस दय ई जे कहैत छथि से सत्य थिकन्हि ?

नारद—ओना त पहिलुका बरस सब ठीकेठाक भेल छल। तखन मैथिली-प्रेमक धधकैत आगि मे तरकारी कनेक झरकि गेल छल। आ' दालि मे जतबाक नोन कम छल से हम सब ताहि मे मैथिलीये प्रेम मिला कए ठीक क' नेने छलियैक ! [कहैत-कहैत नारद हँसै लागैत छथि। जानकियो हँसि दैत छथि।]

भरत—[असहाय जकाँ दुनू गोटेक दिसि देखैत] बुझाइत अछि जे अहाँ दुनू गोटे मिलि कए षडयन्त्र कैने छी।

नारद—[हँसी कें सम्हारैत] से त कैनहिए छी। [जानकी सँ] हँ; त बहिन दाइ, पाहुन सभक ठहरबा दय की कहैत छियैक ?

जानकी—एहि मे कहबाक कोन गप छैक ? ओ सब एत्तहि रहताह !

नारद—[आनन्दित भए—भरत सँ] देखलहुँ ? अहाँ सोचितहि रहि गेलहुँ आ' हम आर्डर निकलबा लेलहुँ।

भरत—हँ ! हाइकमांड जे कहथि ! मुदा कय गोटे हैताह ओसब ?

नारद—आधा सँ बेसी लोग कें त हम सब दोसर जगह पर ठहरा रहल छियन्हि। एतय मात्र नीक आ' उच्चकोटिक लोग क लेल व्यवस्था करै पड़त !

भरत—एत्तहु अहाँ सब ऊँच-नीच क व्यवधान क' रहल छी ?

नारद—भरत बाबू ! जावत धरि समाज क सब स्तर मे व्यवधान अछि, तावत हम कोना तकरा अस्वीकार करू ?

भरत—जे होइक ! ओना कत्तेक गोटे हैताह ओ सब, से नहि कहलहुँ ?

नारद—कम सँ कम चारि पाँच गोटे त...

भरत—[सोचैत] चारि-पाँच गोटे...? [थम्हि कए] त ऐताह कखन ?

नारद—ओ सब त आइये आबै जैताह, तखन साँझ सँ पहिने कयो एत्तय नहि आबि सकताह ! से नहि आबथि, ककरहु द्वारा सभक सामान एत्तहि

पहुँचबा देब हम !

भरत—ओ सब तावत् धरि करताह की ?

नारद—सब क्यो स्टेशने सँ सोझे संचालन-समिति क मीटिंग मे चलि जैताह ? कालिह आ' परसू त फेशने हैत। जनता कें आकृष्ट करै लेल आन्दोलन क असल रूप-रेखा त आइये ठीक करताह नेता लोकनि !

भरत—जनता कें छोड़ि आन्दोलन कोना हैत नारद भाइ ? आन्दोलन त जनता क लेल आ' जनता क सहायते सँ होइत छैक ! तखन आइ अहाँ सब अपना मे जे किछु सोचि-बिचारि कए स्थिर करब, कालिह जनता तकरा मानि लेत, से कोना बुझलहुँ ?

नारद—[हँसैत] नहि ! एत्तेक दिन संघ-सोसाइटी मे रहियहु कए अहाँ आन्दोलन क सार-तत्त्व नहि बुझलहुँ ! भरत-भाइ ! जनता सब दिन सब देश मे आन्हरे होइत अछि। आ' तकरा मभक आँखि होइत छथि नेता लोकनि। आँखि नहि ताकय, पथ नहि बताबय त अहाँ आगाँ कोना बढ़ब ?

भरत—[म्लान रूपें हँसैत] से त हम नहि जानैत छी ! हम त इयैह बुझैत छियैक जे रक्त क संचार नहि हो, माथ विद्रोह करै, हृदय हारि कए बैसल रहै त आँखि, कान, नाक आ' मुँह कोनो काज क नहि रहि जाइत छैक, चाहे ओ कतबो आकर्षक हो ! जनता नहि साथ दैक त ओ आन्दोलन आन्दोलने नहि हैत, चाहे तकर प्लान कतबो सुन्दर हो !

नारद—छोड़ू ई सब तर्क ! एत्तेक वर्ष भ' गेल इयैह सब करैत-करैत। अहिना अधिकारो माँग क पूर्त्तियो भेल अछि। आब देखू— आन्दोलन क एहि अन्तिम चरण मे की होइत अछि ! [थम्हैत] तखन अहाँ कें जे इन्तजाम करबाक अछि, करू। हमहूँ जाइत छी मीटिंग क कोना की व्यवस्था भेल अछि से देखै लेल।

भरत—ठीक अछि !

नारद—आ' जौं सम्भव हो त मीटिंग मे अहूँ आबि जाउ !

भरत—[हँसैत] हम त भाइ, ने नेता छी, ने ज्ञाता ! हम सब तोता छी। जे

नारा रटायब, सैह दोहराबैत रहब। तँ हम मीटिंग मे जा' कए की करब ?

नारद—नहि-नहि, से कियैक ? अहाँ सन कवि एहि शहर मे रहितहु हमरा सभक साथ नहि रहथि त से कोना सम्भव ? अहाँ तोता कियैक हैब ? एहि शहर मे कै गोटे कवि अहाँ क बराबरी क' सकैत छथि ?

भरत—अहो भाग्य, अहाँ बाहर क कवि लोकनि सँ तुलना नहि कैलहुँ ! चलू ! कत्तहु त श्रेष्ठ छी, चाहे ओ कुँइये मे कियैक ने हो !

नारद—[जानकी सँ] देखैत छी ने बहिन, सुनैत छियन्हि ने हिनक गपसप ?

जानकी—से आइ कोनो नव सुनि रहल छियन्हि थोड़बे ?

नारद—हिनकर गपोसप हिनकर कविते जकाँ होइत छन्हि, आधा त हमर बुद्धि सँ बाहरहि रहि जाइत अछि !

[सब क्यो हँसि दैत छथि।]

अच्छा; त हम चललहुँ एखन। साँझ क पहर सब कें नेनहि आयब। जय मैथिली ! [प्रस्थित होइत छथि।]

[भरत किछु सोचैं लागैत छथि। सोचैत-सोचैत कुर्सी पर जा' कए बैसि जाइत छथि। जानकी बिछौना साफ करैत छथि। घरक काज करैत-करैत बीच-बीच मे भरत क दिसि देखैत छथि। भरत जानकी क दिसि ध्यान नहि दैत छथि।]

जानकी—एत्तेक की सोचि रहल छी ?

भरत—हूँ ? [चुप रहैत छथि।] सोचैत छी जे एत्तेक गोटाक व्यवस्था कोना हैत ?

जानकी—ताहि मे एत्तेक सोच-विचार क कोन प्रयोजन अछि ? अहाँ बजार सँ चीज-वस्तु ल' आनू ! भानस क भार त हमहीं उठा सकब !

भरत—आ' ओ सब रहताह कतय ?

जानकी—कियैक ? अही घर मे !

भरत—आ' हम सब ?

जानकी—हम सब कहुना कए भन्से घर मे रहि लेब ! तीने दिनक त प्रश्न छैक।

भरत—[दीर्घश्वास त्यागि] हूँ !

जानकी—हूँ की ?

भरत—अहाँ त सबटा समस्या क समाधान एकहि मिनट मे क' देलहुँ ! मुदा...

जानकी—मुदा की ?

भरत—सोचैत छी बन्दोबस्त करबाक लेल जत्तेक पाइ क आवश्यकता हैत, ओत्तेक कतय सँ आओत ? बैंक मे जे छल से त सबटा गामे पठाबै मे शेष भ' गेल अछि ! तैयहु जौं कोनो लाभ होइत ! माय कें बचा त सकलियन्हि नहि ?

जानकी—[काज करब बन्द कए भरत क पास आबि कए] अहाँ क कोन दोष ? चेष्टा त कम नहि कैलहुँ, मुदा मरब-बाँचब त ईश्वरे क हाथ मे छलन्हि ! ताहि लेल जीवन कें सरापने कोन लाभ ?

भरत—से कतय कहैत छी हम ? जे जीवन हमरा सँ माय कें छीनि लेलक वैह जीवन त हमरा लग अहूँ कें आनि देलक अछि।

जानकी—जीवन सब दिन अहिना होइत अछि— स्वार्थी, हिसाबी लोग जकाँ। किछु दैत अछि त किछु लैयो लेत अछि ! देखब, एक दिन अहिना हमरहु ल' लेत !

भरत—चुप रहू ! अहाँ बड अशुभ बात सब बाजैत छी !

जानकी—एहि मे शुभाशुभक कोन गप...?

भरत—अहाँ चलि जायब त हमर के रहत ?

जानकी—बिना किछु दैने मृत्यु हमरा उठा लेत थोड़बे ?

भरत—की दैत अहाँ क जगह मे ? अहाँ क रिक्तता कि कहियो भरल जा सकैछ ?

जानकी—क्यो न क्यो त रहबे करत ! हम नहि रहब त हमर पेट मे जे अछि, से रहत !

भरत—छोड़ू मरैबला गप ! पहिने ई त कहूँ— हमरा सभक जे बेटा हैत, तकर नाम की राखब ?

जानकी – बेटा हैत से कोना कहब ? बेटियो भ' सकैत अछि !

भरत—अच्छा, बेटी हैत त की नाम राखब ?

जानकी—[सोचैत] म्-म् ! बेटी क नाम हैत... 'वैदेही' !

भरत—आ' बेटा हैत त ?

जानकी—अहीं कहू ?

भरत—हम कहू ? हँसब त नहि ?

जानकी—हँसब कियैक ?

भरत—बेटा क नाम राखब 'आन्दोलन' ! [दुनू हँसि दैत छथि। पुनः दुनू गोटे चुपचाप सोचै लागैत छथि।] ऐ ! [जानकी सुनैत नहि छथि।] ऐ आन्दोलन क माय ! सुनैत नहि छी ?

जानकी – की ? कहू ने ?

भरत—कहैत छलहुँ, चारि-पाँच गोटे क लेल व्यवस्था कोना करियन्हु ? कल्हुका खर्चा क बाद बाँचल त अछि पाँचे गो टाका। ताहि सँ त किछु नहि हैत !

जानकी—से अहाँ चिन्ता जूनि करू ! हमरो पास त किछु अछिये !

भरत—अहाँ क पास कोना रहत ? अहाँ क पास जे छल से त पछिलुका राति खर्च भ' गेल छल ! तखन ?

जानकी—से अहाँ कोना जानि गेलहुँ जे कत्तेक छल हमरा लग ? [गम्भीर भए] हमहीं की से जानैत छलहुँ ?

भरत—से हैबो करत त...

जानकी—त की ? अहाँ कें त किछु दिन मे दरमाहा भेंटबे करत ! तखन हमरा पुनः द' देब ! एकहि साथ त दू-दू मास क टाका भेंटत; हड़ताल त आब शेषे भ' गेल अछि !

भरत—एत्तेक शीघ्र जौं पाइ नहि देथि ओ सब तखन ? हड़ताल मे जे स्कूल बन्द रहल ताहि मे घाटा त स्कूल कें भेले छैक। तैं जौं...

जानकी—तखन चारि तल्ला मे जे पंजाबी परिवार रहैत अछि, ओकरहि सब

सँ पैंच ल' लेब। ताहि सँ ई काज चलि जायत...

भरत—उधार क खुशी ल' कए पाहुन लोकनि कें उपहार दियन्हु? नहि! [सोचैत] आ' सेहो कोना हैत? जावत घुरैबाक उपाय नहि सूझय, तावत् उधार कोना ली?

जानकी—अच्छा, ठीक अछि! अहाँ कें एत्तेक सोचै नहि पड़त। एखन हमरहि जमा कैल पाइ सँ काज चलाउ! बाद मे जे हैतैक से देखल जैतैक...!

भरत – मुदा ई हमरा समझा दियह! अहाँ क पास पाइ आयल कोना? जे किछु छल से त किछु दिन पहिनहि अहीं सँ ल' कए कथी पर ने खरच कैने छलहुँ! तखन फेर कतय सँ...?

जानकी—[घबड़ा कए] न् नहि... म्-माने... [कपट क्रोध सँ] स् से अहाँ सुनि कए की करब जे कतय छल ओ पाइ? अहाँ कें हम पाइ द' देब; अहाँ हमरा बाजार सँ सामान आनि दियह, बस्!

भरत—ठीक अछि! दियह पाइ त हम जाइत छी...!

जानकी—एखन?

भरत—त आर कखन देब? ओ सब त साँझेखुन आबि जैताह!

जानकी—[घबड़ा कए] एखनहि कोना... माने...

[दरबाजा पर कराघात क शब्द होइछ।]

देह देखू— के ऐलाह!

[भरत दरबाजा खोलैत छथि। जानकी दरबाजा क ओहि कात चलि जाइत छथि। सुधीर प्रविष्ट होइत छथि।]

सुधीर—की भाँरोत बाबू? की खाँबोर?

भरत—आर सब खबरि त नीके दादा, अपनहिटा खबर बेजाय। अहाँ क की हालचाल?

[एहि बीच मे जानकी दुनू गोटा क नजरि बचा कए प्रस्थित होइत छथि।]

सुधीर—बांगलाय बोलले 'मॉन्दो नाँय', मैथिलीते बोलले 'कुशले मंगल छैक।'

भरत—तखन मैथिलीए मे बाजू।

सुधीर—हम जतबाक चेष्टा करैत छी बंगला मे बात करबाक, अहाँ हमरा ततबहि मैथिली मे बजाबै चाहैत छी ! आरे भाइ, एत्तेक दिन दड़िभंगा मे रहलहुँ ताहि सँ की ? मानुष तो आमि बांग्लार !

भरत—के कहलक अहाँ बंगाल क छी ? अहाँ त बेसी मिथिले क थिकहुँ ! जनम-करम त सबटा दड़िभंगे मे भेल !

सुधीर—[हँसैत] जनम-करम सँ किछु नहि होइत छैक भाइ, लोग जतय मरै चाहैत अछि वैह भेल ओकर असल जगह !

भरत—जौं सैह बात होइक त चलू अहाँ कै पुनः दड़िभंगा मे ल' जा कए मारि दैत छी !

[एहि बात पर दुनू हँसि दैत छथि।]

सुधीर—[हँसैत-हँसैत] चलू—अही बात पर अहाँ सँ मैथिलीये मे बात करब !

भरत—हैं— एबार बोलून की बोलबेन ?

सुधीर—[आश्चर्यान्वित भए] अरे... अहाँ त आब बंगला नीके बाजै लगलहुँ !

भरत—ई सब पारस्परिक सम्मानक विषय थीक सुधीर दा' ! अहाँ हमर भाषा क आ' हमर एत्तेक आदर करैत छी, हम कियैक ने अहाँ सँ किछु सीखब ?

सुधीर—भाइ, एहन जौं सब क्यो सोचै लागय तखन त आधा दंगा-फसाद बन्दे भ' जाय ! अच्छा, ई त बताउ, किछु दिन पहिने अखबार मे अहाँ क स्कूल मे चलि रहल हड़ताल क विषय मे पढ़ने छलहुँ। की भेल तकर ? किछु समाधान भेल ?

भरत—अरे छोड़ू ओ सब ! ताहि सं चलू, चाह पीयब !

सुधीर—से त पीबे करब ! मुदा अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ !

भरत—अच्छा, उत्तर देब, मुदा पहिने चाह क पानी चढ़ा देमै कहैत छियन्हि ! जानकी ! जानकी ऐ !! [उत्तर नहि पाबि] अहाँ बैसू ने, ठाढ़ कियैक छी ? जानकी ?

सुधीर—कतय गेलीह ?

भरत—भरिसक आसे-पास कत्तहु गेल हैतीह ! ठहरू, हमहीं चाह क पानी चढ़ा दैत छी ! तावत् अहाँ अखबार पढ़ू !

[भरत प्रस्थित होइत छथि। सुधीर दू-एकटा मैगजिन आ' अखबार उनटाबै लागैत छथि। ओ अपनहि मने मुख्य समाचार सब पर सँ आँखि दौड़ाबै लागैत छथि।]

सुधीर—Seven died, forty injured in riots... World population will treble in 35 years...C. M. to take 10 more in cabinet, month old crisis resolved... draught toll rises to 92... धत्— सबटा पुरान बात, कोना नवीनते नहि ! [पुनः अखबार क भीड़ मे सँ एकटा उठा कए] अरे ई की ? ...Month-long school-strike ends... ई त... कहियौक। ...की थिकैक ? [देखि कए] —ई त परसू क खबरि भेल... ई...

[तावत भरत प्रविष्ट भेलाह।]

भाइ, देखू— ई त अहीं क स्कूल क विषय मे लिखलक अछि। एहि संवाद मे त कहल गेल अछि— अहाँ क स्कूल मे स्ट्राइक समाप्त भ' गेल अछि। [भरत कें निस्पृह देखि] ई अहाँ जानैत छलहुँ की ? [थम्हि कए] तकर माने अहाँ सभक आन्दोलन शेष भ' गेल अछि। त से कहलहुँ कियैक नहि ?

भरत—आन्दोलन शेष भ' गेल अछि सुधीर दा', सफल नहि भेल ! [व्यंग्यात्मक हँसी हँसैत] क्यो ई समाचार पढ़ि कए बुझियहु नहि सकैत अछि, एत्तेक दिनक आन्दोलनक समस्या एत्तेक सहजें एकहि दिनमे कोना सोझरा गेलैक ! दादा, हमरा... [कहैत-कहैत चुप भ' जाइत छथि।] नहि; की बेकार सब बात मे अहाँ क समय नष्ट क' रहल छी ?

सुधीर—[भरत क पास आबैत] नहि, आब त अहाँ कें कहैटा पड़त, की भेल अछि ? अहाँ किछु नुका रहल छी हमरा सँ...

भरत—[किछु काल चुप रहि कए] सुधीर दा'... [अश्रुपूर्ण नेत्रें] हम हारि गेलहुँ सुधीर दा', हम बेकार भ' गेल छी... ओ सब हमर नौकरी छीनि लेलक !

सुधीर—से की ? [अखबार कें उठा कए] एतय त लिखलक अछि, there was no victimization, ककरहु कोनो दंड नहि देल गेल... तखन ?

भरत—ककरहु सँ विश्वासघात नहि कैल गेल, से त नहि लिखल अछि ने ?

सुधीर – माने ? [भरत कें निरुत्तर देखि] भरत ! की भेल अछि खोलि कए बाजु ने !

भरत—जकरा सभक लेल हम सब दू-तीन गोटे आन्दोलन शुरू कैने छलहुँ, एक-आध टुकड़ी रोटी क लेल वैह सब हमरा लोकनिक पीठ मे छूरा भोंकलक !

सुधीर—अहाँ क अपनहि संगी साथी सब ?

भरत—हँ ! साथिए छलाह ओ सब। मुदा एहन साथक बड़ बेसी मोल हमरा देमै पड़ल। सब कें स्कूल क मैनेजमेंट कीनि लेलक ! पहिने बेसी पाइ पर दस्तखत करा कए कम दैत छल, आबहु से करत। मुदा हमरा जकाँ दू-तीन गोटे कें भगा कए मैनेजमेंट जे पाइ बचाओत सैह बाकी सब मे बाँटि कए दरमाहा बढ़ा देलक ! बाहर क लोग कें लागलैक, जे किछु मांग छल तकर पूर्त्ति भ' गेलैक।

सुधीर—मुदा ओ सब अहाँ लोकनिकें भगौलक कोना ?

भरत—सुधीर दा' ! जौं बस मे कहियहु लागै जे क्यो अहाँ क पाकिट सँ टाका वा चीज-वस्तु लेबाक चेष्टा क' रहल अछि त अहाँ की करबैक ?

सुधीर—कम सँ कम ओकरा दू चाट मारि कए भगा देबैक !

भरत—बाकी लोग कोना बूझतजे ओ सत्ये चोर छलैक ?

सुधीर—कियैक ? हम कहबैक जे ओ चोरी करबाक चेष्टा कैने छल। मुदा ई सब कियैक पूछि रहल छी ?

भरत—कारण, ठीक सैह भेल हमरा सभक साथ। मैनेजमेंटक शिकायत

छलन्हि, हम सब स्कूल क लैब सँ चीज-वस्तु हँटौलहुँ, और कत्तेको टाकाक सामान क क्षति कैलहुँ... आदि आदि ! [थम्हि कए] अहीं कहू दादा— टंग टुट्टा घोड़ा क टांग कोना तोड़ू ? ओ कोनो लैब छल ? ओ त प्रत्येक मास छात्र सब सँ ठगि कए लैब फीस लेबाक साधन मात्र छल !

सुधीर—मुदा अहाँ क संगी-साथी लोकनि कोना ई सब मानि लेलथिन्ह ?

भरत—कहलहुँ त .. हमरा सभक रोटी हुनका सब मे बाँटि देल गेलन्हि, हुनका सभक गला बझि गेलन्हि ताहि सँ, प्रतिवाद कोना करतिहथि ? सुधीर दा', मैनेजमेंट खून पी जायत अहाँ क, मुदा शरीर पर दाँत क चेन्हो नहि छोड़त कत्तहु ! हमर संगी-साथी सब सोचलन्हि जे जतबे भेंटैत अछि ल' ली ! बाद मे ईहो भेंटत तकर निश्चये की ? बस, आन्दोलन शेष !

सुधीर—बुझलहुँ।

भरत—मुदा हे, अहाँ क सपथ जानकी क कान धरि ई सब नहि पहुँचै ! ओ किछु नहि जानैत छथि। बेचारी ! सोचि रहल छथि जे बेसी किछु हैत त हमरा मात्र पछिलुका दुइये मास क टाका भेंटत ! हमरा जे आब कोनो मास क टाका नहि भेंटत, से हम हुनका कोना कहियन्हु ? [जानकी क कंठ स्वर सुनल जाइछ ओ नेपथ्य मे ककरहु सँ बात करैत छथि।] वैह, जानकी आबि गेल छथि भरिसक !

जानकी—[प्रविष्ट भए केबाड़ बन्द करैत] अरे, दादा ? अहाँ कखन ऐलहुँ ?

सुधीर—इयैह, कनिये देर भेल अछि ! मुदा कतय चलि गेल छलहुँ बहीन ?

जानकी—हम ? इयैह कनेक बगल बला फ्लैट मे गपसप करै... [किछु सूँघैत, भरत सँ] चाह क पानि चढ़ा कए छोड़ि देने छियैक की ?

भरत—ओहो ! हम त बिसरिये गेल छलहुँ ! [उठबाक प्रयास करैत छथि।]

जानकी—अहाँ बैसू ने ! हम देखैत छी। [प्रस्थित होइत छथि।]

सुधीर—जानकी बहिन कनेको नहि बदलल छथि। पहिनुके जकाँ चंचल, तेहने स्वभाव ! बेचारी जानितहु नहि छथि जे अहाँ एखन बेकार छी...

भरत—स् स्-स्-स् ! [चुप रहबाक इङ्गित करैत] ई बात नहि बाजू एखन !

[केवाड़ पर कराघात क शब्द होइत अछि।]

नन्दी—[नेपथ्य सँ] भरत बाबू छी औ ? भरत बाबू !

भरत—इयैह ऐलहुँ ! [दरबाजा खोलि कए] अरे, नन्दी बाबू ! की समाचार ?

नन्दी—समाचार त नीके ! दौगैत-दौगैत थाकि गेलहुँ। देखियौक ने— ई सबटा सामान स्टेशन सँ एतय मँगबौलहुँ। अही मे की कम...? [जोर सँ] कतय गेलें रौ ? हे रै ! [एतबहि मे दू-तीनटा मजदूर किछु बक्सा ओछाओन आदि ल' कए आबैत अछि।] हे-हे... ओत्तय धरहीं ! ओत्तहि.. हँ... [सामान सबटा रखैबाक पश्चात्] जो ! बाकी सामानो ठेला पर सँ ल' आन ! जल्दी कर ! और बहुत रास काज करबाक छौक ! [मजदूर सब प्रस्थित होइत अछि। सुधीर कें देखा कए--] हिनका नहि चिन्हलियन्हि, भाइ ?

भरत—ई छथि सुधीर दा', सुधीर राय ! जनम सँ बंगाली, करम सँ मैथिल !

सुधीर—नहि, नहि; भरम सँ बंगाली, मरम सँ मैथिल ! [हँसि दैत छथि।]

नन्दी—[हँसैत] नमस्कार ! हमर नाम भेल नन्दी झा ! एतय एकटा प्राइवेट फर्म मे काज करैत छी पेट पालै लेल। आ' बाकी समय मैथिली सेवा करैत छी...

सुधीर—छाती पालै लेल ! [दुनू गोटे हँसि दैत छथि। सुधीर गम्भीर रहैत छथि।]

नन्दी—मुदा, भरत बाबू कें बड चुपचाप देखैत छियन्हि ! की बात थाक ?

भरत—[हँसबाक चेष्टा करैत] न्-नहि !... कतय... हम त .. अच्छा, एक मिनट... और एक कप चाह दय कहि दियन्हि हुनका... अहाँ सब तावत् गपसप करू ! [वेगें निष्क्रान्त होइत छथि।]

नन्दी—भरत बाबू बदललाह नहि ! सदिखन चिन्तिते रहैत छथि, एखनहु ! भरिसक... सदिखन कोनो कविते दय सोचैत रहैत छथि !

सुधीर—हूँ... एहन कविता जे जिनगी सँ परिहास करैत होइक !

नन्दी—माने ?

सुधीर—किछु नहि !

भरत—[तीन कप चाह नेने प्रविष्ट होइत अछि ।] लेल जाय ! [दुनू कें चाह द' कए ट्रे कें एक कोना में राखि अपनहु एक कप नेने बैसैत छथि। सब क्यो चाह पीबैत छथि। एक मुहूर्त्तक लेल सब चुप भ' जाइत छथि।]

सुधीर—[नन्दी सँ] एकटा बात नहि बुझलहुँ ! ई सामान सबटा...?

नन्दी—ओ ई ! हम सब जे संघ क फंशान क' रहल छी, ताहि लेल बाहर क जे अतिथि लोकनि आयल छथि, हुनका सब मे सँ चारि गोटे एतय रहताह, तें...

सुधीर—चारि गोटे...? ई सब अपनहि त दू गोटे छथि ? घर त छन्हि एकहिटा, तखन...?

भरत—से अहाँ चिन्ता जुनि करू दादा ! हम सबटा ठीक क' लेब !

सुधीर—की ठीक क' लेब ? कोना करब ? ई घरे थीक ! कोनो इलास्टिक त नहि जे नमरा लेब !

भरत—[कृत्रिम रूपें हँसैत] नहि सुधीर दा' ! अहाँ बड़ हँसी करैत छी ! [नन्दी सँ] नन्दी बाबू ! अहाँ निश्चिन्त रहू ! सब व्यवस्था भ' जायत । अहाँ सब हुनका लोकनि कें ल' कए आबि जाउ !

नन्दी—त ठीक अछि ! [कप टेबुल पर धरैत] एखन हम चलैत छी। फेर त साँझखुन भेंट हैबे करत ! अच्छा, सुधीर बाबू ! [नन्दी नमस्कार करैत छथि। सुधीरो प्रति नमस्कार करैत छथि। तत्पश्चात् नन्दी प्रस्थित होइत छथि ।]

भरत—[नन्दी क चलि गेलाक पश्चात् सुधीर किछु कहै चाहैत छथि। भरत हुनका बाधा द' कए कहैत छथि] नहि, सुधीर दा' ! अहाँ किछु नहि कहियौक ! ई सब हमरा करैयेटा पड़त !

सुधीर—हम अवश्य कहब ; ई अहाँ की शुरू केलहुँ ? भाषा-प्रेम ठीक अछि। मुदा अहाँ जे किछ क' रहल छी से त्याग नहि, अपनहि पर अत्याचार करब थीक। भरत ! एखन जकरा पास बेसी रहैत छैक, त्याग क महिमा

सैह देखा सकैत अछि।

भरत—मुदा, ई त हमरा करैयेटा पड़त। हम गछि लेलहुँ...

सुधीर—ठीक अछि, त चलू हमहूँ त देखी कत्तेक की अछि अहाँ क भंडार मे—

भरत—[सुधीर कें भनसा घर दिसि बढ़ैत देखि—] नहि सुधीर दा'!

सुधीर—[पाछाँ घुरि कए उत्तेजित स्वरें] ई कियैक नहि कहैत छी जे किछु नहि अछि सुधीर दा'! [पुनः कुर्सी पर बैसैत] ई आत्महत्या थीक भरत! [माथ पर हाथ धरैत] सैहटा नहि; ई सोचलहुँ जे दू दिन बाद जानकी की खैतीह ? अहाँ क भावी सन्तान की खाओत ? अहाँ अपना कें मारि सकैत छी। मुदा हुनका सभक मुँह क कर कियैक छीनि रहल छियन्हि ?

भरत—आस्ते बाजू! जानकी सुनि लेत त...

सुधीर—[एतबा मे जानकी भनसा घर सँ आबैत छथि। जानकी कें देखैत] की करैत छलहुँ ?

भरत—इयैह तर-तरकारी काटै मे लागल छलीह! [जानकी बिनु किछु कहनहि बाजार क थैला हाथ मे लए दरबाजा द' कए बहिराबै लेल आगाँ बढ़ैत छथि।]

सुधीर—तर-तरकारी ? भरत! आइ कालिह अहाँ सभक भनसा घर मे तरो-तरकारी फरैत अछि की ?

भरत—आह! सुधीर दा'! प्लीज!

सुधीर—भाषा क लेल त्याग करैत-करैत अहाँ अपने त सत्यभाषणोक त्याग कैये देलहुँ, जानकियो बहिन कें सैह सिखा देलियन्हि!

जानकी—से कियैक ?

सुधीर—एम्हर त आउ! [जानकी सुधीर क पास आबैत छथि। सुधीर हुनक दुनू हाथ क दिसि देखैत छथि। जानकी साड़ी क अढ़ मे हाथ झाँपबाक प्रयास करैत छथि।] कनेक देर पहिने जखन पुछलहुँ कतय गेल छलहुँ त अहाँ कहलहुँ बगले मे गपसप करै गेल छलहुँ!

जानकी—[घबड़ा कए] हँ; से त गेले छलहुँ।

सुधीर—[व्यंग्यात्मक स्वर मे] आ' गपेसप करैत-करैत सोना क चूड़ी बेचि कए पाइ ल' आनलहुँ नहि ?

जानकी—न-नहि दादा ! आइ कालिह त चोरी और छीना-झपटी बहुत बढ़ि गेल अछि ने; तैं ओ खोलि कए बक्सा मे ध' देने छियैक !

भरत—हँ-हँ, खोलि कए राखि देने हैतीह !

सुधीर—त ठीक अछि। एतय त क्यो चोराबैबला नहि अछि। कनेक पहिरि कए देखाउ त !

जानकी—पहिरि कए...? माने... हम...

सुधीर—[डाँटैत] हम... माने... की ? पहिरि कए देखाउ ने !

जानकी—[धीरे-धीरे बक्सा क पास जा कए पेटी खोलि किछु खोजबाक अभिनय करैत छथि। तकर बाद बिछौना क तर मे एवं घर क आन सब ठाम खोजैत छथि।] कतय ने राखने छी, से मोन नहि पड़ि रहल अछि।

सुधीर—[पाछाँ घुरैत] अच्छा, त हम मोड़ क गहना क दुकान मे जा' कए पूछैत छी जे कतय राखल गेल अछि ओ चूड़ी !

जानकी—[आगाँ बढ़ि कए] नहि !

सुधीर—तकर माने ओत्तहि अछि ! [जानकी निरुत्तर रहैत छथि।] देखैत छियैक भरत ! अहाँ क भाषा क लेल त्याग क कारणें अहाँक पत्नी कें की-की करै पड़ि रहल छन्हि ?

भरत—[दुःखित भ' कए] ई... ई अहाँ की कैलहुँ जानकी ? नहि, ई ठीक नहि कैलहुँ !

सुधीर—वाह रे भाषा-प्रेम ! पति कें ई पता नहि जे पत्नी अपन अन्तिम गहनो बेचि चुकल छथि। और बेचारी पत्नी कें पते नहि जे पति क नौकरिए छिना गेल छन्हि !

जानकी—[चौंकैत] दादा ! ई... ई की सत्य थीक ? नहि-नहि, ई भ' नहि सकैत अछि ! ई कोना...? [भरत कें चुप देखि] अहाँ किछु कहि

कियैक नहि रहल छी ? किछु त कहू ! [भरत तैयहु चुप रहैत छथि ।]

भरत—[धीरे-धीरे माथ उठा कए] अहाँ कियैक ओ चूड़ी बेचि लेलहुँ जानकी ? ओ अहाँ के कत्तेक प्रिय छल !

जानकी—से नहि करितहुँ त आइ कोना...?

भरत—हम त सुधीर दा' सँ टाका क लेल कहैते छलियन्हि !

सुधीर—[आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि—] सुधीर दा' सँ ? सुधीर कियैक पाइ देत । हम नहि देब, हम एकहु पाइ नहि देब । अहाँ दुनू आत्महत्या करब, हम ताहि लेल कियैक पाइ देब ? [कहैत-कहैत आत्म-संवरण क' नहि पबैत छथि एवं झपटि कए प्रस्थित होइत छथि । जानकी कानै लागैत छथि । भरत हुनक पास जा' कए हुनका सान्त्वना दैत छथि । जानकी भरत क छाती पर माथा राखि कए और जोर सँ कानै लागैत छथि । मंच अन्धकार भ' जाइत अछि । किछुए काल मे मंच क दहिना दिसि अस्पष्ट आलोक मे चारि गोट व्यक्ति दर्शक लोकनि सँ पाछाँ मुँह कैने बैसल देखल जैताह । ओ सब तास खेलैत-खेलैत बात करैत रहैत छथि । मुदा सम्पूर्ण वार्त्तालाप नेपथ्य सँ भासल आबैत अछि ।]

प्रथम—हे, देखैत छलहुँ ने आइ; ओ पटनियाँ छौड़ा कोना कूदि रहल छल ?

द्वितीय—बैरिस्टरी पास क' लेलक त बूझैत अछि जे एहि धरती पर हमरा सँ क्यो बुधियारे नहि अछि... अरे, कत्तेक देखलियौक तोरा सन-सन बैरिस्टर...

तृतीय—कहैत छलैक, सब बेरि ऊँच जातियेक लोग कियैक मैथिल महासभा क सभापति होइत अछि ? मर, त तोहूँ त छें ब्राम्हणे ? तखन तोरा कियैक कष्ट होइत छौक ?

चतुर्थ—बुझलहुँ नहि ? ई सब एकटा चालि थिकैक ! ओ ई सब कहि कए एतहुका नवतुरिया लोकनि कें भड़का रहल छल ! की ? —त जातिवाद भगाउ ! अरे, स्वयं ब्रम्हा जखन हुनका सब कें श्रेष्ठ बना गेल छथि तखन हुनक विधान कें के टारि सकैत अछि ?

प्रथम—ओना एकटा बात हम अवश्य कहब— एना बेसी दिन चलैत रहत त महासभा टूटि जायत ! कम सँ कम लोगो कें देखाबै लेल त एक आध बेर कोनो दोसरो जाति क लोग कें अध्यक्ष बनाबहि पड़त !

द्वितीय—ई अहाँ की कहलहुँ ? बाबू अमरनाथ 'निर्लोभ' क रहैत कोना अहाँ आन ककरहु अध्यक्ष बनैबाक लेल सोचियो सकैत छी ?

तृतीय—हँ; दोसर जाति मे क्यो किछु बनि कए देखाबौक त एकटा बातो !

द्वितीय—[प्रथम सँ] तकर बाद अहाँ कहब दोसरो दोसर धर्म क लोग कियैक ने अध्यक्ष बनत महासभा क ?

प्रथम—से अहाँ जे कहू ! हमर त सब दिन सँ विचार इयैह अछि जे एहि बेरि कोनो मुसलमान वा ईसाइये कें अध्यक्ष बनाओल जाइक !

द्वितीय—हे ! जहिया ई सब कांड करब तहिया कम-सँ-कम हम त नहि रहब सभा-सोसाइटी मे...!

प्रथम—से कियैक ?

द्वितीय—हे ! हम साफ बात कहैबला लोग छी ! हम त सब लोग क साथ एक आसन पर बैसियहु नहि सकैत छियैक ! ताहि पर एहन सब कें बनायब अध्यक्ष ? कथमपि नहि !

चतुर्थ—मुदा, एकटा बात ई ठीके कहैत छथि । अहिना त आन भाषाभाषी आ' सरकार कहिते अछि जे मैथिली-वैथिली किछु नहि थीक— ई सबटा दरभंगिया ब्राम्हण सभक चालि थिकन्हि ! बेकार हल्ला क' रहल छथि ओ सब ! ताहि लेल कम-सँ-कम नीतियोक दृष्टि सँ ई आवश्यक अछि जे हम सब कहियहु-कखनहु दोसरो दोसर लोग कें अध्यक्ष बनाबी !

प्रथम—ठीक ! हम त एतबहि कहैत छलहुँ जे बनौक ने क्यो छोटे जाति मे सं अध्यक्ष ! नेतृत्व त हमरहि सभक हाथ मे रहत । अध्यक्ष क्यो रहय, नेता त 'निर्लोभ' जी रहताह !

तृतीत—से कोना ?

चतुर्थ—कियैक ? एहन एक गोटा कें अध्यक्ष बना दियौक जकरा नामो नहि

सही करै आबैक, बाजै नहि आबैक नीक जकाँ... बस्! और की चाही ? तकरा त हम सब उठै कहबैक त उठत, बैसै कहबैक त बैसत !

तृतीय—ई मुदा बेजाय नहि कहलहुँ !

द्वितीय—से अहाँ सब जे कहू— हमरा ई बात पचि नहि रहल अछि !

प्रथम—भाइ, युग बदलि रहल अछि। किन्तु त अहाँ कें पचाबहि पड़त। पहिने विशुद्ध घी खाइत छलहुँ। आब त वनस्पति घी खैबाक आदति बना लेलहुँ कि नहि ? तहिना ईहो...

चतुर्थ—आ' ई सब पद त अहिना देखाबैक लेल होइत छैक ! आब ओ दिन दूर नहि छैक जखन हमरा सभक मांग क पूर्त्ति हैत आ' धीरे-धीरे सब सरकारी संस्था मे हमरा सभक भाषा कें स्थान भेंटत ! कतेको संस्थान बनत सरकारी पाइ सँ ! से सब दय सोचू जे के कतय बैसब, कोन गद्दी पर ! बनै दियौक जकरा मोन होइक महासभा क अध्यक्ष !

तृतीय—हँ... ई त अहाँ विलक्षण बात कहलहुँ ! आब कहू यौ ! की कहैत छी ?

द्वितीय—स्-से... बात त नीके कहलहुँ, तखन...

तृतीय—आइ कालिह लोग कें ऊँच पदक लेल कत्तेक कठिन तपस्या करै पड़ैत छै, जानितहि छियैक ! ओकरा सभक साथ उठबा-बैसबाक मन नहियें करै त अपन-अपन घर जा' कए कनेक गंगा जल छींटि लेब, और की ?

[एहि बात पर सब क्यो हँसि दैत छथि। हुनका सब पर सँ प्रकाश हँटि कए मंच क बाम दिसि कनिके टा जगह पर पड़ैत अछि। भरत अर्ध शयित देखना जाइत छथि। जानकी बैसल रहैत छथि।]

जानकी—सुनैत छियन्हि हिनका सभक बातचीत ?

भरत—अहाँ कथी लेल ई सब सुनि रहल छी ? कनेक पटा रहू ने ! ई सब त होइते रहैत छैक !

जानकी—होइते रहैत छैक ? कियैक ? इयैह छन्हि हिनका सभक मैथिली प्रीति ?

भरत—स्-स्-स्-स् ! आस्ते ! सुनि लेताह ओ सब !

जानकी—[किछु काल चुप रहि कए] हमरा सभक भाषा-आन्दोलन कें की

एहन सब लोग सँ मुक्ति नहि भेंटि सकैत छैक ?

भरत—की कहैत छी जानकी ? इयैह सब त नेता छथि एहि आन्दोलन क !

जानकी—आइ अहाँ सँ त दोसरे बात सुनि रहल छी ! अहीं त कहैत छलियैक जे शरीर क जे अङ्ग सड़ि गेल हो तकरा काटि कए बाद द' देबाक चाहियैक ! तखन ? [थम्हैत] तखन हिनका सभक विरुद्ध क्यो किछु कहैत-करैत कियैक नहि अछि ? अहीं हिनका सभक सभा मे ठाढ़ भ' कए कियैक नहि किछु कहैत छियन्हि ?

भरत—[दीर्घ श्वास त्यागि, उठि कए बैसैत छथि ।] हम ? हम त हारल लोग मे सँ छी, जानकी ! जकरा खैबा पीबाक उपाय धरि नहि छैक, ओकर के सुनतैक ?

जानकी—[थम्हैत] सत्ये ! अहाँ कत्तेक बदलि गेल छी ! पहिलुका दिनक अहाँ, अहाँ क धधकैत कविता आ' आजु क अहाँ...

भरत—हम कोना किछु कहू जानकी ? किछुए मास मे ओ सभ महासभा क काजक लेल एकटा काजक लोग क नियुक्ति करैबला छथि । हम किछु कहितहुँ त 'निर्लोभ' जी गोसा जैतथि ! [थम्हैत] अहाँ त जानितहि छी आजुक दिन मे नौकरी एक बेरि गेला पर दोसर काज भेंटब कत्तेक कठिन होइत छैक !

जानकी—[किछु काल चुप रहैत छथि ।] अहाँ क ओ स्वर एखनहु हमर सपना क प्रधान पात्र बनि दिन राति घुरैत रहैत अछि—

'क्यो अछि जे एहि पृथ्वी क प्रत्येक तरु-तर
बारूद उफलि देमै चाहैत अछि;
क्यो प्रयास क' रहल अछि
पृथ्वी क इतिहास कें कनेक मोड़ि देबाक
क्यो अछि जे पृथ्वी क सब मनुष्य कें डरा कए
बर्फ बना देत...' *

---

* मूल बंगला काव्यांश–अमिताभ गुप्त (१६७७) 'एसो आमार घरे' (गांगेय पत्र प्रकाशन)

[दुनू किछु काल चुप रहैत छथि ।]

भरत—तखन हम जीवित छलहुँ, जानकी !

जानकी—आ' एखन ?

भरत—एखन हमर गिनती लहासे मे होइत अछि। हम एखन मृत छी, बेकार, आ' निष्क्रिय।

जानकी—[किछु काल चुप रहि कए] अहाँ कहने छलहुँ जे एम्हर किछु दिन पूर्व बहुत दिन पर एकटा कविता लिखलहुँ अछि। से हमरा सुनैलहुँ त नहि।

भरत—की सुनब ?

जानकी—सैयहु ! [थम्हैत] सुनाउ ने !

भरत—[किछु काल चुप रहि कए—] पछिलुका एक-दू वर्ष मे इयैह एकटा कविता हम लिखने छी। [किछु काल चुप रहि कए कविता-पाठ करैत छथि। कविता-पाठ आरम्भ हैबाक संगहि संग धीरे-धीरे आलोक मिझा जाइत छैक।]

आइ कालिह हमर शब्द
त्यागि देलक आपन देह,
वर्ण क मूर्धा कतहु हेरा गेल अछि;
अर्थ बदलि लेलक आपन भेष !
आइ कालिह 'हाथ' कहने हम 'माथ' बूझैत छियैक,
'तरुआरि' कहने ' मूल्य वृद्धि';
'मनुष्य' क अर्थ भ' गेल अछि 'जन्तु',
'वेद' क अर्थ 'विलाप', 'मंत्र' 'क्रन्दन',
'प्रेमिका' 'बिकाऊ वस्तु' कें कहैछ,
'मन्दिर' मणिकर्णिकाक 'श्मशान' सुनसान
'आवास' 'गर्भ' कहाइत अछि,
'गर्भ' पतित 'पथ' !

आइ कालिह हमर वाक्य सभ सँ
क्रिया झहड़ि जाइत छथि,
अव्यय भ' जाइत छथि अमितव्ययी;
विशेषण दोसर दुनिया क लोग जकाँ
देखियहु कए नहि देखैत छथि!
आइ कालिह हम छी एसगर
एकटा विशेष्य, उद्देश्य-विधेयहीन!
रहबाक लेल हमरा लग केवल उपसर्ग अछि—
रोगाक्रान्त, और गर्भ मे अछि सर्वनाम—
विकलांग।

आइ कालिह, हमरा घ वा ऊ पूछैत छथि कि
'भरत! अहाँ किनकहु सँ प्रेम करैत छलियन्हि'?
त हम कहैत छियन्हि—
'सदर्थक। हमर गर्भ मे प्रेमिका क पथ-पात।
तरुआरि सँ हाथ। हमर विकरण।
शिशुक लहास मन्दिर क मूर्त्ति।
प्रत्यह प्रार्थना।
पशु क मंत्रपाठ, वेदोच्चारण।
मनुष्य क नर मांस लोभ, मन्दिर क विनष्टि।
प्रेम शिशु क निहनन।'

ओ कहैत छथि,
बूझैत नहि छी अहाँ क भाषा, अहाँ क कथ्य,
की कहै चाहैत छी अहाँ?
हम कहैत छियन्हि,

नहि बूझब हमर बात, कारण
एकर बोध हैत सर्वस्व हेरैनहि सँ।
हम कहैत छियन्हि,
नहि बूझब हमर शब्द, कारण
अहाँ शोषक छी
आ' हम शोषित।
बाजि नहि सकब हमर भाषा मे, कारण
अहाँ क मुँह मे रक्त लागल अछि।

[कविता-पाठ क बाद मंच जखन पुनः आलोकित होइत अछि, तखन नन्दी आ' नारद भरत क घर मे बैसल देखल जाइत छथि। भरत मलिन वस्त्र आ' रुग्ण शरीर लए एक कोना मे ठाढ़ रहैत छथि। घर मे एकटा चौकी कें छोड़ि आर किछु नहि छन्हि।]

नारद—[भरत सँ] अहूँ बैसि ने जाउ ! [ई कहैत छथि, मुदा चौकी पर भरतो क लेल जगह बना देबाक विशेष कोनो प्रयास नहि करैत छथि।]

भरत—नहि, ठीक छी ! [थम्हैत] 'निर्लोभ' जी कखन ऐताह ?

नारद—[एकटा पान नन्दी कें दए दोसर आपन मुँह मे धरैत छथि। नन्दियो कनेक इतस्ततः क' कए पान मुँह मे धरैत छथि।] इयैह आबिये रहल हैताह ! जानितहि छी, कै मास पूर्व फंशन क लेल हुनका कत्तेक श्रम करै पड़लन्हि। ताहि पर एम्हर दिल्ली मे जा कए लोकसभा क सामने आन्दोलन क प्रदर्शन सेहो कैलन्हि ! कत्तेक जगह सभो कैलन्हि। तैं...

भरत—[अनुच्च स्वर मे] आन्दोलन क प्रदर्शन !

नन्दी—ओना ई कहू नारद भाइ, आइ ओ हमरे सब कें एखन कियैक बजौलन्हि ? आइ त साधारण सभा हैबाक बात छलैक।

नारद—अरे साधारण सभा त साधारणे होइत छैक। तकर पहिने ई असाधारण सभा बजौने छथि।

नन्दी—माने ?

नारद—माने बुझबा मे देर लागत। एखन त संघ मे दुइये वर्ष भेल कि नहि !

नन्दी—ताहि सँ की ? पहिने जतय रहैत छलहुँ ततहुँ त मैथिली क संघ-सोसाइटी मे छलहुँ ?

नारद—मुदा, ओतय 'निर्लोभ' जी सन नेता क संग मे त नहि रहलहुँ ! तैं हिनक काज करबाक पद्धति सँ परिचित नहि छी !

भरत—[निस्पृह स्वरें] नारद भाइ !

नारद—हूँ; कहू !

भरत—हम अहाँ सँ जे बात कहने छहहुँ से...

नारद—हूँ हूँ; सैह सब विषय पर त आलोचना हैत !

नन्दी—कोन सब बात ?

नारद—महासभा क काम एत्तेक ने बढ़ि गेल अछि जे सबटा काज क देखरेख करबाक लेल एकटा स्थायी कर्मचारी चाही हमरा सब कें। निर्लोभ जी कहैत छलथिन्ह जे संस्था क पास पाइ जखन अछिये, तखन कियैक ने एक गोटा कें राखल जाय ?

नन्दी—ई बड़ नीक विचार अछि!

भरत—अहाँ सब त जानितहि छी हमर हाल ! खैबा-पीबाक व्यवस्थे नहि रहल; ताहि पर जानकी बच्चा कें जन्म देबा सँ पहिनहि एत्तेक अस्वस्थ भ' गेलीह। अगल-बगल क लोग दयावश परसू हुनका अस्पताल मे नहि भर्त्ती क' दितथि त नहि जानि... [कहैत-कहैत आत्मसंवरण क' लैत छथि।] तैं हमरा जौं ई काज भेंटि जाय त...

नारद—अहाँ एत्तेक चिन्ता कियैक क' रहल छी ? 'निर्लोभ' जी कें आबै दियन्हु ने ! अहाँ तावत् कनेक चाह-जलपान क व्यवस्था करियौक ! जानितहि छी, 'निर्लोभ' जी भोजन-प्रिय छथि !

भरत—मुदा घर मे त... अच्छा, हम देखैत छी ! [ई कहैत भनसा घर सँ एकटा केतली नेने प्रस्थान करैत छथि।]

नन्दी—बेचारे भरत बाबू कें ई नौकरी भेंटि गेने बड़ नीक हैत !

नारद—मुदा दुःख क बात ई जे से हिनका भेंटतन्हि नहि।

नन्दी—कियैक ?

नारद—अहूँ बड़ सोझ लोग छी नन्दी भाइ ! जे एहि काज क लेल योग्य छथि तनिकहि भेंटतन्हि।

नन्दी—के छथि ओ योग्य लोग ?

नारद—रामशरण बाबू !

नन्दी—हुनका मे विशेष योग्यता की छन्हि ?

नारद—सब सँ प्रधान योग्यता भेलन्हि ई जे ओ 'निर्लोभ' जी क भागिन क सार क गौंआ छथि।

नन्दी—ई कोन बात भेल ? ई त सरासरि अन्याय थीक ! हम अवश्य एकर विरोध करब।

नारद—[हँसैत] अच्छा, ई त बताउ ! अहाँ रिटायर्ड कहिया धरि भ' जायब ?

नन्दी—[अकचका कए] कियैक ? एक साल मे !

नारद—आ' अहाँ कें कै गोट कन्या क विवाहक व्यवस्था करबा क अछि ?

नन्दी—तीन गोटेक... मुदा ताहि सँ...

नारद—[बाधा द' कए] और अहाँ क बालक शर्टहैंड-टाइपिंग सीखियहु कए आइ पाँच वर्ष सँ बेकार बैसल छथि, सेहो ठीक... नहि ?

नन्दी—हूँ !

नारद—अहाँ जानैत छी जे 'निर्लोभ' जी जौं एक बेरि कहि देताह त अगरवाल साहब आपन आफिस मे रखबा सकैत छथि ?

नन्दी—[माथ झुकौने] हूँ।

नारद—तखन अहूँ वैह लोग कें योग्य कहबन्हि जनिका 'निर्लोभ' जी योग्य मानैत छथि। [नन्दी चुप भ' कए बैसल रहैत छथि।] जनिका दय हम कहैत छलहुँ ओ बेचारे कोनो तरहें मैट्रिके टा पास कैलन्हि। आब अहीं कहू— ओ मैथिली क काज करब छोड़ि आन कोन काज क' सकैत

छथि ? और के हुनका काज देतन्हि ? ने टाइपिंग जानैत छथि आ' ने दू अच्छर शुद्ध अंग्रेजिए लिखि सकैत छथि। आ' हरो नहि जोति सकैत छथि, कारण मैट्रिक जे पास कैलन्हि !

नन्दी—[दबल स्वरें] मुदा भरत बाबू त एम० ए० पास छथि। आ' मैथिलीक सेवा त ओ कम नहि कैलन्हि !

नारद—सेवा त क्यो कम नहि कैलक नन्दी भाइ ! 'निर्लोभ' जीओ कम नहि कैलन्हि, तैं ओ कहैत छथि त हुनक भागिन क सार क गौंआ कें काज भेंटबाक चाहियन्हि। अहाँ कम नहि कैलहुँ, तैं अहाँ क बालक अगरवाल साहब क आफिस मे नौकरी करताह। रहल भरत बाबू क बात ! त हुनका लेल हम सब की कोनो कम कैलियन्हि ? अहीं कहू ! संस्था क दिसि सँ पाँच वर्ष पहिनहि हुनकर कविता सभक एकटा संग्रह छापि देल गेल छन्हि। कविते कवि क जिनगी होइत छैक। हुनक कविता छापि कए हम सब हुनका आपन जिनगी द' देलियन्हि ! और की चाहियन्हि हुनका ?

नन्दी—कविता जिनगी अछि, मुदा जिनगी मे कविते टा नहि होइछ, लोग कें भूखो-प्यास लागैत छैक। बेचारे भरत बाबू कें त एखन खैबाक उपायो नहि छन्हि !

नारद—तैं हम सब हुनका खुआ नहि देबन्हि। हुनका कवि रूप मे जे सम्मान कैलियन्हि सैह की कम भेलन्हि ? आ' अहाँ जे कहब हुनका पास किछु संचये नहि छन्हि से कोना विश्वास करब ? सैह होइत त ई डेढ़-दू मास हुनका कोना चललन्हि, एखन जे पत्नी बीमार भ' कए अस्पताल मे छथि तकर खर्चा कोना चला रहल छथि ? तैं ओ सब बात छोड़ू। [निर्लोभ जी कें प्रविष्ट होइत देखि] प्रणाम सरकार— आओल जाय।

निर्लोभ—प्रणाम। [नन्दी जी क दिसि देखैत] की नन्दी जी ? कहू, अहाँ क की हाल-समाचार।

नन्दी—जी, सब ठीके अछि।

निर्लोभ—[बैसैत-बैसैत] अहाँ क एक बालक क विषय मे नारद जी कहैत

रहथि। त ओकरा कोनो नौकरी-तौकरी भेंटलैक वा नहि ?

नन्दी—जी नहि— हम त अपने क भरोसें...। [चुप भ' जाइत छथि।]

निर्लोभ— [बैसि कए] बेस-बेस। बैसैत ने जाउ। [नन्दी-नारद दुनू गोटे बैसि जाइत छथि।] एम्हर संवाद सुनलियैक ?

नारद—कोन संवाद ?

निर्लोभ—संसद मे मैथिली क प्रश्न आइ भरिसक उठत !

नन्दी—सत्ये ?

नारद—क्यो कहैत छलाह जे इयैह दू-एक दिन मे ई प्रश्न उठत। मुदा एत्तेक शीघ्र से हैत तकर आशा नहि छल !

निर्लोभ—उठत नहि कोना ? हम सब पार्लियामेंट क सामने एत्तेक विक्षोभ-प्रदर्शन कैलहुँ, एत्तेक पत्र-अभियान चलैलहुँ, पुस्तक-प्रदर्शनी कैलहुँ, सरकारी और विरोधी नेता सब सँ भेंट-घाँट कैलहुँ, कत्तेको जुलूस निकलबौलहुँ— तखन ईहो नहि हैत ?

नारद—अहाँ नहि रहितहुँ त एतबाक होइत थोड़बे ?

निर्लोभ—नहि-नहि; अहाँ त बढ़ा कए कहैत छी। हम एसगरे नहि, विभिन्न संस्था क दिसि सँ आरो नेता सब रहथि !

नारद—सरकार ! एक जगह नेता सब जखन बेसी भ' जाइत छथि, तखन नेतो सभ कें नेता क प्रयोजन होइत छन्हि ! अहाँ नहि रहितहुँ त एत्तेक सब काज एक साथ होइत थोड़बे ? आ' से नहि होइत त सरकार एकर उपेक्षे करितथि।

निर्लोभ—एखुनका समाचार मे देखू, की कहैत अछि। सरकार की जवाब दैत छथि ताहि पर हमरा सभक हार-जीत क पता लागत !

नारद—[एतबहि मे भरत कें एक हाथ मे किछु जिलेबी आ' दोसर हाथ मे चाह सँ भरल पात्र नेने प्रविष्ट होइत देखि] इयैह, भरत बाबू चाय ल' कए आबियो गेलाह। ओहि ठोङा मे की नुकौने छी भरत बाबू ? [भरत ततबा मे लग पहुँच गेलाह।]

नन्दी—[भरत जिलेबी नारद क सामने रखला उत्तर] जिलेबी अछि।
[नारद क दिसि बढ़ा दैत छथि।]

नारद—लेल जाय। [निर्लोभ कें दैत छथि। तावत् भरत घर क कोना सँ किछु कप आनि कए ताहि मे चाह ढार' लागैत छथि। तकर बाद सब कें कप देमै लागैत छथि।]

निर्लोभ– [चाह पीबैत पीबैत] एक दूटा काज क बात भ' जाय !

नन्दी – हँ !

निर्लोभ—अपना सभक संघ क नवका कार्यकारिणी तैयार करबाक समय आबि गेल अछि। एहि बेरि हम सब आन सब बेरि सँ पछुआयले छी।

नन्दी – त एहि मे की अछि ? एकटा दिन स्थिर क' कए साधारण सदस्य सभक भोट सँ निर्वाचन भ' जाइक।

नारद—निर्वाचन ? [उच्च स्वरें हँस' लागैत छथि। निर्लोभ मृदु-मृदु हँसैत छथि।] नन्दी जी, अहाँ सत्ये बड़ काँच छी एहि सब विषय मे [

नन्दी – से कियैक ?

नारद—संघ मे जे शान्ति अछि सबटा नष्ट भ' जायत।

नन्दी—से कियैक ?

निर्लोभ—कारण, एहि संघ मे जत्तेक ने सदस्य अछि, तकर दुगुन्ना गुट्ट अछि। एक दोसरा कें देख' नहि चाहैत अछि। निर्वाचन सँ प्रत्येक गुट सँ एकहु गोटें जौं कार्यकारिणी मे आबि जाथि त प्रतिदिन आपसे मे मारि करै लागताह।

नारद—लैं, ई सबटा निर्वाचन हमहीं सब क' लैत छी।

निर्लोभ—जे हो ! त नारद जी, सभक विषय मे साल भरिक रिपोट-तिपोट त अछिये अहाँ क पास, तखन अहीं ठीक क' लेब ककरा-ककरा छाँटै पड़त। हँ, एहि बेरि नन्दी जी कें कार्यकारिणी क सदस्य बना दियन्हु।

नन्दी—नहि नहि, हमरा कियैक ?

निर्लोभ—देखू नन्दी जी ! हमरा एखन संघ मे आपन लोग किछु चाही।

पछिलुका साल किछु गलत लोग कें लेला सँ बड़ कष्ट भेल छल।

नारद—हुनकहि सभक प्ररोचना सँ किछु पत्र-पत्रिका हमरा सभक विरोध मे लिखलक अछि।

निर्लोभ—भने अहाँ मोन पाड़ि देलहुँ। निर्मल जौं ऐताह त मोन पाड़ि कए कहि देबन्हि जे एकटा छौंड़ा सँ, कि ने नाम थीक... हँ, 'सरल' वैह जे कविता करैत अछि, तकरा सँ हरिदेव झा क विरुद्ध जे लेख लिखबौलहुँ—से एहि बेरि क अङ्क मे द' देथि।

नन्दी—से की ? इयैह गत अङ्क मे त हुनक प्रशस्ति कैल गेल छलन्हि !

नारद—तैं लिखल त नहि गेल रहन्हि जे कहियो निन्दा नहि कैल जैतन्हि। गत मास धरि ओ ठीक छलाह। एम्हर आबि कए हमरा सभक विरुद्ध अंट-संट बाजै लागलाह। निर्लोभ जी सन नेता क विषयहु मे तेहन ने निन्दात्मक बात सब कहलन्हि जे जुनि पूछू।

निर्लोभ—आ' हुनक पुस्तक क लेल जे पाइ पठैबाक बात छलन्हि से पठौलियन्हि नहि ने ?

नारद—जी नहि !

निर्लोभ—तखन ठीक अछि। तकरो बन्द करू! देखैत छियन्हि ओ कत्तेक दूर जाइत छथि।

नारद—से हम बूझि गेलहुँ ! एखन [इङ्गित सँ भरत कें देखा कए।] संघक आफिस क विषय मे...

निर्लोभ—हँ; [भरत सँ] भरत बाबू!

भरत—[दुनू ठेंगहुन पर माथ धरने दोसर दिसि मुँह घुरा कए बैसल रहथि, किन्तु निर्लोभ जी क बजाहटि सुनि कए हुनकहि दिसि देखैत छथि।] जी !

निर्लोभ—सुनलहुँ अहाँ ई घर खाली क' रहल छी।

भरत—आइ दू महीना सँ नौकरी नहि अछि। ने खैबाक ठीक अछि, ने रहबाक। मालीक नोटिस देने अछि। उधार-करज क' कए कहुना जानकी क इलाज......।

नारद—से सब नहि पूछने छथि। पूछलन्हि जे की अहाँ सत्ये...

भरत—हँ, खाली त एक समय करैयेटा पड़त। ई घर राखब त एखन हमरा लेल विलासिता हैत।

निर्लोभ—तखन त ठीके अछि। एहन जगह कत्तहु नहि भेंटत। सब कें चिन्हलो छैक आ' ई शहर क मध्य भागो मे पड़त।

भरत—ई घर अहाँ ल' रहल छी की ?

निर्लोभ—नहि, संघ लेत।

नारद—से एक्के भेल।

निर्लोभ—छोड़बाक पहिने जौं अहाँ मालीक सँ कहि...

भरत—हम हुनका कोन मुहें कहबन्हि ? ई दू-तीन मास क भाड़ा त द' नहिये सकलियन्हि ! हमर बात ओ सुनताह कियैक ?

निर्लोभ—से ई कैक मास क भाड़ा संघ क दिसि सँ द' देल जैतैक। ताहि लेल चिन्ता नहि करू ! एखन त कत्तहु घर भेंटबे मोसकिल होइत छैक ! से भेंटनहु पगड़ी त देमै पड़िते छैक ! त कहिया धरि अहाँ खाली करब ?

भरत—जहिया धरि हमर सबटा आस क तार टूटि नहि जाय।

नारद—तकर माने ?

भरत—जा धरि अहाँ चारि गोटें हमरा सहायता करब बन्द नहि क' देब।

नन्दी—नहि नहि, से कियैक ? [नारद क्रुद्ध दृष्टियें नन्दी दिसि ताकैत छथि। नन्दी चुप भ' जाइत छथि।]

निर्लोभ—हम सब कोना अहाँ क सहायता करब ? अहाँ क चारि-पाँच मासक बाकी भाड़ा त हम सब दैये रहल छी !

भरत—संघ ई घर लेत, ताहि लेल हमरा कोनो क्षोभ नहि। जखन कहियो छोड़ै पड़बे करत संघे क लेल कियैक नहि छोड़ू ? तखन नारद जी कहने छलाह जे जौं अहाँ चाही त हमरा संत्र क ओ स्थायी कर्मचारी क नौकरी भेंटि सकैत अछि। [एहि बात पर निर्लोभ आ' नारद अपना मे दृष्टि विनिमय करैत छथि।] तैं अपने जौं चाही... त...

निर्लोभ—[गला कें खखारैत] बात ई छैक जे एहि छोट पद्क लेल अहाँ कें...

भरत—नहि नहि; एहि मे हमर आत्म-सम्मान क कोनो बाते नहि ; पेट मे अन्न रहय तखन ने से चिन्ता होइत छैक !

नारद—[माथ हँसोथि कए] नहि, माने निर्लोभ जी कहैत छलाह जे अहाँ एहि काज क योग्य... माने, ई काजो अहाँ योग्य नहि अछि।

भरत—तकर माने, हमरा ई काज नहि भेटत...?

निर्लोभ—[टोकैत] असल बात ई थीक जे [सब क्यो हुनका दिसि ताकैत छथि। ओ किछु थम्हि कए कहैत छथि।] अहाँ त जानिते छी जे मिथिला मे कत्तेक युवक अहिना बैसल छथि। तैं हम सब ठीक कैने छी जे एहि पद पर एहन कोनो युवक कें राखी, जकरा बेसी पढ़बाक सुविधा नहि भेंटल हो ! देखियौक ने— ओकरो त जीबाक छैकै !

नारद—तकर अलावे हम सब चाहैत छलहुँ जे जकरा राखी, ओ सब दिन रहय, किछु दिन काज क' कए छोड़ि नहि दैक।

निर्लोभ—ठीक ! [नारद क दिसि प्रसन्न दृष्टियें देखैत] आ' अहाँ कें त काल्हि नीक नौकरी भेंटत त अहाँ चलिये जायब। तकर अलावे काज एहन ने अछि जे...

भरत—की एहन काज अछि जे हम नहि क' सकब ? एत्तेक दिन सँ संस्था मे छी, कोन बात हमरा सँ गुप्त नहि रहल आ' कोन गुप्त बात हम नहि जानलहुँ ? तैं...

निर्लोभ—काज माने इयैह चिट्ठी पत्तर लिखै पड़त आ . !

भरत—हमरा सँ त पत्र क माध्यमे सब सँ सम्बन्ध अछिये। सैह कनेक बेसी करै पड़त।

नारद—नहि नहि; आसल त हिसाबे-किताब सम्हारब...!

भरत—एतबाक कियैक नहि क' सकब ?

नारद—[माथ नोचैत] नहि माने परिश्रम त डबल करै पड़त कि नहि, तैं !

भरत—डबल परिश्रम माने ?

नारद्— माने इयैह— ध' लियह, जौं अहाँ कें दू बेरि कए हिसाब क खाता लिखै पड़य— असल आ' नकल।

भरत—[विस्मित भए] तकर अर्थ ?

निर्लोभ—देखियौक ने— टैक्स-तैक्स क लेल किछु बाम-दहिन करै पड़िते छैक, किछु एडजस्ट करैयेटा पड़ैत छैक।

नन्दी—मुदा तकर अर्थ त लोग कें ठगब भेल ?

नारद्—नन्दी जी ! [डाँटबाक स्वर मे] जानैत नहि छी, ताहि विषय पर कियैक बात करैत छी ?

भरत—ओ कोन अन्याय बात कहलथिन्ह ? लोग सँ जे टाका लेल जाओत, तकर दूटा हिसाब राखने त सन्देह भैये सकैछ...।

नारद्—सन्देह ? 'निर्लोभ' जी सन नेता पर सन्देह करैत छी अहाँ ?

भरत—आइ लोग भगवानो पर सन्देह करैत अछि।

निर्लोभ—बात ई अछि भरत बाबू— पाइ हम छूबिते नहि छियैक ! तखन हमरा विचारें संघ क जे एकनिष्ठ कार्यकर्त्ता छथि, जे आपन व्यक्तिगत काज क क्षति सहियहु कए संघ क काज करैत छथि, तनिका लोकनि कें जौं ताहि सँ किछु नहि भेंटन्हि त...! तकर अलावे जे सब हमरा सब कें बेसी पाइ दैत छथि, कखनहु-कखनहु इनकमे-टैक्स बला सभक डरें ओ सब आपन नामो नहि देखाबै चाहैत छथि। तें...

भरत—ई त सरासरि चोरी थिक।

नारद्—[गरजैत] भरत बाबू ! ककरा की कहि रहल छी ?

भरत—ठीके कहि रहल छी। ओह !! [दुनू हाथ सँ मुँह झँपनें] हे ईश्वर ! दिनोदिन हमर चारूकात क पृथ्वी एतेक कुत्सित कियैक होइत जा रहल अछि ?

नारद्—जकरा सब कें अहाँ चोर कहि रहल छी, अहूँ ताहि सब मे सँ बाद नहि जाइत छी !

भरत [चौंकैत] की ?

नारद – हँ; अपने क पुस्तक क हेतु अपने कें जे पाइ देल गेल छल, सेहो वैह [क्रूर जकाँ हँसैत] दू नम्बर ऐकाउन्ट क। से लेब' मे त अहाँ कें द्विधा नहि भेल।

भरत – ई... ई जौं हम जानितहुँ, त ओहि पुस्तक क काँपी सबटा कें आगि मे फेंकि दितहुँ। छी... छी! कत्तेक लज्जा क बात!

नारद— और सोचि कए देखू— अपने गत वर्ष एकटा चन्दा क रसीद बही हेरैने छी। कोन ठीक अछि अहाँ तकर पाइ गायब कैलहुँ कि नहि।

भरत—नारद जी! मुँह सम्हारि कए बात करू! भरत मिसर भूखले मरि जायत, मुदा चोरी क पाइ पर पेट नहि भरत।

नारद—कोना कहू! ई दू मास बिनु खैनहि छी से त विश्वास नहि होइत अछि! पत्नी क चिकित्सा बिनु पाइ क होइत अछि से हो विश्वास नहि होइत अछि।

भरत—ई सब कोना भ' रहल अछि, से अहाँ कें कहि कए कोन लाभ? पुस्तकक लेल जे पाइ हमरा देने छी, ताहि पर हम थूकैत छी।

नारद—पाइ त खा गेलहुँ, आब शून्य मे थूकला सँ लाभे की?

भरत—जे टाका हमरा देने छी, तकर पाइ-पाइ हम घुरा देब!

नारद—कोढ़ि कें फुफकारे बड़।

निर्लोभ—नहि नारद जी, अहाँ हिनक क्रोध क कारण नहि बुझलहुँ। हिनकर ओही ऐकाउन्ट सँ हिनक दुइ मास क भाड़ा क संगे संग आरो किछु द' दियन्हु! मैथिली आन्दोलन मे हिनक अवदान कें हम सब कोना बिसरि सकैत छियन्हि?

भरत—बन्द करू एहन सब बात! [निर्लोभ कें] अहाँ आपन ओहि घृणित ठोर सँ आन्दोलन सन पवित्र शब्द क उच्चारण जुनि करू।

निर्मल—[नेपथ्य सँ हपसल जकाँ] नारद भाइ, नारद भाइ। [प्रविष्ट भए] नारद भाइ! निर्लोभ जी!!! हमरा सभक जीत भ' गेल। सरकार मानि लेलक। आब हमरा सभक भाषा, संस्कृति आ' साहित्य कें क्यो नहि

दबा सकैछ— आब हमरा सभक एत्तेक दिन क आन्दोलन शेष भेल अछि।

नारद—सत्ये ? [बाहर कोलाहल क स्वर धीरे-धीरे स्पष्ट भ' रहल अछि, जेना बहुत लोग एम्हर आबि रहल होथि।]

निर्लोभ—ई त हैबे करत ! जतय धर्म अछि, ततय जय नहि हैत त और कतय हैत ? [एतबा मे बाहर कोलाहल क शब्द तीव्रतर भ' उठैत अछि।]

नन्दी—ई कोलाहल क शब्द कतय भ' रहल अछि ?

नारद—मरिसक आस-पड़ोस क मैथिल भाइ-बन्धु लोकनि निर्लोभ जी कें सम्मान प्रदर्शन क हेतु आबि रहल छथि।

निर्मल—हमरा सभक नवजात अधिकार क लेल खुशी मनाबै आबि रहल छथि सब क्यो !

नारद—[कोलाहल क शब्द घर क पास आबि गेला उत्तर] देखू त के सब छथि। [निर्मल जैबा लेल उद्यत होइत छथि।] अच्छा, ठहरू; हमहीं जा रहल छी। [द्वार क पास जाए] अरे, ई के छथि ? [एतबा मे अस्त-व्यस्त जकाँ सुधीर क प्रवेश।]

सुधीर—[दरबाजा क सामने नारद कें देखि] भरत कतय छथि ? [कहैत-कहैत अगुआ कए भरत कें देखि] भरत ! सर्वनाश भ' गेल अछि !

भरत—[भावशून्य जकाँ मुख घुरा कए] आब कोन सर्वनाश बाकी अछि ? अहाँ कोन नव खबर देमै आयल छी सुधीर दा' ?

सुधीर—[आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि।] भरत ! सन्तानक जन्म त भेल, मुदा तकर बाद... जानकी ! सब शेष भ' गेल अछि भरत। [बाहर सँ आबैत सब कोलाहल अकस्मात बन्द भ' जाइत अछि—] जानकी नहि अछि भरत। जानकी बहिन विदा भ' गेलीह ! [ठीक ओही समय एकटा पुरुष-कंठ सँ 'जानकी' क नाम ध' कए एकटा तीव्र चीत्कार सुनल जाइछ। सुधीर आ' भरत के छोड़ि आन सब क्यो जड़ीभूत भ' जाइत छथि। ओहि चीत्कार क प्रतिध्वनियो एक समय चुप भ' जायत, संगहि

संग भरत हँसब शुरू करत। भरत क हँसी क संग कोलाहल क शब्द पुनः धीरे-धीरे बढ़ै लागत। सुधीर बर्धित कोलाहल आ' भरत क पागल जकाँ हँसी क दृश्य सह्य नहि क' सकैत छथि। ओ भरत क नाम ध' कए एक बेरि पुकारैत, ओकरा होश मे आनबाक लेल ओकर गाल पर एक थापड़ मारैत छथि।]

भरत—[भरत चुप भ' जाइत छथि एवं सुधीर कें दुनू हाथ सँ पकड़ि कए कहै लागैत छथि।] सुधीर दा', जानकी कहैत छल हमरा सभक एहि सन्तानक नाम राखू 'आन्दोलन'। [हँसैत-कानैत] कहू त कहू त कत्तेक विचित्र सौख छल ओकर। से देखू !!! हमरहि घर मे आन्दोलन भेल, जानकी क हेतु— आ' जानकिये नहि रहलीह! कहू कत्तेक बड़का प्रहसन भेल? तैं हँसब नहि त की? [भरत पुनः हँसब शुरू करैत छथि और पागल जकाँ कहैत छथि।] "आन्दोलन भेल; जानकी क लेल। आ' जानकी? —चलि गेलीह! [ई कहैत-कहैत हँसैत रहैत छथि। एहि बीच मे कोलाहल क स्वर सँ भरत क स्वर झँपा जाइत छन्हि। कोलाहल क मध्य नाराबाजी आरम्भ भ' जाइछ। उपस्थित अन्यान्य चरित्र सब एहि नाराबाजी मे योगदान दैत छथि। भरत क हँसी क्रमशः उच्चतरे भेल जाइत छन्हि। नारा क शब्द सब ताहू सँ मुखर भ' रहल अछि—

मैथिली भाषा जिन्दाबाद! जिन्दाबाद, जिन्दाबाद !!
हम्मर भाषा अमर हो! अमर हो, अमर हो !!
मिथिला क नेता निर्लोभ जी, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद !!

अट्टहास और नारा अद्भुत भावें मिश्रित भ' जाइत अछि।]

जवनिका-पात

लेखक परिचिति :

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

भाषाविज्ञानक सान्मानिक स्वर्णपदक प्राप्त स्नातक,
कलकत्ता विश्वविद्यालयक १९७२ क ईशान स्कालर।
भाषाविज्ञानक स्नातकोत्तर अध्ययनहु मे स्वर्णपदकप्राप्त।
एखन दिल्ली विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान विभाग मे
यू० जी० सी० फेलो।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ :
कवयो वदन्ति (१९६९, मैथिली कविता-संकलन)
अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संकलन)
नायकक नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)
एक छल राजा (१९७३, मैथिली नाटक)
नाटकक लेल (१९७४, मैथिली नाटक)
प्रत्यावर्त्तन (१९७६, मैथिली नाटक)
रामलीला (१९७७, मैथिली नाटक)
आन्दोलन (१९७७, मैथिली नाटक)
जनक आ' अन्य एकांकी (१९७८, एकांकी-संग्रह)

स्थायी निवास :
ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिला—सहरसा।

वर्त्तमान पत्राचारक पता :
भाषाविज्ञान विभाग, आर्टस फैकल्टी एक्सटेन्शन,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७

अनुत्तरण

—नचिकेता

हमर ठीक सामने राखल ऐना मे पूर्णरूपें 'हम' बनि कऽ जे रोज बैसल रहैछ हमर सामने, जकर नाम थिक अजय, ओ पारदर्शी पानपात्र क उन्मुक्त नग्नता क अभ्यन्तर सँ एकबेरि आङुर पैसोलक आ' बुझल नशा जमल अछि। तकरबाद ओहि प्रमत्त आङुरक आँखि देखतहि रहि जाइछ निस्पन्द भ' कए। आङुर देखैत अछि—पानपात्रक प्रात्यहिक पारदर्शिता, देखैछ पान पात्र क कंठ तर पड़ल रंगीन शराबक लोभी आँखि चुम्बन केर प्रतीक्षा क' रहल अछि तीव्र तृषा ल' कए। तृषा' हँ अजय कें मोन पड़ल ओकर स्त्री क नाम। आ मोन पड़तहि जेना आ ऐना मे अपना कें मुँह दूसि कए कहि उठल, 'ऐ अजय' तृषा तोहर स्त्री थिकीह अथवा स्त्री क नाम ?' मोने मोन अजय जबाब देल, 'नहि जनैत छी; भरि जिनगी तँ तृषा-नाम क हिउजय पर हाथ फेरिते बीति गेल।' ई सुनि पानशालाक सभ ऐना मधुर निष्ठुर शब्दें हँसि देलक। अजय ओहि शब्दक चित्कार सुनि चारूकात देखलक क्यो ई शब्द सुनि त नहि लेलक, ओकरा दुश्चिन्ता भेलैक। चारूकात मुँह फेरि ओ निश्चिन्त भेल, नहि। निश्चिन्त होइतहि ओकरा फेरो वैह नाम मोन पड़ल—तृषा, तृष्णा, तृषित। हँ, एहि मुहुर्त्त मे सब क्यो तृषित अछि, चारूकात क मातल ठोर क भीड़ तृषित अछि; कियैक त ओहिसभ क प्रचुर तृष्णा बुझल अछि। अजय तृषित अछि, कारण ओ 'तृषा' शब्द क जीवन भरि उपभोग केने छैक।

और तृषा स्वयमो तृषित छैक, जकर कारण क खोज मे बहिराए क सब क्यो क्लान्त, रौद्राक्त भ' गेल छथि। कारण सबकें आब एहि बातक पता चलि गेल अछि जे स्वयम् तृष्णा अपन कारण-कस्तुरीक कामना मे उदग्र,

उग्रतर भ' उठैत अछि। तें मात्र एतबहिटा अजय आ' तृषा जनैत छथि जे तृषा चाहैत छलीह ककरहु पर विजय प्राप्त कर' आ' अजय चाहैत छल जे ओकर समस्त तृषा क तृप्ति घटय।

दुनू गोटा मे सँ क्यो से नहि पाओल, जे ओ सब चाहने छल। तें, दुनू गोटा क मध्य फाटल नुआ सी रहल छल एकटा तात्क्षणिक सहावस्थान क सूत, यद्यपि दुनू गोटे जनैत छल, एहि क्षणिकता क दैर्घ्य एकटा सम्पूर्ण जिनगी सँ कम नहि। दुनू इहो जनैत छल जे दुनू कें एके संग रह' पड़ि रहल अछि आ' रह' पड़त। और यैह आवृति क कोखहि मे जन्म लैत अछि एकटा, शिशु जकर मात्र एकहिटा नाम भ सकैछ आ' ओ अछि 'स्वाभिवकता'। कियैक त, अप्राप्तिक घर्षण सँ अजय क एकटा पैर पंगु भ गेल अछि आ' वैह क्षयशीलता प्रतीक्षिता तृषा क मोन क ताख पर जमा कैलक अछि मेद क स्थूलता।

अतएब, प्रतिदैनिक आवृत्ति क हाथें जिनगीक दिन सब कें समर्पित कए अजय अपन पंगुता क संग सोचैत छल गंगा क बन्हाओल घाट क पीठ पर क्रैच कें राखि। किछु दूर क एकटा पत्थरक एकटा चबुतरा पर बैसि तृषाओ सोचैत छलीह तरंग सभक संग। सोचैत सोचैत चिन्तित तरंग सभ गर्भस्थ बालु-माटि कें धकिया धकिया कए ल' अबैत छल अजय क पैरक तर। आ अहिना अजयक पैर क तर रोज एकटा जटिल पर्वत निन्न तोड़ि जागि उठैत छल। ओहि पहाड़ क कन्हा चौरंगीक उच्चतम सौध क उड़ैत केश क प्रान्त भागहु सँ ऊपर चुपचाप ठाढ़ रहैत छल। आ' गंगा क ओहि पार क बाकी तरंग सब तरंगणक सङ षड़यन्त्र कए अपन अपन तनुलता सफेन वन्या सँ स्नान करा कऽ फूलक बिपुलता सँ सजबैत छल, जे देखि तीरभूमि क छोट बड़ महल सभक छातीक मध्य जगैत छल सकाम उल्लास क कल्लोल, एकटा अतिरपित तृषा। और वैह कल्लोल क कुहकजाल मे ओझरा कए विस्तृत बालुका राशि बनि जाइत छल हमरहि हृदय जकाँ बिस्तृत आ' शून्य। तृषाक स्तनक जङ्गला मे सँ कहियो झाँकि कए ओकर हृदय कें हम नहि देखलहुँ।

तैइयो दुनू गोटे चलि जाइत छलहुँ ओहि पार, नदी पार भ' कए सैकत पर। तीरभूमि पर ठाढ़ भए देखेत छलहुँ छोड़ि आयल पहाड़ सभ क दिसि, कि तखनहि पहाड़ सभ क क्लान्त आ' निरासन्न दृष्टिपात निराश करैत छल हमरा सब कें। हमरा सब कें क्षिन्न होइत देखि एकटा जिज्ञासु हवाक लहर दुनू क बीच घुमैत फिरैत छल रातुक तरेगण निबिष्टचितें ओकरा सभक निजी पद्धति मे हमर पङु पैर सँ तृषा क जानु क दुरत्व नापैत छल। ओहि सैकत पर तखन हम एक गोट निष्फल पुरुष, मूरी गोंति क्रैच क कलम सँ बालु पर किछु लिखैत छलहुँ। और बसात बार बार ओहि रेखा कें मेटा दैत छल। ओ तखन आन दिस आँखि बिछा कए अपन काम्य पुरुष कें खोजैत छलीह, जे ओकरा गछने छल जे ओ एक दिन आओत, यद्यपि लेहित देह क खोज मे ओ नहि औताह, ई सब तृषा जनैत छलीह, हमहूँ जनैत छलहुँ, तथापि।

हमर दृष्टिओ एहन सब समय मे अन्यमनष्क भऽ देखैत छल पहाड़ क दिसि, पहाड़ क गाछ बिरीछ क दिसि। कखनहु नदी क देह क ऐना मे कोनो परिचित मुख क फाटल छवि टांगल रहैत छल। ओहि पारक पहाड़ सब अतिबृद्ध पृथ्वीक विवर्ण कुब्बर बनि जाइत छल। नहि जानि कियैक लगैत छल, हमरहि जकां ई पृथ्वीयो दौड़ल चलल जाइत अछि आ' जाइत जाइत पथ मे कतहु सूर्य कें हेरा दैत अछि। तखनहि हम तृषा कें कनैत देखैत छलहुँ। तृषा कनैत छलीह आ' सैकत बालुसभ काँपि उठैत छल ओहि निःशब्द चित्कार सँ। हम तखन प्रात्यहिक अभ्यासानुसार मोने-मोन आवृति करैत छलहुँ, 'तृषा' हमर स्त्री! अहाँ जिनका चाहैत छी ओ औताह, ओ आबि गेल छथि; देखैत नहि छी, पहाड़क स्तन पर हुनकर समर्थ दाँतक चेन्ह' और वोहो जेना नवीना प्रेयसी जकाँ भौं नचा कए पुछैत छलीह. 'सत्ये ?'

हमसभ प्रतीक्षा प्रतीक्षा मे पैदल चलैत रहलहुँ। चलैत चलैत पहुँचैत छलहुँ पलाशबन क आङ्गन मे, जतय सब किछु छल लाल, कामना क अस्थिर उत्तेजना मे रक्ताभ छल सभ क गाल। बिसरि जाइत छलहुँ

ओहि अस्थिरता क जीवन मात्र एकहि राति। ई भुला दैत छल कुश क वन क बीच एकटा चिरस्थिर देबदारुक उठायल आङ्र। ओतहुका उगल जंगली घास पात और लतासब हमरा दुनू कें कोनो अदृश्य वन्धन मे बान्हि लैत छल आ' हवा क झोंका फिसफिसा कें कहैत छल, 'नहि नहि नहि जाय देव—नहि।' ई सभ देखि एकटा बांझ नारी क तृष्णा जकर नाम थीक तृषा, सोचैत छलीह—ओकर पुरुष अवश्य आओत। चारूकात क गाछो—बिरीछ सभ जेना सान्त्वना दैत छल—ओ आओत, ओ आओत, देखि लेब, ओ अवश्य आओत।

हमरा सभ क पत्थर क चबुतरा क चारूकात छिड़िआयल रहैत छल ज्योत्स्नास्नात वनस्थली, प्रकृतिरानी क छोट छोट गहना जकाँ। कोनो अनजानल चिड़िया क डेन क झटपटाहटक अढ़ सँ कयों जेना खबरि करैत छल—ओ आबि रहल छथि। आर संगे संग पार्श्वप्रकृति चंचल भ' उठैत छल, शुरु भ' जाइत छल हर पात मे खसखसाहट, आ' प्रकृति क कल्पना। बुझाइत छल, जेना सब कयो अतिम बेरि क लेल सजि लैत अछि! तकर बाद प्रतीक्षा क स्तब्धता निःशब्द रहैत छल आशा मे। नहि जानि कखन उतरि आयत दयित आकाश नक्षत्र खचित वासन्ती वस्त्र मे। तृषा तखन नक्षत्र गनैत रहैत छलीह। आ' अपना दिसि देखतहि लगैत छल जेना हम सुन्दर भ' गेल छी—हम सुन्दर, हमर पैर सुन्दर; तृषा सुन्दर, तृषा क प्रेमिक सुन्दर। हम जकरहि दिसि देखैत छलहुँ, सैह सुन्दर भ' जाइत छल। ओहि सौन्दर्य क स्रोत मे बहि कए चलि जाइत छलहुँ कत्ते क नगर-बन्दर पार क' कए एहन देश मे, जतय लोभ नहि, दुःख नहि, क्षोभ नहि, राति नहि, नहि कोनो राति क यंत्रणा। ओतय जौं किछु छल त मात्र आनन्द—आनन्दलोक। ओहि निसीम आनन्द कें हम चाटैत रहैत चलहुँ तृपित जकाँ आ' कि तखनहि।

तखनहि काग क कर्कश क्रन्दन सँ प्रात्यहिक सपना टूटि जाइत छल, टूटैत छल सूर्याश्व क खूर क शाब्दिक आघात सँ। आ' अजय-तृषा देखैत छल—पछिलका राति क मातल बसात, देवदारु, कुश आ'

पलाशवन पड़ा गेल छल चुप्पे-चाप। तृषा क आखि मे ओहि सभ समय जमल जलरेखा अविकृत पड़ल रहैत छल। तकर बाद अजय उठि कए ठाढ़ होइत छल, हँसबाक व्यर्थ चेष्टा करैत कहैत छल, 'देखि लेब, ओ कालिह अवश्य औताह।' और आइयो ओ नियमपूर्वक वैह बातक आवृत्ति कैलक, यद्यपि दोसर पत्थर क चबुतरा आइ पहिलका घेरिकलेल शून्य छल।

कारण, तृषा कें आइ हम, उर्फ अजय चौहन, बहुत यत्न ल' कए गर दाबि कए अपन बेडरूम क अलमारी मे मोटका ताला क अढ़ मे नुकाय आयल छी।

——

अरुणक उद्घोष

श्री लूटन ठाकुर 'ललित'

जे अहाँ चाहै छी
से भ जयतइ।
आ जे हम चाहत छी
से नइ हैतइ!
के कहलक ई बात?
हम किन्नहु नहि पतिआयब
हम किन्नहु नहि धोखा खायब
की चाहइत छी हम
से बूझल अछि हमरा,
से किन्नहु नहि असंभव
बजाउ, बजायब जकरा,
विश्व स्तर पर

आत्मकथन

नचिकेता

त चलू आब अहाँकेँ अप्पन मनक बात कहैत छी। एहन किछु जकरा कहबाक लेल हमरा, अहाँकेँ—कपालकुण्डले ताकऽ पड़ल बंद कारखानाक बाहर, हड़ताल पर तुलल कामगारक सभामे, नहि तऽ जननेता ले, ठाढ़ि स्वागत-गीतक लेल जुटायल गेलि गीतहारिलोकनिक भीड़ मे—अथवा, आने कतहु–चीन सँ कोचीनक भीतर–जतय कतहु मदारी पढ़ि रहल हो हमरे कविता आ हम फराक पहिरने, आँखि मिचकैत, कमर मे रस्सी—त चलू आब अहाँकेँ कविता नहि, आने किछु बात कहै छी।

ओना देखल जाय त कहबाक लेल बहुत किछु नहि अछि। एहन किछु रस नहि अछि बांकी जकरा दय तार्किक किछु बजने नहि छथि—ध्वनि आ अलंकारक अऽढ़ मे। एहन किछु शब्द नहि अछि बाँचल जे क्यो ने क्यो छुता नहि देलक। प्रहार कोनो बांकी नहि रहल जे हमर अहाँक माथ पर नहि पड़ल। ने नामे एहन कमाओल जे बदनामीक लोकगीतो लिखैं' क्यो हमरे नाम! बड़ गद्यमय रहल जीवन यै, तखन कोना किछु नव बात कही—त चलू आब तैयहु अहाँकेँ गद्यक चहारदिवारीक बाहरेक कोनो बात पूछैं छी, भऽ सकैछ बेजाय नहि लागत!

कोन पुरुष वचन मे छी ओझरायल जे कालक ल-कार मे छी बंद अरण्यक भीतर? कोन कापालिक लिखलक अछि अहाँक विशेषण-रेखा—जकरा ने क्यो बदलि सकैछ आ ने मेटा सकैछ - अव्यय जकाँ? कोन सर्वनाम उघाड़ि नेने अछि परिधेय अहाँक, विशेष्यक सिंहाचल सँ उतारि केँ ठाढ़ कऽ देलक अछि सर्वजनीन जमीन पर? अछि क्यो जे उपसर्ग देखि अहाँक बूझै मनक अन्तः स्थिति? ई कोन पोरुषक जटाजाल मे छथि बान्हि लेने पाणिनि नहि अहाँक पाणि की हम अहाँ सँ किछुओ बाजी त ओ करताह चीत्कार, धिक्कार। अइउण् निर्गुण, ऋलृक धिक्-धिक्। कियैक छथि पतंजली हेमचन्द्र हमरहि डँटैत सदिखन – मोन पाड़ैत – 'मध्यमपुरुष एकवचन'–थिक ई व्याकरणक कोटि कवि, लै घोंटि एकरा।

मुदा, बहुत भेल ई नियमक खेल। छोड़ि सबटा शास्त्र आउ, कपालकुंडले, आब अहाँकेँ हम मनक आकरण बताबी–जतय सँ सब नियम, सभटा कोटि केँ देलहुँ अछि विसर्जन। जतय अहाँ छी मध्यमा मात्र, एकवचना।

भय–१

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

बूढ़ अशक्त अथर्व कवि छी हम
डरै छी
हमर पोथी-सबटा चोरी ने भ' जाय!
कत्तेक मेहनत कैने छी सरकार,
एत्तेक रास शब्द सजाबै ले
ल' जायत जँ क्यो
त कविता हमर रहियो जायत भरिसक
अनकर नामें-
कवि छूटि जायत इतिहास सँ।

एतबहि-टा डर हमरा,
अहाँ कहब ई त बड़ छोट डर भेल
त सुनू-

बूढ़ अशक्त अथर्व कवि छी हम
कत्ते पाइ खरचलियै औ सरकार
हमरा पोसै ले
कत्तेक जतन सँ सजौलहुँ हमर मंडप
गहन मंत्र सँ रचल हमर चिता
लिखँ पड़ल हैत कत्ते-टा इतिहास
हमर कविता कुपिता पर

छोड़ि चलि जायत लोग हमरा
त बूझब-
कवि चलि जायत एहि पृष्ठ सँ
रहि जायत मात्र निष्ठुर कविता आ
पठित उपाख्यान ।

एतबहि-टा डर हमरा,
अहाँ कहब ई त बड्ड छोट डर भेल
त देखू-
बूढ़ अशक्त अथर्व कवि छी हम
डरै छी हमरा
मंच पर सँ बाजै जँ कहि दै क्यो
एत्ते रास माला सँ लदने छी हमरा सरकार,
जे वाणी सँ रुसी
कविते ने छोड़ि चलि जाय हमरा सँ!
से जँ भेल त बूझब,
ने हम रहलहुँ आ ने रहली हमर कविता ।

एतबहि-टा डर हमरा;
अहांके की कहू-
ईहो बड़ छोट डर छल?

कोचिन – 19.9.94

भय-२

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

आब हमरा ककरहु सँ डर नहि
आब आबि गेल चल' क ऐब,
जनलहुँ कोना क' हेलल जाइत अछि
जनलहुँ कोना अधमतम हैब!

कोन अदृश्य प्रेरणा छलि ओ
बनल मलीन अजन्ता!
कोन अवद्य अपच्य बात सँ
टूटल सब नीरवता ।
कोन अश्रव्य शब्द छलै' ओ
जाहि सँ जागल शशक उलूक?
केहन अस्पृश्य बाला छलि ओ
जनिकर स्पर्श सँ जागल भूख?
आब ने हमरा भय कोनो अछि,
जनलहुँ कोना क' विनष्ट हैब
आबि गेल अछि दाँतक जोड़ा
आब ने हमरा डर कोनो
शब्द कठिन हो स्तन हो शीतल
वाक्य वृहत् हो रचना कोमल
भाष्य विभीषण पाठो बिखरल
अर्थ अनर्थक भावें विह्वल
आब ने हमरा डर कोनो अछि
जानि गेलहुँ हम ककर हैब!
आब हमरा ककरहुँ सँ डर नहि
आबि गेलै' अछि चल' क ऐब!

अलुआ – 19.9.94

प्रवासी

जून सितम्बर 1996

त्रैमासिक पत्रिका

छथि।

मुदा परिवर्तित युग जीवनक मध्य शिक्षित अपर्णाक जीवनक आन्तरिक आ बाह्य यथार्थ शारदाक जीवन गत यथार्थ सँ सर्वथा भिन्न अछि। वयः सन्धिक समय उठल उत्सुकताक डेगक परिणति कारुणिक आ त्रासद दिशा मे बलात् मोड़ि देल जाइछ। ओकर तेजस्विता आ जीवनक प्रति दृष्टिकोण नव धनाढय बनल पिता आ पितृवर्गक हेतु अपच भए जाइछ। दण्डित करबाक नियतें पिता पुत्रीक विवाह ओहि परिवार मे करा दैछ जतए ओकरा भौतिक आ मानसिक दूनू प्रकारक ताप होइक। पिता तदुपरान्त मुक्तिक श्वास लैत अपर्णा कें पूर्णतः विसरि जएबाक चेष्टा करैछ। किन्तु अपर्णा आ ओकर पति आलोक अपन समस्त आकाङ्क्षाक तृप्ति आ पूर्तिकें परिवारक शेषजनक हेतु त्यागि, एक आदर्शक सृष्टि करैत अछि। मुदा विडम्बना एहन जे ओएह दम्पति अपन ओही आप्त जन सँ तिरस्कृत होइछ। उपहासक पात्र बूझल जाइछ। एहि ठाम उपन्यास कारक दृष्टि यथार्थ, समस्या आ संघर्षक वाद आदर्श पर केन्द्रित अछि। विसङ्गति पूर्ण युग जीवनक बीच एक ओहन अपर्णाक स्वरूप गढ़ल अछि जे अपन पिता, पित्ती, भाइ, ननदि देओर सभक उपेक्षा कें सहैत अछि। बड़ होइत छैक तँ बाथरूम मे बन्द भए दू ठोप नोर चुबाकए अपन आन्तरिक व्यथाक चाप कँ सहला लैत अछि। ई ओकर व्यक्तित्वक प्रखरता थिकैक जे बाह्य अथवा आन्तरिक चाप सँ छहोछित नहि होइछ। टूटैत नहि अछि। इएह आत्मविश्वास आ आत्मबल आजुक जिनगीक धरोहर थिक। आजुक लोकक संबल थिकैक।

दूकाल खण्डक मैथिलीक एहि दूनू उपन्यास कें उदाहरण स्वरूप लए निर्विवाद रूपें ई कहि सकैत छी जे मैथिलीक उपन्यासकार अपन काल खण्डक जिनगी आ लोककें अभिव्यक्त करबाक प्रति साकांक्ष छथि। उपन्यासकारक इएह साकांक्ष दृष्टि मैथिली उपन्यास कें अपन समय आ समाजसँ जोड़ने छैक आ पाठक अपन प्रतिबिम्ब देखैत अपनहि जीवनक अभिव्यक्तिक अनुभव करैत अछि।

दूटा कविता

अंकुर

एक साथ चारि–चारिटा कविताक बीज उगल अछि मोन मे
चारू कें लए हँसोथि
मुट्ठी मे बन्न कऽ कए हम लिखि रहल छी अहाँकें बेहिसाब
तीन टूक प्रेमक शब्द
अभ्यंतरक संधि–विच्छेद
एखन एना ओकरा ने दियौँ तेहन प्रश्न मे
ज/कर जवाब नहि अछि पता हमरा अपनहि
नहि देलों किये' हभरा
सालोसाल–कोनहुटा आस नहि लेलौं किँये' हमरा
कतेको साओन अपना पास
हमर दुब्बर पाँजड़ि पर नचैत ताधिन
नाचि रहल अछि के उल्हास
और दंभ मे डूबल अपन अछि कोन विश्वास
एहि तंत्रक, प्रेमक ? एतबा रास
सुनँ छी गप अपनहि
कि एक साथ चारि–चारिटा कविकें हम
बाँटि देने छी शब्द–सम्पदा हमर
स्वर–गंधा ई पुष्प–पातो धरि
चारू कें मिला कऽ गबै' छी त
मुट्ठी मे बन्न उगै' अछि तैयहु
प्रेमक अंकुर जीवन–नर्मदा हमपर।

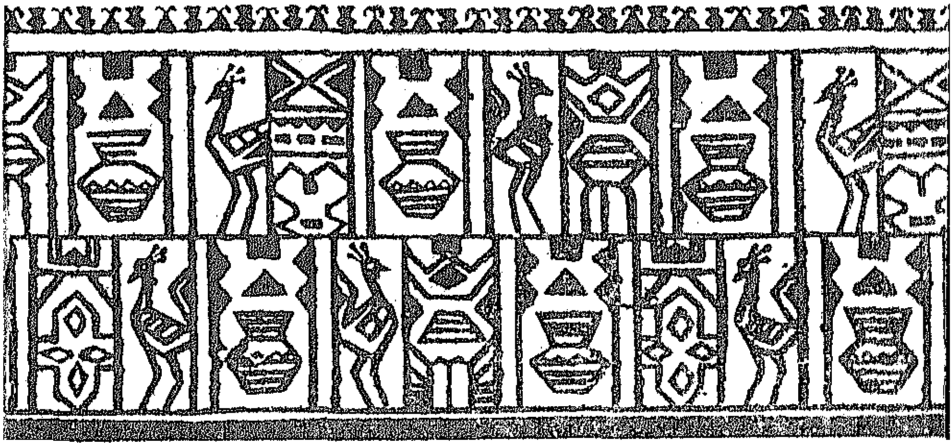
एक अहीं छी

नचिकेता

हम कविता मे कैक बेटि अहाँकें बजा कऽ देखने छी
मुदा अहाँ छी जे किछु जवाबे नहि दै' छी
नहि किछु त अहिना किछु बजने होइतहुँ
अहीं छी जे कखनहु घुरि कऽ देखितो नहि छी
नहि त देखि सकँ छलहुँ
हमर कविता कोनो मामूली प्रेमक दस्तावेज नहि छल
जे लाभहानिक हिसाब रहत लिखल
तकर पछिलुका भाग मे
कोनो साधारण निमंत्रण नहि छल ई
जे तकरा सहजहि टारल जा सकैत छल
ने छल कोनो आम लोकक भोज्य वस्तु
जे परोसैत देटी कढुआ' जाओत
हम ई बात कय बेरी अहाँकें बाजि चुकल छी
जे हमर कविता मे हम अहाँकें
दोसरे एकटा नाम देने छी
एहन नाम देने छी
एहन नाम जे केवल कविते मे संभव होइत अछि
अथवा एहन जकरा चिड़ै–चुनमुन
सहजहि उचरि सकै छल
मुदा एहन नहि जकरा पर कोनो सनसनाइत कथा बनि सकै
एहन नहि जकरा झाँपि–तोपि कए राखत गय क्यो
जेबी मे अपन मीतटका
एहनो नहि जाहि पर किलकारी मारि उठत
मित्रः मित्रौ मित्राः
हमर कविता मे तेहने कोनो नाम सँ
बजा कए देखने छी अहाँ कें
मुदा एक अहीं छी जे किछु बजिते नहि छी।

नचिकेता

एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा



एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा

एक छल राजा

नचिकेता

प्रकाशक

मैथिली रंगमंच

१६२/८५/ए०, लेक गार्डेन्स,

कलकत्ता-४५

प्रथम संस्करण :
जुलाई, १९७३ ई०

प्रकाशक :
मैथिली रंगमंच
१६२/८५/ए०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

स्वत्वाधिकारी :
नचिकेता

मुद्रक :
अजय सिंह
सिंह प्रेस, कलकत्ता-४५

मूल्य :
दू टाका

आमुख

मैथिली रंगमंच मैथिलीक लेल की कैलक अछि ?

मैथिली रंगमंच रंगमंचेक लेल की कैलक ?

नहि। ई कहब मिथ्या भाषण हैत जे मैथिली रंगमंच मैथिली कें अपन प्राप्तव्य सम्मान दियैबाक लेल आन्दोलन कैलक, जुलूस निकाललक, नारा लगौलक, ई कैलक, ओ कैलक। ईहो नहि कहि सकैत छी जे मैथिली रंगमंच रंगमंचक दृश्य-सज्जा, व्यवस्थापन, अभिनय-कौशल, आलोक-सम्पात अथवा सुरसंयोजन मे वैप्लविक परिवर्त्तन आनलक अछि।

तखन मैथिली रंगमंच की कैलक अछि ?

मैथिली रंगमंच दावा नहि करैत अछि जे ओ मैथिली वा रंगमंचक लेल बड्ड कैलक अछि। किन्तु किछु त' अवश्य कैने अछि, कारण, हमरा लोकनि जनैत छी जे मैथिली क आन्दोलन ल' कए नेता लोकनि कतबो कियैक ने कूदथि, ओकर सफलता क लेल प्रयोजन अछि समृद्धिशाली साहित्य-रचना क। और अन्यान्य साहित्यिक विधा जकाँ दृश्य काव्य क महत्त्व सेहो कम नहि छैक। तैं, साहित्यकार लोकनि कें प्रोत्साहन देल गेल अछि नाटक लिखबाक हेतु। नाटक लिखल गेल; और मैथिली रंगमंच नाट्य-विधा क आधुनिक धारा कें आत्मसात करैत ओही नाटक'सभ कें दर्शक क समक्ष उपस्थित कैलक। आइ प्रतिवेशी भाषा-प्रान्त बंगला, हिन्दी और मराठी क रंगमंच जतेक अगुआएल अछि, तकर मूल कारण क अनुसंधान क चेष्टा कैलक एवं ताही रूपें मैथिली नाटक सभ क संरचना एवं प्रस्तुति क' कए देखौलक जे हमहूँ सभ पछुआएल नहि छी। हँ, विलम्ब सँ अवश्य आरम्भ कैने छी। ताहि सँ की ?

मैथिली रंगमंच आइ धरि मैथिली और रंगमंच क उन्नति क हेतु सात गोट नाटक नाट्यामोदी दर्शक लोकनि क समक्ष उपस्थित कैलक अछि—

सुखायल डारि : नव पल्लव, कुहेस, प्रेम : एक कबिता, निष्प्रदीप, आगन्तुक, बेमातर और सन्तान। और एही प्रचेष्टा सँ प्रेरणा ल' कए मिथिला क विभिन्न नाट्य-संस्था एहि नाटक सभ क अभिनय कैलक अछि। मैथिली रंगमंच मात्र अभिनये टा नहि कैलक अछि, एहि मे सँ सुखायल डारि : नब पल्लव, बेमातर, आगन्तुक, क्षमादान आ' सन्तान क प्रकाशन-भार सेहो सम्हारलक अछि। मैथिली रंगमंच एहि दीर्घ समय मे रंगमंच ल' कए जतेक जे परीक्षण चलौलक अछि, तकर सिद्धान्त सब कें जाहि सँ प्रयुक्त कैल जाय, तकर चेष्टा क' रहल अछि। तैं मैथिली रंगमंच एहि बेरि उत्साह देलक एक गोट नव नाट्यकार नचिकेता कें,—कियैक त हुनक नाट्य-रचना मे प्रयोग-वादी भावना क समावेश छन्हि, जकरा ल' कए मैथिली क कोनो नाट्य-संस्था सगर्व अन्यान्य भाषा सम्प्रदायक नाट्य-प्रेमी दर्शक-समालोचक क समक्ष ठाढ़ भ' सकै एवं सार्थक अभिनय सँ मैथिली क नाट्य - विधाक अग्रगति क उद्घोष क' सकै। इच्छानुसार सार्थक नाटक हाथ मे पाबि मैथिली रंगमंच अपन निष्ठाशील अभिनेता - अभिनेत्री सभ कें ल' कए तैं मैथिली नाट्यामोदी दर्शकवृन्द क समक्ष उपस्थित भ' रहल अछि। आ' एकर बाद मैथिली रंगमंच एही प्रकारें नाटक-प्रकाशन तथा अभिनय द्वारा भारतीय नाट्य - साहित्य क श्री-वृद्धि करवा मे दत्तचित्त रहत।

आशा अछि, एहि दिशा मे अपने लोकनि सहृदय पाठक तथा दर्शक क रूप मे हमरा लोकनि कें उत्साह तथा आशीर्वाद प्रदान करब।

विनीत,

मंत्री, मैथिली रंगमंच

पात्र - परिचिति

अभिमान कुमार देव	— विलासपुर क भूतपूर्व राजा।
विरंचि	— विलासपुर क दीवान।
धनिक लाल	— विलासपुर क राजमहल मे प्रतिपालित, किन्तु सम्प्रति शहर क प्रसाद सँ अकस्मात् धन-सम्पन्न।
शुभंकर	— शहर क एक प्रोफेसर; मोहिनी क संभावित वर।
चतुर लाल	— अभिमान कुमार क खबास।
प्रथम वादक	— नाट्य-मंडली क सदस्य।
द्वितीय वादक	— ,, ,,
गायक	— ,, ,,
घोषक	— ,, ,,
सरमा	— विलासपुर क रानी।
मोहिनी	— विलासपुर क राजकन्या।
पन्नाबाइ	— प्रख्यात गायिका।

प्रथम अभिनय रजनी
आन्ध्र एसोसियेशन हॉल, कलकत्ता
८ जुलाई, १९७३ ई०

राजा	—	मोहन चौधरी
विरंचि	—	गौतम भारती
धनिक लाल	—	उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
शुभंकर	—	रामलोचन ठाकुर
चतुर लाल	—	इन्द्र नारायण मिश्र
प्रथम वादक	—	रत्नाकर
द्वितीय वादक	—	शिशिर दास
गायक	—	श्रीकान्त मंडल
घोषक	—	
सरमा	—	दीपाली चौधरी
मोहिनी	—	चन्द्रकला किरण
पन्नाबाइ	—	

—:*:—

नाट्य-संरचना क अन्यतम उन्नायक

श्री सीताराम झा कें एवं

श्रीमती उर्मिला झा कें

—नचिकेता

एक छल राजा

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

[मंच क एक कोन पर अग्रभाग मे वादक-गायक आदि बैसल छथि। ओ सब आत्मविभोर भए कोनो अतिमधुर संगीत क आवृत्ति क' रहल छथि। आलोक केवल हुनकहि लोकनिक ऊपर पड़ैत अछि। मंचक अन्य भाग मे अन्धकार प्रसरित अछि। मंच क पश्च भाग क मध्य मे काठ क एक सुसज्जित उच्चासन राखल अछि। तकर पाछाँ दिसि एकटा चित्रांकित चट टाँगल अछि। एकदम पाछाँ दिसि एक करिया पर्दा झूलि रहल अछि। उच्चासन क दुनू दिसि अपेक्षाकृत कम ऊँच मंचिका राखल अछि। एक दिसि एकटा टेबुल लैम्प राखल अछि। नाटक क आरम्भ मे गायक-वादक मंडली क अतिरिक्त और किछु नहि दृष्टि-गोचर भ' रहल अछि।]

गायक—हे जग, तोहर दोष हजार
गुण तोहर जौं सैयो होमय
अवगुण अपरम्पार
हे जग, तोहर दोष हजार

प्रथम वादक—[यन्त्र-वादन स्थगित करैत] नहि, बहुत भेल, आब बन्द करू।

गायक—[उदास भ' कए] अरे, अहूँ अजब छी! बिच्चहि में बाजा बन्द क' देलहुँ।

प्रथक वादक—रिहर्सल क प्रयोजने नहि अछि। एकाध बेर भेल थोड़बे? तकर अलावे आब नाटक आरम्भ हैत।

गायक—से जखन हैत, हैत।

प्रथम वादक—जखन हैत, हैत नहि; देखू ने, पाछाँ पर्दा टांगल भ' गेल छैक। आब नाटक आरम्भ होयबा मे जे देरी होइक।

गायक—से त ठीके। समय त भ' गेल।

प्रथम वादक—और दर्शको सब अगुता गेल छथि। देखैत नहि छिऐक?

गायक—[दर्शक-वृन्द पर दृष्टिपात करैत] हँ; से त देखिये रहल छी। अगुतैता किऐक नहि?

द्वितीय वादक—[कनेक खौंझाइत] किऐक अगुतायल छथि ओ लोकनि?

प्रथम वादक—अरे, चुप रह मूर्ख, अगुतैता नहि? राति कि कम भेलैक अछि?

गायक—नहि-नहि, सेह टा नहि। नाटको छैक सेहने।

द्वितीय वादक—केहन?

गायक—[द्वितीय वादक दिसि ध्यान नहि दैत] पहिने त नामे सँ लोक मुग्ध भ' जाइत अछि...... —"एक छल राजा"। कहू त, एहन आधुनिक नाम!

द्वितीय वादक—[अपाटक-बकलेल जकाँ हँसैत] हे, हे! आधुनिक! [जेना किछु मजेदार संवाद हो]।

प्रथम वादक—[मुँह दुसैत] हे, हे! [संगहि संग द्वितीय वादक चुप भ' जाइछ] तों आधनिकता की बुझैत छैं रौ? कह त, नाट्यकार के छथि?

द्वितीय वादक—[सप्रतिभ भ' कए] नाट्यभार?

प्रथम वादक—नाट्यभार नहि रौ, नाट्यकार।

द्वितीय वादक—[हँसबाक चेष्टा करैत] हँ, हँ, सैह त; नट्टकार। [चालाक

बनबाक चेष्टा करैत] नट्टकार। माने...... [हाथ डोलबैत] माने... नाट्टकार।

प्रथम वादक—हम तोरा सँ नाट्यकार शब्द क अर्थ नहि पुछलियौक! [कनेक चुप्पीक पश्चात्] ई नाटक ककर लिखल थिकैक ?

द्वितीय वादक—[माथक केश नोचैत] सैह त...... [गायक कें] ककर लिखल थीक ?

गायक—नचिकेता क!

द्वितीय वादक—नचिकेता क। ओ! जनिक आन नाटक मे हम तबला बजौने छलहुँ...... तबला— [कहब शुरू करैछ उत्साह सँ, मुदा प्रथम वादक क आँखि मे क्रोधाभास देखैत वाक्य बिसरि जाइछ आ' हाथ सँ मात्र तबला पिटबाक अभिनय करैत हास्य क परिवेश ल' आनैत अछि।]

गायक—[हँसैत] खैर, तोरा आब नाट्यकार क गुण क बखान नहि करै पड़तौक। तों तबला पीट, ता हम एक बेर रिहर्सल द' ली।

प्रथम वादक—[पुनः यन्त्र बजैबाक उपक्रम करैत अछि] हँ, शुरू करू।

गायक—[गीत शुरू करैत छथि—]

हे जग, तोहर दोष हजार
गुण तोहर जौं सैधो होमय
अबगुण अपरम्पार
हे जग, तोहर दोष हजार

घोषक—[एतबहि मे धड़फड़ायल मंच क सीढ़ी सँ मंच पर चढ़ैत] अरे! बन्द करह, बन्द करह ई तमाशा!

गायक—[सबहक चुप हैबाक पश्चात्] कियैक ?

घोषक—कहैत छियह बाद मे। घर जाइत-जाइत कहबह! देखियह, माइक देखियह! [माइक घिसियाबैत, तकरा ऊँच क' कए रूमाल सँ

मुंह पोंछि] साफ करब ! रिहर्सल क बीच मे आबि कए हम बाधा देल्हुँ । तैं हम क्षमा - प्रार्थी छी । [हाँफैत - हाँफैत] अपने सब कें हम जे दुस्संवाद द' रहल छी ताहि सँ हमरे टा नहि, सब कें दुःख हैत। [कनेक चुप होइत] एखनहि हमरा खबरि भेंटल जे राजा अभिमान कुमार देव क स्वर्गवास भ' गेलन्हि अछि। [दर्शक मंडली मध्य सँ शोक - सूचक ध्वनि उठल। 'कहिया', 'कोना' आदि शब्द सुनबा मे आबै लागल] सब किछु कहैत छी। कने धैर्य राखू। अहाँ सब जनिते छी। एहि देस - कोसक अधिकांश लोक हिनका जनैत छथि। ओ केवल अपनहि स्थानक संस्था आ संघ सभ क नहि, वरंच बहुतो ठामंक संघ - सोसाइटी क सक्रिय सदस्य रहथि। हुनका सन महान आ' उदार हृदय क व्यक्ति आजुक युग मे भेटब दुर्लभ अछि। तैं आउ, हम सब पहिने हुनक आत्मा क चिर शान्ति क लेल एक मिनट धरि नीरवता क पालन करी।

[दर्शक - बृन्द मे सँ किछु गोटे ठाढ़ भए मौन प्रार्थना करैत छथि। देखैत - देखैत सब क्यो ठाढ़ भ' जैताह।] हँ; आब सब क्यो बैसि सकैत छी। एखन पहिने हुनक आत्मा क शान्ति क लेल आजुक नाटक क गवैया श्री गुलाबजी कें हम एकटा शोक - संगीत सुनैबाक अनुरोध करैत छियन्हि।

गायक---[ठाढ़ भ' कए माइक क सम्मुख आबि विह्वल कंठें] आजुक अनुष्ठान क पाछाँ राजा साहब क जे अवदान अछि से त अहाँ सब जानितहि हैबैक। तैं हुनका सम्बन्ध मे किछु बाजब सूर्य कें दीपक देखायब हैत। हमरा लेल ई दुःख क बात जे हमरहि पर भार पड़ल हुनका लेल प्रार्थना - गीत गैबाक ओर से आजुक अवसर पर जखनि कि.........[कहैत - कहैत कंठावरोध भ' जाइत छन्हि। सायास अपना कें सम्हारैत गीत प्रारम्भ करैत छथि।]

ई जीवन
ई जीवन
ई जीवन एक पहेली !
क्यो जीतय
क्यो हारय
क्यो हँसय और क्यो कानय !
आशा और निराशा
जीवन केर सहेली;
ई जीवन एक पहेली !

घोषक—[गीत शेष हैबाक पश्चात् गायक-वादक दिशि इंगित करैत छथि। इंगित पाबि ओ लोकनि मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि।] क्षमा करब। राजा साहब क असामयिक मृत्यु हमरा सभक नाटकहु कें बड़ धक्का पहुँचौलक अछि। नचिकेताजी क जाहि ऐतिहासिक नाटक 'एक छल राजा' क अभिनयक घोषणा हम सब कैने छलहुँ तकरा उपस्थित करबा मे एखनि...... [कहैत-कहैत थम्हि कए] जे हो; हम देखि रहल छी जे भीतर की अवस्था अछि। तावत् राजा साहब क विषय मे अपने सब कें श्री धनिक लालजी किछु कहताह। [उच्च स्वरें बजबैत] धनिक लालजी !

धनिक लाल—एलहुँ। [दर्शक-मंडली क मध्य सँ उठि कए मंचक सामने क सीढ़ी द' कए चढ़ि मंचक एक दिशि ठाढ़ होइत छथि। घोषक क निष्क्रमण भ' जाइछ। आलोक केवल धनिक लालजी पर पड़ैत अछि। ओ माइक कें घिसिया कए एक कोन मे आनि, भाषण आरम्भ करैत छथि।] उपस्थित सज्जनवृन्द ! [खखसैत] हमरा आदेश भेटल अछि श्री अभिमान...... नहि-नहि राजा श्री अभिमान कुमार देव क विषय मे किछु कहबाक लेल। ......ओ बड़ नीक लोक छलाह।

हुनका सनक महान् व्यक्तिक सम्बन्ध मे हम एतबहि कहब जे...जे...जे [बुझना जाइछ जेना किछु बिसरि गेल होथि। तावत् रानी सरमा प्रवेश करैत छथि। मंचक अग्रभागक आलोक सहसा अधिक उद्भासित भ' जाइत अछि और पश्चभाग अन्धकार-पूर्णहि रहि जाइछ।]

सरमा—[बताहि जकाँ आवेश-पूर्ण स्वर मे] बन्द करह! बन्द करह!! बस, बहुत भेल ई नाटक। हम तोहर झूठ बात नहि सुनै चाहैत छी।

मोहिनी—[प्रवेश कए अपन माय कें सम्हारबाक चेष्टा करैत अछि] माय! माय! ई तों की क' रहल छें? एतेक लोक क सामने राज-रानी भ' कए तों......

सरमा—[डाँटैत] चुप रह अभागलि, चुप! के राजा? के रानी? तों हँसी क' रहल छें?

मोहिनी—माय, ई की भ' गेलौक तोरा? हे भगवान्!

सरमा—भगवान्! के भगवान? जे निष्ठुर हाथें हमर सींथ क सिन्दूर मेटा देलक? जे हमर समस्त व्रत-साधना सब बिफल कए...... [कहैत-कहैत कानै लागैत छथि। तखनहि धनिक लाल द्रुत वेगें प्रस्थान करैत अछि।]

मोहिनी—[सान्त्वना क स्वर मे] माय, तों........ तों बताहि भ' गेल छें की?

सरमा—[कानैत और हँसैत] हँ; हम बताहि छी...... हम बताहि......
[ओम्हर पाछाँ मे टाँगल पर्दा धीरे-धीरे उठाओल जाइछ। मंच क पश्च भाग मे अन्हार पसरल अछि।]

मोहिनी—नहि माय, तों रानी छियें, रानी सरमा, महाराज अभिमान कुमार देवक रानी और हमर माय!

सरमा—[कौतुक भरल दृष्टि सँ एक बेर ताकि कए उच्च स्वरें अट्टहास करैत] राजा........रानी........हम रानी आ' तों राजकन्या........
[हँसैत-कानैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि।]

मोहिनी—माय, की तों रानी नहि छियें ? की बाबूजी राजा नहि......?

सरमा—कयो किछु नहि अछि। आब कयो किछु नहि। [विचित्र दृष्टिएँ ताकैत] सब चलि गेल! धन छल, राज छल, प्रजा छल, राजा छल, [कहैत-कहैत दृष्टि प्रखर भ' जाइत छन्हि] हँ; एखनि कयो राजा नहि। छल एक टा राजा! [मंचक दहिन कोन दिसि आबैत छथि। अग्र भागक आलोक मद्धिम भए मिझा जाइछ। मात्र सरमा तथा मोहिनी पर आलोक-पात भ' रहल अछि।] हँ; एक छल राजा, एक छल रानी। राजा मरि गेल शेष कहानी। बुझलें मोहिनी? एक छल राजा एक छल रानी.........!

मोहिनी—[अश्रु बेग कें रोकैत] माय!

सरमा—[आरो उच्च स्वरें] हँ; एक छल राजा, एक छल रानी; [कहैत-कहैत प्रस्थान करैत छथि। पाछाँ लागल मोहिनियो चलि जाइत अछि। आलोक-पात बन्द भ' जाइछ। चारू दिसि सँ प्रतिध्वनित भ' रहल अछि नारी कंठ क स्वर "एक छल राजा, एक छल रानी।" आवाज धीरे-धीरे मद्धिम भ' जाइत अछि।]

द्वितीय दृश्य

राजा अभिमान कुमार देव—[अन्हारे मे] के ? [तावत् सरमा क स्वर भासल आबि रहल छल। धीरे-धीरे प्रकाश होइछ आ' समस्त शब्द बन्द भ' जाइछ। राजा उच्चासन पर बैसल छथि। हुनक मुख पर अल्प छाया पड़ैछ। मंच पर धीरे-धीरे अल्प आलोक पसरैत अछि। राजा उठैत] के ? के थिकहुँ ?

विरंचि—[नेपथ्य सँ] हम छी सरकार, बिरंचि।

राजा—ओ ! आउ।

विरंचि—[प्रवेश करैत छथि। पीठ झुकल। हाथ मे लाठी, नाक पर चश्मा, बाम हाथे कागज-पत्र नेने] आइ सरकार अन्हार क' कए बैसल छी ई सँझुके पहर ?

राजा—हवेली क काज मे चतुर कें पठौने छथिन्ह।

बिरंचि—ओकरा त हम बहुत काल पहिने जाइत देखलहुँ। तखन एखनहुँ तक आयल कियैक नहि ? [किछु काल सोचैत] सरकार !

राजा—[किछु सोचैत छलाह। ध्यान भग भेला पर] उँ !

विरंचि—आइ हम गेल छलहुँ।

राजा—कतय ?

विरंचि—पन्नाबाइ क ओतय। मुदा.........

राजा—मुदा की ? [उठि कए बैसैत] की ओ मुजरा नहि गछलक ?

विरंचि—नहि, गछत कियैक नहि ? अपने ओकरा महफिल मे बजा रहल छी, आ' ओ नहि आबै चाहत ?

राजा—तखन ?

बिरंचि—तखन......[किछु काल चुप रहि जाइत छथि]।

राजा—[गरजैत] विरंचि !

विरंचि—माफ करब सरकार, हम कोना कहू जे राज-कोष मे किछु नहि छैक !

राजा—[बड़-बड़ करैत] नहि ! ई नहि भ' सकैछ !

विरंचि—ई भ' सकैछ, आ भेल अछि सरकार ! एखन की पहिलुका ओ आमद रहलैक ? सरकार जे किछु दैत छल सेहो बन्द भ' गेल। प्रजा नामक कोनो वस्तु रहलैक नहि।

राजा—ई सब हम जनैत छी दीवान जी ! आ' अहीं बहुत बेर सुना चुकल छी, किन्तु ई सब हमरा सह्य नहि होइछ।

विरंचि—हमरहि की कहबा मे कोनो आनन्द भेटैत अछि ? मुदा, एखनि एहन आमद मे एत्तेक पैघ खर्च कोना पार लागत ?

राजा—[शून्य दिसि देखैत] कोना पार लागत ? सात साल सँ प्रत्येक वर्ष इयेह सुनैत आयल छी जे कोशी क सत्यानाशी बाढ़ि सब किछु भसिया कए ल' गेल। प्रति वर्ष जमीन-जगह बेचि कए सब खर्च ओना चलैत आयल अछि, अहू बेर तहिना चलत।

विरंचि—सरकार !

राजा—की करू ? एक टा बेटो नहि अछि जे निर्लज्ज जकाँ आँखि-कान मुनने तकरहि कमाइ खाइत रही।

विरंचि—सरकार !

राजा—[पाछाँ मुड़ि कए] कहलहुँ त; खर्च नहि चलैत अछि त जमीन कियैक नहि बेचैत छी ?

विरंचि—कोन जमीन सरकार ?

राजा—कियैक, ओ पोखरि पर क......

विरंचि—सरकार ! ओ सब किछु नहि बचल।

राजा—[क्रुद्ध भए टहलैत] नहि बचल तखन हम की करू ? एक हमही टा बाकी छी; हमरहिं बेचि लिय'। [राजा धुर-महुर कर' लगैत छथि।

बिरंचि किछु कहबाक चेष्टा करैत अछि, किन्तु कहि नहि होइत छैक] आब ठाढ़ की छी ? जाउ, आ' सन्दूक मे जे किछु अछि से सब कोनो महाजन क पास ल' जा कए बूझू ग' जे कत्तेक हैत। [बिरंचि कें तैयो ठाढ़ देखि] की ? ओहो सब समाप्त क' देलहुँ की ? [बिरंचि माथ झुका लैत छथि] वाह ! तखन आर की चाही ? किछु जखन अछिये नहिं !

बिरंचि—किछु कियैक नहि रहत मालिक ! किन्तु अहाँ जेना चलाबै कहै छी ताहि से त एक्कहि-दुइ मास मे सब टा स्वाहा भ' जायत ।

राजा—दीवान जी !

बिरंचि—हँ सरकार ! ई सब बात कहबाक अधिकार हमरा नहि अछि से हम जनैत छी। तैयो हम कहब। एना अहाँ ध्वंस भ' जायब। बिलासपुर क ई राजमहल उजड़ि जायत सरकार !

राजा—[अगुआ कए] ठीके हैत ! ई सबटा पूर्वपुरुष क पाप क फल थीक। हमर पुरखा सब जत्तेक सती नारी क अभिशाप जुटौलन्हि, जत्तेक प्रजा क मुख क ग्रास छिनलन्हि, जत्तेक अनाचार कैलन्हि—ई सब तकरहि फल थीक। जनैत छी, राति से जखन हम सूत' चाहै छी त हमर कान मे माटि क तर सँ क्रन्दन और चीत्कार भासल आबैत अछि। बिछौना क चारु कात हम रक्त-स्रोत देखै छी। और ओहि स्रोत क संग पायल क झुनझुन आ' सारंगी क क्रन्दन। हमर हाथ दिसि देखू, शोणित लागल अछि शोणित ! हमर नीन्द टूटि जाइत अछि और दुनू हाथ कें हम मलैत रहै छी, रगड़ैत रहै छी, मुदा रक्त क चेन्ह नहि मेटाइत अछि ।

बिरंचि सरकार !

राजा—हँ ! हम घर क देवाल पर एक टा कारी छाया देखैत छी। ओ छाया हमरा ग्रास करबा क लेल दौड़ल आबैछ। ओकर मुख मे लागल अछि लाल - लाल रक्त। हमर देह पसीना - पसीना भ' जाइछ आ'

ओहि पसीना क प्रत्येक बुन्द मे ओहि छाया कें देखै छी। कारी छाया और लाल रक्त। तखन हम चिकरि उठै छी।

विरंचि—[जोर सँ] सरकार !

राजा—[होश मे आबि] के ? अ ! अहाँ ? अहाँ की ने कहैत छलहुँ ?

विरंचि—हम की कहब सरकार? छोट मुहँ, पैघ बात भ' जायत। [एक क्षण मौन क बाद] हम कहैत छलहुँ जे कहुना कए जौं फिजूल खर्च कें रोकल जाय त......।

राजा—[भौं सिकोड़ि कए] फिजूल खर्च ? अहाँ कह' की चाहैत छी ?

विरंचि—एखनहुँ राजमहल मे पच्चीस - पचास बाहर क लोक पड़ल खाइत अछि।

राजा—ओ सब हमर आश्रित थिकाह।

विरंचि—मुदा जखन हमही सब आश्रय खोजि रहल छी, तखन हुनका सभक दायित्व........।

राजा—अहाँ करै की चाहैत छी ?

विरंचि—हुनका सब कें हाथ - पाँव जोड़ि कए बिदा करै चाहैत छी। ताहि मे किछु पाइयो देब' पड़ै त सेहो नीक।

राजा—[निस्पृह भावें] बेस, जे इच्छा होमय से करू।

विरंचि—आरो एक टा बात छल.........

राजा—[आन दिसि मुहँ फेरैत] कहू।

विरंचि—एहि बेरि जौं दुर्गा-पूजा मे........

राजा—[किछु क्रुद्ध भ' कए] अहाँ की चाहैत छी जे सेहो बन्द क' दी ?

विरंचि—नहि सरकार ! हम से कतय कहैत छी ? हम त मात्र खर्च कम करबाक लेल कहैत छलहुँ......

राजा—[दर्शक दिसि देखैत] की हम एहन हतभाग्य छी जे मा केर पूजाओ करबा क क्षमता हमरा मे नहि रहल ?

विरंचि—अहाँ सब सै बरस सँ खूब धूम - धाम क संग पूजा करैत ऐलहुँ।

एम्हर कैक वर्ष सँ ताहि मे किछु कमी भ' गेल अछि। पहिने एहि अवसर पर नाच, गाना, नाटक सब किछु होइत छल। तैयो गत चारि वर्ष त आर सब किछु भेवे कैल, मात्र नाटक टा नहि भेल। गत वर्षो त पन्नाबाइ अपन मुजरा पेश कैने छल। नाटक नहि भेल छल त की भेल ?

राजा—एकर बाद, अहाँ कहब, एहि बेरि नृत्यो - गीत नहि हैत त कोन हरज ?

विरंचि—सैह त कहैत छलहुँ जे एहि बेरि जौं पन्नाबाइ कें.........

राजा—नहि, कथमपि नहि।

विरंचि—[अनुनय-पूर्ण कण्ठें] सरकार !

राजा—नहि, दीवानजी, नहि। हम जा धरि जीवित छी ता धरि ई सब बन्द नहि होमय देब। भने ताहि लेल हमर सवस्व चलि जाइक।

विरंचि—आब बाकी की रहल सरकार ? सब त चलिये गेल। एतबा धरि जे राजमहलो क आधा गिरवी पर अछि।

[तावत् सरमा प्रवेश क' कए चट क अ'ढ़ मे ठाढ़ भ' जाइत छथि]।

राजा—हे भगवान ! हमर मृत्यु कियैक नहि होइछ तकर पहिने ? आब सैह टा बाकी अछि। [एतबा मे चट क अ'ढ सँ कनेक निकलैत, दर्शक क दृष्टि क सम्मुख अबैत रानी क चूड़ी क आवाज सुनाइ पड़ैछ]।

सरमा—की सब अशुभ बात मुँह सँ निकालैत छी ?

राजा—[सरमा दिसि घूमि कए चट क पास जा कए] खराब त अवश्य लगैत हैत सुन' मे, मुदा आब दोसर कोनो पथ नहि।

सरमा--बहुत पथ अछि। एतय बगलहि मे विष्णुपुर क अर्जुन बाबू कें देखू। एतय सब किछु बेचि कए ओ शहर चलि गेलाह; ओतय छोट-छीन मकान बना कए......

राजा—हँ ! हँ ! मकान बना कए ताहि मे अपराधी जकाँ नुका रहैत छथि जाहि सँ शहरहु मे विष्णुपुर-विलासपुर क क्यो भेंटि ने जाइन ! नहि

सरमा, ई हमरा स नहि हैत। हम चोर जकाँ रातु क अन्धकार मे पड़ा नहि सकब। ताहि सँ त मृत्युए नीक।

सरमा—छिः! एना नहि बाजू।

विरंचि—की कहब रानी जी? हम त कत्तेक बेरि सरकार कें समफैलहुँ-बुफैलहुँ जे एखनहु जौं सम्हारि कए चली, त चलि सकैत अछि।

राजा—की चलि सकैत अछि दीवान जी? [म्लान हँसैत] तखन हँ, हमर मृत्यु क उपरान्त श्राद्ध क खर्च नीक जकाँ कैल जा सकत।

सरमा—अहाँ बन्द करब कि नहि एहन सब बात। की भेल अछि अहाँ कें?

विरंचि—अहीं समफाबिऔन रानीजी! हम तावत चलै छी। कालिह भोरे चलि आयब। पूजा मे सेहो आब बेसी देरी नहि रहल।

राजा—अहाँ कहैत छी, एहन सब बात जुनि करू, मुदा विलासपुर-विष्णुपुर क सब लोक भीषण कौतुक सँ हमरा सभक जीवाक संग्राम दिखि देखि रहल छथि। ओ सब देखि रहल छथि जेना कोनो वियोगान्त नाटक हो। ओ सब मने-मन सोचि रहल छथि जे कखन महाराजाधिराज मरताह आ' हम सब हुनक श्राद्ध क लेल के कत्ते चन्दा देब।

सरमा—आह, फेर वैह बात? तखन अहाँ इयैह सब सोचैत रहू, हम जाइत छी। ओम्हर बेटी क छुट्टी भ' गेल अछि आ' ओ कालिहये आबि रहल अछि, से मन अछि?

राजा—[स्वगतप्राय] मोहिनी, हमर बेटी, राजकन्या! लाजे शहर मे बाप क नामो नहि कहैत हैत।

सरमा—कालिह ओकर आरो एकटा चिट्ठी भेटल अछि। [आनन्द क मुद्रा मे] जनैत छी, की लिखलक अछि?

राजा—नब की लिखत?

राजा—[किछु काल चुप रहि कए] ओ अपन वर पसिन्न क' नेने अछि।

राजा—[उत्तेजित भए] की? की कहलहुँ?

सरमा—एहि मे उत्तेजित हैवाक कोन बात अछि?

राजा—[पदचारणा करैत मंच क सम्मुख भाग मे आबै छथि] ओह, अहाँ कि पाथर भ' गेल छी सरमा ? अहाँ क प्रत्येक शब्द हमर देह कें जेना झरका देलक अछि । छिः, छिः, छिः, कतेक लज्जा क.........

सरमा—एहि मे लज्जा क कोन बात अछि ? आइ-कालिह छोट-पैघ सभ क घर मे बेटी क बियाह क रीति बदलि गेल अछि । आब हमरा सभ क जमाना नहि रहल। आब धी-बेटी अपन वर अपनहि पसिन्न करैत अछि ।

राजा—हमरा ताहि लेल लाज नहि अछि जे हमर बेटी हमर पसिन्न कैल वर सँ वियाह नहि करत ।

सरमा—तखन लाज कथी क ? समाज क ?

राजा—नहि ! लाज अपन अस्तित्व पर। लाज नहि, ओकरा घृणा कहब उचित हैत। हम बेटी क बियाह करबाक योग्य नहि छी, से मोहिनी आंगुर उठा कए हमरा बुझा देलक। बुझा देलक जे हमर एहि विशाल महल क भीतर एक टा बिराट शून्यता अछि; सब फोंक अछि—हम, हमर राज्य, हमर क्षमता, हमर अर्थ, हमर स्नेह...... [कहैत-कहैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि ।]

सरमा—[कनैत-कनैत अपना कें सम्हारि कए] ई की ? अहाँ कनैत छी ?

राजा—नहि, [स्वर बदलि जाइछ] राजा अभिमान देब कनैत नहि अछि। अभिमान क कयो कानब सिखौलकै नहि । कहू, ओ आर की लिखलक ?

सरमा—ओ लिखलक अछि जे भावी वर कें ल' कए ओ कालिह आबि रहल अछि ।

राजा—कालिह ?

[मंच अन्हार भ' जाइछ ।]

तृतीय दृश्य

[अन्हार मे एक टा टमटम चलबाक शब्द आ' घोड़ा क टाप सुनाइ पड़ैछ ।...... मंच आलोकित होइत अछि ।]

मोहिनी—माय ! माय ! [प्रवेश करैत अछि । आधुनिक वेशभूषा, मुदा कतहु उग्रता नहि अछि। मोहिनी क पाछू शुभंकर क प्रवेश। आधुनिक शहर क वेश-भूषा ।] माय ! [ककरहु नहि देखि] कतय गेल अछि सब क्यो ? दीवान जी त कहलन्हि जे सब घरे पर छथि तखन......।

शुभंकर—[गला क टाइ कें कनेक ठीक करैत] अहाँ क ई मकान त राज-महले सन लगैछ ।

मोहिनी—राजमहल सन लागत की, राजमहले त थीक ।

शुभंकर—इज इट ? ई राजमहल थीक ? तखन—

मोहिनी—तखन की ?

शुभंकर—अहाँ, अहाँ राजकन्या ? [एहि बात पर मोहिनी हँसि दैत अछि]। नो नो, डोण्ट लाफ। टेक इट सीरियसली। यू सेड यू आर अ प्रिंसेस ! आइ मीन राजकन्या !

मोहिनी—हम किछु नहि कहलहुँ। एना नहि करू। एखनहि बाबूजी आबि जैताह !

शुभंकर—बाबूजी ? यू मीन राजा ? महाराजा ?

[राजा साहब प्रवेश क' कए मोहिनी कें देखैत छथि । शुभंकर पोशाक ठीक - ठाक कर' मे व्यस्त भ' जाइत अछि ।]

राजा—बेटी ! तों आबि गेलह ? [उच्च स्वरें] अरे चतुरलाल, कतय छिहीं रौ, सामान सब टा ल' जो । [शुभंकर पर नजरि पड़ैत] हिनका

चिन्हलियन्हि नहि ?

शुभंकर—[अगुआ कए] लेट मी इंट्रोड्यूस मिसेल्फ सर ! आइ एम शुभंकर.........शुभंकर पाठक। हम अध्यापन करैत छी। [कनेक रुकैत - रुकैत कहैत छथि] अ.........माने अहाँ क विषय मे मोहिनी सँ बहुत सुनलहुँ। [की करताह फुरैत नहि छन्हि। तेँ हाथ बढ़ा कए] वेरी ग्लैड टु मीट यू सर.........आइ मीन !

राजा—[राजा हाथ नहि बढ़बै छथि। शुभंकर क बाजब -भूकब नीक जकाँ देखि रहल छथि] शुभंकर बाबू के थिकाह मोहिनी ?

मोहिनी— [विह्वल शुभंकर कें देखि घबड़ा कए] माय जनैत छथि। चिट्ठी मे सब किछु लिखने छलहुँ। माय कतय छथिन्ह ?

राजा—[मोहिनी क अन्तिम वाक्य क ख्याल बिना कैने अपन आसन दिसि जाइत - जाइत] ओ बुझलहुँ।

मोहिनी—[शुभंकर क पास आबि मन्द स्वरें] पैर छूबि कए प्रणाम करू ने ! [कहैत-कहैत ओ महाराज क पैर छूबि, प्रणाम करैत अछि]।

राजा—हाँ, हाँ ठीक अछि ! [शुभंकर क दिसि देखि कए] हिनका भीतर ल' जाहुन्ह अपन माय लग।

मोहिनी—अच्छा बाबूजी ! [शुभंकर दिसि देखैत] चलू !

[चतुरलाल प्रवेश करैछ।]

राजा—जाउ ! सामान चतुरलाल कें द' दियौक। ओ अहाँ कें रहबाक कमरा देखा देत।

शुभंकर—नहि, नहि; ठीक अछि। भने त बैसल छी। [घबड़ा कए हँसि दैत अछि।]

मोहिनी—त ठीक अछि। हम भीतर जाइत छी। अहाँ बाद मे आउ। चलू खबास ! सामान सबटा भीतर ल' चलू।

[मोहिनी क प्रस्थान। चतुरलाल माल नेने जाइत अछि। किछु क्षण, निस्तब्धता रहैत अछि। शुभंकर एकटा अखबार सँ मुहँ

झाँपि कए बीच-बीच मे राजा दिसि देखैत पढ़बाक चेष्टा करैत अछि। राजा गड़गड़ा क नल मुँह मे लगौने तीव्र दृष्टियें शुभंकर कें आपादमस्तक देखैत छथि।]

शुभंकर—[तेसर बेर राजा सँ आँखि मिल गेला पर] माने, पुरान अछि।

राजा—[भौं सिकोड़ैत] की ? महल ? [गड़गड़ा क नल हटा लैत छथि]।

शुभंकर—नहि, आइ मीन ई पेपर; पेपर पुरान अछि।

राजा— [किछु खिन्न भए] हूँ ! ई शहर नहि थीक। [पुनः गड़गड़ा क नल मुख मे लगबैत छथि।]

[शुभंकर अखबार कें किछु उनटा - पुनटा कए राखि दैत छथि। पाकिट मे किछु खोजबाक अभिनय करैत छथि; नहि पबैत छथि।]

राजा—की खोजैत छी ?

शुभंकर—आँय ! नहि, किछु नहि। सूटकेस क चाभी।

राजा—[किछु चिन्तित जकाँ] अहाँ की करैत छी कहने छलहुँ ?

शुभंकर—[नहि सुनैत] पासिब्ली मोहिनी क रिंग मे हैत।

राजा—हम से नहि पूछैत छी। अहाँ क प्रोफेशन की थीक ?

शुभंकर—ओ, प्रोफेशन ? प्रोफेसर, माने प्रोफेसर !

राजा—की पढ़बैत छी ?

शुभंकर—हम लिंग्विस्टिक साइन्स पढ़बैत छी।

राजा—कोन साइन्स ?

शुभंकर—जी, लिंग्विस्टिक साइन्स। माने साइन्स आफ लैंगुएजेज। [राजा कें समझाबैं लगैत अछि] जकरा मैथिली मे भाषा - विज्ञान कहैत छैक।

राजा—[पुनः शुभंकर कें निरीक्षण करैत] ओ !

शुभंकर—हमर काज, आइ मीन थीसिस अछि चॉम्स्कियन थियोरी पर। हमरा क्वांटिटेटिव लिंग्विस्टिक्स बहुत पसिन्न........

राजा—[बाधा दैत] ओ, अहाँ पी एच० डी० कैने छी की ?

शुभंकर—यस सर, एण्ड आइ हैव सबमिटेड ऐन ऐप्लिकेशन फॉर डी. लिट.। यद्यपि हम एतय डी० लिट० कर' नहि चाहैत छी। हम चाहैत छी एकटा बिदेश क डिग्री।

राजा—ओ! [मौन] अहाँ बिदेश जा रहल छी ?

शुभंकर—अफ कोर्स आफटर मैरेज। बियाह क बाद आ' सेहो मोहिनी क संग।

राजा—कत्तेक दरमाहा भेंटैत अछि कालेज सँ ?

शुभंकर—[घबड़ा कए, निरुत्साहित भए] सघा छ' सै।

राजा—ओ! [किछु काल चुप रहि कए] जाउ! भीतर जाउ।

[शुभंकर चुपचाप प्रस्थान-पथ क दिसि बढ़ैत अछि। बत्ती बन्द भ' जाइत अछि।]

———

चतुर्थ दृश्य

[दृश्य-सज्जा बदलि जाइत अछि। पाछाँ क चट नहि रहैत अछि। शय्या मे राजकीयता क चेन्ह नहि रहैत अछि एवं शय्या मंच क मध्यभाग मे राखल रहैत अछि। उच्चासन क स्थान पर मंच क एक कोना पर वेदी रहैत अछि, जाहि पर क्यो बैसि सकैत अछि। शय्या पर उपविष्ट सरमा आ' पाछाँ मे ठाढ़ मोहिनी क वार्त्तालाप सँ दृश्य आरम्भ होइछ।]

सरमा—शुभंकर कतय गेलाह बेटी ?

मोहिनी—ओ खबास क संग गाम देखए गेल छथि।

सरमा—बड़ नीक अछि। [मोहिनी लजा जाइत अछि] इयेह बात हम तोहर बाबूजी सँ कहलहुँ त ओ.........।

मोहिनी—ओ की कहलन्हि ?

सरमा—ओ कहलन्हि—अहाँ त जकरा देखैत छी तकरहि अपना जकाँ बुझैत छी।

मोहिनी—हमरा हुनकहि डर छल जे ओ हमर एहि काज सँ प्रसन्न नहि हेताह।

सरमा—धुर बताहि ! ओ तेहन किछु नहि कहलन्हि। तों त जनितहि छें ओ बेसी किछु बजैत नहि छथि। तों एतेक सोचैत कियैक छें ?

मोहिनी—नेनहि सँ बाबूजी कें तेहन ने गंभीर देखैत अयलहुँ जे डर होइत अछि माय।

सरमा—हुनका मनैबाक भार हमरा ऊपर छोड़ें। शुभंकर नीक लड़का अछि, नीक घर क अछि, नीके कमाइत अछि। एहि में आपत्तिक प्रश्ने नहि। तों डर-भर छोड़ें आ देख—भनसिया औंघाइत हैतैक। बेचारा शुभंकर कें भूखो लागि गेल हैतैक। [मोहिनी प्रस्थानोद्यत

होइछ] ई राति कें कियैक जे बहरैला !

मोहिनी— [जाइत-जाइत पाछाँ घूरि कए] हमहूँ मना कैने छलियन्हि जे साँझ कें नहि बहराउ। भोरके पहर टहल' लेल चलि जायब त ओ बात हुनका नीक नहि लागलन्हि। कह' लागलन्हि—शहर मे त तारा सब नजरियो नहि आबैत छल। एखन त आस मेटाब' दीय'। [कहैत-कहैत प्रस्थान करैत अछि। सरमा एक टा पत्रिका पढ़' लगैत छथि कि मोहिनी पुनः प्रवेश क' कए केवाड़ी क पास सँ कहैत अछि] माय! देख, के आयल छथि !

सरमा—के आयल अछि ? [कहैत द्वार दिसि देखैत छथि कि धनिक लाल क प्रवेश होइत अछि।]

धनिक—हम छी रानी मा।

सरमा—अरे, धनिक तों ? कहिया एलह गाम पर ? शहर मे सब ठीक-ठाक छैक ने ?

धनिक—हँ रानी मा, अहाँ क आशीर्वाद सँ सब किछु ठीके चलि रहल अछि।

सरमा—तों कत्तेक पैघ भ' गेलह। तोरा त पहिने हम चिन्हबे नहि कैलहुँ।

धनिक—सब सैह कहैत अछि। आइये त अयलहुँ। एम्हर किछु दिन सँ गामे पर रहबाक मन करैत अछि।

सरमा—चलह। क्यो त कहैत अछि जे गामे नीक लगैत अछि। नहि त, शहर जा कए क्यो गाम दिसि घूरियो कए नहि तकैत अछि। इयैह मोहिनीये कें देखह ने। हम सब नहि रहितहुँ त ओ गाम अबितै ?

धनिक—अरे हँ, ओहो त शहरे मे रहैत छथि। देखू त, हम एक दम बिसरिये गेल छलहुँ। [किछु कालक पश्चात्] एखन एतय कियैक छथि ? कालेज खुजल नहि छैक की ? कि बियाह क जोग छैक ?

सरमा—कालेज क छुट्टी त पहिनहि भ'. गेलैक। आ' बियाह द' सेहो ओ सोचि रहल छथि।

धनिक—अच्छा, अच्छा ! [बैसैत] चलू, गाम पर ऐलहुँ त बहुत दिनक बाद एकटा भोजो भेंटत।

सरमा—[हँसैत] से देखह ! गाम पर बियाह होइत अछि वा नहि।

धनिक—कियैक, कियैक ? गाम पर कियैक नहि हैतैक ? हम सब की कथी लेल ? तेहन ने खटबैक बहिन दाइ क बियाह मे कि......!

सरमा— सें नहि। लड़का शहर क अछि।

धनिक—ताहि सँ की ?

सरमा—खाली सेंह नहि। मोहिनी क बाबूजी चाहैत छथि जे बियाह शहर मे हो। ओतय चीज वस्तु क बहुत सुबिधा हैत। आयोजन आदि क नीक प्रबन्ध भ' सकत।

धनिक—नहि रानी मा ! एतय सँ नीक व्यवस्था आब कत' हैत ? हमरा त मन नहि लागैत छल ओतय। बारह बरस कोना गाम छोड़ि कए बितौलहुँ से आश्चर्य।

सरमा—तों सत्ते ओतय नहि रहबह की ?

धनिक—एह, ओतय लोग रहैत अछि ? यद्यपि एक टा छोट-छीन मकानो बनौने छी। एक भाइ ओत्तहि अछि अपन परिवार नेने। हम अपन धीया-पूता ल' कए एतय आबि गेलहुँ। एखन ओतुक्का कारबार वैह चलाओत। एतय हम जमीन-जाल देखब।

सरमा—मुदा तोहर और एक टा भाइ जे एतय रहैत अछि तकर......।

धनिक—तकरा शहर पठा रहल छी पढ़बा-लिखबा लेल। एतय ने ओकर पढ़ाइ होइत अछि और ने ओकरा सँ जमीने-जाल ठीक तरहेँ देखल होइत छैक। आ' तकर अलावे एतेक जमीन पड़ल अछि। सब बेकारे ने ?

[मोहिनी क प्रवेश।]

सरमा—से त ठीक बात।

धनिक—ऐबा सँ पहिने एकटा ट्रैक्टर बुक कैने छलहुँ। सेहो आबिते हैत

रेलगाड़ी सँ। एतय आरो जमीन सब लेबाक बिचार अछि।

मोहिनी—[धनिक क बात ध्यान सँ सुनि कए] तकर माने धनिक भाइ बहुत बड़का धनिक भ' गेलाह।

[एहि बात पर सब क्यो हँसि दैत छथि।]

धनिक—नहि, से बात नहि। ओतय बारह बरिस पहिने जे गेल छलहुँ, तखन मने मन इच्छा छल, उन्नत तरहेँ कोना खेती - बारी कैल जाइत अछि से सीखी। पहिने त पाइ कमबै मे लागलहुँ हम दुनू भाइ। जब बिजनेस चलै लागल.........

मोहिनी—कथी क बिजनेस अछि अहाँ क ?

धनिक—कपड़ा केर एकटा दोकान देने छी आ' बगले मे एकटा स्टेशनरी दोकान सेहो अछि।

सरमा—हँ, की ने कहैत छलह ?

धनिक—हँ, जखन बिजनेस ठीक-ठाक चलै लागल, तखन हम समय बचा कए ओतय एक टा एग्रिकलचरल इन्स्टिट्यूट मे.........

मोहिनी—हँ हँ, हम देखने छी। गोल घर क पास ने ?

धनिक—हँ, ताहि मे ई सब सिखलहुँ। देखैत छी तकरा काम मे लगा सकैत छी कि नहि।

सरमा—भगवान तोरा और देथु।

धनिक—हमर भगवान त अहीं सब छी रानी मा। नेना मे अहीं क आङन मे खेलायल छी। मा के त देखलहुँ नहि, मा केर स्वाद अहीं मे पौलहुँ। तैं गाम अबितहि सब सँ पहिने अहीं क एतय ऐलहुँ।

सरमा—नीक कैलह।

मोहिनी—अहाँ आइये आयल छी की ?

धनिक—आइये भोर।

मोहिनी—अहाँ कें स्टेशन पर नहि देखलहुँ। हमहूँ सब त भोरके गाड़ी सँ आयल छी।

धनिक—हम ट्रेन सँ नहि ऐलहुँ; अपन जीप सँ ऐलहुँ।

मोहिनी—नहि, तखन त सत्ते अहाँ महा धनिक बनि गेल छी।

धनिक—[हँसैत] से त बुझलहुँ, मुदा ई कहू 'हमहूँ सब' माने की? के के ऐलहुँ?

[मोहिनी किछु नहि कहि, सरमा दिसि तकैत अछि।]

सरमा—शुभंकरो आयल अछि।

धनिक—शुभंकर के? नहि चिन्हलहुँ त!

सरमा—मोहिनी क भावी वर।

धनिक—[आनन्द क भंगिमा मे] आँय! सत्ते की? तखन त हुनका स परिचय-पात करै पड़त। [मोहिनी कें] कतय छथि? बजा पठाउ हुनका।

मोहिनी—बाहर गेल छथि टहलै लेल।

धनिक—ओ हो! तखन त आइ नहि भेल। कोनो बात नहि, जैह आइ सैह कालिह। [किछु मन पड़ि जाइछ] अरे हँ, देखू त। हम एकदम बिसरिये गेल छलहुँ।

मोहिनी—की?

धनिक—हमहूँ त तेहने ने छी जे......। जाहि काज लेल ऐलहुँ, सैह बिसरि जाइत छलहुँ।

सरमा—कोन काज?

धनिक—अरे, हमर बेटा मुन्नू अछि ने? ओह, अहाँ त नहि चिन्हैत छी। त सैह, कालिह ओकरहि जन्म दिन अछि। शहर मे त खूब धूम-धाम सँ जन्म दिन मनबैत छलहुँ। एहि बेरि हड़बड़ी मे बेसी किछु व्यवस्था नहि क' सकलहुँ। एक गोटे कें पहिने पठा देलहुँ एम्हर सब व्यवस्था ठीक राखबाक लेल। आ' हम ओम्हर शहर सँ आबैत काल पन्नाबाइ कें मुजरा क लेल कहने ऐलहुँ। ओहो त भोरके ट्रेन सँ आयल अछि।

मोहिन—तैं ने कहू। हम त भोर स्टेशन पर पन्नाबाइ कें देखि कए सोचैत

छलहुँ जे की बात थीक ?

सरमा—तखन त तों विशेष व्यवस्था कैने छह !

धनिक—नहि, हड़बड़ी मे जे भ' सकल। गाम क सब कन न्योत पठौने छी। अहूँ सब कालिह अवश्ये जायब। हम गाड़ी पठा देब।

सरमा—[एहि बात पर आनन्दित मुख कनेक गम्भीर भ' जाइत अछि।] मुदा मोहिनी क बाबूजी त.........

धनिक—[बाधा द' कए] हुनको अवश्य कहबन्हि। नेना मे हुनका दुर्गा पूजा क समय मे देखैत छलहुँ बड़का - बड़का उस्ताद सब सँ ठुमरी, गज़ल आ आलाप सुनैत। हुनका त अवश्य नीक लागतन्हि पन्नाबाइ क मुजरा।

सरमा—से ओ पन्नाबाइ क गीत सुनने छथि। गत वर्ष एतय ओकरे आनल गेल छल।

धनिक—ओह ! पन्नाबाइ एतय आबि चुकल अछि। तेँ ओकरा मुँहेँ राजा साहब क नाम सुनने छलहुँ। हम बुझलहुँ, ओ आन किनकहु द' कहि रहल अछि।

सरमा—तेँ.........ओ त भरिसक नहि.........

धनिक—त ठीक अछि। अहाँ दुनू अवश्य आउ। भरि गाम क जर-जनानी सँ ल' कए बच्चा - बूढ़—सब कें बजौने छी। अहाँ सब नहि जायब त.........

सरमा—ठीक छैक, हम चेष्टा करब। मोहिनी क बाबूजी जौं जाय देथिन त ....! माने.........आइ - कालिह त हम विशेष बहराइत नहि छी। तखन हँ, मोहिनी आ' शुभंकर कें हम पठा देब।

धनिक—अच्छा, त एखनि हम चलैत छी। अच्छा [मोहिनी कें] त कालिह त शुभंकर बाबू सँ भेंट हैबे करत।

[धनिकलाल क प्रस्थान।]

मोहिनी—[धनिक क प्रस्थान - पथ क दिसि देखैत] माय ! मात्र हमरहि

सभ क नाम कियै कहलें ? [बाहर सँ महाराज क खखास सुनबा मे अबैत अछि। मोहिनी कनेक विचलित हैत] माय ! बाबूजी आबि रहल छथि।

[सरमा अपना कें प्रस्तुत क' लैत छथि। राजा साहब क प्रवेश क संगे दुनू ठाढ़ भ' जाइत छथि।]

राजा—सरमा !

सरमा—जी !

राजा—पछुआड़ मे ककर ने एकटा जीप ठाढ़ देखलहुँ—बाग मे टहलैत-टहलैत। क्यो एतय आयल छल की ?

सरमा—हँ। धनिक आयल छल !

राजा—धनिक ? धनिक के भेल एहि गाम क ?

सरमा—अहाँ ओकरा एखन देखब त नहि चीन्हब। मुदा, अहाँ कें मन त हैत; एकटा बच्चा नेना मे एहि हवेली मे खेलैत छल—मोहिनी क संग.........पन्द्रह बरिस पहिने.........। वैह आयल छल।

राजा—[चौंकि कए बात क बीचहि मे बाधा दैत] के ? लूटन क बेटा ?

मोहिनी—हँ; तकरे बेटा धनिक लाल।

राजा—[कठोर स्वरें] ओ एतय कियैक आयल छल ?

सरमा—[मोहिनी किछु कहै जाइत अछि; सरमा मोहिनी कें बाधा द' कए] हम कहैत छी ओ कियैक आयल छल। [किछु काल मौन रहि कए] ओकर बेटा क कालिह जन्म दिन थीक। तें गाम क सब लोग कें न्योत देने अछि। और तें, ओकर दुआरि पर कालिह पन्नाबाइ क महफिल.........।

राजा—और ओहि नीच कुकुर क आङन मे जेबाक लेल अहाँ सब कें ओ हकार देब' आयल छल ?

सरमा—छि; ! जत्तेक दिन जा रहल अछि अहाँ और बदलल जा रहल छी। [मोहिनी क प्रति] तों भीतर जो। [मोहिनी क प्रस्थान क बाद]

धनिक हमरा सब कें न्योत देब' आयल छल; एहि मे कोन अन्याय अछि ?

राजा—हम न्याय - अन्याय नहि बुझैत छी। हम ओहि नीच वंश क कोनो लोक क छाया धरि नहि देख' चाहैत छी।

सरमा—किन्तु कियैक ? ओ सब जाति सँ छोट अछि, तैं ? की अहाँ ओहि टोला क आन ककरहु घर बियाह - शादी क अवसर पर नहि गेल छी? से जौं गेल होइक, तखन ई... : ...

राजा—[कनेक उच्च स्वरें] सरमा! सब बात पर दखल नहि दियह। अहाँ ओकरा विषय मे किछु नहि जनैत छी। [स्वर बदलि कए, स्वाभाविक कण्ठें, दृढ़ रूपें] हम कहैत छी, नहि जाउ ओतय।

सरमा—हम ओकरा नेना मे खेलौने छी; मोहिनी क संगे - संग ओ पैघ भेल अछि। तखन त अहाँ ओकरा विषय मे किछु नहि कहलहुँ। एहि पन्द्रह साल मे की एहन.........

राजा—पन्द्रह साल मे बहुत किछु भ' सकैत अछि सरमा। बहुत किछु भ' गेल अछि; बहुत किछु जानलहुँ अछि। तैं जखनहि लूटन क नाम लेलहुँ, मन मे घृणा क आगि पजरि उठल।

सरमा—मुदा, धनिक क की अपराध अछि, से कियैक नहि कहैत छी ?

राजा—[क्रुद्ध भ' कए] धनिक क सब सँ प्रधान अपराध अछि जे ओ लूटन सनक नरक क कीट क बेटा थीक, और लूटन क सब सँ पैघ अपराध अछि जे ओ.........[कहैत - कहैत विकृत मुखें चुप्प भ' जाइत छथि।]

सरमा—की !

राजा—[प्रस्थान करत - करैत] नहि, किछु नहि।

[मंच अन्हार भ' जाइछ।]

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

[राजा साहब क कक्ष : कलाकारिता - पूर्ण पुरान ढंग क सामान सब सजाओल छैक। अल्पालोक मे कनेक चिन्तित मुद्रा मे राजा बैसल छथि। विरंचि हुनका किछु समझा रहल छथि।]

विरंचि—सरकार, सबटा जमाखर्च त अहाँ कें द' देलहुँ। एखन एक बेर देखि लेल जाय।

राजा—रहै दीय' दीवान जी! अहाँ क हिसाब हम कहियो देखलहुँ जे आइ देखब? तकर अलावे अहाँ एखन जे किछु पढ़ि गेलहुँ, से सब हम नहि सुनलहुं। हम किछु दोसरे बात सोचि रहल छलहुँ।

विरंचि—कोन बात सरकार?

राजा—आइ तीन दिन सँ पन्नाबाई बिलासपुरे मे अछि। अहाँ जनैत छी?

विरंचि—जी हँ, धनिक लाल महफिल बैसौने अछि।

राजा—दीवान जी, अहाँ जनैत छी जे पन्नाबाइ जहिया अबैत अछि, हमरा एतय अबैत अछि।

विरंचि—मुदा.........

राजा...पहिने हमर प्रश्न क उत्तर दीयह। अहाँ जनैत छी?

विरंचि...हँ सरकार। किन्तु पूजा क एखन दस दिन बाकी अछि आ'......

राजा...[किछु कठोर स्वरें] दीवान जी!

विरंचि...[कहैत - कहैत थम्हि कए] जी सरकार!

राजा...काल्हि क भीतर नाच घर कें सजा कए साफ करवा कए राखू।

[कहैत - कहैत प्रस्थानोद्यत भ' कए] परसू पन्नाबाइ क महफिल राजमहल मे बैसत।

विरंचि—किन्तु सरकार, हमर बात त सुनल जाय।

राजा—[प्रस्थान-पथ क पास सँ पाछाँ घुरैत] कहू !

बिरंचि—[पास जा कए] मालिक, पूजा क त कैक दिन बाकी छैक।

राजा—जनैत छी।

विरंचि—सब किछु कीनल जा चुकल अछि। मूर्त्तियो समाप्तप्राय भ' गेल अछि। आ एम्हर शहर मे जा कए अपनेक आज्ञानुसार एकटा नाटक क दल कें पाइ सेहो बैना द' कए एतय आनबाक व्यवस्था क' लेने छी।

राजा—[पाछाँ घूमि कए] सेहो जनैत छी।

विरंचि—[राजा क दिसि असहाय आँखियें ताकैत] सरकार, हमरा पास जे किछु छल, सब किछु साफ भ' गेल अछि ताहि मे।

राजा—अहाँ कें जे कहबाक छल, भ' गेल ?

विरंचि—जी ? [हताश स्वरें] जी हँ......

राजा—मकान क बाकी हिस्सा कें सेहो गिरबी राखि कए जतबा टाका मिलत, ल' आनू। [जाइत-जाइत] और हँ, नाचघर साफ करबा लियह।

[राजा क प्रस्थानं। अन्हार भ' जाइछ।]

द्वितीय दृश्य

[राज-भवन क अन्तःपुर]

विरंचि—एखन कहू त रानी जी, हम कोना कए ई काज करू ? नहि, नहि, हमरा सँ ई नहि हैत। हम बहुत सहलहुँ, किछु नहि कहलहुँ। सब जमीन-जाल जखन महाजन सभक चपेट मे गेल, तखनहुँ किछु नहि बाजलहुँ। मुदा, सम्पूर्ण राजमहल कें गिरवी राखबाक अर्थ—आब एकदम किछु नहि रहत।

सरमा—हम अहाँ कें की कहू दीवान जी ? अहाँ त बाबू जी क समय सँ छी। सब त देखितहि छी। एक बेरि जे वस्तु जाइत अछि, से घूरि कए थोड़बे आबैत अछि ?

विरंचि—और, एहि मे भेंटबे कतेक करत ? आधा मकान बन्हकी रखबाक जे सूदि भेल अछि, तकरा धुरैबाक आइ धरि व्यवस्था नहि भेल अछि। से बाद द' कए महाजन और देबे की करत ?— किछु नहि।

सरमा—हम सब त आत्महत्या क' लेब। किन्तु मोहिनी ? मोहिनी की करत ? ओकर त एखन धरि बियाहो नहि क' सकलहुँ जे.........

[कहैत-कहैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि।]

विरंचि—आ' हुनका त एहन अवस्था क विषय मे किछु कहलो नहि गेल छन्हि। एकटा परीक्षा द' कए आयल छथि। मुदा फाइनल परीक्षा त एखनहु बाकिये छन्हि। छुट्टी क बाद त ओ फेरो जाय चाहतीह। तखन हम कोन मुँहें कहब जे हमरा पास आब किछु नहि अछि।

सरमा—एहि मे अहाँ क कोन दोष ? सब हमर कर्म क लिखल अछि। एखनहु और की की देख' पड़त, नहि जानि।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[उद्यान क दृश्य। मंचक सम्मुख भाग मे एक कोन मे राखल वेदी पर मोहिनी बैसल अछि। पाछाँ शुभंकर ठाढ़ छथि। चारूकात सँ पक्षी सभक कलरव सुनल जाइत अछि। आलोक मात्र ओही दुनू गोटा पर पड़ैत अछि।]

शुभंकर—ट्रूली स्पीकिंग, अहाँ सभ क ई बिलासपुर हमरा सहुत नीक लागि गेल।

मोहिनी—[हाथ झुका कए नह खोधैत] हूँ।

शुभंकर—हूँ की ? ऐम आइ रांग ?

मोहिनी—नहि। [कहि कए आँचल पर हाथ फेरै लगैत छथि।]

शुभंकर—[सामने आबि कए] लुक मोहिनी, अहाँ एना चुपचाप बैसि कए हूँ-नहि करैत रहब आ' हम......की भेल अहाँ कें ?

मोहिनी—हैत की ? अहाँ हमर गाम क प्रशंसा करैत छलहुँ, हम सुनैत छलहुँ।

शुभंकर—अहाँ कि मात्र सुनबाक लेल हमरा एतय ई पोखरिक पास बजौने अयलहुँ ?

मोहिनी—जी हँ।

शुभंकर—तखन कहू, की सुनै चाहैत छी ?

मोहिनी—अहाँ गाम क विषय मे त बहुत किछु कहलहुँ, गाम क लोक सब द' त किछु नहि बाजलहुँ।

शुभंकर—गाम क लोक सब बहुत नीक छथि।

मोहिनी—बस ?

शुभंकर—तखन आर की कहू हुनका......... [किछु सामझि कए] ओ ! आब बुझलहुँ अहाँ क प्रश्न।

मोहिनी—[मुँह टेढ़ करैत] हूँ, खूब बुझलहुँ।

शुभंकर—गाम क आन सब लोग सँ क्यो - क्यो आरो नीक अछि, आरो सुन्दर—हमर सपनों सँ सुन्दर.........

[कहैत - कहैत अगुअबैत अछि ।]

मोहिनी—[शुभंकर कें पाछाँ धकेलि कए, उठि कए] जाउ; अहाँ कें कनेक छूट दीय' त अहाँ.........

शुभंकर—[हँसि देत अछि] हमर कहब बेजाय लागल हैत थोड़बे ? मने-मन त अहाँ इयेह सुनै चाहैत छलहुँ । कहू, ठीक कि नहि ?

मोहिनी—बुझलहुँ । अहाँ सभ क मन क बात जानि जाइत छी ।

शुभंकर—सभ क नहि त अहाँ क मन क बात त अवश्ये जनैत छी ।

[मोहिनी पछुआ जाइत छथि । मंच क पश्च भाग पर आलोक पसरि जाइत अछि । एकटा पथ नजरि अबैत अछि ।] और जतबा क जानबा मे बाकी अछि, से कोहबर क राति क लेल छोड़ि दैने छी ।

मोहिनी—[लजा कए] धत ! अहाँ बड़ निर्लज्ज छी—असभ्य जकाँ ।

शुभंकर—[प्रसंग बदलैत] से त हम छीहे । [पाछाँ घूमि कए] कारण, जा धरि कोनो सभ्य देश क डिग्री नहि लटका सकी, ता धरि हमरा सन अध्यापक कें असभ्ये बुझल जाइत छैक ।

मोहिनी—हम से कहलहुँ थोड़े ?

शुभंकर—अहाँ द' नहि कहैत छी । अहाँ क आँखि मे प्रेम क काजर अछि, मुदा दुनिया सैह बुझैत अछि । ओह ! हमरा पास बिलाइत क डिग्री रहितै, त हम थोड़बे कोनो कालेज मे सबा छ' सौ टाका क पद पर सड़ैत रहितहुँ; तखन त—

मोहिनी—अहाँ त कहने छलहुँ जे बैंक मे टाका जमा क' रहल छी ।

शुभंकर—अरे धत् - धत् ! पाँच - दस हजार सँ की हैत ? ओतबाक त पासपोर्ट बना कए प्लेन क टिकट क दाम गनैते - गनैत स्वाहा ।

मोहिनी—तखन ?

शुभंकर—और एखन त अहाँ सँ बियाह क' कए तखनहि बाहर पढ़बा लेल

जायब। ताहि लेल चाही और पाइ। दस हजार टाका सँ की हैत ?

मोहिनी—[किछु सोचि कए चलैत - चलैत अकस्मात कहि उठैत अछि] एक टा काज कियैक ने करैत छी ? हम सब त बाबूजी सँ टाका ल' सकैत छी।

शुभंकर—राइट यू आर! जाहि दिन सँ हम एतय एलहुँ, ताहि दिन सँ इयेह सोचि रहल छलहुँ। सोचलहुँ जे अहाँ कें पूछि ली—त अहूँ कें वैह समाधान सूझल।

मोहिनी—तकर अलावे अहाँ त पहिनहि कहने छलहुँ, अहाँ कें आर किछु नहि चाही।

शुभंकर—उहुँ हुँ हुँ! अहाँ गलती क' रहल छी। पहिने त हम अहाँ कें चाहै छी।

मोहिनी—[कटाक्ष क' कए] फेर वैह सब बात!

शुभंकर—हम कोन अन्याय कहल? जौं राज-कन्ये नहि मिलल त आधा राज्यहि ल' कए हम की करब? खैर, तखन अहीं पर भार रहल। एहि विषय मे अहीं बाबूजी सँ बात क' लेब।

मोहिनी—[हँसि कए] कियैक? अहीं कियैक ने?

शुभंकर—नहि बाबा! हुनका देखितहि हमर कण्ठ सुखि जाइत अछि। आफ्टर ऑल, हम साधारण लोग छी, और ओ छथि राजा।

मोहिनी—तखन हमरा सँ अहाँ कें कियैक नहि डर लगैत अछि?

शुभंकर—कियैक? अहाँ सँ कियैक डर हैत?

मोहिनी—बाह रे! हम जे राजकन्या छी।

शुभंकर—ओ! [कहैत उच्च स्वरें हँसि दैत छथि।]

[मंच अन्हार भ' जाइछ]

चतुर्थ दृश्य

[नाच-घर। घर क चीज-बीत सब विस्रस्त रूपें पड़ल अछि। मात्र एकटा झाड़ ऊपर सँ लटकि रहल अछि। दीवान जी आ' खबास अपना मे बातचीत क' रहल छथि।]

बिरंचि—जल्दी-जल्दी हाथ चला रौ।

चतुर—एक बरस क धूरा एहि नाच-घर मे जमल अछि। एक गोटा सँ ई पार लागत ?

विरंचि—[दुःखपूर्ण कंठें] हँ! एक तोहीं छें जे एहि घर कें नहि छोड़लें। आन क्यो त एतबा दिन मे कत्तहु पड़ा गेल रहितैहै।

चतुर—[काज करैत-करैत] हम कोना पड़ाउ दीवान जी ? जावत धरि सरकार हमरा लाति मारि कए भगा नहि देथि तावत धरि त हम एत्तहि रहब।

विरंचि—अरे एतय त तोरा पेट भरि खेनाइ धरि नहि भेटैत छौक आ दरमाहा'क त प्रश्ने कोन !

चतुर—दरमाहा हमरा देताह कियैक नहि ? हमहीं कहलहुँ जे हमर त क्यो धीया-पूता अछि नहि; जे हमरा टाका क जरूरत हैत। टाका ल' कए की करितहुँ ? भनहि त टाका जमा भ' रहल अछि।

विरंचि—[अस्फुट स्वरें] और ओहि टाका क आधा महाजन क संदूक मे आ' आधा पन्नाबाइ क पायल क तर......।

चतुर—किछु कहलहुँ की ?

विरंचि—कहैत छी जे तों मूर्ख छें। तें रहि गेलें एहि हवेली मे। नहि त...।

चतुर—हम त मूर्ख छी; बुझलहुँ। हमरा दरमहो नहि भेटैत अछि। मुदा, अहाँ कियैक एखनहुँ पड़ल छी दीवान जी ? अहूँ कें त किछु नहि

भेटैत अछि।

विरंचि—हमहूँ तेहने छी, पढ़ल-लिखल मूर्ख !

चतुर—छोड़ू ओ सब मुन्शी जी ! [काज करैत-करैत बजैत अछि] हमर बाबू एहि महल क नोन कम खैलन्हि ? तकरहि दाम हम सब नहि चुका सकलहुँ। तँ, हम भरि जिनगी खटियो कए हिनका सभ क कर्ज नहि उतारि सकब। [काज रोकि कए] तखन, जतबा दिन जिबैत छी, जतबा दिन लिखल अछि ततबा दिन खटबे करब। नहि त नरकहु मे हमर स्थान नहि हैत।

विरंचि—कियैक ?

चतुर—महाराज क माय, बड़की महारानी हमर बाबू जी कें रास्ता सँ उठा कए घर मे राखलन्हि, खुऔलन्हि आ' पोसलन्हि। बाबू जी तखन एक दम छोट बच्चा रहथि। मरबो केर पहिने बाबू जी हमरा सबटा कथा सुनौने रहथिन्ह। [किछु काल ठाढ़ रहि कए फेरो कर्म-रत भ' जाइछ।]

विरंचि—और ओहि वंश क आइ ई हाल ? जे सब आश्रित छल, पंडित, कवि, गायक, कलाकार, गुणी, सब कें एक-एक क' कए जाय पड़लन्हि। सब कें हाथ जोड़ि कए महल सँ बिदा कैल गेल। किन्तु हमरहु सभ क बिदा हैबाक दिन लगिचा रहल अछि।

चतुर—से कियैक ?

विरंचि—महल क उत्तर भाग जे पहिने गिरबी राखल गेल छल, तकर सूदे क थाह नहि—असल त दूर जाओक। और जे किछु बाकी छल तकरहु स्वाहा क' कए आबि रहल छी।

चतुर—से की ? ई हाल भ' गेल अछि एहि महल क ?

विरंचि—त कहैत की छियह ?

चतुर—[काज बन्द करैत] तखन ताहि पर ई महफिल कियैक बैसि रहल अछि ?

विरंचि—तैं त तोरा मूर्ख कहैत छियह। ओहि मुजरे क पाछाँ त पूरा महल गेल हाथ सँ।

चतुर—मुदा, पन्नाबाइ क मुजरा त ओहि टोला मे धनिक लाल क ओतय आइ तीन दिन सँ लोग सुनबे कैलक। तखन फेर कियैक ?

विरंचि—नहि बुझलिहीं ? तीन दिन सँ लोग सुनलक—तैं त फेरो भ' रहल अछि एतय। एहि हवेली क पाइ शेष भ' गेलैक अछि, तैं कि अभिमानो समाप्त भ' गेलैक ?

चतुर—हे भगवान्! आबहु सरकार कें सुबुद्धि दियन्हु। एना त आब बेसी दिन नहिये चलत।

विरंचि—इ त तैयो भाग अछि जे जत्तेक सोचने छलहुँ, ताहि सँ बेसी टाका भेंटल अछि।

चतुर—से कोना ?

विरंचि—वैह धनिके क पास गेल छलहुं। ओ त एत्तति खेलायल-धुपायल छल—एहि ठामक सब किछु ओकरा बुझले छैक। आन कोनो महाजन वा बजार पर क साहू सब त एहि हवेली क लेल एकर आधो नहि देतिहै। मुदा, धनिक कें हम सबटा बात समझा-बुझा कए कहलियैक, तखन ओ दस हजार टाका बाहर कैलक।

चतुर—ओ नीक लोक अछि। हम जनैत छी। और सबटा त गिद्ध थीक गिद्ध। सदिखन लुपकबाक लेल तैयार रहैत अछि।

विरंचि—ओकरा त सब बातक पता नहि छलै। जखन हम कहलियैक जे कोना महाजन सूदिक टाका क लेल तगादा क' रहल अछि, तखन ओ बाजल जे एकरा बन्द करबाक एकेटा उपाय अछि।

चतुर—से की ?

विरंचि—वैह रामचन्दर सेठ सँ महल क बाकी हिस्सा क दस्तावेज आदि कीनि लेत। तखन त क्यो तगादा नहि करत।

चतुर—ओह! भरिसक तैं सरकार हमरा आइ दुपहरि क समय धनिकलाल

कें आब' लेल खबर देबै कहलन्हि ।

विरंचि—हम त इयैह सोचैत छी जे चलू, क्यो त हवेली क नीक चाहैवला भेटल अछि ।

चतुर—ई हम अहाँ कें कहि दैत छी दीवान जी, जौं क्यो हवेली क नीक क' सकैत अछि त ओ थीक धनिक लाल ।

[बत्ती मिझा जाइछ ।]

पंचम दृश्य

[मंच-सज्जा सँ राजा साहब क कक्ष उद्भासित होइछ। अन्हारे मे दरबाजा दिसि सँ एकटा जीप एबाक आवाज सुनबा मे अबैछ।]

राजा—[उच्च कंठें] चतुर, देख त के आयल।

चतुर—[नेपथ्य सँ] जाइ छी सरकार। [एहि बीच राजा साहब उठि कए अपना कें प्रस्तुत क' लैत छथि। तावत् चतुर धनिक कें ल' कए प्रवेश करैछ।] सरकार, धनिक लाल एलाह। [चतुर क प्रस्थान। राजा साहब पाछाँ घूरल छथि।]

धनिक—गोड़ लगैत छी, सरकार।

राजा—[पाछाँ घूमि कए] हमर उपहास क' रहल छह ?

धनिक—[विस्मय क मुद्रा मे] जी ?

राजा—[पाछाँ घूमि कए] सुनलहुं तों बहुत मातबर भ' गेल छह, बहुत पाइ जमा कैने छह !

धनिक—[विनय-पूर्वक] सब अपने सभ क आशीर्वाद सँ।

राजा—हुँ ! [बैसैत छथि आ तम्बाकू पिबैत छथि।]

धनिक—किछु देर धरि असहाय जकाँ ठाढ़ रहि कए तकर बाद] अपने हमरा बजौने छलियैक ?

राजा—[बिना देखनहि] हँ।

धनिक—कहल जाय, कोन सेवा क' सकैत छी ?

राजा—[गड़गड़ा क नल मुँह सँ हटा कए] बैसह। [धनिक सामने राखल आसन पर बैसि जाइत अछि। राजा साहब हँसि दैत छथि।] हाय रे जमाना !

धनिक—[नहि सुनैत] जी, हमरा किछु कहलहुँ ?

राजा—आइ सँ बीस बरस पहिने तों जतय बैसलह, ततय तोहर बापो बैसबाक साहस नहि कैने छल, जनैत छह ?

धनिक—[हँसैत] जी, मन त नहि अछि, तखन हँ, बूढ़-पुरान तेहने किछु कहैत छथि। मुदा से त बीस बरस पहिलुका.........।

राजा—[बात पर जानि-बूझि कए ध्यान नहि दैत] सुनलहुँ, पन्नाबाइ तीन दिन सँ तोहर दुआरि पर महफिल जमौने छल !

धनिक—जी, हमर बेटा क जनम-दिन छलक।

राजा—तोरा ई गीत सुनबाक शौक कहिया सँ भेल छह ?

धनिक—जी, शौक नहि। तखन, समय भेंटैत अछि त......।

राजा—कालिह सन्ध्याकाल समय हैतह त आबि जैह। कालिह पन्नाबाइ राजमहल मे मुज़रा पेश करत।

धनिक—[आश्चर्य सँ] जी ! राजमहल मे ?

राजा—कियैक ? एहि मे आश्चर्यित हैबाक कोन गप्प सुनलह ?

धनिक—[घबड़ा कए] नहि, माने पन्नाबाइ पहिनहि कहने छल जे ओ आइये शहर घुरि जायत; तैं !

राजा—पन्नाबाइ घुरि जायत ? बिलासपुर सँ ? राजमहल मे बिना ऐने ? [उत्तेजना कें दम्भ सँ दमन करैत] कोना सोचलह ?

धनिक—जी से त ठीके, से त ठीके ! मुदा, एखन पूजा क अनुष्ठान त आबिये गेल अछि। तकर पहिने पन्नाबाइ कें आनबाक खर्च त...।

राजा—[बाधा दैत] एखन तों जा सकैत छह।

धनिक—जी ? [विस्मय। किछु काल बाद] जी !

[बत्ती मिझा जाइछ।]

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

[महफिल। उपस्थित केवल दीवान जी आ' धनिक लाल। एकटा विचित्र रोशनी बीच सँ चारूकात विकीर्ण होइछ। दू दिसि टूटा बिछौना, मसलन आदि ओछाओल छैक। बीच मे पन्नाबाइ क बैसबाक जगह तैयार अछि। ओतय सारंगी आ' तबला धरल अछि।]

धनिक—मुदा, अहाँ हमरा कहने छलहुँ जे महल क अवस्था एकदम बिगड़ल अछि। संचय क परिमाण प्रायः निःशेष भ' गेल अछि।

विरंचि—हम त ठीके कहने छलहुँ।

धनिक—और तैं हमहूँ आइ जखन बजार पर गेल छलहुँ तखन राम चन्दर सेठ सँ हवेली क बाकी हिस्सा क विषय मे बातो कैने छलहुँ। किन्तु...।

विरंचि—[बाधा दए] ओ की कहलक ?

धनिक—ओ त साग्रह तैयार भ' गेल। लागल जेना ओकर पिंड छूटि गेल हो !

विरंचि—हैत कियैक नहि ? ओ जनैत अछि जे ओना ओकर टाका घूरि कए आबि नहि सकैत अछि। और सरकार जाबत धरि छथि, ओकरा ईहो साहस नहि हेतैक जे कचहरी जायत।

धनिक—असल मे, एहि महल क त एखन कोनो दाम नहि हैत। जे किछु दाम अछि, से एहि जमीन क। नहि त क्यो एहि मकान क लेल टाका थोड़बे देत !

विरंचि—एहि जमीनो क की खूब बेसी दाम हैत ?

धनिक—अवश्य। एक दिन त हैबे करत और ओ दिन बेसी दूर नहि अछि। ओ सेठ त मूर्ख अछि; लें कइलक आइ-काल्हि, जहिया इच्छा हो, कागत-पत्तर ल' लियह; मात्र टाका टा वापिस आबि जाओक।

विरंचि—[सोचैत] मुदा, सूदि आ' असल मिला कए महल क आधे हिस्सा क जत्तेक ने टाका भ' गेल छैक आ' ताहू पर अहाँ जत्तेक देलहुँ—ततबा कि कहियो एहि जमीन क दाम हैत ?

धनिक—[हँसैत] दीवान जी, अहाँ बहुत सोझ लोक छी। ई दुनिया घूमि रहल अछि स्वार्थ क बल पर। कयो स्वार्थ बिना एको डेग नहि चलैत अछि कत्तहु।

विरंचि—से त बूझल। मुदा अहाँ क ई महल किनबा मे कोन स्वार्थ अछि ? एक ने एक दिन महल नीलाम हैबे करतिहैक। ताहि मे अहाँ कें एतना टाका नहि गनै पड़तिहै। जौं महले किनबाक स्वार्थ हैतिहै, त अहाँ तहिना कीनतहुँ।

धनिक—[मृदु हँसि कए] तखन अहाँ की सोचैत छी जे हम एकदम निः-स्वार्थ भए.........

विरंचि—से हम कतय कहलहुँ ? तखन अहाँ क मन मे एहि महल क प्रति अवश्य कत्तहु स्थान अछि।

धनिक—[कनेक उदास भए] से त ठीके। स्थान अवश्ये अछि—तखन महल क नहि, रानी मा क, जनिक मुख नेना मे हमर बिनु देखल माइ क मुँह सँ एकदम मिलि जाइत छल।

विरंचि—ओ; से बात अछि ?

धनिक—बाद मे महल क दहिन दिस क बड़का हाता मे एक छोट-छीन कारखाना बैसैबाक अछि जतय हजारों लोक काज करै। ई हमर बहुत दिन क सपना थीक।

विरंचि—एहि इलाका मे जौं तेहन एकटा कारखाना भ' जाय त उद्धारे भ' जाय।

धनिक—दीवान जी, दारिद्र्य की थीक से हम देखने छी। हमरा मन अछि जखन वर्षा बरसैत छल, हमर घर क छप्पर मे असंख्य भूर भ' जाइत छल आ' हम गनैत छलहुँ जे कतेक भूर अछि—एक, दू, तीन, चारि, पाँच। सेह गनैत गनैत बड़ भेलहुँ कि हठात् एकदम असहाय भ' गेलहुँ। तखनहि रानी मा अपना शरण मे ल' लेलन्हि। मड़ैया और महल क विपर्यय हमरा मे अनेक रंगीन सपना भरै लागल। हम बुझैत छी जे बिना अर्थ, बिना खाद्य और बिना सपना मनुक्ख कतेो असहाय भ' जाइत अछि। [स्वर बदलि कए] दीवान जी, अहाँ भार लेब ओहि कारखाना क ?

बेरंचि—नहि धनिक लाल, हमरा सपना नहि देखाउ। एहि महल क अर्थी पर ठाढ़ भए हम......नहि नहि।

[बत्ती मिझा जाइत अछि।]

द्वितीय दृश्य

[राजा साहब क कक्ष। मंच क अग्रभाग मे मद्धिम आलोक क प्रकाश मे मंच क बाम दिसि राखल एकटा वेदी आ' एकटा उच्चासन लखा दैत अछि। वेदी पर अतरदान राखल अछि। आसन पर बैसल राजा साहब अपन मोंछ मे अतर लगा कए अतरदान राखि कए उठैत छथि।]

राजा—[शोर पाड़ैत छथि] चतुर, चतुर!

चतुर—[नेपथ्य सँ] ऐलाहुँ मालिक!

राजा—जल्दी आवें। [स्वगतप्राय] ओम्हर पन्नाबाइ बैसल हैत महफिल मे। [मदिरा आ' पान-पात्र नेने चतुर क प्रवेश।] अनलें? राख ओहि ठाम। [चतुर वेदी पर सब चीज राखैत अछि।] आ' सुन, महफिल मे ओ सब आबि गेल छथि?

चतुर—हँ मालिक।

राजा—ठीक अछि। आ' ओ लूटन क बेटा सेहो आयल अछि?

चतुर—जी हँ, ओहो आबि गेल छथि। दीवान जी सँ बातचीत करैत छलाह।

राजा—बेस। तों जो। [चतुर प्रस्थानोद्यत] आ' सुन हमरा द' क्यो पुछतौक त कहि दिहें जे आबै छथि।

चतुर—अच्छा सरकार! [निष्क्रान्त भ' जाइछ।]

[राजा पान-पात्र मे मदिरा ढारि कए पीबा लेल उद्यत होइत छथि। सरमा प्रवेश क' कए शान्त भ' कए देखैत छथि। एक गिलास पीबि कए जखन राजा दोसर गिलास मे मदिरा ढारै छथि, तखन सरमा अगुआ कए आबैत छथि।]

सरमा— अहाँ कें मन अछि, अहाँ क वयस कतेक भेल अछि?

राजा—[पाछाँ दिसि घूमि कए] सरमा ? [कहि कए हँसैत छथि]।

सरमा—अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ !

राजा—वयस बरस-मास-दिन सँ नहि जोड़ल जाइत छैक सरमा।

सरमा—अहाँ क वयस पचपन पार क' गेल अछि।

राजा—मात्र पचपन ? [हँसैत छथि। किछु नशा चढ़ल छन्हि] हम बुझलहुँ पचहत्तर क आस-पास हैत। से जे हो, मुदा अहाँ हमरहुँ सँ बूढ़ भ' गेलहुँ।

सरमा—अहाँ निसा मे छी।

राजा—नहि रानी; एकर साध्य की जे हमरा नशा आबि जाय ? नशा त संगीत मे आओत, राग-रागिणी क आलाप मे आओत। [कहैत-कहैत प्रस्थानोद्यत होइत छथि।]

सरमा—[पास आबि कए] मुदा अहाँ सँ हमरा बहुत किछु कहबाक छल।

राजा—कहबाक लेल कालिह भरि दिन रहत। एखन हमरा जाय दीय'।

सरमा—[राजा कें रोकैत] नहि, आइ हमर बात अहाँ कें सुनै पड़त।

राजा—[खौंझाइत] आह; सरमा ! की नेनपन आरम्भ कैलहुँ ?

सरमा—[व्यथित स्वरें] अहाँ सदिखन अपनहि इच्छा पर जीबैत छी। मोहिनी सब दिन बाहरे रहैत अछि और एहि बिशाल हवेली मे एक-दिसि हम पड़ल रहैत छी। अहाँ गत दस बरिस मे एकहुँ बेर घूरियो कए ताकलहुँ हमरा दिसि ? कखनहु पुछलहुँ—सरमा, अहाँ कें की चाही ?

राजा—[पाछाँ घुरैत] ओह, एखनहि अहाँ कें कोन वस्तु क प्रयोजन पड़ि गेल ? ठीक अछि, हम दीवान जी कें पठा दैत छी। अहाँ हुनका समझा-बुझा.........

सरमा—[बाधा दैत] नहि; हम दीवान जी सँ नहि, अहाँ सँ चाहैत छी।

राजा—[खौंझाइल] की चाहैत छी ?

सरमा—अहाँ कें चाहैत छी।

राजा—तकर माने ? ई की शुरू कैलहुँ आइ ? साफ - साफ बाजू, की चाही ?

सरमा—अहाँ कि बुझैत नहि छी जे अहाँ जाहि पथ पर चलि रहल छी, ओहि पथ पर ध्वंस छोड़ि आन किछु नहि अछि ? [कनमुँह जकाँ] अहाँ राजा छी। अहाँ कें जगह - जमीन - महल आदि बहुत सम्पत्ति अछि। मुदा हमर एकमात्र सम्पत्ति थिकहुँ अहाँ। हम अहाँ कें एहि निश्चित ध्वंस क पथ सँ घुरबै चाहैत छी।

राजा—[हँसैत] वाह सरमा, वाह ! लगैत अछि, आइ पच्चीस बरिस पहिलुका कोनो राति थीक। [गम्भीर भ' कए] अहाँ कत' घूर' चाहैत छी सरमा, हमरा कत' ल' जायब ? [पुनः आसन क पास जा कए पान-पात्र हाथ मे ल' कए] अहाँ सब मरि गेल छी सरमा। [मदिरा ढारैत] अहाँ, दीवान जी, चतुर—सब क्यो। प्रतिपल अहाँ सब मृत्यु क पद-ध्वनि सुनि रहल छी। प्रत्येक मुहूर्त्त अहाँ मरैत छी आगामी मृत्यु क डरें। [पान-पात्र हाथ मे ल' कए उठैत छथि।] जीबाक हो त हमरा संग चलू। [पीबैत छथि।]

सरमा—हम निस्सन्तान रहितहुँ त अपन स्वामी क, अपन सोहाग क भीख अपनहि स्वामी सँ नहि माँगै अबितहुँ। अहाँ कें कखनहु भविष्य क चिन्ता रहैत अछि ?

राजा—के भविष्य क चिन्ता क' कए लाभ उठौलक रानी ? क्यो नहि। अहाँ क पिता कि भविष्य क चिन्ता क' कए हमर हाथ मे अहाँ क हाथ सौंपलन्हिं ? हमर परम पूज्य पितृदेव की हमर भविष्य कें सुदृढ़ बनैबाक लेल नारी, नृत्य आ नग्नता क पाछाँ सबटा सम्पत्ति बहबैत गेलाह ? अहाँ क मोहिनी कि भविष्य क चिन्ता करैत ओहि अध्यापक कें पसिन कैने अछि ? जौं कैनहु हैत त भूल कैलक। भूल कैलक ओ। भविष्य मे पछिलका सब सपना हेरा जायत। जे किछु थीक, जौं किछु अछि से थीक वर्तमान ! [पान-पात्र कें हाथ मे मरोड़ने] आ' एखन पन्नाबाइ

हमरा लेल प्रतीक्षा क' रहल हैत। [राजा पान-पात्र हाथ मे नेने प्रस्थान करैत छथि। सरमा एसगर मंच पर ठाढ़ कानैत रहैत छथि। बत्ती मिझा जाइछ। अन्हार मे संगीत क सुर भासल अबैत अछि; संग मे सारंगी आ' तबला क सहयोग।]

तृतीय दृश्य

[नाच घर। प्रकाश हैबाक बाद मंच क पश्च भाग पर लखा दैत छथि राजा, धनिक लाल आ' पन्नाबाइ। पन्नाबाइ दर्शक क दिसि पीठ कैने मंच क एकदम अग्रभाग मे गीत गाबि रहल अछि। पन्नाबाइ बहुमूल्य पोशाक मे अछि। ओकर दुनू दिसि सारंगी आ' तबला वादक छथि। गद्दा क एक दिसि राजा आ' दोसर दिसि धनिक लाल बैसल छथि। राजा क पाछाँ दीवान जी ठाढ़ छथि। धनिक लाल क पास आज्ञा क लेल प्रतीक्षा-रत चतुर। गीत क बीच मे प्रकाश बढ़ैत अछि। दर्शक कें पन्नाबाइ क हाथ क मुद्रा देखाइ पड़ैत छन्हि। बीच-बीच मे राजा वाह-वाही दैत पीबैत छथि। राजा राजकीय पोशाक मे छथि। धनिक अधिकांश समय राजा कें देखि रहल अछि। पन्नाबाइ क गीत समाप्त होइछ। राजा दोसर गीत क लेल फरमाइश करैत छथि। गीत चलैते काल टाका आ' अशर्फी क थैला कें अपन आसन लग सँ ठेलि कए पन्नाबाइ दिसि बढ़बैत छथि। पन्नाबाइ ओकर उपेक्षा करैत धनिक लाल क दिसि देखि कए मुसकिया रहल अछि। धनिक लाल भावावेश मे छथि। ई देखि राजा क्रुद्ध भ' जाइत छथि। संगहि हुनक भ्रू-भंग होइत छन्हि। गीत बन्द भ' जाइत अछि।]

राजा—धनिक लाल! [धनिक मूड़ी उठा कए राजा दिसि ताकैत अछि]
ई कोनो बाजारी कोठा नहि थीक जे तों पन्नाबाइ क दिसि......

धनिक—[किञ्चित् मत्त जकाँ] जनैत छी; ई राजमहल थीक। [व्यंग्य]
मुदा, गीत कियैक बन्द भेल ? [घूमि कए] पन्नाबाइ !

राजा—[क्रुद्ध स्वरें] नहि। पन्नाबाइ गीत नहि गाओत।

धनिक—अपने हमरा गीत सुनबाक लेल निमन्त्रण देने छलहुँ कि नहि ?

राजा—हम भूल कैने छलहुँ। हमरा पहिनहि बूझब उचित छल—तों की

बुझनह राजदरबार क अदब ?

धनिक—[विचित्र जकाँ हँसैत] वाह रे बाह ! हम कोन बेअदबी देखा-ओल ? [हँसैत अछि आ' एकहि वाक्य क पुनरावृत्ति करैछ। उठि कए ठाढ़ होइत अछि।]

राजा—पन्नाबाइ ! अहाँ जाउ, आइ बिश्राम करू। [पन्नाबाइ चलि जाइत अछि। धनिक तकर प्रस्थान-पथ क दिसि देखैत अछि और तकर बाद राजा क दिसि तकैछ। राजा प्रस्थानोद्यत होइत छथि।]

धनिक—[हँसैत] माफ करब महाराज ! [राजा घूरि कए देखैत छथि।] बेचारा हमर प्रश्न बिनु जवाबे क राति भरि जागल रहत। हमर दोष त कनेक कहल जाय जे पश्चात्तापो करी !

राजा—तोरा सँ बातो करैत हमरा घृणा होइत छह ! [कहबाक साथे धनिक कें ई बात लगैत छैक।] ई हमर दुर्भाग्य थीक जे आइ तोहर संग एक आसन पर बैसि कए पन्नाबाइ क मुजरा सुनै पड़ल। जाहि आसन पर ठाढ़ भ' कए तों भाव-बिभोर भ' रहल छह, ओकर एकटा सूतो छूबाक योग्यता तोरा मे नहि छह।

धनिक—[क्रोध कें प्रकट बिना कैने] माफ करब सरकार, ओ त भेल योग्यता क दोष, हमर की दोष अछि ?

राजा—[किछु काल धनिक क दिसि देखैद छथि। तकर बाद टहलैत कहैत छथि।] और ई तोहर असीम भाग्य छह जे आजुक राति बीस साल पहिलुका कोनो राति नहि थीक !

धनिक—से त हमर सौभाग्य क बात कहल गेल सरकार ! मुदा, हमर दोष क बात त नहि कहल गेल !

राजा—धनिक लाल ! हद सँ आगाँ नहि बढ़ी ! तों बिसरि गेलह जे कतय ठाढ़ भ' कए ककरा सँ बात क' रहल छह !

धनिक—[टहलैत] हम किछु नहि बिसरल छी सरकार ! हम एखन बिलासपुर क भूतपूर्व 'राजा' अभिमान कुमार देव सँ बात क' रहल छी

राजमहल क नाचघर क शून्य महफिल मे ठाढ़ भ' कए। [थम्हि कए] और हम ईहो नहि बिसरल छी जे हम एतय निमन्त्रित भ' कए आयल छी और ईहो हमरा स्मरण अछि जे अपने हमरा सँ बात करैत संकोच-बोध करैत छी।

राजा—संकोच नहि घृणा, तीव्र घृणा ! जाहि घृणा क कोनो आदि नहि, अन्त नहि.........

धनिक—[आहत अभिमानें] मुदा, कियैक सरकार ! हम त अपने क दिसि सहायता क हाथ बढ़ौने छी; हाथ बढ़ौने छी अपने क चरण क दिसि—एहि लेल नहि जे अपने जमीदार छलहुँ, एही लेल जे अपने हमरा सँ श्रेष्ठ छी। [स्वर बदलैत] मुदा, अपने हमर बढ़ायल हाथ क आगाँ एकटा दीवार ठाढ़ क' देने छी। कियैक ? हमर कोन दोष अछि ? पन्नाबाइ क दिसि देखला सँ एत्तेक बिशाल देवार नहि ठाढ़ भ' सकैत अछि.........

राजा—वस ! बन्द करह अपन वक्तृता ! हमर सहायता क लेल एतय आयल छह ? [उच्च स्वरें हँसैत छथि।] हम सब किछु जनैत छी, सब किछु बुझैत छी। हम जनैत छी, तों कियैक ऐलह।

धनिक—कियैक ?

राजा—तों ऐलह इयैह देखबाक लेल जे बिलासपुर क भूतपूर्व राजा क रोजत्व कत्तेक बाकी छैक। तों इयैह नापबाक लेल आयल छह जे अपमान क कत्तेक गहीर पोखरि हमर मृत्यु क लेल यथेष्ट अछि। मुदा ई जानि जाह, तोरा सभक ओहि आशा क पूर्त्ति नहि हैतह। हम एखनहु समाप्त नहि भेल छी। तों की हमर सहायता करबह ? तों, जकर बाप क़हियो हमर पैर क नह क दिसि ताकि कए बात नहि क' सकल ?

धनिक—माफ करब सरकार। बुझलहुँ, हमर ऐनाइ हमर दोष भेल छल। मुदा, ताहि लेल हमर पिता क आत्मा कें कियैक......

राजा—[प्रचंड स्वरें हँसि-हँसि कए] अरे, के कतय छें रौ, सुनैत जो—

धनिक लाल क 'पिता' छल और तकर आत्मो छल !

धनिक—माफ करब सरकार। हमर पिता एक साधारण लोग छलाह और हमहू एकटा साधारण लोग छी। मुदा, तेँ हुनका ल' कए ठट्ठा कैने हमरा नीक नहि लागत। ओ जेहन छलाह, हमर अपन लोग त छलाह, हमर अपन बाबू !

राजा—[और जोर सँ हँसैत, मातल जकाँ] वाह रे लूटन, तोहर जनम सार्थक छौक जे एहन धनिक बेटा पौलें ! [हँसी रोकि कए] धनिक लाल, तोहर मन मे अपन पिता क पितृत्व पर एत्तेक विश्वास छह— आँय ? [व्यंग्य सँ आँखि बड़-बड़ करि कए देखैत रहैत छथि।]

धनिक—सरकार, अपने हमरा सँ पैघ छी—अपने हमर पितृतुल्य छी......

राजा—[पुनः हँसैत] पि-तृ-तु-ल्य ! जकर पिता क पता नहि, तकर पितृ-तुल्य छी हम ? [हँसैत रहैत छथि]

धनिक—[उच्च स्वरें चीत्कार करैत] सरकार ! [पास आबि कए हाथ पकड़ि लैत छन्हि] ई अपने की कहि रहल छी ?

राजा—[हास्य क वेग तखनहुँ जारी अछि। हाथ छोड़ा कए] कहबह की ? जे सत्य थीक, सैह कहैत छियह ! मुदा तोरे टा एहन अवस्था नहि भेलह। [कपट दुःख प्रकट करैत] बेचारा लूटन—तों जकरा पिता जनैत छलह ! ओकरा की भरि जिनगी अपन पिता क खोज भेंटलैक ?

धनिक—[प्रचण्ड क्रोधें राजा क हाथ पकड़ि कए चीत्कार करैत-कहैत अछि] सरकार ! बन्द करू, बन्द करू एहि घृणित प्रसंग कें। [राजा क हाथ छोड़ि कए मंच क सामने अगुआ कए दुनू हाथ सँ मुँह झाँपि लैत अछि] ओह ! प्रत्येक शब्द जेना धीपल, लाल लोहाक सुलफा हो। [पाछाँ घूमि कए] के कहलक अपने कें ई सब बात ? तकर नाम कहू......।

राजा—[प्रत्येक शब्द क धीरे-धीरे उच्चारण करैत] तकर नाम सुनि कए की हैतह ? ओकर नाम क सन्धान करह जकर खून सँ तोहर देह क

प्रत्येक अंग पवित्र भ' रहल छह !

धनिक—के थीक ओ ? [राजा कें निरुत्तर देखि हुनक हाथ पकड़ि कए] कहू ओ के छल ?

राजा—हाथ छोड़ह। [धनिक छोड़ि दैत अछि हुनक हाथ] बेचारे लूटन क माय—सुनैत छी, बहुत सुन्दर छल—ओकर दुर्भाग्य !

धनिक—हँ हँ, हुनका की भेलन्हि ?

राजा—हैतिहन्हि की ? जे होइत अछि, जें हैबाक चाही—सैह भेल। हमर पितृदेव महाराज मदनेश्वर देव क नजरि पड़ल हुनका ऊपर। बस ! पवित्र भ' गेलीह।

धनिक—[मुँह झाँपि लैत अछि] ओह ! की लज्जा ! की घृणा ! —हमर समस्त शरीर मे पापक स्पर्श ! ओह ! एहि उच्छिष्ट जिनगी सँ त मृत्युए नीक अछि।

राजा—आ हा हा ! [सान्त्वना देबाक भंगिमा मे] बेचारा ! मरबह कियैक ? तोहर त आइ आनन्द क दिन छह—तों जानलह जे तोहर खून क स्रोत मे किछु बिलासपुर क राजपरिवारो क दान अछि।

धनिक—[मूड़ी उठबैत] ठीक ! हम कियैक मरब ? हम नहि मरब ! [हँसैत-कानैत] हम नहि मरब ! [कहैत-कहैत प्रस्थान करैत अछि और पुनः घूरि कए अश्रुसिक्त नयन सँ] मुदा सरकार, अपने एत्तेक विराट संवाद देलहुँ हमरा; हम कोना बिसरब महाराज ? हम एकर मोल चुका देब।

राजा—मोल ? तों की मोल द' सकैत छह एहि राजमहल कें ?

धनिक—हम एत्तेक बड़का मोल देब जकर आशा ई विशाल महलो नहि क' सकैत अछि।

राजा—कनेक हमहूँ त सुनी [हँसैत] केहन, कोना, कत्तेक हैत ओकर दाम ?

धनिक—[क्रोध सँ कंठ कठिन भेल छैक] महाराज ! [शुष्क हँसी हँसि

दैछ] ओ मोल कोनो प्रश्न क लेल प्रतीक्षा नहि करैत अछि। ओकर नाम थीक प्रतिशोध और प्रतिशोध शुरू भ' गेल अछि पहिनहि, हमरहु सँ बिना पुछनहि।

राजा—प्र - ति - शो - ध ? [हँसैत छथि।]

धनक—हँसू नहि महाराज ! अपने क हँसी क शब्द जाहि देवार सब पर आघात करैत अछि—कालिह ओ देवार क पतन हैत। कालिह अहाँ क दम्भ क देवार ढहि जाइत।

राजा—कालिह, आगामी कालिह ? [व्यंग्यात्मक कंठ मे हँसैत] अच्छा ? तों ज्योतिष जनैत छह की ? [स्वर बदलि कए] देवार ढहवाक बाद की-की हैत, कनेक हमर हाथ देखि कए बता त दैह। [हाथ बढ़वैत हँसैत छथि।]

धनिक—ई हँसी अपने कें बहुत महग पड़त। एक दिन हम अपने क पोषाक मे ओही ठाम ठाढ़ भ' कए हँसब !

राजा—अहा...हा...हा...हा, एक दिन कियैक—आइये सँ हो !

धनिक—रानी माँ कें हम माता क समान बुझैत छी; तें, पूजा क समय धरि अपने क अहंकार आ' सम्मान क ऊपर पर्दा टांगने रहब। किन्तु तकर बाद.........

राजा—नहि नहि, ताहि मे त और सात दिन देर भ' जायत। ताहि सँ त नीक हैतह—कालिहये एक बेरि चेष्टा करिह'। कालिह त महफिल मे आबिये रहल छह !

धनिक—नहि महाराज ! महफिल हम अपनहि घर मे तीन दिन सुनि चुकल छी !

राजा—ताहि सँ की ? कालिहयो पन्नाबाइ क मुजरा......।

धनिक—माफ करब 'महाराज' ! मुजरा सुनबाक सौख अपनहि पूरा करब ! हम त साधारण लोक छी—उधार क पाइ सँ महफिल क शान नहि बघारैत छी।

राजा—[क्रुद्ध भ' कए] की ? हम उधार क पाइ सँ ई महफिल लगौने छी ?
तोहर एत्तेक स्पर्धा जे तों.........

धनिक—धीरे सरकार, धीरे। एखनहु सब क्यो नहि जनैत अछि।
कियैक सबकें जनबै चाहैत छी ?

राजा—मुदा, तोरा.........तोरा ई-ई सबके कहलकह ? निश्चय दीवान
कहने हैतह। हम एखनहि बजबैत छी—(उच्चकंठें) चतुर, चतुर !

धनिक—आ...हा...हा...हा ! एत्तेक व्यस्त कियैक भ' रहल छी ? एहि मे
लज्जा क कोन बात अछि ? सात दिन खूब ठाठ सँ रहू। तकर बाद
जखन महल खाली करै पड़त—तखन देखल जेतैक !

राजा—[क्रोधें] कृकी ? म-महल खाली करै पड़त ? तोहर हुकुम सँ ?

धनिक—नहि नहि, हमर हुकुम अपने कोना मानि सकैत छी ? हुकुम त
अदालते सँ आओत। [प्रसंगान्तर करबाक अभिनय क' कए अन्य
स्वर मे कहैत अछि।] मुदा, ताहि लेल अपने घबड़ाउ जुनि। एखनहु
सात दिन समय अछि। काल्हि अहाँ खूब ठाठ सँ महफिल जमाउ !
मुदा, हम नहि आबि सकब; कारण, हमर संदूक क मोहर मारल टाका
आन ककरहु हाथें महफिल मे उड़ै—और सेहो हमरहि आगाँ—हमरा
नीक कोना लागत; कहू ?

राजा—[गरजैत] धनिक लाल !

धनिक—आ...हा...हा, आस्ते। क्यो सुनि लेत। प्रतिशोध शुरु भ' गेल।
[धनिक प्रस्थान करैत अछि। राजा दुनू हाथ सँ मुँह झाँपि लैत छथि।
चारू कात सँ धनिक क स्वर प्रतिध्वनित होमय लगैछ हमर सन्दूक क
मोहर मारल टाका...मोहर मारल टाका... मोहर......टाका......
सात दिन खूब ठाठ सँ रहू......सात दिन...... मात्र सात !]

[बत्ती मिझा जाइत अछि।]

—

चतुर्थ अंक

प्रथम दृश्य

[राजमहल क अन्तःपुर]

सरमा—देखू त खबास; पूजा त आबि गेल और अहाँ दिन-राति एसगरे खटि-खटि कए........

चतुर—सब भ' जैतैक, सरकार।

सरमा—देखू ने, एखन धरि.........

चतुर—दीवान जी अपनहि जा-जा कए सब ठाम निमंत्रण-पत्र बाँटि आयल छथि। हँकारो सब कें पड़ि गेल छन्हि।

सरमा—खैर; निमंत्रण सब कें पड़ि चुकल, ई एक बड़का काज भ' गेल अछि।

चतुर—जनैत छी सरकार, एहि बेर गामे टा नहि, समस्त पाली क लोग मुह बौने अछि जे पूजा कहिया आओत।

सरमा—से त सब बेर लोग पूजा लेल उताहुल रहैत आयल अछि।

चतुर—नहि-नहि; सें नहि। एहि बेर कैक बर्ष क बाद फेरो जे नाटक भ' रहल छैक। कलकत्ता सँ नाटक-मंडली आबि रहल अछि—ई सुनितहि सब आनन्दें अधीर भ' गेल अछि।

सरमा—किन्तु खबास, हमरा त बड़ चिन्ता......

चतुर—सरकार, अपने कें कोनो चिन्ता नहि करबाक चाही। कोनो त्रुटि...

सरमा—नहि खबास, राजा कें मौन और स्थिर देखि कए हमरा भय भ' रहल अछि।

चतुर—हँ; आन बेर कतेक उत्साह सँ सब काज क देख भाल स्वयं करैत

छलाह, किन्तु......

सरमा—ओ त ने चलैत छथि, ने फिरैत छथि, ने प्रसन्न होइत छथि आ' ने क्रोधे करैत छथि।

चतुर—सरकार क उदासी क कारण ईहो भ' सकैछ जे एहि बेर दीवानजी क जिद सँ गुणी-कलाकार तथा पंडित आदि कें विदा क' देल गेलन्हि। तें......

सरमा—के जाने......!

[तखनहि मोहिनी अत्यन्त चिन्तित मुद्रा मे प्रवेश करैत अछि। चतुर बाहर चलि जाइत अछि।]

मोहिनी—माय।

सरमा...की ? बाज ने।

मोहिनी—एक टा बात छल।

सरमा—हमरा सँ ? शुभंकर त प्रसन्न छथुन्ह ने ?

मोहिनी—हँ !

सरमा—त बाज ने। की कहैत छें ?

मोहिनी—माय, हमरा टाका चाही।

सरमा—टाका ?

मोहिनी—हँ माय ! टाका ! हमरा बीस हजार टाका चाही।

सरमा—बीस हजार !

मोहिनी—हँ माय, बीसे हजार; नहि त हमरा सभ क सम्पूर्ण भविष्य नष्ट भ' जायत। शुभंकर......

सरमा—[बड़बड़बैत] बी...स हजार ! बीस हजार......बीस हजार। भविष्य नष्ट......बीस हजार ! एत्तेक टाका ? ई कोना......? त बेस; बाबू जी कें कहुन्ह। मोहिनी, हम कोना कहियौक जे राजमहल क विशाल तिजोरी मे आब किछु नहि, किछु नहि छौक......।

[तखनहि 'चतुर-चतुर' हाँक दैत राजा साहब प्रवेश करैत छथि।]

राजा—[दुनू कें चिन्ता तथा उद्वेग-युक्त देखि कए] की बात थीक मोहिनी ? दुनू माय-बेटी एतय ? शुभंकर कतय छथि ?

मोहिनी—ओ अपन कमरा मे छथि।

राजा—ओ ! [कहि कए मंच क अन्य भाग दिसि बढ़ैत उद्विग्न जकाँ प्रस्थानोद्यत होइत छथि।]

मोहिनी—[सरमा कें इंगित करैछ, किन्तु ओम्हर सँ किछु उत्तर नहि पाबि स्वयं आगाँ बढ़ैत] बाबू जी !

राजा—[पाछाँ घूरि कए] हँ बेटी।

मोहिनी—[कनेक घबाइत] अपने सँ एकटा बात छल।

राजा—[विस्मित भए] हमरा सँ ?

मोहिनी—जी हँ।

राजा—[पास अबैत सस्नेह] बाजह, की कहबह।

मोहिनी—बात ई थीक... माने... हम माय कें सब किछु कहि देने छियैक।

राजा—हँ हँ; की बात थीक ? साफ-साफ बाजह ने !

मोहिनी—माने.........हमरा किछु टाका चाही...... कालिहये......बीस हजार टाका।

राजा—टाका ? तों की करबह टाका ल' कए ?

मोहिनी—हमरा......माने हमरा दुनू कें बियाह क बाद एकर आवश्यकता अछि।

राजा—एत्तेक टाका ! किन्तु कोन काज क लेल ?

मोहिनी—ओ विलाइत जाए चाहैत छथि।

राजा—बड़ नीक। [शून्य दिसि देखैत] टाका ! ओ टाका ! किन्तु बीस हजार टाका ?

मोहिनी—हँ, ताहि सँ कम मे त नहियें हैत। तखन बेसी लागने बाद मे ल' लेब।

राजा—मुदा बेटी, एखन त एत्तेक टाका... एकहि संग किछु मोसकिल हैत।

मोहिनी—किन्तु से नहि भेने त......हमरा सभ क सब स्वप्न टूटि जायत।

राजा—स्वप्न टूटि जायत ? किन्तु बीस हजार टाका ? ओफ !

मोहिनी—हमरा सभ क सर्वनाश भ' जायत। हम ककरो मुँह देखैबा जोग नहि रहि जायब।

सरमा—[प्रवेश क' कए आगाँ बढ़ैत] मोहिनी !

मोहिनी—माय, की बीसहु हजार क लेल हमरा लोकनि कें......?

सरमा—मोहिनी, जे तोरा बहुत पहिनहि जानबाक चाही वा जे हमरा लोकनि कें बहुत पहिनहि बता देबाक चाही, से यथार्थ बड़ भयंकर अछि। [किछु कपसैत] तोरा पहिने नहि कहलियैक जे तोरा दुःख पहुँचतौक। मुदा...... [नोर नुकबैत पाछाँ घूमि कए अगुआ जाइत छथि]।

मोहिनी—बाबू जी !

राजा—[पाछाँ घूमि कए अगुअबैत] हँ बेटी।

मोहिनी—की ? हमरा लोकनि क लेल बीसो हजार......?

सरमा—बीस हजार की, बीसो सौ आइ सपना थीक ? सब शून्य भ' गेल अछि। ई बड़का सन्दूक, ई राज, ई राजमहल सब शून्य; सब शून्य!

मोहिनी—[आँखि मे नोर भरि कए] बाबू जी, हम सब की सत्ये आब कंगाल बनि गेल छी ? ई महल, ई ठाठ-बाट, ई महफिल !

राजा—तोरा लेल चेष्टा कैल जा सकैछ......कहुना किछु......।

सरमा—[राजा कें लक्ष्य कए] अहाँ कें ई की भ' गेल अछि ? आब नहि भागू अपना सँ। अहाँ साफ-साफ कियैक ने बाजि सकैत छी जे अहाँ क बिराट तिजोरी एकदम शून्य भ' गेल अछि और अहाँ क जमीन-जगह सब महाजन क सन्दूक मे बन्द भ' चुकल अछि !

मोहिनी—माय ! ई की !

सरमा—[राजा कें] ई कियैक ने कहि दैत छियैक जे ई महलो धरि बन्हकी पड़ि गेल अछि !

मोहिनी—[अश्रु-पूरित नयन सँ देखैत] बाबू जी, ई की ? माथ पर क महल क चादरि सेहो महाजन क हाथ मे आ चुकल अछि ? [राजा कें निरुत्तर देखि] एत्तेक जमीन ! एहन महल ! [सरमा दिसि देखैत] मुदा हमरा पहिने एहि बात क पता कियैक नहि देल गेल ?

सरमा—तोरा पते द' कए की होइत ?

मोहिनी—बहुत किछु भ' सकैत छल। हम पढ़नाइ बन्द क' सकैत छलहुँ और नौकरी क' सकैत छलहुँ।

राजा—थाम्ह ! बिलासपुर क राजकन्या नौकरी करत गे ! और ओहि पाइ सँ हमरा सभ क गुजर चलत ! ताहि सँ त मृत्यु नीक !

सरमा—और जे दिन आबि रहल अछि से कि मृत्यु सँ कम भीषण हैत ?

मोहिनी—ओह ! जौं पता रहतिहै त हम सपना देखब त बन्द करितहुँ।

राजा—एहि मे हमर कोन दोष ? हम की करितहुँ ?

सरमा—किछु नहि क' सकितहुँ, मुदा जे नहि करबाक छल से कियैक कैलहुँ ?

राजा—हम की कैलहुँ अछि ?

सरमा—[आवेश मे] अहाँ राजमहल क बेचि कए महफिल नहि बैसौने छी—अन्तिम सम्पत्ति धरि स्वाहा क' कए एहि बेर पूजा मे नाटक-नाच-गाना क व्यवस्था नहि कैने छी ?

राजा—[आवेश मे] बुझलहुँ; सब हमरहि दोष अछि ! सब हमरहि दोष ! हम की करितहुँ। हम की करू ? लोग सब लग जा कए भिक्षा माँगने फिरू जे हम पूजा करब, हमरा पाइ दे; हमर बेटी पढ़त, हमरा पाइ दे; हमर जमाइ बिलाइत जायत, हमरा पाइ दे; हम मरब, श्राद्ध लेल पाइ दे ! कहू, हम की करितहुँ ?

सरमा—[कानैत] ककरहु कोनो दोष नहि, सब दोष हमर भाग्य क ! [मोहिनी माथ कें सान्त्वना दैछ। तखनहि मंच अन्हार भ' जाइछ। झींगुर क झर्र-झर्र। दूर सँ करुण वाद्य-ध्वनि आबि रहल अछि।]

द्वितीय दृश्य

[अन्तःपुर क दृश्य। मंच पर अन्हार पसरल अछि। शुभंकर ब्रीफकेस लेने प्रवेश करैत छथि। मात्र हुनक पैर पर आलोक-पात भ' रहल छन्हि। किछु दूर जाइत ओ पाछाँ घुरि कए देखैत छथि। तखनहि बिजली चमकैत अछि और ठनका जोर सँ ठनकैत अछि। ओ पुनः आगाँ बढ़ि रहल छथि कि तावत् पाछाँ सँ मोहिनी हुनका पर टार्च बारैत छन्हि।]

शुभंकर– [चौंकि कए पाछाँ घुमैत] के ? के छी ओतय ? [अगुआ कए] ओ ! अहाँ !

मोहिनी—[व्यंग्य क स्वरें] कियेक ? निराश भ' गेलहुँ ?

शुभंकर—नहि निराश कियेक हैब ? आश्चर्य मे पड़ि गेलहुँ। अहाँ एसगर एतय......साहस खूब अछि अहाँ कें......!

मोहिनी—पुछलहुँ नहि—कियेक एतय ठाढ़ छी ?

शुभंकर—पुछबाक इच्छा छल। मुदा जखन अहीं कहलहुँ त......

मोहिनी—तखन सुनू। हम एतय ठाढ़ छी आन ककरहुँ साहस क परीक्षा लेबाक लेल।

शुभंकर—परीक्षा लेबाक लेल ? [हँसैत] ककर ? हमर ? नो डीयर, ई त आइ अहाँ मध्ययुगीन नायिका जकाँ बात क' रहल छी।

मोहिनी—अच्छा आब अहाँ कें हम एतबाक प्राचीन, एतबाक पुरान वस्तु लागै लगलहुँ ?

शुभंकर—छुक ! वस्तु त पुरान होइते अछि। जकरा एक दिन पास रखैत छी, दोसर दिन त ओ पुरान हैबे करत। और जे लोक ओही पुरान वस्तु क जड़ि पकड़ि कए रहैत अछि, सेहो पुरान भ' जाइत अछि। ठीक कि नहि ?

मोहिनी—ठीक। अहाँ अपन क्लास क लेक्चर मे ई बात नहि जानि कत्तेक बेरि कहने हैबैक।

शुभंकर—अवश्य। आइ टीच ह्वाट आइ थिंक एण्ड आइ थिंक ह्वाट आइ डू।

मोहिनी—तखन पढ़ौनाइ कियैक नहि छोड़ि दैत छी ?

शुभंकर—नो ! डोंट बि सिली मोहिनी। आफटर ऑल टीचिंग इज माइ प्रोफेशन और अहाँ त जनिते छी; हम सेहो छोड़ि रहल छी।

मोहिनी—हँ, नौकरी छोड़ि बिदेश जा रहल छी।

शुभंकर—किन्तु जत्तेक दूर कियैक ने जाउ, अहाँ कें नहि बिसरब मोहिनी।

मोहिनी—अच्छा ! हमरा नहि बिसरब ? आइ अहूँ मध्ययुग क नायक जकाँ प्रतिज्ञा क' रहल छी।

शुभंकर—ई हमर प्रतिज्ञा नहि थीक, ई हमर वासना थीक।

मोहिनी—और अपन प्रतिज्ञा सब कें छोड़ि कए जे विदेश जा रहल छी तकर की हैत ?

शुभंकर—ककर प्रतिज्ञा, केहन प्रतिज्ञा ? आधुनिक मनुष्य कोनो प्रौमिस नहि करैत अछि मोहिनी।

मोहिनी—एकर बाद अहाँ कहब—आधुनिक मनुष्य प्रेमो नहि करैछ। सैह कि नहि ?

शुभंकर—राइट यू आर ! देयर इज नो वर्ड लाइक लव। प्रेम नामक शब्द कत्तहु नहि अछि मोहिनी। ओ एक एहन शब्द अछि जकर अहाँ व्यवहार क' सकैत छी, नहियो क' सकैत छी। दैट इज ऐबसौल्यूटली ऑप्शनल।

मोहिनी—तखन गत आठ मास सँ अहाँ क संग हमर सम्पर्क छल तकरा की कहब ? हम कोन नाम ल' कए आगाँ क दिन सब बितायब ?

शुभंकर—दैट वॉज एडजस्टमेंट डियर एण्ड नॉट लव; नॉट एट ऑल। हम अहाँ क मित्र छलहुँ, एखनहुँ बन्धु छी ! बिलीव मी।

मोहिनी—विश्वास हमरा करै पड़त शुभंकर। बिश्वासे ल' कए त बाकी जिनगी बितायब।

शुभंकर—अहाँ क महल, अहाँ क ई गाम बहुत, बहुत सुन्दर अछि मोहिनी। एत्त्य त कयो अपन जिनगी बिता सकैत अछि।

मोहिनी--हम त जिनगी बितायब। मुदा अहाँ कि और चारि दिन नहि बिता सकलहुँ ?

शुभंकर—ताहि सँ कोनो अन्तर नहि हैतैहै। की भेद छैक—आइ वा कालिह?

मोहिनी—तखन आइ घूरि चलू—प्लीज। हम अनुरोध करैत छी, हम प्रार्थना करैत छी।

शुभंकर—आह, डोंट बि सिली मोहिनी। नेनपन जुनि करू। आइ घूरि जैने की हैत ?

मोहिनी—कालिह भोर माँ कें अपन मुँह देखा सकब। नहि त......

शुभंकर—लुक मोहिनी! हम रही वा नहि, भोर हैवे करत।

मोहिनी—अहाँ कियैक नहि बुझैत छी जे अहाँ क एखन एतेक राति कें चलि गेने लोक हमरा की कहत ? हमर प्रेम क लोक कतेक दूर धरि विश्वास करत ? कहत—ओ सब बनाओल कथा छल। शुभंकर हमर अहाँ क सपना क अपमान हैत। अहाँ नहि जाउ।

शुभंकर—अहाँ क धारणा सत्य नहि, हम चोर जकाँ पछुआरि सँ नहि भागि रहल छी। गेल छलहुँ सामने सँ, ऐलहुँ सामने सँ—अहाँ क बाबू जी सँ विदा ल' कए।

मोहिनी—मुदा एहन की भ' गेल जे अहाँ पूजा क दू दिन पहिनहि चलि जा रहल छी ?

शुभंकर—दू दिन मे बहुत किछु होइत छैक मोहिनी! दू दिन मे हम बहुत आगाँ बढ़ि सकैत छी और दू दिन एतय रहबाक अर्थ थीक दू दिन पछुआ जायब। और अहाँ त नीक जकाँ जनैत छी जे हम पहुआयल रहैवला मे सँ नहि छी।

मोहिनी—एहि दू दिन मे अहाँ की करब शुभंकर ? बहुत टाका कमायब ? जिनगी क दोसर कोन पथ क सन्धान पायब एहि दू दिन मे ?

शुभंकर—पथ छोड़ू मोहिनी, हमरा आब समय नहि अछि।

मोहिनी—समय नहि अछि ? हमरो लेल नहि ?

शुभंकर—अहाँ जौं टाका क जोगाड़ क' सकी तखन......

मोहिनी--टाका सँ की हैत शुभंकर ? टाका सँ अहाँ की नापैत छी ?

शुभंकर—बहुत किछु हैत। एखनुका प्रति मुहूर्त कें निश्चिन्त करबाक लेल, आगामी दिन क प्रत्येक सुख पर कब्जा करबाक लेल टाका क दरकार अछि। ई दुनिया जनैत अछि मोहिनी, [कनेक ठिठकि कए अगुआवैत] जौं टाका हो त हमर डेरा क पता बुझले अछि, आबि सकैत छी।

मोहिनी—हमे......हम चेष्टा करब। मुदा हमर एतबा टा बात मानू। कालिह पूजा थीक; कालिह टा......

शुभंकर—बात कें दोहराउ जुनि मोहिनी। हमरा देर भ' रहल अछि। हमरहुँ पूजा करै पड़त, हमर पूजा हमर जीवन क, हमर भविष्य क निश्चिन्तता, हमर पूजा, हमर टाका......!

[तखनहि मंच पर अन्हार भ' जाइछ]

तृतीय दृश्य

[अभिमान कुमार एसगरे मंचपर उच्चासन क पास पाछाँ घूमि कए पान-पात्र सँ मदिरा ढारि रहल छथि। केवाड़ी पर कराघात क शब्द सँ मुख पर खिन्नता क छाप आबि जाइत छन्हि। पाछाँ सँ बहुत मद्धिम स्वरें पन्नाबाइ क गीत सुनल जाइछ। तखनहि पूजा क ढोल-ढाक बाजै लगैछ। धीरे-धीरे ओहो विलीयमान भ' जाइछ।]

राजा—के ? [उत्तर नहि पाबि] चतुर, चतुर ! देख त के आयल ?

विरंचि—[निःशब्द भावें प्रवेश कए] हम, हम छी सरकार ! विरंचि।

राजा—ओ ! [मदिरा-पान करैत] की कहब ? कहू ! आइ अहाँ क सब किछु हमरा नीक लागत। [हँसि कए] कारण, आब कोनो संवाद बाकी नहि अछि, ने बाकी अछि कोनो टा सम्पत्ति, जे अहाँ हमरा आन दिन जकाँ चौंका देब।

विरंचि --हम, हम कोना कहू जे......।

राजा--जे की ?

विरंचि--सर्वनाश भ' गेल अछि मालिक।

राजा--[बिस्मित जकाँ] भ' गेल अछि ? खैर [हँसि कए] तखन की हैत ?

विरंचि--[सरमा कें प्रवेश करैत देखि] रानी जी, सर्वनाश भ' गेल अछि। धनिक अदालत सँ डिगरी ल' कए मकान दखल करै आबि रहल अछि।

सरमा--के धनिक ?

विरंचि--हम कत्तेक समझौलहुँ बुझौलहुँ, मुदा ओ मानिते नहि अछि।

राजा--[पुनः मदिरा ढारैत] सुनल रानी जी ! अपने क राज्य [पान करैत] चलि गेल !

सरमा--[पास आबि कए] अहाँ, अहाँ की छी ? [शराब क पात्र ल' लैत छथि।]

राजा--कियैक ? बिलासपुर क भूतपूर्व राजा अभिमान कुमार देव...... मुदा अहाँ एखन एतय कियैक ?

सरमा--अहाँ कें त किछु खबरि नहि, होश नहि, एम्हर......

राजा--अहाँ कोन सर्वनाश क संवाद सुनायब रानी ! कहू, कहि कए त देखू जे चौंका सकैत छी वा नहि !

सरमा--शुभंकर चलि गेल अछि। मोहिनी कालिह सँ जलग्रहण धरि नहि कैने अछि।

राजा--नहि भेल रानी। ईहो कोनो नव संवाद नहि भेल। शुभंकर हमरहि सामने सँ गेल अछि। और मोहिनी ? [हँसैत] बुद्धिमती अछि; सब जनैत-बुझैत अछि। कालिह जे करै पड़तिहैक से आइये कियैक नहि करत?

सरमा--भगबान क सप्पत; अहाँ किछु त करू। [कनैत] अहाँ, अहाँ कनैत कियैक नहि छी ? [राजा कें चुपचाप ठाढ़ देखि कए] अहाँ किछु करू, कानू, हँसू, भगबान कें गारि दियौक, किछु करू। अहाँ कें एहन पाथर सन देखि कए हमरा डर लगैत अछि। [कनैछ]

राजा--डर ? डर कथीक रानी ? हमर नोर सुखा गेल अछि। एखन कोनो

दुःख दुःख नहि, वेदना वेदना नहि, कष्ट कष्ट नहि अछि। एखन त हम प्रतीक्षा क' रहल छी।

सरमा—ककरा लेल ? धनिक लाल क लेल ?

राजा—[म्लान हँसी]देखैत छी, के अबैत अछि पहिने, धनिक वा मृत्यु !

सरमा—छी-छी ! एहन जुनि बाजू ! अहाँ कियैक मरब ?

राजा—कियैक बाँचब ?

सरमा—हमरा लेल, मोहिनी क लेल।

राजा—अहाँ दुनू क हाथ ध' कए भीख माँगबाक लेल ? जे हाथ एक दिन हजारो लोक कें भिक्षा देने अछि, अहाँ चाहैत छी जे ओ भीख माँगै ?

सरमा—कियैक ? भाइ साहेब क पास जा सकैत......

राजा—अहाँ क भाइ साहेब क पास ? इयैह कहबाक लेल जे आब हम अहाँ क प्रतिपालन नहि क' सकैत छी ?

सरमा—हे भगवान ! बन्द करू; बन्द करू ई सब बात।

राजा—हँ सरमा, ई सब बात बन्द करी। हम सब, सब क्यो मिलि कए एकटा सपना देखी सरमा ! अन्यथा अहाँ जाहि दिसि देखब, मात्र अन्हार देखाइ पड़त ! मात्र अन्हार ! भीषण विकराल लोक सब ! हाथ मे गदा और...और सभ क पैर...पैर पर असंख्य नरक क कीट अहाँ कें अश्लील इंगित करत ! ओकरा सभ क मुख मे विशाल गह्वर सब... ताहि मे हमर पिता, हुनक पिता, लूटन, तकर माय......[कहैत-कहैत आँखि विचित्र भ' जाइत छन्हि। सब क्यो हँसत और कहत—"की राजा साहेब" ? [कनेक सँभरैत] तें कहैत छी—हम सब एक सपना देखी!

सरमा—सपना ! केहन सपना ?

राजा—[सचेत भए] हँ सपना ! [हठात् उदास भ' कए] एकटा सपना देखब रानी ? कालिह राति ओहि सपना क आधा देखने छी हम, आधा सपना छूटि गेल छल। हम ओहि सपना कें जोड़ब रानी।

सरमा—कोन सपना ?

राजा—एकटा बिशाल नदी...नहि विराट समुद्र, ताहि पर एक जहाज, एकटा सपना क जहाज, जकरा ऊपर हम, अहाँ आ मोहिनी! समुद्र क ढेव सब ऊपर उछलि-उछलि कए हमरा सब कें छूबै चाहैत छल! हम सब जाहि बन्दरगाह पर गेलहुँ ओतय कोनो मनुष्य नहि, मात्र कंकाले-कंकाल छल, जकरा सभ क देह पर अत्याचार क चिह्न......

सरमा—नहि-नहि! ई सपना नहि भ' सकैछ!

राजा—हँ रानी, हम इयैह सपना देखने छी। हम ओहि कंकाल सब सँ पुछलहुँ—हम के छी? ओ सब कहलक राजा। हमरा ओ सब राजा कहलक, जनैत छी रानी? [राजा आनन्दें अधीर भ' जाइत छथि] तखन हम पुछलहुँ, हम कतय जा रहल छी? उत्तर मे ओ सब दूर क एकटा टापू देखा देलक, सुख क आवरण सँ बेढ़ल एक निर्जन द्वीप। ओ सब कहलक—ओतय राजे टा जा सकैत अछि। तखन हमर जहाज आगाँ बढ़ल। देखलहुँ ओहि द्वीप क चारूकात कादो-पानि पर लाखक-लाख कंकाल ठाढ़ भ' कए भीतर क लीला देखि-देखि इतिहास लिखि रहल छल! और भीतर युधिष्ठिर, रावण, भोज, पृथ्वीराज चौहान, नादिर शाह, सिकन्दर, चन्द्रगुप्त, हरिसिंह देव, लक्खेसराय सब एक पाँती मे ठाढ़! सब एक पाँती मे। देखि कए हमर लालसा, हमर लोभ समुद्र क वेगहुँ सँ बढ़ि गेल। हम तुरत ओतय जैबाक लेल अहाँ कें जहाज पर सँ धक्का द' कए गिरा देलहुँ अहाँ चीत्कार करैत डूबि गेलहुँ। तखन हम मोहिनी कें उठौलहुँ [उत्तेजित भए] और ओकरा दूर टापू क पास फेंकि देलहुँ। ओ कंकाल भ' गेल। आ' तकर बाद हम...हम विलासपुर क राजा साहब हम [तखनहि भयंकर हृदय पीड़ा सँ डगमगाइत छथि।]

सरमा—ई की? अहाँ कें की भ' गेल? ई की?

विरंचि—सरकार!......चतुर, चतुर! डाक्टर......जल्दी!

राजा—[निषेध करैत] नहि डाक्टर नहि! [टगैत-बड़बड़ैत] जहाज... जहाज डूबि गेल रानी। ओ...ओ कंकाल सब लिखलक...जे एक छल राजा! [तखनहि ढाक क शब्द धीरे-धीरे बढ़ि कए तीव्रतर भए पुनः मन्द भ' जाइछ। सर्वत्र अन्धकार, केवल अगिला कोन पर ठाढ़ घोषक पर प्रकाश पड़ैछ।]

घोषक—बहुत आशा छल जे एक नीक नाटक देखाबी, मुदा जे बजौलन्हि सैह राजा जखन नहि रहलाह तखन हम सब ई अभिनय नहि क' सकैत छी। अपने लोकनि सँ प्रार्थना जे हमरा क्षमा करब।

लेखक परिचिति

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'।

संस्कृत, मैथिली, बंगला, हिन्दी, फ्रेंच तथा अंग्रेजी क विशेष अध्ययन।

भाषाविज्ञानक सान्मानिक स्नातक। परीक्षामे प्रथमश्रेणी मे प्रथम स्थान।

साहित्य, संगीत आ' चित्रकला मे विशेष रुचि।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ—

कवयो वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संग्रह)

अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संग्रह)

नायक क नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)

एक छल राजा (१९७३, मैथिली नाटक)

तत्काल, १६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५ मे अवस्थिति।

स्थायी निवास—

ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिला—सहर्षा।

बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कॉलेज तथा पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत।

सदस्यता

एकप्रति : २.००
वार्षिक : २०.००
आजीवन : २५१.००
संरक्षक : ५००.००

वैदेही

संस्थापक प्रेरण: इन्द्रकान्त मिश्र (कुमार)

प्रो० श्रीकृष्णकान्तमिश्र द्वारा सम्पादित, मुद्रित एवं प्रकाशित

सम्पादक
डा० हंसराज

सह-सम्पादक
चन्द्रेश

प्रकाशन-सहयोग
भोला गिरि 'विनोद'

प्राप्ति-स्थान
वैदेही समिति
दरभंगा

दूरभाष : २२२३६ (निवास)
२२६४५ (कार्यालय)

मॉडन प्रिन्टर्स, सुन्दरपुर वीरा, दरभंगा।

क्रम

कविता

कथा

निबन्ध

स्थायी स्तम्भ

हमर पतिक लेल

□ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

(९)

अहाँक झोपड़ीक छतमे भूर अछि
ओहि भूर दने चूबैत निर्दयी बसात
सबटा गरम भातक माड़केँ सेरा देलक अछि;
ओहि भूर दने टपकैत अकासी नोरसँ
सबटा झरकल अल्हुआ हमर झोरा गेल अछि;
लूटि गेलौं औ बाबू आबहु बन्न करू बरसाति
ओहि भूर दने ओछाओनो हमर भसिया गेल अछि।

आब कहू—
ओहि भूर केँ बन्न करै'क की लेब ?
आबहु बाजू किछु –
किछु-किछु बजबाक अहाँ की लेब ?
बज्जर खसौ'
एहन माथ पर जे गुपचुप रहै' !
कोड़ा मारू
एहन मुँह पर जे गुमसुम रहै' !
एखनहु जँ नहि बाजब त नहि बाजू—
नहि किछु
त कलम त धरू ओहि भूर दय !
एकदिन ओ भूर अहाँक नाश करत !
कम सँ कम
गीतो तकर त लिखू अपनहि हाथेँ।

२)

ओ कहै' छथि
हमर स्थान हुनक माथ पर छन्हि;
हमरा नहि रहबाक अछि
हतकेशो शिखाक संग ।

ओ कहै' छथि
तोरा त' हम करेजमे धएने छियह;
हम नहि रहबन्हि करेजमे
नकली फुसि स्वातन्त्र्य संगे ।

ओ कहै' छथि
धैने छियौ आँखिमे तोरा;
नहि छै' रहबाक हमरा
मल आँखिक जल
भारी मोटगर चश्मा' तर ।

ओ कहै' छथि
ठोर पर छें तों, तोहर नाम
छिऔ जपै' सदिखन;
नहि छै' हमरा बनबाक जपमाला
रुद्राक्ष हो वा गजमोतोक

ओ कहै' छथि
छौ तोहर स्थान जिह्वाग्र पर
हमर रसना रसोई जे सम्हारै' छें;
मुदा हम नहि कहि पबै' छियन्हि —
आब अहाँ वास्तविक चिन्हलहुँ हमरा,
यथार्थ छल अहाँक मूल्यांकन ।

हमर स्थान भानस-भातक गंधसँ सुरभित अछि
हमर स्थान लोहिया-चक्कीसँ बान्हल, निपाटल अछि
बंद पृथ्वीसँ हवासँ चान-सूरजसँ भेंट

एहि भानस-घरमे ऐबाक मंत्र
त बाजले छल छेदी झा
खोंइछा भरै' काल
बहरैबाक तंत्र नहि सिखौलक !

आब अहाँ सत्य बजलहुँ पहिल बेरि
मुदा हम मने मन जनै' छी
हमर स्थान 'रस' पर 'ना' अछि;
जनै' छी अहाँ मने मन की कहै' छी
आ' हँसै' छी—

कहै' छी,
तोहर स्थान छौ' पैरक जूता तर;
ई नहि सोचू जे अहाँक ई राजनीति
बुझै' नहि छियैक !

कहि कए त देखू—
जूता पैर तरसँ माथ पर
कोना चढ़ि अबै' छै',
से अहूँ जानि जायब !
जानि जायब
प्रतिवादक पहिल सबक !

(३)

ई नहि पूछू
कोना भेटल हमरा ई व्याकरण ?
के देलक हमरा कविता
संहिता ?

ई नहि कहू -
की करबें ई सभ अन्ट-सन्ट पोथासँ
दै झरकाए झोंकाह आगिमे
सहस्त्रमूर्खक चिता !

ई नहि सोचू—
अक्षर-ज्ञान नहि अछि
तें सोझ क' कए पोथी धरौ' नहि आबै' छै'
नहि जनै' छी आद्यन्त
'गीता' !

पूछब त पता चलत
चिर-हरणक संवेद छै' एखनहु मनमे
फलै'-फूलै' छं' एखनहु आर्द्र शरीर
एखनहु अछि मनमे शौख बाकी
एखनहु जादू-छड़ी छी घुमा सकैत

एखन
एहिमे कोन अचरजक बात जे नहि अहाँ
त आबहु क्यो हमरा ल' कए लिखत
नव कविता ?

लिखल जायत व्याकरण
हमर चलित-चित-चयन.पर ?
की कहब एकरा
आत्मम्भरिता ?

जनक आ' अन्यान्य एकांकी



डा० उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

जनक आ' अन्य एकांकी

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२; लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०००४५

● प्रथम संस्करण : १९७८ ई०

● रचनाकाल : २ जून, १९७५ ई०

● प्रकाशक :

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,

कलकत्ता-७०० ०४५

● मुद्रक :

सिंह प्रेस

कलकत्ता-७०० ०४५

● मूल्य :

तीन टाका

पात्र-परिचय

जनक—मध्यवयस्क श्रमिक, सम्प्रति बेकार।

कमला—जनक क पत्नी।

कार्त्तिक—जनक क पुत्र।

शान्तिनाथ—मकान-मालिक।

रामू—जनक क गौंआ।

श्रीकान्त—रामू क परिचित व्यक्ति।

नवीन—जनक क पड़ोसी क बालक।

—:※:—

आलोक-व्यवस्था

(क) पहिल दृश्य—भोर क पहर; समय प्रातः ६; चारू कात सामान क भीड़ क कारणें अपर्याप्त आलोक; त्रिरश्मिपात [थ्री स्कीम लाइटिंग]—एक खिड़की सँ तीव्र सूर्यालोक टांगल कपड़ा-लत्ता कें जेना भेद कए लखा होइत अछि; दोसर, मंचक वाम दिसि भानस करबाक स्थान पर अपर्याप्त आलोक; तेसर, प्रवेश-पथ आ तकर आसपास उज्ज्वल आलोक।

(ख) दोसर दृश्य—बेरिया क पहर; कपड़ा लत्ता चपतबाक बादो आलोक पर्याप्त नहि बुझाइत अछि; द्विरश्मिपात [टू स्कीम लाइटिंग]—एक, खिड़की सँ आबैत अस्तंगत सूर्य क आभास; दोसर, घर क साधारण आलोक।

(ग) तेसर दृश्य—भोर; घटनाकाल ६ बजे सँ ७ बजे धरि; दृश्य क अधिकांश समय मे केवल एकहिटा आलोक-स्रोत [लाइटिंग सोर्स] रहैत अछि, जे समय क संग तीव्रतर होइत अछि— ओ भेल खिड़की सँ आबैत सूर्यालोक। अन्त मे ई आलोक भग्नहृदय जनक क पाछा सँ जरैत-मिझैत [ऑफ-ऑन] होइत रहैत अछि; एहि समय मे एक घूर्णायमान आलोक क व्यवहार सेहो हैत।

—:&:—

पहिल दृश्य

[एक निम्नमध्यवित्त व्यक्ति क उजड़ल सन घर मे एकटा खटिया, ताहि पर एकटा बिछौना, टूटा अधटुट्टा कुर्सी, एकटा स्टोव, किछु बर्त्तन आ' भानस क सामान रखबाक एकटा छोट ताखा देखल जाइत अछि। खटियाक ऊपर द' कए एकटा रस्सी टांगल गेल अछि, जाहि पर सँ अधसूखल साड़ी, साया, कुर्त्ता, धोती, गंजी आ' गमछी लटकैत अछि। भानस क ताखा, स्टोव, बर्त्तन आदि मंचक बाम दिसि रहत— दहिना दिसि टूटा टंगटुट्टा कुर्सी।

मंच आलोकित भेलाक बाद एकटा मध्यवयस्का नारी स्टोव पर अधहन चढ़बैत देखल जाइत छथि। अधहन चढ़ा कए ओ किछु काल दुनू हाथ दू दिसि फैला कए पिढ़िया पर बैसल रहैत छथि। तकर बाद ताखा पर सँ चश्मा आ' हनुमान चालीसा उतारि कए पुनः पिढ़िया पर बैसैत हनुमान चालीसा पढ़ै लागैत छथि।

किछु कालक बाद रस्सी पर टांगल धोती आ' साड़ी कें पर्दा जकाँ हँटा कए गृहस्वामी खटिया पर सँ उतरलाह। हुनक आँखि मे तखनहु निन्नक चेन्ह लागल रहैत छन्हि। ओ चश्मा कें कुर्त्ता सँ साफ करैत आगाँ बढ़ैत छथि।]

जनक—की भोरे-भोर बड़बड़ाइ छी ?

कमला—[उत्तर नहि दैत छथि। एक बेरी जनक क दिसि देखि कए पुनः और जोर सँ हनुमान चालीसा पढ़ै लागैत छथि—]

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचन्द्र के काज संवारे॥...

जनक—[कल जोड़ैत] हे, बस करू। जहिना पढ़ैत छलहुँ, तहिना पढ़ू...!

[जनक क अनुरोध सुनि कमला पुनः स्वर कें मद्धिम क' दैत छथि। एहि बीच जनक हुनक पास आबि कए दू-एकटा बर्त्तन क झँपना हँटाए की सब भानस भेल अछि, से देखैत छथि स्टोव पर चढ़ाओल हँड़िया कें छूबितहि हाथ पाकैत छन्हि आ' ओ शीघ्रता सँ हाथ हँटाए मुँह कें विकृत करैत छथि। घर सँ बाहर जा कए कुल्ला क' कए घुरैत एकटा साड़ी मे मुँह पोछैत छथि। तकर बाद एकटा टुटलका कुर्सी कें टेबैत बहुत साव-धानी सँ बैसि कए कैकटा पुरान पत्रिका क पन्ना उनटाबै लागैत छथि।

कमला हनुमान चालीसा क पाठ समाप्त कए हँड़िया क झँपना हँटा कए देखैत छथि— अधहन खौलि रहल अछि वा नहि। तकर बाद उठि कए जनक क पास जा कए ठाढ़ भ' जाइत छथि।]

कमला—सुनैत छी ?

जनक—[पत्रिका सबटा कें दोसर कुर्सी पर धरैत] की सुनब ?

कमला—और कत्तेक दिन अहिना चलत ?

जनक—माने ?

कमला—एक हप्ता भ' गेल अछि, तरकारी क मुँहो नहि देखलियैक। बस, दालिये-भात चलि रहलैक अछि।

जनक—आब हिनका तरकारी चाहियन्हि ?

कमला—हमरा लेल नहि; अहीं क लेल कहैत छलहुँ।

जनक—हमरा से सब किछु नहि चाही।

कमला—[चुप रहि कए] एना चाओरो-दालि कत्तेक दिन रहत ? सेहो त आब...!

जनक—[उत्तेजित भए] त ई सब हमरा कियैक सुना रहल छी ?

[कमला जवाब नहि दैत छथि। दुनू किछु काल चुप रहैत छथि।]

हम की करब एसगर ? झूठौं हमरा कारखाना सँ छाँटि देलक। हड़ताल-घेराब कैलक आन क्यो आ' सबटा दोष थोपल गेल हमरे माथ पर।

[कमला किछु बिना कहनहि स्टोव लग जा कए हँड़िया मे चाओर ढारि दैत छथि। तावत जनक अशान्त भए पदचारणा करै लागैत छथि।]

अहाँ की बूझैत छी, हम कोसिस नहि करै छी ? भोरे निकलैत छी, से साँझुक पहर हारल-थाकल घुरैत छी। एक बेरि जकरा बदनाम क' कए कोनो मिल-मालिक भगा दैत अछि, तकरा लेल आस-पासक मिल सब मे नौकरी भेटब असम्भवे होइत छैक।

कमला—अहीं क संग त गोपाल कें सेहो नौकरी छोड़ै पड़ल छलैक। ओ धैलक कोनो काम-काज की...?

जनक—काज के देतैक ? सब ठाम त वैह यूनियन आ' पार्टीबाजी चलि रहल अछि। आइ हमहूँ ओकरा सभक संग तोड़फोड़ करितहुँ, बात-बात पर हल्ला करितहुँ— त मालिक हमरा भगा सकितथि थोड़बे ? ने यूनियने-बला सब एना मुँह फेरने रहितै। ओकरा सब कें हम नीक जकाँ चीन्हि गेलियैक। नारा लगबैत काल ओसब कहैत अछि— 'दुनियाक मजदूर एक हो !' लेकिन भीतरे भीतर 'ओकरा मार ! ओ बिहारी थिकौ', 'एकरा भगा ! ई मद्रासी थिकौ'— इयैह सब कहैत रहैत अछि।

कमला—जाय दियह से सब बात !

जनक—जाय कोना दियह ? की ई देश हमर नहि थीक ? की माटि पर जातिक नाम लिखल रहैत छैक ?

कमला—एखने ओत्तेक निराश नहि होउ ! [आपन हाथक एकमात्र सोना क कंगन कें देखा कए] ई त अछिये।

जनक—आइ अछि, कालिह नहि रहत। तकर बाद ? [चुप रहि कए] आ' तकर बादे कियैक ? तकर पहिनहि जे हैबाक अछि, से भ' जायत......

कमला—[शंकित भए] की हैत ?

जनक—मकान-मालिक की कहने रहैक, मोन नहि अछि ? आइ चारि मास भ' गेल अछि हुनकर...

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू छी औ ?

जनक—वैह, आबि गेलाह।

कमला—आब ? आब की हैत ? एत्तेक दिन त दुपहरिये कें आबैत छलाह, जखन अहाँ रहैत नहि छलहुँ। मुदा आइ त...

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू !!

जनक—जे हैत, से देखल जायत। [उच्चस्वरें] के छी ? शान्तिनाथ बाबू ? आयल जाय...

शान्तिनाथ—[प्रविष्ट भए] आइ बड़ भाग्य सँ अहाँ भेंटलहुँ।

जनक—नहि, माने... हम त......

शान्तिनाथ—'हम त' की ? अहाँ त जनके चौधरी छी।

जनक—नहि... माने हँ— से त छी।

शान्तिनाथ—सुनू जनक बाबू ! अहाँ कें नीक लोग जानि हम घर किराया पर देने छलहुँ। मुदा अहाँ त मैथिल भ' कए मैथिलेक पाइ मारै चाहैत छी। अही लेल बंगलिया मकान मालिक सब कहने छल— कहियो आपन देशाक लोग कें घर भाड़ा नहि दहक।

जनक—ह-हम त अहाँ कें कहनहि छी जे...

शान्तिनाथ— ...कहने त छी अहाँ बहुत किछु। पहिल मासक भाड़ा जखन नहि देलहुँ, तखन कहने छलहुँ दरमाहा नहि भेंटल। तकर बाद अहाँ क टाका पाकिटमार भ' गेल। दोसर मास मे कहलहुँ नौकरी चलि गेल।

तेसर मास मे कहलहुँ आपन बेटा कें लिखने छी टाका लेल, मनीआर्डर आबितहि हैतैक।

जनक—केवल एहि बेर क लेल अहाँ हमर बात पर विश्वास करू— हम दोसर नौकरी पाबितहि सबटा पाइ चुका देब।

शान्तिनाथ—[जोर-जोर सँ हँसै लागैत छथि] खूब कहलहुँ। अघहन लेल हँड़िया चढ़ा कए चललहुँ बीया रोपै लेल।

जनक—हम स-सत्ते कहैत छी... नौकरी भेंटितहि हम—

शान्तिनाथ— ...सबटा पैसा चुका देब। सैह ने ? मुदा ई त अहाँ एमहर कैक मास मे उन्नैस बेरि कहि चुकल छी। ई बीसम बेर भेल।

जनक—श-शान्ति नाथ बाबू! देखू...

शान्तिनाथ—से त देखिये रहल छी। [घर क चारू दिसि देखैत] घर क जेहन हाल अहाँ लोकनि बना देलहुँ अछि जे नवका भड़ैती कें आनबाक पहिने अहू लेल कम पाइ नहि खर्च करै पड़त।

जनक—नवका भड़ैती... माने ?

शान्तिनाथ—माने अहाँ सब कृपा क' कए ई घर खाली क' दियह! हमर जे आर्थिक क्षति भेल, से भेल। मुदा सब दिन एना नहि चलि सकैत अछि।

जनक—हम कहैत छलहुँ...

शान्तिनाथ—कहबाक लेल शब्द क अभाव अछि थोड़बे ? मुदा तैं एहि बेरटा ई नहि कहियौक जे हम कोसिस करब...

जनक—हम सत्ते कोसिस करब...

शान्तिनाथ—[आँखि बन्न क' कए] एकैस।

जनक—हम अहाँ सँ कोना कहू जे हम कत्तेक तरहें चेष्टा...

शान्तिनाथ—[टोकैत] बाईस। [आँखि खोलैत] बस! हमर गुरुदेव कहने रहथि— बेटा! बाईस बेरि कोसिस कैलाक बादो जखन कोनो काज नहि होइत छैक, त और कोसिस नहि करबाक चाही। तैं आब अहाँ चेष्टा-तेष्टा बन्द करू!

जनक—मुदा हम सब कतय जायब एहि हाल मे ?

शान्तिनाथ—एत्तेक विशाल शहर पड़ल अछि सामने आ' पूछैत छी कतय जायब ? नहि त आपन बेटा लग चलि जाउ !

जनक—[चौंकैत] बेटा लग ? से कोना हैत ? ओकर एखन आमदे की हैतैक ?

शान्तिनाथ—कियैक ? खूब त कहैत छलहुँ जे एना खर्च कैलहुँ, ओतय पढ़ैलहुँ... क्लास मे फस्ट-सकेंड होइत अछि... तकरा नीक नौकरिओ नहि ध' भेलैक ?

जनक—स-से कियैक नहि हैतैक ? मुदा बम्बई मे त जानितहि छी रहै मे टाका कोना पानि जकाँ बहि जाइत अछि।

शान्तिनाथ—तेहन बेटा सँ लाभे की जकरा आपन माय-बाप कें खुऐबाक क्षमता नहि रहैत छैक ? तकर त जीयब-मरब सब बराबरि...

जनक—[गोसा कए] शान्तिनाथ बाबू ! हमर बेटा लेल अहाँ मुँह सँ एहन अपशब्द नहि बहार करू ! अहाँ जानैत नहि छी जे ओ ...

शान्तिनाथ—[रुष्ट भए] जखन एत्तेक भरोसा अछि आपन बेटा पर त ओकरा सँ उधार कियैक नहि लैत छी ? बजा कियैक नहि लैत छी ओकरा ?

जनक—ओ आबि रहल अछि। [एहि बात पर कमला चौंकैत छथि।]

शान्तिनाथ—आबि रहल अछि ? कहिया आओत ओ ? आबि कए करबे की करत ओ, जकर अपनहि हाल नीक नहि छैक ? आ' से आबौक चाहे नहि आबौक ! हम ताहि लेल बैसल नहि रहि सकैत छी। अगिला सोमवार कें हमर नवका भड़ैती आबि रहल अछि। ता धरि हम ई घर खाली देखै चाहैत छी।

जनक—मुदा अहाँ और किछु दिन ठहरि कियैक नहि जाइत छी ? बौआ आबि कए अहाँ क सबटा किराया चुका देत।

शान्तिनाथ—तकर कोनो प्रयोजन नहि अछि! अहाँ कें विश्वास क' कए हम सब बेर ठगैलहुँ। ईहो अहाँ क एकटा नवे चालि थीक।

कमला—[घोघक अढ़ सँ हाथ निकालैत आपन कंगन खोलि कए] तावत् हिनका ई द' दियन्हु ने, जाहि सँ ..

शान्तिनाथ—हम कोनो साहुकार नहि छी जे सोनाक कंगन लेब। हमरा भाड़ा चाही, सेहो चारि महीनाक... एहि सात दिनक भीतर। नहि त, खाली क' दियौक हमर घर।

जनक—मुदा...

शान्तिनाथ—देखू जनक बाबू! हमर नाम थीक शान्तिनाथ। काजो मे हमरा अशान्ति पसिन नहि... मुदा एहन परिस्थिति मे जँ कनेक अशान्ति करै पड़ैक, त पाछाँ हमरा दोष नहि देब!

[ई कहैत शान्तिनाथ निष्क्रान्त होइत छथि। जनक आपन माथ पर हाथ धैने धीरे-धीरे कुर्सी पर बैसि रहैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

—:※:—

दोसर दृश्य

[मंचसज्जा पूर्ववत् रहत। जनक एसगरे रस्सी पर टांगल कपड़ा-लत्ता उठा कए चपेति रहल छथि।]

वीन—[नेपथ्य सँ] काकाजी !! काकाजी !! नहि छी की ?

ानक—[स्नेहपूर्ण स्वरें] के छहक ? नवीन ? आबह, आबह !! [एकटा सात-आठ वर्षक बालक प्रविष्ट होइत अछि।] आबह; कतय गेल रहक ?

वीन—खेलैत छलहुँ।

ानक—त चलि कियैक ऐलह ?

वीन—देखियौक ने— सुशीलबा की सब ने कहैत अछि।

ानक—[धोती कें तह करैत] की कहलकह ओ ?

वीन—ओ कहैत छल— ओकर बाबूजी अहाँ सब कें एहि मकान सँ भगा देताह।

ानक—[तह करैत-करैत हाथ थम्हि जाइत छन्हि। अपना कें सम्हारि कए पुनः तह करब शुरू करैत छथि।] और की सब कहैत छलह ?

वीन—कहैत छल जे अहाँ सब नीक लोग नहि छी; पैसा नहि दैत छी ओकर बाबूजी कें, और... और बहुत खराब-खराब बात सब कहैत रहैक ओ। तँ हमहूँ दू-चारिटा बात सुना देलियैक।

जनक—ओ त ठीके कहैत छल।

नवीन—की ठीक कहैत छल ? जे अहाँ सब बदमास छी ?

जनक—[मृदु-मृदु हँसैत] तखन तोंही कहह— हम सब केहन छी ?

नवीन—अहाँ आ' काकी त कत्तेक नीक छी। हमरा कत्तेक नमंचूस दैत छी, कत्तेक दुलार करैत छी।

जनक—तैयहु दू-एकटा बात त ओ ठीके कहलकह।

नवीन—कोन बात ?

जनक—इयैह जे हम सब दू-एक दिन मे एतय सँ जा रहल छी।

नवीन—कतय ?

जनक— कतय ? [सोचैते उदास भ' जाइत छथि] कतय, के जानैत अछि ?

नवीन—कहू ने कतय जा रहल छी! कियैक जा रहल छी ?

जनक—कियैक जा रहल छी ? हम सब गरीब भ' गेल छी, तैं।

नवीन—कियैक ? एतय गरीब लोग नहि रहैत अछि की ?

जनक—कोना रहत ? ईहो त दुकाने सन थीक। तों दुकानदार कें पाइ नहि देबह त ओ तोरा नमंचूस देतह ?

नवीन—नहि दैत अछि बड़ेबाक दुकान पर... बड़ बदमास अछि...

जनक—बड़ेबे कियैक ? सब तेहने अछि। बिना पाइ के कत्तहु किछु नहि भेंटैत छैक।

नवीन—अहाँ कें पैसा नहि अछि त नमंचूस कोना दैत रहियैक ?

जनक—तखन पाइ रहैक।

नवीन—आब ?

जनक—आब पाइ खतम भ' गेल अछि।

नवीन—हमर बाबू जकाँ अहूँ औफिस जाउ ने। ओतय सँ पाइ ल' आनू।

जनक—[हँसैत नवीन क माथ पर हाथ रखैत छथि।] हमरा त औफिसो-बाला सब भगा देलक औफिस सँ।

नवीन—तखन ? आब अहाँ कोनो काज नहि करब ?

जनक—[नवीन कें ल' कए खटिया पर बैसैत] करब कियैक नहि ? जखन तों औफिस चलैबह, एहि देश कें चलैबह— तखन हमरा काज दिह'। तखन हम फेरो पहिलुके जकाँ काज करबह।

नवीन—आ' हमरा नमंचूस देब ?

जनक—हँ।

नवीन— तखन हम दुनियाक सब लोग कें काज देब।

जनक—तखन दुनियाक सब क्यो तोरा नमंचूस देतह। मुदा, नवीन! तखन त तोरा पास ढेर रास नमंचूस जमि जैतह। ओत्तेक नमंचूस ल' कए तों करबह की ?

नवीन—सबटा बच्चा कें एक-एकटा कए बाँटि देबैक।

जनक—आ' हमरा ?

नवीन—अहूँ कें देब। मुदा अहाँ त कहैत छी चलि जायब। हम त सबटा रास्ता चिन्हैत नहि छी। अहाँ कें खोजब कोना ?

जनक—तखन तों दुनियाक सबटा रास्ता चीन्हि जैबह।

नवीन—नहि। अहाँ आ' काकी एत्तहि रहू।

जनक—कोना रहियह ? कहलियह ने, हमरा सभक पास आब पैसा नहि...

नवीन—[टोकैत] तखन अहाँ आपन बेटा कें कियैक नहि बजाबैत छी ? हुनका पास त बहुत रास पैसा छन्हि। अहीं त कहैत छलहुँ... [जनक कें निरुत्तर देखि] हुनके एतय मंगा ने लियह। ओ हमर बाबू जकाँ औफिस जैताह आ' अहाँ घर में रहब। तखन अहाँ सँ हम खूब कहानी सुनब। [तावत् कमला आबैत छथि।] कहू ने काकाजी! हुनका ल' आनबन्हि ने ?

कमला—[हँसैत] ककरा दय गप भ' रहल अछि ?

नवीन—[खटिया पर सँ उतरि कए कमला क पास जा कए] देखियौक ने! काकाजो सँ कहैत छियन्हि अहाँ सभक बेटा कें बजाबै त ओ किछु बाजते नहि छथि।

कमला—[किछु काल चुप रहि जनक क दिसि देखैत छथि। जनक मूड़ी खसा लैत छथि।] नहि नवीन, ओ त एखन नहि आबि सकैत छथि।

नवीन—कियैक ?

कमला—ओ जतय रहैत छथि, ओत्तहु एकटा बच्चा रहैत अछि— ओकरो नाम थिकैक नवीन। ओ जँ हुनका छुट्टी दियै, तखने ने बौआ आबि

सकैत छथि।

नवीन—हमरा ल' चलू ओतय; त हम ओकरा सँ छुट्टी दिया देब।

कमला—अच्छा! तोरा ल' जैबह। एखन तों जा! खेलह जा कए!!

नवीन—अच्छा। [कहैत दरबाजा दिसि बढ़ैत अछि] मुदा हमरा छोड़ि कए नहि चलि जायब!

कमला—अच्छा! [नवीन चलि जाइत अछि। जनक धीरे-धीरे माथ उठा कए कमला क दिसि देखैत छथि।] शान्ति नाथ बाबू सँ त ओहि दिन कहि देलियन्हि बौआ आबि रहल छथि। कालिह दिन भरिक समय बाकी अछि। आब की हैत? लोग की...?

जनक—[तंग भ' कए] हैत की? हमर बेटा जतय मोन हैत रहत... जहिया मोन हैत आओत। ताहि सँ ककरा की आबैत-जाइत छैक?

कमला—जकरा मुँह छैक, से सुनैबे करत दू-दसटा बात। आइये त झाजी क माय कहैत छलीह— बेटा सियान भ' गेल छह। आब नहि खैबा-पीबाक भार लेतह त कहिया की करतह?

जनक—जे कहैत अछि, तकरा कहै दियौक?

कमला—सुनै त हमरा पड़ैत अछि! जवाबो हमरे... [तावत् नवीन दौड़ल आबैत अछि।] की भेलह नवीन?

नवीन—अहाँ क घरक दिसि के सब ने आबि रहल छथि।

जनक—[खटिया पर सँ उठैत] के आबि रहल अछि? तों कोना जानलह?

नवीन—हम सब खेलैत छलहुँ त देखलहुँ— दू गोट लोग टैक्सी पर सँ उतरि कए अहीं सब दय पूछैत रहथि। ओसब आबितहि हैताह।

जनक—[कमला सँ] के भ' सकैत छथि?

नवीन—एक गोटा कें त बड़का मोंछ छन्हि आ' हाथ मे एकटा लाठी...

जनक—आ' दोसर गोटे? [तखनहि बाहर सँ दू-एक गोटाक स्वर सुनबा मे आबैत अछि। जनक आ' नवीन दुनू बाहर जाइत छथि। जनक नेपथ्ये सँ कहैत छथि] आओल जाय! आओल जाय!

[जनक, रामू आ' श्रीकान्त प्रविष्ट होइत छथि ।]

रामू—हिनका चिन्हलहुन्ह की नहि ?

जनक—नहि रामू काका ! हिनका त...

रामू—हिनका तों बुचियाक बियाह मे देखने रहह हौ ! [जनक मोन पाड़ैक चेष्टा करैत छथि] वैह उपिन्दर बाबू क सार लगताह... श्रीकान्त मिसर नाम थिकन्हि हिनक...

जनक—ओ ! हँ हँ; देखू त— कत्तेक लज्जाक बात थीक । हम त...

श्रीकान्त—ताहि सँ की भेल अछि ? एकहि बेरि त हमरा देखने हैब, सेहो पनरह वर्ष पहिने...।

[कमला कनेक दूरहि सँ रामू कें गोर लागैत छथि ।]

जनक—[कमला क पास आबि कए] हे ! अहाँ कनेक जलपान क व्यवस्था करियन्हु हिनका सब लेल, ता हम... [रामू क पास आबि कए] चलल ने जाय ! हाथ-पैर धो लेल जाय ।

रामू—[जनक कें व्यस्त होइत देखि] नहि-नहि, तोरा व्यस्त हैबाक प्रयोजन नहि ! हम सब खा-पीबि कए आयल छी ।

जनक—नहि-नहि ! से कोना हैत ? जखन ऐबे कैलहुँ, तखन किछु त खाइये पड़त । गरीब छी, ताहि सँ की ?

रामू—[खुश भ' कए] बेस-बेस !

[कमला निष्क्रान्त होइत छथि ।]

जनक—मुदा अहाँ सभक सामान कतय अछि ?

श्रीकान्त—[एक बेरि रामू क दिसि देखैत] से त हम सब...

रामू—सामान होटेले मे अछि ।

जनक—होटल मे ? नहि-नहि, ई कोना भ' सकैत अछि ? हमरा एतय रहैत अहाँ सब होटल मे कोना रहब ?

रामू—त की भेलैक ? होटल त लगे पास मे छैक ।

जनक—तखन त और नीक ! सामान अनबा मे कोनो दिक्कत नहि हैत ।

रामू—कियैक तों बेकार कष्ट करबह ? हम सब त बस कालिहये नॉर्थ बिहार वा मिथिला सँ चलि जैबह।

जनक—एके दिन रहब, त कथी लेल होटल मे पड़ल रहब ? बड़ आदमी हम नहि छी जे हजार टाका खर्च करब। हम सब जे खाइत छी, सैह खुआएब ! से जँ पसिन नहि हो, तखन...

श्रीकान्त—नहि-नहि ! ई की कहैत छी ? से सोचितहुँ त ऐबे कियैक करितहुँ ?

रामू—तोरा कहैत नहि रहियह श्रीकान्त, जे सोझे जनक क ओतय चलह।

श्रीकान्त—अहाँ दय तत्तेक ने प्रशंसा सुनने छियैक, जे...

रामू—जेहन जनक, तेहने ओकर बेटा। अजुका युग मे... हँ, हम त बिसरिये गेल छलहुँ। बौआ कतय छह तोहर ? नहि देखैत छियह ?

जनक—ओ त... माने...

रामू—बुझलियह ! कत्तहु गेल हैतह अपन दोस्त महीमक पास...।

जनक—नहि, से नहि...

श्रीकान्त—तखन ?

जनक—ओ त बाहरे रहैत अछि।

रामू—बाहर ? कतय ?

जनक—ओ त नौकरी क' रहल अछि ने, तैं... खैर ई सब गप-सप त हैते रहत। चलू, पहिने होटल सँ...

रामू—हँ, हँ ! सैह नीक। चलह हौ श्रीकान्त !

[तीनो गोटे उठैत छथि। बत्ती मिझा जाइत अछि।]

—:※:—

तेसर दृश्य

[मद्धिम आलोक मे रामू आ' श्रीकान्त कें सूतल देखल जाइत अछि। दरबाजा क पास ठाढ़ भ' कए जनक आ' कमला बातचीत करैत छथि। हिनका दुनू पर अल्प रेख स्थापित छन्हि।]

जनक—भोर त भ' गेल अछि। मुदा ई सब त सूतले छथि।

कमला—ई सब की कहने रहथि ? आइ जैताह ?

जनक—हँ, आइये सँझुका पहर जैताह।

कमला—गाड़ी पर चढ़ावै जायब की ?

जनक—पागल भेलहुँ ? हिनका सभक संग जैबाक अर्थ भेल हमरा टैक्सी किराया सेहो गनै पड़त। ओत्तेक पाइ कतय सँ आओत ? एहि एकहि दिन मे की कम पाइ खर्च भेल अछि ?

कमला—सेहो ओ सोनाक चूड़ी बाँचल छल, तैं। नहि त...

[दुनू किछु काल चुप रहैत छथि।]

जनक—ओसब बौआ दय पूछैत छलाह।

कमला—की कहलियन्हि ?

जनक—की कहबन्हि ? नौकरी करैत अछि एम० ए० पास कैलाक बाद... बम्बई मे रहैत अछि, इयैह... और की कहितहुँ ?

कमला—ई सब आयल कियैक छथि, से पता लागल ?

जनक—राति खन त गामे-घरक गप-सप चलैत छल, आ'...

[एतबा मे खोंखीक शब्द सुनि कए दुनू चुप भ' जाइत छथि। रामू जागि जाइत छथि। कमला निष्क्रान्त होइत छथि। जनक रामू क दिसि बढ़ैत छथि। तावत् मंच क आलोक धीरे-धीरे बेसी भ' उठैत अछि।]

नीन भेल कि नहि नीक जकाँ ?

रामू—खूब सुतलहुँ की ! सबटा थकान दूर भ' गेल अछि।

[तावत् श्रीकान्त सेहो जागि जाइत छथि ।]

जनक—मुदा ताहि सँ लाभ की भेल ? आइये कहैत छी चलि जायब। और दू-चारि दिन...

श्रीकान्त—असल मे गिरहथक लेल त एखन घर मे रहब अत्यन्त आवश्यक होइत अछि। कटनीक समय थिकैक... घर मे क्यो अछि नहि जे सम्हारत। सबटा भार छोटका लोग पर द' कए ऐलहुँ। आ' आइ कालिह त जानिते छी ककरो विश्वास नहि...।

रामू—हिनकर बेटा त पटना मे नौकरी करैत अछि। तें एखन घर मे माय-बेटी कें छोड़ि कए क्यो नहि... नहि त...

जनक—मुँह-हाथ धो ने लियह तावत्... नाश्ता तैयार अछि।

रामू—तोरो स्वभाव तोहर बाबूए जकाँ भेलह— विनय आ' अतिथि सेवा मे कम नहि जाइत छह।

जनक—[ताखा पर सँ दँतमनि उठा कए दैत] चलू ! अहाँ दुनू कें पानि क कल देखा दैत छी। [रस्सी पर सँ गमछी उठा कए श्रीकान्त कें दैत आगाँ बढ़ैत छथि। तीनो गोटे मंच सँ निष्क्रान्त भेलाह। जनक घुरि आबैत छथि आ' घरक अस्त-व्यस्त चीज-वस्तु कें सजाबै लागैत छथि। एतबा मे नेपथ्य सँ शान्तिनाथ क स्वर सुनल जाइत छन्हि।]

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू ! जनक बाबू !!

जनक—[शान्तिनाथ क स्वर सुनितहि चौंकि उठैत छथि।] के ? शान्तिबाबू ?

शान्तिनाथ—[प्रविष्ट भए] हँ, हमहीं छी। आइ सातम दिन थीक। तें सोंचलहुँ भोरे-भोर अहाँ कें सुप्रभात क' आबी।

जनक—[अनुरोध क स्वरें] मुदा हमर घर मे त कालिह अतिथि आयल छथि...

शान्तिनाथ—से कालिह गंधे सँ पता चलल छल। एहि दने जाइत छलहुँ त सूंघि कए बुझलहु जे मांस रिन्हल जा रहल छल।

जनक—शान्तिनाथ बाबू! कृपा क' कए हमरा और एक दिन समय दियह।
    ओ सब आइये चलि जैताह।
शान्तिनाथ—जाथु; ताहि सँ हमरा की?
जनक—हुनका सभक सामने हमरा बेइज्जति नहि करू... हम कल जोड़ैत छी
शान्तिनाथ—हम अहाँ कें पहिनहि कहि देने छलहुँ जे एहि बेर हम कोनो
    बहाना नहि सुनब। आइये दुपहरि धरि हमरा ई घर खाली चाही।
    ता धरि हमर नवका भड़ैती आबि जायत! हम बहुत दिन सँ हुनका घुरा
    रहल छियन्हि— 'आइ नहि, काल्हि' कहि कए। मुदा आजुक लेल हमहीं
    हुनका कहि देने रहियन्हि। ओ आबिते हैताह।
जनक—मुदा अहाँ नहि बूझि रहल छी जे हमर हाल की हैत।
शान्तिनाथ—हम सब किछु बूझि रहल छी। अतिथि कें खुऐबाक लेल त
    टाका क जोगाड़ ठीके क' सकलहुँ। आ' हमरे किरायाक बेरि मे टाका
    नहि रहैत अछि। ओ सब नहि चलत।
जनक—मुदा......
शान्तिनाथ—कोनो मुदा नहि। [रामू आ' श्रीकान्त क गला क स्वर नेपथ्य
    सँ भासल आबैत अछि।] हम प्रयोजन पड़ला पर अशान्ति सेहो क'
    सकैत छी।
जनक—हे; ओ सब आबि रहल छथि। हुनका सभक सामने किछु नहि
    कहबन्हि। ई हमर इज्जतिक प्रश्न थीक।
    [शान्तिनाथ निरुत्तर रहैत छथि। बात करैत-करैत रामू आ' श्रीकान्त
    दरबाजा सँ भीतर आबैत छथि। मुदा एकटा अनचिनहार व्यक्ति कें
    ठाढ़ देखि कए दुनू चुप भ' जाइत छथि।]
रामू—[जनक आ' शान्तिनाथ— दुनू कें निरुत्तर देखि] जनक! हिनका
    नहि चिन्हलियन्हि।
जनक—ओ; ई छथि शान्तिनाथ बाबू... हमर मकान मालिक। [रामू आ'
    श्रीकान्त नमस्कार करैत छथि। शान्तिनाथ हाथ जोड़ैत छथि। जनक

शान्तिनाथ सँ कहैत छथि—] आ' ई छथि रामू काका, अपने गाम मे रहैत छथि... आ' ओ भेलाह श्रीकान्त बाबू... हिनक मित्र...।

रामू—लागैत अछि, अपनहु मैथिले छी। नहि ?

शान्तिनाथ—हँ।

रामू—वाह ! बड़ खुशी भेल अहाँ सँ परिचित भए। मैथिल भ' कए बँगाल मे कलकत्ता सन शहर मे एत्तेकटाक मकान बनौने छी— ई बड़ आनन्दक गप।

श्रीकान्त—आ' तकर बादो जे ओ गाम घरक लोग कें नहि बिसरलन्हि, हमरा लखे से और आनन्द क बात थीक। एहि मकान क बेसी फ्लैट मे त मैथिले परिवार कें देखैत छियन्हि।

जनक—से हिनक उदारता थिकन्हि।

शान्तिनाथ—[जनक क दिसि तीर्यक् दृष्टियें देखैत] उदारताक कोन बात भेल एहि मे ? मकान-मालिक कें चाहियन्हि पाइ... भड़ैती कतौको होथि...

रामू—मुदा भड़ैती नीक रहने त अहीं कें फायदा...

शान्तिनाथ—से ठीक कहलहुँ।

रामू—आ' मैथिल त ओना शान्तिप्रिय होइते छथि।

शान्तिनाथ—से होइत छथि।

रामू—अहाँ सँ की कहू ? मैथिल त एत्तेक ने शान्तिप्रिय होइत छथि जे ओकर मिथिला कें क्यो बंजर क' दैक, ओकर भाषा आ' अधिकार कें छिनियो लैक ,तैयहु ओ किछु नहि कहत।

श्रीकान्त—[हँसैत] ई त यथार्थ कहलहुँ।

शान्तिनाथ—हमहूँ तहिना शान्तिप्रिय छी। नहि त आइ एकटा सँ चारिटा मकान बना लेने रहितहुँ।

रामू—से कोना ?

जनक—[बात कें टारैत] से सब बड़ नमहर कहानी थीक। हम बरु जलखै केर बन्दोबस्त करी।

राम—दुनू होमै ! गप आ' जलखै मे कोनो बिरोध अछि थोड़बे ?

शान्तिनाथ—कतेको व्यक्ति एहन छथि जे कैक महीनाक भाड़ा नहि देने छथि। हम शान्तिप्रिय नहि रहितहुँ त एहन भड़ैती कें कहिया ने जबरदस्ती भगा दितहुँ। एहि लेल हमरा कम नोकसान भेल अछि ? मुदा, आब स्थिर कैने छी— जे एहि सब मामला मे आपन मैथिलत्व क वर्जन करी।

रामू—हँ, तखन अहाँ क भड़ैती लोकनिये जे नीक होथि, जेना कि जनक छथि... तखन त...

शान्तिनाथ—हँ, तखन त भाड़ा क लेल चिन्ते नहि करै पड़त। जनक बाबू क स्थान एहि मे सब सँ ऊपर छन्हि।

[एहि बात पर रामू आ' श्रीकान्त क पाछाँ सँ जनक कल जोड़ैत इङ्गित सँ शान्तिनाथ कें एहि विषय पर आलोचना कें बन्द करबाक अनुरोध करैत छथि।]

श्रीकान्त—हमहूँ सब ओत्तहि सँ हिनक तत्तेक ने प्रशंसा सुनैत छियन्हि जे...

रामू—तैं श्रीकान्त बहुत दिन सँ हमरा कहैत छल जे चलू। हुनका सँ परिचय करा दियह !'

श्रीकान्त—एत्तेक बेरि कहबाक बादे त अहाँ ल' आनलहुँ। नहि त...

रामू- [मृदु हँसैत] और ई मात्र परिचये धरिक सम्बन्ध नहि बनावै चाहैत छथि।

जनक—तखन ?

रामू—दुनू परिवार मे जाहि सँ एकटा मधुर सम्बन्ध स्थापित होमै, हमहूँ ताहि लेल विशेष उत्सुक छी।

श्रीकान्त—गत वर्ष जेना धूमधाम सँ बेटा क बियाह करौने रहियैक, एहि वर्ष तहिना खूब नीक जकाँ आपन बेटी क बियाह करैबाक इच्छा अछि। [रामू कें देखा कए] हिनका सँ हम कहनहि रहियन्हि जे ताहि लेल दस-बीस हजार जँ खर्चो करै पड़ैक त हम तैयार छी। मुदा लड़का टा नीक आ' नीक घरक हो, तखनहि तैं...

जनक—हमरा नज़रि मे त तेहन कोनो लड़का नहि अछि... हँ, हमर सासुर

मे एकटा... मुदा ओकर उमर बेसी हैत... [तावत् कमला जलखै ल' आनैत छथि। जनक उठि कए हिनका सब कें जलखै दैत छथि। तकर बाद कमला तीन कप चाय आनैत छथि आ' जनक रामू, श्रीकान्त आ' शान्तिनाथ क दिसि चाय क प्याली बढ़ाँ दैत छथि।] लेल जाय!

रामू—आ' तों ?

जनक—चाय त हम पीबिते नहि छी। आ' जलखै हम भोरे कैने छी। बहुत भोरे कें उठैत छी कि नहि!

रामू—कियैक ? भोरे कें औफिस जाइत छह की ?

जनक—हूँ।

रामू—तखन आइ नहि गेलह ?

जनक—अजुका लेल हम कालिहये छुट्टी नेने छलहुँ।

रामू—देखह त... तों हमरा सभक लेल...

शान्तिनाथ—मुदा कालिह त रवि छल... त कालिह छुट्टी कोना लेलहुँ ?

श्रीकान्त—ठीके! हमरा सभक लेल अहाँ लोकसान क' रहल छी!

शान्तिनाथ—[जनक क निषेधपूर्ण इङ्गित क उपेक्षा करैत] ओ! हम त बिसरिये गेल छलियैक! आइ कालिह त हिनका छुट्टीये छुट्टी रहैत छन्हि।

श्रीकान्त—से कियैक ?

शान्तिनाथ—छुट्टी ल' कए ई त कतहु घुरै जायबला रहथि।

श्रीकान्त—सत्ये की ? कहिया ?

जनक—नहि... माने...

शान्तिनाथ—ई लजा रहल छथि... हमरा त अजुके नाम कहने रहथि।

रामू—आइये जायबला छह तों ? एह हे! देखह त... आ' ई नहि कहितथि त हम सब जानबो नहि करितहुँ! जे हो...

जनक—नहि-नहि। हम त छीहे...

शान्तिनाथ—दुपहर धरि त छथिये! ट्रेन त प्रायः...

जनक—नहि, हम सब...

श्रीकान्त—देखू जनक बाबू! हमरा सभक लेल आपन प्रोग्राम कें स्थगित नहि राखू! हमहूँ सब त बेड़ियाक ट्रेन पकड़बे करब। तैं संगे चलब एतय सँ। नहि?

जनक—से देखल जैतैत। अहाँ आपन बेटी क बियाह दय की ने कहैत छलहुँ? कहू त हमर सासुर क ओहि लड़के पर...

रामू—अरे, रहै दहक आपन सासुरक लड़का कें सासुरे मे। तकरा दय हम सब थोड़बे बात करै आयल छियह!

जनक—तखन?

रामू—[श्रीकान्त सँ] नहि! जनक एत्तेक सोझ लोग अछि जे... [जनक सँ] हम सब त तोरे बेटा पर कथा ल' कए आयल छियह!

जनक—हम... माने... हमर बेटा पर?

[शान्तिनाथ एतबा मे उच्च स्वरें हँसै लागैत छथि।]

रामू—[हँसै लागैत छथि] बुझू! हम सब बात क' रहल छलहुँ जनक क बेटा क बियाह क आ' ओ

शान्तिनाथ—[हँसी कें सम्हारैत] जनक बाबू क बेटा पर कथा? [पुनः हँसै लागैत छथि।]

रामू—से कियैक? हँसैत कियैक छी?

शान्तिनाथ—हँसैत छी एहि लेल जे जँ ई बियाह सपना में हो त ठीक अछि। नहि त...

रामू—[रुष्ट भ' कए] माने?

शान्तिनाथ—माने? हिनके सँ पुछियन्हु ने! की औ जनक बाबू? किछु कहियन्हु ने!

जनक—हँ... नहि...

शान्तिबाबू—पुछियन्हु ने कतय छथि ओ?

जनक—से ओ जानैत नहि छथि की?

रामू—ओ त बम्बई मे रहैत अछि... से सब जानैत अछि...।

शान्तिनाथ—पूछियन्हु, कतय रहैत अछि ओ ? कोन मुहल्ला मे ?

जनक—ओ... माने... एखन त मकान बदललक अछि... तैं—

शान्तिनाथ—[रामू सँ] अहाँ हिनक बेटा कें एमहर देखने छी ?

रामू—देखब कियैक नहि ? बुचियाक बियाह मे त जनक ओकरा नेने आयल छल। तखनहि...

शान्तिनाथ—मुदा एमहर त नहि ने देखलियैक ?

रामू—से कोना देखब ? होस्टल मे रहि कए पढ़ैत छल... तकर बाद त नौकरीये धैलक...

शान्तिनाथ—[हँसैत] जनक बाबू सँ पूछियन्हु त वैह एकर पहिने कहिया देखलन्हि आपन बेटा कें ?

जनक—[रुष्ट भए] की कहैत छी ?

शान्तिनाथ—[जनक बाबू क उपेक्षा करैत] हमरा त कहियो-कहियो सन्देह होमै लागैत अछि जे ओ बाँचलो अछि वा नहि...

जनक—[चीत्कार करैत] शान्तिनाथ बाबू। बन्द करू बकवास !

रामू—की बात थीक ? हम सब त किछु नहि बूझि रहल छी। ई सब प्रश्न उठैत कियैक अछि ?

शान्तिनाथ—हिनका सभ कें आइ पाँच-सात वर्ष भ' गेल एहि मकान मे। हजार बेरि सुनलियन्हि जे हिनक बेटा ई छथि त ओ छथि... बम्बई मे छथि... खूब कमाबै छथि... मुदा कहियो त देखलियन्हि नहि... आ' जकर बेटा खूब कमाबैत अछि ओ एहि मुहल्ला मे एहन घर मे कियैक पड़ल रहत ?

जनक—भगवान क सपथ, चुप रहू ! शान्ति सँ रहै दियह हमरा...

[तावत् नेपथ्य सँ ककरहु गलाक आवाज सुनल जाइत अछि।]

कार्त्तिक—[नेपथ्य सँ] शान्तिनाथ बाबू छी की ?

शान्तिनाथ—[दरबाजा क पास जा कए] के छी ? ओ ! अहाँ ? रहू... एक मिनट ! [घुरि कए जनक क पास आबि] जनक बाबू। हमर नवका

भड़ैती आबि गेलाह। आब अहाँ शान्ति सँ रहू... मुदा, एतय नहि—आन कतहु .. जाहि सँ हमहूँ शान्ति सँ रहि सकी!

रामू—[रामू आ' श्रीकान्त एक दोसराक दिसि देखैत छथि। जनक निरुत्तर ठाढ़ रहैत छथि।] की बात थीक शान्तिनाथ बाबू? हम सब त किछु नहि बुझि रहल छी।

शान्तिनाथ—[क्रूर दृष्टियें जनक क दिसि देखैत] बुझब कोना? ई अहाँ सभक दृष्टि पर धूरा जे झोंकने छथि। अहाँ क ई आदर्श व्यक्ति आइ पाँच मास सँ हमरा भाड़ा नहि देने छथि। ने हिनका नौकरीये छन्हि जे ई पैसा देताह। चारू कात क लोग सँ उधार ल' कए आपन शान देखा रहल छथि।

रामू—जनक, ई हम सब की सुनि रहल छी? की ई सत्य थीक?

[जनक जवाब नहि दैत छथि।]

शान्तिनाथ—हमरा त ईहो सन्देह होइत अछि जे आपन बेटा दय जे चारू कात ई कहने घुरैत छथि, से सबटा फूसि थीक। भरिसक हिनकर उद्देश्य छलन्हि बेटा सँ बियाहक नाम पर टाका ल' लेबाक!

जनक—[आहत स्वरें] शान्तिनाथ बाबू। ई अहाँ की कहि रहल छी?

शान्तिनाथ—ठीके कहि रहल छी। ई त नीक भेल अहाँ सब कें पहिनहि सबटा पता चलि गेल। नहि त...

श्रीकान्त—मुदा बेटा कें बिना देखने हम सब तिलक थोड़बे देतिहन्हि?

शान्तिनाथ—[हँसैत छथि। श्रीकान्त सँ] अहाँ त हिनकर बेटा कें देखनहु नहि छियन्हि। [रामू सँ] और अहाँ! पनरह वर्ष पहिने देखने रहियन्हि। आइ जँ पाइक लालचें आन ककरहु ओ बेटा कहि कए ठाढ़ क' देथि त अहाँ चिन्हि सकबन्हि?

जनक—शान्तिनाथ बाबू!

शान्तिनाथ—[गरजैत] अहाँ चुप रहू! अहाँ क चारि सौ बीसी सबटा हम जानैत छी।

जनक—मुदा रामू काका ! विश्वास करू...

रामू—छी-छी, जनक ! हम सब तोरा द्दय की ने सुनैत छलहुँ आ' तों...
छी छी-छी !

कार्त्तिक—[तावत् असन्तुष्ट भए प्रविष्ट होइत] की भेल शान्तिनाथ बाबू ?
हमरो कारखाना जाय पड़त कि नहि ? अहाँ कहने छलहुँ अजुका नाम
आ' आइ धरि कमरा खाली नहि... [तावत् जनक क दिसि हुनक नजरि
पड़ैत छन्हि आ' ओ चुप भ' जाइत छथि ।]

जनक—[कार्त्तिक कें देखि आनन्दित भए] बौआ ! [कहैत ओ आगाँ बढ़ैत
कार्त्तिक क हाथ धरैत छथि ।] बौआ ! तों आबि गेलह ! मुदा तों कोना
ऐलह ? एतहुका पता कतय भेंटलह ?

शान्तिनाथ—[रामू सँ] आब हमर नवका भड़ैतिये कें ई बौआ बनैबाक चेष्टा
क' रहल छथि ।

जनक—चेष्टा कियैक करब ? इयैह त थिकैक हमर बेटा, जकरा द्दय हम...

शान्तिनाथ—कियैक फेरो फूठ बाजि रहल छी ? ने ई बम्बई मे रहैत छथि, ने
ई हजारक हजार टाका कमबैत छथि...

जनक—[करुण स्वर मे, कार्त्तिक सँ] बौआ ! तों कहि दहक हिनका सब कें
जे तोंही...

कार्त्तिक—की कहि देबन्हि हिनका लोकनि कें ? के छी अहाँ जे तखन सँ
'बौआ' 'बौआ' क रट लगौने छी ? के थीक अहाँ क बौआ ?

जनक—[आहत भए] तों... तों कहैत छह...?

कार्त्तिक—शान्तिनाथ बाबू ! के छथि ई सब ? अहाँ त कहने छलहुँ सोमवार
धरि कमरा खाली भेंटि जायत, मुदा ई सब...

[तावत् जनक दुनू हाथें मुँह झाँपि लैत छथि]

शान्तिनाथ—अहाँ व्यस्त जूनि होउ कार्त्तिक बाबू ! ई एकटा चारि सौ बीस
जूटि गेल छलैक... एखनहि कमरा खाली भ' जायत...

नवीन—[दौड़ैत प्रविष्ट भए] काकाजी ! काकाजी ! इयैह छथि ने अहाँ क

बौआ ? अहाँ जे हमरा पुरनका फोटो देखौने छलियैक, ई त देखै मे ओहने छथि। [जनक कें निरुत्तर देखि] कहियौ ने काकाजी ! इयैह छथि ने ओ ?

कमला—[प्रविष्ट भए, अस्पष्ट स्वरें] बौआ !

जनक—[मुँह पर सँ हाथ हँटा कए] बौआ ? के थीक बौआ ?

कमला—की कहैत छी ?

जनक—ठीके कहैत छी कमला। ई नहि थीक हमरा सभक बौआ !

कमला—[कार्त्तिक क पास जा कए] ई की कैलह तों ? तोहर बाबू तोरा पर आपन सब किछु स्वाहा कैलथुन्ह कि इयैह दिन देखबा लेल ? तोहर मोन मे हमरा सभक लेल कनेको जगह नहि छह ?

जनक—ककरा सँ बात क' रहल छी कमला ? देवार सँ ? ओकर मोन मे हमरा सभक लेल जगह रहितैक त आइ हमरा सभक ई हाल होइत ? हमर मोन त एकरा दस वर्ष पहिलहि चीन्हि गेल छल, जखन ई शराब आ' जुआ क पाछाँ हमर खून-पसीना क अरजल पैसा बहौनाइ शुरू कैने छल। मुदा कमबख्त हृदय कहाँ मानैत अछि से... [कहैत अश्रुसंवरण क वृथा चेष्टा करैत छथि।]

[कमला कानै लागैत छथि।]

नवीन—काकाजी ! ई अहाँ क बौआ नहि छथि त कतय छथि ओ ?

जनक—ओ अछि। ओ त सदिखन हमरहि पास रहैत अछि... एतय, हमर हृदय मे...। नहि कानू कमला, चलू ! आब हमरा सभक दिन शेष भेल अछि। ई हम सब गलत दुनिया मे आबि गेल छलहुँ। एतय सम्बन्ध आने तरहक होइत अछि। एतहुका नियम किछु औरे थीक... चलू कमला। एतय जीवन एकटा चालाकी थीक... हमरा सँ से आब नहि हैत, और नहि हैत... [कहैत-कहैत वाक् रुद्ध भ' जाइत छन्हि। दुनू गोटे दरबाजा क दिसि बढ़ैत छथि। कार्त्तिक मुँह घुरौने ठाढ़ रहैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

—:❀:—

इन्द्रमा

पात्र-परिचय

अवध कुमार सिंह—एक उच्च घरक उच्चशिक्षित, नव-विवाहित एवं भद्र राजपूत युवक।

इन्द्रमा —मध्यवित्त घरक एक अपूर्व सुन्दरी, मुंदा वाक्-शक्ति-रहिता नवविवाहिता कन्या—अवधक पत्नी।

अशोककुमार सिंह—अवधक छोट भाइ।

गीतहारि मित्रगण।

—❀—

व्यवस्थादि

समय	:	विवाहक बाद, चतुर्थीक राति।
स्थान	:	अवध क घर, इन्द्रमाक सासुर।
मंचसज्जा	:	पलंग, सुदृश्य ओछाओन, फूल, टेबुल, चेयर, कागज, कलम, एकटा खिड़की आ एक दरबज्जाक फ्रेम।
अंगसज्जा	:	इन्द्रमाक लेल विवाहक पोशाक लाल बनारसी; सिनूर; काजरि; लाली; कान-नाक-हाथ-गला-आ' पैरक गहना; रूमाल आदि। अवधक लेल दामी सिल्कक कुर्त्ता, रंगल धोती, घड़ी, हाथ में माला आदि। अशोकक लेल मूल्यवान कुर्त्ता-पजामा।
आलोक	:	अशोकक आगमनक पूर्व धरि आलोक वन्या, जकर रंग हैत नीलाभ। अशोकक आगमनक बाद वैह आलोकक रंग रहत लाल। अन्त मे एक मध्यवर्ती आलोक वृत्त (मीडियम स्पौट) क काज अछि।
संगीत	:	दूटा कोहबरक गीत : "बैसल छथि भगवान हे"...... एवं "कंचन महल मानिक फेर दियरा..."। एकरा छोड़ि कए आन कोनो संगीतक योजना नहि अछि, मुदा चाही त अतिरिक्त संगीत द' सकैत छी।

—※—

गथ्य सँ कोहबरक गीत सुनल जा रहल अछि। विवाहक बाद चतुर्थीक थिक। वर-वधू गेठबन्धन कयने चौठक याग-यज्ञ-पूजादि करबाक लेल वर मे आयल छथि। चतुर्थीक करणीय काज सब भ' गेल अछि। आब वधूक मिलनक समय आयल अछि। वर अवध कुमार सिंह शिक्षित तथा राजपूत युवक छथि—नीक नौकरी करैत छथि। हिनक व्यवहार मे शहरू ाक छाप छन्हि। वधू अपूर्व सुन्दरी, मुदा मध्यवित्त घरक कन्या छथि।]

कोहबरक गीत

बैसल छथि भगवान हे ओहि कोहबर घर मे
बैसल छथि सीताराम हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि चौर डोलौती हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि चौर डोलौती हे ओहि कोहबर घर मे
सरहोजि अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि भरती सचार हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि डाबर नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
अपन सासु भरती सचार हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि डाबर नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि पान नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि झारी नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
सरहोजि पान नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि झारी नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे

केओ सखि पलंग ओछौती हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि अंग ल‍ौ ी हे ! ! कोहबर घर मे
सरहोजि पलंग ओछौती हे ओहि कोहबर घर मे
कनियाँ प्यारी अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे

[अन्हारहि मे एहि गीतक समाप्तिक संगहि संग हँस्सीक आवाज अबैत अछि। क्यो कहैत अछि—'भेलह, आब चलह एतय सँ।' दोसर क्यो कहैत अछि :—'ठीके''' गीत बहुत भेल अछि''' आब चलू'' देखैत नहि छियैक'' अहाँक माइक मुँह''' और देर करब त'''। एतबहि मे सब क्यो हँसैत छथि आ हँसैत-हँसैत घर सँ चलि जाइत छथि। दरबज्जा बन्द करबाक शब्द होइत अछि। जखन सबटा शब्द विलीन भए परिवेश शान्त भ' जाइत अछि, तखन मंच आलोकित भ' उठैत अछि। मंचक बाम दिसि एकटा खिड़की आ दहिना दिसि एकटा दरबज्जा देखल जाइछ। मंचक मध्य मे एकटा पलंग राखल अछि फूल सँ सजाओल। एक कोना मे एकटा टेबुल आ चेयर अछि। कनियाँ कुर्सी पर माथ झुका कए बैसल छथि। अवध दरबज्जा लग पाछाँ दिसि मुँह घुरा कए ठाढ़ छथि।]

अवध—[गला खखारैत छथि। पाछाँ घुरैत कनियाँ दिसि देखैत छथि। की करताह किछु नहि फुरैत छन्हि। बेर-बेर अपन पोशाकक दिसि देखैत छथि जे कत्तहु त्रुटि रहि गेलन्हि कि नहि। तकर बाद माथ पर हाथ फेरैत बुझबाक प्रयास करैत छथि जे हुनक केश ठीक-ठीक थकरल छन्हि वा नहि। तकर बाद धीरे-धीरे पलंगक दिसि आगाँ बढ़ैत छथि। पलंगक पास आबि कए थम्हैत कहैत छथि] अहाँ कें बड़ कष्ट भेल हैत'''ई सब त अहिना माने आधा राति बिना बितौने जैबे नहि करैत छथि''' [एकर उत्तर मे नातिदीर्घ घोघक अढ़ सँ कनियाँ माथ डोला कए हुनका कोनो कष्ट नहि भेल छन्हि, एहन इंगित करैत छथि।] '''एखनहु देखू ने ओसब गेल हैतीह थोड़बे''' एत्तहि कत्तहु हैतीह। [ई सुनितहि लगैत

अछि जे कनियाँ जेना किछु त्रस्त सन भ' जाइत छथि। सशंक चित्त भए ओ मुँह उठा कए देखै लगैत छथि जे क्यो अछि कि नहि। तहिना देखैत-देखैत पतिक दिसि दृष्टि पड़ि जाइत छन्हि कि ओ माथ झुका लैत छथि लाजें। अवध अपन नवविवाहिता पत्नीक एहि लज्जा भावक नीक जकाँ उपभोग करैत कहैत छथि—] से जौं ओ सब सुनबाक लेल दरबाजा जा देबार मे कान कें साटिये लेने हैतीह — त करै दियन्हु। आ से हैबे करतीह कि'''[एतबा मे नेपथ्य सँ दुइ-तीन गोटेक हँस्सी क शब्द भासल अबैत अछि। चौंकि कए अवध दरबज्जाक दिसि देखैत छथि आ कनियाँ घोघ कें और नमहर बना लैत छथि।] रहू हम देखैत छियन्हि ज के सब छथि'''के सब रहतीह से त हमरा पते अछि ई सबटा छोटकी भौजीक काज थिकन्हि''''''।

[अवध ई कहैत निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। कनियाँ ब्लाउज मे खोंसल कलम निकालि कए एक टुकड़ी कागज पर किछु लिखैत छथि। तावत् अवध पुनः प्रविष्ट होइत छथि। हुनका देखितहि ओ कलम आ कागज नुका लैत छथि। मुदा अवध से देखि लैत छथि। ओ पास आबि कए कहैत छथि—] भगा देने छियन्हि सब गोटा कें। आब लगपास क्यो नहि छथि। [तैयहु कनियाँ कें निरुत्तर देखि कए] की लिखैत छलहुँ''' देखियैक! [ई सुनितहि कनियाँ लिखलका कागज के और नुकाबै चाहैत छथि] अच्छा-अच्छा'''नहि देखब अहाँ की लिखैत छलहुँ! मुदा''
[और अगुआ कए] ई घोघक अढ़ मे जे अपन मुँह कें नुकाकए रखने छी''से त कम सँ कम देखै दियह! [अवध घोघ हटा दैत छथि। कनियाँक अपूर्व सुन्दर मुख देखि कए ओ आनन्दित होइत छथि। कनियाँ अपन दुनू हाथें आँखि मुनि लैत छथि।] एत्तेक सुन्दर मुख त हम एक सपने मे देखने छलहुँ। मुदा मुँह जखन देखै देलहुँ, तखन पुन अपन आँखि कें कियैक नुका लेलहुँ ? से हमरा देखै नहि देब ? [कनियाँ ई सुनितहि हाथ हटा कए धीरें-धीरें आँखि खोलैत छथि। एक बेरि पतिक

दिसि देखिये कए आन दिसि मुँह घुरा लैत छथि लाजें। अवध हुनक एकटा हाथ अपन हाथ मे लैत छथि, मुदा ओ मुँह घुरौनहि रहैत छथि ।। सुनू देखू ने एम्हर···[कनियाँ धीरें-धीरें मुँह अपन पति दिसि घुरबैत छथि, मुदा मूड़ी निहुरा कए रहैत छथि] एत्तेक सुन्दर मुख त देखै देलहुँ, मुदा एहि मुख कें आइ सँ कोना बजायब···नाम त नहियें कहलहुँ अपन···[कनियाँ हाथ छोड़ा कए लिखलका कागज में सँ एकटा निकालि कए अवधक हाथ मे दैत छथि। अवध चकित भए कागज हुनक हाथ सँ लैत छथि आ' पढ़ै लगैत छथि—] "जे अहाँ नाम राखी, सैह नाम रहत सबदिन।" [हँसैत] मुदा हमरा पास एत्तेक शब्द कतय अछि जे अहाँक नाम राखि सकी···। हमरा त उपमाक कोनो ज्ञाने नहि ताहि पर सँ हम बड़ दरिद्र छी । [सोचैत] ककरहु सँ सुनलहुँ—अहाँ साहित्यक छात्रा छलहुँ···अहीं कहू ने···एहि अनिन्द्य रूप क नाम की भ' सकैत अछि ?···[कनियाँ लजा कए कुर्सी पर सँ उठि कए खिड़कीक पास चलि जाइत छथि। अवधो पाछाँ-पाछाँ ओतय आबि जाइत छथि।] की भेल कहलहुँ नहि, कोन नाम सँ बजायब अहाँ कें ? [कनियाँ तखन और एकटा कागज हुनक हाथ मे दए त्वरित गतियें एक बेरि पतिक मुँह क दिसि देखैत मुँह घुरा लैत छथि। अवध पढ़ैत छथि—। 'घरक लोग नाम रखने रहथि—इन्द्रमा।' इन्द्रमा ! वाह·· अपूर्व नाम !! कनियाँ कें पकड़ैत ओ हुनका खिड़की दिसि सँ घुरा कए अपना दिसि क' लैत छथि—] इन्द्रमा ! ··ओम्हर की देखैत छी···हमरा दिसि देखू ने ! [अपन आंगुर सँ कनियाँक अवनत मुख कें उठबैत छथि] अहाँक नाम त इन्द्रमा थिक। जानैत छी हमर नाम की थिक ? [इन्द्रमा स्वीकृति दैत छथि माथ डोला कए] कहू त··· की थिक ? [ओ माथ डोलाबैत छथि] कियैक, 'नहि' कियैक ? ई त भेल गाम घरक नियम जे पतिक नामे नहि लेब··· आ' हम त छी शहरी लोग। ओतय त सब अपन-अपन पतिकें नामे ध' कए बजबैत छथि। ओतय त अहूँ कें तहिना करैटा पड़त, नहि

त ओतहुका लोगसब त खूब चिढ़ाओत''' वहू ने एकबेरि'' अहाँक ओहि पातर मोलायम ठोर मे हमर नाम देखबा मे केहन लागत, से हम सोचियो नहि सकैत छी''' एकबेरि'' मात्र एकबेरि''' प्लीज ! [मुदा इन्द्रमा माथ डोलाकए बारंबार अस्वीकृतिक इंगित करैत छथि तखन हारि कए अवध कहैत छथि—] अच्छा ठीक अछि, तखन नहिये कहू। मुदा शहर मे त कहैये पड़त। ओतय त जेहन ने भीड़ रहैत अछि जे बहुत लोग हेरा जाइत अछि''' साथ छुटि जाइत छैक चलैत-चलैत। अहिना जौं कहियो दुनू गोटेक चलैत-चलैत साथ छुटि जाय, त की करब ! तखन त हमरा नाम ध' कए शोर करैये पड़त, नहीं ? [इन्द्रमा माथ डोलबैत छथि] तैयहु नहि बाजब ? तखनहु नहि हाँक देब त हेराइये जायब ! आ से भेने त फेर कहियो नहि मिलि सकब हम दुनू'' [ई सुनितहि इन्द्रमा मूड़ी खसा लैत छथि एवं हुनक आँखि सँ टपटप नोर चूबै लगैत छन्हि] ई की ? अहाँ त कानि रहल छी ? अहाँ की बुझलहुँ जे हम ई सबटा गप्प सत्ते कहि रहल छलहुँ''' हम त मात्र मजाक'' [इन्द्रमाक ई दुनू हाथें उठाए आँखिक नोर कें अपन हाथ सँ पोछैत] नहि इन्द्रमा'' हम आ' अहाँ कहियो नहि अलग हैब'' दुनियाक कोनो शक्ति अहाँकें हमरा सँ छीनि कए नहि ल' जा सकत'' [ई कहैत ओ इन्द्रमा कें अपन छाती सँ लगबैत छथि। एतबहि मे बाहर सँ नारी कंठक हँसीक स्वर सुनल जाइत अछि। ई दुनू चौंकैत पृथक भ' जाइत छथि। इन्द्रमा लज्जा कए पुनः घोघ तानि लैत छथि। अवध किछु क्रुद्ध भए दरबज्जाक दिसि देखैत छथि। तावत् नेपथ्य सँ गीत शुरू भ' जाइत अछि]

कंचन महल मानिक केर दियरा चन्दन लागल केवाड़ हे
बन बाँसक कोहबर ॥
गज दन्तक सेज फूल के बिछौना रतन जतन के सिंगार हे
बन बाँसक कोहबर ॥

ताहि कोहबर सुतय गेला राम दुलहा सीता दुलहिन संग साथ हे
बन बाँसक कोहबर ॥
कमलक मुख-मुख फेरन लागे सीता दुलहिन कर बाम हे
बन बाँसक कोहबर ॥
कमलक मुख-मुख फेरन लागे घुरि फिरि हृदय लगाउ हे
बन बाँसक कोहबर ॥

÷ ÷ ÷ ÷

घुरि सुतू फिरि सुतू सुहबी से कनिया सुहबी तोरे घामे चादर मलीन हे
बन बाँसक कोहबर ॥
भीजै दिय' भीजै दिय' दुलहा से अवध दुलहा एहन सुख कतय पायब हे
बन बाँसक कोहबर ॥

[जावत धरि गीत चलैत अछि, अवध एक बेरि खिड़की लग ठाढ़ इन्द्रमाक लग जाइत छथि आ' एक बेरि केबाड़ीक लग। ई गीत शेष हैबाक संगहि संग ओ बाहर जाइत छथि। संगहि संग हँसीक स्वर नेपथ्य सँ भासल अबैत अछि—स्त्रिगण सभक भागबाक शब्द स्पष्ट सुनल जाइछ। ओ पुनः प्रवेश कए इन्द्रमाक दिसि बढ़ैत छथि] कनिक जे चैन सँ अहाँ सँ गप्प करब, तकर उपाय नहि अछि। एक त गीतहारि बाँकू भैयाक आङ्गन बाली, माने वैह—डुमरवाली भौजी छलीहे''' ताहि पर सँ जुटल छथि हमर छोटकी बहीन आ' और तीन-चारि गोटे''' रहू ने, भोर होमै दियह त हम'''। [अवध कें एत्तेक क्रुद्ध देखि कए इन्द्रमा हँसि दैत छथि – नि शब्द रूपें ; हुनका आँचरि सँ मुँह नुकैबाक चेष्टा करैत देखि अहाँ हँसि रहल छी ? आ' ओसब'''। एहि बेरि आबै दियन्हु ने त हमहुँ भौजी पर गीत गाबै लागब। [ई सुनितहि इन्द्रमाक हँसी बढ़िये जाइत छन्हि।] नहि त ओसब ओना नहि जैतीह ! [हँसैत-हँसैत एकटा कागज पर कि ने लिखि कए इन्द्रमा हुनका दिसि बढ़ा दैत छथि। अवध से ल' कए पढ़ै लगैत छथि। अपनहि मोने पढ़ैत छथि और ओहो हँसि

दैत छथि—] हँ, ठीके गीत चुनलहुँ। भौजीक बौकू भैया त एखन विदेश मे छथिए''' तेँ इयैह ठीक रहत—

प्रान पती परदेस गेल हे दुख दै गेल भारी
सासु हमर बड़ दुर्जन हे कहै नीपू ओसारी—

हे, ओहुना ई ठीके भेल अछि–बौकू भैयाक माय हिनका सत्ते खूब खटबितो छन्हि''' [हँसैत]

हम सुकुमारी कठिन अछि रे अहि तरहक भारी
नैहर मे बड़ सुख छल रे छलौं घूमै वजारे
केवल खायब काज छल रे आरो रचब सिंगारे

[अवध एतवा धरि पढ़िए कए हँसि दैत छथि ; इन्द्रमो संगहि हँसैत छथि।] हँ आब भेल। आब आबै ने दियन्हु हुनका लोकनि कें'' [कहैत दरबज्जाक पास जा कए ओ एकबेरि देबार मे कान सटा कए किछु सुनबाक अभिनय करैत छथि। आ तकर बाद उठि कए कहैत छथि—] वाह, आब डरबाक कोनो कारण नहि। ओ सब वयो नहि छथि। भरिसक हमर माये डाँटने छथि। [इन्द्रमाक पास आबि कए हुनका पलंग पर बैसाबैत कहैत छथि—] की ने कहैत छलहुँ अहाँ सँ कनेक देर पहिने ? '' ? मोन नहि पड़ि रहल अछि। खैर, जाय दियह से सब गप्प ! ई कहू––हम देखै मे बूड़िबक जकाँ त नहि ने लागैत छी एखन ? [इन्द्रमा आश्चर्यित होइत छथि।] अहाँ कँ आश्चर्य भ' रहल छै मुदा शहर सँ ऐला सँ पूर्व हमर सबटा मित्र कहने रहथि—'बियाह करै लेल जाय छह ? जा ! मुदा देखिह— चतुर्थीक राति मे अपन कनिया सँ बुधियार जँका बात करिह''' बेसी लोग बौक बनि जाइत अछि, नहि त बेसी बाजै लगैत अछि'। कहू ने''' हम तेहन नहि ने लगैत छी ? [इन्द्रमा माथ डोला कए नकारैत छथि।] हम अहाँकें पसिन्न छी ? [इन्द्रमा लजा जाइत छथि—किछु नहि कहैत छथि।] कहू ने''' अच्छा, ठीक अछि, किछु कहै नहि पड़त। हे ई देखू—हम [अपन रूमाल निकालि कए] एहि

रूमाल कें हे एना क' कए धैलहुँ [शून्य मे खुलल रूमाल क एक कोना धरैत देखबैत छथि इन्द्रमा कें]। जौं हम अहाँ कें पसिन्न छी त ई रूमाल खसा दियह हमरा हाथ सँ। [इन्द्रमा पहिने त किछु ने कहैत छथि, ने करैत छथि। तकर बाद झुकि कए रूमाल ल' लैत छथि अवधक हाथ सँ। ओ झुकितहि अवध हुनका चुम्बन करबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा इन्द्रमा अवधक रूमाल सँ अपन मुँह कें झाँपि लैत छथि। अवध इन्द्रमाक माथ कें अपन कन्हा पर रखैत हुनक केस पर हाथ फेरैत छथि किछु काल धरि। तकर बाद इन्द्रमा कें धीरे-धीरे हँटा कए ठाढ़ भ' जाइत छथि और कहैत छथि -] जनैत छी इन्द्रमा··· अहाँ हमरा पहिने भेंटितहुँ··· हमर जीवन मे पहिने अबितहुँ त हमर अतीत हमर वर्त्तमान मुहूर्त्त सन सुन्दर हैतैक, मुदा, असल मे हमहीं तखन अपन विवाहक सब सँ प्रधान बाधा छलहुँ। [एतबाक सुनितहि इन्द्रमा सेहो ठाढ़ भ' जाइत छथि— सप्रश्न दृष्टियें। अवध इन्द्रमाक दिसि देखैत छथि] अहाँ भरिसक जानै चाहैत छी जे कियैक हम से कहि रहल छी। नहि ? [इन्द्रमा माथ डोला कए 'हँ' कहैत छथि।] किशोर सँ जखन युवक भेलहुँ, देह मे यौवनक ज्वार आयल छल। ओहि ज्वार मे हमहूँ आन आन अनेक नाव जकाँ भसिया गेलहुँ। असावधान छलहुँ, तैं। [नेपथ्य सँ एकटा कुमारीक गायन सुनल जाइछ। धीरे-धीरे तकर शब्द बढ़ैत अछि। आ पुनः कम भ' जाइत अछि।] एहि मे हमर दोष त छल, मुदा सब सँ बेसी दोष छल हमर संगी सभक। वैह सब हमरा पापक रास्ता सँ पतनक पाताल धरि ल' गेल छल। [इन्द्रमाक दिसि देखैत। तखन हँ - एतबाक अहाँ कहि सकैत छी जे हमर सब सँ प्रधान अपराध छल ई जे हम एहन सब संगी जुटौने छलहुँ। [किछु काल ओ चुपचाप ठाढ़ रहैत छथि। तकर बाद आगाँ आबि कए आन दिसि मुँह घुरा कए ठाढ़ रहैत छथि। इन्द्रमा सामने आबि कए ठाढ़ होइत छथि। तखन अवध सचेतन भ' जाइत छथि।] दिन मे त स्थिर रहैत छलहुँ। मुदा साँझ होइत देरी भीतर मे

जेना छटपटी लागि जाइत छल। [हँसैत एकरा 'रातिक रोग' कहि सकैत छी। रोज रातिक अंतिम पहर कें घर घुरैत छलहुँ प्रायः बेहोस भ' कए। पीबितो खूब छलहुँ। [इन्द्रमाक दिसि देखैत] की डर भ' रहल अछि पीबाक बात सुनि कए ? [इन्द्रमा मृदु-मृदु हँसैत रहैत छथि, मुदा किछु कहैत नहि छथि।] डरू नहि, एखन हम पीबैत नहि छी। हँसैत] ओ ओही दिन छोड़ि देने छलहुँ, जाहिदिन हमर 'रातिक रोग' हमरा छोड़ि देने छल। [चुप्प भ' कए पदचारण करैत छथि। तकर बाद जेना स्मृति मे डूबि गेल होथि, तेहन स्वर मे कहै लगलाह—] एकराति हम तेहने रोगक शिकार भ' कए शिकारक सन्धान मे बहिरायल छलहुँ। शहरक एक कुख्यात मुहल्ला मे नीक शिकार भेटल छलीह—साधारणतया ओहि-मुहल्ला सब मे एत्तेक सुन्दर निष्पाप मुँह भेंटैत नहि छल। हम स्पष्ट बूझि रहल छलहुँ जे ओ ओहि पथ पर बेसीदिन पहिने नहि आयल छलीह। [एतबाक कहि कए अवध किछु काल चुप्प भ' जाइत छथि। इन्द्रमा अधीर आग्रह नेने हुनक पास आबि कए हुनका धीरे-धीरे छुबैत छथि, मुखभाव मे जिज्ञासा—] तकर बाद की भेल से सुनै चाहैत छी ? तकर बाद रोज राति जकाँ ओतय हम खूब पीलहुँ। एसगरे छलहुँ। कारण, हमर मित्र लोकनि हमरा कुपथ देखा धरि देने छलाह। ओहि पथ पर चलैत काल हम बाद मे आर ककरहु नहि लैत छलहुँ। [हँसैत] इच्छा कामना जं कहू, इयैह छल जे एहि पृथ्वी कें हम एसगरे चीखब, एसगरे उपभोग करब—ताहि मे आर ककरहु अंश कियैक लेमै देब ? [चुप्प रहि कए] तँ ओतहु एसगरे गेल छलहुँ। नशा जखन खूब जमि उठल तखन हम बत्ती मिझा कए ओहि निष्पाप असहाय देह कें ल' कए आदिम खेल खेलै लागि गेलहुँ। एतबा मे बाहर सँ क्यो केबाड़ पर धक्का देलक। हम तमसा गेलहुँ। मुदा सोचलहुँ—ई सब जगह मे त पुलिसक झमेला होइते रहैत छैक। तँ, वैह सब हैत—किछु पाइ खर्च हैत''' इयैह सब सोचैत हम ओकरा कहलहुँ केबाड़ खोलि कए देखै लेल। ओ केबाड़ खोलिये

कए किछु आश्चर्यित भ' कए ककरा सँ ने निम्न स्वर मे बात क रहल छल''' कखनहु कखनहु डाँटियो रहल छल। हम मने मन गोसा रहल छलहुँ। सोचि रहल छलहुँ—जे कोन आफत आबि गेल अछि। उठि कए दरबज्जाक पास गेलहुँ त देखलहुँ ओ एकटा बच्चा कें मारि रहल छल आ' ओ बच्चा बिना कोनो शब्द कैने कानि रहल छल। हम ओतय पहुँचि कए ओकरा सँ ओहि बच्चा दए पूछितहि ओ ओकरा भगा देमै चाहैत छल। मुदा मारि खा कए ओ तखन पड़ल कनैत छल- जा नहि रहल छल। हमरा जे कहियो नहि होइत छल— सैह भेल ओहि बच्चा पर दया आबि गेल आ' हम ओकरा घरक भीतर ल' अनलहुँ। डटैत ओकरा सँ पूछल जे एना ओ कियैक कैलक। तकर बाद पता चलल ज ओ ओकरहि बेटा छल। आरो बहुत किछु पता चलल जकर बाद अपना पर घृणा भ' गेल छल। पता चलल जे ओकर पति मृत्युशय्या पर पड़ल छलैक। आ ओकर सन्तान सब पड़ल छल भूखल। घरक लक्ष्मी एम्हर अन्नसंधानक लेल रोज राति अपन देह कें बन्हकी रखैत छलीह हमरासब सन कामुक धनिक यथेच्छाचारी लोगक पास। [इन्द्रमा आश्चर्यित हैबाक अभिनय करैत छथि।] आश्चर्य भ रहल छी? मुदा ई सत्य थिक। संसार मे अहिना होइत अछि। हमरा सभक आँखिक आगाँ सँ जखन रंगीन पर्दा अपनहि हँटि जाइत अछि— तखन हमसब पर्दाक ओहि दिसि राखल दीर्घ ऐना मे अपना सबकें देखि कए चौंकि उठैत छी, सिहरि उठैत छी। अपन असल स्वरूपक पता तखनहि चलैत अछि। ओहि लक्ष्मीक पति कारखानाक एक मशीन तर दूनू हाथ क बलिदान देने छल। मुदा मालिक कोर्ट मे प्रमाण क' देने छलाह जे एहि मे ओकरे दोस छल। तैं ओकरा नहि भेटल कोनो क्षतिपूरण आ' ने भेल छलैक चिकित्सोक व्यवस्था। लक्ष्मीक भंडार मे जे किछु छलन्हि, से सबटा खर्च भ' गेल छलन्हि चिकित्से मे। मुदा आमदनी आब किछु नहि होइत छलन्हि। अंत मे दारिद्रय आ भूख लोग कें जे ने कराबै। गृहिणी गृह सँ बजार मे

बिकै लेल पहुँचि गेल छलीह। जनैत छी ओ बच्चा की कहै लेल आयल छल ? ओ ओहि लक्ष्मीकें दूटा संवाद देमै आयल छल— एक— सब भाइ-बहीन कें खूब भूख लागल छलैक ; दूइ— परिवारक ऊपर सँ और एकटा बोझ उतरि गेल छल'''ओकरा सभक पिताक देहान्त भ' गेल छलैक। [चुप्प रहैत छथि। नेपथ्य सँ एकटा नारी कंठक हृकन्न कनबाक आवाज आबि रहल छल।] ओ कानि रहल छलीह अपनहु ओकर बच्चा चुप्प भ' कए ओकर मायक कानब देखि रहल छल, आ हम ? हम अनुतापक आगि मे जरि रहल छलहुँ। [चुप्प रहैत अपन आँखि मे आयल नोर कें पोछि लैत छथि।] ताहि दिन सँ हम प्रायश्चित्त शुरू कैलहुँ और आइ अहाँकें पाबि कए हम अपना कें, अपन प्रायश्चित्त कें, ओहि दिन सँ शुरू भेल सुन्दरक लेल अपन आराधना कें सार्थक बुझैत छी। इन्द्रमा, अहाँ सबदिन हमरहि रहब ने ?''' हमरा पास''' एत्तेक पास ? [कहैत इन्द्रमा कें अपना दिसि आकृष्ट करैत कथि। हमरा छोड़ि त नहि देब कहियो हमर आराधना क आधे पथ मे ? [इन्द्रमा माथ डोलबैत अपना कें समर्पण करैत छथि अवधक हृदय मे।] इन्द्रमाक माथ पर हाथ फेरैत अवध कहैत छथि—] अहिना सब दिन अहाँकें''' हमर घरक लक्ष्मी कें जौं हम अपन जिनगीक सन्दूक मे बन्द क' कए राखि सकों, त हम कहियो—[एतबा मे बाहरक दरबज्जा मे खटखट शब्द होइत अछि। आश्चर्यित भए दुनू पृथक भ' जाइत छथि।] के भ' सकैत अछि एत्तेक राति कें ? भौजी आर त नहिये हैतीह एखन।

अशोक—[नेपथ्य सँ पुनः दरबाजा पर कराघात करैत भैया ! भैया !!

अवध—[स्वगत] अवध ? एखन ?? की बात थिकैक ? [दरबाजा खोलैत]
की बात थिकैक अशोक ? की भेल अछि ?

अशोक— सर्वनाश भेल अछि भैया। [अशोक ई कहैत भीतर अबैत अछि।]

अवध— मुदा भेल की अछि, से कहबह तखन ने !

अशोक—हमरा सबकें " हमरा सभक सब किछु —सबटा इज्जति लूटि लेलक ओसब"'

अवध —[अधीर भ' कए] की भेल अछि से कहब ने !

अशोक—हमरा सबकें मकरन्दपुर बला सब खूब ठगि लेलक अछि"'

अवध—मकरन्दपुर बला सब ? माने [पत्नीकें देखा कए] माने हिनक नैहरक लोगसब"'

अशोक—अहाँ एखनहुँ से बुझलहुँ नहि भैया जे ओसब केहन डाइन क हाथ कें अहाँक हाथ मे धरा देलक अछि ?

अवध —[गरजैत] अशोक ! की कहैत छह ? ई तोहर भौजी छथुन्ह ! हिनका विषय मे एहन अपशब्द बजबा सँ पहिने

अशोक—अपशब्द ? एकरा अहाँ अपशब्द कहैत छी भैया ? और ओहि सुन्दर मुखक अढ़ मे को अछि से जनैत नहि छी ?

अवध—थम्हह ! की भेल छन्हि हुनक मुख मे ? [एलबाक कहैत बात हैत·हैत घोघ कें नमरा कए इन्द्रमा खिड़कीक पास आ' कए पाछाँ घुरि कए ठाढ़ भ' जाइत छथि।]

अशोक—हँ--सैह पुछू भैया जे की नहि भेल अछि। अहाँ जनिका लक्ष्मी बुझैत छियन्हि " ओ " हुनक मुँह मे भाषा नहि छन्हि"' ओ बौक छथि

अवध—[अत्यन्त आश्चर्यित भए] की ?

अशोक—हँ भैया, हँ"'एखनहि पता चलल ई बात। पूरन भैयाक सार आयल छथि " सैह कहने छथि " ओहो मकरन्दपुरक लगेपासक छथि। [अवध कें चुप्प देखि] भैया ! चुप्प कियैक छी"' आबहु नहि बुझि रहल छी जे कियैक एत्तेक धूमधाम आ' खर्च कैने छलाह ओसब ? बियाहक दिन स्थिर करबा मे हड़बड़ी दए मोन नहि अछि ? किछु पड़ि रहल अछि

मौन ? आब त हम सबटा बुझैत छी। हमहूँ सब नहि छोड़बन्हि। भोरे एहि डाइन कें मकरन्दपुर भगैबाक सबटा बन्दोबस्त कैनहि छी··· हुनका सबकें नीक जँका बुझा देबाक चाहियन्हि जे हमरा सबकें अपमान हजम करबाक आदति नहि अछि। हमहूँ सब बदला लेमै जनैत छी। कालिहये [एतबा मे कनैत कनैत इन्द्रमा थरथरबै लगैत छथि, हुनक घोघ उतरि जाइत छन्हि आ' ओ पाछाँ घुरि कए अवध दिसि देखैत और कनै लगैत छथि।] बस-बस, बहुत भेल!··· हम सबटा चालाकी बुझैत छी··· ओ सब ढोंग-ढरनच और अभिनय एतय नहि चलत।

अवध—[डाँटैत] अशोक !!! अपन जबान कें रोकह··· हमरा सामने हमर स्त्रीक विषय मे अभद्र जकाँ बात करबाक अधिकार तोरा के देलकह ?

अशोक—[आहत स्वर मे] भैया !!! ई अहाँ की कहैत छी ? ई··· ई बौक छथि··· हिनका बजबाक शक्ति नहि छन्हि··· हिनका लेल अहाँ···

अवध—हूँ-हूँ··· हिनका लेल हम दुनियाक सबटा वस्तुक उपेक्षा क' सकैत छियन्हि [निम्न स्वर मे] किछुओ छोड़ि सकैत छी हिनका लेल··· [अवधक ई बात सुनितहि इन्द्रमा अश्रुपूर्ण नयनें हुनकहि दिसि देखैत छथि। अवध आगाँ बढ़ि कए इन्द्रमाक हाथ कें अपना हाथ मे ल' कए कहैत छथि] ई त हमर लक्ष्मी छथि··· हमर ध्रुव नक्षत्र···। [कहैत इन्द्रमाक नोर कें पोंछि दैत छथि]

अशोक—तकर माने ? अहाँ हिनका नहि द' आबै देबन्हि···

अवध—[पाछाँ बिना घुरनहि] असम्भव ! ई हमर छथि आ' हमरहि रहतीह··· जतय हम रहब ओतय ! [इन्द्रमा आनन्द सँ आप्लुत होइत अवधक हृदय पर माथ धरैत छथि।] अशोक ! तों कहैत छह ओ बाजि नहि सकैत छथि। तों जनैत नहि छह अशोक··· आइ राति भरि त ओ बैह बजलीह··· से भाषा तों नहि बुझबह···

अशोक — किन्तु ··· ?

अवध — किन्तु किछु नहि ! हमर जिनगी में 'किन्तुक' कोनो स्थान नहि अछि। और तों जाह अशोक··· एहि चतुर्थीक राति मे और ककरहु नहि चाहै छी ·· आकास मे एकटा चन्द्रमा कें त देखिते छी, डाह सँ जरैत अछि भरिराति··· ओकरा जरै दहक।

[अशोक प्रस्थानोद्यत होइत छथि आ' बत्ती मिझा जाइत अछि।]

—:o:—

ओ कागज केर बाघ छथि

पात्र-परिचय

राजा —विशाल मुख; उन्नत ललाट; चलैत-फिरैत छथि कम्मे; देहो हिनकर विराटे छन्हि।

मंत्री —दुब्बर-पातर शरीर; आँखि मे धूर्त्तताक चेन्ह; सर्वदा तोतराबैत छथि—मुदा स्टैटिस्टिक्सक वर्णन करैत काल नहि।

महेश राय —मैथिली रंगमंचक अभिनेता; गलाक स्वर गम्भीर; विनय सँ जतबाक झुकि सकैत छथि, क्रोध मे ततबहि उद्धत भ' सकैत छथि; आँखि मे चश्मा पहिरैत छथि।

ब्रह्मानन्द मिसर—रंगमंचक वाद्यनिर्देशक; नाटे छथि; मध्यवयस्क; मुख मे एकटा परिपुष्ट मोछ कें छोड़ि आर किछु नजरि मे पड़ैबला नहि; बाजैत काल हाथ मे हाथ धए घसब हिनकर बहुत दिनक आदति छन्हि।

विष्णु प्रभा —रंगमंचक अभिनेत्री; सुन्दरी, दीर्घांगी; विशालाक्षी; हिनकर रूप कें देखि कए सहजहि लोगक सभ्यता आ ध्यान डोलि सकैत अछि।

घोषक — राजाक घोषक छथि—व्यक्तित्वहीन एक गोट मनुक्ख।

नाट्य-आन्दोलनक समर्थकगण; अन्यान्य अभिनेता।

—:o:—

व्यवस्थादि

मंचसज्जा क कोनो प्रयोजन नहि पड़त एहि पथ-नाटक वा 'स्ट्रीट-प्ले' मे। पथ, घर, बाहर कत्तहु ई खेलल जा' सकैत अछि।

राजाक लेल जौं एकटा झोलंगा आ एकटा छोटेछीन मुकुट क व्यवस्था भ' सकै त नीक। राजा कुर्त्ता-पैजामे पर झोलंगा आ' मुकुट पहिरताह। से नहियो पहिरि कए ओ अभिनय क' सकैत छथि।

आन-आन पात्रक लेल परिधानक कोनो रूप स्थिर-निश्चित करबाक प्रयोजन नहि अछि। तखन पुरुष पात्र सब धोती-कुर्त्ता अथवा कुर्त्ता-पाजामा पहिरथि त नीक। ई एकांकी व्यवस्था आ' तकर तानाशाही मनोवृत्तिक विरुद्ध लिखल गेल अछि। प्रयोजन पड़ला पर निर्देशक और किछु मांग कें एहि मे सम्मिलित क' सकैत छथि, किछु बदलियो सकैत छथि। कारण ई क्रिया-सचेतन नाटक थिकैक। नाटकक अभिनये धरि ई सन्तुष्ट नहि रहि नाटकक माध्यम सँ दर्शक कें वक्तव्यक अनुरूप कार्य मे प्रेरित, उद्‌बुद्ध आ उत्साहित करबाक चेष्टा करैत अछि। एहि पथ-नाटकक सार्थकताक लेल चरित्रक अंगसज्जा आ आवृत्ति आदि सब किछु बदलबा मे निर्देशककें पूर्ण स्वाधीनता देब उचित बुझैत छी। एकर रचना भेल छल सरकार द्वारा नाट्याभिनय पर लगाओल गेल विशेष कर क प्रतिवाद-स्वरूप।

—:o:—

ओ कागज केर बाघ छथि

घोषक —[एकटा टुटलका ढोल पिटैत घोल करैत छथि] सावधान-सावधान-सावधान !!! चारूकात, नहि-नहि, तीनोकात समुद्रक उन्मत्त प्रहरा सँ परिवेष्टित, हिमालयक उच्चता सँ संरक्षित, सुजला-सुफला-शस्यश्यामला एहि जम्बूद्वीपक अधीश्वर श्रीश्री श्रीयुक्त महामहिम श्री इन्द्रकान्त सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी० (लंडन), एल-एल० डी० (वाशिंटन), डी० एस-सी० (मास्को), रायबहादुर, भारतगौरव और और 'गरीब कें भगाबह' नाराक जन्मदाता पधारि रहल छथि······

[एतबाक कहैत ढोल पीटब बन्द क' कए ओ अपन पीठ कें आसन जकाँ बना कए मूड़ी गोंतने बैसि जाइत छथि। राजा आ' मंत्री प्रविष्ट होइत छथि। मंत्री राजाक अलखल्ला क प्रलंबित अंश कें पाछा दिसि सँ धरैत अबैत छथि। राजा घोषकासन क पास आबि कए ठाढ़ होइत छथि।]

मंत्री —महाराजक जय हो !

घोषक —[एक बेरिक लेल मूड़ी उठा कए] महाराजक जय हो !

राजा —[दूनू हाथ उठा कए आश्वासन देबाक अभिनय करैत छथि। राजाक एक हाथ मे छड़ी छन्हि। ओहि छड़ी कें ओ घोषकक हाथक अंगुरिक मध्य स्थापित क' कए चारू कात देखै लगैत छथि। घोषक ओहि छड़ी कें सोभ क' कए धैने रहैत छथि। तकर बाद राजा घोषकक पीठक आसन पर बैसैत छथि। मंत्री क इंगित करैत देरी ओ अपन ठेंगहुन पर बैसैत छथि।] मंत्री !

मंत्री —महाराज !

राजा —आजुक सभा मे त अनेक विचार-प्रार्थी कें देखैत छियन्हि। देश सँ की हमर आज्ञाक अनुसार सब गरीब कें हटाओल नहि गेल अछि ?

मंत्री—से त फैल गेल अछि महाराज !! इयैह देखैत ने जाउ—गत वर्षक परि-संख्यान त कहैत अछि पथ-दुर्घटना मे दू हजार, खाद्य मे मिलावट सँ तीन हजार, राजनीतिक गोलमालक नाम पर चारि हजार, गुंडागर्दी क' कए पाँच हजार, दारूक सृष्टि कए पनरह हजार, अनावृष्टिक आवाहन क' कए बीस हजार, अनाज कें गुदाम मे नुका कए दाम बढ़ा कए पच्चीस हजार, खुदरा दस हजार और समाजवादक मंत्र पढ़ि कए कत्तेको—करोड़क करोड़ गरीब कें हँटाओल गेल अछि। तैयहु ई जे सब टिकल छथि, तनिको सबकें हँटैबाक प्रयास चलि रहल छन्हि।

राजा—अहाँक बताओल हिसाब सुनि अत्यन्त प्रसन्न भेलहुँ। मुदा तखन एत्तोक भीड़ कियैक ?

मंत्री—महाराज ! लोगक मांगक की आइकाल्हि शेष छैक ? ई सब महासुख सँ जिनगी बिता रहल छथि। किन्तु बंगदेश मे कहैत नहि छैक—सुखे थाकते भूते किलोय यानी बेसी सुख सेहो उछन्नरियेक कारण। सैह पैर भेल अछि। एकरा सब पर मांगक भूत सवार छैक।

राजा—एखन हमरा की करबाक चाही ?

मंत्री—महाराज हिनका सभक मांग कें सुनथिन्ह।

राजा—मुदा, जानितहि छी जे बड़ कोमल अछि हमर हृदय, ललिते राग पर गीत गबैत अछि हमर मन—जौं हिनका सभक मांग सुनि कए हमरा दया आबि जाइक··· जौं हम सबटा मानि ली—तखन ?

मंत्री—ताहि लेल निश्चिन्त रहल जाउ। हम जा धरि छी, ता धरि कोनो मांगक पूर्ति नहि हैत। हँ, हृदय मे बेसी दया आबै त आश्वासन द' देल जैतैक।

राजा—उत्तम। तखन बजाओल जाय हुनका लोकनिक नेता सब कें।

[कहैत राजा आसन पर सँ उठि कए पदचारणा करै लगैत छथि। घोषक ठाढ़ भ' कए दुनू हाथ सँ मुँह कें झाँपैत विचित्र स्वरें चीत्कार करैत छथि।]

घोषक—मैथिली रंगमंचक नेता लोकनि : हाजि-इ-इ-इ-इ-र !!

[महेश राय आ' ब्रह्मानन्द मिसर प्रविष्ट होइत छथि एवं राजा कें अभिवादन करैत ठाढ़ भ' जाइत छथि। घोषक पुनः पहिलुके जकाँ राजाक आसन बनि जाइत छथि।]

राजा—[अभिवादनक उत्तर मे हुनका दुनूक प्रति हाथ उठा कए पुनः पहिलुके जकाँ पदचारणा करै लगैत छथि। किछु काल सब क्यो चुप रहैत छथि। एक बेरि थम्हैत राजा कहैत छथि] कहू ! अहाँ लोकनि की चाहैत छी ?

महेश
ब्रह्मानन्द } —सुविचार, न्याय !!!

मंत्री—एतय विचार 'सु'ए होइत छैक। कथीक न्याय चाहैत छी—से कहल जाउ !!

महेश—महाराज ! मैथिली, रंगमच और अन्यान्य विषय मे जे अन्याय भ' रहल छैक—तकर हम सब न्याय चाहैत छी।

राजा—अहू सब विषय मे अन्याय भ' रहल अछि ? से कोना?

ब्रह्मानन्द—हमरा सभक भाषा क अनादर कैल जा रहल अछि—हमरा सभक एतेक प्राचीन साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास क उपेक्षा कैल जा रहल अछि।

महेश—हमरा सभक भाषा आ' संस्कृति क अपमान कैल जा रहल अछि जखन कि एकर बजनिहार कम सँ कम अढ़ाइ कोटि लोग छथि।

ब्रह्मानन्द—मुदा जाहि भाषाक भाषी मात्र दस लाख, जाहि भाषाक इतिहास मात्र दू-एक सय वर्षक—तकरो सब सँ एहन व्यवहार नहि कैल जा रहल अछि।

मंत्री—एहन कियैक कैल जा रहल अछि ?

महेश—हम त इयैह कहब जे हमसब कहियहु हिंसाक पथ नहि धैलहुँ, कहियहु देशक अर्थव्यवस्था पर आघात नहि कैलहुँ, हड़ताल, घेराव, तोड़-फोड़ करैत दृष्टि आकर्षित करबाक चेष्टा नहि कैलहुँ, तैं—

ब्रह्मानन्द—हमसब सरकार कें सदा सहयोग दैत रहलहुँ ; पूर्ण विश्वास कैलहुँ, अपन मांगक लेल आन्दोलन नहि कैलहुँ—तैं !

मंत्री—खामो-ओ-ओ-श् !!! बेअदब !

महेश—हमसब अपन मांग दय साफ-साफ बजलहुँ। कोनो अन्याय त नहि कैलहुँ।

मंत्री—अन्याय नहि कैलहुँ ? एखनहि नहि कहलहुँ जे सरकार पर आब आस्था नहि अछि ?

ब्रह्मानन्द—कोना रहत आस्था ? महाराज जखन सिंहासन पर बैसल रहथि, तखनहि स्वाधीनता आ' सभक समान अधिकारक घोषणा कैने रहथि—आइ सँ तीस साल पहिनहि। मुदा, एखन धरि हमर भाषा आ' हमर प्रान्तक लेल ओ किछु नहि कैलन्हि।

राजा—[मंत्री कठिन स्वरें किछु कहै चाहैत छलाह ; मुदा राजा हुनका हाथ उठा कए शान्त रहबाक इङ्गित करैत कहैत छथि। उत्तेजित जुनि होउ ! उत्तेजित हैबाक कोनो कारण नहि। अहाँसब कनेक सोचि-बिचारि कए देखू ! अहाँसब सँ बड़ जेसब भाषा प्रान्त अछि, ओसब अहाँसब सँ पहिने सम्मान आ' अनुदानक दावा क' सकैत अछि। क' सकैत अछि कि नहि ? तैं ओकरा सबकें सबसँ पहिने देखै पड़ल।

महेश—बेस। मुदा हमरा सबसँ कम बजनिहार, कम प्राचीन आ' कम साहित्य रहितहु किछु भाषाकें कियैक स्वीकृति देल गेल छैक ?

राजा—सैह त कहैत छलहुँ ! अहाँ सँ जे क्यो बड़ अछि तकर सम्मान त पहिने हैबे करत। और अहाँ सँ छोट जे अछि... इयैय ध' लियह, अहाँकं छोट-छोट भाइ बहिन सब—अहाँ कि ई नहि चाहब जे ओकरे सबकें आदर भेटैक सब सँ पहिने ? कहू—अपनहि कहू ! तैं ओहिसब भाषाक पुष्टिक लेल ओकरा सबकें स्वीकृति देल गेल छैक। [स्वर कें अधिकतर कोमल क' कए] कथी लेल ईसब झूठ-झमेला करैत छी...? ...ताहि सँ लियह, ई लेमनचूस लियह... ! [राजा आपन दुनू पाकिट सँ दू टा

लेमनचूस निकालि कए महेश आ' ब्रह्मानन्दक हाथ मे धरा दैत छथि।]

[महेश एक दू बेरि लेमनचूस कें चोभैत छथि। हुनक मुखभाव बदलि जाइत छन्हि... ओ एहि लेमनचूस कें मुँह सँ निकालि कए संदेहक दृष्टियें देखैत छथि। ब्रह्मानन्द महेशक हाथ सँ लेमनचूस छीनि लैत छथि।]

ब्रह्मानन्द – [राजा आ' मंत्री नहि सुनथि तेना क' कए] ई की क' रहल छी ? ई ओ लोभ थिकैक जे मनुष्य कें दुर्बल, अलस, आन्दोलन-विमुख क' दैत अछि। एहि सँ लोगक मनुष्यत्व हेरा जाइछ। हमरा सभक पूरा-पूरी मांग सुनाबियौक। कहू त... आ ई सब... [कहैत दुनू लेमनचूस कें दूर फेंकि दैत छथि।]

महेश—[ब्रह्मानन्द सँ] ठीके कहलहुँ यौ ! [राजा सँ, उच्च स्वरें] महाराज !

राजा—[लेमनचूस चोभैत-चोभैत आश्चर्य-चकित भए] फेर की भेल ?

महेश—अहाँ जँ हमरा सभक लेल किछु करै नहि चाही, त हजारो टा बहाना बना सकैत छी—एतबा त एहि दीर्घ समय मे हमसब बुझिये गेल छी।

मंत्री—सावधान, बेअदब ! राजाक संग प्रजा कत्तहु एना बाजय ?

राजा—आह, मंत्री ! अहाँ बात-बात पर एना डराबियन्हु नहि हिनका लोकनि कें। कहै ने दियन्हु हिनका सबकें जे किछु कहै चाहैत छथि। अरे, इयैह सब त हमर सिंहासनक पौआ छथि। पौआ कें क्यो कखनहु काटि कए बाद द' सकैत अछि ?

मंत्री—[राजाक पास आबि कए निम्नस्वरें] जखन कोनो पौआ मे दीमक क वास होमै लागैत छैक तखनहि तकरा नहि काटि कए फेंकने मोसकिल होइत छैक, महाराज !

राजा—[निम्न स्वर मे] अहाँ चिन्ता जुनि करू मंत्री—हमहूँ राजनीति जनैत छी। [उच्चस्वरें] कहू— अहाँ सभक आर की मांग अछि ?

ब्रह्मानन्द—हमसब आइ अनेको वर्ष सँ नाट्यशास्त्रक चर्चा, अध्ययन और तपस्या करैत अयलहुँ अछि।

राजा—अति उत्तम काज कैलहुँ। देश एहि दिशा मे अहाँ लोकनिक प्रगतिक

लेल गर्व अनुभव करैत अछि।

महेश—मुदा नाट्यशास्त्रक लेल एत्तेक श्रम, एत्तेक तपस्या भरिसक व्यर्थ भ' जायत।

राजा—कियैक ?

महेश—हमरा सबके' राष्ट्र सँ जे सहायता भेंटबाक चाही—से त भेंटते नहि अछि...

ब्रह्मानन्द—आ' ताहि पर सँ अहाँक राज्यक प्रशासक लोकनि एक सँ एक कर लगा रहल छथि। ...लगातार कर पर कर। मनोरंजनक कर, पुलिस-व्यवस्था कर, आय कर, ई कर ओ कर!

राजा—से की ?

ब्रह्मानन्द—अत्याचार बढ़ि रहल अछि हमरा सभक आश्रम पर। भरतक जत्तेक शिष्य एहि जम्बूद्वीप मे नाट्यशास्त्र-चर्चाक आश्रम खोलने रहथि, जत्तेक सहस्त्र नाट्य-प्रेमी एहि यज्ञ के' सार्थक बनैबाक लेल अपन जिनगीक दान देने छथि—से सबटा एहि प्रशासनिक आघात सँ रक्ताक्त... आहत, आ' व्याकुल भ' रहल छथि।

महेश—जतय हमरा सबकें प्रोत्साहन भेंटबाक चाही, ततय भेंटि रहल अछि असम्मान, अविचार एवं आर्थिक दबाव।

ब्रह्मानन्द—और एहि मे और बेसी मारल जा रहल अछि हमरासब सन छोट छीन संघ-आश्रम सब!

मंत्री—नाटक क लेल तपस्याक कोन प्रयोजन अछि ? नाटक माने त नकली राजा आ रानीक प्रेमकथा... दानवक अत्याचार... रानीक हरण... महायुद्ध... और अंत मे मिलन—मुदा सबटा नकलीए। त एहि लेल शास्त्र क कोन प्रयोजन आ' तपस्येक कोन आवश्यकता ?

महेश—से अहाँक बुद्धिक बाहरक गप थिक महामंत्री! मंत्री हैबाक लेल अहाँके' राजाक तरबे टा चाटै पड़ल कि नहि—तपस्या त नहिये करँ पड़ल!

मंत्री—की ? हमर एहन अपमान ? महाराज !!!

[एतबा मे घुंघरूक शब्द भासल अबैत अछि । पैर मे घुंघरू बान्हि कए विष्णुप्रभा धीरे-धीरे अबैत छथि । महाराजक संगहि संग सभक दृष्टि ओहि दिसि चलि जाइत छन्हि । महाराज स्पष्टतः लालची आ' लोभी भ' उठैत छथि विष्णुप्रभा कें देखि कए ।]

राजा—के छथि ई सुन्दरी ?

ब्रह्मानन्द—ई छथि विष्णुप्रभा··· हमरा सभक तपस्याक एक शक्ति··· हमरे सभक संग अभिनय करैत छथि — शास्त्राध्ययन सेहो करै छथि···

राजा—विष्णुप्रभा··· वाह··· जेहन सुन्नर नाम, तेहने ..। [मंत्री सँ] मंत्री ! आबो अहाँ कहब जे नाटकक लेल तपस्याक कोनो प्रयोजन नहि अछि—एहन तपस्विनी कें देखियहु कए···? [मंत्री राजाक अभिप्राय कें बुझैत माथ झुका लैत छथि ।] हँ, अहाँसब कि ने कहैत छलहुँ आर्थिक दबाव छय ? ओ हँ, अहाँसभकें आर्थिक सहायता भेंटबाक चाही—सैह ने ? ऐं ? बेस-बेस ! अहाँ सभक प्रस्ताव पर हम विचार करब आ' भरिसक एहि विषय मे किछु ने किछु क' सकब से उमेद अछि—तैं कोनो दुश्चिन्ता नहि करू ।

महेश—
ब्रह्मानन्द— } महाराजक जय हो ! ! !

मंत्री—महाराज अहाँसभक मांगक पूर्त्तिक विषय मे कोना की कैल जाय से अवश्य सोचताह ! मुदा... ताहि लेल... अहूँ सबकें···

महेश—मुदा की ? कहू हमरा सबकें की करै पड़त ?

ब्रह्मानन्द—हमसब किछु क' सकैत छी—

राजा—किछु नहि, किछु नहि—विशेष किछु नहि । बस, हमरा अहाँसभक विश्वास चाही, आनुगत्य चाही, प्रेम चाही... और बस, हमरा विष्णु-प्रभा कें चाही···

महेश—हमरा सभक विश्वास, आदर्श, अनुगति, इज्जति—सभक प्रतीक

छथि विष्णुप्रभा...

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन समस्त शिक्षा आ' ज्ञान विष्णुप्रभा कें सौंपि देने छियन्हि।

महेश—हमरा सभक नाट्यचर्चाक प्रेरणा छथि विष्णुप्रभा !

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन विश्वास, आनुगत्य आ' सम्मान अहाँकें उपहार द' रहल छी... मुदा तकर बदला मे अहाँ सँ सुविचार, न्याय आ उत्साहक आशा करैत छी।

[ब्रह्मानन्द विष्णुप्रभाक हाथ ध' कए आगाँ बढ़ैत छथि। महेश राजाक हाथ ध' कए विष्णुप्रभाक दिसि बढ़ैत छथि। विष्णुप्रभाक हाथ राजाक हाथ मे देल जाइत छन्हि। घोषक ठाढ़ भ' कए छुच्छे दुनू हाथ कें जोड़ि कए तीन बेरि शंखनाद करैत छथि। तकर बाद पुनः ढोल पीटै लगैत छथि। धीरे-धीरे ढोलकक शब्द मद्धिम भ' जाइत अछि। मंच सँ मंत्री, महेश, ब्रह्मानन्द आ' घोषक निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। मात्र राजा आ' विष्णुप्रभा प्रस्तरीभूत भए ठाढ़ रहैत छथि—यावत् धरि ने मंच शून्य होइत अछि। मंच शून्य हैबाक पश्चात् पुनः वार्ता शुरू होइछ।]

विष्णुप्रभा—हमसब एकत्र भेलहुँ—तकरहु त आब बहुत दिन बीति गेल अछि।

राजा—से त ठीके !

विष्णुप्रभा—मुदा अहाँ आपन वचन नहि राखलहुँ एखन धरि !!

राजा—से कोना ?

विष्णुप्रभा—जे सब तपस्वी आपन भाषा—आपन मायक सम्मानक लेल प्राणपात क' रहल छथि, जेसब न्यायशास्त्रक चर्चा, अध्ययन तथा प्रगतिक लेल तप क' रहल छथि—ओसब अहाँ पर बड़ भरोस क' कए हमरा उपहार देने रहथि।

राजा—सत्ये !

विष्णुप्रभा—मुदा अहाँ हुनका सभक एहि विश्वास आ' आनुगत्यक योग्य किछु नहि कैलियन्हि !

राजा—हमें त हुनका सबकें आश्वासन देने छियन्हि।

विष्णुप्रभा—आश्वासने टा सँ लोगक पेट नहि भरैत छैक।

राजा—देखैत छी राजाक सान्निध्य, रानीक सम्मान आ' राजसुख अहाँकें कनेको बदलि नहि सकल अछि।

विष्णुप्रभा—हम राजसुखक लेल नहि, आपन तपस्याक अंगक रूप मे अहाँक सेवा कैलहुँ अछि।

राजा—नारीक जन्मे होइत छैक सेवा करबाक लेल।

विष्णुप्रभा—और पुरुष ? जे अहाँक प्रजा छथि...?

राजा—प्रजाक जन्म होइत अछि राजाक हुकुम कें स्वीकार करबाक लेल··· राजाक हाथ कें सक्कत करबाक लेल... देशाक युद्ध मे वलिदान देबाक लेल... और प्रयोजन पड़ला पर राजकोष कें समृद्ध करबाक लेल...

विष्णुप्रभा—और तकर बदला मे ओकरा भेंटतक अत्याचार, अराजकता, पराधीनता आ आर्थिक शोषण.. ... नहि ?

राजा—खामोश !!! देखैत छी· अहाँक साहस दिनोदिन बढ़ले जा रहल अछि ?

विष्णुप्रभा—सुनू महाराज ! हम अहाँक सहधर्मिणी छी... सहयोगिनी छी... दासी नहि। और हम ई कहियहु नहि बिसरि सकैत छी जे हम कतय सँ आबि रहल छी...

राजा—[विष्णुप्रभा कें धकेलि कए खसा दैत छथि नीचाँ] दूर भ' जाउ हमर सामने सँ...हम अहाँक मुखदर्शन धरि नहि करै चाहैत छी... हमरा लेल सबसँ प्रधान वस्तु थिक हमर शक्ति· हमर क्षमता... हमर सिंहासन...

विष्णुप्रभा—[ठाढ़ होइत] और हमरा लेल सबसँ प्रधान वस्तु थिक हमर देश, हमर देसकोसक लोग, हमर आन्दोलन... [कहैत तीव्रगतियें मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि]

राजा—[क्रोध सँ काँपैत] मंत्री ! मंत्री !!!

मंत्री—[त्वरित गतियें प्रविष्ट होइत] महाराज !

राजा—सुनू मंत्री... आइये घोषणा क' दियह समस्त देश मे जे सात दिनक

भीतर जँ तपोवन सँ समस्त तपस्वी ज्ञानार्जनक ढोंग रचब छोड़ि अपन-अपन घर नहि घुरथि, त समस्त तपोवन कें जरा कए भसम क' देल जैतैक……

घोषक—[नेपथ्य मे घोषक ढोल पीटै लगैत छथि। राजा और मंत्री प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि। घोषक घोषणा करैत छथि।] सुनू, सुनू देशाकोसक लोग… आजुक बाद सँ अर्थशास्त्र, अनर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, अधर्मशास्त्र दुर्नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, गणितशास्त्र वा अन्य शास्त्र—कोनो शास्त्रक अध्ययन-अध्यापन नहि है-ए-ए-ए-ए-ए-एत ! और सुनू देशक लोगसब… आजुक बाद सँ नाट्यशास्त्रक रचना, अध्ययन और परिशीलन मे जेसब लागल रहताह—ओ सब राजरोषक आगि मे झरकाओल जैताह। सात दिनक भीतर जँ ज्ञानक समस्त शृंखला नहि टूटै, समस्त देश मे जँ विशृंखलाक जन्म नहि होइक, समस्त आन्दोलन आ' धरना जँ टूटि कए छिन्न-विच्छिन्न नहि भ' जाय—त समस्त प्रजा कें भीषण शास्ति सहै पड़तै-ए-ए-ए-ए-क ! [पुनः ढोल बजबैत ओ शान्त होइत छथि।]

[अकस्मात् दूर सँ कोलाहलक शब्द सुनल जाइत अछि। राजा आ' मंत्री दुनू चौंकैत छथि। लाठी हाथ मे नेने पाँच-दस गोट लोग प्रविष्ट होइत छथि। ओहि मे सबसँ आगा विष्णुप्रभा, महेश आ' ब्रह्मानन्द देखल जाइत छथि। ओसब आबि कए राजाक सामने ठाढ़ भ' जाइत छथि। राजा आ' मंत्री दुनू भीत हैबाक अभिनय करैत छथि।]

राजा—की बात थिकैक ?

मंत्री—फ्-कें च्-छी अहाँसब ?

महेश—हमसब सबदिन सँ महाराजक आज्ञाक पालन कैने अयलहुँ आ' सैह आइयहु क' रहल…

राजा—ह-हमर आज्ञा ? ह्-ह्-हमर कोन आज्ञा ? हम त कोनो आज्ञा-ताज्ञा नहि…

ब्रह्मानन्द—हमसब आब कोनो शास्त्रक अध्ययन, अर्जन आ' वर्द्धन मे प्राणदान नहि करै चाहैत छी।

महेश—हमसब आब बुझि गेल छी जे अधिकार शक्तिये सँ अबैत छैक... तकरा छीनि कए लेमै पड़ैत छैक...

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन सबटा विश्वास, सम्मान आ' अधिकार देने छलहुँ अहाँक हाथ में... [विष्णुप्रभा कें पाछाँ सँ घीचि कए सामने आनि कए ठाढ़ि कराबैत] हमसब विष्णुप्रभा कें देने छलहुँ अहाँक हाथ मे .. मुदा अहाँ तकर बदला मे देने छी अराजकताक आदेश...

विष्णुप्रभा—तैं आब एहि देश कें अराजक बनैबाक शपथ नेने छी हमसब। आब एहि देश मे राजा क्यो नहि रहत...

महेश—[अन्यान्य संगी लोकनि सँ] मुँह की देखैत छहक ? ध्वंस करह एहन अव्यवस्था कें... शेष क' दहक एहि अत्याचारक जड़ि कें...

विष्णुप्रभा—जकरा राजे करबाक योग्यता नहि, से कथीक राजा ?

ब्रह्मानन्द—मारह एहि दुःशासन कें...

[एहीमध्य हिनका सभक प्रवेशक बादहि सँ अन्यान्य अभिनेतालोकनि धीरे-धीरे राजा आ मंत्री कें घेरि लैत छन्हि। राजा ओ मंत्री डरें एक दोसरा कें जकड़ि कए पड़ैबाक पथक सन्धान करैत छथि। महेश, ब्रह्मानन्द आ' विष्णुप्रभा अपन अपन संलाप कहैत एक-एक डेग क' कए राजा आ' मंत्रीक दिसि अगुआ अबैत छथि। और ब्रह्मानन्दक अंतिम संलापक संगहि संग सब दिसि सँ दसो गोटे दसटा लाठी ल' कए सशब्द राजा और मंत्री पर धरैत छथि आ' दर्शक हुनका दुनू कें एक मुहूर्त्तक लेल देखि नहि पबैत छथि। जखन अभिनेता लोकनि पुनः पछुआ कए अपन-अपन जगह पर आबि जाइत छथि, तखन देखल जाइत अछि जे राजा आ मंत्री चतुष्पद जीव जकाँ दर्शक वर्गक दिसि देखि रहल छथि। दुनूक मुँह पर कागजक बनायल बाघक मुखौटा शोभा दैत छन्हि। समस्त अभिनेता एहि दृश्य कं देखि कए हँसै लागैत छथि। क्यो-क्यो कहै सेहो

लागैत छथि। आ' तकर बाद, महेश-ब्रह्मानन्द-विष्णुप्रभा क संग सब क्यो समवेत स्वर मे नारा लगबै लागैत छथि— ।

ई कागज केर बाघ छथि—
बाघ छथि, बाघ छथि
हिनका सँ नहि डरू अहाँ सब,
बिनु सुइया के ताग छथि।
ई कागज केर बाघ छथि॥

सुरा - सुन्दरी - कंचन चाही
जगह-जगह अभिनन्दन चाही
गुंडा - चोर, उचक्का पोसथि
तैयो ई बे-दाग छथि

मानै क्यो नहि राजा-मन्त्री,
तैयहु धैने पाग छथि
गद्दी सँ ठेलू नीचा धए
ई नहि हम्मर भाग छथि

हिनका सँ नहि डरू अहाँ सब
ई कागज केर बाघ छथि!

—:●:—

प्रवासी

(सातम पुष्प : 1998-99 ई.)



सम्पादक : **सतीश चन्द्र झा**



मुखपृष्ठ सज्जा : सुश्री **प्रीति मिश्र**



मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

हैदराबाद–सिकन्दराबाद

'मिथिला भवन', 11-29/2, गौतम नगर

मल्काजगिरि, हैदराबाद – 500 047

✦ ✦

सहयोग राशि : 35 टाका

(मुद्रक : दीपक आर्ट प्रिन्टर्स, हरिदास मार्केट, कोठी, हैदराबाद–**196** ; ☎ : **594342**)

काल्हि भोरे

– डा. (श्री) उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

काल्हि भोरे
ई हमर कविता
उड़ैत गर्द आ' घूड़ कें लपेटि
बौखलायल चिड़ै–चुनमुन कें बजाहटि दैत
चलि जायत एत्त ऽ सँ दूर
वहुत दूर
भोरुके गाड़ी सँ

★ ★

काल्हि भोरे
बजारक कोलाहल कें छोड़ि
मोल–मोलाइ, खींचा–तानी, ताम–तोम कें
बिसरि
बिसरैत तोरा, तोहर कटु शब्द कें
जे किछु एखनहुँ,
वजने नहि छें तों
मुदा बाजिओ सकै छें
काल्हि भोरे

★ ★

जनै छी
ईहो सत्य
जे तोहर बनायल दुनियाँ मे
बड़ कम्मे ठाम, छै बाँचल
जतय रहि सकैछ
कविता बेचारे दुनू साँझ अन्न
आ'मकई केर दाना
ठोर तर दाबैत, भदबा बसात पहिरि
ओढ़ि कए कहुना
बेचारे कविता
छन्दक स्वर
लय ताण्डवक
सुरक राजनीति
जनैत छी नहि देत जीयै' तकरा
अकच्छ करैत जीवन तकर
काल्हि भोरे

★ ★

तैं काल्हि भोरे जखन
जगदल दिसि सँ बाजत
सीटी कारखानाक तखन
ने रहब हम
आ' ने रहती कविता हमर
काल्हि भोरे

(सम्पर्क सूत्र : Head, Centre for A L T S, University of Hyderabad, Hyderabad - 46)

किछु 'वचन' : किछु अपन

(कन्नड़ वचनकारक मैथिली काव्यानुवाद)

डॉ. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' अधयक्ष, अनुप्रयुक्त भाषाविद्वान तथा
अनुवादविद्या विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय

अक्क महादेवीक वचन

1. अंग सँ वस्त्र खसि पड़ै
नारी–पुरुष लाज सँ मरै
आप्त–प्राण कैने छह प्रभु त्रिभुवन में
लज्जा तखन कत 'राखव गै'?
तोंही वाजह।
हे चेन्नामल्लिकार्जुन प्रभु,
विश्वक जँ नेत्र वनि करवह दर्शन
कोना हम झाँपव गै आत्मा कें
कतय नुकायव
प्रभु, तोंही वाजह।

2. तोरे जानि नरकहु में जँ जाइ हम
सैह त हमर मोक्ष हैत
तोरा नहि जानि, मुक्तिओ जँ भेंटत
से त हमर नरके हैत
ओ सुखक क्षणहु हैत दुःखक, जखन तो
हमरा नहि चाहवह
ओ दुःखो हैत सुखमय हमरा जखन
चाहवह तों
चेन्नामल्लिकार्जुन स्वामी हे,
जाहि वंधन सँ वाँधने छह तों हमरा
सैह त थिक हमर वंधन–मोचन।

3. हाथक मुट्ठी सँ छीनि सकै, छह
धन
कोना छीनाओत अंग–सपदा?
गहना वस्त्र ल सकैत छह छीनि
निर्वाणक जे नुआ छी ओढ़ने
फाड़ि की सकैत छैक क्यो तकरा?
मल्लिकार्जुन प्रभु केर प्रभा अंग पर चढ़ा
लाज–लज्जा सव गेल अछि
साड़ी–गहनाक आव कोन काज,
अरे पागल?

4. साँपक विष–दंत तोड़ि दहक
त तकरा संग खेलो होइतह सुख–दायी
काय–विकार जँ तोड़ि सकवह
त काया–संग विता सकैं' छह सनय
सुखकर
काया केर विकृति होइछ एना, जेना
जननी वनि गेलि होइथ राक्षसी।
चेन्नामल्लिकार्जुन –
'तोहर भक्त छथुन्ह जेसव हुनका लोकनिक
काया रहिये गेल छन्हि' – देखह,
एना नहि वाज' पड़ै तोरा।

5. देखह देखह दुर्दशा ओहिसबपर्वतक
जकरा सभक इच्छा छलैक केलत गगा
संगे
देखह दुर्दशा ओहिसव महारण्यक –
जकरा सभक इच्छा छल खेलवाक अग्नि
क संगे आर देखह दुर्दशा ओकरा
सभक–अन्हरिया रातिक
जकरा सभक इच्छा छलै' आलोकक संगे
खेलैवाक
तकर दुर्दशा दय सोचह जेसव गभीर अज्ञता
लए
खेलै चाहै छल ज्ञानहिक संग।
अहिना, हौ पराशिवमूर्ति हरदेव,
हे मल्लिकार्जुन, देखह देखह
तकरासभक दुर्गति – हमर जन्म –
जन्मान्तरक
तोहर जंगम लिंगक संग
करै, छल क्रीड़ा जेसव...।
(आभारः डॉ. शिवराम भट्ट पडिक्कल)

मिथिला दर्शन

सम्पादक-मण्डल
प्रो० प्रबोध नारायण सिंह (प्रधान सम्पादक)
प्रोफेसर इला रानी सिंह

एक प्रति	:४०
वार्षिक	४=५०
अर्ध-वार्षिक	२=५०
आजीवन	५१)
संरक्षक	१२५)

[निःशुल्क डाक-व्यय]

मिथिला-दर्शन (प्रा०) लिमिटेड
१४ बी, ब्रजनाथ मित्तर लेन, कलकत्ता-९

मृत्युक जन्म

—नचिकेता

कालिह जे नवजातक
चिकरि चिकरि कए कानै लागल सौरी घर मे,
ओकरा ल' कए और एकटा मृत्यु जन्म लेलक।
ओकर बाप कें चिन्हैत छियैक ?
मौस देह मे छैके नहि ;
हड्डी हँसि रहल अछि दाँत निपोड़ने—
व्यंग्य क' रहल अछि स्वास्थ्य-परिकल्पना क !
जेहन ओकर घर शतच्छिद्र अछि,
ओहने परिधेय वस्त्र;
देहक भीतर ओहने फोंक।
टी० बी० कें पोसने अछि,
जेना ओकर बगलक अट्टालिका सब मे
लोग कुकुर पोसैत अछि।
मायक देह मे किछु छैके नहि ;
बाँचल अछि कि नहि, बुझनाइ कठिन।
तैयौ, शिशु कनैत - कनैत
(अपन दावीक) नारा लगबैत
जन्म लेलक।
मृत्यु मुंह बौने अछि
आ' हमर पृथ्वी पर
मनुष्यक फसिल बढ़ल जाइछ
बिना हर, बरद आ' खादहिक।

—※—

नाटकक स्वरूप निर्णय आ' मैथिली नाटक

नचिकेता

नाट्यकलाक उद्भव क विषय मे प्राचीन उपाख्यातालोकनिक वक्तव्य क अनुसार देवगणक अनुरोधें ब्रह्मा ऋग्वेद सँ 'पाठ्य' लेलन्हि, सामवेद सँ 'गीत', 'अभिनय' लेलन्हि यजुर्वेद सँ आ अर्थवेद सँ 'रस' आर एहि सब वस्तुविधा कें समाविष्ट करैत सृष्टि कैलन्हि नाटक क—एकटा 'सार्ववर्णिक क्रीड़णीयक' क।

हमर आलोच्य विषय एहि कथनक प्रामाणिकताक विचार करब नहि अछि एहि कथा मे शिक्षणीय अनेक तथ्य अछि, मुदा जे तत्व सब सँ लक्षणीय बुझना गेल से अछि ई जे नाटक सर्वसाधारणक लेल होइत अछि। नाटक तखनहि सामान्य लोकक लेल भऽ सकैछ, जखन कि नाटक देखला सँ आनन्दानुभूति होइत अछि। समालोचक नाटकक स्वरूप निर्णय शुरू करैत छथि नाटकक संज्ञा आ लक्षणादिक विचार सँ। हम समालोचक नहि—नाट्यकार छी। हमर सर्वप्रधान औत्सुक्य एहि बात मे अछि जे नाटक कियैक आ' कत्तेक आनन्द दऽ सकैत अछि। मुदा एहि प्रश्नक उत्थापनक संगहि आरो तीन-चारिटा प्रश्न बिनु बजौनहि चलि अबैत अछि; जेना, कलाक आन-आन प्रकाशक (कथा, कविता—इत्यादि) अध्ययन सँ जे आनन्द होइत अछि, ताहि सँ नाट्य दर्शनजात आनन्दक पार्थक्य कतय अछि? अथवा, नाटक कियैक आ' कतय कथा-कविता सँ पृथक अछि? किंवा, मैथिली नाट्यान्दोलनक गतिप्रकृति कोना की हैबाक चाही? इत्यादि।

नाटक नीक लगबाक एकटा कारण भऽ सकैछ मनुक्खक कोनो घटनाक पुनर्भवीकरण अथवा चरित्रक अनुकृति देखबाक प्रबल इच्छा। दर्शक कें पता अछि जे हत्या करब असम्भव काज नहि थिक, मुदा कठिन अवश्य अछि। ओ बुझैत अछि जे दारिद्र्यक कारणें अभुक्त रहब अचिन्तनीय नहि, तखन अस्वाभाविक अथवा अनुचित अवश्य थिक। दर्शक जनैत अछि जे देशक लेल प्राणत्याग मे वीरता अवश्य अछि, मुदा ताहू सँ बेसी अकल्पनीयता अछि। मुदा, एहि वास्तवता, अवास्तवता, अनौचित्य आ' अकल्प-नीयताक पछाँ मनुक्ख सबदिन व्याकुल भेल अछि—एखनहु होइत अछि। नाटक नीक लगबाक इयैहटा नहि, आरो किछु कारण रहि सकैछ; यथा, किछु लोक एकाकीत्वक सर्वश्रेष्ठ औषधक रूप मे नाटक देखैत छथि। क्यो-क्यो ईप्सित अथच अप्राप्त इच्छित मुदा असम्भव स्वप्न आ' घटनाक दर्शन सँ विमोहित होइत छथि। फेरो, क्यो-क्यो जीवनक तुच्छतम वस्तु आ' अप्रयोजनीय घटनाहुक सूक्ष्म आ' भिन्नधर्मी विश्लेषणे सँ आनन्द पबैत छथि। एहि प्रसंगें आरो एकटा कारणक आभास देल जा सकैछ। जाहि कारणें प्रतिदैनिक जीवनक किछु किछु घटनाक संघटन सँ (उदाहरण स्वरूप—निन्दा, कुप्रचार,

आलोचना, संवादपत्रक प्रधान खबरि इत्यादि) लोक आनन्दित होइछ, सैह कारणें लोक नाटको देखऽ चाहैत अछि।

एखन नाटक कोना कविता आ' कथा सँ भिन्न अछि, ताहि पर बिचार कैल जा सकैत अछि। कथा माने हम उपन्यास आ' लघुकथा—दुनू कें बुझैत छी। किछु किछु समालोचक कहताह—नाटक अन्यान्य सब कला सँ भिन्न अछि, कारण नाटक दृश्यश्रव्य आ' अनुभव्य काव्य अछि। क्यो कहैत छथि—नाटक मे कविता, कथा, चित्र आ' संगीत सभक समावेश भऽ सकैछ आ' तैं नाटक एहि सबसँ पृथक अछि। हमर उत्तर किछु भिन्ने हैत। अपन उत्तर देबाक पहिने उपर्युक्त उत्तरसभक परीक्षण करब उचित हैत। कबिताक पाठक जनैत छथि जे, नाटके जकाँ, कविताक रसास्वादनक लेल प्रत्येक शब्द, ध्वनि, वाक्य, मात्रा आ' छन्द एहिसभक समष्टि क श्रुतिकल्प तथा दृश्यकल्प-दुनूक प्रयोजन होइत अछि। नाट्य-दर्शक आ' काव्यपाठकक आँखि मे मात्र एतबहि पार्थक्य अछि जे कोनो आँखि पृथ्वीक समस्त लोक, घटना आ' दुर्घटनाक दिसि मुँहामुँही ठाढ़ रहैत अछि आ' कोनो आँखि अन्तरक अभ्यन्तर मे अपनहि दिसि तावैत उन्मीलित भए अनुभूतिक लेल प्रार्थना करैछ। तैं, नाटक आ' कविताक सीमा एतय नहि भऽ सकैत अछि। द्वितीय उत्तरक विषय मे एतबा कहब यथेष्ट अछि जे नाटकक कविता आ कविक कविता मे बहुत अन्तर होइत अछि। कविता स्वयम् प्रसंगक अवतर्त्री स्वयम् कथाक उपसंहार आ' स्वयम् कल्प-तरणीक खेबैया होइत अछि। मनुक्खक बनाओल कानून कविता कें कविक व्यक्तिगत सम्पत्ति कहैत अछि। मुदा पृथ्वी जौं कविताक अधीन होइत, तऽ अर्थनीतिक एहि आदिम फल, षष्ठी विभक्तिक एहि क्रूर नियम—सब किछु मनुक्खक दुष्कल्पनाक भ्रूणहि मे रहि जाइत। सार्थक कविता 'होइत' अछि, लिखल नहि जाइत अछि, कारण प्रचण्ड प्रचेष्टा सँ छन्दोबद्ध वा निश्छन्द शब्दद्रुम प्रस्तुत कैल जा सकैछ मुदा कविता थिक शब्दकल्पद्रुम। एतय, हमर बिचारें, कविताक संग नाटकक पार्थक्य अछि। नाटक बिना निरलस प्रयासें बिना सम्बद्ध पटकथा सँ, बिना सुप्रयोज्य वार्त्तालाप सँ आ' आ' बिना सुचिन्तित चरित्र चित्रण सँ नहि लिखल जा सकैछ। अर्थात्, नाटक होत नहि अछि, लिखल जाइत अछि।

मनुक्ख जतय ठाढ़ रहैत अछि, तकर सम्मुख, पश्च, बाम, दहिन—चारू दिशा कें देखा कए अपन सन्तान कें पढ़ौने छल—बाउ, ओकरा उत्तर कहैछ, ई थिक दक्षिण, आ' हे ई पूरब आ' ओहदिस गेल पच्छिम लक्षणीय ई जे, मनुक्खक हेतु आपन आदर्श स्थान होइछ मध्य, भने ओ' मध्यवृत्ति कोनो कोने मे जा कए करै। मनुक्खक कलाप्रेमक दृष्टि सँ ज्यों क्यो कविता, कथा आ नाटकक स्वरूप निर्णय करय चाहय, तऽ एहि विभिन्न विधाक पार्थक्यक सूचना सहजहि पाओल जायत। प्रतिक्रियाक 'आरेख' (vertical axis of reaction) पर कविताक स्थान हैत ऊर्द्धतम अंश मे। अपेक्षित उत्कर्षक विचारें 'प्रतिरेख' (horzental axis) जतय आरेख कें प्रतिछिन्न करत, ओत्तहि हैत कथाक स्थान। आ' आरेखक निम्नप्रान्त कें स्पर्श करैत अछि नाटकक विधा। साहित्य समालोचक लोकनि प्रतिच्छेदन-विन्दुक (crossing point of the axises) ऊपर जे किछु अछि, तकरा शैलिपक एवं नीचाँ जे सब विधा अछि (यथा, चलचित्र, नाटक आदि), तकरा अशैलिपक बतौने छथि। यद्यपि एहि मतवादक

विरुद्ध हमर साहित्य चिन्तनक तूणीर सँ अनेको अस्त्रक्षेप कऽ सकैत छी, तथापि प्रसंगान्तर भऽ जैबाक डरेँ एतय युद्धक लोभ केँ संवृत कऽ रहल छी। एहि अनुच्छेदक मूल विषयक प्रति ध्यान दैत कहब जे कथा मे कविताक छन्द, कल्पना, अभिव्यक्ति आ' व्यंजना आर नाटकक योजना, चिन्तन, चरित्रचित्रण आ' वार्त्तालिखित—दुनूक एकटा सुनिर्दिष्ट परिमाण उपस्थित रहैत अछि। मुदा कथा मे कत्तेक काव्य आ' कत्तेक नाटकीयताक समावेश करय पड़त, से कोनो समालोचक बता नहि सकैत छथि। एहि मिश्रणहि मे कथाकारक शैली, अनुभव, भाषा, तथा स्वकीयताक परिचय रहैत अछि।

नाटक, कविता आ' कथाक सीमारेखक अंकन आरो एक तरहेँ कैल जा सकैत अछि। एहि मानक (parameter) केँ हम साहित्य आ' कलाक प्रतिक्रिया कहब। एखन पहिल अनुच्छेद मे पूछल प्रश्न केँ विस्तृत कऽ कए तकर पुनर्रचन आवश्यक अछि। प्रश्न हैत, एहि विभिन्न विधाक उपभोक्तासभक आनन्दक कारण आ' स्वरूप की अछि ? नाटकक विषय पर पहिनहि लिखि चुकल छी। कविताक नन्दित प्रतिक्रियाक कारण ई भऽ सकैत अछि जे, कविताक सार्विक स्वरूप मनुक्खक सुप्त अनुभूतिक जागृतिक कारण होइत अछि, पथभ्रान्त चिन्तनक दिशानिदेशक होइत अछि, निर्विचित्र निर्दोल चित्त केँ छन्दित आ दोलायित कऽ दैत अछि, भाषाक कठिन आवरणें भाव के झाँपितहु एक अपूर्व कौशल सँ पाठक केँ भाव क छाहरि धरि पहुँचा दैत अछि। कथा आनन्ददान करैछ, तकर कारण—मनुक्ख औपन्यासिक वा कथाकारक आँखि सँ अपन परिचित अथवा अपरिचित जिनगीक मुख्य तथा गौण चरित्रक स्वाभाविक वा अस्वाभाविक घटना क आकांक्षित तथा अचिन्त्य विश्लेषण केँ प्रत्यक्ष कऽ पबैत अछि।

साहित्य-कलाक एहि तीनो विधा क प्रतिक्रिया सँ एकहिटा बात स्पष्ट भऽ उठैत अछि। ओ ई जे कला 'मनुक्ख'क लेल होइछ, कला कलेक लेल नहि। तीन तरहक आनन्दास्वादनक पार्थक्य अछि आनन्द प्राप्ति क संख्या मे। कथा क आनन्द मात्र शिक्षिते लोग केँ भेटैछ आ' कविता शिक्षित वर्गहुक सामान्य अंशहिक लेल आनन्ददायिनी होइछ। (एतय ई कहब आवश्यक अछि जे, जे कथा परम्परागत रूप सँ वा ओहुना लिखित नहि भए कथित (narrated) होइत अछि, तकरा हम 'आरेख'क प्रतिच्छेदन विन्दु सँ नीचाँ, मुदा नाटक सँ उपर, राखऽ चाहैत छी) मुदा सामान्य - असामान्य, शिक्षित-अशिक्षित, धनिक-दरिद्र, नारी - पुरुष, वयस्य-शिशु-सभक लेल नाटक आनन्दक प्रजनयिता होइत अछि। सकल नाटक, सार्थक कविता आ' सुष्ठु कथा क मूल पार्थक्य इयैह थिक। एहि पार्थक्यक उपलब्धि कऽ कए वा नहियो करैत बहुतो गोटे प्रयास कैलन्हि सर्वसाधारणक लेल कविता लिखबाक वा कथा केँ साधारण मनुक्खक स्तर पर लए ऐबाक। सार्विक कविता श्लोगन भऽ गेल अछि आ' कथा मे भनहि चरित्र आ' घटना साधारण भए सकल, पाठक आ आस्वादक रहि गेलाह सैह शिक्षित समाज। अही कारणे, जखन 'आधुनिक' नाटक मे शिल्पगत जटिलता बढ़ल, नाटक मंच पर जा कए असफल भऽ गेल तैं एखनहु पुरान नाटकक मंचन मे अनेक लोग 'आधुनिक' नाटक सँ वेसी रुचि रखैत छथि। आ', तैं यद्यपि रवीन्द्रनाथ नाटक क आकांक्षित मान, कथा, भाषा आ' दृश्यकल्प सँ हटि कए आपन ढंगेँ विद्रोह करबाक चेष्टा कैलन्हि, हुनक नाटक वर्गीय भए रहि गेल। सामान्य जनक लेल रवीन्द्रक नाटक सँ कोनो पुरान

अज्ञातकुलशील नाट्यकारक नाटक जे बेसी प्रिय हैत, से हम निश्चित रूपें कहि सकैत छी। एकहि कारण सँ बंगालक आधुनिक नाट्यान्दोलन एखन साधारण मनुक्ख सँ विच्छिन्न भए कए मुष्टिमय लोगक मध्य आबद्ध भए गेल अछि एवं नव रंग-ढंग सँ सजि कए 'यात्रा' आन्दोलन पुनः लोगक हृदय पर विजयपताका उड़ा देने अछि। तैं हमरा सब कें सोचय पड़त जे हम सब प्रान्तवर्त्ती भाषाभाषी नाट्यकार सभक तत्कालीन सम्मान क दिसि आकृष्ट भए सैह पथ अपनायब वा नव पथक सन्धान दैत आपन तथा प्रतिवेशी भाषाभाषी नाट्यान्दोलनक अक्लान्त सैनिक कें सार्थक पथ प्रदर्शन करब।

हम ई कथमपि नहि कहय चाहलहुँ जे नाटकक सर्वांगक मानक न्यूनतम सीमा हम एहि निबन्ध मे प्रस्चित तर्कक द्वारा निर्दिष्ट करय जा रहल छी। हमर आलोचनाक मुख्य उद्देश्य छल—नाटक कें नाट्यकार 'प्रार्थित सीमा' (expected mean) सँ कत्तेक दूर लऽ जा सकैत छथि, तकर विचार करब। कारण मैथिली नाट्यान्दोलन शुरु करबा सँ पूर्व प्रत्येक नाट्यकार के एहि विषय पर विचार करय पड़त। व्यक्तिगत रूपें हम आपन कविसत्ता आ' कथाकृति सँ नाट्यरचनाक कौशल के कारणें पृथक राखऽ चाहैत छी। एहन कत्तेको उदाहरण अछि जतय कवि नाटक रचनाक क्षेत्र मे आबियो कए कवित्त नहि छोड़ि सकलन्हि ;—अनेको मैथिल कविक नाटक रचनाक प्रयासक इयैह हास्यकर परिणति भेल अछि। ओम्हर, नाटकमे कविताक अनुप्रवेश करबा कए नाट्यकार असार्थक भेलाह—आन-आन भाषाक इतिहास मे तकरो अनेक उल्लेख अछि। रहल जनताक रुचिक प्रश्न। हम ई विश्वास नहि करैत छी जे जन्मितहि सामान्य जनक रुचि निम्नकोटिक भऽ जाइत अछि। रुचिक विकृतिक कारण परिपार्श्व

होइत अछि। मनुक्खक कुप्रवृत्ति केँ अशोभन रूपें जगा कए ताहि सँ फायदा करऽ बाला लोग ताहि लेल दोषी छथि। तेँ, नाट्यकारक लेल ई कोनो आवश्यक नहि जे कुरुचिकर वार्त्तालाप वा कथावस्तुक द्वारा जनताक दृष्टि आकर्षण करथि। जनरुचिक उन्नति-विधान नाट्यकारेक हाथ मे रहैत अछि।

मैथिली नाटककारक अन्यतम प्रधान समस्या रहल अछि विषय निर्वाचनक सुविस्तृत क्षेत्र। अधिकांश नाटक आ' नाट्यकारक दुर्बलता एत्तहि परिलक्षित भेल अछि। हम तऽ कखनहु कखनहु एहि बात पर चिन्तित भऽ जाइत छी जे ज्यों दू-तीन टा कुप्रथा कालक नियमें मिथिला मे नहि चलल होइत, तऽ नाट्यकार सभक की दुर्दशा भऽ सकैत छल। की सत्ते विषयक एत्तेक अभाव भऽ गेल अछि जे दहेज पर दस हजार नाटक लिखल जाय। की समस्येटा सामाजिक, पारिबारिक आ' वैयक्तिक जीवनक सर्वप्रधान अंश होइत अछि ? आ' यदि सैह होइक, तऽ की मिथिलाक मनुक्खक कोनो आर्थिक, नैतिक, शैक्षणिक, राजनैतिक आ' अधिकारगत समस्या नहि अछि जे नाटककारक फुचाई झा आ' जनार्दन मिसर आ' हुनक पुत्रकन्या दहेज लऽ कए झगड़ैत रहैत छथि ? ई स्मरण राखब उचित अछि जे रत्नावलीक प्रेम अथवा दुष्यन्तक प्रतारणा प्राचीन कालक अत्यन्त साधारण घटना छल। मुदा नाट्यकारक हाथे 'रत्नावली' आ' 'शकुन्तला' असाधारण नाटक भऽ उठल। तेँ, चरित्र अथवा घटनाक निर्वाचन कत्तहु सँ कैल जा सकैत अछि। मुदा, नाटकक उत्कर्ष विचार हैत नाट्यकारक चरित्रचित्रण, घटनासंस्थान आ' वार्त्तासंयोजनक द्वारा।

एहि प्रसंगे मोन पड़ि जाइत अछि शैशवक एकटा खेल, जे अधिकांश बालक-बालिकाक खेल होइत अछि। ओ अछि एकटा पुतलीक बियाह। एहि खेल मे शिशुसब महा धूमधाम सँ पुतला-पुतलीक विवाह-सम्प्रदानादि करैत अछि। शैशव मे हमर ध्यान रहैत छल बियाहक खेलमे नहि, के कोना कोन अभिनव रूपें बियाह कराबैत छल ताहि दिस। नाटको क्रीड़े होइत अछि, कारण नाट्यशास्त्र एकरा 'क्रीड़णीयकें' कहने अछि। तेँ विषय किछुओ भऽ सकैत अछि, मुदा तकर चित्रण, स्फुटन, कथन आ' व्याख्या मे नाट्यकारक भाग्य निर्मित होइत अछि। ●●●

●●●

सहायक ग्रन्थ सूची :

1. Bentley, E. (1965) The Life of The Drama (Methuen, London)
2. Goodlad, J. S. R. (1971) A Sociology of popular Drama (Heineman, London)
3. Gupta, C. B. (1954) The Indian Theatre : its origin and development up to the present day (Motilal Banarasidas, Banaras)
4. Mavowitz, C. and Trussle, S. (1967) Theatre at work : playwrights and productions in the modern British theatre (Methuen, London).
5. Nicoll , A. (1957) The Development of theatre : a study of theatrical art from the beginnings to the present day (Harcourt, Brace and company, New york)

विहार सरकार द्वारा स्कूल, कॉलेज तथा पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत ।

सदस्यता

एकप्रति : २.००
वार्षिक : २०.००
आजीवन : २५१.००
संरक्षक : ५००.००

वैदेही

संस्थापक प्रेरण: इन्द्रकान्त मिश्र (कुमार)

प्रो० श्रीकृष्णकान्तमिश्र द्वारा सम्पादित, मुद्रित एवं प्रकाशित

सम्पादक
डा० हंसराज

सह-सम्पादक
चन्द्रेश

प्रकाशन सहयोग
भोला गिरि 'विनोद'

प्राप्ति-स्थान
वैदेही समिति
दरभंगा

दूरभाष : २२२३६ (निवास)
२२६४५ (कार्यालय)

मॉडर्न प्रिन्टर्स, सुन्दरपुर वीरा, दरभंगा ।

क्रम

नामकरण

□ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

चानकेँ 'चन्द्रमा' नाम देलिऐ' आ'
तरेगणकेँ 'निहारिका' कि
रातुक अर्थे बदलि गेल हमरा ले' !

इजोतकेँ प्रत्यूष' आ'
सुरुजकेँ 'मार्तण्ड्य' कहबाक देरी छल कि
प्रचंड आलोकसँ आँखि चौन्हिया' उठल;
जंगलकेँ 'उपवन' आ' घासपूसकेँ 'दूर्वाक्षत' कहल तँ
आबि गेल मंत्रक उच्चारण अपनहि;
अथक खटनीकेँ कहल गेल 'निरसल प्रयास' आ'
'समास' कहल बेजोड़ शब्दक जोड़ोकेँ तँ
टूटल-भाङ्गल करेज गेल सेराय;

आब ठीक कैने छी जानल शब्द–सबटा
देब फेंकि अङिनाक पछबड़ियामे आ'
अहाँक नामे देब बदलि कए ऋतुमतो कि
भ' सकैछ एहि बदलि जायत हमर भागो !

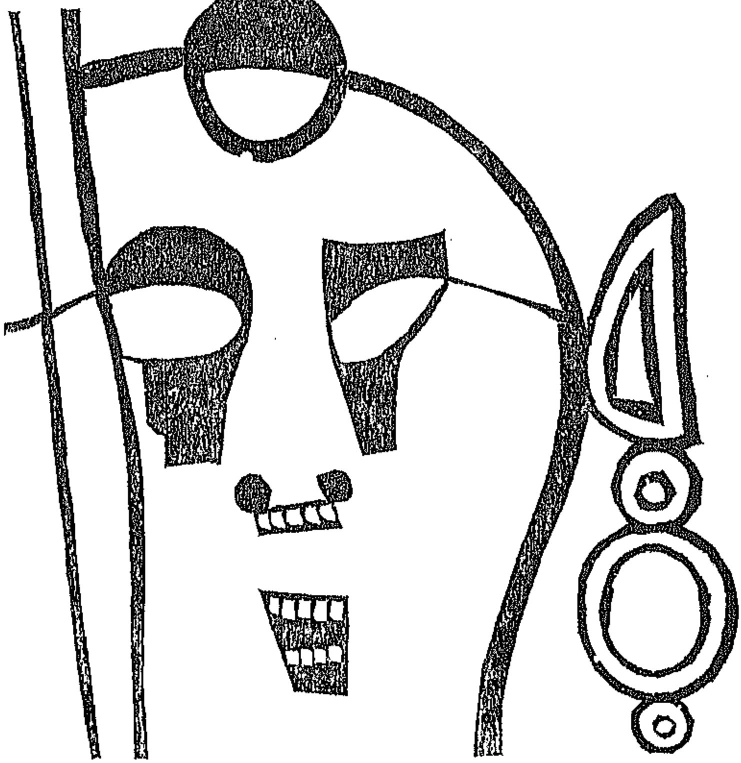
ई जीवन मात्र जीवितक थिक
जे जीयत आ' बदलत अपन वेश आभूषण दाम
जे जीयत आ' बदलत अपन दृष्टि भाव-भंगिमा
ई जीवन मात्र हमर अहाँक हैत
जे क्यो रूप बदलि कए जी रहल छी
प्रतिपल प्रतिपदा केर बदलैत राशिफल और
गणितक भरोसेँ

आउ, हमर नाम बदलि कए रखै' छी 'दुष्यन्त'
अहाँ शकुन्तले !
कण्व कत' गेलाह, मृगशिशु ?
हमर तँ इयैह दुनूक फिकिर लागल रहत
बाँकी सबटा अङ्कमे ।

नाटकक लेल नाटकक लेल
नाटकक लेल नाटकक लेल
नाटकक लेल नाटकक लेल

नाटक क लेल

नाटकक लेल नाटकक लेल
नाटकक लेल नाटकक लेल
नाटकक लेल नाटकक लेल



नचिकेता

नाटक क लेल

नचिकेता

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
कलकत्ता-४५

प्रथम संस्करण :
१९७४ ई०

प्रकाशक:
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड,
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०००४५

अन्यतम वितरक :
मैथिली रंगमंच
१६२/ए/८५,लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०००४५

मुद्रक :
सिंह प्रेस, कलकत्ता-७०००४५

मूल्य :
तीन टाका

हमर शिक्षा-जगत क ध्रुव नक्षत्र एवं वरेण्य शिक्षागुरु

आचार्य श्री प्रबोध बी० पंडित क

कर-कमल मे---

—नचिकेता

नाटक क लेल

प्रथम अभिनय-रजनीक व्यवस्था कैलन्हि

मैथिली रंगमंच

थियेटर सेंटर, कलकत्ता मे रविदिन (६-१०-१९७४ई०) कें

और एहि साहसिक प्रयास मे भाग लेनिहार

रंगमंच क साहसी कलाकार लोकनि भेलाह—

श्री कान्त मंडल (कमल), रामलोचन ठाकुर (अनिरुद्ध)

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' (नाट्यकार), कुणाल (सूत्रधार),

गिरीशकान्त चौधरी (अफसर), एवं श्रीमती चन्द्रकला 'किरण' (सत्ती)।।

और निर्देशन श्रीकान्त मंडलक,

आलोक विमल दासक, संगीत सुनील बनर्जीक,

रूपसज्जा अजय घोषक एवं मंच-व्यवस्थापन कुणालक।।

सूत्रधार भेलाह रामप्रसाद राय।।

नचिकेता

नाटक क लेल

[मंच पर नीलाभ आलोक पसरल अछि। दू पुरुष आ' एक नारी कें उच्चासन पर बैसल देखना जाइत अछि। पात्र-पात्री सभक आकृति अस्पष्ट रूपें दृष्टि-गोचर भ' रहल अछि। मंच क अग्र भाग मे आरो एक व्यक्ति ठाढ़ दर्शक दिसि देखि रहल छथि। हिनक मुख पर अलपरेख स्थापित रहबा क कारणें हिनक आकृति स्पष्ट देखना जाइछ—चेहरा ने आकर्षक, ने विकर्षण क उत्पादक; मध्यवयस्कता क चेन्ह आँखि, भौं आ' केस पर छन्हि। ओ कनेक और आगाँ बढ़ि अबैत छथि। हिनक संगहि संग अलपरेखो अगुअबैत अछि। हिनका नाट्यकार नाम देल जा सकैत अछि।]

नाट्यकार—ओना एहि नाटक मे हमर भूमिका किछु नहि अछि। हमर काज भेल ओहि श्रमिक जकाँ, जे सूत सँ सूत जोड़ैत अछि। ई मंच एकटा बाजार थिक—पात्र सब सूत—आ' हम वस्त्र-निर्माता। एहि कर्मकाण्ड क लेल जे लोकनि पाइ लगौलन्हि ओसब छथि मालिक आ' अपने लोकनि भेलहुँ ग्राहक, खरीद्दार। नीक लागैत कीनब, नहि त

हम कतबो कम दाम हाँकी, अहाँ मुँह घुरा कए चलि देब। (कनेक चुप्पी लगा कए) ओना अहाँ कें लागि सकैत अछि—जे हमर उपमा नीक नहि छल। मुदा ताहि लेल हमरा ने चिन्ता अछि ने दुःख। कविता क छन्द आ' शब्द बिना अर्थ क अहाँ कें आ' हमरा दू दंडक लेल धनिक क' दैत अछि। भ' सकैत अछि, कवि क कण्ठें हमर ई दुर्बल उपमा बदलि कए अभिजात भ' उठत। मुदा हम, हमर दुर्बल माय, रुग्ण पत्नी, भूखल सन्तान आ' अशेष संग्राम कें कोना छोड़ू! तें हमर पात्र सब दुर्बल छथि, हिनका सभक कथनी-करनी सबटा दुर्बल छन्हि। हिनका सभक जीवन क संगीत, आलोक आ' कविता—सब किछु दुर्बल छन्हि। (थम्हि कए दर्शक कें आश्वास देबाक मुद्रा मे) मुदा ताहि लेल घबड़ाउ जुनि। हम-अहाँ नाटक देखैत छी हँसबा क लेल, नहि त उपहास क लेल। तें आनक दुर्बलता, आनक जिनगी क विफलता, अपना बिना लड़ने आनक संग्राम—ई सब किछु देखबा मे हमरा सब कें बड्ड नीक लगैत अछि। तें एहि नाटक मे हम सब किछु देखायब। (थम्हैत) आउ, अपन पात्र सब सँ अहाँ लोकनि कें परिचय करबा दी। (कहबाक संगहि संग तीनो पात्र अलपरेख सँ आलोकित भ' उठैत छथि।) हम अपना जनितें हिनका सब कें नीक सँ नीक पोशाक पहिरौने छी, हिनका सभक मुँह मे नीक सँ नीक भाषा देने छी—यद्यपि ईहो जनैत छी जे समय सब नीक मात्र कें छीनि लेबाक प्रयास करैत अछि। (ओ अगुआ कए बाम दिसि जा कए एकटा पुरुष-चरित्र कें दर्शक कें देखबैत कहै छथि।) ई छथि कमल। (कहिये कए कमल दिसि देखैत छथि। कमलक मुख पर कोनो परिवर्त्तन नहि देखि कमलक भर्त्सना करैत कहैत छथि) कमल, उठू—लोग नमस्कारादि करैत अछि कि ओहिना……

कमल—(नाट्यकार क आदेशात्मक स्वर सँ चकित भए) हँ हँ…… (दर्शक वृन्द सँ) नमस्कार। हमर नाम थिक कमल।

नाट्यकार—से हम कहि देलहुँ।

कमल—कहि देने छी ! ओ......

नाट्यकार—कियैक ? अहाँ नहि सुनलहुँ की ? कोन जगत मे पहुँचि गेल छलहुँ एतबा देर मे ?

कमल—हम एकटा सपना देखैत छलहुँ।

नाट्यकार—बिना सुतनहि ?

कमल—[म्लान रूपें हँसैत]सुतल के नहि अछि नाट्यकार ? जागि कए क्यो कहियो सपना देखलक अछि ? हम एकटा सुन्दर सपना कें कखनहु गढ़ैत छलहुँ, कखनहु चिखैत छलहुँ, कखनहुँ देखैत छलहुँ।

नाट्यकार—मुदा सपना की छल ? की देखलहुँ ?

कमल—कतय देखि पबैत छलहुँ नीक जकाँ ? जखनहि चाहैत छलहुँ, जे आब घटनाक मोड़ एम्हर घुरा दी, तखनहि घटना दोसर दिसि चलि जाइत छल—ठीक जेना वास्तव मे भेल छल, [अकस्मात् सचेत भए] मुदा से हम कहब कियैक ?

नाट्यकार—[कमलक मनोभाव कें बुझैत] कमल—आउ, हमसब एकटा सोझ सौदाक गप्प करी।

कमल—केहन सौदा ?

नाट्यकार—अहाँक ई सपना ने कहियो पूरा हैत, ने घटना सँ पड़ा सकत। ई काँच सपना ल' कए ने अहाँ जागि सकब, ने सूति सकब। कमल, अहाँ ने पोखरि मे अमर हैब, ने बगीचा मे जीयब। मुदा अहाँ जौं अपन सपना बेची त हम कीन' लेल तैयार छी। [कमल किछु कहबा लेल उद्यत होइत छथि कि नाट्यकार हुनका बाधा दैत कहैत छथि] हम......हम बुझि रहल छी, अहाँ की पूछै चाहैत छी।

कमल—की ?

नाटयकार—अहाँ पूछब—ई सपना किनने हमरा लाभ ?

कमल—ठीक।

नाट्यकार—तखन सुनू ! बिना लाभक क्यो सौदा नहि करैत अछि।

अहाँक सपना क शोषण क' कए तकरा सजा कए, नहि त तकरा नाङट बना कए उपस्थित भद्रमंडली कें देखबै चाहैत छी। जनिते छी, लोग सब चाहे सजल नहि त नाङट घटना आ नारी देखब पसिन्न करैत छथि।

कमल—बेस; त अहाँ की देब ?

नाट्यकार—हम अहाँक सपना आ' घटना ल' कए अहाँ कें सुता देब। हम देखि रहल छी, अहाँ बहुत दिन सँ निःस्वप्न निद्राक सुख नहि पौलहुँ। और हम अहाँ कें अमर क' देब आपन नाटकक पात्र बना कए। अहाँक नामक उच्चारणक संगहि आइ, सौ वर्ष बाद, वा हजारो युग बीतियो गेला पर लोग अहाँक सुख-दुःख आ' कविता कें पढ़त, सुनत, तकर आवृत्ति करत। मुदा तैयहु शेष नहि क' सकत तकरा। कहू, तैयार छी ?

कमल—अहाँ तत्तेक ने लोभ देखा रहल छी जे ......[माथ झुका कए] हम तैयार छी। [कहबाक संगहि संग मुख पर सँ अल्परेख विलीन भ' जाइत अछि।]

नाट्यकार—[दोसर पुरुष पात्र दिसि अगुआ जाइत छथि। हिनका ऊपर अल्परेख पहिनहि सँ पड़ि रहल छल] ई छथि अनिरुद्ध। [अनिरुद्ध दर्शक वृन्द क दिसि देखैत हाथ जोड़ैत छथि।] हिनक जीवनक किछु किछु वृत्तान्त हिनक मुँहे पर लिखल छन्हि। जेना, क्यो हिनका देखि कए ई बता सकैत अछि जे प्रकृति निर्दय रूपें प्रतिपल अनिरुद्ध कें अपन जाल मे रुद्ध करबाक चेष्टा कैने हैत—। की ? ठीक कहि रहल छी त ?

अनिरुद्ध—ठीके कहि रहल छलहुँ, मुदा अधे कहि कए रहि गेलहुँ। बाकी आधा ई अछि जे अन्त मे हारि कए प्रकृति हमरा मृत्यु दंड द' देलक।

नाट्यकार—से कोना ?

अनिरुद्ध—हमर सुख-शान्ति छीनि कए, घर-परिवार लूटि कए आब ओ हमरा मारै चाहैत अछि। हमरा कैन्सर भेल अछि आ' धीरें-धीरें हम

मृत्यु दिसि बढ़ि रहल छी। [हँसैत] मुदा, तकर माने ई जे ओ हमरा सँ जीतिये नहि सकल।

नाट्यकार—अनिरुद्ध, अहाँ कें देखि कए हमर मन मे लोभक दीपक जरि उठल अछि। एकटा खिस्सा मन पड़ि रहल अछि हमरा, जाहि मे क्यो पथिक रास्ताक किनार मे पड़ल एक गोट धर्षिता नारीक कान-नाक आ' हाथक गहना खोलि कए आपन जेबी मे धए बिना कोनो दुविधाक चलि देने छल।

अनिरुद्ध—[हँसि दैत छथि—उच्चस्वरें] और अहाँ हमर बाकी जे किछु अछि से सबटा लूटि कए आपन काज मे लगाबै चाहैत छी—सैह ने?

नाट्यकार—हँ हम अहाँक अतीत कें कीन' चाहैत छी। कारण, हमर नाटक क दर्शक लोकनि कें पुरान घटना, पुरान वस्तु आ' पुरान लोग नीके लगैत छन्हि।

अनिरुद्ध—कारण, ओहि घटना, वस्तु आ' लोगक नाम 'पुरान' राखि लेल गेल अछि; नहि त हमर जे अतीत अछि से एखनहु वर्त्तमान अछि आ' भरिसक भविष्यो मे रहत। जाहि कारणें लोग दोसरा कें पिछरैत आ' खसैत देखि हँसैत अछि—देखैत नहि अछि जे ओ अपने कतय ठाढ़ अछि—एक डेग बाद की अछि, सैह कारणें लोग वर्त्तमान कें बिसरबाक चेष्टा करैत तकरा अतीत बना लैत अछि।

नाट्यकार—आ हम सैह भावना कें भाषा मे घोरि कए नाटक लिखैत छी। तखन कहू, अहाँ की लेब अपन अतीतक?

अनिरुद्ध—किछु नहि। हमरा अतीत नहि चाही, हमरा चाही भविष्य। एकटा सुन्दर भविष्य, जाहि मे हमरा सनक अतीतक कोनो स्थान नहि हैत। अहाँ स्वच्छन्द हमर कथाक व्यवहार क' सकैत छी।

नाट्यकार—धन्यवाद, असंख्य धन्यवाद अहाँ कें। [तत्पश्चात् आगुआ जाइत छथि नारी चरित्रक दिसि] आ' ई छथि सती।

सती—[म्लान हँसी हँसैत] पुरुषक दम्भ आ' अभिमान क युद्ध मे जकर

सब दिन बलि चढ़ाओल गेल अछि—ओ सती।

नाट्यकार—से कियैक कहैत छी ? अहाँक पतिदेवक संग त हमर परिचय छल। हम जतबाक जनैत छी, ताहि सँ त......

सती—अहाँ की जानब ? कोना जानब ? अहूँक आँखि पर त सैह परदा अछि—जे कोनो पुरुषक आँखि पर रहैत छैक।

नाट्यकार—[हँसैत] नहि; देखैत छी, अहाँ पुरुष नाम क प्राणिये सँ घृणा करैत छी।

सती—[उदास भए] मुदा हम एहन नहि छलहुँ। ई हमरा अपन जीवन, हमर चारूकातक पुरुषे सिखौलक अछि।

नाट्यकार—से कोना ? हमर उत्सुकता बढ़ि रहल अछि।

सती—[व्यंग्य करैत] अहीं कियैक ? सब दिन सब पुरुष नारीक देह आ' बात दुनूक लेल उत्सुक रहल अछि।

नाट्यकार—नहि, ताहि लेल नहि।

सती—तखन हमर जीवन क कथा सुनि कए अहाँ की करब ?

नाट्यकार—जे अहाँ नहि क' सकलहुँ, सैह करब।

सती—की ?

नाट्यकार—अहाँ क अभियोग कें हम जनताक अदालत धरि पहुँचा देब। जे दुःख अहाँक मन मे अहुरिया काटि रहल अछि अथवा एतय उपस्थित आरो कतेको नारीक भीतर घुलि रहल अछि—किन्तु जकरा प्रकाशित करबाक कोनो उपाय नहि, हम तकरा पुरुषक सामने उपस्थित करब।

सती—ठीक अछि। हजारो वर्ष सँ हम जे करबाक वृथा चेष्टा करैत आयल छी, से अहाँ करू। देखू—सफल होइ छी वा नहि।

नाट्यकार—बेस, त अहीं सँ शुरू करैत छी। कहू अहाँक की अभियोग अछि। कहू, अपन कथा।

सती—[नाट्यकार क दिसि सम्मति लेबाक दृष्टियें एक बेर देखैत माथ

झुका लैत छथि। पुनः धीरे-धीरे दर्शक दिसि देखैत] हमर कथा आ' हमर इतिहास पुरान अछि। ई भेल विश्वास आ' तकरा अन्याय-यज्ञ मे बलि चढ़ैबाक पुराण। [किछु काल धरि चुप रहि पुनः बजैत छथि] हमरहु, सब नारी जकाँ एक पुरुष मूर्त्तिक कल्पना छल। मने मन ओहि मूर्त्ति कें हम नेनपनहि सँ सजौने छलहुँ, माला पहिरौने छलहुँ, ताहि पर अपन देह, मन, धर्म आ विश्वास कें लुटा देबाक निःशब्द प्रतिज्ञा कैने छलहुँ।

नाट्यकार—ओ के छल ?

सती—नाम सँ की अबैत-जाइत छैक ?

नाट्यकार—देखबा मे.........

सती—सेहो कोनो प्रश्न नहि भ' सकैत अछि। बस—एतबाक कहब बहुत हैत जे ओ पुरुष छलाह—पुरुष कें जे किछु रहबाक चाही, से सब किछु हुनका मे छलन्हि।

नाट्यकार—मानि लियह[कमल कें देखा कए]कमल सन।

सती—[कमल कें एक नजरि देखि कए] हँ; एहने।

नाट्यकार—[इंगित सँ कमल कें पास बजबैत कहैत छथि] कमल !

कमल—जी।

नाट्यकार—अहाँ कें सती देबी क कथा मे हिनक पति क भूमिका मे अभिनय करै पड़त।

कमल—[एक बेरि लोलुप दृष्टियें सती कें देखैत] ठीक अछि। [सतीक तीक्ष्ण दृष्टिक सामने माथ झुका लैत छथि।]

नाट्यकार—[सती क दिसि घुरि कए] हँ, त अहाँक कथा मे और के सब छथि ? आन-आन नारी आ' पुरुष-पात्र सँ परिचय कराबी त----

सती—नारी क्यो नहि, पुरुषे पुरुष छल। एक रहथि हमर बाबूजी, एक [कमल कें देखा कए] हिनक आफिसक सिनियर आफिसर आ' आरो एक गोटे रहथि—हिनक एक मित्र, पबित्र बाबू। और जे सब छलाह,

हमर कथा क लेल हुनका सभक कोनो प्रयोजन नहि।

नाट्यकार—अहाँ क पिता केहन रहथि ? उमर कत्तेक छलन्हि ?

सती—ध्येह अहीं सन छलाह। नाम किछुओ राखि सकैत छी।

नाट्यकार—बेस, तखन हमहीं अहाँ क पिता क भूमिका मे अभिनय करब।

[अकस्मात् अनिरुद्ध दिसि दृष्टि पड़ैत] अनिरुद्धो त छथि— हिनको कोनो भूमिका……

सती—ध' लियह, ओ छथि पवित्र बाबू।

अनिरुद्ध—बेस।

पहिल नाटक

सती—[किछु काल एकदम चुप्पी लगैबाक बाद] हमर कथा क पहिल अंक शुरू भेल छल ओही दिन, जाहि दिन हम बाबूजी क पास अपराधी भ' कए गेल छलहुँ। मंच सँ धीरे-धीरे कमल, अनिरुद्ध आ नाट्यकार निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। मंचक पश्चदेश आलोकित भ' उठैछ। एक ड्राइंग रूमक आभास स्पष्ट भ' उठैत अछि, यद्यपि कोनो विशेष मंच-सज्जाक प्रयोजन नहि हैत।] मुदा हम जनैत छलहुँ जे हम कोनो अपराध नहि क' रहल छी। [चुप भ' जाइत छथि] बाबूजी तखन घर मे नहि रहथि। आ' तेँ हम तखन अपन सजाओल एकटा बक्सा सँ कैक गोट चिट्ठी बहार क' कए पढ़ि रहल छलहुँ। [कहैत कहैत सती पछुआ' कए टेबुलक पास पहुँचि, तीन--चारिटा पत्र उठा कए हाथ मे ल' कए पढ़बाक मुद्रा करैत छथि। पढ़बाक संगहि संग हुनक मुख सलज्ज भ' उठैत छन्हि। ओ एहि प्रेम-पत्र सभक एक-एक पंक्ति पढ़ैत रहथि आ' हँसि दैत रहथि। नेपथ्य सँ शंकर क भूमिका मे कमलक स्वर भासल आबैत छल' जेना क्यो चिट्ठी लिखैत-लिखैत तकरहि पढ़ि रहल हो।]

शंकर—[नेपथ्य सँ कनेक निम्न स्वरें] 'सती!' [कहबाक संगहि संग सती ओहि अज्ञात प्रेमीक प्रति बिनु किछु कहने प्रश्नात्मक भ्रू-भंगिमा करैत छथि] ओना हम ई नहि कहब जे अहाँ रूप मे तिलोत्तमा आ गुण मे लक्ष्मी छी। हम चाटुकार नहि छी।'

सती—[लजा कए] तखन की छी? ऐं?

शंकर—'मुदा, हम एतबहि कहब जे अहाँ जेह छी, जेहन छी—और क्यो हमरा लेल तेहन नहि अछि।'

सती—झूठ!

शंकर—'सत्ते कहैत छी, अहाँक पास आबै मे डर लगैत अछि।'

सती—कियैक?

शंकर—'डर एहि बात क जे सामने रहने अहाँ कें छूबाक एकटा अदम्य आकांक्षा हमर मन मे जागि उठैत अछि। डरैत छी, छूनहि सँ जौं हमर सबटा सपना टूटि जाय!'

सती—[जे चिट्ठी पढ़ैत रहथि, तकरा दहिना हाथ सँ बाम हाथ मे लैत, बाकी चिट्ठी दहिने हाथ मे धरैत दर्शक दिसि देखैत कहैत छथि] कियैक? हमरा सभक सपना एत्तेक सस्त अछि जे ओहिना टूटि जायत? [पहिलका चिट्ठी टेबुल पर राखि दैत छथि आ' दोसर एकटा चिट्ठी ल' कए पढ़े लगैत छथि] 'सती! पहिने हम सोचैत छलहुँ, अहाँ कें छूने सपना टूटि जायत।'

शंकर—[सतीक एतबा कहला क बाद संगहि-संग शंकर क कण्ठ-स्वर भासल अबैत अछि] 'मुदा आब जखन अहाँ कें छूबि कए देखलहुँ त पता चलल जे अहाँ कें स्पर्श करितहि हमर सपना एक-एक बेरि एक-एक रंगें रंगि कए आरो मोहक भ' उठैत अछि। आ' ओहि रंग क जादू मे ओभरा कए, संगीत क मूर्च्छना मे आबद्ध भए हमर वाक्य - हरण भ' जाइत अछि। हम तखन सबटा भाषा, सबटा कविता, सबटा शब्द बिसरि जाइत छी।'

सती—[निःशब्दप्राय रहि, धीरे-धीरे प्रश्न करैत छथि] आ' तखन ?

शंकर—'तखन सब किछु बिसरियहु कए एकहिटा वाक्य मन रहि जाइत अछि; एकहिटा वाक्य ठोर पर हजारो बेरि अबैत अछि। जनैत छी ओ की थीक ? [सती जानबाक भंगिमा से माथ डोलबैत छथि एवं कमल क संगहि संग कहैत छथि] हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी। [एतबाक कहि किछु काल दुनू गोटे चुप्पी लगा लैत छथि। पुनः शंकर कहै लगैत छथि] आ' अहाँ क पातर मोलायम ठोर सँ बारम्बार इयैह वाक्य सुनबाक इच्छा होइत अछि।'

सती—[चिट्ठी दिसि देखैत, पुनः ताहि पर सँ दृष्टि हटाए] हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी।

[सती शंकरक एहि वाक्य कें दोहराबैत छलीह कि नाट्यकार, अर्थात् सती क पिता मंच पर प्रवेश करैत छथि। सती कें विह्वल देखि हुनक पिता हुनका दिसि अगुआ' अबैत छथि।]

प्रजापति—की करैत छह बेटी!? ककरा सँ बात......[एतबा कहैत ओ प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि एवं सती क कथन शुरू भ' जाइत अछि।]

सती—[दर्शक सँ प्रजापति क परिचय देबा क हेतु कहैत छथि] ई छथि हमर जन्मदाता, हमर पिता। हिनक नाम भेल प्रजापति। सैयहु वर्ष सँ हम आ' हमरहि सन नारी लोकनि, जे नाटक क चरित्र भए लोग क मनोरंजन मात्र कैल अछि, ताहि नाटक क ईहो एक गोट पात्र छथि। [कहैत-कहैत सब चिट्ठी टेबुल क दराज मे राखि दैत छथि। पुनः कखनहु प्रजापति क पास जाए अथवा कखनहु मंच पर पद्चारणा करैत परिचय प्रदान करैत छथि] खजाना हिनक जतबाक विशाल अछि, मन ततबाक नहि। नहि मानैत छथि जे हम आकस्मिक आगन्तुक छी; कारण हुनक विचारें हम हुनक सृष्टि छी—हुनक सम्पत्ति सेहो

[एतबाक कहैत-कहैत पुनः पहिनुकहि स्थान पर ठाढ़ भ' जाइत छथि।]

प्रजापति—[प्रस्तरीभूत अवस्था सँ स्वाभाविक भ' जाइत छथि आ' अपन

प्रश्न कें दोहराबैत छथि] की करैत छह बेटी ? ककरा सँ बात क' रहल छलह ? [कहैत-कहैत अपन अंगा खोलै लागैत छथि एवं बैग कें टेबुल पर राखैत छथि ।]

सती—नहि, ककरा सँ गप्प करब—ओहिना, अपनहि मने किछु...... । से जाय दियह । मुदा, अहाँ आइ एत्तेक देर सँ कियैक आबि रहल छी ? दुपहरियो क समय लंच करबा क लेल नहिये एलहुँ, की बात थीक ?

प्रजापति—[कुर्सी पर बैसैत] तोरे काज सँ...आइ... भरि दिन... ।

सती—हमर काज ? हमर कोन काज ? हम त अहाँ सँ कोनो काज द' नहि कहल अछि] ।

प्रजापति—[हँसैत] नहि; माने, काज त हमरे छल, मुदा विषय छलह तों । [किछु काल चुप रहि कए] आइ तोरे लेल एक जगह बियाहक प्रस्ताव ल' कए गेल छलहुँ ।

सती—[सती विह्वल भ' जाइत छथि] की ?...हमर......विवाह ?

प्रजापति—[सती क दिसि बिनु देखनहि छोटछीन स्टेजक्राफ्ट करैत छथि] लड़का हमरा पसिन्न पड़ल । घर-खानदान क त गपे नहि । बिना पहिनहि सँ पता लगौने त हम कोनो काज करिते नहि छी—वैह सब, ठाकुर कम्पनी क मालिक छथि आ'...... ।

सती—[प्रजापति क दृष्टि कें आकृष्ट करबाक लेल हुनका टोकैत] मुदा, हम त...... ।

प्रजापति—इयैह कहबह ने जे तोरा एखन बियाह करबाक मन नहि छह । मुदा, एहि बेरि हम से सब नहि सुनबह । पहिने सुनलियह । तकर कारण छलैक । एक, तखन तोहर एम० ए० क पढ़ब शेष नहि भेल छलन्हु आ' दोसर, तेहन नीक वर क सन्धानो नहि पबैत छलहुँ । एखन त से सब किछु नहि अछि । एम० ए० क परीक्षा भ' गेल छन्हु आ' एहि बेरुक सम्बन्ध क त गपे नहि ।

सती—[दृढ़ कंठें] मुदा, से जे हो—हमरा सँ ई बियाह करब नहि हैत ।

प्रजापति--[उत्तेजित भ' उठैत छथि] नहि हैत माने ? सौ बेर हैत--हजार बेर हैत [सती कें दृढ़संकल्प तथा निरुत्तर देखि कनेक मोलायम स्वर मे] तों सब बिना सोचने-बिचारने किछु कहि दैत छह्क--नहि हैत । हम पूछैत छी--कियैक नहि हैत ?

सती—कारण जानिये कए अहाँ की करब ?

प्रजापति—तकर माने ? भरि जिनगी खटलहुँ, कष्ट उठा कए तोरा खुआ-खेला कए एतेकटा बनौलहुँ, आ' तोरा पर हमर कोनो अधिकार नहि ?

सती—[म्लान हँसी हँसैत] बाबूजी, अधिकार दू तरहक होइत छैक--एक, जीवित प्राणी पर, आ, दोसर, निष्प्राण वस्तु पर ।

प्रजापति—तों कहै की चाहैत छह ?

सती—इयैह जे अहाँ हमरा अपन सम्पत्ति बुझैत छी, निष्प्राण वस्तु बुझैत छी ।

प्रजापति—के कहलक ई बात ?

सती—कहत के ? जीवित प्राणी पर अधिकार क संग किछु कर्त्तव्यो रहि जाइत छैक। अहाँ तकर कहियो पालन कैलहुँ ?

प्रजापति—तोहर अन्न-वस्त्र आ' शिक्षाक खर्चक जोगाड़ नहि कैलहुँ ?

सती—बस ? इयैह भेल अहाँक कर्त्तव्य ? ई सब त अहाँक पाइ कैलक ? हमर इच्छा, आदर्श आ' अनुभूति क कोनो खबरि कहियो रखलहुँ ? हमरा जखन नोखार भेल, ओहि भयानक राति सब मे जखन एकटा शिशु डर यन्त्रणा सँ कानि उठैत छल--तखन भड़ैती सान्त्वना देबाक लेल छल नर्स । जखन परमात्मीयक स्नेह-छाया मे हमर अपन इच्छा आ' सपना सब कें गढ़बाक सजैबाक उपयुक्त समय छल—तखन हम पड़ल रहलहुँ प्राणहीन स्वप्नहीन कानवेन्टक बोर्डिंग मे ।

प्रजापति—हम ई सब किछु ने बुझैत छी, ने बुझै चाहैत छी । तकर अलावे, तोहर ईसब बातक संग बियाहक कोनो सम्बन्ध नहि ।

सती—सम्बन्ध छैक आ' अहाँ नीक जकाँ जनैत छी जे की थीक ओ

सम्बन्ध ! ई वियाह हैत एकटा बिजनेस कनसर्न सँ दोसर बिजनेस कनसर्न क। आ' ताहि मे बलि चढ़ाओल जायब हम।

प्रजापति—देखह सती—ई सब हम किछु नहि सुनै चाहैत छी। तोरा बियाह करै पड़तह [कहैत-कहैत टेबुल पर राखल आपन बैग क दिसि अगुआ जाइत छथि] आ' एत्तहि करै पड़तह। एहि मे कोनो अन्यथा नहि। [कहैत-कहैत किछु खोजबा क अभिनय करैत टेबुल क दराज खोलैत छथि अन्यमनस्क रूपें सती क प्रेम पत्र सब उठा लैत छथि। ई सब काज करैत-करैत कहै लगैत छथि] एखन देखि रहल छी, तोरा पढ़ा-लिखा कए भूल कैने छी। [एतबा कहबाक बाद ओ पत्र क दिसि ध्यान दैत छथि। मुदा एम्हर सती अपन पिता क बात सुनैत आन दिसि मुँह घुरौने अपमानिता जकाँ ठाढ़ अछि। प्रजापति कें किछु काल निःशब्द देखि सती हुनका दिसि देखैत छथि। तावत ओहि चिट्ठी सभक भाषा पढ़ैत-पढ़ैत प्रजापति क मुखक भाव-भंगिमा बदलि जाइछ। ओ क्रोध सँ काँपै लागैत छथि।]

सती—[अगुआ कए ओहि चिट्ठी सब कें लेबाक प्रयास करैत] ई……ई सब हमर……।

प्रजापति—[सती क हाथ कें हँटा दैत छथि] आब हम बुझलियह तोहर बियाह नहि करबा क रहस्य। तोहर एत्तेक साहस जे तों हमर खाए-पीबि कए हमरहि घर मे रहि एक टा लोफर क संग प्रेमलीला चलाबह।

सती—[नम्र स्वरें] बाबूजी ! हम अहाँ क खैलहुँ पीलहुँ से सत्त। मुदा ताहि लेल हमर प्रेम क अपमान नहि क' सकैत छी। [एतबा कहि माथ झुका लैत छथि]।

प्रजापति--[मुँह दुसैत] प्रेम ! प्रेम क तों की जनैत छह ? दूटा उपन्यास पढ़लह कि प्रेम क वेद पढ़ि लेलह ! [चिट्ठी सब हाथ मे धए पाकिट सँ लाइटर निकालि लैत छथि] कान खोलि कए सुनि ले एहि घर मे ई सब लीला नहि चलि सकैछ। [कहैत-कहैत लाइटर बारि कए चिट्ठी सब मे

आगि लगा दैत छथि ।]

सती—[चिट्ठी मे आगि लगाबैत देखि उन्माद-ग्रस्त जकाँ पास जाय चाहैत छथि] बाबूजी ! ई अहाँ की क' रहल छी ?

प्रजापति—[हाथ सँ सती कें धक्का द' कए हँटबैत] हँटि जाह ! [सती धक्का खा कए टेबुल पर जा कए खसैत छथि—दर्शक क विपरीत दिसि मुँह कैने । एहि मध्य मंच क आलोक किछु स्तिमित भ' जाइत अछि । मात्र प्रजापति क मुँह पर अल्परेख पड़ि रहल अछि । हुनक मुँह पर कुटिलता क रेखा—हाथ मे चिट्ठी जरैत-जरैत शेष भ' जाइत अछि । प्रजापति प्रज्वलित चिट्ठी सभक अन्तिमांश स्टेज पर फेंकि तकरा पैर सँ पीसि दैत छथि । आ' तकर बाद टेबुल पर पड़ल कनैत सती क दिसि घुरि कए कहैत छथि ।] हम तोहर पिता छी । तोहर कामना की हैतह, की हैबाक चाही आ' तोरा की भेंटबा क चाही—से हमरा पता अछि । ने हम तोरा आगि मे कूदं देबह, आ' ने कोनो दुश्चरित्र-शैतान क जाल मे फँसे देबह । ई हम कथमपि नहि होमय देब ।

[एतबा क कहैत-कहैत मंच मे शंकर क भूमिका मे कमल प्रविष्ट होइत छथि । हुनकहु मुँह पर अल्परेख पड़ैछ । ओ प्रविष्ट होइत-होइत प्रजापति क अन्तिम वाक्य सुनने रहथि । प्रविष्ट भ' कए ओ एक बेरि प्रजापति दिसि देखैत परिस्थिति क अनुधावन करबा क चेष्टा करैत छथि ।]

शंकर—[सती क दिसि देखैत] की भेल सती ! [कमल क स्वर सुनितहि सती माथ उठा कए कमल क दिसि देखैत छथि एवं ओतय सँ तीव्रवेगें उठि कए कमल क प्रशस्त छाती मे आश्रय लैत कानैत छथि ।] की भेल ! कहू त......[सती क माथ कें दुनू हाथ सँ उठा कए पूछैत छथि ।]

प्रजापति—[एक बेरि कमल आ' एक बेरि आपन कन्या क दिसि देखैत] ओ ! तखन इयैह थिक ओ......

शंकर—[प्रजापति कें टोकैत] हँ, हमहीं छी ओ दुश्चरित्र शैतान । हमर

नाम भेल शंकर। [कहबाक संगहि संग मंच क स्तिमित आलोक तीव्र भ' उठैत अछि।]

प्रजापति—[गरजैत] नाम सँ हमरा कोनो प्रयोजन नहि।

शंकर—[हँसैत] तखन अहाँ हमरा शैतान कहि कए पुकारि सकैत छी।

प्रजापति—[दाँत तर ठोर दाबैत] डिसगस्टिंग ! हम तोरा सब सन नीच आदमी क लेल समय नष्ट नहि करै चाहैत छी। हमर बेटी कें छोड़ि दहक आ' निकलि जा हमर सीमा सँ बाहर।

शंकर—ने हम नीच छी, आ' ने हम ऊँच हैबाक दाबा करैत छी। अहाँ क बेटी कोनो सम्पत्ति थिक, जे हम चोरी क' कए ल' जायब। ओ जौं जाय चाहथु त' जाथु।

प्रजापति—[तीव्र स्वरें गरजैत] सती ! चलि आबह एम्हर !! [सती तैयहु कमल कें छोड़ैत नहि अछि। ई देखि कए तीव्रतर स्वरें] सती !

शंकर—चीत्कार कैने जौं सब काज भ' जाय, तखन कोनो समस्ये नहि होयत। सती अहाँ क पास नहि जैतीह।

प्रजापति—आओत आ अवश्य आओत। मुदा एखन जे ओ अबाध्य भ' रहल अछि, तकर कारण भेलह तों। तों ओकर सरलता क सुयोग ल' कए ओकरा सपना देखौने छहक। हम ई सबटा चालाकी बुझैत छी। हम जनैत छी जे तों ओकरा कोना छोड़बहक।

शंकर—[हँसैत] से कोना ?

प्रजापति—तों पाइ चाहैत छह ने—से तोरा भेंटतह। बाजह कत्तेक पाइ चाही। [शंकर एहि बात पर उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] हँसैत कियैक छह ?

शंकर—अहाँ क कल्पना शक्ति क परिचय पाबि कए। [सती कें अपना पास सँ हँटा कए अगुआ जाइत छथि] मुदा जे देब उचित छल से अहाँ ने कहियो द' सकलहुँ; ने कहियो द' सकब।

प्रजापति—की थीक ओ वस्तु ?

शंकर—स्नेह, प्रेम आ' प्रीति। जौं ई सब अपन बेटी कें द' सकितहुँ, त आइ ओ अहाँ क दिसि जाइत।

प्रजापति—तों हमरा सँ मसखरा क' रहल छह ?

शंकर—सत्य भाषण कखनहु-कखनहु मसखरे भ' जाइत छैक। अहाँ क कन्या ई सब वस्तु क अभावें भूखल छलीह। एहि दीर्घ जिनगी क राति सब मे ओ भूखले सुतलीह—मुदा अहाँ कें तकर पतो नहि छल। एखन सती पर अहाँ क कोनो अधिकार नहि अछि।

प्रजापति—सती पर तोहर कोन अधिकार छह जे हमरहि घर मे आबि हमरा उपदेश द' रहल छह ?

शंकर—पत्नी पर पति क जे अधिकार रहैत अछि, सैह अछि।

प्रजापति—तकर म्-माने, हमरा सँ……नुका कए…… ।

शंकर—मुदा समाज सँ नुका कए नहि। हम सब ई बियाह कैने छी।

प्रजापति—[प्रचंड रूपें क्रुद्ध भ' कए] तों बुझैत छह जे ओहि अधिकार क बलें तों हमर समस्त सम्पत्ति क ग्रास करबह ? से हम कथमपि नहि होमय देबह। हम……हम सती कें सम्पत्ति क एको कौड़ी नहि देबन्हि।

शंकर—[उपेक्षा क भंगिमा मे] हुँ ! अहाँ कहियो बुझलहुँ जे अहाँ क सब सँ मूल्यवान सम्पत्ति की थीक ? हम तकरा चीन्हलहुँ। तैं हम सती कें अपन पत्नी क सम्मान देल अछि। रहल ओहि कुबेर क खजाना क बात, जकरा अहाँ सब दिन सँ सजबैत-सँतैत ऐलहुँ—। ताहि लेल हम अहाँ पर मात्र कृपा क' सकैत छी। अहाँ प्रत्येक दिन अगुआ रहल छी मृत्यु क खाधिक दिसि—जहिया ओतय खसब, तहिया अहाँ क अवस्था कें देखि, अहाँ क अर्थ-स्वर्ण सब ऊपर सँ हँसत—जेना अहाँ क वृथा आस्फालन कें देखैत हमरा एखन हँसी आबि रहल अछि। [हँसि दैत छथि।] चलू सती ! अहाँ क अपन घर चलू !

[सती उठि कए ठाढ़ होइत छथि कि मंच अन्हार भ' जाइछ। मंच सँ कमल आ' नाट्यकार प्रस्थित होइत छथि। आलोक पुनः संस्थापित

हैबाक बाद सती पहिलुके जकाँ बैसल देखना जाइत छथि। सती अपन कथन शुरू करैत आगाँ बढ़ैत छथि।]

सती—अपनहि घर मे बन्दिनी छलहुँ। ताहि सँ त मुक्ति भेंटल। मुदा बहरा कए जतय ऐलहुँ, से और कठिन जगह छल। एतय सँ मुक्त हैब और कठिन छल। कारण, एतहुका देबार सब बनल छल प्रेम क कठिन पत्थर सँ। एहि जहल क रंगरूप दोसर छल—दासत्व सेहो दोसरे तरहक।

शंकर—[सती क वक्तव्य शेष हैबाक संगहि संग प्रविष्ट भए] सती ! सती !

सती—कहू ! [कमल क दिसि घुरैत छथि]

शंकर—[खुशी सँ उच्छ्वसित भ' कए] कहैत छी, कहैत छी। कनेक [बैसैत] आराम त करै दियह। [अपन टाइ क गिरह कनेक अलग करैत छथि। कमीज क दू-एकटा बटन खोलैत छथि आ' एकटा पैर पर दोसर पैर चढ़ा कए कहैत छथि] अहाँ कें एत्तेक दिन सँ कहैत छलहुँ ने जे पता लगैबे करब—लोग कोना ऊँच-ऊँच पद सब पर चलि जाइत अछि, सभक सामनहि सँ बहुत ऊपर उठि जाइत अछि ? से आइ हम बुझि गेलहुँ जे कोना ई सब होइत छैक। [हँसैत] आब हमरा के रोकि सकत ? [उत्तेजित भए कुर्सी सँ उठि कए पदचारणा करैत] आब शहर क दक्षिण दिसि सब सँ नामी मुहल्ला मे एकटा फ्लैट कीनब—एकटा कि दूटा गाड़ी रहत—बेयरा-बबर्ची-नौकर-चाकर......

सती—[बाधा दैत] आ' हम सब ?

शंकर—[उच्छ्वास प्रकट करैत] अरे हमरहि सभक लेल त ई सब किछु रहत।

सती—हमरा नहि चाही एहन सुख।

शंकर—से की ? [आश्चर्यान्वित भए सती क दिसि बढ़ैत छथि] ई की कहैत छी अहाँ ? अहाँ क लेल हम दिन-राति सोचि कए......आ' अहीं कहि रहल छी......

सती—हँ, हमहीं कहि रहल छी। [म्लानरूपें हँसैत] एखन हम एसगरे कहैत छी; नहि त पहिने अहूँ सैह कहैत छलहुँ।

शंकर—पहिने हम बहुत किछु करैत छलहुँ, कहैत छलहुँ—जे एखन ने करैत छी, ने कहैत छी।

सती—जेना, प्रेम नहि करैत छी। [कहि कए तिर्यक दृष्टियें शंकर दिसि देखैत छथि।]

शंकर—की कहैत छी सती! अहाँ सँ एखन हम प्रेम नहि करैत छी? [क्षुब्ध भ' कए] कहू, अहाँ कें कोन सुख नहि दैने छी?

सती—सुख? अहाँ क मुँह सँ प्रेम क नवे संज्ञा सुनि रहल छी। अहाँ सुख कें प्रेम कहैत छी?

शंकर—की बच्चा जकाँ करैत छी सती? कम ऑन, बी प्रैक्टिकल! हमरा लगैत अछि, अहाँ बहुत दिन सँ खिड़की आ' दरबज्जा क बाहर दुनिया दिसि नहि देखने छी।

सती—आ' हमरा लगैत अछि, अहाँ बहुत दिन सँ हमरा दिसि—अपन प्रेम क दिसि नहि देखने छी। कियैक त, दुनिया क दिसि देखैत-देखैत अहाँ क पास फुरसतिये नहि अछि।

शंकर—तखन अहाँ हमरा की करै कहैत छी?

सती—एहन सपना नहि देखू—जाहि सँ अहाँ अपनहु सँ बहुत ऊँच, बहुत ऊपर उठि जाय?

शंकर—सती! [पदचारणा करैत] हम देखैत छी जे अहाँ क मन मे किछु सौ साल पुरान चिन्ता आ' आदर्श एखनहु घुरि रहल अछि।

सती—हम सन्तोष चाहैत छी। हमरा जतबाक अछि, ताही सँ हम सुखी छी।

शंकर—किन्तु पुरुष सन्तुष्ट नहि भ' सकैत अछि—एतबा टा सँ; आ' हम एक पुरुष छी। हम सब समस्त दुनिया कें तोड़ि-फोड़ि कए हजारो बेरि आपन ढंग सँ सजबैत छी। ई चलैत रहैत अछि—जहिया धरि

ने हम अपन प्रार्थित वस्तु पबैत छी ।

सती—आ' से अहाँ कहियो नहि पबैत छी ।

शंकर—तैं हम बिना किछु कैने जेना छी, तहिना रहू—सैह ने ? सती ! तखन अहाँ क जे किछु अछि, सेहो नहि रहत ।

सती—हम अहाँ सँ ने तर्क करै चाहैत छी, ने तर्क कैने जीतब । हम मात्र एतबहि कहब, जे एतय – एखुनका व्यवस्था मे हमरा ने कोनो अभाव अछि, ने दुःख । तखन कियैक परिवर्त्तन क लेल चेष्टा करब ? आ' जौं प्रेम क अर्थ सुखे होइक – त अहाँ कें एतय सुख नहि अछि ?

शंकर—[प्रचण्ड उत्तेजित स्वरें कहैत छथि] नहि—एतय सुख नहि अछि । [कहबा क बाद दुनू एक दोसरा क दिसि एक दृष्टियें देखैत रहि जाइत छथि ।]

सती—[किछु काल चुप रहबा क बाद मन्द स्वरें] अहाँ कत्तेक बदलि गेल छी !

शंकर—[अनुत्तेजित कण्ठें] आ' हम हैरान छी जे अहाँ कियैक नहि बदलल छी !

सती—अहाँ एखन की करै चाहैत छी ?

शंकर—हम जे किछु करै चाहैत छी, से अहाँ क बिना नहि हैत ।

सती—हमर कत्तेक मोल ?

शंकर—अहाँ कहियो अपना कें परखलहुँ जे मोल क पता लागत ?

सती—[स्वगत] सत्ते त, अहाँ क प्रेम मे त हम बिनु मोल क बिका गेल छलहुँ !

शंकर—[सती कें बड़बड़बैत देखि] की कहलहुँ ?

सती—किछु नहि । हँ, अहाँ नहि कहलहुँ—ऊपर चढ़बा क सीढ़ी क पता कोना लागल ?

शंकर—[विचित्र जकाँ हँसैत] सीढ़ीये बनायब त अहाँ क हाथ मे अछि ।

सती—माने ?

शंकर—माने किछु नहि ; अहाँ कें बेसी किछु करै नहि पड़त, तखन······

[किछु सोचैत चुप भ' जाइत छथि ।]

सती—[कमल कें द्विधाग्रस्त देखि] की भेल ?

शंकर—इयैह माने हमर बड़का अफसर सब कें एन्टरटेन करै पड़त। माने, हुनका सब कें एतय बजाबै पड़त, नीक खाना-पीना क इन्तजाम करै पड़त। भ' सकैत अछि, हुनका सब सँ अहाँ कें कखनहु-कखनहु गप-सप करै पड़त आ' प्रयोजन भेल त किछुकाल क लेल घूमै पड़त। इयैह सब, और की ? माने······ [सती क दिसि देखैत थम्हि जाइत छथि।]

सती—[एतबा देर धरि आहत दृष्टियें कमलक दिसि देखैत चुपचाप सब बात सुनि रहल छलीह।] माने हम सबटा बुझि गेल छी ।

शंकर—[दाँत निपोड़ने] तखन त नीके ! बुझबे करैत छी, ई सब बिना कैने आइकालिह प्रोमोशन—इन्क्रिमेन्ट किछु भेंटब मोसकिल होइत अछि।

सती—अहाँ की बुझैत छी जे अहाँ क जनरल मैनेजर कें खुऔने-पिऔने सँ आ' दूटा बात कैनहि सँ अहाँ कें ई सब भेंटि जायत ?

शंकर—[उद्विग्न भए] नहि, माने......भ' सकैछ कोनो होटल मे, हुनका संग......माने, एक-दू राति अहाँ......

सती—[चौंकैत] की ? की कहलहुँ ?

शंकर—म्-माने, अहाँ कें होटल नहि पसिन्न होमय त घरे मे......इयैह एत्तहि—

सती—[क्रोध सँ असंवृत भए चीत्कार करैत] अहाँ हमरा वेश्या बना रहल छी—अहाँ अपन प्रेम कें बेचि रहल छी मात्र सुखक लेल ? [कुर्सी पर बैसि कए कानै लगैत छथि।]

शंकर—[सती कें कनैत देखि आगाँ बढ़ि कए] सती ! हमर बात त सुनू ! हमर प्रेम ताहि सँ कतय कम भ' रहल अछि ? हमर जनरल मैनेजर क संग दू राति बितौने अहाँ क की हैत ? किछु नहि। अहाँ हमरा लेल जेहन छलहुँ, तेहने रहि जायब। [आगाँ आबि कए सान्त्वना देबाक

भंगिमा मे सती कें छूबैत कहैत छथि] सती ?

सती—[शंकर सती कें पुचकारैत देह पर हाथ फेरैत छथि । संगहि संग विशृत्स्पृष्ट जकाँ सती हाथ कें हँटबैत कहैत छथि] हँटि जाउ ! नहि छूबू हमरा ! [उठि कए कहैत छथि] अहाँ हमरा समस्त प्रेम-प्रीतिक गला घोंटि देने छी—अहाँक हाथ मे तकर चेन्ह अछि । क्षमता क लालसा मे अहाँक सब बात सँ दुर्गन्ध बहरा रहल अछि । अहाँ दूर भ' जाउ हमर सामने सँ [कहि कए शंकर क दिसि सँ मुँह घुरा लैत छथि ।]

शंकर—[आहत भए क्रुद्ध सर्प जकाँ माथ उठबैत छथि] ओ—त आब हम बुझि गेलहुँ, कत्तेक सस्त आ'फोंक छल अहाँक प्रेम आ' प्रीति । हम आइ धरि कहियो अहाँ सँ किछु नहि माँगने छलहुँ । अहाँ क लेल ई सब किछु हम अपन शक्ति-बुद्धि-अर्थ आ' श्रम सँ केलहुँ । आ' अहाँ एहन सती छी जे हमर उन्नति क लेल एकटा पुरुष कें एन्टरटेन धरि नहि क' सकैत छी ? हम अहाँक पति भ' कए जखन कहैत छी जे ताहि सँ तकर बादो हमरा सभक सम्बन्ध बदलत नहि, तखन अहाँक कियैक आपत्ति अछि ?

सती—से अहाँ नहि बूझब । जौं अहाँ बुझितहुँ, त एहन चिन्ते नहि करितहुँ । छी-छी ! हम सोचियो नहि सकैत छी— [माथ झुकबैत दूनू हाथें मुँह झाँपि लैत छथि ।]

शंकर—[उपेक्षाक भंगिमा मे हँसैत] हुँह, एक समय कत्तोक प्रतिज्ञा भेल छल—'हम अहाँ कें देलहुँ अपन समस्त देह, अपन मन, अपन सब किछु' । [सती क दिसि तिर्यक दृष्टियें देखैत] ताहि शरीर पर हमर एतबहुटा अधिकार नहि जे--। से सबटा फूसि छल, आब बुझल । मुदा सती, ई जानि राखू हम अहाँक कोनो काजक लेल अपन शरीरो कें तुच्छ क' सकैत छी । [कहि कए शंकर मंच सँ निष्क्रान्त होइत छथि ।]

सती—[शंकर क चलि गेलाक बाद मुँह पर सँ हाथ उठा कए विह्वल जकाँ दर्शक क दिसि देखिते रहि जाइत छथि । स्वगत कहै लगैत छथि]

जकरा हम अपन तन-मन सब किछु द' देने छी, तकरहु लेल कि हम ई नहि क' सकैत छी ? [प्रश्न समाप्त हैबाक संगहि संग सतीक मुँह चिन्तान्वित भ' उठैत छन्हि, ठोर काँपै लगैत छन्हि आ' समस्त शरीर मे प्रतिवाद क एकटा बिहाड़ि आबि जाइत अछि। सती भिन्न स्वरें कहि उठैत छथि।] नहि नहि, ई ......ई कथमपि नहि हैत हमरा सँ; ई हमरा सँ नहि हैत।

पवित्र—[सतीक वाक्यक अन्तिमांश समाप्त हैबा सँ पहिनहि मंच पर प्रविष्ट होइत] की नहि हैत ?

सती—[पाछाँ घुरि कए पवित्र कें देखैत] किछु नहि। [दीर्घ उच्छ्वास कें नुकैबाक चेष्टा करैत छथि।]

पवित्र—[कनेक हँसैत] की बात थीक ? कमल बाबू नीचाँ जाइत हमरा भेटलाह। हम टोकबो कैलियन्हि, मुदा कोनो उत्तर नहि देलन्हि।

सती—[जेना एतबा देर सँ पवित्रक कोनो बात सुनि नहि रहल होथि, ताहि मुद्रा मे] पवित्र बाबू, अहाँ हमर एकटा प्रश्नक सदुत्तर द' सकैत छी ?

पवित्र—कहि कए त देखू !

सती—अहाँ त लेखक छी।

पवित्र—नहि-नहि, एतय त हम पवित्रे छी। लेखक जतय हैब, हैब।

सती—हम हँसी नहि क' रहल छी।

पवित्र—[हँसैत] चलू ! तखन हमहूँ सीरियस भेलहुँ।

सती—अहाँ अपन उपन्यासक नायिका लोकनि कें चिन्हैत छियन्हि ? एतबा दिन मे चिन्हि पौलियन्हि ?

पवित्र—बड़ कठिन प्रश्न कैलहुँ। [सोचैत] किछु किछु त' अवश्य चिन्हैत छियन्हि। मुदा, ई प्रश्न······

सती—कियैक नहि जानि हमर ई धारणा अछि—अहाँ सब नारी कें नहि चीन्हि सकलहुँ, ने चीन्हि सकब। कारण, कखनहु ताहि लेल चेष्टो नहि

कैल अछि।

पवित्र—से कियैक कहैत छी ? [सती क बात सँ कनेक आहत होइत छथि।]

सती—अहाँ क एकटा उपन्यासक नायिका—की ने नाम छल, मन नहि पड़ि रहल अछि; ध' लियह पार्वतिये—हुनक बाबूजी धनिक छलाह, माय नहि छलीह—मन पड़ल ? [पवित्र कें निरुत्तर देखि] पार्वती क पिता क हृदय छलैक हुनक खजाने सन विशाल। तैं ओ कोनहु दिन माय क अभाव कें बुझि नहि सकल—

पवित्र—हँ, हँ; मन पड़ल।

सती—तकर बाद, नीक दिन देखि हुनक पिता एक उच्चवंश क घर सँ पार्वती क वियाह क' देलन्हि—खूब धूमधाम क संग। तकर बाद जे भेल छल, से सब दिन क कथा थीक। पहिल राति, जकरा ल' कए एकटा नारी स्वप्न क माला सजौने छल, पार्वती क पति पशु जकाँ पार्वती क देह ल' कए एकटा दानवीय खेल मे पागल भ' उठल छल। तकर बाद क कथा त अहाँ कें मन हैत।

पवित्र—[माथ झुका कए] हँ। तकर बाद रोज राति चलल इयैह अत्या-चार। ओहि पुरुषक कहियो इच्छा धरि नहि भेलैक—आँखि खोलि कए देखत जे कोना हुनक पूजा क फूल हुनक सहधर्मिनी सजा रहल छलीह। पार्वती पढ़ल लिखल नीक रुचिवला घर क नीक कन्या छलीह। ओहि दानव क हाथ सँ मुक्ति पैबाक लेल ओ चेष्टा कैने छलीह—आ' पैनहु छलीह।

सती—मुदा ताहि लेल पार्वती कें आत्महत्या कर' पड़लन्हि। कियैक पवित्र बाबू! की पार्वती क लेल आन कोनो पथ नहि छलैक मुक्ति पैबाक ?

पवित्र—जाय दियह—ओ त मात्र कहानी छल। [सती क उत्तेजना क प्रशमन करैत]

सती—नहि, हमर बात अहाँ कें सुनै पड़त। [पदचारणा करैत] पार्वती क सासुरारिये मे आरो एक गोट पात्र छलाह—पशुपति क भाइ, रमापति,

जनिका सँ पार्वती क एकटा मधुर सम्बन्ध क जन्म भेल छल। कारण, रमापति क स्वभाव छल पशुपति क विपरीत। कारण, ओ कवि छलाह, शिक्षित छलाह—अपन बड़ भाइ सन अशिक्षित लोहा क कारबारी नहि छलाह—

पवित्र—हँ, रमापति तँ हमरहु नीक लगैत छल।

सती—मुदा हमरा हुनका पर घृणे होइत अछि।

पवित्र—से कियैक ?

सती—रमापति पार्वती कें चाहैत छलाह। अपन काव्य मे, अपन कल्पना मे प्रेम क शब्द सब कें ओ हजारो बेर कहने छलाह—मुदा हुनका साहस नहि छलन्हि जे पार्वती क सामने जा कए कहितथि।

पवित्र—और पार्वती ?

सती—पार्वती कें त अहाँ चिन्हैं नहि देलहुँ पवित्र बाबू! तकर पहिनहि अहाँ हुनक हत्या कैलहुँ। मुदा कियैक से कैलहुँ ? की पार्वती समाज कें अस्वीकार कए पशुपति कें छोड़ि रमापति कें स्वीकार नहि क' सकैत छलीह ? पार्वती कें अहाँ एहि मुक्ति क स्वाद कियैक नहि देलहुँ पवित्र-बाबू—कहु! जवाब दियह! [कहैत कहैत सती पवित्र क पास चलि अबैत छथि। पवित्र सती क दिसि एकबेर विचित्र दृष्टियें देखैत छथि आ' तकर बाद माथ झूका लैत छथि एकटा दीर्घश्वास क संग] बुझलहुँ। अहाँ क पास तकर उत्तर नहि अछि। [सती पुनः मंचक दोसर दिसि चलि जाइत छथि] भरिसक अहाँ उत्तर खोजि रहल छी—अकास आ' पतालक सबटा पुराण क पन्ना उनटा कए।

पवित्र—से नहि भ' सकैत छल। तकर कारण भरिसक......ओहि कथाक परिवेश आन तरहक छल। माने, तखुनका समाज......तकर नियम...

सती—[व्यंग्यात्मक स्वरें] अच्छा, ध' लियह—ओहि कथाक काल थीक वर्त्तमान, ई मुहूर्त्त। आ' [सोचैत] पशुपति क चरित्र मे पशुता नहि छल, मुदा ओ छलाह एहन एक गोट व्यापारी, जे अपन सुन्दर

पत्नियो कें लाभक लेल उपयोग मे आनै चाहैत चलाह—बस, एतबहिटा पशुता छल हुनका मे। अहाँ क सुविधाक लेल आरो एकटा परिवर्त्तन क' दैत छी। ध' लियह' रमापति पशुपति क अपन भाइ नहि छलाह, तखन दुनू मे एहन सख्यता छल जे अपना मे सम्बन्ध भाइये सन छलन्हि। तखन ? तखन अहाँ की करितहुँ ?

पवित्र – भरिसक पशुपति सँ छीनि कए पार्वती कें रमापति सँ मिला दितहुँ।

सती—[पवित्र क बहुत पास चलि आबैत छथि] पवित्र बाबू! अहाँ पार्वती कें एखनहु चिन्हलहुँ नहि। [पवित्र किछु नहि कहि सती क दिसि देखैत चुप रहि जाइत छथि।] हम......हम छी पार्वती। अहाँ हमरा मुक्ति द' सकैत छी ? हम एहि घृण्य जीवन सँ मुक्ति चाहैत छी—मुक्ति।

पवित्र—[सती कें एत्तेक पास ठाढ़ देखि आवेग सँ थरथरबैत छथि। मुदा समाज क डरें पछुआ जाइत छथि।] नहि-नहि......ई कोना भ' सकैत अछि ? कमल......कमल हमर मित्र थीक।

सती—[पवित्र दिसि तीव्र दृष्टियें देखैत पाछाँ हँटैत तीक्ष्ण स्वरें कहैत छथि] ओ! मने-मन मित्र क पत्नी क कामना क' सकैत छी—मुदा तकरा कहबा मे पाप होइत अछि ? डर होइत अछि लोग क, समाज क !!! [व्यंग्यात्मक स्वरें] वाह ! अहाँ जे एत्तेक साहसी छी, तकर पता नहि छल। अहाँ सभक सब किछु पशुता सँ भरल रहैत अछि। एखन देखैत छी दोष पार्वती क नहि छल, ने रमापति क छल—दोषी छी अहाँ, हँ अहीं छी। पवित्र बाबू ! लिखब छोड़ि दियह ! जकर अपन जीवन मे ने अछि सिद्धान्त, ने साहस—से अनकर विषय मे की लिखत ?

पवित्र—[बाधा देबाक चेष्टा करैत] मुदा...हम...हमरा किछु......

सती—[उत्तेजित स्वरें] हम किछु नहि सुनै चाहैत छी। निकलि जाउ ! निकलि जाउ अहाँ हमर घर सँ !! [पवित्र कें विस्मित जकाँ ठाढ़ रहैत

देखि चीत्कार करैत कहैत छथि] जाउ !!! [कहबा क संगहि संग पवित्र प्रस्थानोद्यत होइत छथि। सती कानै लगैत छथि—दुनू हाथें मुँह झँपने। पवित्र क्रन्दन क शब्द सुनि घुरि कए देखैत छथि। मुदा, साहस नहि होइत छन्हि जे आबि कए सान्त्वना देथि। मंच पर अन्धकार भ' जाइत अछि।]

[मंचक एक कोना मे ठाढ़ नाट्यकार पर अल्परेख पड़ैत अछि। नाट्यकार क वक्तव्य शुरू हैबाक संगहि संग सती क कानबाक शब्द बन्द भ' जाइत अछि। मंच क पश्चदेश मे नीलाभ आलोक पसरैत अछि। मंच पर सती, कमल, आ' एक अपरिचित पात्र कें ठाढ़ देखल जाइछ। कमल बाम दिसि पार्श्व-पट्टिका क पास आन दिसि मुँह फेर कए ठाढ़ रहैछ। ओ अपरिचित पात्र दर्शक दिसि पाछाँ घुरल सती क पास ठाढ़ रहैत छथि आ' हुनक दहिना हाथ सती क बाम कान्ह दिसि बढ़ल देखना जाइत छन्हि। सती क सिनूर लेपटायल छल; पहिरलका साड़ी विस्रस्त छल आ' ओ दर्शक दिसि बढ़ल ठाढ़ छलीह। मंच क दहिना कोना पर पवित्र क भूमिका मे ठाढ़ अनिरुद्ध सब किछु देखैत छलाह।]

नाट्यकार—तकर बाद और की हैत ? शैतान क छाया पड़ल एकटा सुन्दर परिवार पर। शैतान क नाम छल वासना—अतृप्त वासना—लोभ देह क, लोभ अर्थ क आ' लोभ क्षमता क। सती क बलि चढ़ाओल गेल लोभ क लाल आगि मे। आ' तकर मूल्य भेंटि गेलन्हि शंकर कें। शंकर कें आशीर्वाद भेंटल हुनक जनरल मैनेजर क। [एतबा कहबा क संगहि संग ओ अपरिचित पात्र, अर्थात् शंकर क जनरल मैनेजर अगुआ जाइत छथि शंकरक दिसि। ओम्हर शंकर संगहि संग पार्श्व पट्टिका क दिसि सँ पाछाँ घुरि कए नतजानु भ' कए बैसैत छथि। आ' जनरल मैनेजर शंकर क माथ पर आशीर्वाद क भंगिमा मे हाथ राखैत छथि। नाट्यकार क कथन क संगहि संग ई सब होइत छल।] आ' तैं भेंटल नीक

पद, नीक दरमाहा, नीक फ्लैट आ' नीक विदेशी गाड़ी—बस, और की चाही जिनगी मे ? [एतबा कहबाक संगहि संग नाट्यकार पर सँ अलपरेख हटि जाइत अछि। नाट्यकार, पवित्र आ' जनरल मैनेजर प्रस्तरीभूत रहि जाइत छथि। मात्र शंकर और सती अभिनय करैत छथि।]

शंकर—[उत्तेजित भए नतजानु अवस्था सँ उठि कए सती क दिसि बढ़ैत छथि।] सती! सती! सुनैत छी? [सती मृत जकाँ शंकर दिसि देखैत छथि, मुदा शंकर ताहि दिसि बिना देखनहि कहैं लगैत छथि] जनैत छी, हमरा आइ केहन प्रोमोशन भेटल अछि? [आनन्द सँ विह्वल भ' जाइत छथि] हमरो ओ सब मैनेजेरियल रैंक मे ल' लेलन्हि—नव फ्लैट भेटत, गाड़ी-ड्राइवर-बबर्ची-अर्दली—सब किछु। ओह—ई सब, सब किछु अहीं लेल भेल सती। एहि तीन महीना मे अहाँ हमरा लेल जे किछु कैलहुँ, तकर जबाब नहि। [थम्हैत सती कें छूबैत] कहू! अहाँ की चाहैत छी? आइ अहाँ जे चाही हमरा सँ माँगि सकैत छी। जौं अकासक तारा चाही, त सेहो हम.........

सती—हम जे चाहैत छी से द' सकब?

शंकर—अहाँ कहि कए त देखि लियह।

सती—हम अहाँ सँ मुक्ति चाहैत छी, शंकर।

शंकर—[चौंकैत पछुआ' जाइत छथि] ई की? नहि-नहि, ई कोना हैत?

सती—इयेह कहैत छलहुँ, अकास क तारा सेहो देब, तखन एतबो नहि द' सकैत छी?

शंकर—मुदा ई कोना भ' सकैत अछि सती? हम—हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी।

सती—[पागल जकाँ हँसै लगैत छथि। हँसैत-हँसैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि] प्रेम? प्रेम की थीक शंकर? ओ त पुरुष क बनाओल एकटा शब्द थीक। ओ त नारी कें वशीभूत करबाक एकटा मन्त्र थीक।

ओ त एकटा जाल थीक, जाहि मे एकबेर शिकार फँसै, त निकलि नहि पबैत अछि। [कनैत] हम ओहि जाल मे फँसल छी, शंकर! अहाँ हमरा छोड़ि दियह।

शंकर—मुदा, सती......[कहबाक संगहि संग शंकरो आन सब चरित्रे जकाँ प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि।]

सती—[मंच क सम्मुखभाग मे आबि जाइत छथि। सती क मुख पर अल्परेख पड़ैत अछि। एहि बीच जनरल मैनेजर निष्क्रान्त होइत छथि।] तखन हमरा लेल मुदा, किन्तु, वा, अथवा क कोनो मर्यादा नहि छल। हम बुझि गेल छलहुँ जे शंकर एतहि नहि रहताह। ओ आरो ऊपर उठबाक चेष्टा करताह, हमरा ततबहि छोट होमै पड़त अपन आत्मा क पास। भनहि क्यो नारी कें नहि चिन्हने होथि, हम तखन धरि पुरुष कें चीन्हि गेल छलहुँ। [कनेक काल चुप रहैत] और तकर बाद सँ आइ धरि हजारो पुरुष क बिछाओल जाल कें हम छिन्न-विच्छिन्न क' देने छी। मुदा एखन...... [किछु सोचैत चुप भ' जाइत छथि। एतबा कहबाक संगहि संग नाट्यकार, कमल आ' अनिरुद्ध प्रस्तरीभूत अवस्था सँ स्वाभाविक अवस्था मे आबि जाइत छथि।]

नाट्यकार—की एखन ?

सती—एखन, माने आइ-काल्हि कखनहु-कखनहु ई सब करैत-करैत सन्देह होइत अछि—हम जे जनलहुँ, जे सिखलहुँ—से ठीक अछि त! हम... हम भूल त नहि क' रहल छी ? ई सोचितहि हम पागल सन भ' जाइत छी। हम अपन चारू कात क स्त्रिगण कें बारम्बार पूछैत रहैत छी—'अहाँ सुखी नहि छी ने ? अहाँ सुखी नहि छी ने ?'

नाट्यकार—ओ सब की कहै छथि ?

सती—[किछु काल चुप रहि कए] सैह त' आश्चर्य क गप्प थीक, नाट्यकार। बहुतो गोटे कहैत छथि—'हँ; हम सुखी छी।' ओ सब फेरो पूछैत छथि--'कियैक, अहाँ सुखी नहि छी की ? कियैक नहि छी ?' [अपनहि मने

कहैत छथि] कियैक नहि छी– सएो त। [नाट्यकार सँ] भ' सकैछ, हमर हिसाब मे भूल भेल अछि। भ' सकैछ, ठीक अछि। अहाँ हमरा एहि प्रश्न क उत्तर बता देब, नाट्यकार ?

नाट्यकार—हमरा पास उत्तर कतय अछि सती ? हम त' अपनहि हिसाब मे कमजोर छलहुँ। हिसाब क खाता मे कथा लिखैत छलहुँ। [हँसैत] एतेक दिन बीति गेल, मुदा आदति नहि छूटल अछि। अहूँक कथा हम ओहि खाता मे लिखि लेलहुँ। आब अनिरुद्ध क कथा सुनब। अनिरुद्ध !

दोसर नाटक

अनिरुद्ध—कहू !

नाट्यकार—आब अहाँक कथा सुनब।

अनिरुद्ध—हमर कथाक त शेष नहि भेल अछि। तखन कोना सुनाउ ?

नाट्यकार—हम त अहाँ कें कहनहि छी—हम सब दोसराक अशेष दुःख आ' असमाप्त कथा सुनब बड़ पसिन्न करैत छी; कारण—

अनिरुद्ध—कारण हमरा पता अछि। कारण, हम सब—सब कयो भूखल छी एकटा कथाक लेल; पियासल छी एकटा सपना क लेल। [आवेश मे आबि जाइत छथि] कारण, हम सब दोसर क भूख आ' पियास ल' कए कविता लिखब बड़ पसिन करैत छी।

नाट्यकार—उत्तेजित जूनि होउ, अनिरुद्ध। जनैत नहि छी, दिल्ली क अधिपति उत्तेजना कें सेहो गैर-कानूनी घोषित क' देने छथि।

अनिरुद्ध—[म्लान, हँसैत] जनैत छी नाट्यकार। जकर पेट भरल रहैत अछि, से उत्तेजना पसिन कियैक करत ? चीत्कार कियैक करत ओ, जकर कंठ सुखा गेल अछि मधुर सँ! [पदचारणा क' कए] हमर जीवन क, हमर कथा क पात्र सब--सेहो कखनहु उत्तेजना पसिन नहि

करैत छल।

नाट्यकार—के छलथि ओ सब ? [मंच पर मेक-अप मैन प्रविष्ट होइत छथि और सती क मुख पर बयसक चेन्ह पाड़ैत छथि; माथक केस कें उज्जर करैत छथि।]

अनिरुद्ध—हमर कथाक मुख्य पात्र जे रहथि, से हमर कथाक आरम्भ हैबा सँ पहिनहि एहि लोक सँ चलि गेल छलाह--आन कतहु भरिसक शांतिक खोज मे। [कनेक थम्हि कए] जखन ओ नहि रहलाह, तखन अप्रधान पात्र सभक बाजब-भूकब हँसब-कानब बढ़ि गेल छल। आ' हमर भूखो बढ़ि गेल छल--प्रचण्ड क्षुधार्त्त भ' गेल छलहुँ हम सब।

नाट्यकार—के छलाह ओ—अहाँक कथाक प्रधान चरित्र ?

अनिरुद्ध—हमर पिताजी। हुनक निधन क बाद पता चलल जे हुनक जीवने छल हमरा सभक साधन। नहि त हमरा सभक कोनो सम्पत्ति नहि छल। बहुत किछु, जे हम जनैत छलहुँ जे हमरा सभक छल, तखनहि पता चलल जे ओ सब किछु अनकर सम्पत्ति छलैक। हुनक मृत्यु हमरा लेल छोड़ि गेल छल नाटक क किछु चरित्र, अप्रयोजनीय वार्त्ता आ' ढेर रास दायित्व।

नाट्यकार—नाटकक किछु चरित्र माने ?

अनिरुद्ध—एक छल हमर माय—दुर्भाग्यक शिकार; हमर बहिन—रमा जे बाबूजी क निधन क बाद जिनगीक दोसर अर्थ क सन्धान मे लागि गेल छल; और छल—शान्ता, जकरा सँ हम कहियो प्रेम करैत छलहुँ। मुदा, जखन हमरा पता चलल जे कालिह सँ हमरा भुखले सुतै पड़त—जखन आशा क देबार सब ढहि गेल—तखन हमरा लेल हमर माय, बहिन आ' शान्ता—सब क्यो बदलि गेल छल; तीनो मे कोनो पार्थक्य नहि रहल! नाट्यकार, क्यो नहि देखलक, ने क्यो बुझै चाहलक जे हमहूँ भुखले छी सभ क संग। ओ सब-सब क्यो हमरा सँ अपन अपन हिसाब लेबाक लेल, अपन प्राप्य लेबाक लेल एक भ' गेल छल—सब

बदलि कए एक रंग, एक रूप भ' गेल छल।

नाट्यकार—तखन सतिये अहाँ क कथा मे—

अनिरुद्ध—[नाट्यकार कें वाक्य समाप्त नहि करै दैत] हँ, ध' लियह, ओ सब एहने रहथि। [सती कें देखा कए] तकर बाद रहथि युधिष्ठिर बाबू—जनिका हम अपन पिता जी क बिजिनस क पार्टनर जानैत छलहुँ; और रहथि सुयोधन ठाकुर—जनिका हम कखनहु-कखनहु पिताजी क पास आबैत देखैत छलहुँ—दुनू अलगे गप करैत छलाह। जहिया धरि हम अभाव क स्वरूप नहि देखने छलहुँ, तहिया धरि सोचैत छलहुँ युधिष्ठिर बाबू आ' सुयोधन ठाकुर और हमर चारूकात क लोग सब हमर परिवार क, हमर पिताजी क मित्र छथि। [कनेक देर चुप रहि जाइत छथि।] तकर बाद एक दिन हमर मोह भंग भ' गेल।

नाट्यकार—कहिया ? कखन ?

अनिरुद्ध—जहिया हमरा ओतय हिनका सभ क स्वरूप खुजि गेल छल, मुखौटा उतरि गेल छल। [पदचारणा करैत छथि।] तखन पिताजी क मृत्यु क एक मास भ' गेल छल—कि ताहि सँ किछु दिन बेसिये। माय आ' हम बैसल छलहुँ। हम कत्तहु जबाक लेल तैयार भ' रहल छलहुँ—भरिसक। [मंच सँ कमल आ' नाट्यकार अनिरुद्ध क एहि प्रसंग क उत्थापन क संगहि संग निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। मंच पर अन्हार पसरि जाइत अछि। सती पर अल्परेख पड़ैत अछि। अनिरुद्ध अपन कमीज आ' पैंट क जेबी पर हाथ धरैत सोचि रहल छलाह जे सब प्रयोजनीय वस्तु लेने छथि वा नहि। हुनकहु मुँह पर अल्परेख पड़ैत छन्हि। सती अनिरुद्धक सभ काज पर ध्यान द' रहल छथि।] हँ; रूमाल लेलहुँ, ककही लेनहि छी—ई भेल कागज-पत्तर, पाइयो किछु अछिये—और......और की ने बिसरि रहल छी, की...... [सोचबाक चेष्टा करैत] —की बिसरि रहल छी, माय—कह त [माय क भूमिका मे ठाढ़ सती क दिसि देखैत पूछैत छथि]

माय—[किछु काल अपन सन्तान दिसि क्लान्त दृष्टियें देखैत] भरिसक अपन पिता कें [कहबा क संगहि संग समस्त मंच आलोकित भ' उठैत अछि। घर मे दीनता क चेन्ह साफ बुझना जाइछ]।

अनिरुद्ध—[आश्चर्य] की कहैत छें माय? हुनका कियैक बिसरब?

माय—तखन भरिसक बिसरि गेल छें अपना सभक अवस्था कें।

अनिरुद्ध—[माय क पास आबि कए हुनक हाथ कें अपन हाथ मे लैत] तोरा की भ' गेल छौक, कह त?

माय—[हाथ छोड़ा कए ठाढ़ होइत] किछु नहि आ' जौं किछु भेलो अछि, त तोरा कोन प्रयोजन पड़ल छौक जे तकर खोज लेबें! [स्वर मे क्षोभ क परिचय पाओल जाइत अछि]।

अनिरुद्ध—[हँसैत] नहि; देखैत छी जे तों हमरा पर गोसायल छें माय। [कहैत माय क हाथ पुनः अपन हाथ मे लेबाक बाद हठात् हाथ दिसि देखैत] ई की? तोहर सोना क चूड़ी सब कतय छौक? कियैक खोलि कए बक्सा मे ध' देलें? ई हमरा एकदम पसिन नहि—जे हमर माय रहै एहन भिखमंगिनी सन। कतय छौक—निकाल ओ सब आ' एखनहि पीन्हि ले। [माय कें तैयहु निरुत्तर देखि] की भेलौक? किछु कहैत कियैक नहि छें?

माय—हमरा नीक नहि लगैत अछि ओ सब पीन्हब।

अनिरुद्ध—मुदा हमरा लगैत अछि—आ' बाबुओ जी कें लगैत छलन्हि। तोरा मन नहि छौक? एक बेरि कोनो कारणें तोहर हाथ शून्य छलौक त कोना बिगड़ल रहथि! जौं। एखनहि पहिरि कए देखा दे त हम जेबौ। नहि त इयेह हम बैसलहुँ। [सत्ते बैसि जाइत छथि—ओतय पड़ल एकटा कुर्सी पर।]

माय—म्-मुदा......[कहैत-कहैत चुप भ' जाइत छथि।]

अनिरुद्ध—मुदा की?......

माय—[माथ झुका कए] ओ सब किछु नहि अछि, त हम तोरा कोना

दुखाउ!

अनिरुद्ध—[चौंकैत] की ? नहि अछि माने ? ककरा देलें ? कतय गेल ओ सब ?

माय—[पेट दिसि देखबैत] हमर, रमाक आ' तोहर पेट मे।

अनिरुद्ध—माने ? [माय कें चुप रहैत देखि उत्तेजित भ' कए] माय ! की भेल अछि से कियैक नहि कहैत छें ?

माय—की नहि भेल अछि हिनका गेला क बाद ! [मंच क एक कात मे आबि जाइत छथि—पदचारणा करैत-करैत। संगहि संग अनिरुद्ध माय क पास अगुआ अबैत छथि] तोहर बाबू जखन रहथि, तखनहि हमर गला क हार चलि गेल छल—आरो दू-एकटा जेवर तखनहि स्वाहा भ' गेल छल।

अनिरुद्ध—[आहत भए] मुदा हमरा कियैक नहि एहि सभक पता होमय देलें ?

माय—तोरा कहिये कए की होइत ? आ' ताहि पर तखन तोहर एम० ए० क फाइनल परीक्षा छलौक।

अनिरुद्ध—मुदा बाबूजी ? हुनका तखन की भेल छलन्हि। ओ त आफिस जाइत छलथि। तखन ई कोना भेल ?

माय—[मलिन हँसी हँसि कए कहैत छथि] आफिस ! हँ, जाइत त रहथि, मुदा जा कए भरिसक कोनो पार्क मे बैसल रहैत छलथि। आ' से पहिनुके जकाँ नियम सँ करैत रहथि, जाहि सँ ककरो पता नहि चलै।

अनिरुद्ध—कियैक ?

माय—नहि जानि हुनका संग युधिष्ठिर बाबू क की भेल छलन्हि ! भरिसक हुनका दुनू मे झगड़ा भेल छलन्हि। आ' ओ हिनका कम्पनी सँ कोनो तरहे छाँटि देने छलाह। हमरा से सब किछु बूझल नहि छल। हमरा एहि सभक किछु-किछु पता तखनहि चलल जहिया मास क शेष भ' गेल, नव महीना शुरू भ' गेल, मुदा घर क खर्चा क

लेल हमरा टाका नहि भेंटल। [चुप रहि कए पुनः कहै लगैत छथि] आ' ओही दुनू मास मे सभ किछु चलि गेल।

अनिरुद्ध—[चीत्कार करैत] रह माय, रह......तकर माने, तकर माने हुनक ओ एकसिडेन्टो ऐकसिडेन्ट नहि छल। तकर माने बाबूजी जानि बुझि कए......ओफ ! [दुनू हाथें अपन मुँह झाँपि लैत छथि।]

माय—[स्वर मे क्रन्दन क आभास अबैछ।] जखन हम सुनलहुँ जे तोहर बाबूजी रेल क पटरी पार करैत काल......

अनिरुद्ध—[मुँह झँपनहि] बस माय—बस—रहै दे। हमरा आब सुनबा क काज नहि अछि। [हाथ कें मुख पर सँ उतारि कए] मुदा, हम छोड़ब नहि ककरहु—हम......हम [जैबा लेल उद्यत होइत छथि।]

माय—अनिरुद्ध ! [माय क पुकार सुनि थम्हि जाइत छथि।] कतय जा रहल छें ?

अनिरुद्ध—हम जा रहल छी बाबूजी क आफिस मे।

माय—कियैक ?

अनिरुद्ध—हमरा युधिष्ठिर बाबू सँ हिसाब करबा क अछि। वैह बाबूजी कें एहि पथ पर धकेलि देने छथि—वैह हुनका आत्म-हत्या क लेल बाध्य कैने छथि, हम हुनका नहि छोड़बन्हि, हम...... [कहैत-कहैत अनिरुद्ध उत्तेजित भ' उठैत छथि, दाँत पीसैत थम्हि जाइत छथि।]

माय—नहि, तों ओतय नहि जा सकैत छें। तों किछु क' लेबें त' हमर जेहो सहारा अछि, सेहो नहि रहत। [कहैत-कहैत कानै लगैत छथि। अनिरुद्ध घुरि अबैत छथि एवं माय कें सान्त्वना देबाक चेष्टा करैत छथि। तावत् युधिष्ठिर क भूमिका मे नाट्यकार प्रविष्ट होइत छथि। माय वा अनिरुद्ध-क्यो हुनका अबैत नहि देखलकन्हि।]

युधिष्ठिर—वाह ! नाटक नीक जमल अछि।

अनिरुद्ध—[कहैक संगे संग घुरि कए युधिष्ठिर कें देखैत छथि एवं तीव्र व्यंग्यात्मक स्वरें कहै लगैत छथि।] ओ ! त अहाँ कें ई सब नाटक

बुझा रहल अछि !

युधिष्ठिर—अत्यन्त उच्च कोटिक !

अनिरुद्ध—त जखन अपने नाटक देखनहि छी, तखन त हमरा सब कें तकर मोल ओसुलनाइये उचित।

युधिष्ठिर—[हँसैत] तैं ने नाटक कहैत छी। जहिना बरामदा सँ माय-बेटा क नजरि नीचाँ रास्ता पर पड़लन्हि आ' देखलथि जे युधिष्ठिर बाबू आबि रहल छथि कि दुर्योधन आ' गान्धारी कानै लगलाह।

अनिरुद्ध—अहाँ कनेक बेसिये अतीत मे चलि जाइत छी। मुदा आइ हम अहाँ कें तीने मास पहिलुका गप मोन पाड़ै चाहैत छी—युधिष्ठिर बाबू।

युधिष्ठिर—रह' रह'। हम सुनैत छी ठीके, मुदा कनेक देर सँ। तों भरिसक हमरा चाचा जी वा एहने किछु कहैत छलह। ठीक मन नहि अछि। तखन कतबो किछु हो—छलहुँ त तोहर बाबू जी क मित्र—तैं......

अनिरुद्ध—मित्र ! हँ, मित्रे छलहुँ। बाबू जी क जिनगीक माटि पानि कें अपन ताप सँ सोखि कए, छोड़ि देलहुँ।

युधिष्ठिर—भाषा पर तोरा नीक दखल छह।

अनिरुद्ध—आरो बहुत किछु पर हमर अधिकार अछि।

युधिष्ठिर—मुदा अनिरुद्ध, सुरुज जकाँ हम नहि रहितहुँ, त तोहर पितृ देव-आ हुनक माटि पानि ने की ने कहलह—सब कहिया ने शेष भ' गेल रहैत !

अनिरुद्ध—की भेल रहैत से हम नहि जनैत छी। मुदा की भेल अछि से सबटा जनैत छी।

युधिष्ठिर—ओ ! [कहैत सिगरेट बहार कए ताहि मे अग्नि-संचार करैत छथि]

अनिरुद्ध—[युधिष्ठिर क मन्तव्यक उपेक्षा करैत] हम जनैत छी बाबू जी

क मृत्यु कोनो स्वाभाविक मृत्यु नहि छल। [कहि कए युधिष्ठिर क मुख-भंगिमा क प्रति दृष्टि निक्षेप करैत छथि।]

युधिष्ठिर—[बड़ स्वाभाविक जकाँ कश लैत छथि आ' तखन कहैत छथि] बेचारा! [सिगरेट केस बढ़ा कए] लेह जौं चलैत होइक।

अनिरुद्ध—[सिगरेट दिसि बिना देखनहि कहैत छथि] और हुनक मृत्यु क लेल दायी छथि युधिष्ठिर बाबू।

युधिष्ठिर—सत्ते? [हँसि दैत छथि। सिगरेट कें फेंकैत आ' पीसैत] आइ बड़ गर्मी अछि। [एकटा अखबार उठा कए हौंकै लगैत छथि।]

अनिरुद्ध—[एक दृष्टियें युधिष्ठिर क सब भाव-भंगिमा कें लक्ष्य करैत छथि] अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ!

युधिष्ठिर—[अखबार सँ हौंकब बन्द करैत] आँय! तों कोनो प्रश्नो कैने छलह की?

माय—ओकर प्रश्न कें छोड़ि दियह। हमरे किछु पुछबा क अछि।

युधिष्ठिर—पूछू!

माय—हम सब अहाँ क की बिगाड़ने छलहुँ जे अहाँ हुनका सँ सबटा छीनि कए हुनका असहाय क' देने छलहुँ।

युधिष्ठिर—[हँसैत] हुनका कहिया किछु छल जे हम छिनतहुँ?

अनिरुद्ध—कियैक? अहाँ कि कहै चाहैत छी जे ओ अहाँ क कम्पनी क पार्टनर नहि छलाह?

युधिष्ठिर—ओ कम्पनी क मैनेजर छलाह, आरो सोझ भाषा मे कहने ओ कम्पनी क नौकर छलाह—मालिक नहि।

अनिरुद्ध—[व्यंग्य करैत] तकर बाद अहाँ कहब, ई मकानो हुनकर नहि छलन्हि।

युधिष्ठिर—वाह! तों कोना जानि गेलह ई असल बात! जे हो, जखन से जानिये गेलह, तखन सुनह—ई मकान, ई फर्निचर—सब किछु कम्पनी क सम्पत्ति थीक। तोरा सब कें ई सब किछु छोड़ै पड़तह।

हमर नवका मैनेजर आबि रहल छथि—ओ एतय रहताह। बुझलह ?

माय—हे भगवान! ई कोन पाप क दण्ड द' रहल छी। [कानै लगैत छथि—मुँह झाँपि कए।]

अनिरुद्ध—[माय सँ] ठहर माय—हम एना नहि सब किछु छोड़ि देबन्हि। [युधिष्ठिर सँ] अहाँ क पास कोनो प्रमाण अछि जे ई मकान हमरा सभक नहि थीक, अहाँ क थीक ?

युधिष्ठिर—पहिने-पहिन तोहर बाबुओ तेजगरे छलाह। तैं ने हुनका रखने छलहुँ। आ'......

अनिरुद्ध—अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ।

युधिष्ठिर—[पदचारणा करैत] तोहर प्रश्न क उत्तर भेटि जैतह, जौं हमर एक प्रश्न क उत्तर द' सकह। [थम्हि कए] तोरा पास कोनो प्रमाण छह जे ई मकान तोहर बाबूजी क छलह ?

अनिरुद्ध—[माय क दिसि देखैत] माय! [उत्तर मे माय मात्र अस्वीकारात्मक भंगी मे माथ डोलबैत छथि] की कहैत छें माय—मकान क कोनो कागज-पत्तर नहि छौक ?

युधिष्ठिर—[उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] कोना रहत कागज-पत्तर ? ओ त हमरहि पास छल।

अनिरुद्ध—तखन अहाँ की चाहैत छी ?

युधिष्ठिर—एहि मकान कें साफ देखै चाहैत छी। तीन दिन क भीतर मकान खाली भ' जैबाक चाही।

अनिरुद्ध—असम्भव! सब काज क एकटा नियम होइत छैक। अहाँ हमरा सब कें तीन मास सँ पूर्व हँटा नहि सकैत छी।

युधिष्ठिर—थम्हह; हमरा नियम नहि देखबह! जे तीन दिन हम समय देने छियन्हु सेहो कृपा कैने छी। कान खोलि कए सुनह—तोहर बाबूजी कें हम तीन मास पूर्व कम्पनी क नौकरी सँ अलग क' देने रही—आ' तखनहि मकानो छोड़बाक नोटिस हम द' देने छलियन्हि।

माय—मुदा कियैक ? ओ की कैने रहथि ?

युधिष्ठिर—तखन सेहो सुनि लेह—ओ बिना अनुमति क' बिना लिखा-पढ़ीक अपन मर्जी सँ कोनो मित्र कें टाका उधार देने रहथि। असल बात की छल से ईश्वरे जानथि—हुनकर कहब इयैह छलन्हि। आबि कए हमरा हाथ पैर जोड़लन्हि त जहल नहि पठौलियन्हि; नहि त—[प्रसंग कें बदलैत] जे हो ! हमरा ताहि सब बात सँ कोनो प्रयोजन नहि अछि। हम......

अनिरुद्ध—ओ कत्तेक टाका नेने रहथि ?

युधिष्ठिर—[व्यंग्य करैत कहैत छथि] कियैक—तों द' देबहक की ? ओ पचास हजार टाका गबन कैने रहथि।

अनिरुद्ध—प - चा - स - ह - जा - र !

युधिष्ठिर—की भेलह ! कहलह नहि—हम चेष्टा करब पूरा देबाक, जेना नाटक सब मे कहैत छैक ?

अनिरुद्ध—स्-से हम......

युधिष्ठिर—[बाधा दए] बस-बस—आब किछु नहि कहह ! तोरा सँ हमरा पचासो टाका क आशा नहि अछि। हमर मकान खाली क' देह त बहुत कृपा हैतह। [पाछाँ घुरि कए प्रस्थान करबा लेल उद्यत होइत छथि। आ' तखनहि घुरि कए आदेशात्मक स्वर मे कहैत छथि] मन रहय, मात्र तीन दिन समय देने छी—ताहि सँ फाजिल एको क्षण नहि...... [युधिष्ठिर बाबू मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। अनिरुद्ध घुरि कए माय दिसि देखैत छथि। माय क्रन्दन क वेग कें सम्हारैत मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। अनिरुद्ध दर्शक दिसि अगुआ अबैत छथि। मंच क प्रकाश कम भ' जाइत अछि। अनिरुद्ध क मुख-मंडल अल्परेख सँ आलोकित देखना जाइत अछि। अनिरुद्ध अपन वक्तव्य शुरू करैत पहिलुका पोशाक खोलै लगैत छथि। तर सँ फाटल-पुरान पोशाक लखा दैत अछि।]

अनिरुद्ध—तकर बाद, जे अवश्यम्भावी छल, जकरा रोकबाक इच्छा रहितहु हमरा मे क्षमता नहि छल—सैह भेल। जाहि परिवेश मे हमर शैशव बीतल, से परिवेश बदलि गेल। हमर आगाँ सँ, हमर पाछाँ सँ सब किछु चलि जाइत रहल कतय ने! हम आब एकटा सम्पूर्ण नव परिवेश मे ठाढ़ छलहुँ। मकान आ' तकर सब सुविधा छोड़ै-पड़ल। आबि गेलहुँ एकटा छोट-छीन नरक मे—जतय माथ ऊँच' क' कए ठाढ़ होमय जाइत छी त छत बाधक भ' जाइत अछि—[हँसैत] जेना लिखा रहल हो जे आब जखन कि हमरा पास पाइ कौड़ी नहि अछि—तखन माथ झुका कए जीयब छोड़ि हमरा पास अन्य कोनो उपाय नहि। [पदचारणा करैत] सब किछु बदलि रहल छल, बदलि गेल छल—हमर परिवेश, हमर पोशाक —भरिसक हमहूँ। पहिने झुकबाक प्रयोजन नहि छल। मुदा आब? [म्लान रूपैं हँसैत] आब कनेक अन्न क लेल, कनेक अर्थ क लेल सभक सामने झुकै पड़ैत अछि। पहिने जाति क गर्व छल, उच्चवर्ण क गर्व छल, धर्मक गर्व छल—सब कतय ने भसिया गेल। एखन देहक सब अंग बेकार भ' गेल अछि, सबटा सुतल अछि—जेना मुइल लोग क रहैत छैक। मात्र एकहि अंग जागल चीत्कार क' रहल अछि—आ' ओ थीक [पेट कें देखबैत] पेट। [एतबा मे नेपथ्य सँ कोनो स्वर भासल अबैत अछि कि अनिरुद्ध कनेक उठैत छथि।]

सुयोधन—[सुयोधन क भूमिका मे कमल अभिनय करैत छथि। सुयोधन वृद्धप्राय व्यक्ति छथि,—आँखि मे चश्मा, हाथ मे घड़ी—केस कतहु-कतहु सफेद छन्हि। पोशाक सँ शौखीन बुझना जाइत छथि। ओ तावत् नेपथ्य सँ चीत्कार करैत छथि] अनिरुद्ध छी औ......
अनिरुद्ध !! ई त क्यो जवाबे नहि दैत अछि। अनिरुद्ध—छी औ।

अनिरुद्ध—[दरबाजा दिसि अगुआबैत] के छी? आउ, भीतर आउ!

सुयोधन—[प्रविष्ट होइत] ओफ! बाप रे बाप !! खोजैत-खोजैत हम...

ताहि पर सँ ई गर्मी......[एतबा अपनहि मने कहि रूमाल सँ मुँह पोछैत आब अनिरुद्ध दिसि देखैत] अहाँ क एतय त पंखो......[ऊपर देखि कए पुनः चारूकात देखैत छथि।] अनिरुद्ध घर क कोना सँ एकटा टुटल सन कुर्सी आनि कए हिनका आगाँ रखैत छथि। ओ कुर्सी कें हाथ सँ टेबैत छथि, मुख मे कौतुक आ' अप्रसन्नता क चेन्ह आ' पुनः कहैत छथि] रहै दियह। इयेह जे ठाढ़ अछि, ताही सँ हम सन्तुष्ट छी। [अपन मन्तव्य पर अपनहि हँसैत छथि] हें-हें-हें।

[कनेक थम्हैत छथि] घर मे और किनकहुँ नहि देखैत छियन्हि......

अनिरुद्ध—माय गेल छथि एक काज सँ आ'......

सुयोधन—[कौतुक सँ भरल स्वर मे] दासीवृत्ति !

अनिरुद्ध—माने ?

सुयोधन—अहाँ क माय कें, हमरे एकटा परिचित, नन्दू सेठ क ओतय नौरी राखि लेल गेल छैक !

अनिरुद्ध—नहि-नहि—ई कथमपि नहि भ' सकैत अछि।

सुयोधन—[हँसैत] से नहि होइत, त आइयो हम अहाँ क सन्धान मे बौअबिते रहितहुँ। ओतय हुनका देखिये कए नन्दू सेठ सँ मकान क ठेकान पूछलहुँ त पता लागल जे एखन डेविड एण्ड कम्पनी क मैनेजर क डेरा एतय आबि गेल छैक। हें-हें-हें। [अनिरुद्ध कें सान्त्वना दैत] से अहाँ क लज्जा क कोनो कारण नहि। अहाँ क माय सेठ क ओतय हमरा नहि देखलन्हि—हमहींटा हुनका काज करैत देखने छलहुँ।

अनिरुद्ध—ओफ ! एहि सँ त......[मुँह झाँपि लैत छथि।]

सुयोधन—नहि-नहि-नहि—कथमपि नहि। एहि सँ मरब कखनहु नीक नहि।

अनिरुद्ध—[मुँह पर सँ हाथ हटा कए हिनका दिसि देखैत छथि] देखू ने—अहाँ क बाबूजी त मरि कए झमेला सँ मुक्त भ' गेलाह। लोग कहैत अछि लोग एहि पृथ्वी पर खाली हाथ अबैत अछि, खालिये हाथ जाइत अछि। मुदा अहाँ क पिताजी, हें-हें, आयल त छलाह खालिये

हाथ, मुदा गेलाह मुट्ठी मे टाका बकोटने......हें-हें-हें !

अनिरुद्ध—की कहैत छी ?

सुयोधन—हमरा सँ ओ पचीस हजार टाका उधार नेने रहथि। सुनल अछि, अहाँ क बड़की बहिन क बियाह खूब धूमधाम सँ भेल छल। बियाह दिन हम नहि छलहुँ कि नहि, तेँ अपन आँखि सँ नहि देखि सकलहुँ......हें-हें-हें !

अनिरुद्ध—से की ? मुदा बाबूजी त कहने छलाह जे ओ प्रॉभिडेण्ड फण्ड मे सँ निकालि कए......

सुयोधन—[उच्च स्वरें हँसैत कहैत छथि] प्राविडेण्ट फण्ड ! कतय गेल से टाका एकर पता ककरहु नहि चलल। मुदा हम जनैत छी से टाका कतय गेल।

अनिरुद्ध—कतय गेल ?

सुयोधन—हें-हें-हें; कोनो काज करब त तकर मोल त चुकाबहि पड़त। बेचारे युधिष्ठिर बाबू ! चोरी भेलन्हि पचास हजार क आ' प्राविडेण्ट फण्ड हँसोति कए भेंटलन्हि तीसे हजार।

अनिरुद्ध—नहि; हमर बाबूजी चोर नहि छलाह।

सुयोधन—हें हे-हें ! से हम कतय कहलहुँ ? ओ एहन दू-एकटा भूल लोग सँ भइये जाइत छैक। टाका दैत काल हमहूँ तोहर बाबूजी सँ इयैह बात कहने छलियन्हि।

अनिरुद्ध—[डरैत जकाँ] की कहने छलियन्हि ?

सुयोधन—इयेह जे टाका त अपने रखनहि छी; तखन पुनः हमरा सँ कियैक लैत छी ? प्राविडेण्ड फण्ड सँ टाका काटियो लेलन्हि त युधिष्ठिर बाबू की लेलन्हि ? तैयो त बीस हजार टाका मुनाफे......त ओ बिगड़ि गेल छलाह। कहै लगलाह हम चोरी नहि कैने छी। हे-हें-हें ! तखनहि हम कहने छलहुँ—अहाँ चोरी नहि कैने हैब; मुदा भूल जौं भइये गेल होइक—आ' भूल त होइते छैक। हें-हें-हें !

अनिरुद्ध—नहि नहि, ई सब किछु मिथ्या थीक। [सुयोधन क कुर्त्ता धʼ कए] अहाँ कहू—ई सब फूसि थीक।

सुयोधन—[अनिरुद्ध क हाथ हँटबैत, कुर्त्ता क तह कें ठीक करैत] ई सबटा सत्य थीक—शत-प्रतिशत सत्य। मुदा, ताहि लेल हम तोहर बाबू कें दोष नहि दैत छियह। ओ जे हमरा सँ टाका लेलन्हि से ठीके कैलन्हि। नहि त पकड़ा गेल रहितथि। तोहर बहिन क बियाह क तीन चारि दिन पहिनहि ई सबटा काण्ड भʼ गेल छल ? लेकिन जे कही, दिमाग हुनकर खूब छलन्हि। हम कहैत रहि गेलयन्हि जे अरे, अपने टाका लेब त ताहि मे लिखा-पढ़ी क कोन गप ? मुदा ओ जबर्दस्ती बाकायदा लिखा-पढ़ी कʼ लेलन्हि [उच्च स्वरें हँसैत] जाहि सँ क्यो कहि नहि सकय जे चोरी क टाका सँ बेटी क बियाह कʼ रहल छथि। नहि, सत्ते......हम त हुनका गुरु मानैत छियन्हि [दुनू हाथ जोड़ि कए भक्तिपूर्ण प्रणाम जनबैत छथि]।

अनिरुद्ध—मुदा यदि ओ टाका लेनहि रहथि, त कतय अछि ओ टाका—कतय रखलन्हि ?

सुयोधन—आश्चर्य ! अहूँ, देखैत छी, अपन बाबूजी सँ कम नहि छी।

अनिरुद्ध—माने ?

सुयोधन—तखन तकरो अर्थ बुझाबै पड़त ? [अनिरुद्ध कें हँ-नहि किछु नहि कहैत देखि] अहाँ की बुझैत छी जे अहाँ सभक एहि बस्ती मे रहब—एहन कपड़ा पहिरब—अहाँ क माय क चुनि कए नन्दू सेठ क ओतय काज लेब, सेहो नौरी क—ई सभक अर्थ हम नहि बुझैत छी ?

अनिरुद्ध—अहाँ की कहै चाहैत छी ?

सुयोधन—इयैह जे ई सबटा अहाँ सब नाटक कʼ रहल छी। टाका नुका कए सभक दृष्टि ओहि बात पर सँ हँटाबै चाहैत छी।

अनिरुद्ध—टाका नुकौने छी हम......हम सब ?

सुयोधन—हँ, हँ ! अहीं सब। मुदा जानि राखू, से नहि हैत। हमरा

अहाँ सब धोखा नहि द' सकैत छी। हमहूँ छी सुयोधन ठाकुर—बुद्धि क युद्ध मे हम पछुआयल नहि रहब।

अनिरुद्ध—हमरा पास टाका रहैत त हम सब एतय एहि अवस्था मे रहितहुँ ?

सुयोधन—हैं-हैं-हैं! से टाका तेहने ने वस्तु थीक जे—कहियो कखनहु हमहूँ अभिनय क' लैत छी। ताहि मे कोनो हर्ज नहि। से अहाँ बाहर क लोग क संग जे करैत छी करू—हम कि ताहि लेल दोष दैत छी अहाँ कें? मुदा [पास आबैत] सत्ते कहू त, कोन बिजिनेस क लेल सोचि रहल छी ?

अनिरुद्ध—[क्रोध सँ उन्मत्तप्राय भ' कए] सुयोधन बाबू! बन्द करू अपन बकवास आ' निकलि जाउ एतय सँ।

सुयोधन—कि-कियेक? हम कोनो बेजाय बात कहलहुँ? अहाँ क सुविधेवला गप कहैत छलहुँ—हमर देल ओ टाका तावत् ताही मे लगा दितहुँ आ' अहाँ क त कोनो अनुभव नहिये अछि एहि लाइन मे—तैं.........

अनिरुद्ध—बन्द करू, बन्द करू अपन ओ पापी मुँह, नहि त......

सुयोधन—[क्रुद्ध भ' कए] नहि त की ? [मुँह दुसैत] पापी मुँह—टाका गबन केनाइ पाप नहि, किन्तु ताहि विषय पर किछु कहब पाप भ' जाइत छैक।

अनिरुद्ध—हम कोनो टाका गबन नहि कैने छी, ने हमर बाबूजीये कैने छथि। अहाँ कें दरबाजा देखल अछि त सीधा निकलि जाउ नहि त हम देखा रहल छी।

सुयोधन—की? एहन बात? अच्छा, त लाउ हमर पचीस हजार टाका। दरबाजा हम अपनहि चीन्हि लेब। [अनिरुद्ध कें चुप देखि] की भेल? लाउ टाका!

अनिरुद्ध—टाका एखन हमरा पास नहि अछि।

सुयोधन—त कखन आबी—कालिह, परसू ? कि अहूँ अपन बाबूए जकाँ पड़ैबाक चेष्टा मे छी; नहि दुनिया सँ त शहरे सँ......? [कनेक थम्हैत] अपन चोरी क माल अहाँ कत्तहु राखू ताहि सँ हमरा कोनो मतलब नहि अछि। मुदा हमर टाका चोरी क नहि थीक। तैं से हमरा भेंटि जैबाक चाही, बुझलहुँ ?

अनिरुद्ध—कहलहुँ त, एखन हमरा ने टाका अछि, ने सम्पत्तिये जे चुरायब।

सुयोधन—[आँखि लोभ सँ धधकि उठैछ] सम्पत्ति त अछि, मुदा......

अनिरुद्ध—कतय अछि ?

सुयोधन—अहाँ क सामनहि अछि। मुदा, ओ सम्पत्ति कतबाक अहाँक माय क वा अहाँ क रहि गेल अछि ताहि मे सन्देह अछि।

अनिरुद्ध—की थीक ओ ? हमरा त पता नहि अछि।

सुयोधन—हें-हें-हें; पता त रहबाक चाही—गली-मुहल्लाक सब लोग कें पता छैक आ' अहीं कें नहि अछि ? इयैह एखनहु त अतीत काल बस्ती क चाह क दुकान मे ओहि सम्पत्ति क विषय मे छौंड़ा सब बातचीत क' रहल छल—[कुरुचि पूर्ण इंगित करैत] दू हाथ दू पैर वला जीवन्त सम्पत्ति।

अनिरुद्ध—अहाँ की कहै चाहैत छी, साफ साफ बाजू !

सुयोधन—हम अहाँ क छोट बहिन द' बाजि रहल छी।

अनिरुद्ध—की ? अहाँ क एत्तेक साहस ......[क्रोधें काँपे लगैत छथि]।

सुयोधन—आ-हा-हा गोसाउ जुनि। टाका दैत काल अहाँ क बाबुओ जी कें हम कहने छलियन्हि जे बड़की बेटी क बियाह जेना भेल नीक जगह कैये देलहुँ—आ महगे पड़ल। मुदा छोटकी क लेल कोनो चिन्ता नहि; जावत् हम जीबैत छी.........

अनिरुद्ध—[चीत्कार करैत] शैतान ! हम तोहर खून पी जैबौक [कहैत सुयोधन क कंठ दाबै लगैत छथि। सुयोधन दुनू हाथ सँ अनिरुद्ध सँ बचबाक चेष्टा करैत छथि। हुनक कंठ सँ विभिन्न प्रकार क शब्द

निकलौ लगैत छन्हि आ' एहि अवस्थे मे अनिरुद्ध कहैत छथि] तोहर एत्तेक साहस ! [तावत मंच पर शान्ता अर्थात् अनिरुद्ध क प्रेमिका क भूमिका मे सती क प्रवेश होइछ । अंग-सजा सँ आभिजात्य क छाप स्पष्ट अछि, मुदा कत्तहु उग्रताक कोनो चिह्न नहि देखना जाइत अछि । ओ प्रविष्ट भए दुनू कें एहि अवस्था मे देखि कए डेरायल जकाँ चीत्कार क' उठैत छथि ।]

शान्ता—अनिरुद्ध ! ! [अनिरुद्ध चौंकैत सुयोधन क कंठ छोड़ि दैत छथि ।] की क' रहल छी अहाँ ? [अनिरुद्ध आ' सुयोधन दुनू गोटे उत्तेजना क कारणें हाँफैत देखना जाइत छथि ।]

सुयोधन–[हाँफैत मुदा कपड़ा-लत्ता कें ठीक करैत] अहाँ के छी हमरा पता नहि । मुदा जे होउ, अहाँ हमर प्राण बचा लेलहुँ । नहि त आइ ई......[कहैत अनिरुद्ध दिसि देखैत छथि । अनिरुद्ध आन दिसि मुँह घुरा कए माथ झुका कए ठाढ़ रहैत छथि ।]

शान्ता—कियैक ? अहाँ की कैलहुँ जे......

सुयोधन—करब की ? हमर पचीस हजार टाका हिनक बाबू जी लेने छलाह । सैह माँगै आयल छलहुँ—एतबहिटा दोष भेल छल ।

शान्ता—ओ ! [कनेक सोचैत] ठीक अछि, अहाँ एखन जाउ । आ'......

सुयोधन--मुदा हमर टाका.........?

शान्ता—अहाँ परसू हमरा सँ भेंट करू त देखल जायत ।

सुयोधन—मुदा अहाँ कें त हम......[वाक्य कें विलम्बित करैत छथि] ।

शान्ता—अहाँ सुदर्शन चौधरी क नाम सुननहि हैब.........।

सुयोधन—हँ हँ, हुनक नाम के नहि जनैत अछि एहि शहर मे ?

शान्ता—हम हुनक कन्या थिकहुँ । हमर नाम थीक शान्ता ।

सुयोधन—[परिचय पाबि सुयोधन क भावे बदलि जाइत छन्हि] ओ ! अच्छा, अच्छा ! त-त हम परसू आयब । अ-अच्छा नमस्कार । [एक बेर अनिरुद्ध क दिसि देखैत निष्क्रान्त होइत छथि] ।

शान्ता—[किछु देर दुनू चुप रहैत छथि। अनिरुद्ध मुँह पाछाँ घुरौने टूटलका कुर्सी पर दुनू हाथ रखने ठाढ़ रहि जाइत छथि। शान्ता अनिरुद्ध दिसि कनेक अगुआ कए शान्त स्वरें पुकारैत छथि] अनिरुद्ध !

अनिरुद्ध —[शान्ता कें किछु कहबाक मौका बिना देनहि] हम जानैत छलहुँ अहाँ कें अनेक रास टाका अछि; मुदा से एहि तरहें हमरा देखैबाक कोन प्रयोजन छल ?

शान्ता—हम अहाँ क अपमान नहि कल अछि। ध' लियह ई हमरा पास अहाँ क उधार रहल।

अनिरुद्ध—[पाछाँ घुरि कए] मुदा से कियैक ?

शान्ता—एकटा बाहर क लोग आबि कए रोज टाका क तगादा करत, ताहि लेल रोज अहाँ कें झुकै पड़त, भागै पड़त, नहि त गारि सुनै पड़त—से हम नहि चाहैत छी !

अनिरुद्ध—[शान्ता दिसि एकटक देखैत] अहाँ एतय कियैक आयल छी शान्ता ?

शान्ता—[प्रश्न क उत्तर नहि देबाक लेल उच्छ्वल कंठ सँ कहै लगै छथि] जनैत छी, कोना ऐलहुँ एतय ? कतय-कतय जाय पड़ल अहाँ क ई पता खोजबाक लेल !

अनिरुद्ध—[बिच्चहि मे शान्ता क बात कें काटैत] ई हमर प्रश्न क उत्तर नहि भेल। हम पुछने छलहुँ......

शान्ता—[गम्भीर स्वरें कहैत छथि] जनैत छी। अहाँ पुछने छलहुँ, हम एतय कियैक आयल छी।

अनिरुद्ध—गरीबी क उपहास करबाक लेल कि भूखल मनुष्य केहन होइत अछि से देखबाक लेल ?

शान्ता—ई सब किछु नहि अनिरुद्ध। अहाँ नीक जकाँ जनैत छी हम कियैक आयल छी—मात्र अहाँ कें देखबाक लेल।

अनिरुद्ध—की अनने छी हमरा लेल ?

शान्ता—की अनने छी ? अहाँ लेल हम सब किछु अनने छी—हम, हमर प्रेम—

अनिरुद्ध—[उच्च स्वरें हँसैत] प्रेम ? अहाँ प्रेम अनने छी ? [पुनः हँसै लगैत छथि ।]

शान्ता—हँसि रहल छी ?

अनिरुद्ध—देखू शान्ता, नीक जकाँ सुनू हमर ई हँसी । बड़ मोल अछि एकर । सुनैत छी, भूखल पेट मे हँसी बड़ महग पड़ैत छैक—कानब सस्त । देखू अहाँ क लेल हम कत्तेक महग वस्तु उपहार मे द' रहल छी । [पुनः हँसै लगैत छथि] ।

शान्ता—अनि—अनिरुद्ध ! प्लीज चुप भ' जाउ । हमरा डर लगैत अछि ।

अनिरुद्ध—कथीक डर शान्ता ?

शान्ता—डर होइत अछि, हमरा छोड़ि अहाँ कत्तहु चलि नहि जाइ । अहाँ ओ मकान छोड़लहुँ आ' ककरहु पता बिना बतौनहि एतय चलि ऐलहुँ । ई पनरह दिन—हमर दिन हमर राति सब नमहर भ' जाइत छल । हमरा एको क्षण क लेल शान्ति नहि भेटल ।

अनिरुद्ध—की आश्चर्य ! क्यो भूख क लेल राति-राति भरि सुति नहि सकैत अछि आ क्यो मात्र एकटा सौख क लेल जागल रहैत अछि ।

शान्ता—हमर प्रेम मात्र सौख थीक—ई अहाँ कहैत छी ?

अनिरुद्ध—हँ-हँ ; हम कहैत छी । ई प्रेम-प्रेम थीक ओहि सब लोग क लेल, जकरा पेट भरबाक चिन्ता नहि रहैत छैक ।

शान्ता—ई अहाँ की कहि रहल छी अनिरुद्ध ? अहीं त कहने छलहुँ जे पेट प्रेम मे बाधक नहि होइत छैक ।

अनिरुद्ध—से भरल पेट मे कहने छलहुँ शान्ता । तखनुका बात सब बिसरि जाउ ।

शान्ता—नहि-नहि । से नहि भ' सकैछ । तखन... ..तखन हम जीयब कथी ल' कए ? अहाँ एना नहि कहू ।

अनिरुद्ध—अहाँ सुखी छी शान्ता। एखन हम सुख कें घृणा करैत छी।

शान्ता—जौं अहाँ क दुःख क दिन मे हमर सुख काज नहि देलक त ओहि प्रेम क कोनो मोल नहि। हम अहीं लेल आयल छी। अनिरुद्ध, हम दुःख बाँटि लेब—अहाँ हमर सुख लियह।

अनिरुद्ध—हम अहाँ क करुणा नहि चाहैत छी।

शान्ता—मुदा हम अहाँ क करुणा चाहैत छी। अहाँ हमर सहायता करी त हम ठीक तरहें बाबू जी क बिजिनेस सम्हारि सकैत छी। जनिते छी—ओ एक महीना सँ लकबा सँ विवश भ' कए पड़ल छथि आ' हमरा ऊपर पड़ल अछि समस्त दायित्व। ने भाइ अछि, ने बहिन, जे ताहि मे सहायता भेंटत। हमर अवस्था समुद्र मे भासल नाव जकाँ अछि, जकरा खेबैया क प्रयोजन छैक।

अनिरुद्ध—हमरा नाव खेबै नहि अबैत अछि शान्ता। अहाँ कोनो नीक माझी क सन्धान करू।

सूत्रधार—[मंच क पार्श्व-पट्टिका दिसि सँ बहरा कए कनेक आगाँ बढ़ैत] ई अहाँ की कहि देलहुँ अनिरुद्ध? अहाँ क डायलाग त एहन नहि छल। [सूत्रधार क प्रवेशक संगहि शान्ता प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि।]

अनिरुद्ध—अहाँ के छी ?

सूत्रधार—हम छी सूत्रधार—प्राम्प्ट करैत छी, मोन पाड़ि दैत छी ककरा कखन की कहबाक अछि।

अनिरुद्ध—तखन हमरा एखन की कहब उचित छल ?

सूत्रधार—[एक लम्बा और मोट बही निकालि कए तकर किछु पन्ना उनटा कए एक जगह थम्हैत पढ़ैत छथि] हँ, शान्ता, हम......हम हैब ओ खेबैया......हम अहाँ कें डुबै नहि देब।

अनिरुद्ध—[शान्ता दिसि घुरैत] नहि हम अहाँ क कोनो सहायता नहि क' सकब।

सूत्रधार—कहू अहाँ हमरा समय दियह शान्ता।--तकर बाद हम दुनू फेरो

अदृश्य भ' जाइत अछि।]

नाट्यकार—[मंच क एक प्रान्त मे ठाढ़ नाट्यकार पर अल्परेख पड़ैत अछि। नाट्यकार क कथन प्रारम्भ हेबा सँ पहिने धरि अनिरुद्ध क खोंखी सुनाइ पड़ैछ।] तकर बाद जे हैबा क छल, सैह भेल। अनिरुद्ध क माय कें बेसी दिन धरि कष्ट नहि करै पड़लन्हि! तकर पहिनहि ओ एहि लोक सँ चलि गेलीह। दू-एक सहृदय लोग डाक्टर सँ अनिरुद्ध क जाँच करौलन्हि त पता चलल जे ओकरा कैंसर छैक। ओ खोंखी ओहिना नहि होइत छल। तावत् परिवार क आतिथ्य स्पष्ट भ' उठल छल—गरीबी क समुद्र मे डूबैत जहाज। पिता पहिनहि चलि गेलाह, माता सेहो नहि रहलीह। आब अनिरुद्ध बढ़ि रहल छलाह मृत्यु दिसि। हुनक छोट बहिन बूझि गेल छल जे एहि जहाज कें बिना छोड़ने जीबा क आशा नहि। तैं ओ अपन नारीत्व क मोल दए सुयोधन ठाकुर क हाथ पकड़ि लेलक। ओ डूबै सँ बचि गेल। [नाट्यकार जावत धीरे-धीरे एहि कथा क वर्णन करैत छथि तावत् अनिरुद्ध अपन पुरनका पोशाक पहिरि लैत छथि—फटलका कुर्त्ता और पैजामा। नाट्यकार अगुआ अबैत छथि। लगले अनिरुद्धो आगाँ बढ़ैत छथि।]

अनिरुद्ध—[आगाँ बढ़बाक संगहि संग हुनकहुँ पर अल्परेख पड़ैत छन्हि।] आ तखन जिनगी क दोसर रूप देखि कए हम क्लान्त भ' गेल छलहुँ—हम सब किछु सँ मुक्ति चाहैत छलहुँ। हमरा एकटा बहुत पहिनुका घटना मन पड़ि जाइत छल।

नाट्यकार—केहन घटना ?

अनिरुद्ध—मन पड़ि रहल अछि—बाबूजी हमरा कत्तेक नीक-नीक कहानी सुनबैत रहथि—उपनिषद् सँ—हितोपदेश सँ। तखन हम सब किछु बुझितो नहि छलहुँ। बहुत किछु त बिसरि गेल छलहुँ। मुदा हुनक एक बात एखनहु हमरा मन मे घूरि रहल अछि—सत्यं वदेत्, सत्यमा-

पहिलुके जकाँ......।

अनिरुद्ध—अहाँ ठाढ़ कियैक छी शान्ता; अहाँ जाउ । अहाँ कें हमर सपत ! अहाँ हमरा अपनहि हाथ मे छोड़ि दियह । हम सब कहियो अतीत मे घुरि नहि सकैत छी—हमरा सभ क ओ पुरनका दिन सब कहियो घुरि कए नहि आओत ।

[शान्ता पुनः स्वाभाविक भ' जाइत छथि ।]

शान्ता—हमरो अतीत नहि चाही अनिरुद्ध । आउ—हम सब नव तरह शुरू करी । भरिसक हमरा सभक प्रार्थना मे किछु भूल छल— तकरहि फल आइ भोगि रहल छी ।

सूत्रधार – [अनिरुद्ध सँ] कहू ; हँ शान्ता, हम नव तरहें शुरू करब ।

अनिरुद्ध—नहि शान्ता, आब किछु नहि भ' सकैत अछि ।

शान्ता—कियैक नहि भ' सकैत अछि—हमरा अपना पर विश्वास अछि—ओ विश्वास हम अहाँ सँ पाओल अछि । कारण, हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी अनिरुद्ध ।

सूत्रधार—कहू, हमहू अहाँ सँ प्रेम करैत छी ।

अनिरुद्‌ध—[उत्तेजित भए] म्-मुदा हम अहाँ सँ घृणा करैत छी शान्ता, घृणा !

शान्ता—अनिरुद्‌ध !

सूत्रधार—अनिरुद्‌ध !!

अनिरुद्‌ध—[उन्मत्त जकाँ चीत्कार करैत] प्लीज ! अहाँ सब जाउ—चलि जाउ ! [सूत्रधार पाछाँ बिना घुरने अनिरुद्‌ध दिसि देखैत पछुआ कए पार्श्व-पट्टिका क पास चलि जाइत छथि । एम्हर अनिरुद्‌ध थम्हैत, उत्तेजित, मुदा थाकल स्वर मे कहैत छथि ।] अहाँ सब जाउ । हमरा एसगर छोड़ि दियह एहि युद्‌धभूमि पर । [कहबाक संगहि संग समस्त आलोक सिमटि कए मात्र हुनकहि पर पड़ैत छन्हि ।] हमरा... हमरा एसगर लड़ै दियह । [कहैत खोंखै लगैत छथि । अल्परेखो

चरेत्-सत्य कहू, सत्य आचरण करू ! [कनेक चुप रहि कए] हमहूँ आपन जिनगी मे भरिसक सेह करैत ऐलहुँ, जेना हमर बाबूजी कैने छलाह। एखन सोचि रहल छी जे हमरा सभ क विरुद्ध जे अन्याय भेल, तकर विरुद्ध हम किछु नहि क' सकलहुँ—एही लेल ने जे हमर हथियार दुर्बल छल। हमर हथियार छल सत्य। दरिद्र क हथियार केवल सत्य नहि भ' सकैछ। जेना केवल सोना सँ गहना नहि गढ़ल जाइत अछि, भरिसक तहिना—

नाट्यकार—तहिना की ?

अनिरुद्ध—तहिना मात्र सत्य सँ जिनगी केँ जीयल नहि जा सकैछ। जौं हम ककरहु सँ पुछबो कैलहुँ ज 'भाइ तों कहियो झूठ बजलह—बेजाय काज कैलह ?'—त सब हँसि कए उत्तर दैत अछि—'युधिष्ठिर कहियो जीततथि ? जौं 'नरो वापि कुंजरो' नहि बाजितथि त ओ कि कहियो जिततथि ? बस, हम तखनहि चुप भ' जाइत छी। हमरा पास एकर कोनो उत्तर नहि अछि, कोनो उत्तर नहि। [कहि कए माथ झुका लैत छथि।]

तेसर नाटक

कमल—हम जखन स्कूल क छात्र छलहुँ, तखनहि हमरहु मन मे एहिना चिन्ता क एक बिहाड़ि उठल छल। हम अपन मन क सब प्रश्नक उत्तर खोजबाक लेल, बिहाड़ि सँ बचबाक लेल जतय खुट्टा पबैत छलहुँ तकरहि नीक जकाँ पकड़ि लैत छलहुँ। सब समय सत्य बजने लाभ जे नहि होइ छैक से हम नेनपनहि सँ बुझै लगने छलहुँ। हम ठिकौने छलहुँ जे नीक काज करब आ' नीक काज क लेल जौं कखनहु-कखनहु सत्य सँ हँटै पड़ै, त ताहि लेल पश्चात्ताप नहि करब।

अनिरुद्ध—कौन प्रश्न अहाँक मन कें सब सँ बेसी सोचबाक लेल बाध्य कैलक ?

नाट्यकार—और कोन प्रश्न अहाँक जीवन कें नाटक बना देलक ?

कमल—ताहि दिन एकहि टा प्रश्न हमरा पागल बना देने छल। [कनेक चुप रहैत] ओ प्रश्न की छल से बाद मे कहब। पहिने हमरा एक घटना कहै दियह। हमरा सभक अवस्था सबदिन नीक छल। हमर बाबू जी हमरा कोनहुँ अभाव क मुँह नहि देखै देलन्हि। हम बुझैत छलहुँ—सब क्यो एहिना छथि। हमरा घर मे बबर्ची, अर्दली, ड्राइवर—सब क्यो सब समय अपन अपन पोशाक पहिरने काज मे लागल रहैत छल—सभक मुँह मे हँसी। कानब वा जमि कए अड्डा देब—ई सब हमर बाबू जी कें कनेको पसिन नहि छलन्हि। हमरा मन पड़ैत अछि—एकबेरि जमादारनी सुखिया अपन बेटा क मुइला पर खूब कनैत-कनैत आयल छल—बाबू जी सँ टाका माँगै। बाबू जी ओकरा टाका त देलथिन्ह, मुदा खूब डाँटबो कैलथिन्ह। बस, तकर बाद सँ कहियो क्यो कानैत नहि छल।

अनिरुद्ध—ई सब त भेल अहाँ क घटना, प्रश्न की छल ?

कमल—नहि ई सब घटना नहि, ई सब त भेल हमर परिचय। हमरा एहि सुख क कठिन किला सँ बाहर ल' जेबाक अधिकार छलन्हि दू व्यक्ति कें—एक, हमर बाबू जी कें आ' दोसर हमरा सभ क ड्राइवर मोहन काका कें। स्कूल मे जाइत काल बाबू जी अपनहि रहैत छलाह। आबैत काल हुनकर ऐबाक ठीक नहि रहैत छलन्हि, तें बेसीदिन मोहने काका हमरा ल' अबैत छलाह। आ' किछु ऊपर क क्लास मे गेलहुँ त बाबू जी नियम बना देने छलाह जे बेरियाक पहर मोहन काका घुमा कए अनताह एम्हर-ओम्हर सँ।

सती—अपन माय क विषय मे किछु नहि कहलहुँ ?

कमल—माय हमर पड़ल रहैत छलीह बिछौनहि पर चौबीस घण्टा,

कत्तेको लोग एक किनार मे पड़ल कूड़ाक ढेर सँ की सब ने बीछि रहल छल, क्यो दू-एकटा रोगायल बच्चा कें डेंगा रहल छल ......। ई सब देखि कए हम मोहन काका सँ पुछलहुँ—मोहन काका ! ई सब एना कियैक क' रहल अछि ?' ओ कहलन्हि—छोटे बाबू ! ओ सब की करत ? कूड़ा सँ ओ सब बासी, फेकलका खाना खोजि रहल अछि—मात्र पेट क लेल। आ' भूखल बच्चा सब रोटी माँगि रहल अछि, तँ मारि लागि रहल छैक।' हमर बाबू जी पहिने रास्ता पर कोनो भिखारी कें देखैत छलाह त हमरा बुझाबैत कहैत छलाह जे ओ सब जानि बुझि कए काज नहि करैत छल। तँ हम पुछलहुँ—'कियैक भूखल अछि काका ? ई सब काज कियैक नहि करैत अछि ?' मोहन काका हँसि कए जबाब देलन्हि, 'काज ? के देतैक काज ? काज कतय छैक ?' [किछु काल चुप्प रहैत छथि आ' पदचारणा करैत छथि] तकर बाद हुनका ओतय पहुँचलहुँ। बाहर क्यो एक चुल्ही धरा देने छल—चारूकात धुइआ सँ भरल छल। घर मे ढुकैत काल माथ मे चोट लागल। देखलहुँ माथ बिना झुकैने क्यो ढुकि नहि सकैत अछि। भीतर ढुकि कए एकटा स्पष्ट कातर स्वर सुनि रहल छलहुँ। नीक जकाँ तकलहुँ चारूकात त देखलहुँ जे एकटा नारी बिछौना पर पड़ल यन्त्रणा सँ छटपट क' रहल छथि। मोहन काका हुनका सान्त्वना द' रहल छलाह। और देखलहुँ, एकटा कमे उमर क लड़की मोहन काका कें अबैत देखि ओहि नारी कें छोड़ि कए घर क एक कोना मे राखल खाली डिब्बा सँ ताकि-ताकि कए छाओर निकालबा क चेष्टा करैत छल। ओ हमरा दिसि, हमर पोशाक दिसि घृणा क दृष्टि सँ देखि रहल छल आ' काका सँ किद्न कहि रहल छल। ई सब दृश्य देखि कए हम बाहर आबि गेलहुँ। मोहनो काका धड़फड़ायल बहरैलाह। तकर बाद दुनू गोटे गाड़ी मे चुपचाप रहलहुँ। ओही दिन हम बुझलहुँ, गरीबी किताबे मे नहि—हमर चारू कात क घरो मे छल,

बारह मास।

सती—कियैक ?

कमल—हुनका देहक एक दिसि लकवा मारि देने छलन्हि। बाजबो भूकब हुनका सँ नहि होइत छलन्हि। हम पास जाइत छलहुँ त बस आँखि सँ टपटप नोर चूबै लगैत छलन्हि। हुनका ई बीमारी जखन नहि छलन्हि तखन वैह ड्राइवर कें मोहन 'काका' कहब सिखौने छलीह—नहि त, वाद मे सुनने छलहुँ, बाबू जी कें सेहो ई पसिन नहि छलन्हि। [किछु काल चुप्पी लगा कए] हँ, जे कहैत छलहुँ। एहिना, जखन हम आठम कि नवम कक्षा मे पढ़ैत छलहुँ, तखन एक दिन एक अद्भुत घटना भेल। आ' हमर सबटा प्रश्न क जन्म भेल ओही घटना क बाद।

नाट्यकार—की छल ओ घटना ?

कमल—एक दिन मोहन काका क संग गाड़ी मे घुमबाक लेल निकलल छलहुँ। एम्हर ओम्हर द' कए घुमबाक बाद हम कहलहुँ जे काका, आब हमरा शहर क दोसरो रास्ता देखाउ। ई मैदान, ई नदी क किनारा—ई सब त बड़ पुरान भ' गेल अछि। तीन चारि बेरि जखन से कहलहुँ, तखन ओ हमरा नव-नव रास्ता सँ ल' चललाह। एक जगह गली दिसि देखा कए ओ कहलन्हि—इयैह थीक ओ बस्ती, जतय हम रहैत छी। बस, हम तखन जिद धैलहुँ, जे हम हुनक घर देखब, घर मे के-के अछि से सब देखब। ओ डरि गेलाह आ' हमरा कतबो बुझैबाक चेष्टा कैलन्हि, मुदा हम से सब किछु सुनबाक लेल तैयार नहि भेलहुँ। तखन बाध्य भ' कए ओ हमरा ओही गली द' कए ल' गेलाह। हम ओही दिन पहिल बेर से सब किछु देखलहुँ, जे हम कहियो ने सोचने छलहुँ, ने देखने छलहुँ।

सती—की देखलहुँ ?

कमल—मोहन काका क घर पहुँचबा सँ पहिनहि ओहि गली मे देखलहुँ—

हमरे पता नहि छल। तकर बाद हमर मन मे प्रश्न उठल—'कियैक ? कियैक ई सब गरीब अछि ? हम सब कियैक एहन नहि छी ?' तीन-चारि वर्ष बीति गेल एकर उत्तर क खोज मे घुरैत-घुरैत। तकर बाद कालेज मे गेलहुँ, आ' ओतय परिचय भेल अजित आ' प्रीति सँ।

नाट्यकार—ओ सब के छलाह ?

कमल—[हँसैत] हमर नाटक क दू पात्र। हमरहि संग एकहि कौलेज मे पढ़ैत छलाह। हमर खोज मे ओ सब हमरा मार्ग देखौने छल। [किछु काल निःशब्द रहबा क बाद] एक दिन हम, प्रीति आ' अजित कौलेज क बाद कत्तहु घूमै गेल छलहुँ, शहर सँ बाहर। हम ओहि जगह सँ परिचित नहि छलहुँ, मुदा ओतहुका सौन्दर्य हमरा नीक लगैत छल। जतय पहुँचल छलहुँ ओ छल एकटा पुरान जराजीर्ण महल। तखन ओतय हमही तीन गोटे छलहुँ—आर क्यो नहि देखाइ पड़ैत छल। ध' लियह, अनिरुद्ध थीक अजित आ' सती छथि प्रीति। [नाट्यकार माथ हिला कए अपन सहमति प्रकट करैत मंच क एक कोना मे आबि जाइत छथि। कमल अपन कहानी कहैत दर्शक क दिसि आगाँ बढ़ैत छथि।] तखन हम ठाढ़ किछु सोचि रहल छलहुँ, प्रीति एक कुर्सी पर बैसल किछु पढ़ि रहल छल आ' अजित सरोजित जकाँ पदचारणा क' रहल छल। [एतबा क कहबा क संगहि संग प्रीति एकटा कुर्सी ल' कए बैसि जइत छथि, अजित पदचारणा करै लगैत छथि। मंच क आलोक धीरें-धीरें मद्धिम भ' जाइत अछि। एहि बीच नाट्यकार प्रस्थित होइत छथि।]

अजित—कमल !

कमल—[कनेक चौंकैत] एँ ?

अजित—की सोचि रहल छह ?

कमल—सोचि रहल छी, दिन त शेष भ' रहल अछि......।

अजित—त की ?

कमल—फेरो जाय पड़त अपन घर मे......

अजित—[हँसैत] घर नहि, कहह, प्रासाद मे—

प्रीति— [अपन पुस्तक कें बन्द करैत] हँ, विशाल राजप्रासाद मे, किला सेहो कहि सकैत छी। नहि कमल ? [हँसि दैत छथि]।

कमल—नहि प्रीति, ई हँसबाक विषय नहि थीक। जहिया सँ आँखि खुजल, तहिये सँ हम प्रति पल प्रति दिन कोना क ओहि महल मे दिन बिता रहल छी, से हमहीं जनैत छी।

अजित—कमल, हम त तोरा बहुत दिन पहिनहि सँ कहि रहल छियन्हु छोड़ि दे.........

कमल—तोरा लेल कहब आसान छँह, कारण तों सत्ते अपन घर-परिवार कें छोड़ि कए पार्टी लेल काज करैत छह।

अजित—त तौंहू करह ने। हम सब त तोरा चाहते छी।

कमल—सैह जौं सत्य थीक, त आइ धरि पार्टी क कोनो मीटिंग मे हमरा कियैक नहि आबै देलक ?

अजित—कमल, ककरा कोन अधिकार देल जैतैक, ककरा कोन लक्ष्य सँ पठाओल जैतैक, से सब निर्देश ऊपर सँ अबैत छैक। तोहर विषय मे हमरा जेहन निर्देश भेंटल छल, तहिना कैलहुँ।

कमल—ओ ! हमरा सँ तोहर सैह सम्बन्ध छह जे—।

अजित—[कमल कें टोकैत] बहुँ कमल, भूल क' रहल छह। राजनीति मे ऐबाक बाद किछु शब्द, किछु सम्बन्ध निरर्थक भ' जाइत छैक। जहिया सँ हम पार्टी मे ऐलहुँ, तहिया सँ हमर माय, बाबू जी, भाइ, बहिन, मित्रहु सँ बड़ थीक हमर पार्टी आ' तकर निर्देश।

कमल—तकर माने तों हमर मित्र नहि छह ?

अजित—ओ हो ! हम तोरा कोना बुझाबी जे......तों हमर मित्र छह, जेना एहि पृथ्वी क समस्त श्रमिक, किसान हमर मित्र छथि।

प्रीति—[एतबाक देर धरि दुनू क कथोपकथन सुनि कए] माने इयैह जे

अजित बाबू पर कमल बाबू क तेहने अधिकार छन्हि, जेहन प्रीति पर कमल बाबू क छन्हि—बस, ककरहु सँ ककरहु कोनो विशेष मित्रता नहि रहि सकैत छैक। बुझलियैक ? [कमल सँ पूछैत छथि। कमल एकटक प्रीति क दिसि देखैत रहि जाइत छथि] की, नहि बुझलियैक ?

कमल—[माथ हिलबैत] बुझलहुँ।

प्रीति—अजित, आइ बड़ देर भ' रहल अछि।

कमल—हँ, अजित। जखन घुरै पड़बे करत, तखन देर क' कए लाभे की ?

प्रीति—माने ? [एक बेरि कमल आ' एक बेरि अजित कें देखैत छथि।]

अजित—[किछु काल चुप रहि कए] आइ हम सब घुरब नहि कमल।

कमल—से की ? [कमल डरें चारू कात देखैत छथि।]

अजित—[उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] कियैक ? तोरा डर होइत छह ?

कमल—नहि......ड-डर कथीक ? मुदा एतय रहब कियैक ?

अजित—तों की बुझलह हम सब घुमै आयल छी ?

कमल—[आश्चर्य सँ] तखन ?

अजित—तों कोना सोचि लेलह कमल जे अपन मूल्यवान समय नष्ट क' कए तोरा ल' कए हम सब एतय घुमै आयब !

प्रीति—हम सब एतय एकटा काज सँ आयल छी।

कमल—काज सँ ? कोन काज सँ ?

अजित—से किछु कालक बाद पता चलबे करतह। एखन मात्र एतबाक कहि सकैत छियह जे तोरो एतय पार्टिये क निर्देश सँ आनल गेल अछि। एतबा कहबाक बाद पुनः सब क्यो निःशब्द भ' जाइत छथि। मंच पर अत्यन्त अल्प आलोक पसरल छल, जाहि सँ परिवेश रहस्यावृत जकाँ लागि रहल छल एवं पात्रसब पहिलुके जकाँ ठाढ़, बैसल आ' पदचारणा करैत छलाह। दू एकटा नढ़िया, कुकुर आ' किछु विचित्र पक्षी क चीत्कार भासल अबैत अछि।]

प्रीति—आइ ओ सब किछु बेसिये देर क' रहल छथि। एहन त कहियो

नहि होइत छल। की बात थीक ?

अजित—नहि, एहन त नहि हैबाक चाही। [अपन घड़ी क दिसि देखैत] आब त हमरो दुश्चिन्ता होमय लागल। चलह, कनेक आगाँ बढ़ि कए देखैत छी। [पुनः कमल क दिसि देखैत] नहि, तों रहह। हमहीं देखि रहल छी जे आन कोनो साथी आयल छथि वा नहि।

प्रीति—[हँसैत] कियैक हम सब नहि रहब, त कमल डरि जैताह की ?

कमल—एहि मे डरबाक कोन प्रश्न उठैत छैक ?

अजित—प्रीति, कमल कें त डर हैबे नहि करतैक। अहाँ डरि सकैत छी। [एहि बात पर प्रीति आ' अजित दनू हँसि दैत छथि। कमल चेष्टा क' कए हँसैत छथि म्लानरूपें] अच्छा, तँ हम आबि रहल छी, कनेक खोजि कए। [अजित मंच सँ निष्क्रान्त होइत छथि।]

कमल—[अजित क निष्क्रान्त हैबाक बाद प्रीति पुनः अपन हाथ मे धरल पुस्तक मे मनःसंयोग करैत छथि। कमल पहिनुके जकाँ किछु काल चुप भए ठाढ़ रहैत छथि, मुदा अस्थिर चित्त जकाँ बार-बार प्रीति दिसि देखैत छथि। तकर बाद घूरि कए प्रीति क पाछाँ जा कए दुइ-एक बेर पदचारणा करैत छथि और पुनः जेना साहस-संचय क' कए कहैत छथि] प्रीति !

प्रीति—[प्रीति एकटा चेन्ह राखि कए पुस्तक कें बन्द क' कए कहैत छथि] बाजू।

कमल—[प्रीति आँखि उठा कए जखन सँ कमल दिसि देखब शुरू करैत छथि, तखनहि सँ कमल जेना मन्त्रमुग्ध भ' जाइत छथि।] म्-माने... [कहि कए पुनः चुप भ' जाइत छथि]

प्रीति—की भेल।

कमल—[दीर्घश्वास त्यागि] नहि, किछु नहि। [माथ झुका लैत छथि।]

प्रीति—[हँसैत] की बात थीक ? ई दीर्घश्वास, ई माथ झुका लेब। की भेल अछि अहाँ कें ?

कमल—प्रीति......प्रीति, की बात थीक से अहाँ किछु नहि बुझि रहल छी ?

[कमल आहत होइत छथि ।]

प्रीति—[पुस्तक कें एक दिसि धरैत उठि कए ठाढ़ होइत छथि, मुख गम्भीर छन्हि] एहि समक जे अर्थ होइछ से नहि होमै त सैह नीक ।

कमल—[दुःख सं उद्विग्न स्वरें] सती !

प्रीति—[कमल क दिसि माथ उठा कए देखैत] हँ, कमल बाबू । समस्त आशा-आकांक्षा जकाँ हमर प्रेमो पार्टिये पर अर्पित अछि ।

कमल—[उत्तेजित भए] ओफ ! पार्टी-पार्टी-पार्टी ! कियैक ? हमर अहाँ क अस्तित्व क कोनो मोल नहि ? हमरा सब कें हँसबा-कानबा क कोनो अधिकार नहि ?

प्रीति—अपना लेल नहि ; हम सब जे करैत छी पार्टिये क लेल करैत छी !

कमल—तखन हमर पिताजी क बनाओल किला क संग एहि पार्टी क बनाओल किला क अन्तरे की रहल ? ओत्तहु हम कानि नहि सकैत छलहुँ, एत्तहु......

प्रीति—झूठ ! ओतय अहाँ कें कानबाक सुयोग नहि भेंटल । से भेंटने त अहूँ अपन माय जकाँ...... [वाक्य कें अर्द्ध समाप्त राखि कए चुप भ' जाइत छथि ।]

कमल—ठीक अछि । मानि लेल जे पार्टी हमरा सब कें कोनो किला मे बन्द नहि कैने अछि । मुदा कनेक नीक जकाँ सोचि कए हमरा कहू त प्रीति दाइ—जौं अहाँ हमरहि सँ प्रेम नहि क' सकैत छी, त देश सँ कोना करब ?

प्रीति—[हँसैत] हम दोसरे दिसि सँ सोचैत छी कमल बाबू । हम अहाँ सँ, [दर्शक मे सँ किनकहु दिसि देखा कए] हिनका सँ, हुनका सँ...... वा ध' लियह अजिते सँ जौं प्रेम करैत रही, त देश सँ कोना प्रेम क' सकैत छी ?

कमल—ओ ! तखन अहाँ कहै चाहैत छी जे अजित क अहाँ सँ कोनो

सम्बन्ध नहि अछि ?

प्रीति—हँ, रहत किऐक नहि। ओहो हमर मित्र छथि, जेना अहाँ......

कमल—बस ? और कोनो सम्बन्ध नहि ?

प्रीति—हँ, सम्बन्ध आरो एकटा अछि। जखन हमर शरीर कें भूख लगैत अछि, तखन से भूख हम अजित सँ वा पार्टी क कोनो मेम्बर सँ मेटा लैत छी।

कमल—[चीत्कार क' उठैत छथि] प्रीति ! अहाँ......अहाँ.........

प्रीति—हम प्रीति छी, कमल। हमरा भूख लगैत अछि त हम तकर निवृत्ति करैत छी। हम कोन अन्याय करैत छी ?

कमल—मुदा प्रीति, मात्र देहक लेल अहाँ अजित सँ......?

प्रीति—मात्र देह क लेल नहि, पार्टियोक लेल। अजित एक नाम थीक कमल बाबू। हुनक नाम कमलो भ' सकैत छल वा अहूँ अजित भ' सकैत छलहुँ।

कमल—न...नहि ! नहि, बस......आब हम किछु नहि सुनै चाहैत छी प्रीति दाइ !

प्रीति—अहाँ गोसा गेलहुँ ? एहि मे गोसेबाक कोन बात छल ? [हँसि दैत छथि।]

कमल—अहाँ......अहाँ क कोनो रुचि नहि अछि प्रीति ? हम सभ की पशु थिकहुँ ?

प्रीति—हँ, ठीके कहलहुँ। हमरा सब कें जखन भूख लगैत अछि, तखन हम सब पशुए भ' जाइत छी। हम अपन माय कें तहिना देखने छी आ' नोकरी चलि गेलाक बाद जखन भूखल रहै पड़ैत छलन्हि तखन बाबू-ओ जी मे सैह पशुता देखने छी। कमल बाबू, तखन हमरा सभ क कोनो रुचि नहि छल। हम सब देखैत नहि छलहुँ—ई मांस थीक वा तरकारी, रोटी वा चाउर, टटका वा बासी, जूठ थीक वा नहि। रुचि तकरे होइत छैक, जकरा पास पाइ रहैत छैक, खाद्य रहैत छैक,

जकरा चक्रकाल हजारो शरीर रहैत छैक। अहाँ ने हमरा चिन्हलहुँ, ने हमर समाज कें। हम प्रीति छी कमल बाबू, अहाँ क ड्राइवर मोहन काका क कन्या, जिनका अहाँ क बाबू जी बाद मे लाति मारि कए भगा देने छलथिन्ह।

कमल—अहाँ सेह छी ?

प्रीति—नहि कमल, हम बहुत बदलि गेल छी। [चुप रहि कए] अहाँ आबहुँ हमरा सँ प्रेम करैत छी ? [कमल माथ झुका लैत छथि।] उत्तर दियह ? [कमल कें तथापि निरुत्तर ठाढ़ देखि कए] अहाँ भरिसक हमरा सँ घृणा करब शुरू क' देलहुँ। से अहाँ सन लोग क लेल स्वाभाविके थीक। अहाँ हमरा सँ जे किछु सुनलहुँ, तकर बाद त हमरा संग कोनो सम्बन्ध नहि राखै चाहब ने ?

कमल—से कियैक ? सम्बन्ध त रहबे करत। हमहुँ त आब अहीं क पार्टी क सदस्य छी।.........किन्तु।

प्रीति—किन्तु की ?

कमल—किन्तु अहाँ आन कोनो पार्टी मे कियैक ने गेलहुँ जतय कनेक और विशदता.........?

प्रीति—कैक पार्टी मे गेलहुँ। कैक घाट क पानि पीलहुँ। सभक एकहि थालि एकहि स्वाद। सब पार्टी क नेता सब कें चाही अपूर्व सुन्दरी अप्सरा सन स्टेनो आ' सेक्रेटरी; सब कें चाही चेला-चामुंडा सब कें फँसैबा लेल इन्द्र-धनुषी रंग क जाल !

कमल—भ' सकैछ, अहाँ अतिरंजित पक्ष मात्र देखि सकलियैक ! चरित्र-वानो लोग ....

प्रीति—नहि कमल बाबू। चरित्र आब कतय रहलैक ? सभक लक्ष्य छन्हि कांचन, कादम्ब और कामिनी। करोड़ मे एकाध गोटे जे चरित्रवान छथियो त हुनका ओहि ठाम अपनहु परिवार क लेल फुटहो धरि नहि जुटैत छन्हि। ओ आन कें कतय सँ आश्रय द' सकैत छथि ? सब

दरबाजा खटखटा कए तखन हम एतय आयल छी।

कमल—[अर्थ-पूर्ण दृष्टिएँ देखि कए मुसकुराबैत] तखन हम देखि रहल छी जे जतय अहाँ छी ततय आबि कए हमहूँ कोनो भूल नहि कैने छी !

प्रीति—भूल कैलहुँ कि ठीक कैलहुँ, से प्रश्न त आब उठते नहि अछि। एतय इच्छा और रुचि क अवकाशे कतय.........? [तावत् कोलाहलक शब्द सुनना जाइछ। क्यो-क्यो कहैत छथि—'इएह एम्हरे...... हँ-हँ... एहि दिसि चलू......एही दिसि'—इत्यादि। प्रीति आ' कमल दुनू चकित भ' उठैत छथि। तखनहि मंच पर माधव बाबू क भूमिका मे नाट्यकार, अजित क भूमिका मे अनिरुद्ध, आ' आरो पाँच-दस गोटे प्रविष्ट होइत छथि। माधव, अजित, कमल आ' प्रीति कें छोड़ि कए बाकी व्यक्ति मंच क सीढ़ी सँ नीचाँ उतरि कए दर्शक क आसन मे बैसि जाइत छथि।]

अजित—माधव बाबू ! इएह छथि कमल, हमरा सभ क नव साथी। आइ सँ ओ हमरहि सभ क ग्रुप मे रहताह—सेन्ट्रल कमांड सँ हमरा इएह आदेश भेटल अछि।

माधव—हँ-हँ, से हम जानैत छी। [कमल सँ] नमस्कार।

कमल—[हाथ उठा कए माधव बाबू कें नमस्कार करैत अजित सँ पूछैत छथि] हिनक परिचय त नहि देलहुँ।

माधव—[हँसैत] अपन परिचय हम अपनहि दैत छी। हमर नाम माधव मिश्र। एहि ग्रुप कें चलैबाक भार एखन हमरहि पर पड़ल अछि।

कमल—अहाँ क नाम त हम सुनने छी।

अजित—कतय ?

कमल—कॉलेज मे कोनो-कोनो मित्र क मुँहें......तकर बाद, ओहि दिन एक अखबार क निबंध मे सेहो......

माधव—तखन त देखैत छी, हम एक विख्यात व्यक्ति भ' उठल छी, एँ ?

[हँसि दैत छथि ।]

अजित—[व्यंग्यात्मक स्वरें] हँ, कोनो-कोनो नेता क नाम त कखनहु-कखनहु पार्टियो सँ बेसी भ' जाइत छन्हि ।

माधव --[प्रीति सँ] आइ कालिह देखैत छी अजित हँसिओ-ठट्ठा नहि बुझैत छथि । [अजित एहि बात पर रुष्ट होइत छथि । प्रीति एक बेरि माधव बाबू आ' एक बेरि अजित दिसि देखैत छथि ।]

कमल—हम सब आइ अधीर भ' कए अहाँ सभक प्रतीक्षा करैत छलहुँ ।

माधव—हँ, हमरा सब कें किछु देर भ' गेल आबै मे ।

प्रीति—से कियैक ? अहाँ कें त कहियो एतेक देर नहि होइत छल !

अजित—[व्यंग्य करैत] आब विख्यात भ' गेल छथि, तें......

माधव—[ठहक्का पाड़ैत] नहि, देखैत छी अजित एखनहु किछु-किछु ठट्ठा करैत छथि ।

अजित—महाजनः येन पथेन गतः स पन्था ।

प्रीति—ई सब त हैते रहत । मुदा, एखन हम सब जाहि काजक लेल आयल छी, से......

माधव—अवश्य, अवश्य ! देर त कैवल एहि लेल क' रहल छलहुँ जे और किछु गोटे आबि जाथि, किन्तु एम्हर त देखैत छी जे [दर्शक-वृन्द दिसि देखबैत कहैत छथि] बहुत लोग जमा भ' गेल छथि ।

प्रीति—सब सँ पहिने की हैत ?

अजित—अहाँ पहिने एतय उपस्थित सब सदस्य लोकनि सँ माधव बाबू क परिचय करा दियन्हु ।

प्रीति—[मंच क सम्मुख भाग मे ठाढ़ भए प्रेक्षकवृन्द दिसि देखैत] साथी लोकनि, आइ अपने लोकनि क समक्ष हमरा सभक जनप्रिय नेता एवं पूर्वांचलक प्रधान ई [माधव बाबू दिसि इंगित करैत] माधव बाबू ठाढ़ छथि । नवीन साथी लोकनि क जानकारी क लेल ई कहब आवश्यक अछि जे हमरा सभक ग्रुप क समस्त काज क दायित्व केन्द्र क दिसि

सँ हिनकहि देल गेल छन्हि। आइ पार्टी क अगिला कार्य-क्रम क विषय मे ई किछु कहताह।

माधव—[कनेक विहुँसैत प्रीति सँ] अहाँ त ततेक ने बढ़ा कए... [लगलहि प्रेक्षक-वृन्द दिसि घुरि कए] बन्धुगण, सेंट्रल कमांड क ई निर्णय छैक जे बाहर सँ देखैवा क लेल देश-कालानुसार जनतन्त्रवाद, अहिंसावाद वा आन कोनहु वाद क दोहाइ भलहि द' देल जाय, किन्तु आन पार्टी सभक रवैया एवं देश क हवा कें देखैत ई आवश्यक अछि जे हमरा लोकनि क पार्टी मे सशक्त तथा कठोरतम अनुशासन हो। सम्प्रति केन्द्रीय कमांड क निर्णय ई भेल छैक जे पार्टी क और विस्तार कैल जाय। शहर मे रहनिहार विरोधी नेता और कार्यकर्त्ता सभक भार सँ पृथ्वी कें हल्लुक करबा मे हमरा सब कें नीक सफलता भेटल, किन्तु हम सब कि मात्र एतबहि सँ सन्तुष्ट रहब ? [एक बेरि चारू कात देखि कए] नहि; हम नहि रहब। कारण, ताहि सँ पार्टी क व्यापकता मे बाधा हैत और सत्ता सँ दूरत्व बढ़ैत जायत। जाहि देश क अस्सी प्रति-शत निवासी किसान अछि, ताहि देश मे आन्दोलन करबाक लेल हमरा सब कें गाम-घर दिसि बेसी दृष्टि देमै पड़त। समस्त शोषक-वर्ग सँ एहि धरती कें मुक्त क' देमै पड़त।

अजित—[बाधा दैत] से त नीक। मुदा केन्द्रीय नेता लोकनि क जे विचार हालहु मे प्रकाशित भेल छन्हि ताहि सँ त एहि मे विरोध प्रतीत होइछ।

माधव—अजित, जखन नाव डूबै लगैत छैक तखन माँझी कें नाव खेबैक नियम आ' उपाय पर रिसर्च करबा क समय नहि रहि जाइत छैक।

प्रीति—ई की कहैत छी ? तकर अर्थ ई जे हमरा सभक चेयरमैन क निर्देश सँ चलि कए ई पार्टी डूबि रहल अछि ?

माधव—थियोरी नीक वस्तु थीक प्रीति, जौं तकर प्रयोग देखि कए तकरा पर पुनः विचार कैल जाय। आन-आन देश मे जेना विप्लव भेल

छल, हमरहु देश मे तहिना हैत, तकर कोन ठेकाना ?

अजित—मुदा ताहि लेल पार्टी लाइन कें बदलै पड़त, थियोरी कें बदलै पड़त।

माधव – हम त ई नहि कहि रहल छी जे थियोरी कें एना बदलू जाहि सँ पार्टी आमूल बदलि जाय।

अजित– जखन तर्क करब अहाँ कें पसिन नहि, तखन तर्क नहि करब, मुदा हमर एकटा प्रश्न क उत्तर दियह।

माधव—[हँसमुख भए] कहू !

अजित—अहाँ वर्त्तमान पार्टी लाइन सँ हटि कए हमरा सब कें जे निर्देश द' रहल छी, तकर पालन हम सब करब। मुदा जौं पार्टी हमरा सँ, हिनका सँ वा हुनका सँ तकर कैफियत माँगै, तखन...... ?

माधव—कैफियत देबाक काज हमर थीक, कारण अहाँ सभक समस्त काज क लेल दायी छी हम।

अजित—बेस ! तखन त कोनो समस्ये नहि......। [प्रीति दिसि एक बेरि तिर्यक दृष्टियें देखैत चुप भ' जाइत छथि।]

प्रीति—तखन हमरा सभक काज की हैत ?

माधव—प्रथम काज हैत गाम सँ घनिष्ठ परिचय प्राप्त करब।

कमल—कैलहुँ ; तकर बाद ?

माधव—तकर बादे हम सब कोनो काज शुरू क' सकैत छी। [किछु काल चुप रहि कए | तकर बाद शोषक सब कें खतम करबाक लेल गामक शोषित मजदूर-किसान सब कें हाथ मे लेमै पड़त। ई सब सबदिन अन्हारे मे रहैत छथि। [कहबाक संगहि संग मंच क मद्धिम आलोको अदृश्य भ' जाइछ।] हिनका सब कें आलोक मे आनब भेल हमरा सभक सब सँ प्रधान, सब सँ कठिन काज। [माधव बाबू पर अलपरेख पड़ैत छन्हि। अन्यान्य पात्र सब अदृश्य भ' जाइत छथि।] मन राखब, सब सँ अन्तिम स्टेज भेल जमीन्दार आ' महाजन सभक गर्दनि

कें देह सँ पृथक क' देब [किछु काल चुप रहि कए] ककरा कतय जाय पड़त, ककरा ऊपर कोन काज क भार रहत—तकर निर्देश देल जायत अगिलका मीटिंग मे। एहि समय क मध्य कोन-कोन गाम कें सब सँ पहिने एहि काज क हेतु लेल जाय तकर विचार करब। जौं अहाँ सभक कोनो समस्या होमै, त उचित जरिया सँ हमरा लग आबि सकैत छी। अच्छा, [चारूकात देखि कए] त हम एखन बिदा हैब। विरोधी सभक नजरि तेज अछि। तैं अहूँ सब सावधान रहब।
[अल्परेख मिझा जाइत अछि। माधव बाबू अदृश्य भ' जाइत छथि। नेपथ्य सँ एकटा कोलाहल क शब्द धीरे-धीरे बढ़ैत भासल अबैत अछि, जाहि मे कखनहु-कखनहु आर्त्त चीत्कार क शब्द सेहो मिश्रित रहैत अछि—कखनहु 'दुनिया क श्रमिक-किसान एक होउ।' आदि नारा सुनना जाइत अछि। तकर बाद धीरे-धीरे कोलाहल क स्वर मद्धिम भ' जाइछ। अल्प आलोक द्वारा मंच कें रहस्यमय जकाँ देखाओल जाइछ। मंच पर अजित आ' कमल उपस्थित रहैत छथि। कमल एक कोना मे चुपचाप ठाढ़ किछु सोचैत छथि आ' अजित अस्थिर चित्तें पदचारणा करैत कखनहु-कखनहु कमल दिसि देखैत छथि।]

अजित—[पदचारणा करैत-करैत अकस्मात् एक बेरि थम्हैत] कमल!

कमल—कह!

अजित—तों एखनहि कैक बेरि पूछने छलह जे हम तोरा आइ एतय कियैक बजौने छी।

कमल—तकर उत्तर एखन धरि तों नहि देने छह।

अजित—कमल, तोहर काज सँ पार्टी मे असन्तोष नहि छैक, मुदा सेन्ट्रल कमाण्ड पूर्णरूपेण सन्तुष्ट सेहो नहि अछि।

कमल—कियैक?

अजित—कहैत छियह। जहिया तोरा पहिल बेरि पार्टी क मीटिंग मे अनलियह, तहिया सँ आइ धरि क समय मे तों छोट-बड़ कैकटा

ऐकशन मे भाग अवश्य नेने छह—मुदा तोहर दूटा दोष सभक नजरि मे खटकैत छह। [अजित अकचकाइल छथि।]

कमल—हँ-हँ, कहैत जा!

अजित—पहिल, तोहर नजरि रहलह प्रीति दिसि—आ' सब क्यो ई बात जानैत छथि।

कमल—प्रीति क दिसि हमर नजरि अवश्य पड़ल छल। मुदा से आइ सँ नहि बहुत दिन पहिनहि सँ।

अजित—ई पार्टी क डिसिप्लिन क बाहर क गप थीक कमल। पहिने कहिया की भेलह से हम सब ने जानैत छी, ने जानै चाहैत छी। मुदा एखन तोरा प्रीति सँ दृष्टि हँटाबै पड़तह।

कमल—[कनेक क्रुद्ध भ' कए] प्रीति पर त तोरो नजरि छह। तों कि बुझैत छह जे हम से नहि जानैत छी ?

अजित—[उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] प्रीति पर हमर नजरि अछि ? से त तोरो पर अछि, युनिट क आनो साथी सब पर अछि। हमरा प्रीति सँ ने प्रेम अछि, ने प्रीति।

कमल—प्रीति क देहो सँ नहि ? [कमल सन्देहात्मक दृष्टियें अजित क दिसि देखैत छथि।]

अजित—[पुनः उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] आब बुझलियह तोहर सन्देह क कारण! प्रीति हमरा सँ सब किछु कहि देने छथि।

कमल—की ?

अजित—[हँसि कए] जे कोना तों प्रेम-निवेदन कैलह आ' कोना ओ तोहर हाथ सँ मुक्त भेल। [कमल माथ झुका कए ठाढ़ रहैत छथि।] भरिसक तैं तों हमरा पुछलह जे प्रीति क संग हमर देह क सम्बन्ध अछि वा नहि। [हँसि दैत छथि।]

कमल—से कि फूसि थीक ?

अजित—नहि त की ? ओ त प्रीति तोहर परीक्षा लेबाक लेल कहने छलह।

कमल—तखन..... तखन......

अजित—[कनेक कठोर स्वरें] तखन किछु नहि कमल। प्रीति कें तों बिसरि जाह। विप्लवी कें कोहबर क गीत नहि, बन्दूक क गीत क पता रहबाक चाही। [पदचारणा करैत] और तों अपन दोसर दोष द' त सुनबे नहि कैलह। सुनह, पार्टी कें तोरा पर सन्देह छैक......

कमल—[चौंकैत] की ? कियैक ?

अजित—कारण, एखन धरि तों जतय ऐकशन मे भाग लेलह, ततय कोनहु टा मे विशेष कोनो कृतित्व नहि देखा सकलह।

कमल—हम त......हम त गेल छलहुँ।

अजित—हँ, गेल त छलह। मुदा जखन तोरा कोनो विशेष काज करबाक लेल आन कोनो साथी कहलकह तखन तों कोनो-ने-कोनो बहाना बना कए......

कमल—हमरा सँ ककरहु खून करब, ककरहु घर लूटब नहि होइत अछि।

अजित—[व्यंग्य करैत] ओ ! तखन तों पार्टी क आदेश नहि मानै छह ?

कमल—हम चाहैत छी......मुदा

अजित—जौं चाहैत छह, त ताहि मे मुदा क कोनो स्थान नहि छैक। सैह टा नहि, तोरा एहि बात क प्रमाण देमै पड़तन्हु जे तों पार्टी क आदर्श पर विश्वास रखैत छह।

कमल—तकरा लेल हमरा की करै पड़त ?

अजित—जे कहबह से क' सकबह ?

कमल—पार्टी क विश्वास आ' आदर्शक लेल हम सब किछु क' सकैत छी। हम कापुरुष नहि छी।

अजित—[विचित्र जकाँ हँसि कए] हम जनैत छी जे तों कापुरुष नहि छह। तोरा माधव मिश्र कें खून करै पड़तह—।

कमल—[चौंकैत] नहि-नहि......ई की ?

अजित—बस ? एतबहिटा मे पुरुषत्व भसिया गेलह ?

कमल--ओ की कैलन्हि ? ओ त हमरा सभक नेता छथि।

अजित--ओ पार्टी क सिद्धान्त क विरुद्ध अपन दल सँ काज ल' रहल छथि। आ' ताहि लेल पार्टी क इमेज नष्ट भ' रहल अछि।

कमल--किन्तु ताहि लेल खूने कियैक ? हुनका समझा-बुझा कए.........

अजित--नहि कमल। हुनका समझा-बुझा कए काज लेबाक चेष्टा हम सब बड़ कैलहुँ। जखन हम अन्तिम बेरि हुनका इयैह बात कहै लगलहुँ, त जनैत छह, ओ की कहलन्हि ? [कमल सप्रश्न दृष्टियें अजित दिसि देखैत छथि। मुदा अजित कमल क उत्तर क अपेक्षा बिना कैनहि कहैत छथि] ओ हमरा भर्त्सना करैत हमरा डरौलन्हि जे जौं हम पुनः हुनका एहि विषय पर 'उपदेश' देमै आबी, त ओ हमरा दुनिया सँ हँटा देताह।

कमल--ओ हमरा सभक नेता छथि--।

अजित--[टोकैत] जहन्नुम मे जाओक एहन नेता। तोरा लेल तोहर पार्टी बड़ छह वा नेता ?

कमल--पार्टी।

अजित--मुदा ओहि दिन हम हुनका सँ बात कहलियन्हि त हमरा पर बिगड़ि गेलाह। कियैक त ओ चाहैत छथि जे ओ सस्त मे बाहबाही लूटि लेताह, पार्टी क कन्हा पर हर ध' कए ओ अपन खेत जोति लेताह। जौं क्यो जा कए हुनका प्रशंसा करन्हि त हुनका बड़ नीक लगैत छन्हि। ओ......ओ......सीजर भ' गेल छथि कमल। हुनका हटबहि पड़त। तों ई काज क' सकबह ?

कमल--चेष्टा करब।

अजित--चेष्टा नहि, करै पड़तह। जौं तों से नहि क' सकह, त......त--

कमल--त की ?

अजित--त हमरहि हाथें तोरो मरै पड़तह। [कमल चौंकि उठैत छथि] हमरा पर सेन्ट्रल कमांड क तहिना निर्देश अछि।

कमल—ई......ई काज कहिया करै पड़त ?

अजित—आइ, एखनहि। [कमर सँ एकटा चक्कू निकालि कए] इयैह हैतह अस्त्र। गाम सँ बाहर एहि शून्य स्थान मे रिभाल्वर नहिये चलै त नीक। प्रयोजन भेने चलाबै पड़तह, मुदा नहिये चलाबह त उत्तम। माधव बाबू कें हम एक विशेष प्रयोजनीय काज कहि कए एतय बजौने छियन्हि। ओ एसगरे औताह।

कमल—मु-मुदा......

अजित—मुदा की ? डर होइत छह डर ? [अट्टहास्य करै लगैत छथि।] सुनह ! हम हुनका विषय मे जे कहलियह से सब तों हुनका कहिहन्हु आ तकर बाद—

माधव—[नेपथ्य सँ निम्न स्वर मे] अजित, अजित !

अजित—[मंच सँ निष्कान्त भए माधव मिश्र कें ल' कए पुनः प्रविष्ट होइत छथि] आउ। अहाँ कें कनेक देर भेल; बेसी नहि।

माधव—प्रीति कें बैसा कए आबि रहल छी।

अजित—प्रीति ? प्रीति कियैक आयल अछि अहाँ सँ भेंट करै ?

माधव—अपन युनिट क कार्जे।

अजित—मुदा हम जतबा जानैत छी, ताहि सँ त......

माधव—तों बहुत किछु नहि जानैत छह। तकर बाहरो बहुत किछु होइत छैक, बहुत किछु करै पड़ैत अछि।

अजित—से कोन एहन घटना एही बीच घटि गेल जे......

माधव—ताहि सँ तोरा कोनो प्रयोजन नहि अजित। से सब हम बुझब। तों हमरा कथी लेल बजा आनने छह, से कहह !

अजित—से कमल कहत।

माधव—[कमल दिसि देखैत] कमल ? कियैक ? बजौने त तों हमरा छह। [अजित एक टक देखैत चुप रहैत छथि] की भेल छह ? चुप कियैक छह ?

अजित—सब प्रश्न क उत्तर ने होइत छैक आ' ने हम देत छी।

माधव—ओ ? त तों हमर अपमान करबा क लेल एतय बजा आनने छह ?

अजित—[हँसैत] नहि, उनटे कहलहुँ। अहाँ कें आइ विशेष सम्मान देबाक लेल एतय बजाओल गेल अछि।

माधव—ओ ! त कोना करबह सम्मान ? [व्यंग्यात्मक कण्ठें] ने फूल छह, ने माला !

अजित—फूल त अछि—कमल। अहाँ क सामनहि। [माधव कमल क दिसि घुरि कए ठाढ़ होइत छथि] कमल ? [इंगित करैत छथि।]

कमल—[गला खखारैत] माधव बाबू ! हम पार्टी क निर्देश सँ अहाँ कें कैकटा प्रश्न करै चाहैत छी।

माधव—तकर पहिने हमहीं एकटा प्रश्न करै चाहैत छी। अहाँ कें कहिया सँ पार्टी निर्देश देमै लागल ? जौं कोनो प्रश्न रहितैक त केन्द्रीय कमांड पहिने हमरहि पूछैत।

अजित—[माधव बाबू क कथन क बाद किछु काल निःशब्द रहि कए] बस ? भ' गेल अहाँ क प्रश्न पूछब ?

माधव—हम कमल सँ पुछने छी। उत्तर हुनकहि सँ चाहैत छी।

कमल—हमरा सेन्ट्रल कमांड सँ कोना आदेश भेंटल, से अहाँ कें सेन्ट्रल कमांड सँ पता चलत।

माधव—हमरा तकर पता नहि अछि आ' तकर माने ई जे अहाँ झूठ बाजि रहल छी……

अजित—नहि, झूठ त अहाँ बाजि रहल छी। [माधव बाबू क दिसि अंगुली निर्देश करैत]

कमल—पहिने हमर प्रश्न सुनि लियह, तकर बाद अहाँ कें जे किछु कहबाक अछि, से कहि सकैत छी।

माधव—पूछू !

कमल—अहाँ अपन प्रभाव क लेल पार्टी क प्रभाव कें नष्ट नहि कैने छियैक ?

अहाँ केन्द्रीय कमांड क निर्देश क लंघन क' कए अपनहि मनें पार्टी क सदस्य सब सँ काज नहि करौने छियैक ?

अजित—और अछि। की अहीं क निर्देशक कारण एहि एक मास मे बीस-पच्चीस गोट सदस्य नहि पकड़ैलाह ? एकर दायित्व कें अहाँ अस्वीकार क' सकैत छी ? की अहाँ दल क और सब सदस्य लोकनिक सुझाव क उपेक्षा नहि कैने छियैक ?

माधव—हम......हम......

अजित—हँ, हँ अहीं। अहाँ दोषी छी। कतेको साथी सभक खून-पसीना बहबा कए एवं खून धरि करबा कए अहाँ अपन नाम कमैबाक चेष्टा कैने छी। सब सँ बड़ अभियोग भेल ई जे अहाँ क विरुद्ध जैह समालोचना केलक, तकरहि अहाँ निर्जन स्थान मे पाछाँ सँ रिभाल्वर चला कए अपनहि हाथें खून कैने छियैक। आब अहाँ क सब बात क पता सब कें चलि गेल छैक।

कमल—एहि अभियोग क कोनो उत्तर अहाँ क पास अछि ?

माधव—से त हम पार्टिये क लेल......।

अजित—हमहूँ सब तहिना पार्टिये क बचैबा क लेल अहाँ कें एतय बजा अनने छी। [एक दिसि सँ कमल आ' दोसर दिसि सँ अजित हँसैत माधव बाबू दिसि धीरे-धीरे बढ़ैत छथि] अहाँ कें ई जगह पसिन पड़ल माधव बाबू ? [धीरे-धीरे अद्भुत मोलायम स्वरें कहैत छथि] अहाँ क लेल हम बहुत ताकि कए एहन सन एक सुन्दर जगह पौलहुँ। एतबा दिन स हमरा मात्र नीक जगह, नीक समय आ' ठीक व्यक्ति क खोज छल। आइ तीनो भेंटि गेल अछि माधव मिसर। [दुनू कें अगुअबैत देखि माधव बाबू क आँखि मे धीरे-धीरे आतंक क छाया विस्तृत भ' रहल छन्हि।]

माधव—नहि-नहि......ई नहि......

अजित—हँ, इयैह माधव बाबू। [कमल क दिसि देखैत] कमल !

माधव—[कमल क चक्कू माधव बाबू क पेट मे ढुकि जाइत छन्हि।] आः !!! [चीत्कार क संगहि संग अजित एक हाथें माधव बाबू क मुँह दाबि दैत छथिन्ह आ' चीत्कार बन्द भ' जाइछ। धीरे धीरे माधव बाबू निस्तेज भ' नीचाँ खसि पड़ैत छथि। कमल क हाथ मे रक्ताक्त छूरा धरल रहि जाइत छन्हि। किछु काल दुनू चुप रहि जाइत छथि। दूर कत्तहु सँ एकटा नढ़िया क भयावह स्वर भासल अबैत अछि आ' तकर संगहि संग दू-तीनटा पक्षीक भयानक शब्द सेहो सुनना जाइछ। कमल चौंकि कए पाछाँ घूरि कए ठाढ़ होइत छथि—दर्शक क दिसि मुँह कैने। हाथ सँ छुरा शिथिल भ' कए खसि पड़ैत छन्हि एवं तकर शब्द सुनि अजितो पाछाँ घुरैत छथि। प्रीति धीरें-धीरें मंच पर अबैत छथि एवं माधव बाबू क पड़ल लहास क दिसि देखैत छथि। मुदा अजित वा कमल क दृष्टि प्रीति पर नहि पड़ैत छन्हि।]

अजित—[दर्शक क दिसि देखैत विचित्र रूपें हँसैत छथि] हम जीति गेलहुँ

कमल—हम जीति गेलहुँ।

प्रीति—[पाछाँ सँ] हँ अजित बाबू, अहीं क जय भेल। [अजित एवं कमल दुनू चौंकैत पाछाँ घूरैत छथि।]

अजित—अहाँ ?

प्रीति—हँ अजित, हमही छी। हम एहि नाटक क अन्तिम दृश्य धरि देखने छी। [तीव्र स्वरें कहैत छथि] अजित! माधव बाबू मे किछु दोष त छलन्हि, किछु लोभो छलन्हि—मुदा एतेक नहि, जाहि लेल पार्टी क एहि संकट-काल मे हिनका सन वरिष्ठ नेता क हत्या कैल जाइक।

अजित—हमरा केन्द्रीय कमांड सँ निर्देश भेंटल छल।

प्रीति—झूठ! ई एकदम झूठ बात थीक। वरन्, हमरा केन्द्रीय कमांड सँ निर्देश भेंटल जे माधव बाबू कें सचेत क' दी आ' अहाँ के........ एतबा मे नेपथ्य सँ एक कोलाहल क स्वर भासल आबैत अछि।]

कमल—अजित! मात्र अपन स्वार्थ क लेल तों हमरहु सँ......छी-छी-छी-छी हमर हाथसँ ई खून क चेन्ह... [दुनू हाथकें मलैत छथि—रक्त क चेन्ह

छौड़ैबाक लेल। तावत् बाहर कोलाहल क शब्द तीव्रतर होइछ।]

अजित—ई...ई कथी क आवाज थीक ? क-के सब आबि रहल छथि ?

प्रीति—डरू नहि अजित। आब अहाँ के पार थीक। आब अहाँ के जाय पड़त।

अजित—[डरि कए] कतय ?

प्रीति—पार्टी छोड़ि कए, दुनिया छोड़ि कए आन कत्तहु......अन्य कोनो जगत मे—। [तावत् कोलाहल क शब्द एक दम पास आबि जाइछ।]

अजित—न-हि !!! [चीत्कार क' कए पड़ैबाक चेष्टा करैत अछि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि। कोलाहल क मध्य नेपथ्य सँ एकटा तीक्ष्ण आर्त्तस्वर भासल अबैत अछि। किछु क्षण क पश्चात् सब शब्द बन्द भ' जाइछ। कमल आगाँ बढ़ि कए मंच क एक कोना पर ठाढ़ भ' जाइत छथि। हुनका पर आलोकपात होइत छन्हि।]

कमल—खून जखन शुरू होइत छैक, त तकर अन्त नहि होइत छैक। आ' लहू क रंग एक्के होइत छैक—चाहे ओ महाजन क हो, चाहे माधव मिसर क। माधव बाबू गेलाह, अजित चलि गेल, दल क कतोको गोली क शिकार भेल, पकड़लो गेल, जाहि मे प्रीतियो छलीह।

सती—[मंच क अन्य प्रान्त पर ठाढ़ रहैत छथि। हुनको पर आलपरेख पड़ैत छन्हि।] आ' कमल ? कमल क की भेल ?

कमल--[माथ झुका कए] ओ एक लज्जा क इतिहास छल जखन सब क्यो पकड़ैलाह, हम शहर मे छलहुँ। ओहुना हम पार्टी मे नवे छलहुँ। तेँ ने कोनो निबन्ध मे हमर कृतित्व क उल्लेख भेल, ने हम कोनो कृतित्व देखा सकलहुँ। तैयहु सब कें पता लागिये गेलैक जे हमहूँ एहि पार्टी मे छलहुँ। जखन चारूकात सँ धड़-पकड़ होमै लागलैक तखन एक दिन हमहूँ तैयार भ' गेलहुँ अपना कें पुलिस क हाथें बलि चढ़ा देबाक लेल। मन मे सोचलहुँ, जे हम अपन नेता क हत्या कैने छी—हमरा हाथ मे खून क चेन्ह लागले अछि—हमरा त दण्ड हैब उचिते थीक। मुदा से नहि भेल।

सती—कियैक ?

कमल—पुलिस आयल छल। एकहि मकान सँ हमर संगी- साथी सब कें ल' गेल। हमरो ल' गेल छल। मुदा, हमरा छोड़ि देल गेल।

सती—कियैक ? की भेल छल ?

कमल—बाद मे पता चलल जे एहि मे हमर पितृदेव क हाथ छलन्हि। एहिना हम अपन प्रश्न क उत्तर खोज करैत-करैत अन्धकार सँ आलोक क जगत मे पहुँचि गेलहुँ। [संगहि संग समस्त मंच आलोकित भ' उठैछ। मंच क एक दिसि कमल आ' दोसर दिसि प्रीति पहिनहि सँ ठाढ़ छथि। तावत् मंच आलोकित हैबा क बाद हुनका दुनू क मध्य नाट्यकार आ' अनिरुद्ध कें दण्डायमान देखल जाइछ। ओ सब कमल क दिसि आगाँ बढ़ैत छथि।] तावत् हमर पहिल प्रश्न पुरान भ' गेल छल, कारण विलास सँ बाहर, प्रासाद सँ बाहर अपन जिनगी जीबैत-जीबैत बुझि गेल छलहुँ जे चारूकात एतेक दारिद्र्य कियैक छैक। आब नव प्रश्न सब हमरहि संग दीर्घपथ पर चलै लागल। कोना एहि गरीबी कें खून क' सकी ? कहिया हैत ओ यज्ञ ? के देखाओत पथ ? हम अपन जीवन क सब सँ नीक मुहूर्त्त सब राज-नीति क शतरंज क चालि मे लगा देलहुँ। प्रश्नोत्तर क खोज मे हम तकर बाद दोसरो पार्टी मे गेलहुँ। मुदा ओतहु लोभ-लालसा क कुत्सित चेहरा सब कें देखि पड़ा कए पहुँचलहुँ तेसर कोनो पार्टी दिसि। ओहिना हम पथ क सन्धाने करैत रहि गेलहुँ।

अनिरुद्ध—[म्लान हँसैत] तकर बाद भरिसक देखलहुँ जे हम सब जाहि चौराहा पर पहिने ठाढ़ छलहुँ, ओत्तहि ठाढ़ छी ! नहि ओ ?

कमल—हँ अनिरुद्ध। ई सब करबा क बाद आइयो देखैत छी दुनिया तहिना चलैत अछि—शोषक आ' शोषित क मध्य महक खाधि तहिना हमरा दिसि मुँह बौने ठाढ़ अछि—ओकर आँखि मे विजय क इंगित छैक। नाट्यकार, अहाँ कहू, तखन हमरा सभक जीवन क की कोनो मोल नहि ? हमरा सभक प्रश्न क की कोनो उत्तर नहि !

नाट्यकार—कमल, हमरा त लगैत अछि—क्यो हमरा सब कें ल' कए एकटा भीषण उपहास करबा क लेल किछु प्रश्न हाथ मे धरा कए छोड़ि

देने अछि आ' सामने राखि देने अछि ओहि प्रश्न सभक असंख्य उत्तर। हमर, अहाँ क अनिरुद्ध क आ' सती क जन्महि सँ जेना क्यो ओहि प्रश्न सभक सही उत्तर खोजवा क आदेश द' देने छल। हम सब एकटा उत्तर कें उठा कए देखैत छी त ओना हमरा सब पर जादू क' देत अछि, हम सब सम्मोहित जकाँ भ' जाइत छी। आ' तखन तीन-चारिटा पात्र-पात्री मुँह पर रंग पोतने एकटा घटना कें ढोवैत कतय सँ ने चलि अबैत अछि—और शुरू भ' जाइत अछि एक नाटक। फेर, एक नाटक समाप्त हैबाक बाद जखन दोसर उत्तर कें छूबैत छी त शुरू भ' जाइछ दोसर एकटा नाटक। आ' फेरो......

कमल—तखन हम, अनिरुद्ध, सती—हम सब जिनगी भरि की कैलहुँ ?

सती—हमर नोर ? हमर प्रेम ??

अनिरुद्ध—और हमर भूख ? [एतबा कहबा क संगहि संग नाट्य-शालाक आलोक मद्धिम भ' जाइत अछि।]

नाट्यकार—सब वस्तु क अपन-अपन भूमिका क लेल प्रयोजन छल। जन्म क संगहि संग हम सब मंच पर प्रविष्ट होइत छी—हमरा सब पर आलोक पड़ैत अछि। [संगहि संग पात्र सब पर अलपरेख पड़ैत छन्हि।] अपन पार्ट कें नीक जकाँ कण्ठस्थ करबा मे किछु वर्ष बीति जाइत अछि। आ' तकर बाद सँ चलैत रहैत अछि नाटक जकर शेष मृत्यु क बादे होइछ। [तखनहि सब आलोक मिझा जाइछ। नाट्यकार कें छोड़ि आन-आन पात्र सब पर सँ अलपरेख हँटि जाइत छन्हि एवं मंच क अन्यान्य अंश अन्हार भ' जाइछ।]दर्शक बिसरि जाइत छथि ओहि नाटक कें। [हँसैत] मुदा एक ने एक बेर सब कें मंच पर आबै पड़ैत छन्हि, हँसै पड़ैत छन्हि, कानै पड़ैत छन्हि। आइ छलाह सती, अनिरुद्ध, कमल। भरिसक कालिह रहब अहाँ [दर्शक सब मे सँ किनकहु दिसि देखा कए], अहाँ [दोसर दर्शक कें देखा कए], वा अहाँ [तेसर कोनो दर्शक कें देखा कए]। आबै पड़त एतय। कारण हम सब—सब क्यो जीबैत छी एक नाटक क लेल।

समाप्त

नायक के नाम जीवन



नचिकेता

नायक क नाम
जीवन

नचिकेता

प्रकाशक :
अखिल भारतीय मिथिला संघ
६/१, खेलात घोष लेन,
कलकत्ता-६

प्रथम संस्करण :
दिसम्बर, १९७१ ई०

प्रकाशक :
अखिल भारतीय मिथिला संघ
६/१, खेलात घोष लेन, कलकत्ता-६

स्वत्वाधिकारी :
नचिकेता

आवरण-शिल्पी :
नचिकेता

मुद्रक :
अजय सिंह
सिंह प्रेस,
१६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

मूल्य :
दू टाका

भूमिका

नायक क नाम जीवन। मानव-जीवन मे दुःखक तुहिन-पात अबैत छैक त सुख क रंगीन किरण क स्पर्श सेहो होइत छैक। आवर्त्त-कुटिलता क राति एवं स्वप्निल सुनील दिन— दुनू कें ल' कए गठित भेल अछि मनुष्य क जीवन और धीरक दृष्टि मे एहि दुनू क सामंजस्ये थीक जिजीविषाक विकट प्रश्न क सन्तुलित उत्तर। किन्तु बहुधा आशा-निराशा क झूला पर झूलैत आकांक्षा आदि प्रेत-लोक क छाया जकाँ चरित्र सब कें हारि कए ल' जाइत अछि नियति क अमोघ परिणति दिसि। इतर कुत्सा-कल्मष सँ आविल प्रेयसी भोगैषणा क मर्मभेदी संगीत कें जीवन क चरम काम्य निर्देश क रूप मे ग्रहण केनिहार अर्थान्वेषी वर्ग तथा क्रूर यथार्थ क आवर्त्त सँ झमारल मृत्यु-पंथ क अतिक्रान्त नाविक लोकनि अथवा जीवित रहबाक लालसा सँ उताहुल चित्र-विचित्र नाना रूप-धारी चरित्र सब ठाढ़ भ' गेल छथि हमर लेखिनी क आगाँ—नाटक क पात्र बनबाक प्रार्थना मे। और हिनके सब कें ल' कए जन्मल अछि हमर नाटक—नायक क नाम जीवन। हमरा विश्वास अछि जे हमर काव्यग्रन्थ 'कवयो वदन्ति' आ' 'अमृतस्य पुत्राः' जकाँ गणदेवता एहि नवीन प्रयासहु कें अपनौताह।

पुस्तक-प्रकाशनक क उदार परिकल्पनाक लेल हम अखिल भारतीय मिथिला संघ कें हार्दिक धन्यवाद द' रहल छियन्हि।

—नचिकेता

पात्र-परिचिति

नाट्यकार—मध्यवयस्क लेखक ।

शक्ति—लोभी, स्वार्थी, उच्चाभिलाषी, मध्यवयस्क व्यवसायी ।

लखपति—अर्थ-सर्वस्व, महत्त्वाकांक्षी व्यवसायी ।

विनय—न्याय-निष्ठ, सरल-हृदय, मदिरासक्त व्यवसायी ।

नवल—बलिष्ठ, निर्लोभ, उदारचेता युवक । शक्ति क पुत्र ।

प्रकाश दीपक	निर्भीक, कर्मठ, समाजक नव-निर्माणक लेल उत्सर्गी-कृत-प्राण युवक द्वय । नवल क मित्र ।

कालू सरदार—शक्तिमत्त, परस्वापहारी, अर्थपिशाच गुण्डा ।

मन्नूराम—उच्चाकांक्षी, प्रतिहिंसा-परायण गुण्डा । कालू सरदार क सहायक ।

पहिल गुण्डा—आन्हर (रहमत अली) दोसर गुण्डा—कोढ़ी । तेसर गुण्डा—लूल्ह । चारिम गुण्डा—तोतराह ।	कालू सरदार क अधीनस्थ चारि टा गुण्डा ।

रामभरोस—समाज-सेवक क भेष मे एक असाधु व्यवसायी ।

पहिल किरानी दोसर किरानी	शक्ति क अधीनस्थ दू टा परनिन्दा-मुखर कर्मचारी ।

दरोगा, सिपाही आदि ।

सुनीता—विनय क आत्मजा, नवल क प्रेमिका ।

नर्त्तकी—कालू सरदार क अखाड़ा क नर्त्तकी ।

नायक क नाम जीवन

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

[मंच क दू भाग—अग्र एवं पश्च भाग—देखल जाइछ। पश्च भाग दुतल्ला अछि, जकर ऊर्ध्व भाग मे एक पार्कक दृश्य तथा अधो भाग मे एक उच्चवित्त लोक क ड्राइङ्ग रूम क दृश्य दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। पार्क क चारूकात रंग-बिरंगी फूल तथा हरियर-हरियर झमटगर मुदा मध्यम आकार क गाछ सभक सुललित कतार सुशोभित भ' रहल अछि। तकर मध्य मे पाथर क एकटा वेदी लखा दैत अछि। निम्न भाग-स्थित ड्राइंग रूम मे प्रेक्षक क दक्षिण दिशि दू टा सोफा आ' तकर सम्मुख एक तिपाइ पर राखल चारि-पाँच टा फिल्मी पत्र-पत्रिका दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। एहि प्रकोष्ठक मध्य सम्मुखस्थ दिवाल पर एक सुन्दर फ्रेम मे बन्हाओल वृहदाकार देवी मूर्त्ति टाँगल अछि। मूर्त्ति क लगले निम्न भाग मे वेदी क ऊपर पूजा क सरंजाम, धूप - दीप, शंख, गीता तथा रुद्राक्ष-माला

राखल अछि। ई चित्र एना राखल अछि जकरा प्रयोजन भेला उत्तर शीघ्रहि हटाओल जा सकैछ, कारण ओकरहि पाछाँ मे गृह स्वामी शक्तिबाबूक गुप्त सन्दूक क द्वार छैक। प्रेक्षक लोकनिक बाम दिसि, कनेक आगाँक कोनहि लग एक ऊँच रेडियो-टेबुल पर रेडियो राखल अछि। रेडियो-टेबुल आ' चित्रक मध्य एकटा नान्हि सनक शीशाक अलमारी मे पुस्तक सब सुसज्जित अछि। अलमारी क ऊपर एक फूलदानी राखल अछि। मंच क बाम प्रान्त मे केवाड़ी लगा छैक, जाहि पर चित्रित पर्दा झूलि रहल अछि। प्रकोष्ठ क एक कोन मे एक मनोरम हरियर वा नील रंगक स्टैंडिंग लैम्प वातावरण पर अपन प्रभाव विकीर्ण क' रहल अछि।

यवनिका उठैछ। मंचक पश्च भागक निम्नांश एक कारी पर्दा सँ झाँपल अछि। ई पर्दा समयानुसार ऊपर उठि कए ऊर्ध्व भाग कें झाँपि ल' सकैछ। यवनिकाक उठबाक संगहि चारूकात अन्हार भ' जाइत अछि। मंचक अग्र भागक मध्य मे टेबुल लग किताबक भीड़ मे एक कुर्सी पर बैसल नाट्यकार। अन्हार मे माथ पर हाथ धेने, हाथ मे उन्मुक्त कलम रखने ओ कनेक चिन्तातुर प्रतीत भ' रहल छथि। तखनहि नाट्यकार पर अत्यन्त अल्प आलोक पड़ैछ।]

नाट्यकार—उफ! किछु फुरते नहि अछि! आब आगाँ की लिखू? नायक कें ने जीवित राखि सकैत छी, ने मारि सकैत

छी। पूछू कियैक ? [अपन स्थान पर सँ उठि कए मंचक ओर सम्मुख आबि कए] पुछैत छी कियैक ? एम्हर प्रकाशक पहिनहि सँ कहि देने छथि--"औ महाशय, अपने त एकहु टा नायक कें मारिते नहि छियैक।" त हम कहने छलियन्हि, प्रकाश बाबू, नायक कें मारू कथी लेल ? ओ हँसि कए कहलथिन्ह--"हे लियह ! ईहो नहि बुझलहुँ ? अहाँ क पड़ोसी लेखक असित बाबू अपन तीन-तीन टा नाटक क नायक कें अन्त मे मारिये देने छथि।" हम कहलियन्हि, त ताहि सँ की भेल ? ओ कहलन्हि, "ताहि सँ की भेल ? ताहि सँ पुस्तक क बिक्री बढ़लैक, नाटक जमलैक, आ' दर्शकगण नोर पोछैत-पोछैत घर गेलाह, टिकट क दाम वसूल भेलैक—आब हैबा मे बाकी की रहल कहू त ?" औ महाराज, की कहू ? हम त हुनकर बात सुनतहि अवाक् रहि गेलहुँ। ओ फेर कहलन्हि जे एहि बेरि हम जौं नायक कें नहि मारी त ओ असिते बाबू सँ नाटकक सट्टा क' लेताह। [बिराम ल' कए] अहाँ सब कहब---"त एहि मे चिन्ता क कोन गप्प छैक ? नायक कें मारिये दियौक ने ! अहाँ कें की खगैत अछि ? [पुनः बिराम] किन्तु कनेक सोचू त, जकरा ल' कए हम ई नाटक लिखि रहल छी, ओ यावत् धरि नहि मरै तावत् हम ओकरा मारि दियौक ? [स्वर मे परिवर्त्तन आनि, नाट्यकार घूमि कए टेबुलक आगाँ आबि दुनू हाथ टेबुल पर राखि ठाढ़ होइत छथि ; प्रकाश-रेखा हुनक मुहँ पर

पड़ैछ।] आ साँच पूछू त नवलकें हम जीविते कौना कहू ? प्रति पल, प्रति मुहूर्त्त ओ अपन कथीक ने प्रायश्चित्त क' रहल अछि, अर्द्धपागल जकाँ बकि रहल अछि। दिन मे ओ स्वस्थ देखना जाइछ, मुदा राति होइतहि........ [वाक्य असमाप्त रहि जाइछ। प्रकाश-रेखा विलीन भ' जाइछ।]

द्वितीय दृश्य

[मंच क पश्च भाग क ऊर्ध्वांश क्रमशः आलोकित भ' उठैछ। नवल कें माथ पर हाथ धैने बैसल देखना जाइछ। नवल क वेश मलिन और केश रुक्ष देखना जाइछ। रहि-रहि कए विद्युत क रेखा देखना जाइछ आ' संगहि वज्रपात क शब्द सेहो सुनना जाइछ। वज्रपात क शब्द सुनितहि नवल चौंकि उठैत अछि और किछु भयभीत सन बुझना जाइछ। हठात् नारी कण्ठ क एकटा तीव्र, तीक्ष्ण आर्त्त स्वर वज्रपातहु मे सुनाइ पड़ैछ। आर्त्तस्वर क प्रतिध्वनियो क चुप हैबाक पश्चात् नवल दर्शक क दिसि घूमि कए, कनेक चौंकैत चिकरि उठैछ।]

नवल—[कनेक जोर सँ] के ? [जोर सँ] के छें ओतय ? [वेदी सँ उठि कए कनेक अगुआबैछ] जवाब कियैक नहि दैत छें ? [हठात् एकटा नारी कंठक खिलखिलाहट सुनाइ पड़ैछ। चारूकात निहारैछ, ककरहु नहि पबैछ। मुदा ओ नारीकंठ

हँसते रहि जाइछ।] तोरा भगबान क सप्पत, बाज के छें ? नहि त हम पागल भ' जायब। [किछु देखबाक अभिनय क' कए।] ओह ! सुनीता, अहाँ ? हम सोचलहुँ..., जाय दियह। मुदा अहाँ —अहाँ कथी लेल आयल छी ? [फेरो विद्युत् चमकैत अछि...] सुनीता ! प्लीज सुनीता, अहाँ ओना क' कए नहि ताकू, हमर सबटा अंग जेना भरकि जाइछ। [किछु काल मौन रहि कए, दू-चारि बेरि घूमि कए] सुनीता ! हम जनैत छी, अहाँ क मन मे कथीक बिहाड़ि उठि रहल अछि। अहाँ आपन बाबू जी क मृत्यु कें एखनहु धरि नहि बिसरलहुँ अछि। [स्वर बदलि कए, उत्तेजित भए] किन्तु अहाँ विश्वास करू ! हम निर्दोष छी। हम हुनक हत्या क विषय मे किछु नहि जनैत छलहुँ, किछु नहि। [कनेक थम्हि कए वेदी क नीचाँ बैसल नवल वेदी कें सुनीता मानि मुसकुराहट भरल मुख मे मनुहार ल' कए कहैत छथि] अ-अहाँ विश्वास कैलहुँ ने ? निश्चय कैने हैब ! [उठि कए] आब हमरा कोनो चिन्ता नहि। अहाँ टा हमरा पर भरोस राखू सुनीता। नीता, हम ई सब चक्र-चालि किछु नहि जनैत रही ; हम काल्लू सर्दार कें वा ओकर अखाड़ा कें ओहि सँ पहिने नहि जनैत रही। हम नहि जनैत रही, हमर मुहल्ला क मातल लोग सब राति क पहर मे जाहि कोठा सब सँ घुरैत छलथि, ओहि महक वेश्या सब काल्लू सरदार क अधीन छैक। आ' ईहो नहि जनैत छलहुँ

जे लूलह-अपंग भिखारी क दल, जे लोग कें पथ चलैत टू-टा फाटल पैसा क लेल संग करैत छल, तकरा सब मे सँ प्रत्येक क भेष क तर हमरहि लोकनिक मुहँ, हमरहि लोकनिक समृद्धि क निश्चिन्तता आँकल अछि। विश्वास करू, ई सब हम नहि जनैत छलहुँ। [एहि समय नेपथ्य सँ कोलाहल क शब्द सुनल जाइत अछि। पुरुष आ' नारी-कंठ सँ कैक गोटे नवल कें ओकर नाम ध' कए बजा रहल छथि। नवल किछु काल उत्कर्ण भ' कए एहि शोरगुल कें सुनैत अछि। फेर कोलाहल क धीरे-धीरे कम भ' गेला उत्तर नवल सुनीता कें कहैछ] सुनीता, ऐ; सुनैत छी? प्लीज, हमरा आजु क लेल कनेक मुक्ति दियह। हमरा दिशि सँ अहाँ अपन दृष्टि घुमा लियह। आन कत्तहु ताकू, आन ककरहु दिसि; बस आइये टा—

[बत्ती मिझा जाइछ। चारूकात अन्हार। नेपथ्य सँ धीरे-धीरे जे कोलाहल क क्षीण शब्द तखनहु सुनाइ पड़ैत छलैक, किछु काल पश्चात् कनेक तीव्र भए बन्द भ' जाइछ। किछु क्षण निस्तब्धता क पश्चात् दू-एकटा कागक स्वर क संग बाँसुरी मे पराती क धुन सुनला जाइत अछि। संगे-संग पुनः मंच क पश्च भाग क ऊर्ध्वांश आलोकित भ' उठैत अछि। देखल जाइछ जे नवल चादर ओढ़ने पार्क क वेदी पर सूतल अछि। ओ एक बेर चादर सँ मूड़ी निकालि कए

पुनः चादर ओढ़ि लैछ कि तखनहि नाट्यकार क प्रवेश होइत अछि ।]

नाट्यकार—[पार्क मे बैसबाक बेंच पर नवल कें सुतल देखि] ऐ, हे यौ महाशय !

नवल—[चादर सँ कनेक मूड़ी निकालैत] की थीक ?

नाट्यकार—उठू, उठू ! आ हटि कए बैसू !

नवल—कियैक ?

नाट्यकार—अरे वाह ! ई कोनो प्रश्न भेल ? हम पुछैत छी, ई सूतबाक जगह थिकैक ?

नवल—[उठैत] ओह ! से बात ? [नाट्यकार बैसैत छथि । नवल अंगेठी ल' कए अपन झोरा मे की ने खोजैत अछि । मुदा, कोनो इच्छित वस्तु नहि पैबाक भाव देखा कए ओ वेदी क एक कात बैसि जाइत अछि आ' नाट्यकार सँ कहैत अछि] अ-अच्छा, अहाँ त ओम्हरहि सँ एलहुँ कि नहि ?

नाट्यकार—ओम्हर सँ माने, केम्हर सँ ?

नवल—[आँगुर सँ प्रवेश द्वार दिसि देखाबैत] ओम्हर सँ माने, इयेह शहर दिसि सँ ।

नाट्यकार—हँ ।

नवल—[साग्रह] सुनीता कें देखने छलियैक ? [नाट्यकार कें विस्मित देखि] माने, सुनीता नीक अछि त ?

नाट्यकार—[आश्चर्य-चकित भए] अरे के सुनीता ? अहाँ

ककरा द' कहि रहल छी ?

नवल—कियैक ? वैह—आपन सुनीता। हँ,—जकर बाबूजी कें हम सब मिलि कए खून कैने छलियैक—सैह।

नाट्यकार—[खून क नाम पर नाट्यकार चौंकैछ एवं भयभीत स्वरें कहैछ] खून ? ककर खून ? अ-अहाँ खून कैने छी ? अहाँ खूनी छी, माने......

नवल—[बाधा दैत] नहि नहि। हम किछु नहि कैलहुँ। हम किछु जनिते नहि छलहुँ। विश्वास करू।

नाट्यकार—अहाँ एखनहि बाजलहुँ जे अहाँ खून कैने छी, फेरो कहैत छी जे......

नवल—अहाँ सबटा गप्प सुनब, तब ने बुझब !

नाट्यकार—[स्वगत] लगैछ, किछु नाटकीय उपादान मिलि सकैत अछि। सुनबा मे कोन हर्ज ?......[प्रकाश्य मे] हँ, अहाँ की ने कहैत छलहुँ ?

नवल—[आग्रहें कनेक अगुआ कए बैसैत] अहाँ सुनब ? हमर सबटा कथा अहाँ सुनब ?

नाट्यकार—अवश्य सुनब। अहाँ कहू ने......।

नवल—त सुनू ! [उठि कए ठाढ़ भ' कए किछ काल मौन रह-बाक पश्चात् कहैत अछि] हम, हमर नाम—नवल किशोर राय। जखुनका गप्प कहि रहल छी, तखन हम विश्व-विद्यालय मे साहित्य क अध्ययन करैत छलहुँ। कालिदास, विद्यापति आ' रवीन्द्रनाथ क पद-लालित्य पर विमोहित

छलहुँ। हुनका लोकनिक मधुमय भावोद्धिक तुंग-फेनोर्जित तरंग-राशि मे लीला-पोत जकाँ रमसैत छलहुँ। [कनेक अगुआ कए] ओहि समय हम नीचाँ नहि ताकैत छलहुँ। देखैत नहि छलहुँ आ' ने जनिते छलहुँ जे नीचाँ, बहुत नीचाँ मे समाज क सड़ल घाव सब पर सुगबुग करैत ओ कीड़ा सब नाचि रहल अछि, मजा ल' रहल अछि जे बाह्यतः सभ्य परिधान मे लोग सब कें चकाचौंध मे डालने रहैत अछि। हम नहि जनैत चलहुँ जे ओही दल मे सँ हमहूँ एक तेहने अधम छी। [कनेक थम्हि कए] आ' हमर बाबूजी शक्तिकुमार राय छलाह...... [वाक्य असमाप्ते रहि जाइछ। तखनहि बत्ती मिझा जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[जाहि कारी पर्दा सँ मंच क पश्चभाग क निम्नांश-स्थित ड्राइंग रूम झाँपल छल, तकरा ऊपर उठा कए पार्क क दृश्य कें झांपि देल जाइछ। और अन्हारहि मे ड्राइंग रूम मे दू व्यक्ति क कंठस्वर सुनना जायत]

शक्ति—ओफ! हम तबाह भ' गेल छी ई डपोरशंखी बात सब सुनैत-सुनैत—धर्म, पुण्य, आदर्श और भगवान! हा-हा! हा-हा! [अट्टहास] सब फूसि! हा-हा! हा-हा!

लखपति—अरे, युग बहुत बदलि गेल छेक; किन्तु......

शक्ति—किन्तु! किन्तु की? लोक चन्द्रमा पर टहलै लागल, मंगल पर पिकनिक करै जा रहल अछि आ' शनि और राहु क छाती पर जा कए फुटबाल मैच हैत गे। और अहाँ किन्तु-किन्तु करैत रहू।

लखपति—से त ठीके। विज्ञान सेह कहैछ; किन्तु......

शक्ति—फेर, वैह किन्तु। विज्ञान त बता देलक जे भगवान् नहि छथि। हुनक सब बात फूसि थीक। सृष्टि क एकमात्र सत्य थीक 'चांस।' एहि चांस कें जे चीन्हय सैह थीक असल व्यवसायी।

लखपति—शक्ति बाबू, हमरा लोकनिक कारबार मे 'चांस' नहि कहियो ऐलैक?

शक्ति—चांस कि आओत कप्पार। ई यावत् काल धरि हमरा लोकनिक पार्टनर हरिश्चन्द्र क अवतार श्रीमान् विनय बाबू कुर्सी पर अडिग रहताह तावत् धरि किछु नहि हैत।

लखपति—से की? ओ त कोनो बाधा नहि दैत छथि।

शक्ति—बाधा? बाधा और ककरा कहल जाइत छैक? ओ कालाबजारी नहि करै देताह, मिलावट नहि करै देताह, घूस नहि देमै देताह, अफसर सब कें डाला, हिस्की वा कोनो माल नहि पठबै देताह। कहबाक सार ई जे ओ कोनो ससरी-फसरी नहि चलै देताह।

लखपति—ओ त आजकल अपनहि पी कए टगैत रहैत छथि। तैयो......।

शक्ति—ताहि सँ की ? जखनहि होश मे अबै छथि कि हुनका पाप-पुण्य और ओहि भगवान क भूत दृश्य देत छन्हि और ओ हमर गंजन करबा लेल दम दाखिल भ' जाइत छथि।

लखपति—तखन ?

शक्ति—तखन की ? या त विनय बाबू अपना कें बदलताह या हमरा लोकनि कें कारबार बदलै पड़त।

लखपति—सैह ते। आजुक युग कतेक बदलि गेल छैक। हमरा लोकनि कें चाही टाका। हमरा सब कें पाप-पुण्य और नीक-बेजाय सँ कोन काज ?

शक्ति—काज त एहन चाही जाहि मे कम सँ कम लागत मे राता-राती बड़का धन-सेठ भ' जाय। आ' तकर बाद मौज, मजा, जीवन क रस आ'......

लखपति—किन्तु अहाँ जाहि व्यवसाय क बात क' रहल छी, तकर अतिरिक्त कि आन कोनो कारबार नहि भ' सकैछ ?

शक्ति—हमरा जनैत त एहन काज एके टा छैक आ' ओ छैक कालू सरदार क अड्डा। [स्वर कें कनेक कठोर करैत] किन्तु हम देखि रहल छी जे पुरान संस्कार सँ पिण्ड छोड़ौनाइ अहूँ क लेल कठिने भ' रहल अछि।

लखपति—नहि, से नहि शक्ति बाबू। मुदा इयैह जे एहि मे फायदे कतेक भ' सकैछ ! [अपेक्षा क भाव देखबैछ।]

शक्ति—की कहैत छी] लखपति जी, एहि मे अहाँ कें फायदा नहि सूझैत अछि ?

लखपति—फायदा त छैक, किन्तु से कतेक ?

शक्ति—से पूछैत छी ? [कहि कए उच्चस्वरें हँसैत रहैत छथि और ओहि हँसी क संग ताल राखि कए प्रकाश रेखा इतस्ततः विक्षिप्त जकाँ पतित भ' कए एक समय शक्ति क मुख पर आबि कए स्थिर भ' जाइत अछि ।]

लखपति—हँसलहुँ कियैक ?

शक्ति—[मुसकियाबैत] हँसलहुँ एहि लेल जे अहाँ आइये एतेक बड़का सेठ भ' गेलहुँ, कतेक तरह सँ मुनाफा लुटलहुँ, मुदा हमर एहि छोट-छीन अत्यन्त सरल इंगित कें नहि बुझि सकलहुँ । [किछु काल मौन रहैत छथि । पुनः पदचारणा करैत कहैत छथि] अहाँ फायदा क गप्प करैत छलहुँ, सैह ने ?

लखपति—हँ ।

शक्ति—फायदा मे फायदा इयैह जे........,[वाक्य कें किछु विलम्बित करैत तिपाइ पर राखल एकटा पत्रिका हाथ मे लैत छथि एवं दू-एकटा पन्ना उनटौला उत्तर कहैत छथि] अहाँ क नाम बदलै पड़त ।

लखपति—तकर अर्थ ?

शक्ति—[पत्रिका कें तिपाइ पर रखैत] तकर अर्थ इयैह जे अहाँ लखपति सँ करोड़ीमल भ' जायब ।

लखपति—[साग्रह] आँय ! से कोना ?

शक्ति—से हम एखनहि कहि रहल छी ; मुदा......[किछु सोचै लगैत छथि ।]

लखपति—मुदा की ? कहबा मे कोनो बाधा अछि की ?

शक्ति—नहि ; से बात नहि। बेह विनय बाबू क लेल...... ।

लखपति—विनय बाबू सँ कोन सम्बन्ध ?

शक्ति—हमर कहबाक तात्पर्य ई जे विनय कें एहि सब बात क खबर नहि हैबाक चाही। ओकर विश्वास नहि।

लखपति—से अहाँ निश्चिन्त रहू।

शक्ति—धन्यवाद। [किछु काल मौन रहलाक पश्चात] अहाँ काल्हु सरदार कें जनैत छियैक ?

लखपति—नहि।

शक्ति—काल्हू सरदार एक एहन लोग क नाम थीक, जे हँसैत-हँसैत चाकू चला सकैत अछि। काल्हू सरदार क देह क रंग कारी, मुँह पर गोटी क दाग। हमरा जनैत एहि संसार मे ओकर दुइये टा मित्र छैक—टाका आ' शराब।

लखपति—बुझलहुँ, ओ एकगोट कुख्यात गुण्डा अछि, जकरा सँ...... ।

शक्ति—[लखपति क कथन मे बाधा दैत] बहुँ हुँ, बेह ओकर एकमात्र परिचय नहि भेल।

लखपति - तखन ?

शक्ति—गुण्डा क संगहि ओ एकगोट चतुर तथा अनुभवी व्यवसायी सेहो अछि जे चासकें अलगट चिन्हि लैत अछि।

लखपति— तकर अर्थ ?

शक्ति—कहैत छी। [पदचारणा क' कए मंच क एक कोन सँ

दर्शक दिसि मुहँ घुमौने गम्भीर स्वरें कहैत छथि] पहिने हमर एकटा प्रश्न क उत्तर दियह।

लखपति—पूछू।

शक्ति—अहाँ कहियो दछिनबरिया पुल सँ आगाँ पैरे गेल छी ?

लखपति—अरे वाह! हम त कैक बेर ओम्हर टहलै लेल गेल छी।

शक्ति—अच्छा। तखन ई बताउ जे कहियो सदय भ' कए ओतहुका कोनो भिखारी कें पाइयो देने छियैक ?

लखपति—ठीक मन त नहि पड़ैछ, मुदा देनहुँ हैबैक।

शक्ति—ओ पाइ कालू सरदार क हाथ मे चलि गेल हैत।

लखपति – मतलब ?

शक्ति—कालू सरदार भिखारी क व्यापार करैत अछि, शराब-गाँजा-भांग क व्यापार करैत अछि, पाकिटमारी, डकैती, बटमारी आ वेश्या सभ क......[थम्हि कए] रहै दियौक। मोट बात ई जे कालू सरदार एकटा अभिनव व्यापार करैत अछि, जकरा मे चांस आ' चंचला क अद्भुत गठबन्धन छैक।

लखपति—आश्चर्य !

शक्ति—कियैक ?

लखपति—हम त एतबा दूर धरि सोचनहि नहि छलहुँ।

शक्ति—मुदा लखपति जी, असल गप क त एखन मात्र भूमिके भेल अछि।

लखपति—त असले गप कहू ने !

शक्ति—अच्छा, आब ई त बताउ जे अहाँ कि चाहैत छी जे एहि व्यवसाय क भार अहाँ क हाथ मे आबै ?

लखपति—[शक्ति क हाथ अपन हाथ मे लैत] की एहन भ' सकैछ ? तखन त हम सत्ते करोड़ीमल......।

शक्ति—सब भ' सकैछ। करोड़ीमल त अहाँ भेले छी।

लखपति—[अति उल्लसित होइत] सत्ते ?

शक्ति—मुदा जतबा गुड़ छिटबैक ततबे पिपड़ी आओत। आरम्भ मे प्रयोजन छैक टाका क।

लखपति—टाका हम देब। टाका क चिन्ता अहाँ नहि करी।

शक्ति—ठीक अछि, त हम कालू सरदार कें कहि दियैक जे ओ आन ककरहु सँ बात नहि करै ?

लखपति—हँ हँ, ओकरा से कहि दियौक। (उठैत) ठीक अछि। त एखन हम......।

शक्ति—अहाँ चललहुँ ?

लखपति—हँ, हमरा आज्ञा देल जाय। कालिह त फेर भेंट हैबै करत। [जाइत-जाइत पाछाँ घूमि कए] किन्तु सावधान ! एहि व्यवसाय मे खतरा सेहो कम नहि होइत छैक।

शक्ति—खतरा क लेल एसगरे कालू सरदार यथेष्ट अछि।

लखपति—बेस, बेस !

शक्ति—मुदा, एकटा बात मन राखब।

लखपति—की ?

शक्ति—विनय कें एहि बात क पता नहि चलै।

लखपति—बिनय हमरा लोकनिक करिये की सकैत छथि ?

शक्ति—नहि; से विनय कें चिन्हबा मे अहाँ कें देरी अछि। ओकरा कारणें हम सब कहियो फँसि जा सकैत छी।

लखपति—तँ हम कहैत छी जे अहाँ क प्रतिभा और हमर पूंजी ई दुनू मिलि कए एक नवीन इतिहास क सृष्टि करत।

शक्ति—तँ एहि पथ सँ विनयक हँटब आवश्यक।

लखपति—से त ठीके।

शक्ति—और एक बात छैक, जकरा हेतु हम विनय कें सह्य नहि क' सकैत छी।

लखपति—से की ?

शक्ति—से हमर बाल्यकाल क एक विडम्बना थीक लखपति जी, जे एखन दुःस्वप्न जकाँ बुझाइछ। [किछुकाल मौन रहि कए] हमर माय हमर जन्म क किछुकाल बादे चिकित्सा क अभावें मरि गेल छलीह और हम जखन दस वर्ष क एकटा दुर्बल शक्तिहीन बालक छलहुँ, तखनहि बाबूजी सेहो बन्धु-लोकनिक प्रतारणा, दुश्चिन्ता तथा अन्न क अभावें तिल-तिल घुलि कए एहि लोक सँ प्रस्थान क' गेलाह।

लखपति—तखन की भेल ?

शक्ति—तखन हमर पितृबन्धु सत्यभूषण बाबू आ' हुनक स्त्री आशा देवी कृपा क', कए हमरा अपन प्रासाद क एक कोना मे आश्रय देलन्हि। और ओत्तहि हम अपनहि बयसक

एक गोट बालक कें देखलहुँ, जकर रहन-सहन, बाल-चीस, पोशाक-परिच्छद—सब किछु देवोपम छलैक। किन्तु......

लखपति—किन्तु की ?

शक्ति—किन्तु हमरा ई विषमता हृदय मे शूल जकाँ गड़ैत छल। ओहि बालकक प्रत्येक सहज चेष्टाहुँ मे हमरा अपमान बुझि पड़ैत छल। हमरा बुझाइत छल जेना हम कुकुर होइ और हमरा आगाँ कृपा क रोटी क एकटा ओगरल-दकरल टुकड़ा फेंकि देल गेल हो। हमरा होमै जे हम ओहि नेना क ठोंठ दाबि कए...... [बाजैत बाजैत उत्तेजित भ' जाइत छथि।]

लखपति—ओ बालक की एखनहु जीवित अछि ?

शक्ति—वेह बालक थीक विनय, सत्यभूषण बाबू क सुपुत्र। एकरहि देखि कए हमरा अपना पर घृणा भेल, अपन गरीबी पर घृणा भेल, अपन धर्म, समाज, आदर्श, ईश्वर—सब किछु पर घृणा भेल आ' ओहि विपुल घृणा क पंकहि सँ जन्म लेलक हमर महत्वाकांक्षा और प्रतिहिंसा।

लखपति—फेर ?

शक्ति—फेर हम बड़ भेलहुँ छाती क भीतर एकटा बिढ़ाड़ि कें पोसने। हम सर्वदा सब विषय मे विनय सँ अगुआबै चाहैत छलहुँ और जखन हम आ' विनय व्यापार मे उतरलहुँ, तखनहि ओ सुयोग आयल।

लखपति—तखन अहाँ की कैलहुँ ?

शक्ति—करितहुँ की ? कुल पूंजी छलैक विनय क और हम एत्तहु एक साधारण श्रमिक जकाँ अपन बेतनमात्र पबैत छलहुँ। हम गदहा जकाँ दिनराति खटी आ' ओ......

लखपति—तखन ?

शक्ति—तखन हमर बुद्धि जागल। सम्पूर्ण कारबार कें पबलिक लिमिटेड कम्पनी मे परिणत क' देल गेलैक। ऋण-पैंच ल' कए किछु शेयर हमहूँ लेलहुँ आ' कम्पनी मे डाइरेक्टर बनि गेलहुँ।

लखपति—तकर बाद ?

शक्ति—तकर बाद क कथा क अनुमान सहजहि लगाओल जा सकैछ। सुख और विलास मे पोषित विनय क दिनचर्या मे आराम, लापरवाही और खर्चीलापन छलैक।

लखपति—हुनका रोकैबला क्यो नहि छलन्हि ?

शक्ति—छलन्हि विनय क पत्नी, किन्तु सेहो अकस्माते यमलोक चलि गेल छलीह। और तखन विनय कें बढ़ाबा देमैबला जुटि गेलन्हि ई सेवक शक्तिकुमार राय। हुनक कला-प्रेम क धारा कें अन्हार गली दिसि मोड़बाक श्रेय हमरे देल जा सकैछ।

लखपति—तखन ?

शक्ति—एहि विलास क लेल दरकार छलैक टाकाक। से टाका क लेल विनय क्रमें-क्रमें अपन शेयर सब बेचै लगलाह आ' हम कीनै लगलहुँ। और एही कारणें अहूँ शेयर कीनि कए आइ

डाइरेक्टर भ' सकल छी।

लखपति—ओ !

शक्ति—और विनय क पास जे थोड़-बहुत शेयर छैको से आइ नहि त कालिह जैवे करतैक। किन्तु ताहू पर ओकरा मन सँ ईमानदारी क रोग नहि दूर भ' रहल छैक।

लखपति—विचित्र विरोधाभास !

शक्ति—विरोधाभास नहि; सह-अस्तित्व। विनय क व्यक्तिगत दुर्बलता और ओकर दृढ़ आरोपित पारस्परिक संस्कार। और एहि प्रकारें हमर सपना पूरा भेल। खैर; जाय दियह ओकर गप। एक दिन ओ स्वयम्......।

नवल—[नेपथ्य सँ] माय ! माय !!

शक्ति—हमर बेटा नवल आबि रहल अछि।

लखपति—अच्छा त हम एखन उठैत छी, फेर परसू......।

शक्ति—परसू नहि; सरदार कें कालिह साँझे धरि टाका द' देमै पड़तैक। जौं सौदा करबाक हो त......।

लखपति—अच्छा; त कालिह हम सम्पूर्ण टाका ल' कए आबि रहल छी।

[लखपति प्रस्थित होइत छथि। शक्ति लखपति कें विदा क' कए सोफा पर बैसि कए एकटा पत्रिका पढ़बाक अभिनय करैत छथि।]

नवल—[प्रविष्ट भ' कए] माय ! माय !! [शक्ति कें देखतहि

कनेक ठिठकि कए] बाबूजी ! आ-अहाँ, आ, अत्तेक जल्दी ? एखन त नवो नहि बजल अछि। [शक्ति पत्रिका कें राखि कए नवल दिसि देखैत छथि] अहाँ त साधारणतः एहि समय बाहरे रहैत छी।

शक्ति—[गम्भीरता पूर्वक] हम कखन की करैत छी, से तोरा पूछि कए करब ?

नवल—नहि, माने...... [केस पर हाथ फेरैत रहैत अछि।]

शक्ति—[बाम हाथ मे पहिरल घड़ी क दिसि देखैत] एखन नव बजल अछि। तों नव बजे घर सँ बाहर गेल छलह। आइ-कालिह की बारह घंटा पढ़ाइ होइत छैक ?

नवल—नहि, विश्वविद्यालय सँ त हम चारिये बजे छुटलहुँ।

शक्ति—तेयहु हाथ से पाँच घंटा रहैत छन्हु।

नवल—[घबड़ाबैत] ह-हम लाइब्रेरी दिसि गेल छलहुँ।

शक्ति—झूठ, एकदम झूठ बात। साँच-साँच बाजह, कतय गेल छलह ! तोहर माय दुलार क' कए तोहर ई हाल क' देने छथुन्ह। बाजह, कतय गेल छलह ? ककरा संग गेल छलह ?

नवल—नहि माने, हम लाइब्रेरी त गेले छलहुँ; किन्तु ओतय सँ दू-चारि मित्रक आग्रहें हम और एक गोटे क घर सेहो गेल छलहुँ।

शक्ति—नवल ! [कठोर स्वरें] तोहर मुँह-कान, भाव-भंगिमा—सब किछु कहैत अछि जे तों झूठ बाजि रहल छह। [विराम] हम जनैत छी तों कतय गेल छलह ! [मंच

पर पद्चारणा करैत छथि। नवल व्याकुलता-पूर्वक शक्ति दिसि देखि रहल अछि। अन्त मे शक्ति मंच क एक कात मे आबि और रुकि कए] तों जनैत छह, तोरा लेल हमरा की की सुनै पड़ल आइ ?

नवल—[अगुआ कए शक्ति क पास आबि] मुदा बाबूजी, हम त किछु अन्याय नहि कैने छी।

शक्ति—नवल, हम बहुत कष्ट-पूर्वक तोरा संसार क गन्दापन क कारी हाथ सँ बाहर रखबाक चेष्टा करैत आबि रहलहुँ अछि।

नवल—से हम जनैत छी बाबूजी।

शक्ति—[बात काटि कए] आ' से जनितहुँ तों हमर आशा, अरमान आ' मान-सम्मान कें माटि मे मिलैबाक प्रयास क' रहल छह ? [प्रकाश-रेखा मंच क सब अंश कें अन्हार मे राखि केवल शक्ति आ' नवल पर पड़ि रहल अछि।]

नवल—हम अहाँ क कहबाक तात्पर्य नहि बूझि रहल छी।

शक्ति—[किछु काल मौन रहि, आन दिसि मुहँ घुमा कए] आइ आफिस मे हमरहि दू टा कर्मचारी तोरा बारे मे की कौचर्य क' रहल छल से जनैत छह ?

नवल—से हम कोना...... ?

शक्ति—ओ सब कहैत छल—

[शक्ति और नवल पर पड़ैत प्रकाश रेखा मिझा जाइत

अछि। विपरीत प्रान्त क प्रकाश-रेखा एहि मध्य मंच क दोसर दिसि ठाढ़ दू गोट किरानी पर पड़ैत अछि। ओ दूनु गोटे टिफिन खाइत-खाइत गप करैत छथि।]

पहिल – हे, एकटा गप जनैत छियैक ?

दोसर—की ?

पहिल—अहाँ नवल बाबू कें चिन्हैत छियैक कि नहि ?

दोसर—नवल बाबू, कोन नवल बाबू ?

पहिल—अरे, हमरा सभ क बड़ा साहब, शक्ति बाबू क सुपुत्र।

दोसर—अ, अच्छा। अहाँ हुनकर बात कहैत छी !

पहिल—हँ।

दोसर—त बात की छियैक ?

पहिल—बात त छैक बहुत र-र-रसीला !

दोसर—साँचे ?

पहिल—हँ-हँ। मुदा पहिने कहू जे अहाँ ककरहु कहबैक ने त ?

दोसर—कहू त भला, हम कहबै ककरा ? परंच गप त पहिने बाजू !

पहिल—[पावरोटी क टुकड़ा कें खाइत, केला क अन्तिम अंश मुहँ मे ठूँसि कए चिबेबाक अभिनय करैत अछि। तावत दोसर किरानी गप सुनबाक उत्कंठा सँ खैनाइ बिसरि कए ओकर मुहँ क प्रत्येक रेखा दिसि साग्रह देखि रहल अछि। पहिल किरानी केला क अन्तिम अंश कें गिळि कए डेकार

करैत कहैत अछि] त ओहि नवलकुमार कि नवलकिशोर कें हम आइ तीन दिन सँ एकटा छौंड़ी क संग एम्हर-ओम्हर घुमैत देखि रहल छी। [दाँत निपोड़ने] खूब वृन्दावन-लीला चलि रहल अछि !

दोसर—साँचे ? ओ लड़की देखबा मे केहन अछि ?

पहिल—देखबा मे त नीक छैक, किन्तु कपड़ा-लत्ता सँ तेहन उच्च घर क नहि बुझना जाइछ।

दोसर—माने, बड़ासाहब क पुतोहु बनबाक योग्य नहि ?

पहिल—अरे धत-धत्त ! ई सब त दू-दिन क मैना थीक। केकी किछु भेने दू टा कौड़ी बीगू, उड़ि कए चलि जायत।

[कहैत कहैत दुनू हँसै लगैत अछि। बत्ती मिझा जाइछ। अन्हार मे हँसी क शब्द सुनाइ पड़ैछ। अन्हारहि मे दुनू किरानी अदृश्य भ' जाइछ, किन्तु हँसी क प्रतिध्वनि सुनाइ पड़ि रहल अछि। शक्ति आ' नवल पर फेरो प्रकाश-रेखा पड़तहि हँसी क शब्द बन्द भ' जाइछ। शक्ति माथ क केश मे आङुर चलबैत छथि आ' नवल किताब कें दूनू हाथ सँ ठोर लग धैने ठाढ़ अछि।]

शक्ति—[किछुकाल मौन रहि, नवल दिसि देखैत] आब तोंही बाजह, एहन सब बात क चर्च सुनि कए कौन भद्र बाप क सम्मान बाकी रहतैक ?

नवल—[किछु सोचैत] बाबूजी ! [मूड़ी उठबैत मुहँ लग सँ पुस्तक हँटा कए] ओ सब जे किछु देखत, से अपनहिं मनक आइना मे देखत। तेँ एहन बात अहाँ कें सुनै पड़ल। [प्रकाश कनेक वेसी भ' जाइछ। नवल मंच क दोसर दिसि आबि कए कहैत अछि] रहल प्रेम क बात ! [कनेक थम्हि कए] बाबूजी, ताहि विषय मे हम अहाँ कें एतबहि आश्वासन द' सकैत छी जे हम एहन कोनो काज नहि करब, जाहि सँ अहाँ क सम्मान कें कोनो आघात पहुँचे। अहाँ एतबा विश्वास हमरा पर करू। [एहि मध्य नवल क नाम ध' कए भीतर सँ ओकर माय शोर पारैत छैक।]

शक्ति—[कनेक थम्हि कए] ठीक छैक। एखन तों भीतर जाह, माय शोर पाड़ैत छन्हु।

नवल—जे आज्ञा। [नवल निष्क्रान्त होइछ।]

शक्ति—[खूब जोर सँ हँसैत कहैत छथि] कहू त, केहन सुन्दर कर्त्तव्य-परायण पिता क अभिनय कैल ! [रेघा-रेघा कए] बेचारे नवल, हमर सुपुत्र! [जी सँ आक्षेपात्मक शब्द करैत] कनेक प्रेम करत, सेहो नुका नहि सकल। [विराम] एखन जानै पड़त, कोन लड़की नवल कें फँसैबाक चेष्टा क' रहल अछि। [कहैत कहैत जेबी सँ एकटा टाका क बंडिल निका-लैत छथि और तकरा हाथ मे ल' कए लौकैत लौकैत कहैत छथि] मुदा, पहिने टाका आ' कालूसरदार क अड्डा क काज, तकर बाद आन किछु। [शक्ति क मुहँ पर तीव्र प्रकाश-

रेखा पड़ैछ। ओकर आँखि क क्रूरता स्पष्ट दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। आ' कि तखनहि समस्त मंच अन्हार भ' जाइछ।]

चतुर्थ दृश्य

[काल्लू सरदार क अखाड़ा। घर क विध्वस्तप्राय देवाल पर एक दिसि काली क एक चित्र एवं दोसर दिसि एक बन्दूक आ' भाला टांगल अछि। मूर्त्ति आ शस्त्रास्त्र क मध्य किछु अभिनेत्री लोकनिक चित्र साटल अछि। देवी मूर्त्ति क नीचा देवाल क काँटी सब पर किछु मैल कपड़ा एवं दू-तीन टा टोपी टांगल अछि। घर क एक कात मे एक टेबुल आ' दोसर कात एकटा चौकी राखल अछि। चौकी पर ओछाओल चादरि पर दू-तीनटा तकिया राखल अछि। दू-एकटा टूटल-भांगल कुर्सी-टेबुल लग पड़ल रहैछ।

काल्लू सरदार चौकी पर बैसल अछि। ओकर दुनू बगल मे दू आदमी ठाढ़ छैक आ गिलास मे ढारि-ढारि कए ओकरा शराब द' रहल छैक। टेबुल पर दू आदमी बैसल अछि। मन्नूराम टेबुल सँ कनेक हटि कए एक कुर्सी पर बैसल अछि।

अन्हार मे मद्यप सभ क चीत्कार, वाहवाही एवं नृत्य क मोहक ध्वनि सुनना जाइछ। नूपुर क हिल्लोल क संग हरमूनियम आ' तबला क वादन सेहो सुनल जाइछ। मंच पर प्रकाश

पसरितहि नर्त्तकी कें नाच्चैत देखल जाइछ। ओकर प्रति अंग सँ श्रृङ्गार क अभिव्यक्ति चूबि रहल अछि। नाच क संगे-संग गाना सेहो भ' रहल अछि।]

गीत

सैंयाँ जी के गाम सँ
डोलिया ऐलै हे
लहँगा ऐलै चुनरी ऐलै
चोलिया ऐलै हे
सैंयाँ जी के गाम सँ
डोलिया ऐलै हे
बिछुआ ऐलै झुमका ऐलै
नथिया ऐलै हे
सैंयाँ जी के गाम सँ
डोलिया ऐलै हे
आ' दीयर जी के संग मे
समोलिया ऐलै हे
सैंयाँ जी के गाम सँ
डोलिया ऐलै हे

कालू सरदार—[जड़ित कण्ठें] वाह, वाह रे जान! तोहर जवाब नहि भ' सकैछ! [जेबी सँ टाका निकालि कए] हे,

इयैह ले [टाका पर एकटा चुम्मा ल' कए सुन्दरी क दिसि फेंकैत अछि। नर्त्तकी सलाम क' कए टाका लैत एक विशेष भंगिमा क संग सरदार क बगल मे आबि जाइछ। सरदार गर्व और तृप्ति क अनुभव क' रहल अछि। नृत्य पुनः वेग सँ जारी भ' जाइछ। वातावरण मे खूब मादकता और आवेश आबि गेल अछि। हठात् कालू सरदार हाथ सँ इशारा करैछ आ' नृत्य बन्द भ' जाइछ। नर्त्तकी एक दिसि सँ निष्क्रमण क' जाइछ। सरदार बाम दिसि बगल मे बैसल एक गुण्डा कें केहुनी सँ धक्का दैत अछि। धक्का खैलहु उत्तर ओकरा मुहँ सँ बकार नहि निकलैछ। ओ केवल मूड़ी उठा कए सरदार कें निहारि लैछ और पुनः मूड़ी खसा लैछ। सरदार अन्हराक वेश-धारी कोनो दोसरे गुण्डा कें अँगुरी सँ किछु इशारा करैछ।]

दोसर गुण्डा—जी सरदार!

काल्रू सरदार--की रौ, एकरा की भेल छैक? जबाब कियैक नहि [हुचकी] दत अछि साला?

दोसर गुण्डा—सरदार, ई साला तीन-तीन टा बोतलकें बिधवा बना चुकल अछि। ई जवाब कोना देत?

[ई सुनितहि सब हँसि उठैत अछि। काल्रू सरदार क ठहाका सब सँ ऊपर सुनना जाइछ।]

काल्रू सरदार—[कठोर और गम्भीर स्वरें] आब अजुका अपराधी सबकें बजाओल जाय।

मन्नू राम—[एक गुण्डा कें धकिया कए आगाँ ठेल दैत अछि] हे इयेह ।

कालू सरदार—की रौ लूल्हा, एहि बेर सोनपुर क मेला मे तों पाँचे टा नेना कें पकड़ि सकलें ?

लूल्हा—[आतंक क नाट्य करैत] सरदार, एहि बेर पुलिस क बड़ मुस्तैदी छलैक । और पुलिसे......

कालू सरदार—[कहि कए एक लाति मारैत] साला, पुलिस क बच्चा नहितन । खटबहीं तब ने काम बनतौ ? तों त जा कए ऐश मे डूबि जाइत हेबें ।

लूल्हा—[डरैत] दोहाइ सरदार के; फेर एहन.........[अपन कान पकड़ि कए दाँत सँ जी कें काटैत] एहि बेर बकसि देल जाय...... ।

कालू सरदार—[और एक लाति जमबैत] हमरा त मन करैत अछि जे तोहर बुट्टी-बुट्टी काटि कए एखनहि कुक्कुर सब कें खुआ दी ।

लूल्हा—सरदार, हमरा एक बेर और मौका दियह; एकै बेर ।

कालू सरदार—त जो ; हमर दल आ' साज-सरंजाम ल' कए जो सिवेसर थान आ' हँसोथि ला गे सब नेना-भुटका कें । ई हम तोरा आखिरी चांस द' रहल छियौक । [लूल्हाक प्रस्थान । सरदार अंगुरी सँ दोसर गुण्डा कें अपना दिसि बजबैछ । ओ डरल-डरल आबि रहल अछि ।] आ' की रौ, रहमत अली, संसार भरिक सुन्नर छौंड़ी सब कि मरि

गेलक ? भगा कए अथवा बभा कए, जा धरि बढ़िया माल नहि एतौक ता धरि गाहक सब सँ कोन मुहेँ पैसा मांगल जा सकैछ ?

मन्नू राम—[चिकरैत] साला, बाजि नहि हैत छौक ! फूसि कियैक...... ?

रहमत अली—जी, साँझ खुन खूब सजि-धजि कए एक छौंड़ी ओहि सिनुरिया आम गाछ तर ककरहुँ प्रतीक्षा मे ठाढ़ि छल। हम पाछाँ सँ जा कए ओकर हार त छीनि लेलहुँ। [डांड़ सँ निकालि कए सरदार क हाथ मे हार दैत] आ' हाथ क बाला पकड़ि कए खींचै लागलियैक कि ओ तेहन ने चेंचियाबै लागल जे......

काल्हू सरदार—जे तौं साला ओकरा छोड़ि कए पड़ा ऐलें ?

रहमत अली—हूँ सरदार !

काल्हू सरदार—[घूसा मारैत] सरदार क साला नहितन ! त तोरा ओकर गर नहि टीपि द' भेलौक ?

रहमत अली—देखलियैक जे ओम्हर सँ एक गुलगेंठ सन छौंड़ा दौड़ल आबि रहल अछि,। आ' बाला एहन ने सक्त छलैक जे कतबो तिरलियैक ओ निकलबे नहि करलैक।

काल्हू सरदार—[जोर सँ गरजैत] नहि निकलैत छलैक त भुजाली सँ चट दए ओकर हाथ काटि कए बाला निकालि लेतिहें। से कि बाला सँ ओकर हाथे क मोल बेसी छलैक ?

रहमत अली—[अपन कपार ठोकैत] या अल्ला ! ई हमरा

फुरबे नहि करलैक।

कालू सरदार—[ओकरा दिसि आग्नेय दृष्टि सँ देखैत] ई छ, शैतान नहितन! [रहमत अली हँटि कए एक किनार मे ठाढ़ भ' जाइछ।]

मन्नू राम—ई दोजख क कीड़ा एहने भूल परसूओ कैने छल। परसू जे हम बीस हजार टाका देने छलहुँ तेकर खिस्सा छैक। ओहि दिन एक सेठ क नवयुवक पुत्र अपन बहु आ बेटा कें ल' कए मोटर मे कतहु सँ आबि रहल छल। मोटर मे किछु भांगठ लागि गेलैक। हम एहि रहमत अली कें कह-लियैक जे तों एहि नेना कें माय के कोरा सँ लुपकि कए भागि जो। ओ लुपकि कए भागबो कैल......।

कालू सरदार—तकर बाद ?

मन्नू राम—ओमहर हमरा ओ नवयुवक चीन्हि गेल; हमर चमकैत छूरा कें देखितहि कहै लागल जे हमरा पास एहि बैग मे बीस हजार टाका अछि; सब द' दैत छियह, मुदा हमर जान नहि ले मन्नू भाइ। किन्तु हमर छूरा तखनहि ओकर पेट मे ढुकि गेलैक आ' ओ छटपटा कए गिर पड़ल। तखनहि ई शैतान रहमत अली दौड़ कए चट द' ओहि बच्चा कें माय के गोदी मे द' देलैक।

कालू सरदार—[गरजैत आ' क्रोध सँ काँपैत] ई साला......।

रहमत अली—सरदार, ओहि नेना क माय क चेहरा हू-ब-हू हमर छोटकी बहिन सन छलैक। ओकर मासूम चेहरा आ'

आँखि क नोर हमरा नहि सहल गेल। ताहू पर जखन हम देखलियैक जे ओकर साँइयो नहि रहलैक त ओकर एक-मात्र आसरा ओहि नेना कें ल' कए हमरा नहि पड़ा भेल सरदार।

कालू सरदार—ईह! मसीहा बनै चललाह अछि। कोड़ा सँ तोहर खबरि लेल जेतौक। अरे, बहिन हौक कि बेटी, मौगियो जाति क क्यो विश्वास करैत अछि? हा-हा—हा-हा! मौगी जाति! नरक केरे कीड़ा सब! [मन्नू हाथ सँ इशारा करैत अछि। मंच सँ सरदार और मन्नू क अतिरिक्त सब चलि जाइत अछि।]

मन्नू राम—सरदार, सुनबा मे आयल अछि जे एहि पाली क समस्त युवक सब मिलि कए एक "मिथिला युवक संघ" कायम कैने अछि।

कालू सरदार—त ताहि सँ की ?

मन्नू राम—ओ सब हमरा लोकनि कें उपाड़ि देबाक प्रतिज्ञा कैने अछि। अपन-अपन मुहल्ला क रक्षा और शान्ति तथा समाज-सुधार क लेल ओ सब जी-जान लगा देत।

कालू सरदार—जी-जान द' देनाइ एतेक आसान नहि होइत छैक मन्नू। मुदा ई चिन्ता क विषय अवश्य भ' गेल अछि।

मन्नू राम—ओ सब जगह-जगह पोस्टर आदि सेहो लगवौने अछि। हे देखल ने जाउ......[ई कहैत जेबी सँ एक कागज निकालैत अछि। कालू कें कागज देखबैत आ' पढ़ैत—]

ई देखैत छियैक ? [कनेक रेघा कए बाजत] सभापति श्री नवल कुमार।

काल्ह सरदार—ई साले नवल कुमार जौं कुमारे छथि त माइ-बाप हकन्न क' कए कानतन्हि आ, जौं बियाहल छथि त हुनक बहु कें थोड़बहि दिन मे राँड़ बनाबै पड़त...... ।

पंचम दृश्य

[शक्ति क प्रकोष्ठ मे शक्ति आ' लखपति बैसि कए गप क' रहल छथि। मंच क पश्च भाग क ऊर्ध्वांश कारी पर्दा सँ झाँपल अछि। प्रकाश-रेखा शक्ति और लखपति पर पड़ैत अछि।]

शक्ति—अहाँ क संग ओहि दिन जे बात भेल छल, ताहि अनुसार हम काल्ह सरदार क अखाड़ा गेल छलहुँ।

लखपति—[साग्रह] अच्छा ! त की देखलहुँ ?

शक्ति—देखलहुँ जे ओकरा पास जतबाक दैहिक शक्ति छैक ततबाक बुद्धि नहि छैक। अहाँ त जनिते छी जे आजुक संसार मे कोनो काज करबाक लेल तीन गोट वस्तु क संतुलित संयोग आवश्यक अछि।

लखपति—से की ?

शक्ति—शक्ति, बुद्धि, अर्थ—अर्थात् काल्ह, हम आ' अहाँ !

लखपति—वाह् वाह् ! से जौं होइ तखन त''''''

शक्ति—हँ; त हम जे कहैत छलहुँ से ई भेल जे काल्ह सरदार क

व्यवसाय क एखन जे रूपरेखा अछि, ताहि सँ ओकरा मनहि सन्तोष भ' जाय, मुदा हमरा लोकनिक पेट नहि भरत। तेँ हमर विचार जे········[वाक्य केँ असमाप्त राखि किछु सोचै लग छथि।]

लखपति—हँ हँ, की विचार छल, कहल ने जाउ !

शक्ति—जौं हम सब एहि व्यवसाय मे उतरी, त सब दिसि एना सम्हारि कए उतरी जाहि सँ लाभक अङ्क लोभनीय भ' उठै।

लखपति—नहि बुझलहुँ, अहाँ की कहै चाहैत छी !

शक्ति—माने, ओना त कालू सरदार अपन बुद्धि-विवेचनानुसार सम्भाव्य सब तरहक विपत्ति सँ सावधान रहैत अछि।

लखपति—सम्भाव्य विपत्ति क अर्थ की ? अहाँ पुलिस द' कहि रहल छी की ?

शक्ति—हँ, पुलिस त अछिये, किन्तु मात्र पुलिसे टा नहि। अहाँ त जनिते छी, एहि शहर मे छोट मोट बहुतो कालू सरदार छथि, और ओहि दल सब मे मुहल्ला बाँटल रहैत छैक। यदि कोनो आन दलक लोग अपन सीमा क बाहर जा' कए किछु करै चाहैत अछि, त; दुनू दल मे आपसी लड़ाइ भ' जाइत छैक।

लखपति—हँ; से त सुनैत छियैक।

शक्ति—ओना आन सब दल सँ कालू सरदार क दल बेसी होशियार अछि। तेँ पहिने त एकरा सब सँ हम सब व्यवसाय कीनि ली। आ' तकर बाद ताही मे किछु सम्प्रसारण करी।

लखपति—सम्प्रसारण क अर्थ ?

शक्ति—इयैह जे एहि दलक क्षेत्र बढ़ाबी आ' एहि मे किछु और उपयुक्त लोक जुटाबी। संगहि सन्तुलन रखबाक लेल तथा अखाड़ाक सब प्रकार क सूचना पबैत रहबाक लेल एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति कें काळू सरदार क पाछाँ लगौने रही।

लखपति—से कोना भ' सकैछ ? एहन लोक ओहि दल मे सँ भेंटत ?

शक्ति—अवश्य भेंटत।

लखपति—मुदा, ओहो लोक जे विश्वासी हैत, तकर की निश्चय अछि ?

शक्ति—लखपति जी, हम त पहिनहि कहने छी जे एखन धर्म, पुण्य, ईश्वर आ' विश्वास—सब किछु टाका सँ कीनल जा सकैत अछि। और अहाँ त लखपति छी, विश्वास त अर्थ क लोभें स्वयम् आबि कए अहाँ क पैर चाटत।

लखपति—[हँसैत] हँ, से त ठीके !

[तखनहि 'मिथिला युवक संघ' क प्रतिनिधि लोकनि प्रवेश करैत छथि। संग मे नवल सेहो अछि। बुझा पड़ैछ वैह अगुआ हो।]

नवल—[शक्ति बाबू दिसि इंगित करैत] ई हमर बाबूजी छथि।

युवक लोकनि—[हाथ जोड़ि कए शक्ति बाबू दिसि साकांक्ष होइत] प्रणाम !

नवल—[लखपति बाबू दिसि इंगित करैत] और ई हमर काका जी अर्थात् बाबू जी क मित्र सेठ लखपति बाबू छथि।

युवक लोकनि—[पुनः हाथ जोड़ि कए लखपति बाबू दिसि साकांक्ष होइत] प्रणाम !

नवल—ई प्रकाश बाबू, मिथिला युवक संघ क महामन्त्री थिकाह और ओ दीपक बाबू, संघ क सहायक मन्त्री।

प्रकाश—आ' नवले बाबू हमरा लोकनि क संस्थाक सभापति छथि।

लखपति—अच्छा ! हम त बुझैत छलहुँ जे नवल विश्वविद्यालयेटा मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान पबैत अछि !

दीपक—जी नहि; समाज सेवो मे नवल भैया सब सँ आगाँ छथि।

शक्ति—त एहि संघ मे की काज हैत छैक ?

प्रकाश—संघ समाजक नव-निर्माण करत।

शक्ति—ई नव-निर्माण कोना हैत ?

नवल—एकरा लेल चोरी, डकैती, बटमारी, मिलाबट, काला-बजारी और घुसखोरी कें बन्द करबा देमै पड़त।

लखपति—एहि लेल संघ ? ई सब काज त पुलिसे क' रहल अछि। तखन...... ।

प्रकाश—केवल पुलिस वा केवल सरकार की क' सकैछ ? जनता क सहयोग क बिना...... ।

लखपति—त जनते एकरा लेल की क' सकैत अछि ?

नवल—बहुत किछु क' सकैत अछि। आइ प्रबुद्ध युवक-वर्ग प्रण क' लेने अछि जे समाज क छाती सँ एहि क्षय-रोग क कीटाणु क ध्वंस करबा लेल ओ अपन जीवन लगा देत।

लखपति—मुदा तों सब जाहि काज मे हाथ देने छह, से बड़ कठिन अछि।

नवल—से हम सब जनैत छी काकाजी। काज कठिन नहि हो त करबा मे मनो कोना लगतैक ?

शक्ति—[कठोर और उच्च स्वरें] किन्तु ई बहुते भयानक काज छन्हु। ओ अग्नि-पंथ थीक। जानि-बुझि कए आगि मे नहि कूदह नवल ! तोरा सब कें पूँजीपति, पुलिस आ सरकार सभक बिरोध मे काज करै पड़तह। से कि सम्भव छैक ?

नवल—एहि आगि मे किछु लोग कें अपन सर्वस्व क होम करै पड़तैक; किछु ललना कें एहि जौहर मे कूदै पड़तन्हि, अन्यथा समस्त समाजे एहि प्रचण्ड अग्नि-ज्वाल मे भस्मीभूत भ' जायत।

लखपति—बेस-बेस ! तोरा सब सँ तर्क नहि करबाक चाही। तों सब नवयुवक छह। एहि बयस क इयैह धर्म थिकैक। मुदा थोड़बेक आघात क पश्चात् तोरे दल मे सँ किछु जन बिका जैथुन्ह, किछु जन बहकि जैथुन्ह। सब दिन सैह भेल आयल छैक।

नवल—काकाजी, आब युग बदलि गेल छैक। हमरा सभ क संघ मे लौह-संगठन अछि। हम सब आँधी-तूफान, आगि-पत्थर, भूचाल, महानाश सब सँ लड़ि सकैत छी। केवल अपने लोकनिक आशीर्वाद चाही।

लखपति—आशीर्वाद हम सब सदति द' रहल छियन्हु।

प्रकाश—और आशीर्वाद रूप मे चन्दा सेहो देल जाउ। हमरा लोकनिक प्रार्थना जे अपने लोकनि एहि संस्था क संरक्षक बनि जाय। एक-एक सौ क' कए लागत।

लखपति—बेस-बेस; लिखलैत जाह। हमर दुनू गोटेक दू सौ टाका नवल क हार्थे कालिह पहुँच जैतह।

प्रकाश—बेस त हमरा लोकनि कें आज्ञा देल जाय......।

लखपति—बड़ नीक लागल तोरा सभ क उत्साह देखि कए। अपन युवावस्था मन पड़ि गेल। बीच-बीच मे आबि कए संघ क प्रगति क समाचार देत रहिह।

['प्रकाश, दीपक आ' नवल प्रणाम करैत प्रस्थान क' जाइत छथि। लखपति आ' शक्ति बाबू युवक लोकनिक गमन-पथ दिसि एक टक निहारैत रहि जाइत छथि।]

शक्ति—हमरा त आश्चर्य लगैत अछि, ई सब कहिया भेल, कोना भेल? के एकरा सभ क माथ मे ई कीड़ा ढुकौलक। बाप रौ बाप!

लखपति—हमरा त किछु फुरिते नहि अछि। ई घरे मे कतय सँ प्रह्लाद टपकि पड़ल?

शक्ति—एकर अर्थ इयैह जे एखन सँ आरो सतर्क रहै पड़त

[ई कहि कए एकटा क्रूर दृष्टि सँ कनेक ऊपर दिसि तकैत रहैत छथि। लखपति शक्ति क दिसि प्रश्नात्मक मुख ल' कए देखैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइछ।]

यवनिका-पतन

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

[यवनिका उत्तोलित होइछ। सुनीता मंच क पश्च भाग क ऊर्ध्वांश-स्थित पार्कक वेदी पर बैसल अछि। नवल ओही ठाम एक टा गाछ लग ठाढ़ अछि।]

नवल—सुनीता !

सुनीता—[अपन आंगुर क नह क दिसि तकैत] ऊँ !

नवल—एक टा बात जनैत छी सुनीता ?

सुनीता—की ?

नवल—बाबूजी कें हमरा दुनू क विषय मे सब किछु पता चलि गेल छन्हि।

सुनीता—नीके भेलैक। एक दिन त पता चलबे करतिहैक।

नवल—[असहिष्णु जकाँ] नहि, अहाँ किछु बुझते नहि छी।

सुनीता—हम सब किछु बुझैत छी।

नवल—की बुझलहुँ कहू त ?

सुनीता—बुझलहुँ जे अहाँ एक नम्बर क डरपोक प्रेमी छी। [कनेक हँसि कए] अहाँ त पुरुष छी, अहाँ एतेक चिन्तित कियैक भ' रहल छी ? अहाँ अपन बाबूजी क पास हमरा

ल' जा कए कहि नहि सकैत छी—बाबूजी ! हम अहाँ लेल दासी बनलहुँ ! [एतबहु पर नवल कें निर्वाक देखि] बुझलहुँ जे अहाँक बाबूजी अत्यन्त क्रोधी, अत्यन्त धनिक, अत्यन्त......की ने कहैत अछि सैह छथि । मुदा, हम सब त कोनो अपराध नहि क' रहल छी ।

नवल—[असहिष्णु जकाँ बात कहैत] से सब युक्ति गढ़ि कए हजारो बेर अपना कें समझौलहुँ, मुदा हमर बाबूजी कें नहि चीन्हैत छियैक । ओ एहि सब बातकें एकहि हँसी सँ उड़ा देताह।

सुनीता—अच्छा ; हमरा ई त बताउ, ओ अहाँ क करिये की सकैत छथि ? भगा देताह ? सम्पत्ति छीनि लेताह ? [नवल कें निरुत्तर देखि कए] ओ तकर अर्थ, अहाँ सम्पत्ति हेरैबाक डरें...... ।

नवल—नहि सुनीता, नहि ! अहाँ सँ बढ़ि कए एहि संसार मे हमरा लेल आन कोनो सम्पत्ति नहि अछि । [विराम] सुनीता, अहाँ त जनिते छी जे अहाँ हमर कविता छी। आ' कविता क अर्थ की होइत अछि जनैत छी ?

सुनीता—की ?

नवल—'क' सँ कान्ति, 'वि' विस्तृति और 'त, सँ तृप्ति ।

सुनीता—माने ?

नवल—'कान्ति' क अर्थ सुन्दरता, आ' सुन्दरता क अन्तिम आकार क परिमाप हम एकहि वस्तु सँ करैत छी ।

सुनीता— की थीक ओ वस्तु ?

नवल—प्रेम, अहाँ क प्रेम सुनीता ! और सुनू—'विस्तृत' एहि लेल कहलहुँ जे अहाँ क मन क आँगन एत्तेक विस्तीर्ण विजनता क चादर ओढ़ने अछि, जकर परिमाप हमर प्रेम क कान्तियहु सँ नहि कैल जा सकैछ। मुदा......

सुनीता—मुदा की ?

नवल—मुदा तैयहु एक टा अद्भुत तृप्ति पबैत छी अहाँ कें पाबि कए। [किछु काल मौन रहबाक पश्चात्] सुनीता ! अहाँ सम्पत्ति क बात करैत छलहुँ ने ? [पुनः बिराम] हमर बाबूजी हमरा लेल विशाल सम्पत्ति जमा कैलन्हि, हमरा सब किछु देलन्हि, मुदा दू टा वस्तु नहि द' सकलाह—शान्ति आ' तृप्ति, जे अहीं हमरा द' सकैत छी।

सुनीता—हम अहाँ कें की देब ? हम त अपनहि छी एक रिक्ता नारी ?

नवल—सुनीता, हम अहूँ सँ बेसी रिक्त छी।

सुनीता—अहाँ कें कथी क अभाव अछि ?

नवल—अभावक अभाव सुनीता। सब किछु पाबैत-पाबैत हम थाकि गेल छी, विश्वास करू ! अहाँ नहि जनैत छी, हमर विषाद कतय अछि।

सुनीता—कतय अछि ?

नवल—[म्लान रूपें हँसि कए] हम फाटल अंगा पहिरैत छी से लोग बुझैत अछि, ईहो गरीबी क शौक थीक, तमाशा

थीक। और हम नीक पहिरैत-ओढ़ैत छी, त ओ बड़प्पन क शान कहबैत अछि। सुनीता, देखैत छी जे एहि पृथ्वी पर धनिक, दरिद्र, मध्यवर्ग—क्यो नहि विश्वास करैत अछि हमरा। [विराम] की आबहु अहाँ कहब जे अहाँ हमरहु सँ रिक्त छी ?

सुनीता—हमरा की अभाव रहत कहू त ? जकरा पास किछु छैक, अभाव तकरहि होइत छैक। हमरा त किछु अछिये नहि। [विराम] जखन छोट छलहुँ माय तखनहि मरलीह, और हमर बाबूजी जीवित छथि, मुदा......

नवल—मुदा की ?

सुनीता—[विराम] एक दिन ओ छल जखन बाबूजी हमरा माय क अभाव कें बुझैये नहि दैत छलाह। आ' एखन वैह देव-प्रतिम बाबूजी दानवीयता क कोखि मे धसल जाइत छथि। समाज हुनका एक दिन जाहि सम्मान क आसन पर बैसौने छल, ओ एखन तकर एक-एक सूत बेचि कए शराब क बोतल क ढेरी लगा रहल छथि।

नवल—अहाँ एखनहि एत्तेक निराश नहि होउ सुनीता !

सुनीता—एक-एक समय सोचैत छी जे हमहूँ जौं दुनिया क और पाँचटा साधारण कन्या जकाँ अर्ध-सुन्दर, अर्ध-शिक्षित, अर्ध-सुखी होइतहुँ त कत्तेक नीक हैतिहैक ! अहाँ नहि जनैत छी हम प्रतिदिन एकटा दुःस्वप्न कें कोरा मे ल' कए घुमैत छी। नहि जनैत छी, कालिह की हैत—कालिह

बाबूजी कें कोन अवस्था मे देखब !

नवल—मुदा, अहाँ हुनका रोकि नहि सकैत छी ? हुनका घुरा नहि सकैत छी ओहि पतन क पथ सँ ?

सुनीता—हम त हुनका कतेक बेरि समझाबैत छी। दिन मे ओहो हमर सबटा बात मानबाक प्रतिश्रुति दैत छथि, मुदा राति होइत देरी पुनः······[किछु काल मौन रहि कए पुनः कहैछ] परंच इयेह बाबूजी पहिने जब राति कें घर घूरैत छलाह तखन······[वाक्य असमाप्त रहि जाइत अछि। बत्ती मिझा जाइत अछि।]

द्वितीय दृश्य

[अन्हारहि मे यन्त्र संगीत क सहयोगें एकटा सुख श्राव्य गीत सुनना जाइछ। किछु काल क पश्चात् मंच क अग्रभाग आलोकित भ' उठत अछि। मंच क पश्च भागक ऊर्ध्व एवं अधो अंश—दुनू एकटा ड्राइंग रूम क आँकल दृश्य-पट सँ झाँपल रहत ; मात्र अग्र भाग-स्थित विनय बाबू क प्रकोष्ठ मे सोफा-सेट, स्टैंडिंग लैम्प, टेबुल आ' एक कोन मे एकटा रेडियो शोभा दैत अछि। टेबुल क चारूकात कैकटा कुर्सी राखल रहैछ। सुनीता कें टेबुल पर बैसल एकटा पत्रिका उनटाबैत रेडियो-संगीत सुनैत देखल जाइत अछि। गीत क अन्तिम चरण होइत काल नेपथ्य सँ विनय क हाँक सुनाइ पड़ैत अछि।]

विनय—[नेपथ्य सँ] सुनीता, सुनीता ! नीतू बेटी, दरबाजा खोलह ।

सुनीता—आबि रहल छी बाबूजी ! [आनन्दित भए रेडियो बन्द क' कए पत्रिका कें टेबुल पर धरैत ओ मंच क प्रवेश-द्वार सँ अन्तराल मे जा कए पुनः विनय क संग घर मे प्रवेश करैत अछि ।]

विनय—की करैत छलह बेटी, रेडियो सुनि रहल छलह की ?

सुनीता—[विनय क हाथ सँ फाइल आ' बैग ल' कए टेबुल पर धरैत] हँ बाबूजी ! बहुत सुन्दर गीत होइत रहैक ।

विनय—[हँसैत] बेश, बेश !

सुनीता—[चारूकात निहारैत अछि जे बाबूजी कथीक इंगित क' रहल छथि । मुदा किछु नहि बुझि कए कहैत अछि] की बात थीक ? [विनय कें निरुत्तर भ' कए चुपचाप हँसैत देखि मनुहार क मुद्रा मे कहैछ] कियैक नहि किछु करैत छी बाबूजी ? [तैयहु विनय कें मृदु-मृदु हँसैत देखि] बाबूजी, कहू ने......

विनय—सुनीता ! आइ जे चाहैत छें, मांगि ले !

सुनीता—से कियैक बाबूजी, कोन खुशी से ?

विनय—अरे आइ तों कतेक नीक लगैत छें, से जनैत छें ?

[विनय कोट खोलि कए सोफा पर बैसैत छथि । सुनीता टेबुल सँ कोट-फाइल आदि ल' कए भीतर चलि जाइत अछि आ' सब किछु राखि कए पुनः मंच पर प्रविष्ट होइत अछि ।

विनय पुनः मुसकिया कए कहैत छथि] सत्ते कहैत छियौक, आइ तों जे साड़ी पहिरने छें, हमरा सब सँ पसिन्न अछि। एहि पोशाक मे सुन्दर सुन्दरतर भ' जाइत अछि। और—

[कहैत-कहैत चुप भ' जाइत छथि।]

सुनीता—और की बाबूजी ?

विनय—[वाष्प-भाराक्रान्त कण्ठ सँ] तोहर माइयो ठीक एहने साड़ी पहिरैत छलीह। [स्वप्निल भाव सँ] कतेक सुन्दर लगैत छलीह ओ ! [सुनीता क दिसि ताकैत] सुनीता ! शरत् काल क भिनुसरका ओस पर द' कए भगवती मन्दिर गेल छें ?

सुनीता—हँ बाबूजी !

विनय—तोहर माय ओहि मन्दिर क प्रतिमा सन लगैत छलीह। भोरे, पक्षी क कलरव सँ पूर्वहि स्नान क' कए पूजा क पुष्प-संग्रह करैत जखन ओ इयैह साड़ी पहिरि कए उद्यान क पथ पर सँ अबैत छलीह, तखन बुझाइत छल—हमर पूजा क घर कें शून्य क' कए एक साकार प्रतिमा घास क माथ पर पसरल किरण पर सँ पैदल चलि रहल हो ! [कहैत-कहैत स्वप्नावेश मे विनय क आँखि निमीलित भ' जाइत अछि। सुनीता मूड़ी झुकौने ठाढ़ रहैत अछि। किछु काल दुनू गोटे मौन रहैत छथि। विनय यथार्थ क उपलब्धि क' कए अन्य स्वर मे कहैत छथि] अरे, हम त अतीत क चित्रे बनाबै बैसि गेलहुँ। सुनीता बेटी, आइ तोहूँ निर्वाक निश्चल पाथर क

मूर्त्तिये बनि गेलें ? किछु जलपान नहि करबें की ?

सुनीता—चलू ने ! हमर त सब किछु तैयारे अछि। अहाँ एखन धरि हाथ-मुहँ नहि धौयलहुँ अछि। चलू, चलू!

[सुनीता विनय कें चरिया कए ल' जाइत अछि। बत्ती मिझा जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[मंच अन्हार मे डूबल रहैत अछि, मुदा अन्हारहि मे सुनीता क कण्ठ-स्वर नेपथ्य सँ सुनना जाइछ। मंच क एक कात ठाढ़ भेल नवल क मुख पर प्रकाश-रेखा पड़ैछ।]

सुनीता—[नेपथ्य सँ] और तकर बाद क इतिहास त अहाँ कें किछु-किछु बुझले हैत। तकर बाद हुनक आँखि-भौं सब किछु बदलैत रहल—ओ दिन-दिन बदलि रहल छलाह। आरम्भ मे हम किछु नहि बुझने छलहुँ, किन्तु जखन बुझै लगलहुँ तखन हुनका समझैबाक बहुत चेष्टा कैल, मुदा व्यर्थ। ओ ओहि नरक क पंथ सँ नहि घुरलाह।

नवल—एहन आन क्यो नहि छलैक जे हुनका एहि विनाशक पंथ सँ घुरैबाक चेष्टा करतिहैक ?

सुनीता—नहि। बाबूजी सब दिन धर्म-भीरु तथा अन्तर्मुखी प्रवृत्तिक लोग रहलाह। हुनका एको टा मित्र नहि छन्हि। हमरा लोकनि आइ धरि हुनक कोनो मित्र कें नहि देखने

छियन्हि। ने क्यो हुनका सँ मिलबा लेल अबैत छन्हि आ' ने ओ कतहु जाइत छथि।

नवल—आश्चर्य !

सुनीता—ओ सिद्धान्ततः अपन कार्य-क्षेत्र और परिवार कें सर्वथा फराके रखबाक पक्षपाती छथि।

नवल—तखन की भेलैक ?

सुनीता—तकर बाद शराब क ऊपर जुआ क नशा आबि कए राज जमौलक। एवं ओहि दुनू क साम्राज्य चलैत रहल ता धरि जा धरि हमर आ' हमर बाबूजी क सोना क संसार दुःस्वप्न नहि बनि गेल !

नवल—तकर बाद की भेलैक सुनीता ?

सुनीता—तैयहु हम ई साड़ी पहिरैत रहलहुँ। ओ कखनहु घरियो कए नहि ताकैत छलथि हमरा दिसि—हमर पोशाक क दिसि; अतीत क दिसि—अतीत क स्वप्न क दिसि। और तकर बादो बाबूजी बहुत राति कें घर घुरैत रहथि···
[वाक्य असमाप्त रहि जाइछ कि तखनहि मंच क अग्रभाग आलोकित भ' उठैत अछि। एही मध्य घर क पाछाँ आँकल देवाल क स्थान पर एकटा कारी पर्दा भूलि रहल अछि। सोफा, टेबुल रेडियो आदि नहि रहैछ। घर मे सर्वत्र मलिनता क चिह्न स्पष्ट रूपें परिलक्षित भ' रहल अछि। घर मे मात्र दू-तीन टा कुर्सी आ' एकटा चटाइ देखना जाइछ। सुनीता कोनो फाटल साड़ी सी रहल अछि।]

विनय—[नेपथ्य मे विनय बेताळा चुटकी बजा कए गीत गबैत छथि।]

अजहुँ न ऐला मोर बलमुवाँ
सावन बीतल जाय
हायरे देखू, सावन बीतल जाय !

[प्रविष्ट भ' कए] सावन बीतल······[चीत्कार क' कए] सुनीता, सुनीता ! [फेरो धीरे]······बीतल जाय ! [पुनः चिकरि कए] सुनीता !

सुनीता—[सिलाइ छोड़ि कए उठैत] की ?

विनय—ई दरबाजा साँझे पहर कियैक बन्द क' देने छें ?

सुनीता—एखन त आधो राति बीति गेल अछि बाबूजी, आ' तकर अतिरिक्त, हम त दरबाजा बन्द नहि······

विनय—आह ! तों नहि बन्द केलें त आन के करत ?

सुनीता—हम बन्द करितहुँ त अहाँ ऐतहुँ कोना ?

विनय—आह ! बकथोथनि बन्द कर। ई सँझुका पहर देलें नशा कें बिगाड़ि······सावन······सावन [प्रमत्त जकाँ कहैत-कहैत अगुआ जाइत छथि एवं कुर्सी मे धक्का खा' कए] धत् ! [लात्ति मारि कए कुर्सी कें फेंकि दैत छथि।] ई कनटर के राखलक अछि एतय, कत्तेक बेरि कहने छी जे······ [कहैत कहैत हठात् पैर मे किछु देखबाक अभिनय क' कए] ईह ! देखह त, देखह त, ई कनटर हँटाबै मे कत्तेक खून बहार भ' गेल अछि !

सुनीता —कहाँ किछुओ भेल अछि बाबूजी ?

विनय—तोरा त सूझते नहि छौक ! देखैत नहि छें, कतेक खून बहि रहल अछि। [कनेक अगुआ' कए] हुँ, कतेक खून ! [कनेक माथ कें झुका कए निम्न स्वरें] खून, ऐ खून ! सुनह, सुनह, सुनह ने ! [फेर मुँह क दुनू कात हाथ द' कए जोर सँ] खून ! तों सुनि रहल छहक ? हमर खून भेल अछि। [फेर कानैत-बिलपैत] ई कनटर, बुझलहुँ कि नहि, ई कनटर हमर खून कैलक अछि। हे, हे, हम मरि गेलहुँ। [हुचकी] हँ मरलहुँ, आ' तकर बाद······

सुनीता—ककर बाद, के मरलैक ? की सब बकि रहल छी बाबूजी ?

विनय—[तर्जनी हिला कए] नहि, हम बकि [हुचकी] नहि रहल छी। साँचे [हुचकी] कहैत छियौक, ई सब मिलि कए हमरा खून कैलक अछि। आ' तकर [हुचकी] बाद दोस्त, हँ हमर दो-ओ-स हमरा कहलक,........ [कनेक अगुआ कए काने-कान कहबाक भंगिमा मे] की कहलक जनैत छें ?

सुनीता—[मुहँ घुमा लैत] नहि।

विनय—[क्रुद्ध भए] अँए, तों हमरा घृणा करैत छें ? [शिशु जकाँ रूसि कए कानैत] जो, तोरा हम नहिं कहबौक !

सुनीता—[अश्रुरोध करैत] नहि बाबूजी, हम अहाँ कें घृणा कियैक करब ? जे सुनीता अहाँ कें घृणा करैत छल, हम

तकर गर घोंटि देलहुँ अछि। कहू ने, की कहैत छलहुँ।

बिनय—[हँसैत] हे, हे ! हम देखैत छलियौक तों सुनै चाहैत छें वा नहि। [बिराम] असल मे [हुचकी] नीतू बेटी, हमरा कानै नहि अबैछ, हसैयो नहि अबैछ, विश्वास कर !

सुनीता—हँ बाबूजी, हम विश्वास करैत छी।

बिनय—जनैत छें, हम जखन तोरे बयसक छलहुँ, तखन बाबूजी मरि गेलाह। हम नहि [हुचकी] कनलहुँ। तौहर माय जहिया तोरा छोड़ि कए बिदा भेलीह, हम तैयहु नहि कनलहुँ। आ' दू टा कारी हाथ, बुझलें, दू टा हाथ—जखन हमर सबटा सम्पत्ति छीनि लेलक, हम तखनहुँ नहि...... ।

सुनीता—बाबूजी !

बिनय—हँ रे, हम सत्य कहैत छियौक। हमरा के सब ने धक्का देलक। धक्का खा कए हम जतय खसलहुँ ओ छल एकटा कसाइखाना, जतय लोग अपन मांस बेचि-बेचि कए खूब कमा सकैत छल। बुझलें ? [सुनीता उत्तर नहि द' कए नोर नुबैत माथ नीचाँ करैत अछि। विनय ताहि दिसि लक्ष्य नहि करैत कहैत छथि] हम देखलहुँ, युवती सब ओतय खूब कमबैत छल। हम एकटा दसटकही लड़की सँ पुछलहुँ, ई कोन देश थीक ? ओ कहलक [कहि कए उच्च स्वर मे हँसैत, गिरैत, फेरो अपना कें सम्हारैत] ओ की कहलक जनैत छें ?

सुनीता—की बाबूजी ?

विनय—ओ कहलक, ओहि जगह कें संसार कहल जाइत छैक।

कह त केहन सुन्दर नाम थीक—सं-सा-र ! [किछु काल मौन रहि कए] हम कहलहुँ, हमहूँ बेचब मांस। तखन कसाइ बाजल, "तोहर मांस सड़ि गेलह, नहि चलतह। तखन हँ, आत्मा बेचह त किछु मिलि सकैत छह।" तखन हम सब किछु बेचि-बेचि कए तकर बदला मे लेलहुँ [पाकिट सँ बोतल निकालि कए] हे ई ! [कहि कए बोतल कें चुम्मा ल' कए कनेक पीयैत छथि कि सुनीता चट द' कए हुनक हाथ सँ बोतल छीनि कए फेंकि दैत अछि।]

सुनीता—बाबूजी ! उठू आ' चलू एतय सँ, गप त भ' गेल। [कहैत-कहैत सुनीता विनय क हाथ ध' कए जोर क' कए भीतर ल' जाइत अछि।]

विनय—[जाइत-जाइत] नहि-नहि, हमर सबटा गप कहाँ शेष भेल अछि ? सब कें कहाँ......[कहैत-कहैत सुनीता क संग प्रस्थित होइत छथि। मंच अन्हार भ' जाइछ।]

चतुर्थ दृश्य

[अन्हारहि मे सुनीताक क्रन्दन क शब्द सुनना जाइछ। मंच क्रमशः आलोकित होइछ। सुनीता कें पार्क क वेदी पर बैसल देखना जाइछ। नवल वेदी क पाछाँ ठाढ़ रहैत अछि।]

नवल—सुनीता, अहाँ एतेक निराश नहि होउ ! अहीं त हमर शक्ति छी।

सुनीता—एहि जीवन सँ लड़ैत-लड़ैत ताकते ओरा गेल अछि। एखन बाँचल छी—मरि नहि होइछ तँ। हम अहाँ कें की शक्ति देब ?

नवल—किन्तु सुनीता, अहाँ क पिताजी कोनो एकटा गम्भीर चक्र-चालि क शिकार छथि। जीवन हुनका धोखा देने छन्हि और ओहो तैं शराब पीबि कए जीवन कें धोखा देमै चाहैत छथि। मुदा ई भेल आत्महनन क पथ। एहि से मनुष्य क रीढ़ क हड्डी टेढ़ भ' जाइत छैक।

सुनीता—मुदा की करू ? कोनो पथे नहि देखाइ पड़ैछ।

नवल—पथ छैक सुनीता! दृढ़ आस्था क संग प्रयास करै त मनुष्य अपन अवस्था परिवर्त्तित क' सकैछ। अहाँ कें संघर्ष करै पड़त; निर्मम दुर्भाग्य सँ अहाँ कें प्रतिशोध लेमै पड़त।

सुनीता—से भ' सकैछ ?

नवल—अवश्य! आ हमहू सब त सैह क' रहल छी। अपन समाज क छाती पर सँ समस्त दुर्नीति कें उन्मूलित करबा क लेल कटिबद्ध होमै पड़त। संसार कें शान्तिमय बनवै पड़त जतय ने ककरहु पतन हैत आ' ने दम्भ क उत्थान।

सुनीता—[साग्रह] की हमहूँ एखन कोनो काज मे लागि सकैत छी ?

नवल—अवश्य! आइ भारत क नारी जे नीक काज करत, कालिह दुनिया सैह पथ अपनाओत और आइ नारी लोकनि जे करती, कालिह समस्त सन्तान ताही पथ पर चलै लागत।

तँ, अहाँ आ' अहाँ सन शक्ति सब एहि सत्कर्म मे नहि लागै त धर्म क चक्र अधर्म कें पीसत कोना ?

सुनीता--तखन हमहूँ आइ सँ अहाँ सभ क संग काज करब।

नवल– अवश्य करू।

सुनीता—मुदा, एहि लेल हमर परीक्षा नहि लेल जायत ?

नवल—सुनीता, मनुष्य क परीक्षा काल क धधकैत आगि मे होइत छैक। और अहाँ त......[तावत् त्रस्तव्यस्त जकाँ प्रकाश आ' दीपक क प्रवेश। ओ सब हपसैत-हपसैत प्रविष्ट होइत अछि] की बात थीक दीपक ? की भेलह ?

दीपक—नवल भाइ, एतेक दिन क सतर्कता क बाद बुझाइछ जे आइ एकटा बड़का अपराधी रंगले हाथ पकड़ल जायत।

नवल—ई अपराधी थीक के ?

प्रकाश—वैह, रामभरोस राम।

नवल - ओ त हमरा सभ क संरक्षक मे सँ छथि !

दीपक—ओ रक्षक की रहताह, ओ त भक्षक छथि। हजार-हजार शिशु क मुहँ क खाद्य छीनि कए अपन गुदाम क मोटायल मूस सब कें खुआबैत छथि।

प्रकाश—और, जाहि सँ हमरा सभ क नजरि हुनका पर नहि जाइन्ह ताहि लेल संरक्षक बनि गेल छथि। संगहि ओ त्राण-समिति क सभापति सेहो छथि ! मुदा हमरा आइ एक हप्ता सँ सन्देह भेल और हम दुनू गोटे नजरि रखै लगलहुँ।

दीपक—आ' आइ हुनका रंगल हाथे पकड़बाक सुयोग आयल अछि।

नवल—शाबाश !

दीपक—गरीब लोकनिक लेल प्राप्त औषधि तथा शिशु-खाद्य आदि चोरा कए काला बाजार मे बेचबाक लेल कल्याण-केन्द्र सँ हटाओल जा रहल अछि। हम सब जौं जल्दी पहुँचि जाय......

प्रकाश—जल्दी ! समय एकदम नहि अछि......

नवल—तखन चलैत चलू—[दीपक और प्रकाश वेग सँ प्रस्थान करैत अछि। नवल हठात् सुनीता दिसि देखैत] अहाँ काज करै चाहैत छलहुँ ने ?

सुनीता—[उच्छ्वसित कण्ठें] हँ, अवश्य।

नवल—त अहाँ जाउ थाना दिसि आ' पुलिस कें संग ल' कए सोझे कल्याण-केन्द्र चलि आयब !

सुनीता—बेस, किन्तु......

नवल—एखन किन्तु-परन्तु क अवसर नहि अछि सुनीता ! परीक्षा आरम्भ भ' गेल अछि।

[नवल आ' सुनीता विपरीत दिशा मे निष्क्रमण करैत अछि। प्रकाश नवल क संग चलि जाइछ। मंच अन्हार भ' जाइछ]

पंचम दृश्य

[सर्वत्र अन्हार पसरल अछि। अस्पष्ट एवं आवेशपूर्ण शब्द तथा कैक गोटे क चंचल पग-ध्वनि सुनना जाइछ। पश्चात् कनेक मन्द प्रकाश जकाँ होइत अछि। मंच क पश्च-भाग क दुनू अंश कारी पर्दा सँ झाँपल अछि। मंचक अग्र-भाग क एक कोन मे एक कूड़ादानी और तकर पाछाँ एक टिमटिमाइत लाइटपोस्ट देखना जाइछ। मंच क अग्रभाग क आन अंश मे पुनः अन्हार पसरि गेल अछि। प्रकाश-रेखा किछु इतस्ततः धावमान लोकक पैर पर पड़ैत अछि।]

रामभरोस—[प्रविष्ट भ' कए] मन्नूराम ! ऐ मन्नूराम !

मन्नू राम—[विपरीत दिशा सँ मंच पर प्रविष्ट होइत अछि] किछु कहैत छी रामभरोस बाबू ?

रामभरोस—अरे और की कहब ? और कत्तेक देर लागतइ काज शेष करबा मे ?

मन्नूराम—अहाँ घबड़ाबैत कियैक छी ?

रामभरोस—नहि-नहि, तों सब नहि बुझबहक ! जल्दी सबटा दवा लॉरी मे चढ़बा दहक, नहि त......

मन्नूराम—नहि त की हैत ?

रामभरोस—[दुनू हाथ सँ एकटा विशेष मुद्रा. प्रकट करैत] तोहर आ' हमर हाथ मे हथकड़ी लागि जैतह।

मन्नूराम—से एत्तेक आसान नहि छैक।

रामभरोस—जनैत नहि छह, एतय छौंड़ा सभक एकटा संघ बनल अछि। ओ सब हमरा सभक कारबार बन्द करै चाहैत अछि।

मन्नूराम—अच्छा! पहिने ई त कहू जे अहाँ ओकरा सब कें चन्दा देने छियैक कि नहि ?

रामभरोस—हँ, से देने त नीक जकाँ छियैक, मुदा ताहि सँ की ? ओहि दिन ओ सब हमरहि मित्र एक इनकम टैक्स अफसर कें पकड़ा देलक। ओहो त ओकरा सभक संघ में चन्दा देने छलथि।

मन्नूराम—[हँसैत] ओ पकड़ाओल, कारण ओकरा पास घूस लेबा क बुद्धि त छलैक, किन्तु अपन रक्षा करबाक तागत नहि छलैक।

रामभरोस—से सब त बुझलहुँ। किन्तु हमरो जे ओ सब नहि पकड़त, तकर कोन......

मन्नूराम—तकर भार हमर अछि। अहाँ निश्चिन्त रहू!

रामभरोस—[चिन्तित मुखें] तैयहु जल्दी-जल्दी काज हैबाक चाही।

मन्नूराम—अच्छा, हम देखि रहल छी। [कहैत-कहैत जाहि दिशा सँ प्रविष्ट भेल छल, ताही दिशा मे प्रस्थित होइत अछि। नेपथ्य मे दूर सँ मन्नूराम क चीत्कार सुनल जाइत अछि।] ऐ रहमत अली! जल्दी कर! कनेक हाथ चला कए काज नहि करि हैत छौक? आँय? हे रौ, तोरे कहैत छियौक—जल्दी-जल्दी पेटी चढ़ा!

[एम्हर स्वल्पालोकित मंच पर सँ एकदम कारी पोशाक पहिरने किछु लोक दवा क पेटी नेने निःशब्द रूपें चलल जाइत देखना जाइछ। ओर रामभरोस राम एकटा सिगरेट पीयैत मंच क एम्हर सँ ओम्हर आ' ओम्हर सँ एम्हर टहलैत रहैत छथि एवं बीच-बीच मे बाहर क दिसि तकैत रहैत छथि। तावत् धीरे-धीरे निःशब्द रूपें नवल और प्रकाश मंच पर प्रविष्ट होइत अछि। प्रकाश-रेखा नवल आ' प्रकाश पर पड़ैत अछि। ओ दुनू कूड़ादानी क पाछाँ नुकायल रहैत अछि।]

मन्नूराम—[प्रविष्ट भ' कए] रामभरोस बाबू !

रामभरोस—[चौंकैत] के ? [मन्नूराम कें देखि आश्वस्त भए] ओ, मन्नूराम ! बाजह, की बात थीक ?

मन्नूराम—काज भ' गेल। सब ठीक अछि। है, इयैह लेल जाउ तीस हजार ! ग्राहक करार क मोताबिक आधा दाम द' गेल अछि और शेष माल पहुँचला उत्तर द' देत।

रामभरोस—[टाका लैत छथि आ' सतृष्ण नेत्रें नोटक पुलिन्दा कें उनटा-पुनटा कए देखैत चादरि तर मे नुका लैत छथि। हुनक मुख पर अतिशय प्रसन्नता तथा आँखि मे चमक देखना जाइत अछि। ओ कनेक कर्कश और गम्भीर स्वर मे बाजि उठैत छथि।] देखह, माल पहुँचैबाक बात रहैक नवे बजे। एखन त दस बजि गेलह अछि ! तेजी सँ जैबाक चाही।

मन्नूराम—त हमरा लॉरी ल' कए जाय दियह। हम संग मे रहमत अली कें ल' लैत छी। अहाँ एत्तहि रहू। माल पहुँचा कए लगलहि घंटा भरिक भीतर हम अहाँ कें टाका पहुँचा दैत छी।

रामभरोस—[मन्नूराम क संग प्रस्थान-पथ क दिसि अग्रसर होइत-होइत] ठीक अछि, तोंही सब जा ! मुदा, जल्दीये आबिह, नहि त हम चिन्ता मे रहब।

मन्नूराम—[प्रस्थित भ' कए नेपथ्य सँ] अहाँ चिन्तित नहि होउ ! हम इयैह गेलहुँ आ' ऐलहुँ। चल रहमत ! [लॉरी क भोंपू और घड़घड़ाहट सुनना जाइछ। रामभरोस बाबू नोटक पुलिन्दा चादरि तर सँ निकालि कए पुनः लुब्ध दृष्टियें उनटा-पुनटा कए देखैत छथि और फेरो चादरि तर नुका लैत छथि। किछु सोचि कए आगाँ बढ़ैत छथि, मुदा ठिठकि जाइत छथि।]

रामभरोस—हे भगवान् ! आब तोंहीं लाज बचाबह ! [ताबत् प्रकाश-रेखा कूड़ादानी लग नुकायल नवल और प्रकाश पर पड़ैत छैक। ओ दुनू परस्पर आँखि सँ किछु इंगित करैत अछि। प्रकाश खोंखैत अछि। रामभरोस चकित भ' कए बाजि उठैत छथि।] के ? के खोंखल ? [ककरहु नहि देखि] आश्चर्य !

नवल—[कूड़ादानी क पाछाँ सँ प्रकाश क संगहि उठि कए राम भरोस दिसि अगुआबैत] आश्चर्य ! सत्ये आश्चर्य !!

रामभरोस—के ? के छें तों सब ?

नवल—अरे, अरे, अरे रामभरोस बाबू, अहाँ एत्तेक घबड़ाबैत छी कियैक ?

रामभरोस—[भय-भीत मुद्रा मे]. हँ, नहि, हँ ! से त ठीके, मुदा तों······ ?

प्रकाश—अहाँ हमरो सब कें बिसरि गेलहुँ ? एत्तेक जल्दी ?

रामभरोस—ओ ! [हँसबाक चेष्टा करैत] नवल बाबू, प्रकाश बाबू, अहाँ सब छी ? हे-हे ! हे-हे ! हम सोचल जे कोनो लुच्चा-लफंगा सब हैत ! [व्यस्तता देखा कए] त अहाँ सब एतय की क' रहल छी ? चलू ने हमर दरबाजा दिसि। कैकटा बातो करबाक अछि। आ कनेक चाहो······

नवल—[बाधा द' कए] उँ हुँ-हुँ; रामभरोस बाबू ! एत्तेक चालाक बनबाक चेष्टा जुनि करू !

रामभरोस—[कठोर स्वरें] की कहैत छी नवल बाबू ?

प्रकाश—नवल भाइ कहैत छथि जे ओ चाह नहि पीताह। ओ त अहीं कें चाह पीबा क लेल निमन्त्रण देबा लेल आयल छथि।

रामभरोस—हमरा ? चाह क लेल ? मुदा कतय ?

नवल—जेलर साहब क अतिथि-शाला मे !

रामभरोस—[चौंकैत भयभीत स्वर मे] माने ? अहाँ की कहैत छी, हम त किछु नहि बुझलहुँ ।

नवल—अहाँ बुझलहुँ त अवश्ये। आ' जतबाक कसर रहि गेल

से ओही ठाम समझा देल जायत।

रामभरोस—मुदा ई सब की थीक ? की भ' रहल अछि ?

प्रकाश—सैह भ' रहल अछि, जे पहिनहि होयब उचित छल। नहि जानि, ग्राण-कोष क कत्तेक औषधि एहिना अहाँ पार कैने हैब और कत्तेक असहाय लोक कें परलोक पठौने हैब।

रामभरोस—ओ बुझलहुँ। मुदा, नवल बाबू ! कनेक हमरो दिसि त देखू! बिनर कोनो उनट-पुनट कैने हमरा लोकनिक दिन कोना चललैक ?

नवल—अहाँ कें कोनो गत्तर मे लाज नहि होइत अछि ? प्रसिद्ध धनी-मानी, ग्राण-समितिक सभापति, भूतपूर्व मंत्री और तकर ई हाल ?

रामभरोस—[कनेक आत्म-नियन्त्रण करैत कठोर स्वरें] हमर अपराध क कोन प्रमाण अछि ? हैत एको टा साक्षी ?

प्रकाश—प्रमाण ? प्रमाण अछि अहाँ क हाथ महक नोट क पुलिन्दा। और हमरा सब सँ बढ़िया साक्षी कतय भेंटत ?

रामभरोस—हमरा हाथ से टाका ऐबाक बहुत कारण भ' सकैछ।

प्रकाश—आ' ओ लादल लॉरी ?

रामभरोस—लॉरी त निकलि गेल। ओ कि अहीं लेल बैसल अछि ?

नवल—अहाँ फेरो भूल क' रहल छी। संघ क अनेक नवयुवक लोकनिकें ल' कए दीपक सम्पूर्ण रास्ता कें ईंटा-पाथर आ' लकड़ी क कुन्दा सँ घेर देने अछि। अहाँ क लॉरी निकलि नहि सकैछ। अहाँ क सब सहयोगी पकड़ा गेल हैताह।

रामभरोस—ओ सब अपन जान द' देत।

नवल—जान दइयो कए क्यो जान नहि बचा सकैछ। थाना चलू ने। सब सँ अहाँ कें ओत्तहि भेंट भ' जायत। चलल ने जाउ!

रामभरोस—और जौं हम नहि जाय ?

प्रकाश—[बगल सँ बढ़ि कए रास्ता रोकैत] त अही ठाम ठाढ़ रहू। पुलिस त आबिये रहल हैत। जखन हथकड़ी पड़त तखन बुझबैक।

रामभरोस—[कनेक मौन रहि कए मधुर स्वरें] हम अहाँ सभक काज क प्रशंसा करैत छी। सत्ते कहैत छी, जे पुलिस नहि क' सकल से अहाँ सब क' कए देखा देलहुँ।

प्रकाश—पुलिस क मुहँ मे त अहाँ मिठाइ ठूँसने रहियैक। तखन ओ सब बाजतिहे कोना ?

रामभरोस—[अनुच्च स्वरें हँसैत] कही त अहूँ सब कें आरो किछु टाका······

प्रकाश—माने ? घूस ?

रामभरोस—नहि-नहि ; चन्दा।

नवल—[कठोर स्वरें] रामभरोस बाबू! अहाँ क देल चन्दा पर हम सब थूकैत छी।

रामभरोस—[मनैबाक चेष्टा करैत] किन्तु पहिने कनेक सोचि लियह। संयोगे सँ लोक एना टाका पाबैत अछि। अहाँ सब चाही त एहि टाका सँ अपन बहुतो अभाव दूर क'

सकैत छी।

प्रकाश—हमरा लोकनि कें पापक टाका नहि चाही।

रामभरोस—पापक कोन बात? हम त अपनहि द' रहल छी आ' एहि ठाम क्यो देखियो त नहि रहल अछि! अहाँ लोकनि कनेक सहयोग दी त हम अहाँ क संघ क कोनो युवक कें बेकार नहि रहै दी।

नवल—[व्यंग्य-पूर्वक] एँ यौ, अहाँ कें बेकार सभक एत्तेक चिन्ता कियैक रहैत अछि?

रामभरोस—रहत कियैक नहि? नेता क्यो ओहिना भ' जाइछ?

प्रकाश—वाह रे नेता!

रामभरोस—देखू नवल बाबू, एत्तेक मार-पेंच हम नहि बुझैत छियैक। हम पाँच हजार देबा लेल तैयार छी।

नवल—खबरदार!

रामभरोस—अच्छा त दस हजार देब! आब त अप्रसन्न नहि हैब।

नवल—ई राखू अहाँ अपनहि पास।

रामभरोस—त कतेक चाही? खुलि कए बाजू ने? हम नगद देब और एखनहि एही ठाम द' देब।

नवल—कहलहुँ ने, हम सब थूकैत छी एहन टाका पर।

रामभरोस—न-न-न-न; से नहि बाजी! लक्ष्मी पर थूक!

नवल—पापक सम्पदा लक्ष्मी नहि, अलक्ष्मी हैत छैक।

रामभरोस—अच्छा त बीस हजार ल' लियह।

नवल—एहि प्रलोभन सँ अहाँ क रक्षा नहि हैत।

रामभरोस—अच्छा त तीस हजार। एखनहि हमरा पास अछि और हम सब द' देबा लेल तैयार छी।

नवल—बेकार छटपटबैत छी।

रामभरोस—आइ हम बुझलहुँ जे टके टा सँ सब काज नहि चलैत छैक। मुदा एक बेर हमरा सुधरबाक त अवसर दियह।

प्रकाश—हुँह! सुधार! कुत्तो क नांगरि कहियो सोझ भेल छैक?

रामभरोस—हमरा सुधरबाक लेल केवल एक अवसर द' कए देखि लेल जाउ।

नवल—कहलहुँ त, बेकार छटपटा रहल छी।

रामभरोस—[अकस्मात कनेक पाछाँ हटि कए चादरि तर सँ पिस्तौल निकालि कए तानैत गरजि कए बाजि उठैत छथि] सावधान! जीये चाहैत छी त हाथ ऊपर उठाउ। [नवल आ' प्रकाश हाथ उठा कए ठाढ़ भ' जाइत छथि। रामभरोस बाबू क्रोध सँ ठोर चिबबैत] हरामजादा नहितन! समाज-सुधार करताह! भ्रष्टाचार रोकताह! साँप क मुहँ थकुचबाक ताकत एखनहु एहि हाथ मे छैक। [तावत् दबले पैरें दीपक अबैत अछि आ' पाछाँ सँ राम-भरोस बाबू क गट्टा पकड़ि लैत अछि। हुनकर हाथ सँ पिस्तौल खसि पड़ैछ। प्रकाश लाति सँ पिस्तौल कें दूर ठेलि दैत छैक। तावत् जीपक आवाज सुनना जाइछ आ' लगलहि सुनीता क संग पुलिस आबि जाइछ। रामभरोस

आतंक आ' पलायन क नाट्य करैछ ।]

दरोगा—[हाथ सँ रामभरोस दिसि इंगित करैत] पकड़ह ! [एक पुलिस हथकड़ी लेने आगाँ बढ़ैछ ।]

रामभरोस--नहि-नहि ! [भयभीत और असहाय मुद्रा मे] दरोगा बाबू, जतेक टाका चाही, ल' लियह । हम अहाँ सब कें मालामाल क' देब, मुदा ई बेइज्जती नहि ! हे, हम गोड़ पड़ैत छी ।

नवल—बेकार छटपटबैत छी ।

[पुलिस रामभरोस क आदरि घींचि लैत छन्हि । हुनक बाम हाथ सँ दाबल नोट क पुलिन्दा खसि पड़ैत छन्हि]

रामभरोस—[आर्त्त स्वरें] बाप रौ, बाप ! [तखनहि हथकड़ी हुनक हाथ मे पड़ि जाइत छन्हि और मंच पर अन्हार भ' जाइत छैक ।]

यवनिका-पतन

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

[काल्लू सरदार क अखाड़ा। काल्लू सरदार मंच क एक कोना पर ठाढ़ अछि। शक्ति मंच क मध्यभाग मे ठाढ़ रहैत छथि।]

शक्ति—देखह काल्लू ! एना व्यापार नहि चलैत छैक। आ' तकर अतिरिक्त हम सब बुड़बाक लेल त एहि कारबार मे पाइ नहि ढारलहुँ अछि।

काल्लू सरदार—हम की करब शक्ति बाबू ! आमद बढ़ैबाक लेल हम चेष्टा की कम कैने छी ? मुदा......

शक्ति—ओहि चेष्टा-तेष्टा कें गोली मारह। एहि महीना में मात्र उन्नैस टा नेना कें पकड़ल गेल और पन्द्रहे टा लड़की जाल मे फँसल अछि। आन कोनो तरह क आमदनी त हमरा एखन धरि नहि भेल अछि।

काल्लू सरदार—कोना नहि भेल ? गांजा-भांग और हफीम क कारबार सँ अहाँ कें दस हजार देने छलहुँ और सुतरल त दू-तीने मास मे लाखो टाका भेंटि सकैत अछि।

शक्ति—तोहर ई सुतरनाइ कोन युग मे हैत.गे से नहि जानि !

काल्लू सरदार—आ' एहि सब कारबार मे सब दिन एके रंग

आमदनी त भइये नहि सकैत छैक। मास क मास बैसल रहू और सुतरल त एकहि दाव मे लाख क लाख बरसि पड़त।

शक्ति—मुदा हमरा त किछु औरे खबर अछि। [कने रुकि कए विकृत स्वरें] एक-सँ एक सुन्दरी कें बजा-बजा कए मन-माना पैसा लुटाओल जाइत छैक और विदेशी दारू पानि जकाँ उभलल जा रहल छैक।

कालू सरदार—[चौंकैत] क-किन्तु अहाँ कें ई सब बात के कहलक ? कोन साला चुगलखोर ई सब फालतू बात......

शक्ति—[हँसैत] देखह कालू, एहि मे उत्तेजित हैबाक कोनो बात नहि। अड्डा मे कतबा टाका आबैत छैक और कतबा वास्तव मे खर्च होइत छैक तकर पता हमरो रहैत अछि।

कालू सरदार—तखन अहाँ क ई अनुमान अछि जे हम टाका दाबि लैत छी और अहाँ कें गलत हिसाब दैत छी ?

शक्ति—हम कोनो गप मात्र अनुमान क आधार पर नहि करैत छी और तों की करैत छह से तोरे बूझल छह।

कालू सरदार—अहाँ क शंका निर्मूल अछि शक्ति बाबू !

शक्ति—से सब छोड़ह। एतबहि यादि राखह जे हमरा जा धरि नीक जकाँ टाका भेंटैत रहत ता धरि हमरा रंचहु मात्र चिन्ता नहि रहत जे तों सब कतेक उड़ाबैत छह आ' की करैत छह [स्वर कें कर्कश बनबैत], मुदा·········मुदा सावधान !

कालू सरदार---हम चेष्टा करब जे अहाँ कें कोनो शिकायत नहि रहि जाय।

शक्ति—हँ करह ! और करैत काल एतबहि मन राखह जे दुनिया मे एक कालू गेने हजारो कालू आओत, मुदा समय कहियो घुरि कए नहि आबि सकैछ। तों सब ई एक मास नष्ट कैलह। तोरा हम आरो एक हप्ता समय दैत छियह।

कालू सरदार --[कनेक मेहायल कंठें] बेश !

शक्ति—अच्छा, त हम एखन जा' रहल छी, मुदा सावधान !

कालू सरदार—[शक्ति प्रस्थित होइत छथि। कालू सरदार किछु काल मौन भ' कए ठाढ़ रहैत अछि। तकर बाद डाँड़ में लपटल टाका निकालि कए पुलिन्दा कें चूमैत] दुर्दिन क संगी तोंही टा छें बन्धु ! [ई कहि कए पुलिन्दा कें छाती सँ लगा कए राखैत अछि कि नेपथ्य सँ मन्नूराम क कंठस्वर सुनल जाइछ।]

मन्नूराम—[नेपथ्य सँ] सरदार ! सरदार !!

कालू सरदार—के ?

मन्नूराम—[प्रविष्ट होइछ। आँखि धसल, भरि गाल दुश्चिन्ताक दाढ़ी एवं स्वास्थ्य किछु भग्न सन प्रतीत होइत अछि।] सरदार !

कालू सरदार—की तखन सँ सरदार-सरदार क रट्ट लगौने छें ? की भेलौक ?

मन्नूराम---सरदार ! हमर बेटी आइ तीन दिन सँ बीमार

अछि—बेहोश पड़ल अछि। अपन मुहल्ला क डाक्टर कह-लक बड़का डाक्टर कें बजेबाक लेल।

कालू सरदार—ओ……! तों कक दिन सँ नहि ऐलें, तकरे लेल ई बहाना छियैक की ?

मन्नूराम—नहि सरदार। तोहर किरिया, अपन किरिया, धर्मक किरिया, भगवान क किरिया! हमर बेटी साँचे बीमार अछि। नेमुनियाँ सँ छटपटा रहल अछि। एहि मे तोहर मदति चाही।

कालू सरदार—एहि मे हम क' की सकैत छियौक ?

मन्नूराम—हमरा टाका चाही सरदार—कम-सँ-कम दू सौ टाका चाही।

कालू सरदार—नहि-नहि ओत्तेक टाका हमरा कतय सँ आओत ?

मन्नूराम—[मन्नूराम क नजरि कालू क हाथ मे धैल टाका पर पड़ैत अछि।] बैह त तोरा पास हजारो टाका छौक सरदार।

कालू सरदार—[हाथ क टाका क पुलिन्दा कें शीघ्रतापूर्वक पुनः डाँड़ मे खोंसैत] नहि-नहि, टाका-ताका नहि हैतौक !

मन्नूराम—तोहर पैर पड़ैत छियौक सरदार ! हमरा मात्र दू सौ टाका द' दे—बेटी क जान बाँचि जायत।

कालू सरदार—साला, एक त तों पछिलका हप्ता मे एक लॉरी दवा पुलिस कें द' ऐलें। ताहि लेल आइ कत्तेक गंजन सुनै पड़ल अछि जनैत छें ? और ऐलाहें ऊपर सँ टाका माँगै !

मन्नूराम—सरदार ! ई हमर बच्चा क जान क सवाल थीक। ओकर जान टा बचा दे। तखन हम जिनगी भरि तोहर गुलाम भ' कए रहबौक। ओ नहि बचने हमर घरवालियो जहर खा कए मरि जायत।

कालू सरदार—नीके हैत। साला, गेल छलाह बियाह करबा लेल आ' संसार बसैबा क लेल। अरे हमरा सब कें त कोनो जनानी क लहासे सँ भूख मेटायब उचित थीक।

मन्नूराम—मुदा सोनिया कोनो जनानी क लहास नहि थीक सरदार! ओ हमर घरवाली थीक। ओ हमरा सभ क बेटी कें ल' कए कत्तेक सपना देखैत अछि, से जनैत छें ? [कालू कें निरुत्तर देखि कए] ओ कहैत अछि—ओकरा पढ़ाओत, लिखाओत और......

कालू सरदार—[बात काटैत] बस, बस, बस, बस ! बहुत भेलौक ! [शब्द पर जोर दैत] पढ़ाओत, लिखाओत ! चल हँट ! [कनेक ठहरि कए] देख मन्नू, तोरा हम मना क' दैत छियौक, कहियो भूलियहु कए हमरा लग ककरहु बहु-बेटी क गुण-गान नहि करिहें !

मन्नूराम—कियैक सरदार ?

कालू सरदार---[मन्नूराम क बात सुनि कए उच्च स्वर मे हँसैत] कियैक ? तोरे जकाँ हमरहु मन मे अटल-अडिग विश्वास छल स्त्री-जाति पर। ओहि जाति क एक दूध सँ धोयल पंक-लिप्त पुतली कें देखलियैक जे अपन सोहाग क लाज धो कए

पीबि गेल अछि आ' कोनो बस्तु क अभाव नहि रहितहु घृण्य वासना क तृप्ति क लेल घरे-घर छिछिया रहल अछि। आ' जखन हमरा अपन पत्नी क ई घृण्य व्यभिचार और नहि सहल गेल, तखन सड़ल मांस क ढेला कें चीरैत हमर थर-थर कौंपैत छूरा पुछने छल— कियैक ? कियैक तों एहन काज कैलें ? कियैक तों पर पुरुष सभ क पास अपन देहक दीप जरैलें ? कियेक हमर सन्तान अपन माय क स्नेह क अधिकार सँ बंचित भ' कए तिल-तिल घुलि कए मरि गेल ? कियैक ई सब भेल —कियैक, कियैक, कियैक ? [कहि कए कनेक बिरामक बाद पुनः स्वर मे परिवर्त्तन आनि कए कहैत अछि] तकर बाद जेल गेलहुँ। आ' ताहि दिन सँ हम जानलहुँ जे एहि संसार मे कोनो साला ककरहु नहि होइछ—ने क्यो भाइ, ने क्यो बहिन, ने क्यो माइ आ' ने क्यो बाप। और पुण्य नाम क कोनो वस्तु दुनिया मे छैके नहि। तैं, जकरा जेना होमै, साला लूटि कए खा और मौज करह !

मन्नूराम—किन्तु सरदार, हमर बेटी—हमर सोनिया ? ओकरा सभक की हैत ?

कालू सरदार—आह ! बन्द कर ई सब ढरनच ! [कनेक रुकि कए] के तोहर बेटी ? के तोहर घरवाली ? क्यो ककरहु नहि होइछ। साला, ओ बेटी जकरा लेल तों तखन सँ खिखनी क' रहल छें, केहन छुछुन्नरि हैत गे से के जानै ?

मन्नूराम—[दुःखद स्वर मे चिकरि कए] सरदार ! [आँखि

मे नोर आबि जाइछ] ई तों की कहैत छें सरदार ?

कालू सरदार—[कालू सरदार तखनहि घर क एक कोना मे राखल टेबुल पर सँ बोतल उठा कए एक घोंट मुहँ मे दैत] सुन, सुन; हमर बात मान मन्नू ! [पुनः पान करैत] घर जो और ओहि बेटी आ घरवाली क गर दाबि कए कूड़ादानी मे फेंकि दे। भोरुका पहर कारपोरेशन क जमादार उठा कए ल' जैतौ। एत्तेक झमेला मे जेबाक कोन काज ?

मन्नूराम—[प्रचंड उत्तेजित भ' कए आँखि मे धधकैत अग्नि-शिखा नेने कालू सरदार क दिसि अगुआ जाइत अछि] सरदार ! [कहि कए कालू सरदार क गर दाबबाक चेष्टा करैत अछि। किन्तु कालू एकहि झटका मे ओकरा हँटा कए फेंकि दैत छैक।]

कालू सरदार—[रुद्ध कंठस्वर मे] चल हट साला, कुकुर क औलाद, मन्नूराम क बच्चा, जो भाग ! एखन हमरा पीबै दे !

[कालू दर्शक क बाम दिसि ठाढ़ भ' कए झूमैत मदिरा पीबि रहल अछि आ' मन्नू दर्शक क दहिना दिसि माटि पर पड़ल कानैत रहि जाइछ। तखनहि मंच पर अन्हार पसरि जाइत छैक।]

द्वितीय दृश्य

[शक्ति बाबू क ड्रॉइंग रूम। सब किछु पूर्ववत् रहैत अछि। शक्ति बाबू अल्पालोक मे धूम्रपान करैत-करैत ट्रांजिस्टर कें विभिन्न स्टेशन पर घुमा रहल छथि। ओहि अन्धकार-प्राय प्रकोष्ठ मे मात्र स्टैंडिंग-लैम्प बरि रहल अछि। नेपथ्य सँ दरवाजा पर खटखटेबाक शब्द सुनना जाइछ एवं लगलहि विनय क कंठस्वर सेहो सुनना जाइछ।]

विनय—[नेपथ्य सँ] शक्ति, शक्ति !

शक्ति—[बत्ती बारैत छथि। समग्र घर आलोकित भ' उठैत अछि। अगुआ कए केबाड़ी खोलैत छथि। विनय कें प्रविष्ट होइत देखि] की बात थीक ? की चाही ?

विनय—[मृदु हँसैत संकुचित स्वरें] हें-हें, हें-हें ! शक्ति, हम छी—विनय !

शक्ति—ई त कोनो नव बात नहि भेल। मुदा तों चाहैत की छहक ?

विनय—कोनो नव वस्तु नहि। ए हें-हें, तों त जनिते छह जे हम तोरा पास कथी लेल अबैत छी।

शक्ति—[उत्तेजित भ' कए दर्शक क दिसि मुहँ घुमा कए] हँ; जनैत छी, तोरा टाका चाही, टाका, मद पीबाक लेल। मुदा……

विनय—[साग्रह] ठीक, एकदम ठीक कहले। बस, आइयेटा

द' दहक। [शक्ति कें निरुत्तर देखि] हम त बेसी नहि माँगि रहल छियह। मात्र एकटा सौ टकही—बस। देखिह, कालिह सँ हम सेहो नहि माँगब, पीनाइये छोड़ि देब। और तों……

शक्ति—विनय! इयैह बात तों कालिहयो कहलहक, परसुओ कहलहक और एकर बाद तों की कहबहक से हम जानैत छी। तों कहबहक जे हम तोरा कालिह टाका देबाक प्रतिश्रुति देने छलहुँ। तखन हम कहब—नहि। तों कहबहक… [वाक्य कें असमाप्त राखि] जाय दहक!

विनय—मुदा, शक्ति! हम विनय छी, विनय—तोहर मित्र, तोहर नेना क साथी!

शक्ति—[विकृत कंठें] नेना क साथी! [कहि कए उच्च स्वर मे हँसि दैत छथि। तकर बाद कहैत छथि] विनय! तोहर ईहो डायलौग बहुत पहिलुका छह। आ' नाटक क त अन्तिम दृश्य आबि गेल अछि। [कनेक मौन रहि कए] विनय! तीन दिन पहिने हमरा सभक आफिस क कैश सँ पचास हजार टाका क गबन भ' गेल अछि।

बिनय—[चौंकैत] की कहैत छहक शक्ति! के चोरी कैलक?

शक्ति—[माथ डोलबैत] उहूँहुँ विनय, एत्तेक नहि चौंकह! के चोरी कैलक से एखनहि बता रहल छियह। [किछु काल मौन रूपें पदचारणा करैत] आफिस क सन्दूक क चाभी तीन गोटा क लेबाक अधिकार छैक—लखपति, शक्ति आ'

विनय। चोरी त इयैह तीन गोटा मे सँ क्यो कैने हैत ?

विनय—अवश्य।

शक्ति—ओहि दिन लखपति आफिसक काजेँ वर्द्धमान गेल छल। तेँ, ओ भरि दिन ने आफिस आयल आ' ने कारखाना।

विनय—[विमूढ़वत्] तखन ?

शक्ति—लखपति क ऊपर भार छलैक कारखाना क। ओ नहि छल, तेँ ओहि दिन एक बेरि आफिस मे जाइये कए हमहूँ कारखाना चलि गेल छलहुँ। [विनय किछु कहै चाहैत अछि, मुदा ओकरा हाथ सँ थम्हा कए शक्ति कहितहि रहि जाइत छथि।] क्यो कहि सकैत अछि, जे हम जखन एकहु बेर आफिस गेल छलहुँ, तखन ओ चाभी ल' सकैत छलहुँ, सेह ने ? [विनय माथ डोला कए स्वीकृति दैत अछि], किन्तु हम जखन आफिस जा कए औतय सँ कारखाना क लेल जा रहल छलहुँ, तखनि कैश डिपार्टमेण्ट क लोग सब टाका गनैत छल। और बाद मे हम खोज लेबाक बाद जानलहुँ जे तखन टाका कम नहि छल।

विनय—तखन चोरी भेल कखन ?

शक्ति—कहैत छियह विनय, एत्तेक अधीर नहि बनह ! वैह दिन जायत काल जखन पुनः ओ सब कैश मिलौने छल, तखनहि पता चलल जे पचास हजार टाका गायब भ' गेल अछि। [किछु काल मौन रहि कए] तखन तीन गोटा मे सँ शक्ति आ' लखपति क नाम कटि गेलैक, रहल......[तिर्यक दृष्टि

सँ विनयक दिसि देखैत वाक्य कें असमाप्त छोड़ि दैत छथि]

विनय—[चौंकैत] किन्तु तों कहै की चाहैत छहक शक्ति ?

शक्ति—[उच्च स्वरें] तों जानि बूझि कए अनजान बनबाक चेष्टा क' रहल छह विनय।

विनय—तकर अर्थ ?

शक्ति—तकर अर्थ ?—तकर अर्थ इयैह जे श्रीमान विनय भूषण शर्मा ओहि दिन आफिस क कैश सँ पचास हजार टाका हटा कए कोनो सुरक्षित स्थान मे राखि देने छथि।

विनय—[चीत्कार क' कए] शक्ति! की कहैत छहक ? हम, हम कियैक चोरी करब ?

शक्ति—[सहज स्वरें] से जानबाक भार पुलिसे पर छोड़ि दहक।

विनय—[घबड़ा कए] पु-पु-पुलिस ? मुदा शक्ति ! [शक्ति कें मुहँ घुमौने निर्विकार मुखें ठाढ़ रहैत देखि] विश्वास करह शक्ति। हम ई काज नहि कैने छी। हम कोना कए क' सकैत छी ? [अनुनय करैत] शक्ति ! तों पुलिस कें नहि बजाबह; तोरा अवश्य कोनो भ्रम भेल छह।

शक्ति—देखह विनय, ई पुलिस-तुलिस क झमेला हमरहु नीक नहि लगैत अछि। आ' तकर अतिरिक्त तों हमर नेना क मित्र थिकह ! [विनय साग्रह शक्ति क दिसि देखैत अछि] तों एकटा काज करह, ओ टाका घुरा दहक—चाही त हम तोरा तीन दिन क समयो.........

विनय—[बात काटैत हतप्रभ भ' कए] तों त जनिते छह शक्ति, हमरा पास एखन ने जगह, ने जमीन, ने आने कोनो संपत्ति अछि जे हम सेहो बेचियो कए एतेक टाका द' सकी।

शक्ति—[बनावटी दुःख प्रकाश करैत] हँ! से त हम जनिते छी। और हम बुझैत छी जे तों बाध्य भ' कए टाका लेलह।

विनय—नहि शक्ति एना नहि कहक। हम सपनहुँ ई चोरी नहि कने छी। हम एहि विषय में किछु नहि जानैत छी।

शक्ति—आ' कैनहु हैबह त हम दोष थोड़बे दैत छियह? हम त मात्र टाका घुरैबाक बात कहि रहल छियह।

विनय—[शक्ति कें समझैबा क चेष्टा करैत] हम कोना घुराउ ओ टाका, जखन कि हम लेलहुँ नहि? तकर अतिरिक्त हमरा पास टाका रहतिहैक त हम तोरा सँ एखन टाका कियैक माँगै एतहुँ?

शक्ति—[उच्च स्वर मे हँसैत कहैत छथि] विनय! तों त पहिने एतेक चालाक नहि छलह? तोहर स्थान पर रहितहुँ, त हमहूँ एहिना बजितहुँ। जाय दहक ई सब बात............ [पदचारणा क' कए] मुदा एकटा बात हम साफ-साफ कहि दैत छियह जे जौं तों टाका नहि देमै चाहैत छह त हमहू पुलिस कें रोकि नहि सकैत छी। कारण, हमरा सभ क कम्पनी पब्लिक लिमिटेड कम्पनी अछि। दू-चारि दिन, तोरा हम बचा सकैत छी, किन्तु तकर बाद सब क्यौ जखन हिसाब माँगत······

विनय—किन्तु शक्ति, हम तोरा सँ हाथ जोड़ैत छियह जे तों जे किछु करह, मुदा पुलिस······

शक्ति—[किछु चिन्तित भ' कए] हम पुलिस कें रोकि सकैत छी एकहि शर्त्त पर।

विनय—[साग्रह] कोन शर्त्त पर ?

शक्ति—[दराज सँ एकटा कागज निकालि कए] एहि कागज पर सही करै पड़तह। [कहि कए विनय क हाथ मे कागज दैत छथि। कागज पढ़ैत-पढ़ैत विनय क मुख क भाव बदलि रहल अछि से देखि कए] देखह विनय ! हम तोहर बाबूजी क आभारी छी। तेँ अपन जेबी सँ टाका द' कए कालिह आफिस क हिसाब मिला देबैक। किन्तु तोरा ताहि लेल मूल्य देमै पड़तह—एतय सही क' कए।

विनय—[उदास भावें] मुदा ई अन्याय भ' रहल छह !

शक्ति—तखन पुलिस क सामना करबाक लेल तैयार रह।

विनय—[बिमूढ़ जकाँ] सही करैये पड़तैक ?

शक्ति—हँ विनय, कनेक शीघ्र करह। कारण, पुलिस थाना सँ एखन रवाना भ' रहल हैतैक !

विनय—[पुलिस क नाम सुनितहि चौंकैत] नहि नहि, पुलिस नहि, हम क' रहल छी सही। [कहैत कम्पित हाथें सही क' दैत अछि।]

शक्ति—[विनय कें सही करैत देखि क्रूर हँसी हँसैत] देखह विनय ! हम तोहर मित्र छी। तेँ हम आशा करैत छी जे

हमर बात क दुःख नहि मानबह ।

विनय—नहि, से कियैक ?

शक्ति—आफिस मे कोना क' नहि जानि एहि बात क पता सब कें चलि गेल छैक । तोरा आफिस गेला सँ ओ सब की करत से नहि जानि । हम पुलिस कें त रोकि सकैत छी, मुदा निन्दक कर्मचारी सभ क मुहँ कोना बन्द करू ? तें [किछु काल मौन रहि कए] हमर विचार जे तों कालिह सँ आफिस मे नहि आबह । सैह नीक हैतह । [विनय निःशब्द रहि माथ डोलबैत छथि । से तिर्यक दृष्टियें देखि कए शक्ति और कहैत रहैत छथि] हम एखनहु तोहर मित्र छी; तों भनहि हमरा धोखा द' सकैत छह, मुदा सेयो हम तोरा निराश नहि करबह । [जेबी सँ दस टा सौ टकही निकालैत] हे, इएह ले; नशा क लेल पाइ, जे तों माँगैत छलह । एहि सँ तोहर काज दस दिन धरि चलतह । आ'......[वाक्य कें किछु विलम्बित करैत] तकर बाद तों एत्तहु नहि आबिह । [विनय पुनः स्वीकृति सूचक माथ डोलबैत छथि] माने पास-पड़ोस क लोग एकटा पतित कें रोज एतय आबैत देखि हमरहि विषय मे किछु बेजाय......माने......तों त बुझतहि छहक......[वाक्य कें असमाप्ते राखि कए चुप भ' जाइत छथि ।]

विनय—[धीरे-धीरे मूड़ी उठौने] अच्छा, त हम चली । [कहैत-कहैत चिन्तातुर जकाँ प्रस्थित होइत अछि । थोड़ेक देर क

बाद शक्ति उच्च स्वरें ठहाका मारैत छथि। तखनहि मंच पर अन्धकार पसरि जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[कालू सरदार क अखाड़ा। मन्नूराम एसगरे पद-चारणा क' रहल अछि। पद-चारणा करैत-करैत मन्नू एक समय मंचक एक कोना पर एकटा उनटाओल कुर्सी पर लाति ध' कए ठाढ़ होइत अछि। डाँड़ सँ छूरा निकालि कए बटन दाबि कए छूरा कें खोलैत अछि। चकमक करैत छूरा क नोक जकाँ मन्नूराम क आँखि मे उन्मत्त हिंसाक विद्युत चमकैत अछि। ताहि समय नेपथ्य सँ शक्ति क कंठ-स्वर सुनना जाइछ।]

शक्ति—[नेपथ्य सँ] कालू! कालू!! [मन्नूराम चौंकैत प्रवेश-पथ क दिसि तकैत अछि एवं उन्मुक्त छूरा कें बन्द करैत अछि। शक्ति प्रवेश करैत छथि और कालू क स्थान पर मन्नूराम कें देखि] कालू कतय गेल?

मन्नूराम—हमहूँ त ओकरे प्रतीक्षा क' रहल छी मालिक!

शक्ति—मन्नूराम, तोरा पर आइ-काल्हि कालू सरदार एतेक बिगड़ल कियैक छन्हु?

मन्नूराम—कोना कहू? किछु हमर दुर्भाग्यें और किछु सरदार क दुर्भाग्यें ई सब भ' रहल अछि।

शक्ति—ई त नीक नहि ।

मन्नूराम—नीक त नहियें मालिक । काल्रू सरदार क नजरि सँ जे एक बेर गिर जाइछ से फेर जीवित नहि रहि सकैछ ।

शक्ति—तोहर बहुत प्रशंसा सुनने छियन्हु । तोरा जकाँ ईमानदार, उदार और दिलेर जौं कालुओ रहतिहे तखन अखाड़ा क आने रंगत रहतिहैक । खाली अपस्वार्थी आ' चाण्डाल भेने कतहु कोनो बड़का कारबार चलल्ैक अछि ?

मन्नूराम—किन्तु ओ सरदार बनल अछि ने ! तैं अहंकार मे चूर भ' कए पदक लाभ उठा रहल अछि ।

शक्ति—तों आइ रोजगार मे नहि गेलह ? की बात थीक ?

मन्नूराम—काल्रू सँ आइ एकटा हिसाब चुकैबाक अछि मालिक !
[कहि कए छुरा कें घुरा-फिरा कए देखैत अछि ।]

शक्ति—[अपन प्रसन्नता कें नुकबैत एवं हाथक घड़ी दिसि देखैत] हम कनेक हड़बड़ी मे छी, जा रहल छी । तों एकटा काज करिह ।

मन्नूराम—हुकुम करू ।

शक्ति—आइ त नहि, कालिह कोनो समय काल्रू कें हमरा लग पठा दिह । [शक्ति क बात सुनितहि मन्नूराम उच्चस्वर मे हँसि दैत छैक ।] की बात थीक ? हँसलह कियैक ?

मन्नूराम—मालिक, कालिह काल्रू त अहाँक पास नहि जा सकत ।

शक्ति—कियैक ?

मन्नूराम—आइ साँझ, जखन ओ अखाड़ा क सभ क मुँह सँ

रोटी छीनि कए विलायती शराब आ' नव कोनो नर्त्तकी क पायल क संग रभसैत रहल, तखनहि हमर ई छूरा धीरे-धीरे ओकर छाती चीरि देतैक आ'......

शक्ति—मन्नू !

मन्नूराम—आ' छाती चीरि कए भीतर देखतैक, कत्तेक कठिन अछि ओकर हृदय और देखतैक जे ताहू सँ लहू बहैत छैक कि नहि ?

शक्ति—की बात थीक मन्नू ? तोरा कालू सरदार सँ एत्तेक घृणा कियैक भ' गेलह ?

मन्नूराम—[मलिन हँसी हँसैत] मालिक, हमर सोना क संसार कें कालू सरदार माटि मे मिला देलक। हमर बेटी और बहु तड़पि-तड़पि कए मरि गेल और हम जीवित छी !

शक्ति—तोहर बेटी ? तोहर बहुओ छलह की ?

मन्नूराम—हूँ मालिक ! सब छल आ' हमर छोट-छीन संसार बड़ सुखी छल। जाहि दिन हमर बेटी चिकित्सा क अभावें मरि गेल, ओही दिन हमर बहुओ हमरा सँ घृणा क' कए घर सँ चलि गेल। जैबाक पूर्व ओ कहि गेल छल, जे ओहो ओत्तहि जा' रहल अछि, जतय ओकर बेटी गेल छैक। और भोरहि हम देखलियैक जे घर क पछुआर मे नीमक ठाढ़ि सँ ओकर प्राण-हीण देह झूलि रहल छलैक।

शक्ति—[जी सँ आक्षेपात्मक शब्द करैत] कहक त, ई सब बात क खबर कालू त हमरा नहि कैलक। हमरा ई खबर

एकदम मालूम नहि छल, नहि त......

मन्नूराम—किन्तु कालू सरदार कें सब किछु मालूम छलैक मालिक। ओ बेईमान टाका क पिशाच अछि। जे मन्नूराम अपन जान पर खेलि कए हजार क हजार टाका ओकरा कमा कए देने छलैक तेकरहि बखत पर मात्र दू सौ टाका क लेल ओ दैला देलक। हम ओकरा जकाँ बेमानी नहि केलहुँ। टाका बीचे मे सँ उड़ा नहि लेलहुँ, नहि त आइ हमहूँ धनी रहितहुँ।

शक्ति—तोहर ईमानदारी क पता हमरो अछि मन्नूराम।

मन्नूराम—आ' ई टाका खैरात नहि माँगने छलियैक—पैंच माँगने छलियैक। मुदा ओ हमरा लतिया कए भगा देलक, जेना हम कुकुर जकाँ ओकरा पास एकटा रोटी क टुकड़ा माँगै गेल होय। तखनहि हम मने-मन कहने छलहुँ—कालू सरदार! कहियो हमरहु दिन आओत!

शक्ति—हमरो ओहि पापी क विश्वास नहि होइत अछि। किन्तु ओ एतेक नीच अछि! अपन संगी क साथ दगाबाजी! मन होइछ जे ओकर ठोंठ मोकि दी।

मन्नूराम—से कष्ट अहाँ कें नहि करै पड़त। [अपन चमकैत छूरा उनटा-पुनटा कए देखैत] ई छूरा ओकर खबरि लेतैक। हमरा केवल एतबहि प्रतिश्रुति दियह जे हमरा पर कोनो संकट आओत त अहाँ रक्षा करब।

शक्ति—मारह ओहि शैतान कें। तोरा कोनो डर नहि। पुलिस,

दरोगा आ' अफसर सब कें सँभारबाक दायित्व हमर। मुदा काज सावधानी सँ हैबाक चाही। अही सँ जौं तोरा संतोष भेटन्हु त बढ़ि जा आगाँ।

मन्नूराम—हमरा अपन बेटी कें और अपन बहु कें अपनहि हाथें चिता पर चढ़ाबै पड़ल। आ' ओहि चिता क धधकैत आगि सँ जागल हमर प्रतिहिंसा। जखन सब किछु जरि कए छाउर भ' गेलैक, तखन वैह छाउर ल' कए हम प्रतिज्ञा केलहुँ—काल्रू सरदार सँ एकर बदला हम लेबे करब ओकर खून सँ हाथ रंगि कए। मालिक, काल्रू सरदार कें हमर बहु-बेटी क मृत्यु क दाम चुकाबै पड़तैक।

शक्ति—देखह मन्नू! ओना हमरा खून-खराबी पसिन्न नहि अछि। और ई तोरा सभ क अपन मामला थिकह। हम एतबहु प्रतिश्रुति जे देलियह से केबल तोरा नीक लोक बुझि कए। ओना पहिनहि सँ हम बुझैत छलहुँ जे सरदार तोरा हैबाक चाही, काल्रू कें नहि। [जाइत जाइत पाछाँ घुमि कए] मुदा सावधान! काज होशियारी सँ हैबाक चाही!

[शक्ति प्रस्थित होइत छथि। मन्नूराम क आँखि सँ क्रोधाग्नि बरसि रहल अछि। मँच पर अन्हार पसरि जाइत अछि।]

यवनिका-पतन

चतुर्थ अंक

प्रथम दृश्य

[शक्ति क ड्राइंग रूम। शक्ति अल्पालोक मे मंच क मध्यभाग मे ठाढ़ छथि। शक्ति क मुख पर प्रकाश-रेखा पड़ैत अछि।]

शक्ति—विनय क हिसाब चुका देलहुँ। कालू सरदार एखन धरि चलि गेल हैत। आब......[सुदूरवर्त्ती कोनो वस्तु पर दृष्टि स्थिर कैने मन क दृढ़ निश्चय प्रकट क' रहल छथि। तावत् बाहर केबाड़ी पर अधीर कराघात सुनबा मे आबि रहल अछि। शक्ति कनेक थम्हि कए एकहि जगह ठाढ़ भ' कए उच्च स्वर मे कहैत छथि] केबाड़ी खुजले छैक। भीतर आउ। [कहबा क संगहि संग दरबाजा पर धक्का दैत मन्नूराम प्रविष्ट होइछ। ओकर दृष्टि उद्भ्रान्त, मुख दुश्चिन्ताग्रस्त तथा केश अविन्यस्त देखना जाइछ।]

मन्नूराम—[हपसैत-हपसैत] दोहाइ मालिक!

शक्ति—[अन्धकार मे अवधारण करबा मे असमर्थ होइत] के छें तों ?

मन्नूराम—हम मनुवाँ......हम मनुवाँ छी मालिक!

शक्ति—मनुवाँ, कोन मनुवाँ? [कहि कए पछुआ कए स्टैंडिंग लैम्पक बत्ती बारैत छथि।] ओ......तों ?

मन्नूराम—हँ मालिक, हमही छी। आइ भोर अहाँ जकरा काल्हू सरदार कें खून करै कहने छलियैक। से [घबड़ाहट देखबैत जोर सँ] खून भ' गेलैक !

शक्ति—[मुख पर प्रसन्नता क भाव] शाबाश ! मुदा......

मन्नूराम—[व्यग्र होइत] आब हमरा बचाउ मालिक ! सब भेद जाहिर भ' गेल छैक। आब हमरा......

शक्ति—[चौंकैत] आँय ? नहि-नहिं [क्रुद्ध भ' कए] हम तोरा खून करै कहलियह ? आ जौं तों खूनहु क' कए पचा नहि सकलह त सरदार की हैबह ?

मन्नूराम—[असहाय जकाँ] नहि मालिक नहि, एना नहि कहू। [तखनहि नवल प्रविष्ट होइत अछि। मन्नूराम एवं शक्ति कें बातचीत करैत देखि ओ थम्हि जाइत अछि। दुनू मे सँ क्यो ओकरा दिसि नहि देखैत छथि] अहीं त कहने छलहुँ जे खून हैबाक बाद सबटा झमेला अहीं सम्हारब। से खून त हम कैलहुँ। एखन......[खून क बात सुनतहि नवल देबाल सँ सटि कए रेडियो टेबुल आ शीशा क अलमारी क पाछाँ नुकबैत अछि।]

शक्ति—एखन की ? ई अदना बात तों पचा नहि सकैत छह ?

मन्नूराम—सब जानैत अछि जे अहाँ अड्डा क मालिक छियैक। लगलहि चलि कए जौं सब कें समझा-बुझा कए सभ क सोझा मे हमरा सरदार बना देल जाय त जे कनेक विरोधी अछि सेहो सब शान्त भ' जायत। और काल्हू क दूटा

पिट्टू जे पुलिस लग दौड़ल अछि तकरा पार क' देल जैतैक।

शक्ति—एखन अड्डा मे हमर गेनाइ सम्भव नहि।

मन्नूराम—[व्यग्रता सँ] तखन हमर की हैत ? हम कोना बाँचब ?

शक्ति—ताहि लेल हम अपना कें फँसा ली ?

मन्नूराम—मालिक, एना नहि कहू। हमरा बचा लियह ! फेर देखू हम कोना अहाँ क इशारा पर नाचैत रहैत छी। [असहाय भ' कए पैर पर खसैत अछि।]

शक्ति—[मन्नूराम कें पैर पर खसैत देखि चारू कात निहारि कए] अरे, हमर गोड़ धरने कोन लाभ ? हम करिये की सकैत छी ?

मन्नूराम—अहाँ बहुत किछु क' सकैत छी मालिक।

शक्ति—नहि-नहि ! तों नहि जानैत छह। एहि लेल बड़का-बड़का अफसर कें धरै पड़तैक; हजार जगह पैरवी करै पड़तैक। टाका पानि जकाँ बहाबै पड़तैक। ताहि मे हमहू बिका जायब।

मन्नूराम—हम पाइ-पाइ क' कए चुका देब। अहाँ जे काज कहब हम सैह करब मालिक। भरि जिनगी अहाँ क······

शक्ति—[क्रूर हँसी हँसैत] हम एहि बातक कोना विश्वास करू ?

मन्नूराम—अहाँ हमरा कोनो काज अढ़ा कए देखि लियह।

शक्ति—[किछु काल मौन रहैत छथि। तकर बाद पर्-चारणा

करैत कहैत छथि] अच्छा ! त तोहर परीक्षे भ' जाय। [क्रूर मुद्रा और कठोर स्वर मे] तोरा हम बचा सकैत छियह मन्नूराम—एक शर्त्त पर। तों त जानैत छह जे हम व्यापारी छी और व्यापारी बिना दाम लेने ककरो किछु नहि दैत छैक।

मन्नूराम—हम दाम देब मालिक। कहू, की करै पड़त ?

शक्ति—जाहि हाथें तों काल्हू सरदार क खून केलह ओही हाथें आरो एक गोट लोभी मांस क लोथ कें तोरा चीरै पड़तह।

मन्नूराम—[कनेक उच्च स्वरें] माने, फेरो खून ?

शक्ति—[डाँटैत] आह, आस्ते ! क्यो सुनि लेतह। बाजह, तों तैयार छह एहन दाम देबाक लेल ?

मन्नूराम —[अँगुरी क नह कें दाँत तर दाबैत किछु काल सोचैत अछि। फेर कहैत अछि] बेश ! ठीक अछि।

शक्ति—लगैत अछि, तोहर मन मे किछु दुविधा छह ?

मन्नूराम—एकदम नहि। हम सर्वथा तैयार छी। बताउ के थीक ओ अभागल लोग जकरा एहि संसार सँ हटाबै पड़त ?

शक्ति—ओकर नाम छियैक लखपति।

[तखनहि प्रकाश-रेखा नुकायल नवल पर पड़ैत अछि जे परम आश्चर्य-चकित भए सब सुनि रहल अछि।]

मन्नूराम—[कनेक छगुन्ता मे पड़ि कए] बेश ! हम तैयार छी।

शक्ति—बुझलह मन्नू, तोहर रास्ता सँ काल्हु हँटलह और तों अखाड़ा क सर्व-सर्वा दैबह त हमरहु रास्ता सँ हमर पार्टनर

कें हँटबाक चाही [काल्पनिक गर्व सँ अकड़ैत] और तखन हमहूँ अखण्ड अधिकारी—सर्व-सर्वा ! हा-हा ! हा-हा !!

मन्नूराम—जी सरकार ।

शक्ति—सुनह ! हर मंगलवार साँझ कें लखपति भूतनाथ क मन्दिर जाइत छथि । आगामी मंगल क साँझ कें सेहो ओ जेबै करताह । तखन ओही दिसि परोपट्टा मे हुनका······ [हाथ सँ काटि देबाक इंगित करैत छथि ।]

मन्नूराम—जी सरकार। किन्तु पुलिस...... ?

शक्ति—आह ! तकर भार छोड़ह हमरा पर ! [घड़ी दिसि देखैत] देखह, समय बेसी नहि छह । काज क' कए साँझे अखाड़ा दिसि आबिह । हम ओतहि मिलबह ।

[मनूराम क प्रस्थान । शक्ति चारूकात देखि कए ड्रॉइंग रूम सँ निकलि कए घर क भीतर चलि जाइत छथि तकर पश्चात् नवल आलमारी क पाछाँ सँ बाहर होइत अछि ।]

नवल—[मंच क मध्य मे आबि कए शक्ति क गमन-पथ क दिसि देखैत रुद्ध कण्ठे कहैत अछि] बाबूजी, अहाँ ! अहूँ तेहने छी—एकटा साधारण कुचक्री मनुष्य क टहास ? [कहैत] हम त अहाँ कें अपन मन मे कतेक ऊपर बैसौने छलहुँ। अहाँ हमर सब संचित श्रद्धा कें माटि मे मिला देलहुँ बाबूजी ! ओह ! [दुनू हाथ सँ मुँह कें झाँपने रहैत अछि। तखनहि मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

द्वितीय दृश्य

[काल्‍ह सरदारक अखाड़ा मे पूर्वदृष्ट चारि गोट गुण्डा कें नगर क पथ पर भिक्षुक क भेष मे ठाढ़ देखना जाइछ। चारि गोट भिखारी मे सँ पहिल अछि आन्हर, दोसर कोढ़ी, तेसर लूल्ह एवं चारिम तोतरा।]

अन्हरा—[कोढ़ी कें] ऐ! केहन आमद भेलह आइ, कोनो मनीबैग-तैग सुतरलह कि नहि ? [ओकरा निरुत्तर देखि] की बात थीक, चुप कियैक छह ?

कोढ़िया—अरे, हम आ ई तोतरा आइ भरि दिन बेकार घुमलहुँ, मुदा किछु नहि भेंटल।

लूल्हा—अरे किछु त भेले हैतह।

तोतरा—कि-कि-किछु नहि।

कोढ़िया—एक साला बुढ़बा क पाकिट पर कैंची चलैलहुँ त एक अठन्नी भेंटल।

लूल्हा—फेर जे कहैत छह, किछु नहि भेंटल।

कोढ़िया—पहिने सबटा गप सुनबह तब ने!

तोतरा—[कोढ़ि कें समर्थन करबाक भंगिमा मे] त-त-त-तब ने।

कोढ़िया—जेहो अठन्नी ओहि जेबी सँ मिलल, सेहो साला नकलीये छल। [सब क्यो एहि बात पर हँसि दैत अछि।]

तोतरा—असल मे सब स-स-साला नकलीये थीक।

कोढ़िया—आ' तों साला एकटा असली परमहंस छें; नहि ? [पुनः सब क्यो हँसि दैत अछि।]

लूल्हा—हे ! ई सब असली-नकली त होइत रहलैक बादो मे। एखन धन्धो लेल किछु सोचबह कि नहि ? ओना कुहाठ खेबाक मन होन्हु त......

अन्हरा—हँ कालिह सरदार क की हुकुम भेंटलह से मन छह ? मास पूरै मे एके हफ्ता बाकी रहि गेल छैक।

कोढ़िया—आ' एखनहु धरि हम सब पचीसो टा छौंड़ी कें फँसा नहि सकलहुँ।

अन्हरा—त आइ सेहो हिसाब पूरा भ' जाय।

कोढ़िया—तोहर मुहँ मे घी-शक्कर ! मुदा भाग्यो हैतह तखन ने ? आइ जतेक छौंड़ी एहि बाटे निकलल अछि, सब साली फँसने वाली, मुदा एको गोटे क रंग-रूप नीक नहि।

लूलहा --एह ! हिनका लेखें मेनका, रम्भा, उर्वशी सब अप्सरा कें एही बाटे जेबाक चाही।

अन्हरा--आ' से भाग्य हैतैक त अप्सरो आबि जैतैक।

लूल्हा--ईह ! अप्सरा एकरें लेल सींथ फाड़ने बैसल हैतैक।

अन्हरा—हैतैक ने त की ?

तोतरा—ह-ह-ह-ह-हैतक ने-ने-ने-त की ?

अन्हरा—जय भगवती ! तीन टा करिया कबुतर चढ़ैबह। मनोकामना सफल क' दे।

तोतरा—[बाधा दैत] स-स-स- ! क-क-क्यो अबैछ।

[सुनबाक संगहि तुरत भिखारी सब मंच पर दूर-दूर छिड़िया जाइछ आ' अपन-अपन ढंग सँ भीख माँगनाइ आरम्भ क' दैत अछि।]

अन्हरा—[करुण स्वर मे गबैत अछि] हुँ-बाबा, हुँ-बाबा......
बाबा बैजनाथ हम आयल छी भिखरिया,
अहाँ के दुअरिया ना !
[गबैत-गबैत हठात् रुकि कए सुनीता कें प्रविष्ट होइत देखि]
बाबा ! एहि सूरदास कें द् टा पैसा !

कोढ़िया—[अन्हरा क बात काटि कए एक विशेष सुर मे कहैछ]
दी-ई-दी, दी-ई-दी, दी-ई-दी [कहैत-कहैत कटोरी बढ़ा दैत अछि ।]

लूल्हा—[एक कोना सँ घिसिया-घिसिया कए अपन हाथ कें देखबैत] दीदी, ओ दीदी ! दीदी, ओ दीदी ! किछु भिच्छा...

तोतरा—[तखनहि तोतरो अपन जी कें इंगित सँ देखबैत] ऐ द-द-दीदी ! [दाँत निपोड़ने कटोरी बढ़बैत] कि-कि किछु भ-भ, भ-भ-भिक्षा दियह ।

सुनीता—[चारू दिसि सँ आर्त्त याचना क स्वर सँ कनेक विचलित हैत] सुनैत जा, हम सब कें देत जैबह, मुदा पहिने एक बात बता दे । [सब गोटे चुप भ' कए प्रश्न-सूचक मुद्रा मे ओकरा दिसि देखै लगैछ ।] किछु पहिने एहि बाटें सफेद कुर्त्ता आ' धोती परिहने, श्यैह प्रायः चालीस - बयालिस साल क उमिरबला कोनो लोग कें जाइतो देखने छियैक ?

तोतरा—छि-छि-छियैक । हूँ !

लूल्हा—[कर्कश स्वरें] हे साला चुप रह ! [कोमल स्वरें] हँ दीदी ; हुनक रंग गोर छन्हि ?

सुनीता—हँ रंग त गोरे छन्हि।

लूल्हा—आ' मुहँ-नाक सुन्दरे छन्हि ने ?

सुनीता—हँ; मुदा......

लूल्हा—मुदा कनेक चिन्तित जकाँ। अहीं सन सुन्दर, अहीं सन गोर आ'......हँ-हँ; एही बाटें गेल छथि !

सुनीता—कोन दिसि ? कत्तेक पहिने ?

[तावत् कोढ़िया आन सब कें आँखि सँ किछु इंगित करैत छैक। आन भिखारी सब पुनः दी-दी, दी-दी कहैत अगुआबैत छैक। सुनीता बैग खोलि कए ओहि सँ पैसा निकालवा लेल कनेक झुकैत अछि कि तखनहि एक गोटे पाछाँ सँ झपटि कए ओकर मुहँ एक गमछा सँ झाँपि दैत छैक। सुनीता चिकरैत अछि और पड़ैबाक उपक्रम करैत अछि, मुदा लूल्हा ओकर हाथ पकड़ि कए घींचै लागैत छैक। किछु काल छटपटा कए सुनीता लड़खड़ाबैत बेहोश भ' कए खसि पड़ैछ।]

अन्हरा—देखलें हमर बात ? ई कोनो अप्सरा सँ कम छैक ?

लूल्हा—एह, यार ! आइ माल भेंटलौक अछि !

तोतरा—हँ; म-म-माल भेंटलै !

लूल्हा—धत् साला; चल उठा।

[तखन सब गोटे सतर्क दृष्टियें सब दिसि निहारैत सुनीता कें उठैबाक उपक्रम करैत अछि। मंच अन्हार भ' जाइत छैक।]

तृतीय दृश्य

[विनय क घर। देवाल क स्थान पर एकटा कारी पर्दा झूलि रहल अछि। घर मे सर्वत्र घोर मलिनता क चिह्न परिलक्षित भ' रहल अछि। प्रकोष्ठ क एक दिसि बेंच देखना जाइछ जकरा ऊपर सुनीता क झाँपी राखल छैक। बुझाइ पड़ैछ जेना मद्धिम प्रकाश घर क श्मशान सनक उदासी कें और अधिक गम्भीर बनबैत जीवन तथा जगत पर व्यंग्य क' रहल हो।]

विनय—[मंच क सम्मुख भाग दिसि अगुआ कए दुनू हाथ सँ मुहँ झाँपने ऊपर तकैत] हे भगवान्! नहि जानि ई कथीक दण्ड द' रहल छी। हमर माय-बाप, स्त्री, सम्पत्ति—सब चलि गेल; मित्र अमित्र बनि गेल, हर्ष विषाद बनि गेल, अर्थ अनर्थ बनि गेल—ई सब किछु हम सहलहुँ। एखन अपन बेटी क सुख देखि कए हम जीवन क शेष दिन आनन्द सँ बिता सकतिहौं, सेहो हमरा लिखल नहि छल। [किछु काल मौन रहि कए] ओह! एहि घर क देवाल सब पर मृत्यु क भीषण हस्तलेख अछि। एहि देवाल सब सँ बास करैत-करैत हम पागल भ' जायब......

[एतबा कहि कए विनय पद्चारणा करैत-करैत दहिना दिसि मंच क कोना पर अबैत छथि कि सुनीता लघु पदक्षेप करैत प्रविष्ट होइत अछि। सुनीता क वसन असम्भृत, आंगी

फाटल, केश खुजल एवं आँखि क दृष्टि अत्यन्त अस्वाभा-विक सन बुझाइछ ।]

सुनीता—[धीरे-धीरे] बाबूजी ! [विनय सुनीता क शब्द कें नहि सुनैत छथि। तैं सुनीता कनेक जोर सँ बजैछ] बाबूजी !

विनय—[चौंकैत] के ? [पाछाँ घूमि, सुनीता क दिसि देखैत विस्मय-मिश्रित उत्तेजना क संग] सुनीता ! ई हम की देखि रहल छी बेटी ? तोहर ई हाल के कैलक ? [विनय क वाक्य समाप्त हैबाक पहिनहि सुनीता अर्द्ध उन्मत्त जकाँ हँसै लगैत अछि। हँसैत-हँसैत सुनीता क आँखि मे नोर आबि जाइत छैक।] सुनीता बेटी ! के तोहर ई हाल......

सुनीता—[हँसैत-हँसैत हठात् रुकि कए, मुहँ क सामने चलि आयल केश-गुच्छ कें हँटबैत तीक्ष्ण दृष्टियें विनय क दिसि देखैत] हमर की भेल से सुनि सकब बाबूजी ? एत्तेक धैर्य हैत ? [विनय कें निरुत्तर देखि] एकटा गुण्डा क अखाड़ा मे आइ तीन दिन सँ अहाँ क बेटी क देह लोग क......

विनय—[तामसें थर-थर काँपैत] सुनीता !

सुनीता—[हँसैत] और सुनब बाबूजी ? ओ सब हमर सब किछु लूटि कए......

बिनय—[सुनीता कें हाथ सँ रोकैत आँखि मुनने] नीता, रहै दे ! आब चुप भ' जो। ओह ! हमरा किछु नहि फुरैत अछि। हे भगवान् !

सुनीता—[मृदु-मृदु हँसैत] मुदा हमरा फुरैत अछि बाबूजी ! [कहि कए त्वरित गतियें बेंच लग जा कए झाँपी सँ एकटा शीशी निकालि कए उल्लास क नाट्य करैत शीशी कें हाथ सँ ऊपर उठा कए विनय कें देखबैत] एकरा हम बहुत दिन सँ, बहुत यत्नें सम्भारि कए रखने छलहुँ जे कहियो समय पर काज देत। कतेक बेर मन भेल जे एहि निस्संग जीवन क स्पन्दन कें बन्द क' दी। मुदा से नहि क' सकने छलहुँ। [विराम। हपसैत] मुदा आइ......आइ ओ दिन आबि गेल अछि जखन......[एतबा कहैत-कहैत सुनीता विष क शीशी खोलै जाइछ कि विनय झपटि कए ओकरा दिसि बढ़ैत छथि।]

विनय—[चिकरि कए डाँटैत] सुनीता ! [शीशी छीनि कए ओकर लेबुल पढ़ैत] भयंकर विष ! Deadly poison [पढ़ि शीशी अपन जेबी मे राखि लैत छथि।]

सुनीता—ओ द' दियह बाबूजी !

विनय—नहि, नहि ! हरगिज नहि !

सुनीता—[क्रूर व्यंग्य-पूरित स्वरें] ओह ! ओहो नहि लैमै देब ? [हठात् किछु सोचैत बेंच दिसि अगुआबैत अछि और अपन झाँपी खोलि कए तुरत ओहि मे सँ मंगटीका निकालि कए विनय दिसि बढ़बैत] हा-हा, हा-हा ! तखन ईहो ल' लियह। माइ हमरा लेल ई सोहाग क चिह्न राखि गेल छलीह। [जोर सँ क्रन्दन-पूरित स्वरें] आब एकर

कोनो काज नहि। [पुनः अट्टहास] हे लियह, [विनय क हाथ मे दैत] एकरा बेचि कए मद कीनि कए पी लेब ! [अट्टहास]।

विनय—[जोर सँ रोष तथा क्रन्दन-पूरित स्वरेँ] सुनीता !

सुनीता—[अट्टहास] और रहू। [पुनः झाँपी खोलि कए चन्द्र-हार ल' कए विनय क हाथ मे दैत] और छै ई चन्द्रहार सेहो हमर बियाह क लेल माइये राखि गेल छलीह। ईहो ल' लियह ! हम चललहुँ !

विनय—तों कतय जेबे ? एहि घर आ' कुल के ध्वंस क' कए....।

सुनीता—[अट्टहास] जकरा अपन पत्नी अथवा सन्तान सँ बेशी आकर्षण बोतल क रंगीन जल मे भेंटत छैक तकरो घर आ' कुल क रक्षा कहियो भेल छैक बाबूजी ? [देर धरि अट्टहास]।

विनय—हँ, ठीक कहलें। ई सब हमरे पाप क फल थीक ! सब हमरे......।

सुनीता—[पुनः झाँपी खोलि कए एक पितरिया पुचकारी निकालि कए] बाबूजी, ई पुचकारी हमरा ममिऔत भाउज पठौने छलीह जे बियाह भेला उत्तर फगुआ मे हम दुलहा संग होरी खेलब, होरी। [अट्टहास। छुच्छे पुचकारी कें चलबैत विक्षिप्त जकाँ] दुलहा संग होरी ! पुच्च, पुच्च ! [पुनः अट्टहास] दुलहा संग होरी ! हा-हा, हा-हा !

विनय—सब दोष हमर ! सब हमरे पाप क फल थीक। सब

दोष हमरे......[कहैत-कहैत हाथ क गहना धरती पर फेंकि कए मंच क दहिना दिसि सँ प्रस्थान।]

सुनीता—[विक्षिप्त जकाँ] दुलहा संग होरी ! हा-हा, हा-हा ! पुच्च, पुच्च ! [पुच्च-पुच्च कहैत मंच क बाम दिसि सँ प्रस्थान।]

यवनिका पतन

पंचम अंक

प्रथम दृश्य

[गम्भीर चिन्ता-निमग्न नवल पार्क क वेदी पर बैसल अछि। मंच शनैः शनैः आलोकित होइत अछि। तत्पश्चात् बाम दिसि सँ खाली पैरें टगैत, खिन्नमना, सर्वस्वापहृता जकाँ मंथर गतियें सुनीता प्रविष्ट ओइत अछि। साड़ी मलिन तथा केश रुक्ष और विस्रस्त छैक। ओकर मुहँ सँ जड़ता, अवसाद तथा किंचित उद्विग्नता क भाव प्रकट भ' रहल छैक।]

नवल—[सुनीता क दुरवस्था देखि अपन दुश्चिन्ता कें बिसरि कए] की बात थीक सुनीता ? की भेल अछि ?

सुनीता—[किछु काल मौन रहि, नवल दिसि एक टक देखैत रहैत अछि। पुनः आत्म-नियन्त्रण करैत अश्रु-रुद्ध कंठें] हम......हमर सब किछु लुटा गेल नवल !

नवल—सुनीता ई की कहि रहल छी ?

सुनीता—हम ठीके कहि रहल छी ! अहाँ क सुनीता आब सुनीता नहि रहल; ई ओकर प्रेत छियैक !

नवल—अहाँ की सब बाजि रहल छी ?

सुनीता—हँ नवल ! हमर अपहरण भेल। गुण्डा सब हमरा बेहोश क' कए घींचि कए एक अड्डा मे ल' गेल और नर-

पिशाच सब हमर देह क ऊपर सब प्रकार क अत्याचार कैलक।

नवल—[चीत्कार क' कए] सुनीता! [माथ डोलबैत] नहि-नहि सुनीता, ई नहि भ' सकैछ।

सुनीता—ई भ' सकैछ आ' इयैह भेल अछि। [कनेक थम्हि कए] और जखन हम ओहि नरक-लोक सँ घर ऐलहुँ तखन उद्वेग मे बाबूजी कें किछु अपशब्द कहि देलियन्हि। विश्वास करू, हमर दिमाग ठीक नहि छल। [क्रन्दन-पूर्ण स्वर मे] और हमर बाबूजी ई आघात नहि सहि सकलाह।

नवल—[व्यग्र भ' कए] तखन की भेलैक ? सब किछु खोलि कए कहू सुनीता !

सुनीता—हमर बाबूजी [ठोर कें दाँत तर दाबैत] आत्म-हत्या क' लेलन्हि [क्रन्दन करैत]—विष खा कए !

नवल—[चीत्कार करैत] सुनीता !

सुनीता—[कनैत] हँ नवल, सबटा दोष हमरे अछि। हम नहि जानैत छलहुँ जे एहि बीच बाबूजी क ऊपर आनहु दिसि सँ एत्तेक आघात आयल छलन्हि। [कनेक थम्हि कए] आ' जखन हम से जानलहुँ, तखन बहुत देर भ' चुकल छलैक।

नवल—ओह ! सुनीता, आइ हम ई की सब सुनि रहल छी ? कियैक अहाँ क एहन अवस्था भेल ? कियैक ई सब भेल ? हमरा किछु नहि फुरि रहल अछि। कियैक, कियैक ई सब भ' रहल अछि ? हमर सपना, हमर आस्था, हमर श्रद्धा,

हमर विश्वास सब किछु क देबार जेना ढहि रहल अछि।

सुनीता—विश्वास संसार मे छैके कतय? बाबूजीयोक संग त विश्वासघाते भेलन्हि ने।

नवल—विश्वासघात? के हुनका संग विश्वासघात कैलकन्हि?

सुनीता—विष खैबाक पूर्व बाबूजी एक चिट्ठी मे सब किछु लिखि गेल छथि। हे [आँचर क खूँट सँ एक मोड़ल कागज निकालि कए दैत] इयैह अछि ओ चिट्ठी।

नवल—[कम्पित हाथें सुनीता क हाथ सँ ओ चिट्ठी लैत अछि। चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत नवल क मुख विवर्ण भ' जाइत छैक और ओ थम्हि-थम्हि कए कहैत अछि] पार्टनर शक्ति कुमार राय......शेयर हस्तान्तर......चोरी क कलंक...... शक्ति कुमार?......

सुनीता—[नवल कें लक्ष्य करैत बात काटि कए] हँ; शक्ति कुमार राय! वैह छथि हमर बाबूजी क घातक! वैह हमर बाबूजी कें पतन क पथ पर धकेलि देने छलथिन्ह।

नवल—[नवल सुनीता क बात नहि सुनैछ। ओ शक्तिक नाम ल' कए बड़बड़ाइत रहि जाइछ। सुनीता क कथन समाप्त हैबाक बाद ओ स्वर मे परिवर्त्तन आनि कए कनेक उत्तेजित भ' कए कहैत अछि।] नहि, आब हम नहि सहब......... आब......

सुनीता—[साश्चर्य] अहाँ की कहि रहल छी? की नहि सहब?

नवल—सुनीता! हम......हम इयैह प्रतिज्ञा क' रहल छी जे

अहाँ क बाबूजी क हत्यारा कें पकड़ब। हुनक मृत्यु क आ' अन्याय क प्रतिशोध लेबे टा करब।

सुनीता—मुदा अहाँ ?......कोना ?

नवल—[सुनीता क बात काटैत] आह! हम जे कहैत छी से सुनू! आइ कोन दिन थीक ?

सुनीता—मंगलवार।

नवल—आइये सन्ध्या काल प्रकाश आ दीपक कें ल' कए ओहि नृशंस अपराधी कें पकड़बाक हेतु हम घर सँ प्रस्थान करब। अहाँ हमरा घर क पास चौराहा लग ठाढ़ रहब। हमरा देखितहि अहाँ हमरा सभ क पाछाँ-पाछाँ निःशब्द भावें चलि आयब।

सुनीता—[विस्मित भए] किन्तु......

नवल—आह सुनीता! हमरा एखन समय नहि अछि। सब कें खबरि देमै पड़त! पुलिस कें सावधान करै पड़त। हम चलैत छी! [कहि कए नवल झटकि कए मंच सँ प्रस्थित होइत छथि। सुनीता अवाक् भए देखितहि रहि जाइत अछि। मंच अन्हार भ' जाइछ।]

द्वितीय दृश्य

[काल्‌ सरदार क अखाड़ा। नवीन सरदार मन्नूराम एवं शक्ति मंच क मध्य भाग मे राखल टेबुल क दुनू कात बैसल

छथि। टेबुल क ऊपर ढेर राशि नोट क पुलिन्दा सजाओल अछि। शक्ति बीच-बीच मे टाका क पुलिन्दा दिसि लुब्ध दृष्टियें देखि रहल छथि।]

शक्ति—वाह मन्नूराम। तों त कमाल क' कए देखा देलह।

मन्नूराम—सब अहीं क कृपा मालिक।

शक्ति—कृपा त कालुओ पर कैने छलहुँ। किन्तु ओ शैतान हमर निमक क दाम नहि चुकैलक। तों त एतबहि दिन मे आमदनी दुगुना क' देलह।

मन्नूराम—पहिनहि कहने छलहुँ मालिक, हमरा अखाड़ा क भार द' कए देखू—हम की करैत छी। एखन त आमदनी मात्र दुगुने भेल अछि। देखैत रहू जे थोड़बेक दिन मे और कत्तेक बढ़ैत अछि।

शक्ति—[मन्द-मन्द मुसकियाबैत] बेश! बेश!!

मन्नूराम—[बात काटैत] एखन हिसाब मिला लेबाक चाही।

[तखनहि नवल आ' सुनीता निःशब्द भावें प्रविष्ट होइत अछि। अति व्यस्तता क कारणें मन्नूराम वा शक्ति क्यो एहि दुनू कें देखि नहि सकल छथि।]

नवल—हँ मन्नूराम, हिसाब मिलैबाक समय आबि गेल छैक!

शक्ति—[चौंकैत] के?

नवल—हम—अहीं क विनम्र पुत्र नवल!

शक्ति—[अत्यन्त विस्मित भए] नवल......? तों एतय?

नवल—एत्तेक आश्चर्य कियैक भ' रहल अछि अहाँ कें? ई प्रश्न

त हमहूँ क' सकैत छी !

शक्ति—मुदा एतय कोना ऐलह ? के देखौलकह ई जगह ?

नवल—एतय ? चुपचाप अपन पिता क चरण-चिह्न पर चलि कए आबि गेलहुँ !

[अखाड़ा मे प्रवेश कैलाक पश्चात् आरम्भहि सँ सुनीता चारू कात चकित भए प्रखर दृष्टियें निहारि रहल अछि। नवल क मुहें 'पिता' सुनि कए ओ शक्ति दिसि देखैत अछि।]

सुनीता—[जोर सँ घृणा और विस्मय-युक्त स्वर मे] पिता ? अहाँ क पिता ?

नवल—हँ सुनीता, इयैह छथि हमर पितृदेव, इयैह छथि अहाँ क ओ पितृबन्धु और इयैह छथि एहि अखाड़ा क मालिक।

सुनीता—इयैह थीक ओ अखाड़ा। इयैह जगह। आ' हे वैह हमर चप्पल एखनहु पड़ल अछि। इयैह थीक ओहि पिशाच संभक......

नवल—हँ सुनीता, इयैह थीक ओ अड्डा !

सुनीता—[चीत्कार करैत] मुदा अहाँ......क बा...बू...जी ! नहि-नहि !

नवल—सत्ते सुनीता ! हमर बाबूजी ! चोरी, डकैती, बैमानी, अपहरण आ' नर-हत्या क सफल सूत्रधार, प्रतिष्ठित नागरिक, परम धार्मिक ! हमरे बाबूजी !

सुनीता—[आत्म-विस्मृत जकाँ] अहाँ......क बा...बू...जी ! [आवेशें] नहि-नहि ! ई नहि......ई की ?

नवल—ओऽ...आ' बाबूजी, ई अछि सुनीता—हमर वाग्दत्ता। सुनीता हिनका प्रणाम करियन्हु! आ' ई सुनीता थिकीह—अहीं क मित्र विनय बाबू क कन्या!

शक्ति—[आश्चर्य तथा आवेश मे] विनय बाबू?

नवल—[सहज भावें] हँ बाबूजी, वैह विनय बाबू अहाँ क पार्टनर; नहि चिन्हलियन्हि? [शक्ति कें आश्चर्य सँ देखैत देखि] जिनका पर अहाँ चोरीक कलंक लगौलियन्हि, जिनक सब शेयर पचा लेलियन्हि आ' जिनक [सुनीता दिसि अंगुरी सँ संकेत करैत] बेटी क अपहरण आ' गंजन करौलियन्हि, जिनका आत्महत्या करबाक लेल अहाँ बाध्य क' देलियन्हि वैह विनय बाबू।

शक्ति—विनय बाबू क कन्या!

नवल—हँ बाबूजी, हुनके कन्या......

[तखनहि प्रकाश और दीपक क संग दरोगा और सिपाही क प्रवेश। शक्ति और मन्नूराम विस्मित एवं आतंकित छथि। मन्नूराम व्याकुल भए चारू कात. पड़ैबाक पंथ निहारैछ।]

नवल—[मन्नूराम क प्रति ऊ-हुँ-हुँ मन्नूराम, वृथा पड़ैबाक चेष्टा क' कए लाभे की?

दरोगा—पुलिस अखाड़ा कें चारू कात सँ घेरि लेने अछि।

नवल—आ' हमरा विचारें बन्दूक क गोली सँ फाँसी क रस्सी नरमे होइत छैक। [दरोगा क दिसि देखैत] इन्सपेक्टर, ई इयैह [संकेत करैत] थिकाह अहाँ क दुनू असामी—

शक्ति बाबू आ' मन्नूराम ।

दरोगा—[सिपाही कें] एहि दुनू क हाथ मे हथकड़ी लगावह !

[सिपाही पहिने मन्नूराम क हाथ मे हथकड़ी पिन्हैबाक लेल अगुआ' जाइत अछि ।]

नवल—सुनीता ! हम कहने छलहुँ ने, हत्यारा कें पकड़ब आ' अन्याय क प्रतिशोध लेब, से हम अपन वचन क रक्षा कैलहुँ ! [हँसैत अछि] हा ! हा !!...वैह देखू हमर बाबूजी कें......हा ! हा !!......पिता हि परमो धर्मः......हा ! हा !!

[कहि कए उच्चकंठें हँसै लगैत अछि। नवल क दिशि साश्चर्य देखैत-देखैत जे जाहि मुद्रा मे ठाढ़ छल, ताही मुद्रा मे प्रस्तरीभूत भ' जाइत अछि । नवल क हँसी क वेग बढ़िते रहि जाइछ। आलोक अत्यन्त अल्प भ' कए मंच अन्धकार-प्राय भ' जाइछ ।]

तृतीय दृश्य

[नवल हँसिते रहि जाइछ। ओहि हँसी क संगे-संग अन्हारहि मे नेपथ्य सँ हाहाकारमय कोलाहल सुनना जाइछ, जाहि मे एकहि मुहूर्त्त मे "बाप रौ" "नेना छीनि लेलक," "जेबी कटि गेल," "खून-खून," "ल' कए भागि गेल," "बचाउ-बचाउ," "दौड़ू-दौड़ू" इत्यादि सुनना जाइछ। नवल क हँसी क शब्द एहि कोलाहल मे डूबि जाइछ । अकस्मात् सब

शब्द बन्द भ' जाइत छैक आ' अत्यल्पालोक मे नेपथ्य मे दूर सँ निम्नोलिलखित पात्र सभ क कंठस्वर सुनना जाइछ—]

शक्ति— [नेपथ्य मे] हमरा अपना पर घृणा भेल, अपन गरीबी पर घृणा भेल, अपन धर्म, समाज, आदर्श, ईश्वर— सब किछु पर घृणा भेल आ' ओहि विपुल घृणा क पंकहि सँ जन्म लेलक हमर महत्वाकांक्षा और प्रतिहिंसा।

रहमत अली—[नेपथ्य सँ] सरदार, ओहि नेना क माय क चेहरा हू-ब-हू हमर छोटकी बहिन सन छलैक। जखन हम देखलियैक जे ओकरा साँइयो नहि रहलैक त ओकर एक मात्र आसरा ओहि नेना कें ल' कए हमरा नहिं पड़ा भेल सरदार!

मन्नूराम—[नेपथ्य सँ] हँ मालिक, हमरा सब छल आ' हमरा छोट-छीन संसार बड़ सुखी छल। जाहि दिन हमर बेटी चिकित्सा क अभावें मरि गेल, ओही दिन हमर बहुओ हमरा सँ घृणा क' कए घर सँ चलि गेल। और भोरहि हम देखलियैक जे घर क पछुआर मे नीम क ठाढ़ि सँ ओकर प्राण-हीन देह झूलि रहल छलैक।

सुनीता—[नेपथ्य सँ] हमरा की अभाव रहत कहू त? जकर पास किछु छैक, अभाव तकरहि होइत छैक। हमरा त किछु अछिये नहि। जखन छोट छलहुँ माय तखनहि मरलीह, और हमर बाबूजी जीवित छथि, मुदा......

विनय—[नेपथ्य सँ] नीतू बेटी ! हमरा के सब ने धक्का देलक। धक्का खा कए हम जतय खसलहुँ, ओ छल एकटा कसाइ-खाना, जतय लोग अपन मांस बेचि-बेचि कए खूब कमा सकैत छल। ......हम एकटा दसटकही लड़की सँ पुछलहुँ, ई कोन देश थीक ? ओ कहलक ओहि जगह कें संसार कहल जाइत छैक। कह त केहन सुन्दर नाम थीक—सं-सा-र।

[विनय क अन्तिम शब्द क समाप्ति क संगहि अत्यल्पा-लोकहि मे नवल क अट्टहासक पुनः आरम्भ भ' जाइत छैक। आलोक ओकर मुहँ पर विक्षिप्त जकाँ, अट्टहास क संग ताल रखने थर-थर काँपैत पड़ि रहल अछि। लगलहि शनैः-शनैः आलोक पसरै लगैत अछि। पूर्ण आलोक पसरलाक पश्चातो नवल अत्यन्त विक्षिप्त जकाँ हँसिये रहल अछि। तखनहि प्रेक्षक लोकनिक दिसि सँ नाट्यकार आगाँ बढ़ैत छथि और मंच पर चढ़ैत देखल जाइत छथि। नाट्यकार प्रेक्षकाभिमुख भए, अट्टहास-निरत नवल कें छुबैत छथि कि तखनहि ओकर हँसी बन्द भ' जाइत छैक और ओहो प्रस्तरीभूत भ' जाइत अछि।]

नाट्यकार—[नवल क देह कें कैक जगह टेबि कए देखैत-देखैत प्रेक्षकवृन्द क दिसि घूमि कए कहैत छथि] और तकर बाद सँ आइ धरि नवल, हमर नाटक क नायक, प्रति राति मे एहिना पागल जकाँ हँसैछ, कानैछ, बिलपैछ—प्रति मुहूर्त्त ओ अपन कथी क ने प्रायश्चित्त क' रहल अछि। [किछु विराम क

पश्चात् नवल क देह सँ हाथ हँटा कए पदचारणा करैत]
एखन अहीं सब कहू एहि जीवन्मृत नायक कें ल' कए हम
की करू ? ओ यावत् धरि नहि मरै तावत् धरि हम कोना
मारू ओकरा ? [विराम] मुदा, ई सब बात सोचितहि
हमरा मन पड़ि जाइत छथि अपन प्रकाशक जे कठोर शब्द
मे हमरा नीक जकाँ चेता गेल छलाह जे जौं हम एहि बेर
नायक कें नहि मारी त ओ हमर पड़ोसी नाट्यकार असिते
बाबू सँ नाटक क सट्टा क' लेताह। फेर सोचैत छी मरणहु
सँ कतेक भीषण छैक नवल क जीवन ! [किछु काल मौन
रहि कए] अहाँ सब कें एतबाक देर मे हम सम्पूर्ण नाटक
बता गेलहुँ। एखन अहीं सब हमरा कहू—हम एहि उभय-
संकट मे की करी ! नायक कें मरण क माल्य सँ भूषित करी
अथवा जीवन क जयशब्द सँ स्पन्दित करी ?

पटाक्षेप

प्रथम अभिनय रजनी

आन्ध्र ऐसोसियेशन हॉल, कलकत्ता

विद्यापति स्मृति-पर्व

६ फरबरी, १९७२

नाट्यकार—नचिकेता

शक्ति—शुकदेव ठाकुर

लखपति—श्रीमन्त मिश्र

विनय—जनार्दन झा

नवल—रामलोचन ठाकुर

प्रकाश—श्रीकान्त मंडल

दीपक—बालेश्वर झा

काल्लू सरदार—उदय नारायण सिंह

मन्नूराम—गौतम भारती

पहिल गुण्डा—

दोसर गुण्डा—गोपाल ठाकुर

तेसर गुण्डा—चंचल ठाकुर

चारिम गुण्डा—सियाराम झा

रामभरोस—द्वारिकानाथ चौधरी

पहिल किरानी—द्वारिकानाथ चौधरी

दोसर किरानी—गोपाल ठाकुर

दरोगा—कान्तिबिहारी मिश्र

सिपाही—जयबल्लभ झा

सुनीता—चन्द्रकला 'किरण'

नर्तकी—

लेखक-परिचिति

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'।

संस्कृत, मैथिली, बंगला, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच तथा भाषाविज्ञान मे विशेष अध्ययन।

साहित्य, संगीत, आ' चित्रकला मे विशेष रुचि।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ—

कथयो-वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संग्रह)

अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संग्रह)

नायक क नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)

'मैथिली कविता' त्रैमासिकी पत्रिका क सम्पादन।

तत्काल,

१६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५ मे अवस्थिति।

स्थायी निवास—

ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बजार, जिला—सहर्षा।

पल्लव

साहित्यिक मासिक सहयोग शुल्क १/- टका
वर्ष : ८, अंक : अट्ठारह-उन्नैस, २०५१ अगहन-पूस
मैथिली विकास-मञ्च, काठमाण्डूक लेल धीरेन्द्र प्रेमर्षिद्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित
विशेष सहयोगी : नीरज कर्ण, सहयोगी : रूपा धीरू आ सुनील पुरी
प्रतिनिधि : उमेश भगत (विराटनगर), श्यामसुन्दर कापड़ि 'शशि' (जनकपुरधाम)
टाइप सेटिंग : भ्याली कम्प्यूटर सर्भिस, बागबजार, पुतली सडक चोक, काठमाडौं
अइ अंकक आर्थिक सहयोगी : केशवानन्द मिश्र, मिश्रानन्द भवन, तिलाठी, राजविराज

हमर पतिक लेल

उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'

ई नै पुछू– कोना भेटल हमरा ई व्याकरण ।
के देलक हमरा कविता– संहिता ।
ई नै कहू– की करबें ईसब अन्टसन्ट पोथार्से
दही भरका भौंकाह आगिमे, सहस्रमूर्खक चिता ।
ई नै सोचू– अक्षर-ज्ञान नै अछि
तें सोझ क क पोथी धरौ नै अबै छै
नै जनै छी आद्यन्त 'गीता' ।
पूछब त पता चलत– रूचिर हरणक संवेद छै अखनो मनमे
फलै-फुलै छै अखनो आर्द्र शरीर
अखनो अछि मनमे स'ख बाँकी,अखनो जादू-छड़ी छी घुमा सकैत
तखन अइमे कोन अचरजक बात जे नै अहाँ
त आनो क्यो हमरा ल क लिखत नवकविता ।
लिखल जाएत व्याकरण– हमर चलित-चित नयनपर ।
की कहब एकरा– आत्मम्भरिता ?

जनशक्ति

शंकरदेव झा

ओछा देल– फोड़िक' चट्टानी एकताक रोड़ा
ध देल– विरोधीके पीसिक' माटि जकाँ
चला देल– तुगलकी फरमानक पुलिसिया रोलर
बहा देल– वर्ग-विशेषवला तुष्टिक अलकतरा
रोपि देल– दुनू कात घृणा आ द्वेषक घन क राजनीतिक गाछ
ठाढ़ क देल– पैघ-पैघ नामधारी खुंखार पहरेदार
तखन चलि पड़ल– चिक्कन छायादार बाटपर
सर्वशक्तिमानक वातानुकूलित रथ– निष्कंटक भेल ???
किन्तु, नै बूझल छैक– अखनो कनखड़ले छै किछु रोड़ा
नोखगर, चोखगर, धरगर

जिनगी कोना जरै छै ।

बुद्धिनाथ झा

भरिदिनसँ भीख मंगैत, आधो पेट भरबाक ढौआ
बौरकीमे नै पबैत– ओ भिखमंगा
फिरीसान, यत्नरत–"बाबू भीख, बाबू .... बाबू ....."
"रौ, भीख की मंगैछें, मेहनति किए नै करैछें ?"
भिखमंगा आँखि उनारलक, तकलक आ बाजल–
"सेठजी, अहाँ कहियो मंगने छी भीख ?"
लोहछि उठल सेठ–"हम किए मांगब ?"
"त फेर अहाँ की जान' गेलियै जे
जीवन जीबालए जिनगी कोना जरै छै,
अहाँ की जान' गेलियै– चण्डाल मेहनति ककरा कहै छै ।"

आस

राजकुमार मिश्र

कि नै उठैछ– प्रशान्त समुद्रोमे हिलकोर ?
कि नै होइछ– ध्रुव-प्रदेशोमे इन्होर ?
छोटछीन पाँतियोसँ– कि नै होइछ आह्वान ?
सूतल रहने– कि बाँचि जाइछ प्राण ?
मानवक चेष्टासँ– कि रहि गेल एभरेष्ट अजेय ?
कि पाओल नै गेल– अनन्त आकाशोपर विजय ?
कि बिनु चेष्टेक– ढहि जाइछ राक्षसक अहंकार ?
बिनु चोटहि कि टूटि जाइत अछि– वज्रसन पहाड़ ?
कि लुत्ती नै दैत अछि– आगिक धाह ?
गामक गाम मिनटेमे कि नै भ जाइछ– सुड्डाह ?
गुजगुज अन्हारोमे– कि नै भ सकैछ प्रकाश ?
कि मैथिल नै पाबि सकैछ– नव जीवन, नव आस ?

गीत

दिगम्बर झा 'दिनमणि'



उदय नारायण सिंह
'नचिकेता'

प्रत्यावर्त्तन

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

प्रकाशक :
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०० ०४५

प्रथम संस्करण :
१९७६ ई०

प्रकाशक :
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०० ०४५

वितरक :
मैथिली रंगमंच
१६२/ए/८५, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०० ०४५

आवरण :
उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

मुद्रक :
सिंह प्रेस
कलकत्ता-७०० ०४५

मूल्य :
तीन टाका

नाट्यकारक वक्तव्य

'प्रत्यावर्त्तन' हमर षष्ठ पूर्णांग नाटक थिक। एकर पहिलुका नाटक सब मे सँ 'आन्दोलन' (१९७३) आ' 'रामलीला' (१९७४) कें छोड़ि कए बाकी नाटक सब ('नायकक नाम जीवन', 'एक छल राजा', 'नाटकक लेल') प्रकाशित आ' अभिनीत भेल अछि। एहि नाटक क नामकरण कैक दृष्टियें सार्थक अछि। स्वप्नकल्पित अप्राप्य आदर्शक पश्चाद्धावन कें छोड़ि नायक मानव घुरि ऐलाह कठोर वास्तव मे। एम्हर दू वर्ष सँ चारिटा एकांकी ('जनक', 'ओ कागज केर बाघ छथि', 'इन्द्रमा', आ' 'प्रयोग') रचनाक बाद हम घुरि ऐलहुँ पुनः पूर्णांग नाट्यरचनाक क्षेत्र मे। तकर अलावा, एकर पहिलुका नाटक सब मे दृश्य-सज्जा, दृश्यविभाजन, आलोकसम्पात आ' कथाविन्यास क क्षेत्र मे जे निरीक्षण आदि कैने जाइत छलहुँ, एहि नाटक क रचना करैत काल से सबटा कें दूर हँटाए हम पुनः प्राचीन रीति क व्यवहार मे घुरि ऐलहुँ। देखै चाहैत छलहुँ, पुरनका तकनीक क व्यवहार करैत एकटा नव कथा कें सार्थक रूपें कहल जा सकैत अछि वा नहि। भाषाक अति द्रुत एकरूपीकरण (Standardization) क नारा मे गला मिला कए हम सब जाहि तरहें दड़िभंगा-शैलीक व्यवहार कें जनप्रिय बनैबाक प्रयास करैत आबि रहल छी (तकरा हम बेजाय काज करब नहि कहै चाहैत छी)— एहि नाटकक कथाक परिवेश कें देखैत हम वार्त्ता-रचना मे— ताहि सँ हँटि कए आंचलिक उपभाषाक व्यवहार कैने छी। एतय सहरसाक उपभाषाक जे लेख्यरूप हम देने छी, सहरसाक अधिकांश मैथिल साहित्यकार-बन्धु भरिसक ताहि सँ सहमत हैताह। नाटकक नायक दड़िभंगाक छथि; तें ओ आन तरहें बजैत छथि। एहि नाटकक अभिनयक लेल समुन्नत मंच व्यवस्थाक प्रयोजन नहि हैत। ई कत्तहु खेलायल जा सकैत अछि। और तें, एहि नाटक क रचना करैत काल हम सदिखन ई बात ध्यान मे राखलहुँ जे एकर रचना एहि प्रकारें होइक, जाहि सँ एकर निर्देशक कें आपन प्रतिभाक प्रदर्शनक पूर्ण स्वाधीनता भेंटन्हि। आशा अछि, एकर पाठक, दर्शक, निर्देशक, अभिनेता आ' आलोचक लोकनि एकर दोष-गुण क विषय मे आपन अभिमत प्रकट कए हमर नाट्यरचनाक मानोन्नयन मे सहायता करताह।

—उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

पात्र-परिचय

मानव—आदर्शवादी डाक्टर।

प्रवीण—चिरागबस्ती गामक एक वृद्ध अन्ध व्यक्ति।

नारद—गामक एक वयस्क व्यक्ति, प्रवीणक भैयारी मे सँ।

मारीच—गामक अर्धशिक्षित वैद्य।

राजा सेठ—गामक सब सँ धनिक महाजन।

बुचकुन—प्रवीणक खवास।

करुणा—प्रवीणक विधवा पुत्रवधू।

कौशल्या—गामक वयस्का विधवा महिला।

पहिल गौँआ, दोसर गौँआ, आ' अन्यान्य व्यक्ति।

दृश्यपट

(क) प्रवीणक दुआरि—दुआरिक सामने गामक रास्ता देखल जाइछ। दुआरि पर दू टा कुर्सी, एकटा टंगटुट्टा टेबुल आ' एकटा बेंच राखल रहैत अछि।

(ख) प्रवीणक आंगन—भनसाघर देखल जाइछ, दू-एकटा कुर्सी आ' ओसरा पर एकटा पिढ़िया रहैत अछि।

(ग) मारीच वैद्यक दुआरि—एकटा चौकी, एकटा दवायक ताखा आ दू-एकटा कुर्सी देखल जाइत अछि।

(घ) राजा सेठक विश्रामागार—चौकी, कैकटा मसलन, सफेद बिछौनाक-चादर, गड़गड़ा आ' दूटा कुर्सी देखल जाइत अछि।

—:०:—

पहिल दृश्य

[मंच तावत् आलोकित नहि भेल अछि। अन्हार मे मानवक स्वगतोक्ति सुनल जाइछ।]

मानव—[स्वगत] हम छी मानव—और ई शहर थिक दुनियाक सब सँ पैघ शहर मे सँ एक। हम डाक्टर छी और ई शहर थिक मरीज़—रोगी। मुदा हमरा सन सन लाखो डाक्टर मिलियहु कए एहि रोगीक चिकित्सा नहि क' सकैत अछि। मुदा ई नहि जे एहि रोगक लछ्छन स्पष्ट नहि होइछ। से सब अत्यन्त स्पष्ट अछि। एहि शहर मे लोग अर्थ कें छोड़ि आर किछुओ नहि चिन्हैत अछि—प्रेम, त्याग, दया, ममता आदि मानवीय गुण एतहुका मनुष्य मे नहि अछि। और एहि दूषित स्थानहि सँ जन्म ल' रहल अछि रुग्ण कविता, निष्प्राण संगीत, नकली शिल्प। एतय सब क्यो आन लोग कें सन्देहक दृष्टियें देखैत अछि। रास्ताक मोड़ पर नमहर तालिका टांगल रहैत अछि—कखन, कतय, कोना आ कतेक

हँसब, कानब, आनन्दित हैब वा लड़ब-झगड़ब उचित हैत। [मुहूर्त्तक स्तब्धता] एत्तेक दिन बाध्य भ' कए एतय रहै पड़ल अछि। एखन हमरा ने कोनो बन्धन अछि, ने एहि शहर सँ प्रयोजन। एहि संसार मे एक बाबूये धैने रहथि हमरा जनमे सँ, आब ओहो नहि रहलाह। एतबा दिन डाक्टरी पढ़बाक लेल एतय रहब जरूरी छल। आब डाक्टरी पास कैलहुँ अछि—भेटल अछि स्वाधीन चिकित्सा क अधिकार। तैं एहि शहर क प्रयोजन शेष भेल अछि। [स्तब्धता] और चिकित्सा क स्वाधीनता भेंटलाक बादे नजरि पड़ल सब सँ कठिन रोगक दिसि, एहि शहरक रोग। और किछु दिन रहि कए बुझलहुँ—एहि रोगी क चिकित्सा नहि भ' सकैत अछि। जकर प्राणे नहि छैक, ने हृदय छैक, तकरा बचाओल कोना जा सकैत अछि! अहुना एहि मुर्दा शहर मे रहि कए चिकित्सक क रूप मे प्रतिष्ठा पैबाक लेल जाहि वस्तुक प्रयोजन छैक, से हमरा नहि अछि और से थिक—टाका। तैं—आब समय आयल अछि एहि शहर कें जवाब द' कए, एकटा आसन्न मृत्युक हाथ मे सौंपि कए एतय सँ चलि देबाक। [चुप्पी] नेनहि सँ बाबूक मुँहें गामक गप्प सुनैत छलहुँ। गामक सुन्दर दृश्य—पोखरि, खेत-पथार, नीपल पोतल आङन, बैलगाड़ी पर चढ़ल लजाइत कनियाँ, गामक सरल लोग आ तकरा सभक जीवन हमरा नेनहि सँ आकृष्ट कैने छल। ओतहुका जीवन मे एखनहु प्राण अछि। एहि मृतप्राय शहर कें जखन छोड़हि पड़त, तखन—

[रेलगाड़ीक चलबाक शब्द धीरें धीरें तीव्र भए मिझा जाइत अछि। गाड़ी कोनो स्टेशन पर रुकैत अछि। किछु कोलाहल सुनल जाइछ। लोग उतरैत-चढ़ैत अछि। गाड़ी पुनः चलि जाइछ। नेपथ्य सँ दू व्यक्तिक कथोपकथन सुनल जाइछ—एहि मे द्वितीय व्यक्ति छथि मानव।]

प्रथम—अपने कतय जायब ?

द्वितीय—एँ ? हमरा पूछैत छी ?

प्रथम—नहि त और ककरा सँ पूछब ? और सब गोटे त चलिये गेलखिन यै।

एक अहीं—लागै छै, शहर सँ आयल छी।

द्वितीय—जी हँ।

प्रथम—हम एहि छोटछीन स्टेशन क स्टेशन मास्टर छी—अपने......

द्वितीय—हमर नाम मानव थीक।

प्रथम—कोन गाम जायब ? कही त हम बैलगाड़ी क इन्तजाम कै दी। बुझाइत अछि—एहि दिस नये आयल छी।

द्वितीय—जी हँ। पहिले बेर ऐलहुँ।

प्रथम—कतय जायब ?

द्वितीय—से ठीक नहि कैलहुँ अछि। अहाँ त पुरान लोग छी। एम्हर आस-पास क गाम क नाम सब त जनितहि हैब......।

प्रथम—आसपास कोनो एक-दूटा गाम छै थोड़बे ?

द्वितीय—तैयहु—

प्रथम—पहाड़पुर, बिराटपुर, बराही, कासनगर, चिराग बस्ती......

द्वितीय—चिराग बस्ती ! ई चिराग बस्ती कत्तेक दूर अछि एतय सँ ?

प्रथम—दस कोस। बैल गाड़ी सँ जाय सकैछी। लेकिन सेहो एक कोस एम्हरे उतारि देत—मैना घाट लग।

द्वितीय—आ तकर बाद ?

प्रथम—नाव पर घाट के ओहि पार जाउ आ पैदल चलू !

द्वितीय—कत्तेक दूर ?

प्रथम—ओतय सँ बेसी दूर नहि, कोस भरि चलै पड़त।

[धीरे धीरे मंचक आलोक स्तिमित भ' कए मिझा जाइत अछि और एकटा गड़ीमानक दुनू बरद क प्रति गारि आदि सुनल जाइछ। गाड़ी चलैत अछि। गड़ीमान एकटा लोकगीत गाबै लगैत अछि। धीरे-धीरे लोकगीत क स्वर विलीन भ' जाइत अछि। कनेक देरक बाद किछु पक्षीक स्वर सुनना जाइछ—एकटा कुकुर क भूकब स्पष्ट भ' उठैत अछि। मंच धीरे-धीरे आलोकित भ' उठैत अछि। प्रवीण बाबू क दुआरि। प्रवीण

बाबू सुतल छथि—बेरियाक पहर।]

बुचकुन—[प्रविष्ट भए] मालिक, यौ मालिक! उठियौ ने! [धीरे-धीरे प्रवीण कें धक्का दैत अछि।]

प्रवीण—[नींद सँ जागैत] की भेलौ? बाढ़ि आबि गेलौ कि घर मे आगि लगौलकौ कोइ?

बुचकुन—[निम्न स्वरें] मालिक आइ खिसिआयल छथिन।

प्रवीण—खिसिआयब नइ त की?

बुचकुन—[जीह दाँत तर दाबैत] जाः, सुनि लेने छथिन हमर बात। आश्चर्य!

प्रवीण—त एहि मे अचरजक कोन बात! [उठैत] आन्हरे ने छी, बहिरा त नइ ने!

बुचकुन—[प्रवीण कें हुनक लाठी धरा दैत अछि। हुनका कुर्सी पर बैसा कए] बैठू एत्ते! हम पानि आनै छी हाथ-मुँह धोइबा लेल।

प्रवीण—हरिओम! हरिओम!! [किछु काल चुप रहैत छथि] की भेलौ रै? मरि गेलहीं कि जीबिते छें?

[एतबा मे रास्ता सँ मानव चलैत देखल जाइत छथि। ओ चलैत चलैत प्रवीण बाबू क दुआरि दिसि देखैत छथि। प्रवीण बाबू कें रास्ता क दिसि देखैत देखि ओ हुनका दिसि अगुआ जाइत छथि। ओ हुनक पास आबि कए ठाढ़ होइत छथि। मुदा प्रवीण बाबू क मुख पर परि-वर्त्तन क रेखा नहि देखि विस्मित भए गला खखारैत छथि।]

गला कियैक खखारैत छें रौ? हम तोहर भैंसुर लागबौ की?

मानव—[अकचका कए] माने......!

[तावत् बुचकुन दोल मे पानि भरने आबैत अछि। ओ मानव कें देखि विस्मित होइत अछि। मानवक शहरी पोषाक क दिसि देखतहि रहि जाइत अछि।]

प्रवीण—[बालटी क शब्द सुनलन्हि; मुदा बुचकुन कें निरुत्तर पाबि—] आइ की भेलौ रे बुचकुन?

बुचकुन—[ध्यान भंग होइत अछि] जी मालिक ?

प्रवीण—जी मालिक के बच्चा, बोलै कियैक नइ छें ? पानि अनलिहीं ?

बुचकुन—हे इयैह ! [पानि रखैत प्रवीण कें उठा कए एक कात ल' जाइत छथि—बालटी कें छुआ दैत छथि । प्रवीण बालटी सँ ढारि कए हाथ मुँह धोइत छथि । मानव बुझैत छथि जें प्रवीण आन्हर छथि । बुचकुन प्रवीण कें पुनः ल' अबैत छथि हुनक कुर्सी लग । हुनका बैसा कए इङ्गित द्वारा मानव कें कहैत छथि जे प्रवीण आन्हर छथि; मानव माथ डोलाबैत छथि।]

बुचकुन—मालिक !

प्रवीण—की छियै ?

बुचकुन—एक गोटे आयल छथि ।

प्रवीण—के छियै ई एक गोटे ? नाम नहि कहि हैछौ ?

बुचकुन—जानतिहै, तखैन ने कहतिहै !

मानव—जी; हमर नाम थिक मानव ।

प्रवीण—मानव ? एहि नाम के त......

मानव—हम आस पासक गाम सँ नहि—बहुत दूर सँ आयल छी ।

प्रवीण—कत्तै सँ ? आ जाय कत्ते रहल छी ?

मानव—हम कलकत्ता सँ आबि रहल छी ।

प्रवीण—कलकत्ता ! एमहर कोन गाम जायब ?

मानव—चिराग बस्ती त भरिसक......

बुचकुन—चिराग बस्ती त इयैहे गाम क नाम......

प्रवीण—तों चुप रह ! [मानव सँ] हँ, त अहाँ ककरा ओत्ते जैबै ?

मानव—से......माने......

बुचकुन—राजा सेठ क घर जैबै की ?

मानव—राजा सेठ ? [किछु कालक चुप्पी] नहि, ...हम ठीक नहि कैने छी—माने कोनो ठीक नहि अछि—कतय ठहरब !

प्रवीण—तकर अर्थ ? अहाँ रहनिहार कतौका भेलौं ?

मानव—कलकत्ते क। नेनहि सँ ओत्तहि रहलहुँ। मुदा हमर जन्म ओतय नहि भेल छल। हमर बाबू दरभंगा जिला क दुखहरणपुर क रहनिहार छलाह। हमर जन्म......

प्रवीण—हुनक नाम की छिकैन ?

मानव—सुखमय मल्लिक !

प्रवीण—ओ ! अहाँ कायस्थ छी ?

मानव—हमरा लेल ओहि शब्द क कोनो अर्थ नहि अछि।

प्रवीण—किये ? जाति नइ माने छी ?

मानव—मानने कोन लाभ ! एकटा झूठमूठ क फराक......एहि जाति और ओहि जाति मे......!!

प्रवीण—हुँ ! बुचकुन !

बुचकुन—जी मालिक ?

प्रवीण—हमर हुक्का नेने आ त !

बुचकुन—इयैह आनलौं। [बुचकुन क प्रस्थान]

प्रवीण—हुँ......कि ने कहै छलौं ? जाति नहि माने छी ! बेस ! लेकिन ई त बताउ—एक बायग दरभंगा सँ ई सहरसा जिला केना पहुँचलौं ?

मानव—हमरा सँ जँ पूछी—चिराग बस्ती मे कियैक ऐलौं, त एतबे कहि सकैत छी जे स्टेशन मास्टर क मुँहें आसपास क कैकटा गाम क नाम सुनैत सुनैत इयैह नाम हमरा सब सँ नीक लागल—चिराग !

प्रवीण—नहि बुझलौं ! अहाँ कहै चाहै छी जे आन कोनो गाम क नाम नीक लागतिहै त ओत्तहि जैतिहौं ?

मानव—भरिसक !

[तावत् बुचकुन हुक्का ल' कए प्रविष्ट होइत अछि।]

बुचकुन—हे लियह मालिक !

प्रवीण—[बुचकुन सँ किछु विनु कहनहि हुक्का लैत छथि और ताहि मे मुँह लगबैत कहैत छथि—] आश्चर्य !

बुचकुन—से कियैक ? पानि ठीक नहि भेल छै की ?

प्रवीण—नहि हम तोरा नहि......हिनका कहैत छियैन ! [किछुकाल चुप रहि कए] टीसन सै एत्ते ऐलौं केना ?

मानव—मैना घाट धरि बैल गाड़ी सँ, आ तकर बाद पैदल......

प्रवीण—एखैन त साँझ क देर नहि छै......राति कें ठहरब कत्तै ?

[तावत् किछु लोग क स्वर सुनबा मे अबैछ ।]

नारद—[नेपथ्य सँ] भाइ छे हौ ?

प्रवीण—[उच्च स्वरें] के छिये ? आब' आब' !

[तीन गोट ग्रामवासी प्रविष्ट होइत छथि ।]

आबै जा ! [सभक उपविष्ट भेलाक बाद, हुक्का मे मुँह लगा कए] की खबर छह ? नव कोनो......

नारद—और की खबर हैतै ? तखैन हूँ......आइ बुधवा टिसन गेल रहै। ओतय सँ अखबार कीनने अयलै......हम सब गोटे सैह पढ़ै रहौं !

प्रवीण—[हुक्का सँ मुँह हटा कए] की कहै छै अखबार ?

नारद—कहै त अलाय-बलाय बहुत कुछ छै। लेकिन एकटा भारी खबर छै...

प्रवीण—से की ?

नारद—कलकत्ता मे कोनो रवीन्द्र सरोवर छै......

पहिल गौंआ—ओत्ते भारी अनर्थ भै गेलै।

दोसर गौंआ—इयैह चारि-पाँच दिन भेलै......

नारद—की कहिय' ? सुनै छी कोनो फंसन रहै ! हजार क हजार लोग आयल रहै। गुण्डा सब मारि कै देलकै......कत्ते लोग के रुपैया-पैसा-घड़ी, जनानी के गहना...सबटा स्वाहा ताही मे......

पहिल गौंआ—खाली सैह नहि।

दोसर गौंआ—कत्तेको जनानी क इज्जति...[चुप भ' जाइत छथि।]

प्रवीण—मानव बाबू !

मानव—[एतवा देर धरि ई सब सुनैत सुनैत मानव उदास भ' गेल रहथि।

चौंकैत] जी !

प्रवीण—अहाँ कहिया चललौं कलकत्ता सै ?

मानव—इयैह परसूखनि ।

प्रवीण—ई सबटा खबरि ठीके छियै कि......

मानव—ओसब जत्तेक कहलन्हि, सरिपहुँ ताहि सँ वेसीए भेल छल—कम नहि !

नारद—हिनका नहि चिन्हलियैन भाइ !

प्रवीण—ई भेलखिन मानव मल्लिक......गाम भेलैन दरभंगा क दुखहरणपुर । लेकिन होश जहिया सँ भेलैन, तहिया सँ कलकत्ते मे रहलैन......

नारद—ओ ! त एम्हर कने आयल छथिन ? किनका ओत्ते ?

पहिल गौंआ—एहि गाम मे त कोई कायस्थ......

मानव—कियैक ? एक आदमी दोसर आदमी क पास नहि जा सकैत अछि ?

दोसर गौंआ—जाय त सकै छै ! लेकिन अपने कतय जैबै ?

मानव—से ठीक नहि कैलहुँ एखन धरि ।

नारद—अपने ऐलौं कियै ? कोनो सरकारी काजें की ?

मानव—जी नहि । हम नौकरी नहि करैत छी कत्तहु ।

नारद—तखैन ? कुटमैतीक लेल निकलल छी की ?

मानव—जी नहि ।

नारद—चिरागेबत्ती आयल छी ने ? कि आन कत्तौ जैबै ?

मानव—जों एत्तय मोन लागि जाय त एत्तहि रहब, नहि त......

नारद—बुझलौं ! सहर मे रहि रहि कए तंग भै गेलौं, तैं गाम घर देखैके सौख भेल......लेकिन देखैयें के रहै, त कोनो बड़का गामे मे जैतिहौं......

मानव—हम गाम के देखबा टा लेल नहि आयल छी । हम गाम कें जानै चाहैत छी—एतय रहि कए......

[नारद आ अन्य दुनू गौंआ एक दोसराक दिसि ताकैत छथि ।]

नारद—[किछुकाल चुप्प रहि] एकर अर्थ—अहाँ एहि गाम मे घर बसाबै चाहै छी !

मानव—हूँ !

नारद—लेकिन एत्ते रहि कै करबै की ? खेती-बारी त करि नहि हैत !

पहिल गौंआ—ने दोकाने चलत !

दोसर गौंआ—आ बिजनेस......माने एतौका मांल ओत्ते पहुँचा कै बजार मे बेचि कै मुनाफा करबाक कामो करि नहि सकब राजा सेठ के रहैत ! ई काम ओ करै नहि देत आन ककरो।

मानव—हम एहि सब मे सँ किछु नहि करब।

नारद—किये ? एहन छोट काम मे मोन नहि लागत की ?

मानव—काज कोनो छोट बड़ नहि होइछ। मुदा हमहीं एहि सब काजक योग्य नहि छी, तैं......

प्रवीण—इयैह सब त कोइ गाम मे रहि कै करि सकै छै।

मानव—हम डाक्टरी पास कैने छी। ओहि विद्या क उपयोग त एत्तहु भ' सकैत अछि।

बुचकुन—ओ ! त अहाँ डागदर भेलौं !

प्रवीण—ई त नीके भेल अइ गाम के लेल। खाली इयैह गाम नहि, आस-पड़ोसक गामो मे कोनो डाक्टर नहि छथि।

नारद—डाक्टर नहि छै त की ? वैद्य त छथि ने !

प्रवीण—से रहने की ? आइ कालिह तेहन-तेहन रोग सब दै सुनैत छियै जे ओहि सब मे वैद्य कुछ नहि कै सकै छै।

नारद—तै लेल त अस्पताल छैहे कनिये टा दूर मे......

प्रवीण—कनिटा दूर ? कनिटा की हौ ? दस-बारह कोस कनी टा भेलै ? तै पर एत्तै कोनो पीच रोड छै जे चट रवाना भेलह आ पहुँच गेलह अस्पताल मे। जा धरि बैलगाड़ी ढुकुर ढुकुर कै कै पहुँचै छै सहर मे, ता धरि रोगी के परान चलि जाइत रहै छै। तइ सै त नीक—गामे मे एक गो नीक डाक्टर रहै......

पहिल गौंआ—से त ठीके कहले भाइ !

दोसर गौंआ—ठीके......

नारद—अच्छा; एकटा बात पूछब ?

मानव—पूछू !

नारद—कोनो गामे मे जायकै डाक्टरी करै के मोन रहै, त कोन-पुर ने कह-
लियै......हँ दुखहरणपुर, माने अहाँ के अपने गामे मे कियै नै गेलौं ?

मानव—ओत्तय सँ बाबूजी कलकत्ता चलि आयल छलाह जखन हम पाँच
वर्ष क छलहुँ। तकर पहिनहि हमर माय क स्वर्गवास भ' गेल छलन्हि।
गाम मे बाबूजी क हालत नीक नहि छलन्हि। और सामान्य जे किछु
छलन्हि, सेहो माय क चिकित्से मे स्वाहा भ' गेल छलन्हि! खैबाक
उपाय नहि छलन्हि। तँ शहर मे आबि कए कोनो तरहें एकटा छोट छीन
नौकरी धैलन्हि। तहिये सँ हुनक इच्छा छलन्हि जे हम डाक्टर बनी......
से बनलहुँ। हमरा क्यो दुखहरणपुर मे नहि चिन्हैत अछि, ने ओत्त'
कत्तहु रहबाक लेल जमीने-जगह अछि हमरा। तँ हमरा लेल जे दुखहरण-
पुर, सैह चिराग बस्ती...... [किछुकाल चुप्प रहि कए] एत्तहु रहि नहि
सकब, त आन कत्तहु......हमरा कोनो......

प्रवीण—नइ, नइ! से कियै ? हम सब कोनो धनिक नइ छी। लेकिन तैयो
आतिथ्य धर्म मे पछुआयल नइ रहै छी।

नारद—[हँसैत] लेकिन भाइ! ई त दू दिन के अतिथि नइ बनै आयल
छथिन।

पहिल गौंआ—ठीके! ई त भरि जिनगीक लेल......

प्रवीण—जिनगी त बड़ नमहर वस्तु भेलै हो! पहिने हिनकर राति काटैक त
इन्तजाम करियैन। हे रौ बुचकुन !!

बुचकुन—जी मालिक !

नारद—[उठैत] तखैन तों हिनकर इन्तजाम करह! हम सब चलै छियह...
एक बेर बाघो दिस जायब! आज कालिह त चरवाहा सबटा तेना ने...
[दुनू गौंआ क दिसि संकेत करैत] चलह हौ!

पहिल गौंआ—हँ, हँ!

दोसर गौंआ—चलह !! [तीनू गोटे क प्रस्थान।]

प्रवीण—[हँसैत, मानव सँ] नारद कखनौ बैसल रहै...... एत्तेक जरूरी खबेर पता चलबाक बादो......?

मानव—नारद के ?

प्रवीण—वैह, जे अहाँ सँ अपन गाम नइ जाय के कारण पूछनै रहै......। नामो सँ नारद, काजो सँ नारद ! जाय दियह। बुचकुन ! तों अङ्गना जो और हुनका सँ कहुन जे आइ और एक गोटाके भानस बनाबथिन।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

दोसर दृश्य

[मारीच वैद्यक दुआरि। नारद, मारीच और दुनू गौंआ बैसल छथि।]

नारद—भाइ ! आब त अइ गाम सँ बुझ' तोहर पाट उठि गेलह।

मारीच—कियै ? से कियै ?

नारद—पूछै छहो—कियै ? तोहर दबाइ आब कोइ लेत' ?

मारीच—लेत कियै नइ ? आस पड़ोस मे और कतय जैतै कोइ ?

नारद—सैह त कहै छियह' जे आब आस-पड़ोस के लोग के गप्पे छोड़ह, हमरे गाम के आधा लोग प्रवीण बाबू के दुआरि पर जायत। देखि लिहो......

मारीच—से कियै ? ओत्ते कोन डाक्टर छै जे......

पहिल गौंआ—रहै नइ, लेकिन आबि गेलै......

मारीच—के ? डाक्टर ?

दोसर गौंआ—हँ हौ ! से जानै नइ छोहो ?

नारद—कालिह बेरियाखुन ओत्तै गेल रहियै त देखलियै जे के ने एक गोटे अनचिनहार लोग बैसल छै। ओहि अन्हरबा सै पूछलौं ओकरा दै त पता चलल जे ओ सहर सै एत्तै आयल छै एहि गाम मे रहैलै। एत्तै रहि कै ऊ डाक्टरी करत।

मारीच—[जोर सँ हँसि कए] डाक्टरी करतै ? एत्तै रहि कै ? [फेरो हँसि कए] दुइये चारि दिन मे भागि जैतै—देखिहो !

पहिल गौंआ—हमरो सैह बुझाइयै। सहरू आदमी...... गाम मे कहीं मन लागै ?

दोसर गौंआ—एत्ते ने हुनका सनीमा भेंटतनि, ने...हें हें...आने कुछ जे......

नारद—आ जौं नइ जाय ? तखैन ?

पहिल गौंआ—सत्ते त... तखैन ?

दोसर गौंआ—तखैन की हैतै ?

मारीच—तखैन हैतै की ? जाहि से जाय, तकरे बन्दोबस्त करै पड़तै !

नारद—वैह बुधियार कहावै छै जे दूर भविष्यो दै पहिनहि सै सोचि कै तैयार रहै !

पहिल गौंआ—लेकिन, भगैबहो केना ? जौं गाम के आन आन लोग सब...

मारीच—गाम के आन आन लोग सब कें जौं ओ जीत लियै, तखैन की हैत—सैह पूछै छोहो ने ?

नारद—हमर एत्तेक दिनुका तजुरबा कहै छै—सब लोग कखनौ एक दिस नइ भै सकै छै। आ से हैबौ करै, त झगड़ा लगैनाइ कोनो कठिन काज नइ। सब सै बड़का बात—लोग के जे बुझैबहो, लोग सैह बुझतै !

मारीच—ई सब काज करै लेल लोग कें कनेक धीरज चाही... बस, एतबे टा ! ठीक समय पर ठीक चालि चलने... हें हें हें...

नारद—रह' ने... कुछ दिन जाय दोहो ! हमरा लागैये—उ ओहि अन्हरवे कन रहतै...

पहिल गौंआ—से केना हैतै ? अन्हरबा के बेटा' जीवित रहतिहै त एकटा बातो... लेकिन एकटा नौकर के भरोस पर केना परबीन बाबू एकटा अनचिनहार लोग कें रहै देथिन ?

दोसर गौंआ—रहै किये नइ देथिन ? दू-दस दिन त...

नारद—दुइये-दस दिन किये ? जौं ओ ओहि डाक्टर कें ओत्तहि रहै देथिन, त के की कै सकैये ?

मारीच—हम त सैह चाहैत छी।

पहिल गौंआ—से किये ?

दोसर गौंआ—ताहि सै तोरा कोन फायदा हैतह ?

मारीच—[क्रूर हँसी हँसैत] हें हें हें हें हें ! लोग कें सब सै प्रिय वस्तु की होइछै, जानै छोहो ?

पहिल गौंआ—की ?

मारीच—सम्मान ! समाज मे इज्जति ! [हँसैत] आ से जौं नइ रहै, तखैन ?

दोसर गौंआ—ताहि सै त मृत्यु नीक !

मारीच—ठीक ! आब बुझलह, डाक्टर कें ओहि अन्हरबा कन रहने हमरा कोन लाभ हैत ?

पहिल गौंआ—[नकारात्मक भंगिमा मे माथ डोलाबैत] उहुँ !

नारद—धनि छहो भाइ ! एतबो टा नइ बुझलहो ? बिसरि गेलहो ? ओत्ते अन्हरबा कें छोड़ि कै और के के रहै छै ?

पहिल गौंआ—बुचकुन, परबीन बाबू के खबास !

नारद—और !

दोसर गौंआ—और अङ्गिना मे... हुनकर पुतहु !

मारीच—बस-बस-बस ! वैह ! बाजी मात करै मे वैह हैती सब सै नीक चालि... लेकिन अइ मे तोरो सब कें...

पहिल गौंआ—माने... परबीन बाबू के पुतहु के संग... डाक्टर बाबू के...

मारीच—प्रेम... [हँसैत] बिधवाक प्रेम... गाम घरक लोग क मोन मे जौं

अइ बात कें ढुकाय देल जाय त... [हँसैत छथि।]

दोसर गौंआ—लेकिन हुनका सब मे जौं असल मे एहन सम्बन्ध नइ होइन, त...?

मारीच—असल ? असल बात के मोले की ? एक बेर अफवाह फैलि जाय त तकरा कोइ रोकि सकै छै थोड़बे ?

नारद—और असल मे तेहन सम्बन्ध नहि हैतैन... सैह के कहि सकैये ? मनुख के लेल असम्भव कुछ नइ—।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

तेसर दृश्य

[प्रवीण बाबू क दुआरि। प्रवीण आ मानव बैसल छथि। प्रवीण हुक्का पीबि रहल छथि।]

मानव—आइ चारि दिन भ' गेल अछि एहि गाम मे ऐलाक !

प्रवीण—हुँ ! [हुक्का पीब' लगैत छथि।]

मानव—मुदा, एखन धरि...

प्रवीण—इयैह कहबे ने जे एखैन धरि कोइ नइ आयल बिमारी के इलाज करावै। [हँसैत] एत्ते अगुतैने से काम नइ चलै छै...।

मानव—अहाँ त सदिखन आशा दैत रहैत छी मुदा...

प्रवीण—अहाँ त विचित्र लोग छी !

मानव—से कियैक ?

प्रवीण—पहिने बताउ अहाँ मनुख थिकौं कि डाक्टर ?

मानव—[हँसैत] दुनू ! तखन हँ—पहिने मनुख, बाद मे आर किछु।

प्रवीण—तखैन कियै काल्हि सँ रट्ट लगौने छी जे कोइ नइ आवैये—

नइ आबैयै... आँय ? कियै ? अहाँ नइ चाहै छी जे लोग कें कोनो बिमारी नइ हुवै ?

मानव—[हँसि दैत छथि] से त अवश्य चाहैत छी। किन्तु हमरे चाहने की ? से होइत नहि ने छैक ! हमरा सभक गाम घर मे खैबा-पीबाक कोनो नियम नहि रहैत छैक, ने सभक घर साफे रहैत छैक। तेँ, रोग त हैबे करत लोग कें। तकर अलावे, बूढ़ भेनहि चारुकात क रोगक कीड़ा बेचारे मनुष्य कें दुर्बल पाबि वार क' दैत छन्हि। और सभक ऊपर छथि प्रकृति... कखन ई कोन खेल खेलती से केकरहु पता नहि अछि... बाढ़ि, सूखा, महामारी... लागले रहैत छैक।

प्रवीण—तकर माने इयैह जे एहि दुनिया सँ रोग आ' रोगी के शेष नइ हैत कहियो... सैह ने ?

मानव—[हँसैत] तकर माने... जतय जतय मनुष्य अछि, सबठाम डाक्टर क प्रयोजन हैत।

प्रवीण—ओ ! और तेँ अहाँ कें अचरज भै रहल अछि जे कियै कोइ नइ आबै छै ?

मानव—ताहू सँ बेसी चिन्ता... दुश्चिन्ता कहि सकैत छी... दुश्चिन्ता भ' रहल अछि ई सोचि कए जे एना और कत्तेक दिन अहाँ सब पर बोझ बनने...

प्रवीण—छी-छी-छी ! ई की कहि रहल छी ? अहाँ अतिथि छी, ताहि पर डाक्टर ! समस्त दुनियाक सेवा क व्रत नेने छी अहाँ। हम सब की एत्तेक नीच छी जे अहाँ के सेवा नइ कै सकी ?

मानव—हमर कहबाक उद्देश्य से नहि छल। जौं हम चारि दिनक अतिथि होइतहुँ, त ई प्रश्न उठबे नहि करितैक। मुदा, हम त अपना मने बाकी जिनगी एत्तहि बिताब' आयल छी।

प्रवीण—देखू मानव बाबू ! आइ हमर बेटा रहतिहै त अहाँ के नीक जेकाँ देखभाल कै सकतिहै। हम आन्हर छी—तेँ भरिसक दोष-त्रुटि भै रहलैये...

मानव—ई अहाँ की बाजि रहल छी ?

प्रवीण—नहि त अहाँ ई कियेक सोचि रहल छी जे हमरा एत्तै रहब ठीक नहि हैत...! आइ हमरा सभक ओ पुरनका शान रहतिहै त अहाँ भरिसक...

मानव—[प्रवीण क हाथ धरैत] नहि-नहि! अहाँ हमरा गलत नहि समझू! हमर कहबाक तात्पर्य से नहि छल!

प्रवीण—[हुक्का कें रखैत, दोसर हाथ सँ मानव क हाथ कें पकड़ैत] तखन कहू—हमरा एत्तै रहै मे अहाँ के कोनो आपत्ति नइ...

मानव—मुदा आर्थिक दृष्टि सँ...

प्रवीण—हम दृष्टि हीन छी मानव बाबू! हम कोनो दृष्टि क गप नहि सुनै चाहै छी... कहू...

मानव—[हँसैत] अच्छा, है इयेह कहलहुँ जे अहीं क आश्रय मे रहब!

प्रवीण—[खुश भ' कए] आह! अहाँ एहि आन्हर-असक्क कें बड शान्ति देलौं! आइ हमरा लगैये .. हमर हेरायल बेटा हमरा भेंटि गेल—दोसर नाम सँ, दोसर सम्बन्ध मे...! [किछु सोचैत] लेकिन डाक्टर! हम अहाँ क पथ मे कहियो नइ आयब। आइ नइ त कालिह अहाँक नाम जस हैबे करत... आस-पड़ोस के दसटा गाम सँ लोग चिकित्सा क लेल ऐबे करत। भै सकै छै—तखनि अहाँ कें और बड़ तथा और नीक जगह के प्रयोजन हैत। हम अहाँ कें रोकब नइ तखनि।

मानव—नहि... नाम-जस आ अर्थ क लेल हम एत्तय नहि आयल छी। हम त बस मनुष्य जकाँ जीयै चाहैत छी मनुष्य क बीच। हम अहाँ कें कहियो नहि बिसरब... कहियो नहि बिसरि सकैत छी! [उठि कए पदचारणा करैत] हमरा अर्थ क लोभ नहि अछि... मुदा तकर प्रयोजन त पड़िते छैक। अहाँ हमरा आश्रय देलहुँ—ई अहाँ क उदारता थिक। और तैं अहाँ कें जाहि सँ कोनो असुविधा नहि होइक, तकरा दिसि ध्यान देब हमर कर्त्तव्य थिक।

प्रवीण—हमरा कोन असुविधा हैत? हमर बेटा जीवित रहतिहै त ओ नहि रहतिहै, खैतिहै?

मानव—ओहो त बैसल नहि रहितथि ! ओहो त उपार्जन क' कए अपन परिवार कें सहायता करितथि ! तखन हमरा सँ अहाँ कियैक नहि ओतबा लेमै चाहैत छी ?

प्रवीण—अच्छा, ठीक छै ! से देखल जैतै ! पहिने कमायब आरम्भ त करू !!

मानव—[हँसैत] सैह त मोसकिल छैक। तें कहैत छलहुँ जे एना और दुइ-दस दिन चलैत रहल त...

[तावत् राजा सेठ प्रविष्ट होइत छथि। हुनका देखितहि मानव चुप भ' जाइत छथि।]

राजा—गोर लागै छी, चाचा !

प्रवीण—ओ ! राजा छे ? नीके रह' !! त की हालचाल छै...?

राजा—हालचाल त अहाँ सभक आशीर्वाद से ठीके छै। [मानव क दिसि देखैत] त इयैह छथि डाक्टर बाबू ?

मानव—जी हँ ! हम छी मानव !

राजा—परनाम ! [मानवो हाथ जोड़ैत छथि।]

प्रवीण—त तों कत्तै सुनलहो डाक्टर दै ?

राजा—काल्हि हटिया मे नारद मिसर कहै रहथिन। आ आइ त वैद जी सेहो कहलखिन। ओ आबै छथिन ने हमर माय कें देखै... से देखथिन की ? हुनकर त अलाइ-बलाइ जड़ी-बूटी...

मानव—जड़ी-बूटी कें छोट नहि बूझू ! आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र क आरम्भ ओत्तहि सँ भेल छल !

राजा—से भेल हैतै ! हम भेलौं व्यापारी, ऊ सब हमरा बूझल नइ ये ! हम त देखै छी—जे पाइ खर्च भै रहलै ये, ताहि सै लाभ होइ छै वा नइ। एत्ते दिन सै ऊ माय कें देखि रहल छथिन—लेकिन हमरा त कोनो फायदा बुझाइ नइ पड़ि रहल ये।

प्रवीण—त आब तोरा चिन्ते कोन ? डाक्टर त आबिये गेलखुन अपन गाम मे ! हिनका सै देखाय लहुन !

राजा—हँ, हमहूँ त सैह सोचि कए ऐलौं ! अहूँ सै एम्हर बहुत दिन सै भेंट-घाँट नहि भेल रहै, आ... [कहि कए आंगन क दिसि देखै लागैत छथि; पुनः अपना कें सम्हारैत] आ' डाक्टरो बाबू सँ परिचय भै जायत !

मानव—अहाँ क माय कें भेल की छन्हि ?

राजा—ई त अहीं लोकनि देखि कै बतैबै। हम सब की जानै गेलौं ? [किछु सोचैत] त अहाँ एकटा काज किये नइ करैत छी ?

मानव—कोन काज ?

राजा—एत्तै त रहै मे अहाँ कें दिक्कत हैबे करत... अहाँ हमरे ओत्तै किये नइ आबि जाइत छी ? हम पक्का देने छी, सड़क क बगले मे... हमर मकान मे कैकटा कमरा एखनौ खालिए पड़ल छै। अहाँ चाही त ओत्तहि रहबाक बन्दोबस्त कै कै एकटा डिस्पेन्सरिओ...

मानव—मुदा, हमरा त एत्तै कोनो असुविधा नहि भ' रहल अछि...

राजा—नइ, असुविधा नइ... तखन हमरा ओत्तै बेसी आराम...

मानव—हमरा आराम मे रहबाक आदति नहि अछि। हम त ठीक क' नेने छी जे एत्तहि रहि कए...

राजा—[हँसि कए] से रहबाक लेल ई जगह त नीके छैक ! जे डाक्टर दसटा गाम के लोग के सेवा करत, तकरो त नीक जकाँ सेवा होना चाही ! हें हें हें ! हमरा ओत्तै त बस हमर माइयेटा; ओहो बेसी बीमार छथि। नौकर-चाकर त नीक जेकाँ... माने आपन लोग जेकाँ देखभाल नहिये कै सकैये। लेकिन एत्तै त से बात नइ...

मानव—आश्चर्य !

राजा—किये ?

मानव—अहाँ क एत्तेक धन, एत्तेक सम्पत्ति... और अहीं विवाहित नहि छी ?

राजा—रहिये। एखैन नइ छी।

मानव—माने !

राजा—प्रायः दस वर्ष पहिने ओ स्वर्गवासिनी भै गेली ! [मुँह कें करुण बना

कए किछुकाल चुप चाप रहैत छथि।]

प्रवीण—तकर बाद हम सब कत्ते बुझौलौं... समझावैके कोसिस कैलौं! लेकिन ई तैयारे नइ होइ छथिन। नइ त राजा सेठ के लेल...

राजा—की करू चाचा जी! हुनका हम बिसरिये नइ पावै छियैन! [किछु-काल चुप रहि कए पुनः मानव कें] बुझलौं मानव बाबू! हुनक गेलाक बाद ठीक कैलौं जे जौं हुनके सन और क्यो भेंटै, तखनै बियाह करै लेल सोचब।

मानव—भेंटली ?

राजा—जे भेंटबो करै यै, से राजी नइ होइ यै। आ जे राजी होइ यै, से हुनका सन के नइ होइयै! इयेहटा दुःख रहि गेल यै। लेकिन, हम खोज मे छी... [दीर्घ-श्वास त्यागि कए] जे हो! ऊ सब बात छोड़ू! कहू—हमर माय के चिकित्सा करै लेल अहाँ तैयार छी वा...?

मानव—से कियैक नहि रहब ? अवश्य करब! अही लेल त...

राजा—बेस! बुझलौं—ओइ वैदवा सं कुछ नइ हैत। त अहाँ आइये सं शुरु कै दियौ ने!

मानव—अति उत्तम! हम आइये बेरिया खुन अहाँ क ओत्तै पहुँचि जायब।

राजा—फीस-तीस के लेल अहाँ चिन्ता नइ करू! से अहाँ जे मांगब...

मानव—हम की मांगब ? जे अहाँ उचित बुझैत छी, सैह देब!

राजा—जानैये छी—हम व्यापारी छी। नीक चीजके लेल पाइ खरच करै मे पाछू नइ हँटै छी! अहाँ चाही त रोजाना हिसाब के जगह मे मास मे एकहि बेर एकटा नीक रकम लै सकै छी। लेकिन, तकर माने—माय के चिकित्सा के सबटा भार रहत अहीं पर!

मानव—अवश्य!

राजा—अच्छा! त बेरिया खुन हम एकटा सिपाही कें पठा देब—अहाँ कें पथ देखा कै लै आनै लेल।

मानब—बेस।

राजा—अच्छा; त हम चलै छी ! [जाइत-जाइत पाछाँ घुरि कए] एकटा बात त बिसरिये गेल छलौं। दिन-पर-दिन हम... चाचा जी !

प्रवीण—हँ।

राजा—दुलहिन क स्वास्थ्य केहन छनि ? ठीक छथिन ने ?

प्रवीण—तों त जनिते छहो—ऊ किछु भेलो सँ ककरहु किछु नइ कहै छथिन।

राजा—आब त कोनो चिन्ता ले बात नहि। घरे मे डाक्टर छथिन !

प्रवीण—हँ, सैह्टा भरोस यै !

राजा—आबै काल हमर माय कहि देने रहथिन जे दुलहिन कें कहबाय दिहौन जे ओ आबथिन ! पहिने त जैते रहथिन... आब की भै गेलैन, नइ जानि। से देखू—हम कहै लेल बिसरिये गेल रहौं !

प्रवीण—हम कहबाय देबनि हुनका।

राजा—मानव बाबू ! अहूँ मन राखब... ऊ बिसरियो जैथिन त अहाँ अवश्य... माने अहाँ सँ त हुनकर... हैं हैं हैं... अच्छा, त चलैत छी।

[राजा प्रस्थानोद्यत होइत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

चारिम दृश्य

[प्रवीण बाबू क आंगन। खवास आंगन बोहारि रहल अछि। करुणा चाउर बीछि रहल छथि।]

बुचकुन—सत्ते कहै छी, मालकिन ! आइ दुइ दिन सँ डाकदर बाबू मालिक के जेहन सेवा कै रहल छथिन, से आइ कालिह कोनो बेटो आपन बाप के नइ करै छै। [करुणा एक बेरि बुचकुन क दिसि देखि कए पुनः चाउर बीछै लगैत छथि।] से हमहीं टा नइ, गाम के आनो आन लोग सब कहि रहल यै।

करुणा—की कहि रहल छथिन ऊ सब ?"

बुचकुन—इयैह, जे हम कहलौं। [चुप रहि कए] अइ दुइ दिन सै त ऊ राजा सेठो कन नइ गेल रहथिन। कालिह त राजा सेठ अपनहि आबि गेलखिन। ऊ भरिसक कचहरी गेल रहथि—तैं मालिक के बेमारी दय पतो नइ रहैन।

करुणा—अइ दुइ दिन मे ओ दोसर-दोसर मरीज कें नइ देखलखिन की ?

बुचकुन—देखलखिन, लेकिन बेसी नइ ! उने त सुनै छियै राजा सेठ के माइयो के हाल पस्ते...

करुणा—के कहलकह ?

बुचकुन—अपनहि कहै रहथिन कालिह। कहै रहथिन जे दुलहिनो जी बहुत दिन से नइ गेलखिन यै, से...

[एतबा कहितहि व्यस्तता देखा कए करुणा भीतर चलि गेलीह। हुनका चलि गेलाक बाद बुचकुन बोहारब समाप्त क' कए बाहर चलि जाइछ।]

करुणा—[प्रविष्ट भ' कए] बुचकुन ! कते गेलहो ?

बुचकुन—[दोसर दिसि सँ प्रविष्ट भ' कए] की कहै छी मालकिन ?

करुणा—आटा त आइये भरि के छै। गहूम पिसा कै नइ आनलहो ?

बुचकुन—से हम अखनिये जाइ छियै। [भीतर जा कए एक बस्ता गहूम कन्हा पर उठौने मंच द' कए दुआरि दिसि प्रस्थित होइछ। किछु दूर गेला क बाद पुनः घुरि अबैछ] हे ! वैह आबि रहल छथिन।

करुणा—के आबि रहल छथिन ?

बुचकुन—वैह, ननकू मिसर क पलिवार...

करुणा—ठीक छै ! तों जा !! [बुचकुन चलि जाइत अछि। 'दुलहिन', 'दुलहिन ऐ' कहि कए हाँक देत कौशल्या प्रविष्ट होइत छथि। हुनका ऐबाक पहिनहि करुणा एकटा कपड़ा सीयै बैसैत छथि।] आउ ने काकी !

कौशल्या—सुनलियह, हिनका कोन ने बेमारी भ' गेल छैन; तैं कहलियह जे चलि कै एक बेर खबरि लैये ली।

करुणा—आउ ! बैठू ! [एकटा पिढ़िया दैत छथि ।]

कौशल्या—[बैसैत] ई की सी रहल छह ?

करुणा—सी नइ रहल छी, रफू कै रहल छी ।

कौशल्या—ओ ! त हिनकर बेमारी के की इलाज भै रहल छै ? कालिह वैद जी कें पूछलियैन त ऊ मुँह लटका कै चलि देलखिन । कहलखिन, हम की जानी ? बूझह ! हुनका त खबर लेबाक चाहियैन एक बेर । भनहि ऊ इलाज नइ कै रहल छथिन ।

करुणा—आइ कुछ नीक छथिन !

कौशल्या—की भेल रहैन ? डागदर की कहै यै ?

करुणा—ऊ त कहै छथिन जे असल रोग बुढ़ापा छैन ।

कौशल्या—रोग कहीं बुढ़ापा हुवै ? होइ की छैन हुनका ?

करुणा—कफ बैसि गेलैन छाती मे—बोखारो खूब रहैन अइ दुइ दिन सै ।

कौशल्या—खाना-पीना ?

करुणा—बाबू जी के त, जानते छियै, आदति छैन जे बोखार भेल कि खाना-पीना सबटा बन्द ।

कौशल्या—हँ । ऊ त सुरुहे सै अहिना करै छथिन ।

करुणा—लेकिन अइ बेरि से नइ भेलैन ।

कौशल्या—से कियै ?

करुणा—बुचकुन कहै यै जे डागदर बाबू हुनका सै जबरदस्ती कैलखिन—कहलखिन, खाय पड़त; त मानि गेलखिन ।

कौशल्या—हुँ ! सुनै छी, हिनका बेटा जकाँ मानै छथिन । [एहि बात पर करुणा चुप भ' जाइत छथि ।] कोइ कुछो कहैन, छैथ ई नीके डागदर । परसौनीवाली कें तीने सुइया मे ठीक कै देलखिन । आ वैह परसौनीवाली के तरवा घिसाय गेल रहै वैद जी कन घुरैत-घुरैत । [चुप रहि कए] त की सब बना रहल छह ?

करुणा—[म्लान हँसी हँसैत] और की बनायब ? कद्दू के तरकारी आ रोटी ।

कौशल्या—त ई सब डागदर कें रुचै छै ? ऊ भेलै सहर के रहनिहार आ...

करुणा—नइ रुचने करबै की ? गाम मे जखैन रहै ऐलखिन, तखैन एहन खाना त खाइये पड़तैन—

कौशल्या—किये ? कुछ कहबो आर करै छथिन ? [करुणा नकारात्मक भंगिमा मे माथ डोलबैत छथि ।] आँय हे—आब त कमबैयो लागल-खिन—त पाइ-कौड़ी नइ दै छथिन ?

करुणा—से कोनो हजार-दुइ हजार कमबै छथिन थोड़े ?

कौशल्या—नइ हजार त, सौ-दुइ-सौ त जरूर कमबै हैथिन । सुरू सुरू मे तों सब हुनका लेल जत्ते कैलहो, तकरो त एकटा मोल छै ।

करुणा—जेहो कमबै छथिन, तकर बेसी भाग खर्च भै जाइ छैन खैराती इलाज मे ।

कौशल्या—से ककरा खैरात करै छथिन ई ?

करुणा—गरीब-गुरबा सब सै पैसा कहाँ लै छथिन ? देखै त छथिने, जरूरत भेल त दबो दै छथिन अपने खर्च सै— ।

कौशल्या—ओ ! तैं हमर हरबाहा कहै रहै जे ओकर बेटी कें डागदर बाबू मन्तर सै ठीक कै देलखिन । हम बुझियै—ओहिना कहै छै । ओकरा कत्तै सै पैसा ऐलै जे दवा-दारू पर खर्च करै ।

करुणा—तैं ई सब कै कै बचबे की करै छैन ?

कौशल्या—हमरा त ई कोनो नीक बात नइ लागलह । छोटका के जत्ते दबाय कै राखी ततबे नीक । आइ बिना पैसा के दबाय भेंट रहल छै त काल्हि भै कै बुझतै जे नेमे सेह छिकै—पैसा रहबो करतै त नइ देतै...

करुणा—कुसमी के की हाल, चाची ? एखैन कानतो यै ?

कौशल्या—की कानत कुसमी ? कत्ते नीक जकाँ सादी-बियाह करबौने रहियै, से त देखनहि रहक । और आब देखह—दुइये साल मे विधवा भै कै आवि गेल छै ! करै छै... घर के काज करै छै । लेकिन रहि-रहि कै उदास भै जाइ छै । एकटा बेटी छै...भरिसक सोचै हैतै—तकर केना की हैतै !

करुणा—अहाँ के पुतहु के संग पटै छै ओकरा ?

कौशल्या—है ! की पटतै ? रौतावाली के त गपे छोड़ह । हरबखत ओकरा सँ लागले रहै छै । कुसमी करबे की करतै, तोंही कह' ! सब त तोरा सन नहिये भै सकै छै । माने, तोरा सन मन के जोर सब कै नइ ने... । पूछलियै, ओत्तहि कियै नइ रहि गेलहीं ? एत्तै भौजी के नौरी भै कै रहै से नीक त ओत्तहि— । त कहै यै जे नइ, से ओत्ते ओकर दुल्हा के एकटा पितियौत भाइ रहै, तकर नीयत ठीक नइ रहै । हम कहलियै—तोहर नीयत ठीक रहै त तोरा के की बिगाड़ि सकै छौ ? इयैह देखहीं ने—तोरा दय कहलियै, जे फलना बाबू के पुतहु त एत्तहि छै, ससुर के सेवा कै रहल छै केहन नीक जकाँ । त कहलक जे हुनकर बात छोड़—हुनकर त कोनो तेहन दीयर नइ ने छनि जे......

करुणा—नीके कैलखिन जे आबि गेलखिन—

कौशल्या—की नीक कैलक ? कोनो दिन चैन सँ रहि सकतै एत्तै दुलहिन के लेल ? जों-जों ओकर बेटी नमहर हैतै, बियाह करैके चिन्ता बढ़तै—तों-तों और... । आ तोरे दय कहलकै, से कोनो ठीक कहलकै थोड़े । ऊ त बात के टारि देबाक लेल कहलकै । नइ त, इयैह देखहो ने—तोंही सब जे डागदर कें रखने छोहो—से आस-पड़ोस के लोग तै लेल कम बोलै जाइ छै ? लेकिन तै सँ की ? हम नीक त हमर के की बिगाड़ि सकैयै ? हमरा त कोइ कुछो कहै आबै छै त हम इयैह कहै छियै जे तों सब करुणा कें नइ जानै छोहो—भनहि डागदर कें नीयत खराब हुयै, लेकिन करुणा के कोइ नइ बिगाड़ि सकै यै । तखैन हँ, हम त एतबे कहबह जे—लोग अपना जानि कए थोड़बे ई विष पीयै छै ? ई त लोग के जवानी जे ने करावै । तैं—

[तावत् नेपथ्य सँ मानव गला खखारैत छथि । संकेत पबितहि कौशल्या ठाढ़ भ' जाइत छथि । करुणा घोघ कें कनेक बेसिये नमहर क' लैत छथि । मानव प्रविष्ट होइत छथि ।]

अ-अच्छा, त एखैन हम चलै छियह! भरिसक हिनकर खाय के बेर भै गेलैन। हम बाद मे कखनौ...

करुणा—किये ? अहाँ बैठू ने काकी ता!

कौशल्या—[मानव दिसि नीक जकाँ देखैत छथि। मानव आबि कए ओसरा पर बैसैत छथि।] नहि, हम त बस... ओ केहन छथि, सैह जानै लेल... [मानव सँ] अहाँ माटिये पर किये बैठि रहलिऐ डाक्टर बाबू? हे इयेह—पिढ़िया पर बैठियौ ने! [करुणा मानव क लेल जलखै क बन्दोबस्त करै प्रस्थित भेलीह।]

मानव—नहि-नहि! ठीके छैक। अपने कियैक कष्ट क' रहल छी?

कौशल्या—एखन ओ केहन छथिन? नीके ने?

मानव—आइ नीके छथि। लेकिन बड्ड कमजोर भ' गेल छथि—चलि फिरि नहि होइत छन्हि।

कौशल्या—बुझू त! एक त आँखि नइ, ताहि पर चलि-फिरि नहि सकथिन त एहि घर के की हाल हैतै? [मानव कें चुप देखि कए] हँ—ओना अहाँ छी, तैं हिनका सभक दुश्चिन्ता करै के प्रयोजन नइ। नइ त... [तावत् जलखै नेने करुणा प्रविष्ट होइत छथि] अच्छा, त हम एखैन चलै छी—[कौशल्या प्रस्थान करैत छथि। करुणा मानव क आगाँ थरिया रखैत छथि। मानव चुपचाप खाइत छथि—करुणा दूर मे जा कए ठाढ़ रहैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

पाँचम दृश्य

[राजा सेठ क दुआरि—राजा, मारीच और नारद बैसल छथि।]

राजा—कह' वैद। की देखलह?

मारीच—हमरा त बुझाइ यै ई कुछ खाय-पीयै द्वारे भेल छै। दू-चारि खोराक दवाय सै ठीक भै जैतै।

राजा—उहुँ ! तों जत्ते सहजें एकर समाधान कै देलहो, हमरा त ई तेहन नइ लागि रहल छह।

नारद—हमरा विचारें—दुइ-तीन दिन जाय दहो, त अपने बुझाइ पड़तै जे असल मे की छियै !

राजा—ई तों की कहले भाइ ?

नारद—कियै ?

राजा—दुइ-चारि दिन मे जौं और ओहन दाग निकलि आवै मुँह पर त हमहीं-तों नइ, गाम के सब के नजरि मे पड़तै से। लोग बाग पूछै लागतै—की भेलै नइ भेलै...

नारद—पूछै लागतै त पूछै दहो ! तै सं की हैतै ?

राजा—आ हा ! तों नइ बुझि रहल छहो ! वैद ! तोंही कहो ने !!

मारीच—नारद भाइ कें पते नइ छैन त केना बुझथिन ?

नारद—आखिर बात की छियै ? एत्ते नुकाछिपी कियै ?

मारीच—खाली वैह रोग टा रहतिहै त एकटा बातो। कुसमी कें त बच्चो होबैया छै !

नारद—[चौंकैत] एँ ? कुसमी कें...

राजा—चुप ! चुप !! जे सुनले से सही बात छिकै। लेकिन एकरा परचारै के जरूरत नइ।

नारद—[साश्चर्य] लेकिन... ओकरा... ?

मारीच—[माथ डोला कए] हूँ।

नारद—आश्चर्य !

मारीच—नारद भाइ कें कियै अचरज भै रहल छैन, जानै छहो ? हिनका पते नइ और गाम मे एत्ते बड़का घटना घटि गेलै... तैं।

नारद—कुसमी माय कें पता छैन ?

राजा—[जोर सँ हँसि दैत छथि] तों दिन-दिन मेहायल जाय रहल छहो भाइ ! हुनका एखैन पता चलतिहैन त ओ सौंसे गाम मे नाचने सबके

कोसने घुरतिहथिन। जाने नै छहो ? एखैन माय-बेटी मे बोला-भुकी बन्द छै !

मारीच—ओकरा भाइ-भौजाइ सै केहन पटै छै से त जानते छहो !

नारद—से सब के नइ जानै यै !

राजा—ओ जे सबहक संग झगड़ि कै आपन अलग रहै यै सेहो त जानते छहो।

मारीच—लेकिन ईहो आश्चर्य ! केसब के नइ राखै के रहै बहीन कें त भगाइये देतिहै।

राजा—भगाय देने गाम के लोग नइ दुसतिहै ? आ कतबो हुवै—छियै त बहिनिये। लैं सोचने हैतै—आपन जमीन मे सैं दू कट्ठा पर ओकरा एकटा झोपड़िए बनाय देवै त कोन बेजाय। बदनामो नइ हुवै पड़ल आ रोज रोज के झाँव-झाँव सैं सेहो बचलौं।

नारद—ओकर बेटी त खूब धूरा मे ओंघराय-ओंघराय खेलै छै। कोइ देखै बला नहिये—छोट जाति के बच्चा सबहक संग नाचने घुरै छै।

राजा—ओकरे लै कै त कुसमी माय सैं और झगड़ा ! केसब के दुलिहन कै त एत्ते दिन भेलै बेटा बेटी नहिये भेलै। तैं बूढ़ी के मन जे कुसमी के बेटी कें राखी अपना पास। आ इने कुसमी सब सैं लड़ि झगड़ि कए बेटी कै लै कै अलग भै गेलै...

मारीच—भरि दिन लोग कन धान कूटै मे रहै छै त लड़किया के सम्हारतै के ? अहिना दूरि हैत रहतै।

नारद—लेकिन, हमरा एकटा बात कहो—कुसमी पर केकर एहेन नजरि रहै जे—

मारीच—नजरि त बहुत गोटे के रहै। ओकर उमरे की भेलै यै ? सुनै छी ससुरारियो मे के ने अहिना...

नारद—सैह जौं करैके रहतिहै त ओत्तहि रहि जैतिहै—

मारीच—नइ बुझलहो ! तखैन ओकर दुल्हा मरबे कैलकै रहै। शोक ताजा रहै। तकर आब पाँच-छौ साल भै गेलै। एखैन जत्ते दिन जाइ यै,

सरीर ततबे—। त तों ही कहो, एहेन सरीर पर लोभ केकरा नइ हैतै ?

नारद—लोभ भने हजार लोग कें रहै। बच्चा त एक्के गोटे के हैतै !

मारीच—से हम की जानि गेलियह ?

नारद—[सन्देहात्मक दृष्टियें देखैत] तखैन तों ओकरा देखै किये गेलह ? के तोरा देखै कहलकह रहै ?

राजा—से त हम्मे कहलियै ! हमरो अइ ठाम कूटै-पीसै के काम करै छै। हम मुँह मे दाग देखलि यै त पूछलि यै जे कि छियै ! कहलकै—पता नइ, लेकिन खूब दर्द करै यै। कहलि यै—देखबहुन वैद जी सै ! कहलकै दवाय करै के पैसा कत्तै सै ऐतै ? तैं हमहीं वैद कै बोलैलौं। आब त देखै छी—रोग एकटा नइ, दू-दूटा।

नारद—आब करबहो की ?

राजा—कुछ त करै पड़तै। बदनाम भै जाय त तोरो-हमरो लोग दुसतह !

नारद—हमरा कियैक दूसत कोइ ?

राजा—आखिर हमरे सब के गाम के लड़की छियै !

नारद—त हम सब कैये की सकै छी ?

मारीच—अस्पताल पठाय कै...

राजा—नइ-नइ ! से कैना हैतै ? ओत्तै त पूछबे करतै—अइ बच्चा के बाप के छियै ? बिना बाप के दस्तखत के ओसब नोकसान करै लेल तैयार नइ हैतै !

नारद—तखैन ?

राजा—सैह व्यवस्था कै रहल छियै कि ! तों की बुझलहो, हम्मे बैठल छियै...?

मानव—[नेपथ्य सँ] राजा सेठ !!

राजा—मानव बाबू ! आउ, आउ !! [मानव प्रविष्ट भए चुपचाप एकटा कुर्सी पर बैसैत छथि। किछु बजैत नहि छथि।] केहन देखलि यै ? [मानव असन्तुष्ट दृष्टियें राजा सेठ क दिसि एक बेरि देखि कए मूड़ी खसा लैत छथि।] वैद जी त कहै छथिन जे ओकरा विशेष कुछ

नइ भेलै, तखैन...

मानव—[आश्चर्य-चकित भए] विशेष किछु नहि भेलन्हि ?

मारीच—हँ ! हमरा त लागै यै—कुसमी कें पितंगिया उछललै यै... वैह जकरा अहाँ सब एलर्जी कहै छी...

मानव—माफ करब, हम अहाँ क संग सहमत नहि छी।

मारीच—तखैन अहाँ की कहै छी...? भेलै त कोनो चर्म रोगे...

मानव—चर्म रोग त अवश्य भेल छन्हि, कियैक त दाग सबटा चमड़े पर पड़ल छन्हि। मुदा, तकर कारण की थिक, डाक्टर-वैद्य क काज भेल सैह सब बतायब—।

मारीच—[व्यंग्यात्मक स्वर मे] वेस ! बुझलौं वैद कै चिकित्सा-शास्त्रक नीक ज्ञान नइ रहि सकै छै—

मानव—सबटा बात क टेढ़ अर्थ निकालब अहाँ नीक जकाँ जनैत छी। ई छौ मास सँ त सैह देखि रहल छी।

राजा—आहाहा ! अहाँ दुनू त... वैद ! तोंही चुप भै जा ने ! पहिने सुनहुन त, ऊ की कहै छथिन।

मारीच—कहौथ ने ! सैह त हमहूँ जानै चाहै छियैन।

मानव—कुसुम बहीन सन्तान-सम्भवा छथि। [कहि कए राजा, नारद आ मारीच क प्रतिक्रिया कें बुझबाक चेष्टा करैत छथि। तीनों कें चौंकैत नहि देखि कए विस्मित होइत छथि। ओम्हर तीनों गोटे एक दोसराक दिसि देखैत छथि मात्र।] लगैत अछि, अहाँ सब लेल ई बात नव नहि थिक !

मारीच—एतबो टा नइ बुझबै हम ?

मानव—अहाँ क बोधशक्ति क परीक्षा लेब हमर काज नहि थिक।

राजा—और ओकर मुँह पर के ओ...

मानव—हुनका खराब रोग भेल छन्हि !

मारीच—खराब रोग ?

राजा—माने ?

मानव—माने यौन रोग। भी० डी०—भेनरल डिजीज!

[किछु काल सब चुप-चाप रहि जाइत छथि।]

हमरा देखैते देरी सन्देह भेल छल जे ई मामूली कोनो एलर्जी वा चर्म रोग नहि थिकन्हि।

नारद—लेकिन आश्चर्य! ई रोग कुसमी कें केना भै सकै छै?

मानव—से हम कोना कहू? हुनका जे भेल छन्हि, सैह हम कहलहुँ।

मारीच—एहि गाम मे... ई कोना...?

मानव—ई रोग दू तरहें भ' सकैत अछि—एक, जौं क्यो आपन शरीर पर अत्याचार करै, विकृत यौन संसर्ग करै—तखनि। नहि त, जौं एहन कोनो लोग क संग संसर्ग करै, जकरा ई रोग छैक।

नारद—कुसमी जे कुछ कैने छै, शरीर के ज्वाला के शान्त करै लेल कैने हैतै। तकर माने ई नइ जे ऊ जे मन हुवै सैह कैने हैतै...

मारीच—सब सें बड़का बात ई जे अइ तीन-चारि साल मे गाम छोड़ि कें कुसमी इन्ने-उन्ने कत्तौ गेलो नइ छै। तकर माने...

मानव—तकर माने अही गाम क कोनो लोग सँ हुनकर निकट सम्बन्ध रहन्हि। और ओहि पुरुषे सँ हुनका दू-दूटा उपहार भेंटलन्हि—नाजायज सन्तान और यौन रोग!

नारद—लेकिन के भै सकै ये एहन आदमी?

मानव—से पता लगायव कोनो कठिन काज नहि।

नारद—अहाँ पता लगाय लेलौं जे ऊ... !

मानव—कोनो प्रत्यक्ष प्रमाण नहि अछि। तखन...हँ, एहि गाम मे जनिका जनिका ई रोग छन्हि, हुनके मे सँ क्यो...

मारीच—एहि गाम मे ककरा छै एहन रोग?

मानव—अहाँ वैद्य छी। ताहि पर अही गाम क लोग छी। तें—

मारीच—हम त अही गाम कियै, आसो-पड़ोस मे ककरहु जानै नइ छियै, जेकरा......

मानव—लेकिन हम जानैत छी ! [कहि कए राजा क दिसि देखैत छथि ।]

राजा—[एत्तेक देर धरि चुपचाप सभक बात सुनैत रहथि । अकस्मात् हड़बड़ा कए कहै लगैत छथि—] स-से जे होइ ! एखैन तेकर कोन जरूरत ? हम सब से एखैन जानिये कै की करब ? एखैन त ई लड़किया कै केना की कैल जाय, से... । [किछु सोच्चैत] लेकिन पहिने अहाँ हमर माय कै कनी देखि लियौ मानव बाबू ! ओ बेचारी कालिह सँ... कालिह त अहाँ आन ठाम गेल रहियै, तँ— । [नारद आ' मारीच सँ] अच्छा, त तौं सब एकटा काज करह ! एखैन जा !! तावत् मानव बाबू हमर माय कै देखै छथिन । हम्मे हिनका सँ बात कै लेबैन जे केना की कैल जैतै ! तोरा आर कै बाद मे कहबह— ।

नारद—[असन्तुष्ट भए] अच्छा ! ठीक छै— तखैन...

[मारीच किछु कहैत नहि छथि । ओ क्रुद्ध भए मानव क दिसि देखैत छथि । तत्पश्चात्, दुनू गोटे निकलि जाइत छथि । मंच पर मात्र राजा आ मानव रहि जाइत छथि । दुनू एक दोसरा क दिसि एकटक देखैत रहि जाइत छथि ।]

राजा—तखैन अहाँ हमरा चिन्हि गेलौं, डागदर साहेब !

मानव—अहाँ कें हम बहुत दिन पहिनहि चिन्हि गेल छलहुँ, राजा सेठ ! आइ एकटा नव रूप देखि रहल छी मात्र ! [पाछाँ घुरैत] सुनैत छलियै, साँपे टा केंचुवा बदलैत रहैत छैक; आब देखैत छी जे मनुष्यो... !

राजा—[हँसैत] सावधान ! साँप लेकिन काटतो छै ।

मानव—जकरा मन्त्र क पता छैक, तकरा कोन डर ?

राजा—राजा सेठ कै आइ धरि कोइ कोनो मन्तर सँ वश नइ कै सकलै ।

मानव—अहाँ हमरा डरा रहल छी ? ओहि भोथ अस्त्र कें आन आन लोग क लेल सम्हारि कए राखू सेठ !

राजा—डाक्टर !!

मानव—हँ, सेठ ! अहाँ क अर्जल प्रतिष्ठा कें हम एक पल मे धूलि मे मिला सकैत छी । आइ जौं सब कें पता चलि जाइक जे राजा सेठ आपन यौन रोग क

चिकित्से क लेल डाक्टर कें हर मास एत्तेक टाका दैत छथि, हुनक माय क इलाज एकटा बहाना मात्र थिकन्हि— त कतय रहत अहाँ क राजत्व ? अहाँ जनता कें नहि चिन्हैत छी सेठ। ओ एक बेरि ककरहु विरुद्ध भड़कि जाइक त ओकरा क्यो नहि रोकि सकैत अछि।

राजा—ई नइ भूलि जाउ जे आइ जे दसटा गाम के लोग अहाँ कै जानै यै, तकर मूल मे छै इयैह राजा सेठ। हम अहाँ कै सब सैं पहिने इलाज के लेल नइ बोलैतिहौं त आइ अहाँ...

मानव—एत्तहि रहितहुँ आ एक्के तरहक प्रतिष्ठा क संग! हमर जस-प्रतिष्ठा क कारण हमर काज थिक, अहाँ क कृपा नहि।

राजा—सैह जौं हुवै त हमर कृपा कियै ग्रहण कैने रही तखैन ? तखैन अहाँ के नीति-ज्ञान कत्ते रहै ?

मानव—मन नहि अछि, अहाँ की कहने रही तखन ? अहाँ कहने छलहुँ— ई रोग शहर क कोठा सँ अहाँ क देह मे आयल छल। अहाँ कहने छलहुँ जे आब अहाँ ओहि सब ठाम नहि जाइत छी... ओ सब विपत्नीक हैबाक बाद शरीर क भूख मेटाबैक लेल कैने छलौं! मुदा आइ अहाँ क जे रूप देखैत छी......

राजा—आइ एहन की भै गेलै यै जे हम असह्य भै गेलौं ?

मानव—अहाँ पहिने जे करैत छलहुँ वा कैने छलहुँ, से अहाँ क पसन्द छल। हम ने पादरी छी ने समाज-सुधारक, जे ओहि पथ सँ अहाँ कें घुरैबाक चेष्टा करब।

राजा—तखैन आइ एत्ते नीति-शास्त्र कियै पढ़ि रहल छी ?

मानव—नीति-शास्त्र नहि... हम अहाँ सँ समस्त सम्पर्क छिन्न करै चाहैत छी। अहाँ क लोभ-लालसा अहाँ कें एत्तेक नीच बना देलक अछि जे एक असहाय विधवा क जिनगिओ कें ल' कए अहाँ दानवीय खेल खेलै लागलहुँ! अहाँ क चरित्र निर्मल नहि छल— से जनैत छलहुँ। मुदा अहाँ एत्तेक गिरल लोग छी, तकर पता नहि छल।

राजा—लेकिन एत्ते आसानी सँ अहाँ कें मुक्ति नइ भेंटत डाकदर साहेब !

मानव—तकर मतलब ?

राजा—मतलब इयैह जे कुलमी के एकटा व्यवस्था त अहाँ के करैये टा पड़त !

मानव—कथमपि नहि ! हमरा सँ किछु नहि हैत। अहाँ वैद जी सँ जे करावैक अछि, कराउ !

राजा—[हँसैत] वैद सँ कहौं ई सब काज हुयै ? हें-हें-हें-हें-हें ! जेकर जे काज छियै ! वैसी नइ— अहाँ कें बस ओकर पेट के बच्चा टा कें......

[हाथ सँ 'नोकसान' करबाक इङ्गित करैत छथि।]

मानव—हम ओसब अवैध काज ने करैत छी, ने करब !

राजा—अहाँ भेलौं शास्त्रज्ञ लोग... शास्त्रो मे विधान छै जे हजारोटा पाप कैयो कें जौं देह पर तनिटा गंगा जल छींट ली, त सबटा पाप धुयाय जाइ छै ! अहूँ छींट लेब तनिटा गंगा जल ! और एहि साधारण काम के लेल अहाँ के जत्ते टाका चाही, ततबे भेंटि जायत !

मानव—अहाँ हमरा लोभ देखाय रहल छी ? हम कुत्ता नहि, मानव थिकहुँ सेठ ! अहाँ क टाका अहीं राखू ! हम चललहुँ ! [प्रस्थानोद्यत होइत छथि।]

राजा—रुकू डाकदर साहेब ! [मानव थम्हि जाइत छथि।] राजा सेठ आइ धरि ककरहु सँ 'नइ' नइ सुनलकै यै ! और जेकरा सँ से सुनत, तकर मुँह कें सब दिनक लेल बन्द कै देत ओ !!

मानव—[पाछाँ घुरि कए राजा क दिसि देखैत] हमरा धमकी द' कए काज करायब ? ई जानि राखू—हमर एकटा केशो कें अहाँ स्पर्श कैलहुँ त आस-पास क दसटा गाम क लोग अहाँ कें छोड़त नहि।

राजा—[उच्च स्वरें हँसैत] बड़ भरोस यै अहाँ कै जनता-जनार्दन पर, एँ ? [पुनः हँसै लगैत छथि] आपन ओ आदर्श आ' धारणा सबटा कें मैना धार मे डूबाय दियह मानव बाबू ! हम अहाँ के सात दिन के समय देलौं सोचै लेल। नीक जेकाँ सोचि कै कहब, अहाँ कै जे कहबाक यै ! नइ त अहाँ के ऊ जनता-जनार्दन कालिह भै कै अहीं कै आकाश सँ उतारि

कै पाताल मे धकेलि देत !

मानव—हमरा सोचबाक लेल समय क कोनो प्रयोजन नहि अछि । अहाँ कें जे मन हुयै से क' सकैत छी ! [मानव द्रुत प्रस्थान करैत छथि ।]

राजा—अच्छा !! त देखह आब राजा सेठ के करामति ! देखियह—आब के तोरा बचबै छह !!!

[राजा सेठ क्रूर दृष्टियें मानव क गमन पथ क दिसि देखैत रहि जाइत छथि । मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

छठम दृश्य

[प्रवीण बाबू क आंगन मे मानव भोजन क' रहल छथि । सामने बुचकुन ठाढ़ अछि । पाछाँ मे करुणा बैसल छथि ।]

मानव—[अपराधी जकाँ] आइ बड़ अबेर भ' गेल ।

बुचकुन—त की भेलै ?

मानव—असल मे रोगी देखै लागैत छी त होसे नहि रहैत अछि । ताहि पर बराही सँ बजाहटि आयल छल, तैं... । [चुप रहि कए] हमरा लेल तों सब......

बुचकुन—आब अहाँ कोनो बाहर के लोग छी थोड़बे ? घर के लोग के लेल लोग कष्ट त करबे करतै । [थारी दिसि देखैत] तरकारी लाउ तनी टा ?

मानव—नहि-नहि ! हमरा आर किछु नहि चाही ।

बुचकुन—हे ! नहि-नहि करब त नहिये देब । कोनो पाहुन छी नइ जे जबर-दस्ती खिलायब । [मानव एहि बात पर हँसि दैत छथि ।] तनी टा दालि-तरकारी नेने आबै छी हम...

मानव—[हँसैत] की बात थिकैक ? तखनि सँ तों हमरा बेसी-बेसी दालि-

तरकारी खुऐबाक चेष्टा क' रहल छह्— से कियैक ? बेसी भ' गेलह की ?

बुचकुन—सत्ते बेसी भै गेलै। आइ तीन दिन सै—

करुणा—बुचकुन !

बुचकुन—हमरा कियै डाँटि रहल छी दुलहिन जी ? हम्मे कि कोनो फूठ बोलि रहल छी ?

मानव—[खायब बन्द करैत बुचकुन सँ] की बात थिकैक ?

करुणा—कुछ नइ। बुचकुन ! हिनका और एक गो रोटी आनि दहुन !!

मानव—हमरा आब रोटी नहि चाही। की बात थिकैक बुचकुन ?

बुचकुन—[किछु काल सब गोटे चुप रहैत छथि। तत्पश्चात्] आइ तीन-दिन सै दालि-तरकारी फेंकल जाय रहल छै।

मानव—फेंकल जाय रहल छैक ? कियैक फेंकि रहल छहक ?

बुचकुन—मालिक कै त जानते छियै—बीमारी के बाद सै खैनाइ-पीनाइ एक दम कम भै गेल छैन। आ इने दुलहिनो जी...

करुणा—बुचकुन !

बुचकुन—[करुणा क डाँटब क उपेक्षा करैत] आइ तीन-चारि दिन सै दुलहिन जी... नइ खाय रहल छथिन।

मानव—[घुरि कए एक बेरि करुणा क दिसि देखि कए] नहि खा रहल छथि ? तकर माने ?

बुचकुन—सत्ते कहै छी। कहै छथिन—भूख नइ यै। ई कहीं हुवै ? भूख कहीं नइ लागै, जे आदमी तीन-तीन दिन सै...! कहलियैन— डागदर बाबू त छथिने— देखाय ने लथुन, त...

करुणा—की बेकारे... ?

बुचकुन—देखलियै ने ? जत्ते बेर ई सब कहै छियैन, अहिना डाँटि कै मुँह बन्द कै दै छथिन। लेकिन आइ हम हिनकर नइ सुनबैन ! डागदर बाबू !! अहाँ हिनका एक बेरि देखियौन ने ! ई त अपना मुँहे कुछ नइ कहथिन—

करुणा—कियै ? हमरा से की भेलै जे हम हिनका कहतिहैन ? हमरा कुछ नइ

भेल छै... [ई कहैत करुणा अपनहि उठि कए भनसा घर क दिसि बढ़ै लागैत छथि कि अधे दूर जा कए खसि पड़ैत छथि ।]

बुचकुन—[करुणा कें खसैत देखि दौड़ि कए हुनका पास जा कए] हे-हे !! की भेलै ?

मानव—[शीघ्रता सँ हाथ धो कए करुणा क पास जाइत छथि] की भेल ?

करुणा—[उठबाक चेष्टा करैत छथि] कुछ नइ ! अहिना घुमरी लागि गेल रहै !!

[मुदा उठि नहि होइत छन्हि, तैं बैसि रहैत छथि ।]

मानव—[करुणा क परीक्षा करैत] बुचकुन ! ई ओना नहि मानथिन्ह ! हिनका बहुत बोखार छन्हि । एकटा खटिया नेने आबह एत्तहि !

बुचकुन—हे इयैह, आनलौं ! [प्रस्थान ।]

करुणा—हमरा कुछ नइ...

मानव—[डाँटैत] अहाँ चुप रहू ! अहाँ कें की भेल अछि, से देखब हमर काज थिक ! आश्चर्य !! एहन शरीर मे अहाँ... [तावत् बुचकुन एकटा खटिया आनि कए मंच क पश्च-मध्य स्थान मे राखैत अछि । मानव आ' बुचकुन क सहायता सँ करुणा खटिया पर जा कए लेटि जाइत छथि । मानव हुनक आँखि, जीह आदि क परीक्षा करैत छथि ।] ...बोखार त बहुत बेसी लागैत अछि । कत्तेक दिन सँ एहन अस्वस्थ छथि ?

बुचकुन—हम नइ जानै छी डागदर बाबू ! दुलहिने जी सै पूछियौन ने !

मानव—[करुणा सँ, कनेक द्विधाग्रस्त भए] अ-अहाँ कहिया सँ... माने... ई बोखार कत्तेक दिन सँ चलि रहल अछि ?

करुणा—इने तीन-चारि दिन सै बोखार बेसी भै रहलै यै...... नइ त पहिने से नइ होइ रहै ।

मानव—पहिने की होइत छल ?

करुणा—और कुछ नइ... कखनौ-कखनौ घुमरी लागि जाय रहै आ' कनी देर लेल एक दम बेहोस जेकाँ—

मानव—आ' ई बात अहाँ आइ धरि नुका कए रखलहुँ । बुचकुन !

बुचकुन—जी, सरकार !

मानव—दुआरि पर सँ मालिक कें बजा अनहुन त ! ओ अपनहि देखि जाथु जे...

करुणा—[उठबाक चेष्टा करैत घोघ तानैत] नइ-नइ, बाबू जी कै कियै... ?

मानव—ठीके ! हमहूँ केहन बुद्धू छी ! [सोचैत] अही सब सँ त एहि देश क नारी क ई हाल होइत छन्हि । ने ससुरे सँ आपन असुविधा दय बाजब, ने खबास सँ । और हम त भेलहुँ बाहर क लोग, रास्ता क बटोही—हमरा सँ क्यो कथी लेल...

करुणा—हम सब पहिनहि सै अहाँ के बहुत आभारी छी । बाबू जी के बीमारीओ के समय मे अहाँ बहुत खटने रहियै । तैं...

मानव—तैं ओही सेवा क कर्ज उतारैक लेल अपन जान देबा लेल तैयार भेल छी, सैह ने ? अहाँ जानैत छी जे अहाँ ककरहु किछु नहि बता कए जे भूल कैलहुँ, ताहि लेल अहाँ क जिनगी क खतरा अछि ?

करुणा—मुर्दा की मृत्यु सै डरतै ? हम्मे मरै लेल तैयार छी ।

मानव—किन्तु हम सब अहाँ कें मरै कियैक देब ?

बुचकुन—[कनमुँह भए] हँ दुलहिन जी ! हम सब अहाँ कें केना छोड़ि सकै छी ?

[मंच धीरे-धीरे अन्हार भ' जाइत अछि ।]

सातम दृश्य

[प्रवीण बाबू क दुआरि । प्रवीण आ' मानव बैसल छथि ।]

मानव—आइ सात दिन भ' गेल अछि; मुदा जे दवा आ' इन्जेक्शन मंगाबै लेल अस्पताल वाला सब कें कहने छलियन्हि, से नहि आयल अछि ।

प्रवीण—अइठाम के अस्पताल... ई सब काज करै चाहै छै थोड़बे ? ईहो जे चारि दिन मे खून के रिपोट दै देलकै, सैह बहुत बुझह ! त, की लिखलकै खून के जाँच कै कै।

मानव—जे लिखलकै, हमरा ताहि पर सन्देह भ' रहल अछि। [स्वगत] नहि ! ई भ' नहि सकैत अछि। ई असम्भव थिक !

प्रवीण—त आब की करबहो ?

मानव—हम त खून पठा देने छियन्हि बड़को अस्पताल मे। आब आइ-कालिह मे ओत्तहु सँ रिपोर्ट भेंटि जायत। जा धरि से नहि आबैत छन्हि, ता धरि हिनकर इलाज ठीक जकाँ नहि भ' सकैत छन्हि।

प्रवीण—बड़का अस्पताल जैबाक विषय मे पुछलहुन दुलहिन जी सै ?

मानव—हुनका त हम कैक बेर कहलियन्हि जे ओतय चलू, अस्पताल मे भर्त्ती क' दैत छी। नहि त एतय नीक जकाँ इलाज नहि भ' सकैत अछि। एतय ने दवा भटैत अछि, ने आने कोनो सुविधा अछि जे...।

प्रवीण—त ऊ की कहै छथिन ?

मानव—ओ त बस एकै बात क रट लगौने छथि— नहि-जायब, नहि-जायब ! बेर बेर कहैत छथि जे मरब त एत्तहि मरब— शहर मे जा कए कियैक मरब ? अहीं कहू— क्यो जँ सदिखन मरबे क चिन्ता करैत रहै त ओ... [कहि कए चुप भ' जाइत छथि।]

प्रवीण—के समझाबै ? जनानी जातिए ने तेहन होइ छै जे कुछ सुनै नइ चाहै छै। आब बुझह ! एत्ते दिन सै ऊ एहेन अस्वस्थ छथिन आ ककरो पते नइ रहै। ई त भाग्य क गप छिऔन जे ओइ दिन तोहर सामनहि बेहोस भेलखिन।

बुचकुन—[प्रविष्ट भए प्रवीण बाबू क छड़ी हाथ मे उठा कए हुनक पास आबैत] चलू मालिक !

मानव—की बात थिक ?

बुचकुन—मालिक कहलखिन— भगवती थान जेथिन, तैं...

प्रवीण—चलैं रौ ! पकड़ें हमरा !

मानव—हँ, जाउ ! और भगवती सँ प्रार्थना करियन्हु जे हिनका नीक क' देथिन्ह ! जखन दुनिया मे शैतान सँ शैतानो लोग नीक जकाँ जीवित अछि, तखन हिनके पर ओ एहन कोप कियैक देखा रहल छथि ? [किछु बिना बजनहि प्रवीण छड़ी हाथ मे नेने, दोसर हाथ सँ बुचकुन कें धैने निष्क्रान्त होइत छथि। मानव एसगर मे पदचारणा करै लगैत छथि। राजा सेठ प्रविष्ट होइत छथि।]

मानव—[राजा सेठ कें देखि कए आश्चर्य-चकित भए] राजा सेठ ? की बात थिक ?

राजा—अहाँ से एकटा काज रहै।

मानव—हमरा सँ आब कोन काज रहि सकैत अछि ? हम त पहिनहि कहि देलहुँ जे हम अहाँ क कोनो काज…

राजा—[हँसैत] एत्ते जल्दी केना सम्बन्ध टूटि सकै छै डागदर साहेब ?

मानव—जोड़ै मे भनहि समय लागै, तोड़ै मे देर नहि लगैत छैक।

राजा—एत्ते दिन हमर नोन खैलौं; एत्ते जल्दी कहीं ताहि मे अरुचि भै सकै यै ?

मानव—एहि दुनिया मे सब भ' सकैत अछि राजा सेठ। जखन हजार अपमान क बादो अहाँ कें हमरा सँ काज लेबाक इच्छा भ' सकैत अछि, तखन और की असम्भव होयत ?

राजा—[हँसैत] जखैन अइ दुनिया मे सब भैये सकै यै, तखैन हमर ई काज अहूँ कें करै टा पड़त।

मानव—अहाँ हुकुम क' रहल छी ?

राजा—हुकुम बुझू हुकुम, नइ त अनुरोध ! अखैन एतबे धरि कहि सकै छी जे ई काज कैने पहिने सै बेसी नोन भेंटत, बहुत बेसी ! आ टाका दै के मामला मे राजा सेठ कहियो पछुआयल नइ रहि सकै यै ! से त जानते छियै……

मानव—हमरा एखनहु पाइ क लोभ देखा रहल छी ? [हँसैत, स्वगत]

ओना और अहाँ के छैहे की जे लुटा सकैत छी ? [प्रकाश्य] काज की थिक ? फेरो कोनो विधवा युवती क बच्चा नोकसान करैबाक ?

राजा—नइ-नइ ! बड़ साधारण काज छिकै। अहाँ कें दू-चारि लाइन लिखि दियै पड़त— बस !

मानव—लिखै पड़त ? की लिखै पड़त ?

राजा—अहाँ कागज-कलम निकालू ने... हम कहने जाइ छी।

मानव—अहाँ हमरा सँ की लिखावै चाहैत छी— पहिने से कहू।

राजा—एकटा लड़की... वैह कुसमिये... आ-हा-हा, बेचारी...

मानव—[उत्तेजित भए] की भेल अछि कुसुम कें ? की कैलहुँ अहाँ ?

राजा—हम की करब ! जे भेल, तै सै हमरा बेहद दुःख भै रहल यै।

मानव—[व्यंग्य करैत] कुम्भीराश्रु !

राजा—की कहलौं ?

मानव—किछु नहि।

राजा—हमरा त, जानते छियै, आरम्भहि से इच्छा नइ रहै जे ऊ बैदवा ओकर इलाज करै... तैं हम अहाँ सै...

मानव—जखन ओ इलाज कैये रहल छथि, तखन हमरा कियैक बजावै आयल छी ? हम त अहाँ सँ कहिये देने छलहुँ जे...

राजा—जे अहाँ ओकर इलाज नइ करबै ! तैं त ई हाल भेलै यै ओकर। [मानव किछु नहि कहैत छथि। राजा किछु काल चुप रहि कए मानव क दिसि देखैत कहैत छथि] बेचारी ! कालिह बेरियेखुना ओकर तबियत खराब भै गेल रहै। राति हैत हैत ओ मरिये गेलै...

मानव—की ? कुसमी मरि गेल अछि ? [क्षोभ सँ गुम भ' जाइत छथि।] तकर अर्थ— अहाँ सब मिलि कए ओकर खून कैलहुँ अछि...

राजा—[हँसैत] ई की कहि रहल छी, डागदर साहेब ? ओकर चिकित्सा मे जे जे चीज के जरूरत भेलै, से सबटा हम...

मानव—ओह ! हम सोचियो नहि सकैत छलहुँ जे मात्र आपन शरीर क

सुख क लेल अहाँ दोसर मनुष्य क जानो...

राजा—[हँसैत] नइ-नइ ! हम ओकर जान केना लै सकै छी ? और सेहँ त अहाँ लिखि देबै... अहाँ लिखबै जे ओकर मृत्यु स्वाभाविक रूप सै भेल छै और......

मानव—नहि !

राजा—और अहीं ओकर इलाज करै रही !

मानव—ई कथमपि नहि भ' सकैत अछि। हम ने ओकर इलाज कैने छी—ने हम एहन झूठमूठ क प्रमाण-पत्र द' सकैत छी !

राजा—जानते छी— वैद्बाक कोनो डिग्री-तिग्री छै नहियें... ओ त ओहिना अपन बाप सै जे दू-चारिटा दवाय के नाम सिखलक यै, सैह लै कै...... तैं अहीं कै प्रमाण-पत्र दियै पड़त—

मानव—[चीत्कार करैत] असम्भव ! अहाँ सब खूनी छी, खूनी !

राजा—[धीर स्वरें] आह ! आस्ते बोलू... नइ त—

मानव—आस्ते कियैक ? हम त दसो गाम में चिकरि-चिकरि कए कहब जे अहाँ और ओ वैद्य मिलि कए कुसमी क खून कैने छियैक। सैह नहि, हम पुलिसो कें......

राजा—[क्रुद्ध भए] डाक्टर ! सावधान !! अहाँ आगि लै कै खेल रहल छी ! ई बात जौं और ककरहु कान मे पहुँचै त हमरा बाध्य भै कै और एकटा खून करावै पड़त।

मानव—निकलि जाउ ! अहाँ निकलि जाउ एतय सँ !!

राजा—[हँसैत] मकान ककरो, आ निकालि रहल छै और कोइ... हुँः ! कादो मे पड़ला सै कुत्तो हाथी कें लाति मारबाक कोसिस करै छै। लेकिन, ई अहाँ नीक जकाँ जानि राखू जे अहाँ के टांग हम तोड़ि देब ! राजा सेठ पापी आदमी और मानव डाक्टर पुण्यात्मा !! अहाँ की बुझै छी अहाँ के बात नुकायल यै ? आब लोगो कें पता चलि जैतै जे अहाँ के असली रूप की छिकै ! तखैन देखब— ई तेज कत्तै रहै छै !

[एतबा कहि कए क्रुद्ध राजा सेठ निष्क्रान्त होइत छथि। मानव ओहि दिसि देखतहि रहि जाइत छथि। हुनको आँखि मे क्रोध क चिह्न स्पष्ट प्रतीत होइत छन्हि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

आठम दृश्य

[प्रवीण बाबू क आंगन मे एकटा खटिया पर बिछौना ओछाओल अछि। ओहि पर करुणा सूतल आकाश क दिसि देखि रहल छथि। मानव ओसरा क टेबुल क पास जा कए दवा तैयार करैत छथि। एकटा लाल-टेन बरैत अछि खटिया क पास। मध्य रात्रि।]

करुणा—मानव बाबू!

मानव—[अपन काज करैत-करैत] कहू!

करुणा—अहाँ राति मे कहियो ऊपर अकास दिस देखलियै यै ?

मानव—नहि! नीक जकाँ नहि देखलहुँ कहियो। कियैक? [कहैत कहैत दवा ल' कए करुणा क पास अबैत छथि।] हे ई पीबि लियह, त दोसर बात करब।

करुणा—[उठि कए दवा पीबैत छथि।] ई बड्ड कड़गड़ दवाय छिकै!

मानव—[उठि कए गिलास कें टेबुल पर धरैत] रोग जत्तेक कड़गर होइत छैक, दवो ततबहि... जाय दियह! की ने कहैत छलहुँ अहाँ? ओ हँ... आकाश क गप्प!

करुणा—[बैसल रहैत छथि। हुनक बैसबाक सुविधा क लेल मानव और एकटा तकिया हुनक पाछाँ मे राखि दैत छथि।] हम कहै रहियै अकास दय।

मानव—की कहैत छलहुँ ?

करुणा—हमहूँ कहियो नइ देखने रहियै नीक जकाँ अकास दिस। घर क काज मे एत्ते ने बाझल रहै रहियै जे...। तैं अइ तीन चारि दिन सै खूब नीक

जकाँ देखि रहल छियै। तकर पहिने त अहाँ अइ रोगिओ कै घरे मे बन्द राखै रहियै... कियै से राखै रहियै ?

मानव—से जाय दियह! कहू, की देखलहुँ आकाश मे ?

करुणा—हजार-हजार तारा जेना भरि-भरि राति जागि कै हमरा पहरा दै रहल यै। हमरा मरै नइ देत ऊ सब।

मानव—तैं त एम्हर अहाँ क आंगन मे सुतबाक अर्जी मंजूर कैलहुँ अछि।

करुणा—झूठ!

मानव—कियैक ?

करुणा—हम बूझै छी अहाँ कियै हमरा एत्ते दिन घर मे बन्द राखै रहियै आ एखैन कियै......

मानव—कियैक ? कहू त—

करुणा—[मुँह कें आन दिसि फेरैत] हम जानै छी— आब हम जे कुछ करै चाहब, अहाँ सब मंजूर करब। कारण...

मानव—कारण ?

करुणा—आब भरिसक हमर बचबाक उमेद नइ छै।

मानव—[कुर्सी सँ उठि जाइत छथि।] की बेकार क बात सबटा कहि रहल छी ? ई सब के कहलक अहाँ सँ ? एँ ?

करुणा—कहत के ? दिनोदिन हमर चेहरा जेहन भेल जाइ यै—से हम अपनहि बूझि नइ रहल छी की ?

मानव—हूँ! अहाँ त आधा-डाक्टर भैये गेल छी! [पदचारणा करैत] सेह जौं अहाँ क मन मे अछि, त कालिह सँ अहा फेरो घर क भीतरे सूतब!

करुणा—नइ नइ!

मानव—नहि कियैक ?

करुणा—हमरा घर मे दम घुटै लागै छै! एत्ते जेहन शान्ति मिलै यै, ओत्ते से कखनहु नइ मिलल रहै। एत्ते मरबो करब त शान्ति सै मरब।

मानव—[डाँटैत] फेर मरबाक गप क' रहल छी ?

करुणा—अच्छा! आब नइ कहब! [किछु काल दुनू चुप रहि जाइत छथि।]

हमरा लेल अहूँ कै कत्ते तकलीफ करै पड़ि रहल यै ?

मानव—हूँ ! बड़ तकलीफ भ' रहल अछि। जत्तेक अहाँ कें भीतर-भीतर भ' रहल अछि, भरिसक ताहू सँ बेसिए !

करुणा—से हम नइ कहलौं। आइ कालिह त अहाँ आन आन गाम जाय कें रोगी देखब बन्दे कै देलियै। दिन मे बस दुआरिये पर जे आबै यै, तकरे देख कै छोड़ि दे छी।

मानव—त की करू, और और लोग कें मामूली कफ-पित्त-बोखारे होइत छैक, अहाँ जकाँ...... [कहैत कहैत चुप भ' जाइत छथि अपन गलती कें बुझि कए।]

करुणा—हमरा जेकाँ ? हमरा जेकाँ की ?

मानव—किछु नहि।

करुणा—अहाँ ककरो नइ कहै छी, हमरा की भेल यै। डरै छी—जौं कोइ हमरा से कहि दै; सैह ने ? [मानव एहि बात पर किछु नहि कहैत छथि।] कालिह दुपहर खुन परसौनीवाली दादी आयल रहथिन। ऊ हो पूछै रहथिन रोग दय। हम नामे नइ बताय सकलियैन !

मानव—रोग क नाम जानि कए अहाँ करबे की करब ?

करुणा—कम से कम ई त बूझि सकब जे और कत्ते दिन बाकी छै... और कत्ते दिन अहाँ कै कष्ट......

मानव—हमर कोन कष्ट अहाँ देखलहुँ, जे बेर-बेर से कहि रहल छी ?

करुणा—[उदास भए] नइ जानि बाबू जी आ अहाँ की-केना खाय हैब।

मानव—हम सब नीके वस्तु खाइत छी आ' खूब खाइत छी। बुचकुन कें अहाँ भरिसक किछु नहि बुझैत छी। मुदा असल मे ओकरा खूब बढ़िया भानस करै आबैत छैक। ताहि मे ओ अहाँ सँ कम नहि अछि।

करुणा—[एतबा सुनितहि दुनू हाथ सँ मुँह झापि कए कानै लागैत छथि। मानव की करताह से हुनका नहि फुरैत छन्हि। अपना कें कनेक सम्हारि कए करुणा कहैत छथि—] नीके भेल ! हमरा चलि जाय के बाद अहाँ सब कै कोनो तरहक तकलीफ नइ हैत। हमहीं बेकारे एत्ते सोचै रहियै।

[कहैत-कहैत फेरो कानै लागैत छथि। मानव आपन कुर्सी कें हुनक खटिया क पास आनि कए ताहि पर बैसैत छथि। हुनका चुप करैबाक लेल हुनक देह कें स्पर्श करताह कि नहि, से सोचि कए द्विधाग्रस्त भए बैसले रहैत छथि। कनैत-कनैत करुणा कहैत छथि—] लेकिन आब हमरा मरै के मोन नइ करै यै! [कहैत - कहैत उठि कए कनेक अगुआ जाइत छथि। मानवो उठि कए हुनक पाछाँ कनेक दूर मे ठाढ़ भ' जाइत छथि।] आब... आब फेरो हम... हम बचै चाहै छी! हमरा बचा लियह! हमरा बचा लियह!! [एतबा कहैत-कहैत करुणा बड़ दुर्बल भ' जाइत छथि। रोग क आक्रमण सँ हुनक मुँह फकसिया भ' जाइत छन्हि आ ओ थरथर काँपै लगैत छथि एवं पसीना-पसीना भ' जाइत छथि। पाछाँ मे ठाढ़ मानव कें एहि हालत क पता नहि लगैत छन्हि। मुदा किछु काल धरि करुणा कें किछु बजैत नहि देखि ओ कनेक अगुआ कए करुणा कें की भेल छन्हि, से देखै चाहैत छथि। तावत् करुणा मूर्च्छित-प्राय भ' जाइत छथि।]

मानव—[झपटि कए करुणा कें पकड़ि कए] ई की? की भेल अछि अहाँ कें? करुणा! करुणा!! [मानव क छाती पर माथ राखि कए धीरे-धीरे करुणा स्वाभाविक भ' जाइत छथि आ माथ उठा कए मानव क उद्विग्न मुँह क दिसि देखैत छथि।] करुणा! एखन कनेक स्वस्थ छी ने?

करुणा—हमरा एखैन कोनो रोग छूबियो नइ सकै छै! हम त एखैन मानव क पास छी।

मानव—[ई बात सुनि कए करुणा कें आपन छाती पर सँ हँटाबैत] अ-अहाँ एखन विश्राम करू करुणा!

करुणा—नइ! हमरा कहै दियह! एकर बाद धीरे-धीरे भरिसक हमर कण्ठो रुद्ध भै जायत... कुछ कहि नइ हैत हमरा से! आब मात्र अहाँ के लेल जीयै के मोन कै रहल यै हमरा। हमरा लेल जेना दिन-राति अहाँ मृत्यु सै लड़ि रहल छी—

मानव—से हम और कोनो रोगी क लेल करितहुँ। हमहीं अस्वस्थ रहितहुँ त अहाँ से नहि करितहुँ ?

करुणा—[मानव क बात क उपेक्षा करैत] बियाह क दू मासक बादे हमर सिन्दूर मेटा गेल। आइ तकर आठ-नौ साल भै गेल यै! ई आठ-नौ साल सँ हम प्रति पल, प्रत्येक मुहूर्त्त मृत्यु क लेल प्रार्थना कैने छी। और आइ जखैन मृत्यु हमर माथ लग ठाढ़ छै, तखैन...। हम... अहाँ सँ...

मानव—[करुणा क बात सुनैत-सुनैत खटिया पर सँ ओढ़बाक चादर उठा कए हुनका दिसि बढ़ैत छथि।] आह, आह ! कियैक अहाँ तखनि सँ बजैत जा रहल छी ? जत्तेक हम अहाँ कें कम बाजै कहैत छी, अहाँ ततबे बेसी-बेसी......

करुणा—नइ हमरा कहै दियह !!

मानव—नहि ! किछु कहबाक प्रयोजन नहि अछि एखन। [करुणा कें नीक जकाँ चादर ओढ़ा कए] चलू ! विश्राम करू एखन ! से नहि करब त नीक हैब कोना ?

करुणा—[मानव क हाथ पकड़ैत] सत्ते कहै छी ? हम फेरो नीक हैब ? फेरो पहिलुके जेकाँ...... ? [माथ झुका कए] नइ, से कतौ भेलै ये ?

मानव—हम कहैत छी— अहाँ नीक भ' जायब। फेरो, पहिलुके जकाँ भ' जायब। अहाँ हमर बात पर विश्वास करू !

करुणा—[अविश्वास क दृष्टियें मानव क दिसि देखैत] अहाँ हमर एकटा बात राखब ?

मानव—कहू !

करुणा—अहाँ कहियो अइ गाम कें... चिरागबस्ती कें छोड़ि कए नइ जायब; हम रही वा नइ रही ! अहाँ के चलि गेने चिरागबस्ती अन्हार भै जायत...

मानव—अहाँ रहब कियैक नहि ? अहूँ रहब ! हमहूँ रहब ! सब क्यो रहत !

करुणा—सत्ते ? [माथ डोला कए करुणा कें सुता देबाक लेल हुनका पकड़ैत मानव खटिया क दिसि बढ़ैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

नवम दृश्य

[प्रवीण बाबू क दुआरि। प्रवीण एसकरे बैसल हुक्का पीबि रहल छथि।]

प्रवीण—[हुक्का पीबैत-पीबैत] बुचकुन ! बुचकुन रौ !!

बुचकुन—[नेपथ्य सँ] ऐलौं मालिक ! [प्रविष्ट भए] की कहै छी ?

प्रवीण—एखैन दुलहिन जी केहन छथिन ? [बुचकुन कें किछु नहि बजैत देखि] की भेलौ ? कहै किये नइ छे कुछ ?

बुचकुन—की कहू मालिक ?

प्रवीण—तों सब हमरा ठीक-ठीक नइ कहै छे ! जखनै पूछै छियौ त कहै छें—आब कनीटा नीक छथिन पहिने सं। सेह जौं हुवै त आइ धरि ठीक किये नइ भेलखिन ? [चुप रहि कए] पहिले-पहिने त मानवो सं बातचीत है रहै ! एम्हर दुइ सप्ताह सं ऊहो दिन राति एक कै कै हुनके सेवा मे लागल छै। दोसर-दोसर मरीज सब आबि आबि कै घुरि जाय छैं। और तोरा पूछै छियौ त कहै छें...। बुझै छें जे मालिक आन्हर छथिन; की बुझथिन ! हम सबटा बुझै छियौ !

बुचकुन—[कनैत] ह-हम कुछ नइ जानै छी, मालिक ! हमरा सं नइ पुछू !!

प्रवीण—[बुचकुन कें किछु देर धरि कानै दैत छथि आ' तकर बाद पूछैत छथि] एँ रौ बुचकुन ? हुनकर की आब बचबाक कोनो उमेद नइ ? [बुचकुन कनैत कनैत नकारात्मक भंगिमा मे माथ डोलबैत अछि, प्रवीण आन्हर छथि से बिसरि कए। बुचकुन सँ कोनो मौखिक उत्तर नहि पाबि कए प्रवीण कहैत छथि—] एकटा काज करबें ? कनियें देर के लेल मानव कें हमरा पास भेज देबें ? [बिना कोनो जबाब देने बुचकुन प्रस्थित होइत अछि। किछु कालक पश्चात् मानव प्रविष्ट होइत छथि। हुनको शरीर पर रात्रि-जागरण और परिश्रम क चेन्ह स्पष्ट छन्हि—जे आन्हर प्रवीण नहि देखि सकैत छथि; मुदा, दर्शक बुझि सकैत छथि।]

मानव—हमरा बजौने छी ?

प्रवीण—हँ ! तोरा सँ एकटा बात पूछै चाहै छी। [चुप रहि कए] तों सब हमरा सँ सब कुछ नुकौने जाय रहल छहो; से कियैक ? हमर उमर क डरें ? भरिसक डरैं छहो जे असल बात सुनने जौं हमहूँ अस्वस्थ भै जाइ ! [दुःख सँ हँसैत] नइ ! से नइ हैत। जे आपन जवान बेटा के मृत्यु कें सहलक यै, तकरा आब कुछ नइ भै सकै छे !

मानव—अहाँ शान्त होउ !

प्रवीण—कोना शान्त हैब ? हमर परिवार क अन्तिम दीया मिभा रहल यै आ हम... [ई कहैत कानै लगैत छथि। मानव हुनक पीठ पर हाथ राखि कए हुनका शान्त करबाक चेष्टा करैत छथि।]

मानव—के कहैत अछि अहाँ क परिवार क दीया मिभा गेल अछि ?

प्रवीण—[आँखि क नोर पोछैत] तों आबहु हमरा सान्त्वना नइ दै मानव ! काल्हि भै कै हम त जैबे करब। बाकी रहथिन दुलहिन जी। से हो...... [वाणी रूद्ध भ' जाइत छन्हि। किछु कालक बाद।] ओहि बेचारी कें अइ परिवार मे आबि कै कुछ नइ मिललै ! हमर बेटा क मरै के बाद ऊ अइ आठ-नौ साल सँ हमरे देख-भाल के लेल आपन भाइ-बहिन लग नइ गेल। बुचकुन द्वारा कत्ते कहबैलियैक, लेकिन ऊ सुनै बाला नइ। आइ हमरा ई सजा दै के लेल ऊ एत्तेक दिन सँ...... [कहैत-कहैत पुनः कानै लगैत छथि।]

मानव—अहाँ एना कियैक क' रहल छी ? सब कें जाय दियौक... हम त छी ! हमरा अहाँ जनम नहि देलहुँ, तँ कि हम अहाँ क क्यो नहि ?

प्रवीण—[मानव क हाथ पकड़ि कए] नइ-नइ ! से कियै ?

मानव—अहाँ क एक बेटा अहाँ कें छोड़ि कए चलि गेल अछि। मानि लियह, हम अहाँ क दोसर बेटा थिकहुँ !

प्रवीण—[कनैत] कह' मानव ! ई बात हजार बेर कह' !! सत्ते त ! हम तोरा दय बिसरिये गेल रहियह ! आब... आब हमरा कोनो चिन्ता नइ...हमर

बेटा हमरा मिलि गेल। लेकिन पहिने तों प्रतिज्ञा करह जे हमरा छोड़ि कै, अइ चिरागबस्ती कै छोड़ि कै कत्तौ नइ जैबह।

मानव—हम एत्तहि छी! हम... हम कत्तहु नहि जायब! आब अहाँ विश्राम करू! हम ओम्हर हुनका कनेक देखैत छियन्हि......

प्रवीण—[ई कहि कए धीरे-धीरे प्रवीण क हाथ छोड़ा कए मानव आंगन दिसि चलि जाइत छथि। प्रवीण आनन्दाप्लुत भए बैसल रहैत छथि; आँखि सँ नोर बहैत छन्हि।] हमर बेटा हमरा मिल गेल... आब हमरा कोनो चिन्ता नइ... कोनो चिन्ता नइ! [तावत् बाहर सँ पाँच-दस गोटेक कंठ स्वर— कोलाहल सुनल जाइत अछि। प्रवीण आश्चर्य-चकित भ' जाइत छथि। कोलाहल क स्वर धीरे-धीरे पास आबि जाइत अछि। राजा सेठ, नारद, मारीच, दुनू गौंआ आ' अन्यान्य किछु व्यक्ति प्रविष्ट होइत छथि।]

राजा—हे इयैह! इयैह त बैसल छथि।

नारद—हिनके सै पुछहो ने सबटा बात!

मारीच—परबीन भाइ!

प्रवीण—के सब छहो? लागै छै, बहुत गोटे छै।

नारद—हँ, छी त हम सब बहुत गोटे। राजा सेठ, हम, वैद और आरो पाँच-सात गोटे।

प्रवीण—त ठाढ़ किये छहो? बैठैं जाहो ने।

मारीच—हम सब एत्तै बैठै लेल नइ आयल छी।

प्रवीण—तब कथी लेल आयल छहो?

राजा—हमरा सब कै एकटा बात के कैफियत चाही!

प्रवीण—कैफियत? कथी के कैफियत?

राजा—ओना ई बात त पूछै के विचार रहै ओइ डकटरवा सै। लेकिन जब अहीं भेंटि गेलियै ये, तखैन अहीं सै हमरा आरकै सब कुछ कहि सकै छी।

प्रवीण—हँ-हँ! कह' ने, की कहबह!

राजा—कह' हौ वैद, तोंहीं कह'!

मारीच—बेस, तखैन हमहीं कहै छी। हमरा सभक आँखि क सामने तोहर घर मे जे अनाचार भै रहलै यै...

प्रवीण—रह', रह'। की कहलै ? अनाचार ?

मारीच—हँ, अनाचार !

प्रवीण—के कै रहलै यै ई अनाचार हमरा घर मे ?

मारीच—वैह, जाहि साँप कें दूध दै कै पोसने छहो !

प्रवीण—साफ-साफ बात करह !

मारीच—साफ कहै मे से कि डरै छी ? हम ओहि डाक्टरबा दै कहि रहल छियह।

प्रवीण—आदमी भै कै आदमी के सम्मान करै सीखह, तब हमरा से बतियैह !

नारद—हमरे कहै दहक। सुनह भाइ, तोरा हम पहिनहि मना कैने रहियह जे एहन अज्ञातकुलशील लोग कै आश्रय नइ दहो। त तों हमर बात नइ सुनलै।

प्रवीण—देखह नारद। तोहर काज छह कहै के, से कहने रहो। हमरा सुनै के इच्छा नइ भेलै, तें नइ सुनलियै। तै सै ककरा की भेल छै ?

नारद—हैके आब बाकिये की छै ?

राजा—अहाँ क घर मे जे भै रहल छै, से त दूर जाउक। अहाँ के पोसुवा डाक्टर हमरा सब के गाम के बहू-बेटी के संग जे कैलकै यै, से नइ पुछू !

प्रवीण—[उत्तेजित भए] की कैलकै यै ?

राजा—ऊ कुसमी कें ग्रास कैने रहै। ग्रयैह त वैद जी छथिन। पुछियौन ने हुनका सै। कुसमी के इलाज करै रहै ऊ। इलाज की करतै; जे करै रहै— से सब कोइ जानै छै।

प्रवीण—तों कहै की चाहै छहो ?

राजा—कहैयो मे लाज लागै छै। कुसमी कें अइ डाक्टरबा सै बच्चा होवैया रहै। वैद जी कै सन्देह भेलैन, तें एक बेर नाड़ी टेबि कै देखलखिन रहै। और ताही लाजें गला मे फाँसी लगा कै कुसमी आत्महत्या कैने छै।

प्रवीण—झूठ बात ! ई तों सब बनाय कें कहै छे मानव कें बदनाम करै लेल।

राजा—हम कोनो बात बनाय कें नइ कहै छी। हम जे कुछ कहलौं, तकर हमरा पास प्रमाण अछि।

प्रवीण—हम नइ मानै छी तोरा सभक प्रमाण कें। तों सब जे नइ से कै सकै छे।

नारद—डाक्टरे ई काज कैने छै, तै मे सन्देह नइ। लेकिन ठीक छै। तखैन डाक्टर के और और काण्ड दै सुनि लै। तब कहिहो जे कहबाक छह। कह' हौ वैद !

मारीच—डाक्टर जे तोहर आंगन मे लीला चला रहल छै, तों कहै चाहै छहो—सेहो तोरा पता नइ छह ?

प्रवीण—[उत्तेजित भ' कए ठाढ़ भ' जाइत छथि] थम्हह ! हमरा सब दै कोनो कुवाक्य मुँह सैं निकाललै त...

मारीच—से तों जे मोन हुवै कै लै। छियह त तोरे दुआरि पर। लेकिन हम सब आब ई सब नइ सहबै।

नारद—परसौनी वाली अपना आँखि सैं देखने छै दुनू गोटे के काण्ड।

प्रवीण—की ? की देखलकै परसौनी वाली ?

नारद—इयैह जे राति के पहर मे दुनू एक दोसरा के भरिपाँज कें पकड़ि कें...

प्रवीण—[चीत्कार क' कए] नारद !!!

नारद—हमरा पर बिगड़ला सैं की हैतै ? तों लोग के मुँह कै बन्द कै सकबहो ?

प्रवीण—लोग ? के छियै लोग ? तों सब अपना कें लोग बुझै छह ? तों सब त राजा सेठ के पोसल कुत्ता छह... और राजा सेठ के शैतानी हम सब नीक जेकाँ जानै छी।

राजा—अइ अन्हरबा सैं बतियौने कुछ नइ हैतै ! चलह, देखै छियै—असल मे ओहि मौगी के कोन रोग भेल छै और डाक्टर कैना चलाय रहल यै आपन लीला।

प्रवीण—[आपन छड़ी खोजि कए हाथ मे लैत] खबरदार !!! हमरा जीबैत जौं कोइ हमर अङ्गना दिस बढ़लै यै कि—

बुचकुन—[नेपथ्य सँ, चीत्कार करैत प्रविष्ट होइत अछि।] मा-लि-क !!! मालिक ! [प्रवीण क पास आबि जाइत अछि।]

प्रवीण—[बुचकुन क दिसि घुरैत] की भेलौ ? की भेलौ— कह, बुचकुन !!!

बुचकुन—[हकन्न कए कानैत] मालिक ! दुलहिन जी... दुलहिन जी आब नइ... [कानै लगैत अछि।]

प्रवीण—[हाथ सँ छड़ी खसि पड़ैत छन्हि और आँखि सँ नोर चुवै लगैत छन्हि] की सत्ते सब शेष भै गेलै ?

मानव—[प्रविष्ट भए] हँ ! सब शेष भ' गेल अछि। [मानव क पाछाँ-पाछाँ मूड़ी खसौने कौशल्या मंच पर आबैत छथि।]

पहिल गौंआ—[सहानुभूतिक स्वर मे] की भेल छलैन हुनका ?

राजा—[व्यंग्यात्मक स्वर मे] सैह पूछै त आयल छी हम सब। की कैलौं हुनका जे......

मारीच—हुनके कियैक ? पुछू— कुसमी कें केना मारलखिन ?

कौशल्या—[कुसमी क नाम सुनितहि चौंकि उठैत छथि आ' माथ पर सँ घोघ खसि पड़ैत छन्हि—] खबरदार ! जौं तों आपन पापी मुँह सें हमर बेटी क नाम लेलै त हम... ! इयैहे ओकरा मारलक ये ओकर पेट काटि कै......

राजा—की बक-बक करै छह ?

कौशल्या—कोन मुँहें एखनो आयल छहो दोसर के घर के छेद खोजै लेल ? तों की बुझै छहो आब ककरहु तोरा चिन्है मे कसर रहि गेल छै ? जौं से रहबो करै त आइ हम सौंसे गाम मे ढोलहा पिटबाय कै कहबाय देबै सबटा बात।

राजा—की कहबाय देब हो ?

कौशल्या—तोंही हमर बेटा सै झगड़ा करबाय कै ओकरा अलग करबौने रहो। तोंही ओकर इज्जति लूटि कए ओकरा......

राजा—[गरजैत] थम्ह' !!

मानव—[ताहू सँ बेसी गरजि कए] राजा सेठ !!! तोरा कनियोंटा लाज नहि होइत छह जे एत्तेक बड़का टा के पाप क' कए फेर हिनका पर आपन पैसा क गरमी देखा रहल छह ?

कौशल्या—[कनैत] तों बुझै छहो जे पैसा सै दरोगा - पुलिस - मजिस्टर —सब कें कीन लेबहो ? तोहर पाप क सजा त हैतह तोहर मरै के बाद, जखैन भगवान हिसाब मांगथुन, तखैन।

राज़ा—[अन्य ग्रामवासी सब सँ] ई...... ई सब सबटा झूठफूस कहि रहलै यै...... सबटा मन गढ़न्त......

मानव—और तों छह सत्यवादी युधिष्ठिर ? चमार नहितन ! निकलि जाह हमर सीमा सँ बाहर !

राजा—[जाइत-जाइत] ठीक छै ! हम जा रहल छी ! लेकिन तोरा हम छोड़बह नइ डाक्टर। अइ गाम मे तोरा हम टिकै नइ देबह। [राजा, मारीच आ' नारद झपटि कए प्रस्थान करैत छथि। अन्य सब ग्रामवासी मूड़ी खसौने ठाढ़ रहैत छथि। सब क्यो प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि। मंच क आलोक मद्धिम भ' जाइत अछि। दुआरि क एक कोना सँ आपन बैग उठा कए मानव आगाँ बढ़ैत छथि। मात्र हुनकहिं पर स्थलपालोक पड़ैत छन्हि। किछु दूर अगुआ कए ओ थम्हि जाइत छथि। नेपथ्य सँ एकटा स्वर सुनल जाइत अछि—]

स्वर—की मानव ? एत्तहु सँ पड़ा रहल छी ?

मानव—पड़ायब कियैक ? हम कोनो अपराध कैने छी थोड़बे ?

स्वर—तखन ? तखन कियैक पड़ा रहल छी ?

मानव—गाम क विषय मे हमरा जे धारणा छल, से सबटा टूटि गेल अछि। पहिने बुझैत छलहुँ, गाम क लोग, तकरा सभक रहन-सहन, एतहुका प्राकृतिक सौन्दर्य— सब मे एकटा पवित्रता छैक।

स्वर—मुदा आब बुझाइत अछि जे अहू ठाम क जिनगी शहर क जीवन सँ कोनो नीक नहि; सैह ने ?

मानव—हँ; धनिक क अत्याचार, मनुष्य क आदिम लोभ-लालसा और हृदयहीनता एत्तहु तहिना अछि, जेना ओतय......

स्वर—[हँसैत] ने अहाँ कें गामे पसिन अछि, ने शहर। तखन, आब जायब कतय ? [उच्च स्वर मे हँसै लागैत अछि।]

[चारूकात सँ जेना अनेक गोटे मानव सँ इयैह प्रश्न करै लगैत छथि— 'आब जायब कतय ? आब जायब कतय ?']

मानव—सत्ते त, आब जायब कतय ? हमरा त और कोनो जगह......

करुणा क स्वर—[नेपथ्य सँ] अहाँ हमर एकटा बात राखब ?... अहाँ कहियो अइ गाम कें...... चिरागबस्ती कें छोड़ि कए नइ जायब; हम रही वा नइ रही ! अहाँ के चलि गेने चिरागबस्ती अन्हार भै जायत......

प्रवीण क स्वर—[नेपथ्य सँ] सत्ते त ! हम तोरा दय बिसरिये गेल रहियह ! आब हमरा कोनो चिन्ता नइ...... हमर बेटा हमरा मिलि गेल। लेकिन पहिने तों प्रतिज्ञा करह जे हमरा छोड़ि कै— अइ चिरागबस्ती के छोड़ि कै— तों कत्तहु नइ जैबह !

स्वर—मानव !

मानव—[चौंकैत] एँ ?

स्वर—की सोचि रहल छी ? घुरि जाउ ! मनुष्य मे नीक-बेजाय दुनू होइत अछि। इतिहास कहैत अछि— कोनो मनुष्य, स्थान वा वस्तु पूर्णतः अधलाह नहि भ' सकैछ।

मानव—मुदा हमर अपमान ? से कोना......

स्वर—जे आदर अहाँ कें भेंटल अछि, तकर मोल अहाँ क अपमान सँ बहुत बेसी छैक मानव बाबू।

करुणा क स्वर—[नेपथ्य सँ] आब मात्र अहाँ के लेल जीयै के मन कै रहल यै हमरा...... मात्र अहाँ के लेल...... मात्र अहाँ के लेल......

मानव—हँ ! हमरा घुरै पड़त, हम घुरब अहीं क लेल घुरब करुणा, अहीं क लेल। हम...... हम आबि रहल छी करुणा ! हम आबि रहल छी !!

[एतबा कहैत मानव पाछाँ घुरैत छथि एवं चलबाक चेष्टा करैत प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि। बहुत दूर-दूर मानव क चीत्कार ध्वनित-प्रतिध्वनित होइत रहैत छन्हि— 'करुणा ! करुणा !! हम आबि रहल छी !' धीरे-धीरे मंच क पर्दा खसैत अछि।]

—:o:—

लेखक परिचिति

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

भाषाविज्ञानक साम्मानिक स्वर्णपदकप्राप्त स्नातक,
कलकत्ता विश्वविद्यालयक १९७२ क ईशान स्कालर।
भाषाविज्ञानक स्नातकोत्तर अध्ययनहु मे स्वर्णपदकप्राप्त।
एखन दिल्ली विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान विभाग मे मैथिली क यू० जी० सी० फेलो।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ—
कवयो वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संकलन)
अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संकलन)
नायकक नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)
एक छल राजा (१९७३, मैथिली नाटक)
नाटकक लेल (१९७४, मैथिली नाटक)
प्रत्यावर्त्तन (१९७६, मैथिली नाटक)

स्थायी निवास—
ग्राम—रहुमौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिला—सहरसा।

वर्त्तमान पत्राचारक पता—
भाषाविज्ञान विभाग, आर्टस फैकल्टी एक्सटेन्शन,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७।

वैदेही

मैथिलीक सर्वोत्तम मासिक

प्रकाशनक ३९म वर्ष

२ रू० प्रति

वैदेही समिति
दरभंगा



वैदेही समिति द्वारा आयोजित

[अ]० भा० मैथिली साहित्य सम्मेलन [1963] मध्य बाबू सत्यनारायण सिंह [अध्यक्ष], पं० विनोदानन्द झा [मुख्य मंत्री] ओ महामहोपाध्यायड [डॉ]० उमेश मिश्र कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा [स्वागताध्यक्ष]

विहार सरकार द्वारा स्कूल, कॉलेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत

एक प्रति : २.००
वार्षिक : २०.००
आजीवन : २५१.००
संरक्षण : ५००.००

वैदेही

संस्थापक प्रेरणा : इन्द्र कान्त मिश्र (कुमार)

प्रो० श्री कृष्ण कान्त मिश्र द्वारा कुमार प्रिंटिंग प्रेस, दरभंगा सँ सम्पादित मुद्रित एवं प्रकाशित ।

अतिथि सम्पादक :
रमानन्द रेणु

मार्च-अप्रैल, १९८९

क्रम

प्राप्ति स्थान :
वैदेही समिति, दरभंगा
दूरभाष : २२३६

प्रियंवदा

(एकांकी)

▫ नचिकेता

पात्र परिचय

प्रियंवदा : २५ वर्षक सुशिक्षित सुन्दर कन्या; परिधेय साड़ी; प्रथम कल्लोलमे हाथमे दू-एकटा पुस्तक, पत्र-पत्रिका; सुदृश्य पर्स; सुसज्जिता। प्रथम, द्वितीय आ तृतीय कल्लोलमे मुद्रित सिल्क अथवा सिंथेटिक साड़ी-ब्लाउज; चतुर्थ कल्लोलमे गृहिणी जकाँ पोशाक — ललका पाढ़िक श्वेत-शुभ्र साड़ी आ सादा ब्लाउज; अंतिम कल्लोलमे करिया साड़ी-ब्लाउज आ केश खुजल रहतनि। प्रथम कल्लोलमे सुदीर्घ केशराशि बान्हल आ वेणी-बद्ध रहतनि। दोसर कल्लोलमे गृहबधू जकाँ खोंपा बनौने रहतीह।

शर्व : ३०क आसपास आयु; ने बेसी दुब्बर-पातर, ने मोट; परिवेश— प्रथम आ तेसर कल्लोलमे शर्ट-पैंट आ द्वितीय कल्लोरमे कुर्ता-पायजामा।

मंचसज्जा

पूर्वाङ्कित : १ (i) घरिक फर्नीचरक अतिरिक्त एकटा ऐश-ट्रे, कँकटा पत्र-पत्रिका आ पुस्तक (टेबुल पर); कँकटा हैंगर (जे कि दरबज्जाक फ्रेम पर लागल कांटो पर लटकाओल जा सकँछ)— टेबुलक दराजमे राखल अछि।

प्रथम कल्लोल

[मंचक सम्मुख-भागमे एकटा बॉक्स-टाइप टूल राखल अछि, जाहि पर शर्व अपन ठेहुन पर माथ धयने बैसल अछि। शर्व पर स्पॉट लाईट 'क' पड़ैत अछि। स्पॉट 'ख', 'ग' आ 'घ' क लऽग अन्हारे मे किछु लोक ठाढ़ रहैत अछि जे सभ आरम्भमे अदृश्य रहैत

अछि। 'ख'क लऽग एक-दोसरक बाँहि पर हाथ धयने ठाढ़ अछि एक पुरुष आ एक नारी। 'ग'क लऽग ठाढ़ अछि दू पुरुष आ दू नारी। 'घ'क नीचाँ, सीढ़ीक ऊपर, चारि गोटे (युवक) ठाढ़ अछि।]

पश्चस्वर : (नेपथ्य सँ) की सोचि रहल छह शर्व? अपन शून्यप्राय बाँझ जिनगी दऽ? मुदा एतेक दुःखी, एतेक चिन्तित होइ' जोकर भेने की छह तोहर तीस वर्षक जीवनमे? (शर्व माथ उठबैत अछि चिन्तित मुद्रामे; पश्च-स्वर प्रतिध्वनित होइछ) भेले की छह तोहर जिनगीमे? (शर्व उठि कऽ ठाढ़ होइत अछि) ... भेले की छह तोहर जिनगीमे?

शर्व ; (शून्य दिस देखैत) सत्ये; तेहन दुःखद घटना भेले की छैक हमर जीवनमे? साँचे पूछ, तँ किछुओ नहि। गनऽ लागी तँ सभ किछु भेटल छैक हमरा। देखियौक ने—

पश्चस्वर : रूप! (स्वर प्रतिध्वनित होइत अछि।)

शर्व : (आङुर पर गनैत रहैत अछि।)

पश्चस्वर : विद्या!

शर्व : अस्ति।

पश्चस्वर : बुद्धि!

शर्व : तीन।

पश्चस्वर : शक्ति!

शर्व : बेस।

पश्चस्वर : नौकरी!

शर्व : अवश्य।

पश्चस्वर : सुखी शिशुकाल!

शर्व : (मौन पड़ैत) अहो!

पश्चस्वर : यौवन!

शर्व : (हँसैत) हँ।

पश्चस्वर : मुदा, प्रियंवदा (प्रतिध्वनित होइत) प्रियंवदा... प्रियंवदा...

शर्व : (साश्चर्य-चकित) प्रियंवदा? (व्यथित स्वरें) प्रियंवदा नहि, हमरा आइ धरि नहि भेटल हुनक अभिज्ञान। नहि; वसंत एतेक बेर आयल आ मगनमने चलि गेल, मुदा हमर जिनगीमे कोनो प्रियंवदा नहि अयलीह। हमर पूंजीकृत विद्या, बुद्धि, रूप, यौवन, शक्ति, शैशव— किछुओ हमर आतप्त दिनमे, रातुक एसगरपनमे एक प्रियंवदाक अभाव कें दूर नहि कऽ सकल। (दीर्घश्वास त्यागि) प्रियंवदा! कतऽ छी अहाँ?

पश्चस्वर : (मंत्रोच्चारणक भंगिमामे पढ़ैत अछि शब्दसभ प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि। नहुँए-नहुँए शर्व पुन: टूल-बाँक्स पर बैसि जाइत अछि पहिलुका मुद्रामे। जा धरि श्लोक पठित हैत, स्पॉट 'क' हुनके पर रहैत छनि। अततोगत्वा नहुँए-नहुँए चारू स्पॉट बढ़ैत अछि, 'ख', 'ग' आ 'घ' कनेक मद्धिम आलोक दैत। प्रकाशित भऽ उठैत छथि पूर्ववर्णित नर-नारी—छओ गोटे एवं शर्व।)

अधर: किसलयराग: कोमल-विटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुमम् इव लोभनीयम्, यौवनम् अंगेषु संनद्धम्॥

तोहर ठोर पर किसलयक रक्तिमा छौ', कोमल वृक्षशाखा सन तोहर बाँहि; अंगमे तोहर यौवन छौ' सजात कुसुमे जकाँ लोभनीय।

चलापांगं दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्।
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचर:॥
करं व्याधुन्वत्या: पिबसि रतिसर्वस्वम् अधरम्।
वयं तत्त्वान्वेषात् मधुकर! हतास्त्वं खलु कृती॥

हमर स्वप्नक मधुकर, छौ तोरे जीवन सार्थक—जे चंचल अपांग दृष्टिदें देखैत कामभएँ कँपैत स्वप्नसुन्दरी कें छूबैत छें शत बेरि, हुनक कानक लगीच अनैत छें गुप्तमंत्रणा, हुनक उठैत हाथक बाधा कें नहि मानि पीबैत छें हुनक रतिसर्वस्व अधरक रस। हाय, वृथा हमर मानव-जीवन जे नहि पाओल प्रिय कें।

[मच परक सभ क्यो मद्धिम प्रकाश सँ परिदृश्य भऽ जाइत अछि। दूर सँ गाड़ी, बस आदिक कोलाहल सूनल जाइत अछि। कोलाहल नहुँए-नहुँए तीव्र होइत विलीन भऽ जाइत अछि। अकस्मात् अनति-उच्च स्वरें सीढ़ी पर ठाढ़ चारि गोटे कोनो बात पर हँसि दैत अछि। शर्व चौंकैत माथ उठा कऽ ओहि दिस देखैत अछि। ओसभ हाथ-पयर हिलबैत अपनामे बात करैत आ हँसैत रहैत अछि, मुदा कोनो शब्द स्पष्ट सूनल नहि जाइछ। तावत नारी-कंठें 'नहि नहि, एना नहि' एवं पुरुष-कंठस्वरमे 'प्लीइज अनु'—एतबा सूनि कऽ शर्व चौंकैत स्पॉट 'ख क नीचाँ अस्पष्ट आलाकमे ठाढ़ एकजोड़ स्त्री-पुरुष दिस देखैत अछि। ओहो सभ तत्पश्चात् बात करैत रहैत अछि मुदा बिना कानो शब्दक। अतमे स्पॉट ग' लग ठाढ़ चारि गोटे आपसमे 'चोर-पुलिस' खेलक गणना करैत देखल जाइत अछि। कने कालक लेल ओकरा सभमे सँ दू गोटेक गणना सूनल जाइत अछि—'Soldier, sailor, tinker, tailor, richman, poorman, beggarman, thie-eeeef' एक-एक बेरक गणनामे एक-एक गोटे चोर बनि रहल छल। द्वितीय बेरक गणनाक बाद ओकरा सभक अंगभंगिमे मात्र दृष्टिगोचर होइत छेक, गणना सूनल नहि जाइत अछि। कनेक कालक बाद शर्व ओहू दिस सँ मुँह घुरा कऽ सोझाँ मुँह कऽ लैत अछि।]

प्रियंवदा : [प्रविष्ट भऽ शर्वक लऽग सँ आगाँ कहैत अछि। प्रियंवदाक प्रवेशक सङ्गे मंग लाईटिंग जोन '२ मे मद्धिम प्रकाश पड़ैछ। स्पॉट 'क' मिझा जाइत अछि। प्रियंवदाक हाथमे दू-एकटा पोथीक सङ घयल एकटा नोट-बुक आ पेन। शर्वक लऽग सँ आगू बढ़ि गेलाक बाद सीढ़ीक लऽग ठाढ़ चारि गोटेक दिस सँ सीटीक आवाज होइत अछि। प्रियंवदा तँ सुनिते थम्हि जाइत अछि आ एम्हर-ओम्हर देखैत ओकरा नजरि शर्व पर पड़ैत छेक। ओ घूरि कऽ

शर्वक दिस अगुआ जाइत अछि। शर्व पहिलुके जकाँ माथ झुकौने बैसल रहैत अछि। शर्वा के नीक जकाँ निहुरैत ओकरा चारू दिस घुरैत प्रियंवदा पूछैत अछि।] अहाँ हमरा सँ किछु कहलहुँ की ?

शर्व : (चौंकैत, संकोचक स्वरमे) अ--अहाँ सँ ?

प्रियंबदा : हमरे सँ कहने हैब। (चारू दिस देखैत) एहि ठाम आन क्यो अरक्षणीया तँ देखबामे आबैत नहि अछि जनिका देखि कऽ क्यो मुँह सँ विचित्र ध्वनि बहार कऽ सकैत अछि।

शर्व : मुँह स विचित्र ध्वनि ? केहन ध्वनि ?

प्रियंवदा : वैह जे श्याम भाइजी राधा बहीन-दाइ लेल बजबैत छलाह।

शर्व : हिनका सभके तँ श्याम भाइजी आ

प्रियंवदा : नहि अहाँक सङ तँ बाते करब (तावत् दूर सँ पुन: ओ चारि गोटेमे सँ क्यो सीटी बजबैत अछि।) वैह, ओहने ध्वनि।

शर्व : (हँसि दैत अछि) हम तँ कतबो प्रयास करब तं हमरा सँ ओहन ध्वनि नहि बहार कयल हैत। नेनपने सँ तीन-चारिटा काज नहि सीखलहुँ, से एखनो तकर अफसोसे अछि : गुड्डी उड़ायब, साई-किल चढ़ब, गुल्ली-डंडा खेलब आ अहाँक भाइजी बला ई ध्वनि ··

प्रियंवदा : (आश्चर्य होइत) हमर भाइजी ?

शर्व : हँ, श्याम भाइजी !··· (दुनू हँसि दैत अछि) आ राधा बहीन दाइ (पुन: हँसऽ लगैत अछि)।

[तावत् ओहि चारू गोटे ओहि दिस सं अबैत हिनका दुनूक लऽग सँ जाइत सुना-सुना कऽ गबैत छथि 'Happy days are here again, 'Thums up, Thums up' चारू निष्क्रांत होइत अछि।]

लियऽ, अहाँ एकटा श्याम भाइजी दऽ कहैत छलहुँ, एम्हर तँ चारि-चारिटा छलाह।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा क्षमा करब, हम वृथा अहाँके टोकलहुँ ।

शर्व : हमरा तँ एहि लेल धन्यवाद देबाक चाही मोसकिल तँ ई अछि जे क्यो हमरा टोकिते नहि अछि ताहि पर अहाँ सन ···

प्रियंवदा : (टोकैत) प्रियंवदा हमर नाम ।

शर्व : ओऽऽ ! आ हमर नाम भेल शर्व ।

प्रियंवदा : शर्व ? तकर माने ?

शर्व : शर्व माने 'शिव' । जाहि सँ 'शर्वाणी' नाम बनैत अछि ।

प्रियंवदा : ओऽऽ, हँ । बंगाली सभमे ई नाम खूब चलैत अछि—'शर्वाणी' नहि तँ 'शिवानी' ।

शर्व : मुदा, एकटा बात कहू : अहाँ एतऽ की कऽ रहल छी ?

प्रियंवदा : ई बात तँ हमरे अहाँ सँ पुछबाक छल ।

शर्व : हम तँ सभ दिन एहि ठाम एकसरे बैसल खर्च करैत रहैत छी ।

प्रियंवदा : की ?

शर्व : यौवन, समय, जिनगी । आर की ? आ अहाँ ?

प्रियंवदा : हम तँ दिनभरिक काजक बाद क्लान्त भऽ एम्हर सँ शर्टकट करैत छी घुरबाक लेल ।

शर्व : मुदा हम तँ कहियो अहाँ कें देखलहुँ नहि ।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा देखने तँ हैब, मुदा अपरिचयक कारणें

शर्व : सौन्दर्यक परिचयक कोन काज ? देखने रहितहुँ तँ आंकल रहैत छवि मोनमे ।

प्रियंवदा : (हँसैत) ई पहिल बेर सूनि रहल छी जे हम सुन्नरि छी । हमर समटा भाइ-बहीन सत्ये सुन्नर अछि आ हम ओहि सभमे सँ ककरो बराबरी नहि कऽ सकैत छी ।

शर्व : अधर: किसलयराग: कोमल-विटपानुकारिणौ बाहू ।
कुसुमम् इव लोभनीयम् यौवनम् अंगेषु संनद्धम् ।।

प्रियंवदा : सुनैमे तँ नीक लागल मुदा संस्कृतक ज्ञान नहि अछि । तैं अर्थ नहि बुझलहुँ ।

शर्व : (मृदु हँसैत) अर्थ ?—तोहर ठोर पर किसलयक रक्तिमा छौ' कोमल वृक्षशाखा सन तोहर बाँहि; अंगमे तोहर यौवन छौ' संजात

— कुसुमे सन लोभनीय ।—यद्यपि कालिदास ई कहने छथि शकुंतला दऽ, तथापि ई एहि प्रियंवदो दऽ कहल जा सकैत अछि ।

[प्रियंवदा लजा जाइत अछि । शर्व द्विधाग्रस्त स्वरें कहैत अछि ।]
अहाँ केँ बेजाय तँ नहि लागल ? हम अपन सीमा तँ पार नहि कऽ गेलहुँ ?

प्रियंवदा : (आरक्तिम मुँहें) नहि-नहि, से किएक ? अपन प्रशंसा सूनब ककरा नहि नीक लागैत छैक ?

शर्व : आब तँ परिचय भेल ? देखब ! बिसरबाक क्षमते नहि रहल । (प्रियंवदा केँ निरुत्तर देखि) अच्छा, अहाँकेँ बहुत अबेर धरि रोकि रखने छी ।

प्रियंवदा : नहि-नहि, से नहि । तखन, घरक लोक तँ चिंतित हैबे करत । अच्छा, तँ हम चलैत छी । भेंट तँ बादम हैबे करत । नमस्कार । (हाथ जोड़ैत अछि ।)

शर्व : (हाथ जोड़ैत अछि बिनु किछु बजने । प्रियंवदाक प्रस्थानक सङे जोन १-क प्रकाश मिझा जाइत अछि । स्पॉट 'क' शर्वक शरीर पर पड़ैत अछि । शर्व पुनः बैसि जाइत अछि । पुनः ट्राम-बसक शब्द सुनबामे आबैत अछि । स्पॉट 'ग'क लऽग ठाढ़ चारि गोटे चलि जाइत अछि आ स्पॉट 'ग' मिझा जाइत अछि । दूर कतहु गिरजाक घंटा ध्वनि बजैत अछि । स्पॉट 'ख' तऽर ठाढ़ प्रेमी युगल सेहो चलि जाइत अछि । ओतहु अन्हार भऽ जाइत अछि । शर्व हाफी लैत बजैत अछि ।) राति भेल । चलह शर्व सिन्हा ! अपन खोंतामे घुरि चलह । आजुक जीवन, आजुक कल्लोल एतहि शेष भेलह ।

[शर्व उठि कऽ ठाढ़ होइत अछि । मंच अन्हार भऽ जाइत अछि ।]

द्वितीय कल्लोल

[मंच पूर्ववत् । स्पाट 'ख' क लऽग प्रेमी-युगल बैसल रहैत अछि । दू जोड़ नारी-पुरुष एहि बेर सीढ़ीक लऽग बैसल तथा क्यो ठाढ़ रहैत अछि ।

ओकरा सभ पर स्पॉट 'घ' क मद्धिम प्रकाश पढ़ैत छैक। शर्व अपन स्थान पर बैसल घड़ी देखि रहल अछि। दूरक गीरजामे आठ बजैत अछि। प्रियंवदा पहिबुके पोशाकमे प्रविष्ट होइत अछि। मात्र साड़ीटा दोसर पहिरने अछि।]

शर्व : कहू, आजुक नव खबरि की ?

प्रियंवदा : 'विक्स की गोली ली, खिचखिच दूर करो।' (गबैत अछि।)

शर्व : माने ?

प्रियंवदा : माने आइ जे मार्केटिंग सर्वे कयने छी, से मात्र 'विक्स वेपोरब' क लेल। एत्तेक विज्ञापन, एत्तेक प्रचार आ खर्चक लाभ कत्तेक भेल अछि हमरा सभक मार्केटिंग रिसर्च ब्यूरोके सँह देखबाक कॉनट्रैक्ट भेटल। आइसँ तँ हम सभ कैक गोटे जनता जनार्दनके की पसिन्न छैक, तकर पता लगावऽ लेल निकलल छलहुँ।

शर्व : तँ कतऽ-कतऽ गेल छलहुँ ?

प्रियंवदा : कतेको ठाम गेलहुँ, बेसी आबादी वला मोहल्ला सभमे।

शर्व : तँ एहू बेर कोनो सहृदय महाशय भेटल छलाह कि ·····?

प्रियंवदा : (हँसैत) एहि बेर एकटा घरमे एकटा बहुत वयोवृद्ध व्यक्ति किछु बेसिए उत्साह प्रकट कयने छलाह हमरा सभक विषयमे। बेचारेक अति-उत्साह पर पानि फेरऽ पड़ल।

शर्व : (कचकचाइत) जरद्गवः !

प्रियंवदा : तकर अर्थ ?

शर्व : ओ किछु नहि, संस्कृतमे गारि देलहुँ। अहाँ ई कहू जे ओ बुढ़वा कयलक की ?

प्रियंवदा : जाय दिअऽ ओ सभ बात ! ई कहू जे अहाँ दिन भरि की कयलहुँ ?

शर्व : प्रतीक्षा। कखन सँझुका पहर आओत आ हमर झोड़ा भरि देत आनंदक अमोल निधिसँ।

प्रियंवदा : बाप् रे ! अहाँ सङ तँ बातो करब कठिने बुझाइत अछि।

शर्व : किएक ? हमरा सन लोक नहि भेटैत अछि सर्वेमे !

प्रियंवदा : एखन धरि कोनो कविक दर्शन तँ सर्वे करैत काल नहि भेल।

शर्व : भरिसक कविलोकनि हमराटा छोड़ि कऽ—अहाँ सभके देखिते नुकायल रहैत अछि—अहाँ सभक मार्केटिंग ब्यूरो कवियो लोकनिक productक popularity-survey ने करऽ लागय एहि डरसँ।

प्रियंवदा : (हँसि दैत अछि) ओना interesting होइतैं, नहि ? (किछु मोन पड़ैत) अरे अहाँसँ तँ सर्वेक सवाल सभटा पूछल जा सकैत अछि। देखैत छी ? एत्तेक दिन बीति गेल अहाँसँ प्रथम परिचयक, मुदा एखन धरि हम अहाँके अपन प्रश्नावलीक experimentक खड़हा नहि बनौलहुँ अछि। थम्हू—(कहैत बेगमे सँ एकटा नोट-बुक आ पेनसिल बहार करैत अछि। एकटा चश्मा सेहो निकालि कऽ मास्टरनी जकाँ पहिरि लैत अछि) रेडी ?

शर्व : नहि, not ready; एक मिनट। (पॉकेट सँ रूमाल निकालि कऽ अपन आँखिक ऊपर पट्टी बान्हऽ लगैत अछि।)

प्रियंवदा : अरे,-अरे, ई की कऽ रहल छी ?

शर्व : (बिना जवाब देने पट्टी बाँन्हि कऽ) हँ, आब नीक भेल—पूछू !

प्रियंवदा : मुदा आँखि पर पट्टी किएक बान्हलहुँ ?

शर्व : अहाँके कोनो कविके खड़हा बनयबाक काजमे कनेक पागलपन तँ सहबेटा पड़त। मानि लिअऽ ई तेहने किछु थिक।

प्रियंवदा : नहि-नहि, कहू ने ?

शर्व : कैकटा कारण अछि। पहिल, जनता जनार्दन आन्हरे होइत अछि। बाजारमे उपलब्ध वस्तु सभटाक गुण-अवगुण, असल-नकल किछु नहि देखैत अछि, ने देखबाक क्षमता छैक। दोसर अहाँ सभ वस्तुक दाम बढ़ौने जाउ कतबो, ओ नहि देखत ओहि दिस, आ ने प्रतिवादे करत कथुक लेल।

प्रियंवदा : आ तेसर ?

शर्व : (हँसैत) अहाँ दिस देखब तँ उन्टा-सीधा जवाब देमऽ लागब। (मृदु

हँसैत, गाढ़ स्वरमे) अहाँक दिस देखैत छी तँ सभ किछु बिसरि जाइत छी।

प्रियंवदा : (लजबैत) बहुत भेल, आब ई नाटक बन्द करू आ पट्टी खोलि लिअऽ।

शर्व : उँहुँ! (माथ डोलबैत) आब तँ अहाँकेँ पूछैटा पड़त।

प्रियंवदा : थम्हू, तखन आर formal बनबैत छी। (बाहर जा कऽ एकटा केन चेयर मध्य भागक टूलक पाछाँ आ एकटा रीडिंग चेयर स्पॉट 'ग'क लऽग रखैत अछि—अपने 'ग'क लऽग बला चेयर पर बैसैत अछि आ शर्व केँ हाथ धरैत उठा कऽ 'क'क लऽग बला केन चेयर पर बैसबैत अछि। कंठ केँ खखारैत पूछैत अछि।) अहाँक नाम?

शर्व : शर्व सिन्हा।

प्रियंवदा : पिताक नाम?

शर्व : ताहि सँ कोन काज?

प्रियंवदा : आह, जे पूछैत छी तकर जवाब दिअऽ! बापक नाम?

शर्व : यौगन्धरायण।

प्रियंवदा : की? कोन नारायण?

शर्व : कोनो नारायण नहि, योगन्धरायण।

प्रियंवदा : माँक नाम?

शर्व : अनामा

प्रियंवदा : ई केहन नाम भेल? अवस्था?

शर्व : ईहो कोनो प्रश्न भेल? लिखि लिअऽ : आयु असीम।

प्रियंवदा : अच्छा, तँ ई कहू : विवाहित कि अविवाहित?

शर्व : विवाहित।

प्रियंवदा : पत्नीक नाम?

शर्व : प्रियम्।

प्रियंवदा : (चौंकैत लजबैत) संतानादि?

शर्व : अस्तित्व नहि। संभावना प्रचुर।

[प्रियंवदा लजबीत अछि ।]

अहाँ लजबीत किएक छी ?

प्रियंवदा : अहाँ कोना जानलहुँ जे हम…? तकर माने अहाँ सभटा देखि सूनि रहल छी पट्टीक अऽढ़ सँ ?

शर्व : अहाँक मुँहक सभटा रेखा स्मृतिमे छपल अछि, रेख बढ़ल बुझबाक लेल देखबाक प्रयोजन नहि ।

प्रियंवदा : (बातकेँ टारैत) अच्छा, तँ ऐखन ई कहू जे अहाँ कोन टूथपेस्ट व्यवहार करै' छी ?

शर्व : नीमक डारि ।

प्रियंवदा : अहाँ भोरुका चायमे कोन पत्तीक प्रयोग करै' छी—डबल डायमंड, रेड लेबल, ग्रीन लेबल, ताजमहल…?

शर्व : लस्सी ! हम भोर कऽ लस्सी पीबैत छी ।

प्रियंवदा : दुपहरकऽ कोन ब्रांडक इन्सटेन्ट कॉफी…

शर्व : दूध, दुपहरमे ।

प्रियंवदा : नह् अहाँ हँस्सी कऽ रहल छी ।

शर्व : लिखि लिअऽ - बड्ड जल्दी बुझलहुँ !

प्रियंवदा : अच्छा तँ दोसरे प्रश्न करै' छी । ई कहू—अहाँ पत्नी प्रियम् सँ कत्तेक प्रेम करै' छी ?

शर्व : दू कनमा ।

प्रियंवदा : आधा किएक ? आ बाकी दू ?

शर्व : पहिलुका पत्नी सँ ।

प्रियंवदा : (उद्विग्न स्वरेँ) पहिलुका पत्नी माने ?

शर्व : सरस्वती ! कविक प्रथम प्रेम ।

प्रियंवदा : (निश्चिन्त भऽ) हूँ ! अच्छा कहू तँ प्रियमक लेल अहाँ कोन-कोन sacrifice कऽ सकैत छी ?

शर्व : भोर लस्सीक स्थान पर चाय, दुपहरकऽ दूधक स्थान पर कॉफी…! नीमक डारि फेंकि कऽ टूथपेस्ट… ।

प्रियंवदा : (प्रसन्न भऽ) तखन तँ ई अवश्य कहि सकै' छी जे प्रियमक कहला पर जे परिवर्तन हैत, तदुपरांत कोन चाय, कॉफी वा टूथपेस्टक व्यवहार करब ?

शर्व : (हँसि दैत अछि आ आँखिक बँधन खोलि कऽ) अहाँ सत्ये जबरदस्त मल्समैन छी। बात केँ कतऽ सँ कतऽ लऽ अनलहुँ। सेह घूरि-फिरि चाय, कॉफी, टूथपेस्ट आ साबुन। (दुनू हँसऽ लागैत अछि।)

प्रियंवदा : मुदा अहाँ हमर प्रश्नक उत्तर नहि देलहुँ।

शर्व : हम सेह सभ वस्तुक व्यबहार करब जे अहाँ करैत छी। हमतँ ओहि सभसँ ईर्ष्या करैत छी।

प्रियंवदा : ईर्ष्या किएक ?

शर्व : जे हम करऽ चाहै' छी, मुदा कऽ नहि पबैत छी, ओ सभ तँ सेह करैत अछि।

प्रियंवदा : से कोना ?

शर्व : (गंभीर स्वरमे) जे साबुन अहाँक शरीरकेँ छुबैत अछि, जे पेस्ट अहाँक अधर केँ चूमैत अछि, हमहूँ तकरे दिस झुकब ई स्वाभाविक छैक। (कहि कऽ हँसऽ लगैत अछि।)

प्रियंवदा : (लजा कऽ) धत् ! अहाँ बड्ड निर्लज्ज छी।

शर्व : एहिमे निर्लज्जताक कोन बात भेल ?

प्रियंवदा : अच्छा, ई बाजू—एहि विषयमे अहाँक सिनियर मिस्टर दास की कहने छथि ?

शर्व : हमर सिनियर ? मिस्टर दास ?

प्रियंवदा : हँ, कालिदास ! (दुनू हँसि दैत अछि।)

शर्व : हँ, हुनक एकटा सुन्दर वर्णन छनि जे हमर बातक सङ मिलि जाइत अछि। दुष्यंत शकुन्तला केँ विरक्त करैत मधुकर दऽ कहने छथि :

> चलापांग दृष्ट: स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्
> रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णांतिकचर:।
> करं व्याधुन्यत्वा पिबसि रतिसर्वस्वम् अधरम्,
> वय तत्त्वान्वेषान् मधुकर ! हतास्त्वं खलु कृती ।।

प्रियंवदा : अर्थ बुझा दिअऽ।

शर्व : हाँ, हमर स्वप्नक मधुकर, छौ तोरे जीवन सार्थक— जे चंचल अपांग दृष्टिसँ देखैत कामभयें कँपैत स्वप्नसुन्दरी केँ छूबैत छेँ शत बेरि, हुनक कानक लऽग-पास भनभनाइत छेँ गुप्तमंत्रणा, हुनक उठैत हाथक बाधाकेँ नहि मानि पीबैत छेँ हुनक रतिसर्वस्व अधरक रस। हाय, वृथा हमर मानव-जीवन (जे नहि पाओल प्रियकेँ।)

प्रियंवदा : हाय ! कविक केहन अध:पतन ! कतऽ भनभनाइत मधुमाछीक प्रति ईर्ष्या आ कतऽ टूथपेस्ट, साबुन चायक पत्तीक प्रति ! [दुनू हँसऽ लागैत अछि। मंच अन्हार भऽ जाइत अछि।]

तृतीय कल्लोल

[मंच पर टूल आ टूटा कुर्सी पूर्ववत् राखल। लाइटिंग जोन १, २ आ ३ पर मद्धिम प्रकाश। स्पॉटलाइट 'ग' जरि रहल अछि। शर्व आ प्रियंवदा एकटा रीडिंग टेबुल केँ उठबैत 'सावधान', 'कने ऊँच करू', 'हँ, एम्हर', 'ओत्तऽ राखू' कहैत-कहैत प्रविष्ट होइत अछि। ओकरा दुनूक प्रवेशक सङे दुनूक ऊपर प्रकाश मद्धिमसँ तेज भऽ जाइत अछि। दुनूक सम्पूर्ण मंच पार भऽ कऽ स्पॉटलाइट 'ग'क लऽग राखल चेयरक एगो टेबुल धरैत अछि। शर्व दू-एक बेर टेबुल-चेयर पर बैसि कऽ सतोष बोध करैत अछि। प्रियंवदा कनेक कुर्सी पर जा कऽ बैसैत अछि।]

प्रियंवदा : टेबुल तँ आबि गेल, आब ?

शर्व : आब की ? ताहि पर बैसि कऽ सभ दिन भरि राति अहाँ केँ पत्र लिखब।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा ? एतेक दिन लिखलहुँ से लिखलहुँ। मुदा आब तँ···विवाहक बादो ?

शर्व : एहन बहुतरास बात मोनमे उमरि अबैत छैक जकर प्रकाश वाणीसँ नहि कयल जा सकैछ, लिपिमे चाही तँ निबद्ध कऽ सकैत छी। सेह सभ बात जे अहाँकेँ कहि नहि सकब, कवितामे गाँथि लेब।

प्रियंवदा : (हँसैत) गँथबाक लेल टेबुलक कोन प्रयोजन ?

शर्व : (मृदु हँसैत) विवाहक पश्चात् तँ जतऽ-जतऽ जा कऽ बैसब नहि, बैसि नहि सकब । तखन टेबुलेक दुनू दिस हाथमे हाथ धयने बैसल हम दुनू……

प्रियंवदा : (हँसि कऽ) हाथमे हाथ धऽ बैसबाक लेल टेबुलक कोन प्रयोजन ? ओ तँ जेना पार्कमे बैसैत छलहुँ तहिना घरक सीढ़ी पर वा माटिएँ पर देवालमे ओठङि कऽ बैसि सकैत छी ।

शर्व : हम तँ पहिने कहलहुँ, नेनपन सँ हमरा तीनटा वस्तुक लेल बड्ड आकांक्षा छल । एक, रीडिंग टेबुल : शैशवक स्मृति सँ जड़ित । बाबूजी सभखन राति कऽ टेबुल-चेयर पर बैसि कऽ लिखैत रहथि बहुत किछु । ओ कहियो सार्थक कथाकार नहि बनि सकलाह प्रयासक अछैतो, मुदा हमरा एखने ओ प्रयास, ओहि अथक परिश्रम दऽ मोन अछि । राति कऽ निन्न कखनो मुहूर्त्तक लेल टूटैत छल तँ हुनका ओत्तहि देखैत छलहुँ । दिन भरिमे तँ हुनका देखिते नहि छलहुँ । छोट-छोट भाइ-बहीनक शिक्षा, विवाह आ पालनेक लेल खटैत-खटैत हुनक दिन बीति जाइत छलनि, हमरा लेल वा हमर निर्वाहिक मायक लेल ओ समये नहि दऽ पबैत छलाह । आ राति कऽ साहित्य-सर्जनक भूत सवार होइत छल हुनका पर ।

प्रियंवदा : दोसर ?

शर्व : आर एकटा भेल स्टैंडिग लैम्प : हमरा सभक बिछौनाक लऽग राखल रहैत छल । आ हमर बाबूजीक कथाक पहिल पाठिका अत्यंत आग्रहक सङ तकर आलोकमे अक्षर सभ परसँ सोत्साह दड़-बड़ मारैत छलीह, हमर माय । हुनका दृढ़ विश्वास छलनि जे हुनक पतिकेँ एक दिन एकटा महान साहित्यकारक रूपमे स्वीकृति भेटतनि । कखनो जखन हमरा निन्न टूटि जाइत अछि, हम ओहन स्टैंडिग लैम्प तकैत छी ।

प्रियंवदा : आ तेसर ?

शर्व : एकटा बड़का हाथबला ईजि चेयर : हमर दादाजी ताहि पर दिन भरि बैसल रहैत छलाह। हुनका चलै-फिरै'मे मोसकिल होइत छलनि। विश्वक लेल उत्सर्ग कयने छलथिन एकटा पयर, यौवनेमे। तें !

प्रियंवदा : विश्वक लेल ?

शर्व : (हँसैत) हँ, माने द्वितीय विश्वयुद्धक लेल ई हाल भेल छलनि। (थम्हैत) ओ हमरा अपन ईजि चेयरक हाथ पर बैसा कऽ दैत्य-दानव, राजकन्या-राजकुमार, राक्षस आ यक्ष, आकाशक देवता आ पातालक नागराज— ओहि सभक कथा सुनबैत छलाह। आ हम त्रिभोर भऽ दादाजीक मुँह सँ ओहि आश्चर्य दुनियाक खिस्सा सुनैत छलियनि।

[किछुकाल दुनू चुप रहैत अछि।]

हँम पितामही कें कहियो नहि देखलियनि, मुदा ओ एहि अभाव कें बूझऽ नहि देलथिन। (चुप रहैत अछि।) कतऽ गेल ओ दिन आ कतऽ हेरा गेल ओ सभ राति ? पता नहि।

प्रियंवदा : ओ सभ दिन वा राति जँ नहि बीति जैतैक तँ हमरा अहाँ कोना भेंटितहुँ ? ओ सुखक समय ओ सभ आनंदक दिन-राति बीति गेल ठीके, मुदा स्मृति सँ तँ अलोपित नहि भेल !

शर्व : ठीके कहलहुँ ! शैशव जँ स्मृतिमे बदलि नहि जाइत तँ प्रियवदा कोना हमर शर्वाणी बनितथि ?

[प्रियंवदा प्रश्नयक हँसी हँसैत अछि। शर्व उठि कऽ प्रियंवदाक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। प्रियवदा सेहो ठाढ़ भऽ कऽ हाथ बढ़ा दैत अछि। दुनू पर स्पॉट-लाईट 'क' पड़ैत छैक। एक-एक कऽ कऽ जोनल लाईट आ स्पॉट 'ग' मिझा जाइत अछि। दूर सँ विवाहक मंत्रोच्चारण तथा संस्कार-गीतक स्वर गूँजि रहल अछि। मंच अन्हार भऽ जाइत अछि।]

चतुर्थ कल्लोल

[मंच अन्हारमे डूबल, मात्र स्पॉट 'ख' क लऽग ठाढ़ एकटा स्टैंडिंग लैम्प जरि रहल अछि। शर्व आ प्रियंवदा तकर नीचाँ माटि पर एक-दोसराक दिस पाछाँ घुरने बैसल किछु पढ़ि रहल अछि। स्टैंडिंग लैम्पक प्रकाशमे अस्पष्ट रूप सँ रीडिंग टेबुल आ चेयर, टूल आ केन चेयर एवं पाछाँक प्लैटफार्म पर एकटा फोल्डिंग खाट दृष्टिगत होइत अछि। शर्व कुर्ता-पयजामा एवं प्रियंवदा गृहवधू जकाँ पहिरने-ओढ़ने अछि।]

शर्व : देखू तँ प्रियम् ई केहन लगैत अछि सूनै' मे ?—

प्रियंवदा : एक मिनट। एखन एकटा बहुत interesting कविता पढ़ि रहल छी। कनेक बादमे सूनब, प्लीज !

शर्व : कोन कविता एत्ते' interesting लागल ? कने हमहूँ तँ सूनी !

प्रियंवदा : कनिएटा सुना रहल छी—ओना तँ अहाँ पढ़ने हैब।

ऋतुमती, प्रत्येक रातिकऽ
फुलगर भऽ उठू ओछाओन पर
गर्भ मढ़ल अछि कविता सँ
प्रखर पहरा,
मलिछाह मलीदा ओढ़ि
कखन आबि जाथि महाराज,
आजीवन प्रतीक्षा तनिक।"

सुन्दर अछि। ने ?

शर्व : हँ, मुदा हम जे कविता एखने लिखलहुँ, तकर तुलनामे ई कैक पंक्ति तत्तेक नीक नहि लागल।

प्रियंवदा : तँ पढ़ू अहाँक कविता—शीर्षक की देलहुँ ?

शर्व : 'दमयन्तीक उपदेश'। सुनू—

"तीरक लऽग-पास पथरायल पड़ल रहैत अछि लोक—
निरंग अशक्त लोक ! घास-पात धैने रहैत अछि तकरा,
सेमारमे लपटल तक्षक बसातमे डोलि रहल अछि,
झोंझमे झोंकाह आगि सुनगि रहल अछि,

दमयन्ती, दमयन्ती–सुनसान जंगल सिहरि उठैत अछि,
फूलपातक मध्य दऽ टूअर सुरुज टुघड़ैत अछि
अत्यन्त सावधान भऽ—आलोक चीरैत अछि हिरण्यक पेट।
गाछ सभ उपदेश दैत अछि—
एम्हर जाउ, ओम्हर घुरु, ओहि दिस देखू—
दमयन्ती, दमयन्ती, जंगल जुनि पार होउ ?
अन्हार मे ईशान दिस देहक दलाल अछि प्रतीक्षा करैत
दमयन्ती, समय जुनि पारहोउ
नैऋत कोन मे नुकामल छथि नलदेव।
दमयन्ती, मनुक्खक विश्वास जुनि करू
ओ तँ अहाँ केँ लेत बान्हि कथा, कविता आर अकबाह सँ,
अहाँ जंगल जुनि पार होउ,
नहि तँ सभटा गाछ अहाँक शोकेँ आत्महत्या करत।"

[चुप्प रहि कऽ]

कहू, केहन लागल ?

प्रियंवदा : (अभिभूत भऽ) सुन्दर।

शर्व : मात्र 'सुन्दर' ?

प्रियंवदा : नहि, वहुत सुन्दर। मुदा आइ धरि एहि एक वर्षक बिवाहित जीवनमे अहाँक कविता मे विषादे पाओल। से किएक ?

[शर्व निरूत्तर रहैत अछि।]

नल जे कि अपनोसँ बेसी दमयन्ती सँ प्रेम करैत छल अकस्मात् दमयन्ती केँ मात्र वृक्ष समक भरोसे सुनसान भयानक जंगलमे छोड़ि दैत अछि। जंगलक गाछ-बिरीछ दमयन्ती केँ मनुष्य केँ अविश्वास करब सिखबैत अछि। भयानक जंगल सँ बाट ताकि निकालि कऽ दमयन्ती बाहर चलियो जाय तँ ओतऽ देहक दलाल प्रतीक्षा करैत अछि। एना किएक ?

शर्व : जीवनकेँ हम जेहन पौलहुँ, जेहन देखलहुँ–तहिना कविता मे लिखैत छी।

प्रियंवदा : एहन कोन विषाद अहाँक जिनगीकेँ बिषाक्त कयने अछि जे कविता मे यौवन, उच्छ्वास, आनंद, आलोक आर जीवन रहिते नहि अछि। मात्र जरा निरानंद, अविश्वासक, अंधकार आ मृत्यु भये किएक? शर्व केँ (निरुत्तर देखि) बाजू ने? एहन की देखलहुँ जीवन मे? (शर्व तैयो चुप रहैत अछि से देखि कऽ) बाबूजी, माँ वा दादाजी तँ अहाँक नेनपने मे स्वर्गवासी भऽ गेल छलाह। ताहि लेल जे कष्ट करऽ पड़ल तकर दुःख,तकर अपमान तँ हम बुझैत छी। मुदा ताहि लेल गंभीर विषादेक कविता लिखबा मे हमरा विश्वास नहि होइत अछि।

शर्व : जे किछु हम देखलहुँ--सहलहुँ आ कयलहुँ, से अहाँ सोचि नहि सकैत छी।

प्रियंवदा : सैह तँ हम जानऽ चाहैत छी—(प्रश्नाकुल-दृष्टिएँ देखैत)

शर्व : कहलहुँ तँ? (धीरे)

प्रियंवदा : कहाँ किछु कहलहुँ?

शर्व : (ठाढ़ होइत) बस्,ओतबे कहि सकैत छी।

[मंच अकस्मात् सम्पूर्ण आलोकित भऽ उठैत अछि।]

प्रियंवदा : (उठि कऽ) से किएक!

शर्व : प्लीज प्रियम्, हमरा आर किछु नहि पूछू? (शर्वक मुख पर अस्वाभाविकताक छाप दृष्ट होइछ।) प्लीज! (प्रियंवदाक प्रश्न आ असंतोष केँ बुझैत) एहन किछु बात होइत छैक जाहि दऽ पूछल नहि जाइत छैक। नहिएँ पूछल जाय तँ मंगल।

प्रियंवदा : (रीडिंग टेबुल लग जा कऽ टेबुल पर झुकि कऽ ठाढ़ होइत अछि चिंतित मुहेँ स्वगतोक्ति जकाँ) मोनक एहन कोनो दरबज्जा अछि जाहि परक ताला समक लेल नहि खुजैत छक। (शर्व केँ निरुत्तर देखि) मुदा हमरो लेल नहि? (शर्व तैयो चुप रहैत अछि।)शर्व!

शर्व : (व्यथित स्वरेँ, दर्शकक दिस देखैत प्रियंवदाक दिससँ मुँह घुरा कऽ) हेँ प्रियम्। (प्रियंवदाक टग लग अनुआ)

प्रियंवदा : हमरा आ अहाँक बीचमे ई कोन देबाल अछि, शर्व ! हम दुनू मिलि कऽ एकरा ढाहि नहि सकैत छी ?

शर्व : (दुनू आँखि कें झाँपैत) नहि प्रियम् ।

[प्रियंवदा अवाक् विस्मय भरल आँखिएँ देखैत रहि जाइत अछि । नहुएँ-नहुएँ एक-एक कऽ कऽ मंचक जोनल लाईट मिझा जाइत अछि । मात्र स्पॉट 'ख' शर्व पर आ स्पॉट 'क' प्रियंवदा पर पड़ैत छैक ।]

प्रियंवदा : शर्व !

[शर्व निःशब्द भऽ कानैत अछि दुनू हाथें मुँह झाँपने । मंच अन्हार भऽ जाइत अछि ।]

पंचम कल्लोल

[मंच पूर्ववत् । शर्व शर्ट-पैंट पहिरने आ प्रियंवदा बाहरक पोशाकमे, केश खुजल । शर्व कें विकृत आ क्लान्त देखा रहल अछि । शर्व सीढ़ी पर बैसल अछि । ओकरा पर स्पॉट 'ख' पड़ैत छैक । प्रियवदा प्रविष्ट होइत अछि । सङे जोन १ प्रकाशित भऽ उठैत अछि । शर्व आ प्रियंवदाक मध्य अन्हार रहैत अछि ।]

प्रियंवदा : शर्व ! (चुप्प देखि) प्लीज ! हमरा क्षमा कऽ दियऽ ! काल्हि राति हमर भैया आ' भौजीक सोझाँ अहाँ कें हम······ (थम्हैत) विश्वास करू, हम जानि-बुझि कऽ किछु नहि कयलहुँ ! (शर्वक मुहैठमे कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छैक ।) आ ताहि लेल अहाँ आइ दिन भरि ने खयलहुँ, ने पीलहुँ, ने ऑफिस गेलहुँ ! (शर्वक दिस आगाँ बढ़ैत अछि । लाईटिंग जोन २ सेहो आलोकित भऽ उठैछ । शर्वक लग आ कऽ) एत्तेक दूर धरि जे अहाँ हमरा सँ बाजबो नहि कयलहुँ । (झुकि कऽ शर्वक हाथ धरैत अछि, मुदा शर्व हाथ बढ़यबाक, धरबाक वा छोड़ि देबाक कोनो प्रयास नहि करैत अछि ।) नित्तहु

भोर कऽ निन्न सँ उठबाक बाद अहाँ हमरा दिस देखि कऽ मृदु हँसै' छी। आइ ताहू सँ हम वंचित रहि गेलहुँ। किएक? कहू ने! (शर्व तैयो चुप रहैत अछि।) काल्हि राति जे पहिरना पहिरने छलहुँ, सैह पहिरि कऽ सूति गेलहुँ आ आइ दिन भरि सैह पहिरने छी! हमरा पर तमसा कऽ अपने पर किएक अत्याचार कऽ रहल छी? (शर्व तैयो किछु नहि बजैत अछि। प्रियंवदा दोसर हाथ सँ शर्वक मुँह अपना दिस घुरबैत अछि। शर्व शून्य-दृष्टिएँ देखैत अछि) कहू, की कयने अहाँक तामस ठंढा हैत? कोना हम अपन अपराधक प्रायश्चित कऽ सकैत छी? (शर्व निरुत्तर रहैत अछि) कहलहुँ तँ अन्याय कयने छी हम। (शर्व कें छोड़ि मंचक सम्मुख-भागमे आबैत अछि। शर्व ओहिना एक्के दिस देखैत बैसल रहैत अछि। पुनः शर्व पर स्पॉट 'घ' आ प्रियंवदा पर स्पॉट 'ख' पड़ैत अछि) हमरा की भऽ गेल छल से हम नहि कहि सकैत छी। जखने पता चलल जे हमरा सँ पहिनो आर एक गोटे अहाँक जिनगीमे आयल छलीह, तखन अपना कें सम्हारि नहि पौलहुँ। कन्नारोहट कऽ कऽ एकटा scene ए create कैलहुँ। पता नहि भैया आ भौजीओ हमरा दऽ की सोचलथिन? पहिल तँ ई जे हमरा दुनूक विवाहित जीवनमे कोनो सुख-शान्ति नहि अछि। हमहीं जानै' छी ई कत्तेक फूसि धारणा अछि! मुदा ओ सभ तँ हमरा दुनूक जीवनक प्रत्येक मुहूर्त कें देखैत नहि छथि। तें हुनका सभ कें कोना खबरि रहतनि केहन सुखस्मृति सँ भरल अछि हमरा सभक जीवन? दोसर बात ओ सभ ई अवश्य सोचने हैताह जे हम अहाँ सँ प्रेम-विवाह कयलहुँ, जाहि लेल ओ सभ कहियो मना नहि कयलनि। मुदा प्रेम-पर्व चलल एत्तेक दिन धरि आ तैयो हमरा ई नहि पता लागल जे अहाँक विवाह पहिने भऽ गेल छल आ' ओहि विवाह सँ संतानादि सेहो भेल छल? ई हुनका सभ लेखें आश्चर्य-जनक लागल हेतनि। यैह सभ बात हमरा पागल बना देने छल।

आ' तें हम—(कहैत शर्वक दिस घुरैत अछि। ओ तैयो बिनु प्रतिक्रियाक बैसल रहैत अछि भोथ दृष्टिएँ प्रियंवदा दिस देखैत। प्रियंवदा चुप्प भऽ टेबुल-चेयरक लग जाइत अछि; सङे-सङ स्पॉट 'ग' जरि उठैत अछि। ओतऽ सँ स्टैंडिंग लैम्पक लग जाकऽ स्वीच दबा कऽ लैम्प कें ऑफ-ऑन करैत रहैत अछि, कैक बेर तीन-चारि बेर जरा-मिझा कऽ मिझायल छोड़ि दैत अछि। सङे-सङ स्पॉट 'ख' जरि उठैत अछि स्टैंडिंग लैम्पक ऊपर। तत्पश्चत् पाछाँ प्लैटफार्म पर चढ़ि कऽ फोल्डिंग खाट पर बैसैत अछि। जैनल लाईट 'इ' जरि उठैत अछि मद्धिम प्रकाश दैत। एकटा रोटेटिंग डिस्क लैम्प सँ सम्पूर्ण मंच पर सँ आलोक आ अन्हारक देव बहि जाइत अछि। नेपथ्य सँ pre-recorded चारिटा स्वर सुनना जाइछ—शर्व, प्रियंवदा, भैया आ भौजीक—)।

शर्व : अहाँ कें हम अपन जिनगीक सभटा पन्ना किएक पढ़ऽ देब ? (प्रतिध्वनिमे 'किएक ?' 'किएक' ? 'किएक' ?) एहन बहुत घाव रहैत अछि मनुक्खक जीवनमे जे दोसर ज़ीवनमे तकरा नहि लाबी तँ मंगले…

भौजी : तोरो किएक जिद्द चढ़ल छौ' प्रियम् ? सभक सभटा बात जानैटा पड़तौक ?

प्रियंवदा : (क्रुद्ध स्वरें) सभक सभटा बात ? 'सभ' के ? हम तँ सभकें ई प्रश्न करैत नहि जा रहल छी ? हम तँ अपन प्रेमी, अपन पति सँ ई प्रश्न पूछि रहल छी। तोंही एत्तेक जिद्द किएक' करैत छह ?

भैया : (बुझैबाक प्रयास करैत) मुदा प्रियम्, एत्तेक दिन भऽ गेलाक बादो जखन शर्व तोरा किछु नहि कहलथुन तकर अर्थ ई जे ओ नहि कहऽ चाहैत छथि।

शर्व : (बातक सङे सङ चलैत प्लेट, छूरी, चम्मच पटकैक शब्द, कुर्सी घिसिआबैक शब्द सेहो—जेना शर्व तमसा कऽ भोजन पर सँ उठि रहल अछि) हँ-हँ, हम नहि कहऽ चाहैत छी ? की कऽ लेब अहाँ सभ ? हकरा फाँसी पर चढ़ा देब ? तँ दियऽ !

प्रियंवदा : (चीत्कार करैत) थम्हू ! अहाँ के लाज नहि होइत अछि--घरमे बजा कऽ भैया-भौजीक अपमान कऽ रहल छी ?

शर्व : (ततोधिक उत्तेजित भऽ) अहाँ चुप रहू ! हम सभटा बुझैत छी, अहाँ लोकनि मिलि कऽ हमरा विरुद्ध षड्यंत्र कऽ रहल छी। हमर अतीत केँ कब्र सँ खोधि कऽ बहार करबाक चेष्टा कऽ रहल छी। एँ ····? (हँसैत) हमरा की बुड़िबक बुझै' छी।

भैया : मुदा शर्व, हमरा सभकेँ अहाँ गलत बुझि रहल छी।

शर्व : आब हम सभकेँ चीन्हि गेलहुँ, ककरो विश्वास नहि !

प्रियंवदा : हे ईश्वर ! अहाँकेँ हमरा पर विश्वासो आब नहि रहल ?

शर्व : विश्वास ? उँ ? (जोर जोर सँ अस्वाभाविक स्वरेँ हँसैत) किएक करू विश्वास अहाँक ? आब हम ककरो विश्वास नहि करै' छी (प्रतिध्वनित होइत अछि 'ककरो नहि', 'ककरो नहि')।

प्रियंवदा : जहन्नुममे जाउ अहाँ आ धहाँक अतीत ! जखन विश्वासे नहि रहल तँ रहल की ? हमरा अहाँ सँ कोनो सम्बन्ध नहि ··।

शर्व : (अट्टहास करैत) कोनो सम्बन्धे नहि रहल ? ऐँ ? (हँसैत) अहाँ तँ देखैत छी दक्षा सँ आर ऊँच दर्जाक शैतान छी।··· विश्वास··· सम्बन्ध ··सभ समाप्त ?

प्रियंवदा : के दक्षा ? के लागैत अछि ? ओ अहाँक ?

शर्व : (अट्टहास) 'के लागैत अछि ?' नहि 'के लागैत छल ?' कहू ! ओ अहीं सन 'प्रियम् वदेत्' छल, मुदा दू-दूटा संतानक जन्म देलाक बादो छल कामताड़ित शिकारी कुकूर जकाँ; कतेकोक जिनगी नष्ट कयलक ···ने राखलक विश्वास, आ ने सम्बन्ध ! तेँ एक दिन हम ओकर हाथ-पयर बान्हि कऽ ओकर कंठ दबा कऽ ·· ··

प्रियंवदा : (डरेँ चीत्कार करैत, स्पष्ट प्रतीत हैत जे शर्व हुनक कंठ दबा रहल छल) आ:, आ-आ, क्-की कऽ रहल छी ? छ् छोड़ू···(शर्व पागल जकाँ हँसैत रहैत अछि। भैया आ भौजीओ चीत्कार करैत छथि प्रियंवदा केँ छोड़ैबाक लेल।)

शर्व : (हुनका सभक चीत्कारक सङ सङ पागल जकाँ चीत्कार करैत हँसैत अछि) एहि बेर हम नहि छोड़ब ! खतमे कऽ देब अविश्वासक जड़ि कें·· खतमे कऽ देब···(हँसैत-हँसैत कानऽ लगैत अछि) ई-ई की कऽ रहल छी हम ? ई हम···(पागल जकाँ भोकासी पाड़ि कऽ कानऽ लगैत अछि ।)

[आलोकक देव बंद भऽ जाइत अछि। मंच पर प्रकाश पूर्ववत् । शर्व सीढ़ी पर आ प्रियंवदा पहिलुके जकाँ खाट पर बैसल रहैत अछि]

प्रियंवदा : शर्व ? अपन प्रियमक दिस नहि देखब ? कल्हुका ओहि एक मुहूर्त्तक झगड़ा आ विच्युतिए असल भेल, आ हमरा दुनूक एत्तेक दिनक प्रेम किछु नहि ?

[शर्व चुप रहैत अछि । प्रियंवदा शर्वक लग जा कऽ सीढ़ी पर बैसैत अछि । कोमल स्वरें शर्वक नाम चिकरि शर्वक हाथ अपन हाथमे लैत अछि । अत्यन्त ममत्वक दृष्टिएँ शर्वक दिस देखैत अछि एवं ओकर केश पर हाथ फेरैत रहैत अछि । ओकरा दुनू पर स्पॉट 'घ' तीव्र रूपें पड़ैत छैक । बाँकी सम्पूर्ण मंचमे अन्हार । कनेक कालमे मंच पर अस्पष्ट प्रकाशमे दू-तीन गोटे आबैत अछि एवं एक-एक कऽ स्टैंडिंग लैम्प, केन चेयर, रीडिंग चेयर, रीडिंग टेबुल, आ फोल्डिंग कॉट लऽ जाइत अछि । प्रकाश मात्र टूल पर आ सीढ़ी पर बैसल शर्व आ प्रियंवदा पर पड़ैत अछि । प्रियंवदा क्रन्दनक स्वरमे पुछैत अछि]

शर्व, हमर शर्व ? आब की कहियो अहाँ अपन प्रियम् सँ बात नहि करब ? नलदेवे जकाँ अपन दमयन्ती कें छोड़ि देब एसगरे पथक खोंज करब ? आब कहियो कि कविता नहि सुनायब अपन ? (शर्व कें निस्तेज निश्चुप देखि) हमरा नहि विश्वास होइत अछि अहाँ दऽ ओसभ जे किछु कहलनि । अहाँ कोना दक्षाक हत्या कऽ सकैत छी ? ई कोना भऽ सकैछ जे अहाँ अपन प्रेम-प्रीति-ममता सँ जे दुनू संतानक जन्म देने छलिऐक ? ओहि दुनू कें निर्मम रूपें एहि दुनिया सँ हँटा

देलिऐक ? नहि-नहि, अहाँ एत्तेक निष्ठुर नहि भऽ सकै छी। ओसभ जे खुशी कहथु, हम नहि मानैत छी।

[एतबामे एकटा ऐम्बुलेन्सक साईरेन ध्वनि सुननामे अबैत अछि -- दूर सँ बल आबि जाइत अछि। प्रियंवदाक मुँह पर शंका आ आतंकक चेन्ह स्पष्ट प्रतीत होइत अछि। ओ बुझैत अछि जे मानसिक अस्पताल सँ शर्वा केँ लेबाक लेल ऐम्बुलेन्स आयल अछि। मुदा वास्तवमे से मानबाक लेल तैयार नहि छल। दू गोट डाक्टर हाउस-कोट पहिरने मंच पर प्रविष्ट होइत अछि। मुदा ताहि सँ पहिने गाड़ी दरबज्जा खोलबाक आ बन्द हेबाक शब्द एवं दू व्यक्ति चलि कऽ अयबाक पदध्वनि पश्चध्वनिक रूपमे सुनबामे आवैत अछि। प्रत्येक शब्दमे प्रियंवदाक आतंक बढ़ैत रहैत अछि। शर्वा केँ मानसिक अस्पतालक डाक्टर लग जयबाक प्रयास करैत अछि। ई देखि कऽ प्रियंवदा अपना केँ सम्हारि नहि पबैत अछि आ चीकरि उठैत अछि।]

न-अ-अ-अ-हि ! कतऽ लऽ जा रहल छी अहाँ लोकनि शर्वा केँ ? नहि, नहि --ओ पागल नहि छथि। ई फूसि अछि जे ओ कहियो पागल रहथि। ई सरासर झूठ बात केँ ओ ककरो हत्या कयने छथि। नहि, नहि, हमर शर्वा एहन नहि भऽ सकै छथि। नहि, छोड़ि दियऽ अहाँ लोकनि हुनका !

[ओ सभ किछु नहि कहैत अछि। प्रियंवदा सँ शर्वा केँ छोड़ा कऽ दुनू दिस सँ उठा कऽ चलऽ लागैत अछि। प्रियंवदा कानैत बाधा दैत आगाँ बढ़ैत अछि दू डेग आ थम्हि जाइत अछि। नेपथ्य सँ कविता-पाठक स्वर भासल अबैत अछि।

"तीरक लऽग-पास...दमयन्ती, दमयन्ती जंगल जुनि पार होउ !"

[अन्तिम पंक्ति प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि। प्रियंवदा शून्य दृष्टिएँ देखैत रहैत अछि। मंच अन्हार भऽ जाइत अछि।]

राजकथा

—श्री नचिकेता

हुनकर कहानी मे राजा साहेब रहबे करताह, रानी त रहतीह अवश्ये। मंत्री क बिना राज्य नहि चलि सकैत अछि, तैं मंत्री कें ओ एकदम बाद नहि द' सकैत छथि। राजा पथ पर पैर धरताह नहि, तैं चाही रथ आ' सगहि सारथी सेहो। राजा नारी कें उलंग देखब बड़ पसिन्न करैत छथि, हुनक राजरक्त नारीक वस्त्र उतारबाक देरी सहबा मे अभ्यस्त नहि छैक, किन्तु तकर अर्थ ई नहि जे अनकर आइना मे ओ अपना कें बिवस्त्र देखब हुनक अभ्यास क अन्तर्गत अछि। तैं वस्त्र चाही आ' चाही तकर निर्माता। अंगूरक रस आ वेदाना मे नरम कमर छुब' मे हुनका आपत्ति नहि, अतएव राजा क सुस्वास्थ्य क लेल चाही पाचक आ' आ चिकित्सक दुनू। ओ आत्मदार कें छोड़ा कए पर नारीक गभपूरण क पक्ष मे छथि; तैं किछु और नारीचरित्रक उपस्थितिओ आवश्यक अछि।

आब कहू, एतेक चरित्र ल' कए ओ कोना कऽ कहानी कऽ सम्हारि सकताह? यद्यपि अहांसब ई नहि कहि सकैत छी जे ओ ताहि लेल परिश्रम कम करैत छथि। रोज हुनका एकटा विशाल कूड़ा क ढेरि सँ वर्णना, उपमा आ' वाक्य खोज' पड़ैत अछि, सेहो प्रात क गुंठन उठान सँ पूर्व—जौं क्यो देखि लियै, ताहि डरैं। और, हमर ज्ञात मे आन क्यो कथाकार एतेक कष्ट नहि करैत छथि एकटा कहानी लिख' लेळ! मुदा, एतबा कैयो कऽ हुनका बुत्ते ओ 'राजकथा' कें सम्हारि नहि भेल।

तखन कथाकार क ई अवस्था देखि आत्म-बन्धु सब सलाह देलनि जे जौं राजा कें जीवित रखैत छथि त चरित्र सभ क एतेक भीड़ लागि जायत जे कहानी क अन्त नहि होयत। अतएव यद्यपि कागतपर अपन कलमक तीक्ष्ण दर्शन सँ ओ राजा कें जीवित राखि सकैत छथि, तथापि समालोचकक निष्करुण लेखाघात सँ कहानी क अपमृत्यु होयत। तैं सभक बात मानि ओ राजा कें मारिये देलाह कनेके दूर जा कए।

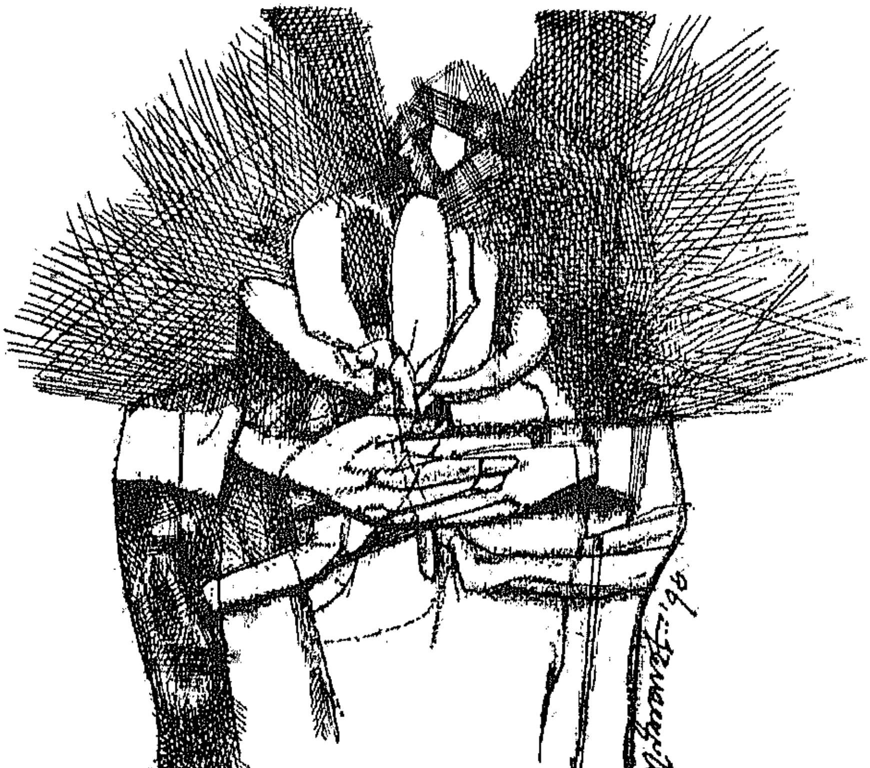
राजा क मृत्युक उपरान्त हुनकर देहक दीप मे आगि लेसल गेल आ देखैत देखैत हुनकर श्राद्धक आयोजन होमय लागल। किन्तु एही बीच मे बहुत किछु भ' गेल छल जे लेखक आमंत्रितक भीड़ मे विसरिये गेल छलाह—कारण, राजा सँ राजाक श्राद्धस्थल छल बेसी विशाल। जे होओ, जखन श्राधक उद्योक्ता लोकनि क संग ओ भोरुका सुरुजक तरल आलोक क लहर सँ हाथ-मुँह धोयने आ इन्द्र धनुष सँ कनिटा क डंटी तोड़ि दंतुअनि कैने लेखनी कें एकटा नव अनुच्छेद मे' ल जेबाक लेल तैयार भ गेलाह, तखन हुनक नजरि पड़ल सिंहासन पर। ओ देखलन्हि इतीमध्य सिंहासनक शून्यताक पाछाँ प्रार्थीसभक आवेदन पत्रक विशाल भीड़ उन्मुक्त कृपाण ल' ठाढ़ भ गेल अछि। रक्तक वुन्न सभ कान ठाढ़ कैने तैयार प्रतीक्षा क रहल छल—कखन तरुआरि क शब्द सुनत, आ झर' पड़त। लेखक हवेली दिस तकलन्हि त देखलन्हि ओतय तखनहु आर आवेदनपत्र क ब्यान तैयार भ' रहल छल, आ कतहु कोनो कोठरी मे बाँझो रानी सभ कें सम्राट-सम्भव राज पुत्र सब जन्म लैत छलथि। और राज प्रसाद क चारू कात क दरबज्जा पर बिछायल पत्र सभक कठिन हृदय भेद क' कए लीख लखा दैत छल रथयान, जाहि सब पर आबि रहल छलथि राजा क पितियौत बहिनक ममिऔत देवरक अपन पिसियौत सारक एकटा पत्नी क बर्त्तमान उपस्वामी, एवं इत्यादि प्रभृति सभ। और

अन्त मे राजप्रासाद क देवालो सबक कान जखन तरुआरि क चित्कार सँ प्रायः विकल भ' जाय लागल तखन प्रार्थी सभक पौना-पौनिक आगमन निषिद्ध भ' गेल। आ लेखक उपलब्धि कैलन्हि जे हुनक लेखन गोष्ठीक सबटा कलम मिलिओ कए जौं अतंद्र प्रहरा देथि तैयहु एतेक चरित्र कें सम्हारब सम्भव नहि।

भीड़ कम करबाक लेल कोनो उपाय नहि देखि ओ राजा कें पुनः जीवित क' देलन्हि। राजा बाँचलाह, और प्रात मे पुनः बैसलाह मन्त्री सँ 'राज्यक अवस्था बिश्लेपण कर'।

—

रामलीला



उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

रामलीला

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

प्रकाशक :

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,

कलकत्ता-७०००४५

● प्रथम संस्करण : १९७७ ई०

● रचनाकाल : दिसम्बर, १९७४

● आवरण :

गणेश पाइन

● मुद्रक :

सिंह प्रेस

कलकत्ता-७०० ०४५

● मूल्य :

तीन टाका

प्रोफेसर चन्दर जे० दासवानी कें

जे किछु सिखलियन्हि

तकर ऋणशोधक पहिल किस्त

—उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

पात्र - पात्री

राम, सीता, सत्य, शिव, सुन्दर,

रूपलाल, गौरी नन्दन ।

नेपथ्य स्वर

प्रथम दृश्य

(सन्ध्याकाल। मंच पर क आलोक निस्तेज अछि। नेपथ्य सँ कोलाहल क स्वर सुनल जाइत अछि। जेना तीन चारि गोटे ककरहु डाँटि रहल होथि। क्रमशः ई शब्द मंचक पास आबि जाइत अछि और एहि कोलाहलक मध्य फेकटा वाक्य और परिश्रुत भ' उठैत अछि। जेना, "ई, मौगीक तेज ने देखू!" "नहि जैतीह!" "अरे ई त की एकर बापो जाओत—हमर हाथ क एक थापड़ खाओत त'—।" "नहि नहि मारह नहि।" "तखन की पूजा करू?" आदि आदि। कहैत-कहैत तीन गोट पुरुष एकटा नारी कें घिसिअबैत मंच पर प्रविष्ट होइत छथि। संगहि संग मंच पूर्ण रूपें आलोकित भ' उठैत अछि। धक्का खा कए ओ नारी दर्शक क दिसि मुँह कैने नीचाँ खसि पड़ैत अछि। ओहि नारी क मूँह आ' हाथ बान्हल छैक।)

सत्य—(विचित्र जकाँ हँसैत व्यंग्यात्मक स्वरें) ईह! देखह, देखह। पड़ल अछि, जेना अशोक वन मे सीता।

शिव—आर तों साला छें रावण, नहि? (कहि कए शिव हँसै लगैत अछि; सुन्दरो शिव क साथ दैत अछि।)

सत्य—(घबड़ाओल जकाँ) न-नहि, हम कियैक रावण हैब, रामू दादा रहैत...

सुन्दर—ओ रावण छथि, त तों की भेलें?

सत्य—हम की हैब? हम त रामूदादा क...

शिव—(सत्य क अर्धसमाप्त वाक्य कें लपकि लैत) ...छोट भाइ।

सत्य—(हँसबाक चेष्टा करैत) हँ हँ... सैह।

शिव—रावण क भाइ !

सत्य—(अपन दुर्बलता कें झाँपबाक चेष्टा मे हाथ डोलबैत) हुँ, भाइ !

सुन्दर—विभीषण !

सत्य—(बिना बुझनहि हाथ डोलबैत स्वीकृतिक भंगिमा मे) हुँ, विभी— (कहैत-कहैत हाथ डोलायब बन्द क' कए उपहासक अर्थ बुझि कए) की ? तों हमरा अ-अथी कह्लह ? (शिव आ' सुन्दर कें हँसैत देखि आरो क्रुद्ध भ' कए प्रस्थान करबा लेल उद्यत होइत अछि ।)

सुन्दर—सत्तू ! (आगाँ बढ़ैत सत्य क हाथ धरैत) अरे, हम सब त ठट्ठा करैत छलहुँ ।

शिव—हँ, ठट्ठे त छल ई । नहि त तों रामूदादा क संगें रहैत छें...

सुन्दर— ...त विभीषण कोना हैबें ? लक्ष्मण भ' सकैत छें ।

सत्य —लछमन ? (सन्तुष्ट भए पुनः हाथ डोलबैत) हें-हें । लछमन ।

सुन्दर—आब खुश छें कि नहि ?

सत्य—हें-हें, लछमन ।

शिव—आब आपन रामूदादा कें बजा त', देख त' कतय गेलाह...?

सत्य—(निष्क्रांत हैबाक पहिने एकबेरि पाछाँ घूरैत) हे-हे... (कहैत प्रस्थित होइत अछि ।)

सुन्दर—(प्रस्थित हैबाक संगहि संग) लछमन ? स्-साला चमचा !!!

शिव—कियैक ? चमचा कियैक ?

सुन्दर—अरे तों जनैत नहि छें—ई साला देखबा मे बकलेल सन लगैत अछि । मुदा ई थिक एक नम्बर क शैतान ।

शिव—सत्तू... और शैतान ? (हँसै लगैत अछि)

सुन्दर—नहि नहि, हँसबाक गप्प नहि । हम सब जे किछु करैत छी कहैत छी, ई साला सबटा रामूदादा कें जा कए कहैत अछि । और रामूदादा तकरा पर रंग चढ़ा कए ब्रम्हनारायण बाबू कें कहैत छथि ।

शिव —आ ओ सबटा विश्वास करैत छथि, सैह ने ?

सुन्दर—तोरा विश्वास नहि होइत छौक हमर बात पर ? हम किरिया खा कए कहि सकैत छी जे ओ...

शिव—अरे ब्रम्हनारायण बाबू कें तीनटा फैक्ट्री छन्हि, चारिटा मकान, पाँचटा एम० एल० ए० कें पोसने छथि। ओ रामूदादा क बात पर विश्वास कियैक करताह ?

सुन्दर—से नहि करताह त की तोहर आ' हमर बात सुनताह ? हँ; सुनितथि जौं हमहूँ साला रामूदादा जकाँ दू अच्छर अंगरेजी पढ़ने रहितहुँ। पढ़ल लिखल गुण्डा छथि कि नहि, तैं...।

शिव—त साला तोंहूँ पढ़ ने !

सुन्दर—तों देखिहें, हमरा सँ त नहि भेल— मुदा अपन बेटा कें हम पढ़ालिखा कए एहि लाइन मे आनब। तखन साला ओस्तादो सभक कान काटि लेत। (एहि बात पर शिव उच्चस्वरें हँसि दैत छथि)

सुन्दर—की भेल ? एहि मे हँसबाक की छल ?

शिव—तों सुसाला एकटा जीवित मनुक्ख छें आ' तोरा मे बहुत सपना जनमि रहल छौक। साला बच्चो सपने मे भ' जैतौक।

सुन्दर—कियैक ? हम ककरहु घरवाली नहि बना सकैत छी ?

शिव—जाइत काल पोखरि मे अपन मुँह देख लिहें। तोहर घरवाली के बनै ऐतौक ? हँ; बिना बियाह कैने ककरहु पेट सँ बच्चा निकालि सकैं त एकटा बातो।

सुन्दर—हँ; जाहि मौगी सब कें एतय अनैत छी, तकरहि मे सँ एकटा क...

शिव—श् श् श् !

सुन्दर—कि भेल ?

शिव—सावधान। ई बात हमरा कहलें से कहलें। भूलियो कए ई नहि बाजी। रामूदादा वा ककरहु पता भेने कालिहये तोहर छुट्टी भ' जैतौक। मन नहि छौक ? जहिया हम सब नवे आयल छलहुँ, एक साला कें ब्रम्हनारायण बाबू अपन हाथें गोली दागि देने छलथिन्ह।

सुन्दर—से त ओ साला बिना ककरहु सँ नुकौने एकटा पर...   ...सँ

शिव—तखन तों की करितें ?

सुन्दर—पहिने लड़कियाकें तैयार करितहुँ आ' तखन नुका कए... (शिव हसै लगैत अछि) कियैक ? हँसलें कियैक ?

शिव—तों कहबें आ' ओ लड़किया तोहर बच्चा कोख मे ढोबाक लेल तैयार भ' जैतौक !

सुन्दर—कहबाक एकटा तरीका होइत छैक।

शिव—तों कोन तरीका सँ कहबं ?

सुन्दर—हम ? (कहैत-कहैत भूलुण्ठित नारी क दिसि नजरि चलि जाइत छैक) ध' ले ई थिक ओ लड़की। (ओहि नारी कें उठा कए ठाढ़ क' दैत अछि। मुदा हाथ आ' मुख क बन्धन नहि खोलैछ।) ओकरा हम कहबैक—तों फूलो सँ सुन्नर छें, चानो सँ गोर।

शिव—तों ओकरा तों कहबें ?

सुन्दर—तखन ?

शिव—देखैत नहि छं नीक लोग कोना परेम करैत अछि। (नकल क' कए) अहाँ फूलो सँ सुन्नर छी, चानो सँ गोर !!

सुन्दर—(हँसि दैत अछि। तकर बाद माटि पर ठेंहुना रोपि कए बैसैत कहैछ) राति खना रामलीला मे नहि कहैत रहैक, तहिना करब... सीते ! अहाँ कें छोड़ि कए हम जीयब कोना ? अहाँ क ओ फूल सन सुन्नर ठोर, चन्द्रमा सन सुन्नर रंग और—

शिव—तों साला एखन पक्का रावण लगैत छं।

सुन्दर—रावण हम कियैक हैब ? ओ त सत्तूक... (तखनहि रामू प्रविष्ट होइत छथि)

राम—(सुन्दर कें नतजानु देखि) ई की भ' रहल अछि ?

सुन्दर—(उठि कए ठाढ़ होइत) नहि... किछु नहि। इयैह रामलीला क रावण क बारे मे बात करैत छलहुँ।

राम —[अगुआ कए ओहि नारीक पास आबि कए नारी कें नीक जकाँ देखैत]
रावण क कोन बात ?

सुन्दर—[माथ हँसोथैत शिव क दिसि देखैत] इयैह माने...

शिव—अशोकबन मे रावण सीता सँ...

राम—एहि लड़की क मुँह कियैक बान्हने छं ? आ' ठाढ़ कियैक छं एना ?

सुन्दर—ई, ई त अपने ठाढ़ भ' गेल अछि। [डाँटैत] ऐ ! बैसि जो ने !!

राम—नहि, ठाढ़े ठीक अछि। एकर मुँह पर क कपड़ा हँटा दही।

सुन्दर—अच्छा। [मुख क बन्धन खोलि दैत अछि] आ' हाथ ? अहिना रहै दियैक ? कि खोलि दी ? पड़ाओत त नहियें, आ' जैबे कतय करत ?

राम—जैबाक लेल त स्वर्ग सँ नरक धरि सबटा रास्ता खुलले अछि।

सुन्दर—तखन की करियैक ?

राम—खोलिये दहक ! ठाढ़ त अछि नरके मे। जाओत त स्वर्गे मे जा सकैत अछि। मुदा ताहि लेल त मृत्युक पासपोर्ट चाही।

सुन्दर—[मूढ़ जकाँ हँसबाक चेष्टा करैत] हें-हें। रामू दादा तेहने ने बात सब कहैत छथि, जे किछु बुझितहि नहि छियन्हि।

राम—तकर कारण ई जे हम आन भाषा मे बजैत छी। पढ़ल-लिखल लोगक भाषा, जे भाषा सौ मे सँ अस्सी गोटे कें सिखाओले नहि जाइत छैक।

सुन्दर—[किछु बिना बुझनहि] हें-हें।

राम—[नारी क प्रत्येक अङ्ग क दिसि देखि कए] एकर मुँह पर त रंग पोतल छैक।

शिव—ई रामलीला करैत अछि कि ने, तें।

राम—[उच्च स्वरें हँसि कए] रामलीला ? ई रामलीला मे की करैत अछि ?

सीता—सीता ! [तीनो गोटे ओहि नारी सँ अप्रत्याशित उत्तर पाबि कनेक चौंकैत छथि।]

राम—त एकरा उड़ौलह कोना ? रामलीला क सीता कें ?

शिव—से एकटा खिस्से सन लागत सुनै मे। ई भागल जा रहल छल।

राम—[पुनः हँसैत] सीता भागल जा रहल छल ? ऐं ? आँचरि तर रावण त नहि छलाह ?

सुन्दर—[हँसबाक प्रयास करैत] रतुका पहरक बात थिक। हम दुनू राति एकरहि उड़ैबाक ठीक क' कए गेल छलहुँ। मेला मे एकरा सभक तंबूक पाछाँ बीड़ी पी रहल छलहुँ। तखनहि देखलियैक जे ई अपनहि पछुआड़ि द' पड़ा रहल अछि।

शिव—हम दुनू पाछाँ-पाछाँ गेलियैक आ' मेला सँ बाहर एकटा सुनसान जगह पर मौका पाबि कए उड़ा कए ल' आनलियैक।

रामू—क्यो देखलकह त नहि ने ?

शिव—देखत के ? शहर क सबटा लोग त तखन सुखक निन्न मे पड़ल छल।

रामू—कलियुग थिक ने, तैं। नहि त रास्ता मे जटायु भेंटितथि। अपन पुरान नह आ' लोल क भरोसें चीत्कार क' उठितथि। [सत्य प्रविष्ट होइछ। ओकरा पर ककरहु नजरि नहि पड़ैछ।]

सुन्दर—माने ?

रामू—किछु नहि। [सत्य कें देखैत] सत्तू !

सत्य—[आगाँ बढ़ैत] जी !

रामू—[नारी कें देखा कए] एकरा पानी क कल देखा दहक। मुँह पर सँ रंग हँटा लेत। आ' एकर खैबापीबाक लेल कतहु सँ किछु मँगबा दहक।

सत्य—ओना हमहूँ सब... माने भरि राति तीनो गोटें त अही काज मे...।

रामू—तोरो सँ बेसी एकरा खैबाक प्रयोजन छैक। ई बलिदान क छागर थिक। तैं एकरा नीक जकाँ खुआबै पड़तह। तोहर त मांसो काटि कए बेची त एक्कहु पाइ नहि भेंटत। ल जा एकरा। [सत्य ओहि नारी कें ल' कए चलि जाइत अछि।]

रामू—[शिव आ सुन्दर सँ] सुनह ! जत्तेक जल्दी फसल कटि जाइक, ततबहि नीक। कखन वर्षा शुरू हैत आ' कखन सूखा पड़त— तकर कोनो ठीक नहि।

शिव—माने!

रामू—माने एक सप्ताह क भीतरे सबटा ग्राहक कें खबर करै पड़तह। इयेह सात दिन क भीतर ओ अब आबि कए माल देखि कए आ' मोल ठीक क' कए ई झमेला हँटा लेताह।

शिव—ओ!

सुन्दर—जनिका लोकनिकें खबरि दैत छियन्हि तनिकें सबकें ने खबर देबन्हि ? कि आनो किनकहु बजैबा लेल सोचने छी ?

रामू—आर के ऐताह! हँ, एहि बेर एकटा काज करिहह। जत्तेक कोठावाली मालिकानि सब छथि आस पासक, तनिको सब कें खबर क' दिहन्हु। ई रामलीला क सीता थिक, नाचै त आबिते हैतैक। भ' सकैछ कोठेवाली सब सँ बेसी पाइ भंटैक। एहन तैयार माल त हुनको सब कें नहिये भंटैत हैतन्हि। गाबैयो अबितहि हैतैक।

शिव—हँ; ई त नीक कहलहुँ—।

राम—हुनका सब मे सँ दू-एक गोटे पहिनहु एक बेर कहने रहथि। कारण ओसब जतय सँ माल लैत छथि, ततय पाइ किछु बेसिये लागि जाइत छन्हि।

शिव—ठीक अछि, हम सब कें बजा आनबन्हि।

[तावत् मेकअप उतारि कए सीता प्रविष्ट होइत छथि। सत्य पाछाँ-पाछाँ अबैत छथि। मंच पर उपस्थित तीनो गोटे घुरि कए सीता क दिसि देखैत छथि। तीनो गोटे निराश भ' जाइत छथि। किछु कालक लेल निःशब्द रहि कए राम शिव आ' सुन्दर दिसि देखैत छथि।]

सुन्दर—[शिव सँ] हम तोरा पहिनहि कहने छलियौक जे एकरा नहि ल' कए सरमा छौंड़ी कें ल' चलें—।

शिव—[मुँह दूसैत] हम तोरा पहिनहि कहने छलियौक! स्-साला। तोंहीं त पसिन कैने छलें। एखन ई सब कहने...

सुन्दर—हम पसिन कैने छलियैक ?

शिव—नहि त की, तोहर बाप कैने छलौक ?

राम—थम्हह। [दुनू चुप भ' कए एक दोसराक दिसि क्रुद्ध दृष्टियें देखैत छथि] एकरा के लौलक अछि ?

सुन्दर—से त दुनू गोटे आनने छियैक, मुदा ई...

राम—बस, हम और किछु नहि सुनै चाहैत छी। जखन दुनू गोटे आनने छह तखन एहि काजक भागी तोरा दुनू गोटा कें होमै पड़तह।

सत्य —[शिव आ' सुन्दर क दुरवस्था पर व्यंग्य करैत] ठीक।

राम—[सत्य क दिसि घुरि कए देखैत] ठीक की ? तोहूँ त छलह।

सत्य—एँ—हँ... नहि; माने हँ—छलहुँ त, मुदा जे किछु करबाक छल से इयैह दुनू... माने हम किछु नहि कैलहुँ।

राम—तों किछु नहि कैलह ?

सत्य—अहीं कहू— हम कखनहु एहन फालतू माल पसिन क' सकैत छियैक ? एकरा सन कारी रंग, पचकल गाल...

राम—[सीता क दिसि देखैत बाधा द' कए] बस-बस ! आब तोरा वर्णन नहि करै पड़तह। [किछुकाल चुप भ' कए ठाढ़ भए पदचारण करै लगैत छथि। सत्य, शिव एवं सुन्दर राम क प्रत्येक पदक्षेप दिसि ध्यान दैत छथि। सीता हिनका सभक भावभंगिमा देखैत छथि। राम पदचारणा करैत-करैत दू-एक बेरि सीता क दिसि देखि लैत छथि।]

शिव—त आब की कैल जैतैक ? माने, हम सब की करब ?

सत्य—एकरा जतय सँ आनने छी ओत्तहि राखि आबी त नीक।

सीता—नहि।

[पुनः हिनका सभक कथोपकथन क मध्य सीता क स्वर कें सुनैत चारो गोटे चौंकैत सीता क दिसि देखैत छथि आ' अपना सब मे दृष्टि विनिमय करैत छथि।]

राम—की नहि ?

सीता—हम फेरो ओहि रामलीला कम्पनी मे नहि जाय चाहैत छी।

शिव—[मुँह दूसैत] नहि जाय चाहैत छी। कियैक ? एतय तोरा खुऔतह के ?

सीता—से त आनबाक समय सोचब उचित छल।

सुन्दर—तखन की जानैत छलियैक जे...

सीता—जे हमर गाल पचकल, रंग कारी, नाक ऊँच आ' केस छोट अछि—सैह ने ?

सुन्दर—[असहिष्णु जकाँ माटि पर पैर पटकैत] हँ, सैह।

सीता—ठीक अछि। हमरा छोड़ि दियह। बाहर, एहि पृथ्वी पर नारी कें कहियो खैबाक अभाव भेल छैक ? केहनो छी, जवान त छी।

राम—[किछु चिन्तित जकाँ] क्यो कत्तहु नहि जाओत। [थम्हैत] शिव, तोरा जेना कहलियह, तहिना करिहह। हँ, कोठेवाली सब कें बजाबिहह। नीक ग्राहक त घुरियो कए नहि ताकत।

शिव—अच्छा।

राम—जे भेंटै सैह लाभ। मुदा एखन त और जल्दी पार करै पड़तह। जौं कहियहु भूलो सँ ब्रम्हनारायण बाबू कारोबार देखै लेल आबि जाथि, तखन तोरे सब कें नहि, हमरहु हालत पातर क' देताह।

सत्य—हें हें, हालत पातर...

शिव—चोप्!

[बत्ती मिझा जाइत अछि।]

द्वितीय दृश्य

[मंच सज्जा पूर्ववत् रहैत अछि। मंच पर राम एसगर माथ पर हाथ धेने बैसल छथि। समय मध्य रात्रि। सत्य प्रविष्ट होइत अछि। राम माथ उठा कए देखैत नहि छथि।]

सत्य—[कहबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा डरें कैक बेरि थम्हि जाइत छथि।] दादा, ह-हम जाउ... ?

राम—[माथ उठा कए, भौं सिकोड़ि कए] कतय ?

सत्य—सु-सुतै... ।

राम—आइ जे किछु भेल अछि, तकरहु बाद तोरा निन्न लागि रहल छह ?

सत्य—माने...

राम—माने त तखन बुझैत जैबह जखन ई सबटा ब्रम्हनारायण बाबू कें पता चलतन्हि ।

सत्य—तखन एखन हमरा की करै कहैत छी ?

राम—अपने कें सोचै कहैत छी ।

सत्य—सो-सोचै ? [राम कें निरुत्तर देखि कए] की सोचू!

राम—सोचबाक हेतु कोनो हजार टा विषय छैक थोड़बे ? [थम्हैत] देखलह नहि, कोठावाली सब मुँह घुरा कए चलि गेल— कोनो मोल पर कीनै लेल तैयार नहि भेल ।

सत्य—हमरा त एक गोटे जाइत काल कहलक जे बिना पाइयोक एकरा कोनो कोठावाली नहि लेतैक कारण, ई बेकार एकटा घर छेंकने रहत । ग्राहक देखबो नहि करतैक ।

राम—मुदा हमहीं सब एकरा कत्तेक दिन देखू ! खर्च त बढ़िये रहल अछि एकरा पाछाँ ।

सत्य—हम एगो बात कहू ?

राम—की ?

सत्य—कोनो अनाड़ी ग्राहक कें बजा कए एकरा बेह पहिलुकहि जकाँ मेकअप लगवा कए जौं एक बेरि बेचि सकी, त काज भ' जायत । बाद मे ओ घुराबै चाहबो करत त कोनो लाभ नहि । कहि देब जे...

राम—Things once sold are not taken back. [थम्हैत] Life once lived and lady once loved are not looked back upon.

सत्य—माने ?

राम—माने किछु नहि। ओ सब धंधा छोड़ह। ओना कतहु बिक्री होइत अछि ? तखन दोसर बेरि सँ क्यो एहि अड्डा मे आओत नहि। और, ताहि पर, एहि लाइन मे अनाड़ी क्यो नहि होइछ। एना मे हम सब बदनाम भ' जायब !

सत्य— तखन ?

राम—आ' बदनामी भेने भेंटत ब्रम्हनारायण बाबू क कोड़ा।

सत्य—हुनका की ? एकहि अड्डा नहि छन्हि जे काज बन्द भ' जैतन्हि।

राम—हुनका लेल सोचबाक प्रयोजन नहि। अपना लेल सोचह। टूटा खून त कैनहि छह। बेसी चालाकी कैने फाँसी क कठघड़ा पर जाय पड़तह—ब्रम्हनारायण बाबू सबटा सबूत रखने रहैत छथि। [सत्य निरुत्तर रहि जाइत छथि। माथ झुकौने ठाढ़ रहैत छथि।] शिव आ' सुन्दर त 'कालिह आयब' कहि कए पड़ा गेल अछि।

सत्य—दोष त ओकरे सभक थिकैक। खराब बाजार कैने मानस त खराब हैबे करैत छैक, एहि मे मनसियाक कोन दोष ?

राम—मुदा ने से खायबला सुनत आ' ने खुआबैबला। खायबला खाइत काल गारि पढ़ैत अछि आ' खुआबैबला खैबाक बाद। [थम्हैत, किछु सोचैत] ताहि पर सँ एहि अड्डा आ' बिक्री क भार हमरे सब कें उठाबै पड़त। शिव आ' सुन्दर क काज त थिकैक माल उड़ा कए ल' आनब। [दुनू किछु कालक लेल चुप भ' जाइत छथि।]

सत्य—हमर बात मानू त एकटा बात कही।

राम— कहह।

सत्य—एहि लड़किया कें छोड़ि दियौक।

राम—ताहि सँ लाभ की ?

सत्य—रहबे नहि करत त बेचबाक उपायो नहि करै पड़त।

राम—तोहर हाथे मे ताकत छह, दिमाग मे नहि।

सत्य—कियैक ?

राम—छोड़ि कोना देबह ? कहबह, 'जाउ' ?

सत्य—नहि, पहरादार सबटा सँ कहि देबैक जे ई जौं भागै चाहै त बाधा नहि दे।

राम—मुदा सुनलह नहि ? ओ त जैबाक नामे नहि लैत अछि।

सत्य—अपन इच्छा सँ नहि जायत त उठा कए कत्तहु ध' आयब गे।

राम—से त भगैबाक आरो अनेक उपाय भ' सकैत छैक।

सत्य—तखन ?

राम—कनेक दिमाग कें ठेकान पर लाबह। सात दिन ओ एतय रहि चुकल अछि। एहि बीच मे आनो अड्डा क लोग सब आयल छलैक। ओहो सब देखने अछि। एकर रूप ल' कए हँसिओ-ठट्ठा भेल अछि।

सत्य—त की भेल छैक ?

राम—किछु नहि भेल अछि ? तों की बुझैत छह—एखन जौं ओकरा कोनो तरहें भगाओलो जाय त एहि बात क पता मालिक कें नहि चलतन्हि ? आन अड्डा क लोगबेद ओहिना हमरा सब पर तमसाओल अछि; पछिलका दुइ महीना मे हमहीं सब बेसी माल उड़ा लेलियैं, तें। एहन मौका ओ सब हाथ सँ जाय देत। सोझे चुगली क' देत।

सत्य—से ठीक...।

राम—सेहटा ठीक नहि, आरो बात अछि एहि मे। एही सात दिन मे एहि लड़की क पाछाँ खर्च कम नहि भेल अछि। उड़ाबैत काल, लाबै मे आ' खुआबै मे त भेले अछि, एकर पाछाँ आन काज-धन्धा छोड़ि कए बिक्री क व्यवस्था क लेल सब कें जे घूमै पड़ल छैक—तकर मोल के देत ? [थम्हैत] क्यो जौं ओतबो द' दैक त एहि झमेला कें हँटा दितहुँ।

सत्य—से द' देत।

राम—के ?

सत्य—क्यो ने क्यो लेबे करत। अहाँ एतेक बेसी सोचैत कियैक छी ?

राम—सोच मे नहि पड़ू ? एम्हर सात दिन सँ एकोगो नवका माल उड़ाओल

नहि गेल अछि। अहिना चलैत रहतैक त दू महीना सँ मालिक जत्तेक मधुर बात कहने छलथिन्ह, सबटा एकहि बेरि मे विष भ' जाइत।

सत्य—से हम सब कालिहये फेरो कोसिस करब। रसूलपुर क मेला कालिहये सँ शुरू भ' रहल अछि।

राम—आ' एकरा की करबह ?

सत्य—एकरहु लेल कोसिस जारी रहत। हम सब त कोसिसे क' सकैत छी। अन्त मे की हैत से कोना कहब ?

राम—त कोसिस की करबहक ?

सत्य—अहाँ त पहिने कोठावाली सब कें एक-एक दिन बजा कए देखनहि छियैक। एहि बेरि दुइ एक गो नीक लोग भलमानुस कें...

राम—नीक माल नहि हेतैक त नीक लोग लेत कियैक ? ताहि पर आइकालिह त घर-घर मे ई बिजिनेस चलैत अछि। चलबैत अछि नीके घर क लोग सब।

सत्य—अहाँ बढ़ा - चढ़ा कए कहि रहल छी। घर-घर मे चलितैक, त एतय हमरा सब सँ कीनै कियैक अबैत अछि लोग ?

राम—[स्वगतोक्ति जकाँ] चलैत अछि, तों सब नहि जानैत छह। क्यो मांस बेचैत अछि, क्यो दिमाग; क्यो देह बेचैत अछि त क्यो आत्मे कें साला तोल पर चढ़ा दैत अछि। देखह ने ! लेखक, शिल्पी, नेता, अभिनेता सब त वेश्ये भ' गेल अछि।

सत्य—माने ?

राम—माने तों नहि बुझबहक। जाय दहक ई सब बात। तखन जे कहलह सैह करह। कालिह सँ दोसर-दोसर मालोक खोज मे लागि जाह आ' एकरो लेल देखैत रहह।

सत्य—ठीक अछि। त एखन हम जाइत छी। कलहुका कालिह देखल जेतैक।

[राम किछु नहि कहैत छथि। सत्य निष्क्रान्त होइत अछि। मंचक आलोक कनेक निष्प्रभ भ' जाइछ।]

राम—कालिह ! आश्चर्य एखनहु लोग कालिह आ परसू पर विश्वास करैत अछि। कालिह ! की हैत कालिह ?

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[राम एक कुर्सी पर बैसि कए टेबुल पर माथ धैने सूतल छथि। समस्त मंच अन्हार अछि। मात्र राम क शरीर पर एकटा आलोक रेख पड़ैत छन्हि। नेपथ्य सँ दू-एकटा कौआ क कंठस्वर सुनल जाइत अछि। नेपथ्य सँ गम्भीर स्वर मे क्यो पवित्र मंत्रोच्चारण क भंगिमा मे पाठ क' रहल अछि :—]

कालिह।
कालिह हमर गाम मे
बहुत दूर सँ चलि कए
एकटा गाछ आओत—
सौ कोस दूर सँ,
सौ युग दूर सँ।
ज्योतिषी कहैत छथि—
कालिह हमर गाम मे एकटा गाछ आओत, चलि कए।
परसू
परसू ओहि गाछ क फुनगी पर एकटा फूल हैत।
ओहि फूलक जन्म क ने कोनो ठेकान रहत,
ने बाप-मायक नाम।
ज्योतिषी कहैत छथि
तैयहु ओहि फूल क रक्षा करै।
तेसर दिन।
तेसर दिन ओहि फूल सँ निकलतीह एक देवी।

देवी क एक हाथ मे रहतन्हि स्वर्गक लेल खाद्य,
दोसर हाथ मे स्वर्ग भूमिक अर्थ।
ज्योतिषी कहैत छथि,
एकगो चादर छोड़ि कए देवी क देह पर किछु नहि रहतन्हि।

तकर बाद ऐताह
भूखल नाङ्ट एक राजकुमार,
घर क पछुआरि सँ।
राजकुमार कें ने रहतन्हि घोड़ा, ने धन,
ने तरुआरि आ' ने राज।
तकर बाद ?
तकर बाद हमर गामक सब घर सँ ऐताह
भूखल नाङ्ट राजकुमार।
अन्त मे की हैत से कहू ने ?
हम की जानी, बूढ़ो बाबा कहलन्हि।

ज्योतिषी कहैत छथि—
ओसब राजकुमार
देवीक हाथ सँ लूटि लेताह खाद्य आ अर्थ,
स्वर्गक चादर देताह हँटाए देवीक देह पर सँ।

तकर बाद ?
तकर बाद ज्योतिषी किछु नहि कहैत छथि !
कदाचित तकर बाद देवी भ' गेलीह राजकुमारी !

[एहि पाठ क संगहि संग धीरे-धीरे भोर क प्रकाश भ' रहल छल। पाठ क अन्त मे आबि कए मंच क आलोक स्पष्टतर भ' उठैत अछि। पाठ-समाप्तिक बादे राम क निन्न टूटि जाइत छन्हि। ओ आँखि रगड़ैत उठैत छथि। अंगेठी ल' कए दुइ एक बेरि हाफी करैत पुनः ओही कुर्सी पर बैसि जाइत छथि और दुनू हाथ सँ केस कें ठीक करबाक चेष्टा करैत छथि।]

राम—[नेपथ्य दिसि देखैत] सत्तू ! ए सत्तू !! [कोनो उत्तर नहि पाबि] साला महिषासुर जकाँ सुतैत अछि। अरे ए सत्तू ! [नेपथ्य सँ कोनो उत्तर नहि अबैछ। मुँह घुरा कए देखैत छथि, चाह क प्याली नेने सीता आबि रहल छथि ! सीता क साधारण मुँह पर एकटा असाधारण आभा प्रकट होइत छन्हि, जेना सद्यः स्नान कैने होथि। ओ आबि कए बिना किछु कहने चाह बढ़ा दैत छथि। राम हाथ बढ़ा कए चाह लैत छथि। सीता ठाढ़ रहैत छथि। राम चाय पीबैत-पोबैत सीता कें देखैत छथि।] अहाँ क पाछाँ एकटा कुर्सी राखल अछि। [सीता पाछाँ घुरि कए कुर्सी क दिसि देखि कए पहिनुके जकाँ ठाढ़ रहैत छथि।] कुर्सी मनुक्खक बैसबाक लेल बनाओल गेल छैक।

सीता—[राम क दिसि देखैत] मनुक्ख ककरा कहल जाइत छैक ?

राम—दुनिया क आन सबटा जीव सँ जे पृथक होइत अछि, दू हाथ पैर बला जीव। जे सोचि सकैत अछि। एकमात्र प्राणी, जकर एहि दुनिया मे किछु मोल छैक।

सीता—हमर मोल अछि ?

[एहि बात पर दुनू दुनू क दिसि एकटक देखैत रहैत छथि]

हमरा जानिते, हमर मोल एकहु कौड़ी नहि। [मृदु हँसैत] देखैत त छीहे, आइ पन्दरह-बीस दिन सँ अहाँ सब कत्तेक चेष्टा क' रहल छी, मुदा कतय क्यो हमरा लेल एकहु कौड़ी खर्च करै तैयार होइत अछि ?

राम—'रामलीला' मे मोल छल ?

सीता—भरिसक।

राम—तखन ओत्तहि चलि जाउ।

सीता—से नहि भ' सकैत अछि।

राम—कियैक ?

सीता—कियैक ? [थम्हैत] हम जाय चाहब आ' पहरेदार सब हमरा छोड़ि देत ?

राम—जौं हम कहि दी त ओसब किछु नहि करत।

सीता—[व्यंग्य क हँसी हँसैत] भगाबै चाहैत छी ?

राम—[ओहि बात क जवाब नहि दैत] जौं पहरा नहि रहैत त अहाँ राम-
लीला मे जैतहुँ ?

सीता—[सोचैत] भरिसक नहि।

राम—कियैक ?

सीता— ...ओ नरक छल।

राम—[उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] आ' ई स्वर्ग थीक, नहि ?

सीता—स्वर्ग नहि, पृथ्वी त थीक। एतय सब किछु क मोल त दैत अछि लोग। ओतय त लोग बिना मूल्य अहाँ क सब किछु छिनबाक लेल तैयार अछि।

राम—[चाह क प्याला टेबुल पर धए पदचारणा करै लगैत छथि] कोना जानलियैक जे एतय, एहि पृथ्वी पर क्यो ककरहु किछु छीनैत नहि अछि। [अकस्मात् सीता क दिसि घुरि कए] जौं हमहीं अहाँ क देह छिन्न-भिन्न क' दी ?

सीता—[किछु काल चुपचाप राम क दिसि देखैत रहैत छथि; रामो सीता क दिसि देखैत रहैत छथि] हम जानैत छी, अहाँ से नहि करब।

राम—[क्रुद्ध भए] कियैक ? अहाँ बुझैत छी जे हम ककरहु सँ डरैत छी ?

सीता—नहि।

राम—तखन !

सीता—तैयहु अहाँ से नहि क' सकैत छी, हम जानैत छी।

राम—कोना ?

सीता—हमरा अहाँ पर विश्वास अछि। [राम पदचारणा बन्द करैत मंचक अन्य एक कोना पर ठाढ़ भ' जाइत छथि] हम मनुक्ख देखिये कए चिन्हि जाइत छी।

राम—[हँसैत] ज्योतिषी छी ? ऐं ?

सीता—लोग क मुँह पर अतीत क खिस्सा लिखल रहैत छैक।

राम—अहाँ क मुँह पर त हम किछु नहि देखि रहल छी।

सीता—अहाँ कें ओ भाषा पढ़ै नहि अबैत अछि।

राम – अहीं कोना से सीखि गेलहुँ ? छलहुँ त रामलीला क सीता !

सीता—[हँसैत] आरो बहुत किछु छलहुँ। शिशु छलहुँ, तरुणी छलहुँ... आरो कत्तेक किछु छलहुँ। रावण आ' रामेटा नहि, चारूकात आरो लोग छल।

राम—भ' सकैछ। मुदा सब कें देखि कए सब किछु बुझल नहि जा सकैत अछि। हमरा सभक मालिक ब्रम्हनारायण बाबू कें देखबन्हि त बुझब जे हम कियैक ई बात कहलहुँ।

सीता—कियैक ?

राम—देखबा मे नीक छथि, गोरनार। कपार पर तिलक लगाओल रहैत छन्हि, मुँह पर प्रशान्त भाव। कोनो देवमन्दिर क पुजारी लगैत छथि। [थम्हैत] से पुजारिये छथि। हुनक देवता भेलथिन्ह कुबेर। बहुत दिन सँ कुबेर-पूजा क' रहल छथि। वरदान मे मांगै चाहैत छथि कुबेर देवता क खजाना। ऊपर सँ देखि कए किछु नहि पता चलत, मुदा भीतर सँ एक नम्बर क शैतान छथि।

सीता—[व्यंग्य करैत] जखन एत्तेक घृणा करैत छी, तखन एतय कथी लेल पड़ल छी ?

राम—एतय कि क्यो स्वेच्छा सँ पड़ल रहैत अछि ? हम एतय नहि रहितहुँ, जौं हम शान्ति कें अपन हाथें... [कहैत-कहैत उत्तेजित भ' उठैत छथि। मुदा एतबा कहबाक बादे अपना कें सम्हारि लैत छथि।]

सीता—शान्ति के छलीह ?

राम—[अपराधी जकाँ सीता क दिसि देखैत] ओ... [कहैत-कहैत चुप भ' जाइत छथि।]

सीता—रहै दियह ! जौं नहि कहै चाहैत छी त...

राम—अहाँ की बुझैत छी जे से अहाँ कें कहने हमरा फाँसी भ' जायत ?

[हँसैत] किछु नहि हैत। समस्त दुनिया जानैत अछि, पुलीसो जानैत अछि, जे हम की कैने छियैक, मुदा क्यो किछु नहि क' सकैत अछि।

सीता—कियैक ?

राम—कहैत छलहुँ ने—एहि ठाम सब किछु क मोल दैत अछि लोग। हमरो सेह देमै पड़ि रहल अछि। ब्रम्हनारायण बाबू क दासत्व भेल ओ मोल। अही कारणें पुलिस किछु नहि क' सकैत अछि। ब्रम्हनारायण बाबू कैकटा बड़का अफसर कें पोसैत छथि, कैकटा एम० एल० ए० ओ बान्हल रहैत छन्हि हुनक खुट्टा मे। नीक जकाँ देखबैक त पता चलत जे सभक गर मे हुनक रस्सीक चेन्ह पड़ल छन्हि। [हँसैत] जखनहि देखब जे क्यो दामी पोशाक सँ देह झाँपने अछि, गर झाँपने अछि, तखनहि बुझब जो तकर गर पर रस्सीक चेन्ह छैक।

सीता—अहूँ क गर मे से चेन्ह अछि ?

राम—[किछुकाल चुप रहैत सीता क दिसि एक दृष्टियें देखैत] हमर देह पर नहि, तखन आत्मा पर चेन्ह अवश्य भेंटत। से त हुनकहि पास बन्हकी रखने छियन्हि।

[दुनू दुनूक दिसि देखैत रहैत छथि। मंच अन्धकार भ' जाइत अछि।]

चतुर्थ दृश्य

[अन्धकारहि मे नेपथ्य सँ क्यो पाठ करैत अछि।

इतिहास कहैत अछि,
ओहि वर्ष सँ सन्त नगर क मेला शुरू भेल छल।
देवी, जे कि राजकुमारी भ' गेल छलीह,
सिंहासन पर उघाड़े बैसाओल जाइत छलीह।
दूर-दूर सँ अवैत छलाह राजकुमार लोकनि।

और देवी कें अपना हाथें खुआबै पड़ैत छलन्हि सब कें
दान करै पड़ैत छलन्हि आपन अमूल्य रतन।

ई राजकुमारी कें नीक नहि लागि सकैत छलन्हि।
इतिहास कहैत अछि,
तकर बाद, ओहि देशक राजा कें पता चललन्हि एहि बात क।
महा अत्याचारी छलाह ओ राजा।
राजकुमार सभक एहि मेला कें ध्वंस करै एलाह ओ
देवी क पास।
दुनू मे बात भेल एक युग धरि।
तावत् सूर्य रहल सूतल, चन्द्रमा ठाढ़,
वायु रहल स्तब्ध, आगि रहल जरैत।

इतिहास कहैत अछि,
तकर बाद सँ; राज छोड़ि कए
टूटल मेलाकेर कुटिया मे रहै लगलाह महाराज।
सुनैत छी तहिया सँ भूखल लोगक राज भ' गेलैक।
सुनैत छी राजा लुटा देने छलथिन्ह देवी पर आपन आत्मा।

पुराण कहैत अछि, तकर बाद एक दिन
देवी सब किछु छोड़ि कए चललीह स्वर्ग क दिसि—
मुदा आधे पथ पर भेंटलथिन्ह राजा।
दौगैत-हफसैत कानैत राजा।
घोर वृष्टि भेल, चमकल विद्युत।
नहि मानलथिन्ह देवी।
तखन बाध्य भ' कए देवी क हत्या करै पड़लन्हि राजा कें।

शास्त्र कहैत अछि, ई प्रेम छल।

[पाठ समाप्त हैबाक संगहि संग कैक गोटे उच्च स्वरें हँसि दैत छथि। मंच आलोकित भ' उठैत अछि। टेबुलक चारूकात शिव, सुन्दर, सत्य आ' राम बैसल देखना जाइत छथि। राम दर्शक क दिसि पाछाँ घुरि कए बैसल छथि। बाकी तीनो गोटें सहजहि दृष्टि गोचर भ' रहल छथि। चारू गोटें शराब पीबैत छथि।]

शिव—[रुद्धप्राय कंठें] की बात थिकैक ? आइ रामू दादा पीबिये नहि रहल छथि।

सुन्दर—हँ, की भेल छन्हि ?

राम—तोरा सब जकाँ सब किछु बिसरि कए पीयब हमरा सँ नहि होइत अछि।

शिव—आइ नवे बात सुनि रहल छियन्हि।

सुन्दर—नहि-नहि; तों सब जानैत नहि छें जे दादा क मन मे कत्तेक चिन्ता ओंघड़नियाँ दैत रहैत छन्हि।

सत्य—हम नहि जानैत छी।

सुन्दर—दादा सोचि रहल छथि।

सत्य—की सोचि रहल छथि ?

शिव—दादा किछु सोचि रहल छथि।

राम—आह ! तों सब चुप हैबह कि नहि ?

सुन्दर—श् श् श् श् श्......

शिव—दादा सोचि रहल छथि।

[तीनो मे सत्य सब सँ बेसी मातल लगैत अछि। ओ टेबुल पर माथ धैने सुतै चाहैत अछि।]

राम—सत्तू ! ऐ सत्तू !!

सत्य—श् श् श् श् श्......

राम—तों सब की शुरू कैने छह ? [सत्तू कें देखा कए] ई त आउटे भ' गेल अछि।

सत्य—चुप। दादा सोचि रहल छथि।

[एक थारी पर भुँजल पकौड़ा नेने सीता अबैत छथि ।]

सत्य—[माथ उठबैत दूटा पकौड़ा कम्पित हाथें उठा लैत अछि] ...सोचि रहल छथि ।

[सीता दोसर हाथ सँ आपन नाक पर आँचर धरैत छथि । राम उठि कए मंच क आन दिसि चलि जाइत छथि । सुन्दर सबटा लक्ष्य कए सीता क हाथ सँ थारी ल' कए टेबुल पर राखैत छथि । सीता द्रुत पर्दे चलि जाइत छथि ।]

सुन्दर—दादा ! [राम पाछाँ घुरि कए सुन्दर क दिसि देखैत छथि] चलि गेल अछि ।

सत्य—के ?

सुन्दर—[सत्य सँ] वैह, जकरा दय रामू दादा सोचि रहल छलाह ।

राम—[क्रुद्ध भए] की बकि रहल छह ?

सुन्दर—कियैक ? अहाँ सोचि नहि रहल छलियैक ?

राम—हँ, सोचि रहल छलहुँ । मुदा सोचबाक लेल की और किछु नहि छैक ?

शिव—ठीके ! ओ भरिसक एखन ओहि... शान्ति ? ...ने की नाम छल ? ...तकरहि लेल सोचि रहल छथि आ' तों......

सत्य—शान्ति !

सुन्दर—[राम सँ] सत्ते ? [कोनो उत्तर नहि पाबि] मुदा ओकरा मारि कए अहाँ अन्याय कैलहुँ, जौं हमरा हाथें छोड़ि......

राम—[गरजैत] सुन्दर !

सुन्दर—गरजू नहि हुजूरे आलम । अहाँ खूनी छी ।

राम—के नहि अछि ? तों नहि चाकू चलौने छह ?

शिव—जनानी पर नहि ।

सुन्दर—सेहो कियैक त बेचारो मुहब्बत क' कए फरार भेल छलीह, तँ ।

राम—मुँह सम्हारि कए बात करह ।

सुन्दर—जे आपन माल नहि सम्हारि पाबैत अछि, तकरा सँ नहि... ।

राम—[टेबुलक बाम प्रान्त मे उपविष्ट सुन्दर क कालर पकड़ि कए उठाबैत छथि। सुन्दरो ठाढ़ भ' उठैत छथि। मध्य भाग मे बैसल शिव सेहो उत्तेजित भ'कए ठाढ़ भ' जाइत छथि। मात्र सत्य तहिना पड़ल रहैत अछि।] की ? तोहर एत्तेक साहस ?

सुन्दर—[एक झटका सँ हाथ हँटा कए] अबे, हट साला। [राम क हाथ हँटा कए आपन हाथ सँ कालर ठीक करैत आ' मुँह दूसैत] रामू दादा ! दादा कहैत छियन्हि त बुझैत छथि जे दादा बनि गेल छथि।

सत्य—[माथ उठा कए] शान्ति !

[राम आ' सुन्दर दुनू परस्पर ज्वलन्त दृष्टियें देखैत रहैत छथि।]

शिव—[अगुआ कए] बहुत भेल। [सुन्दर सँ] आब चल। [सुन्दर कें हिलैत नहि देखि धक्का मारि कए] की भेलौक साला, चल ने।

[राम क दिसि देखैत-देखैत सुन्दर शिव क संग प्रस्थित होइत छथि।]

सत्य—[दुनू क गेलाक बाद] की ने कहैत छलहुँ ?

राम—साला, तोंहूँ जो, भाग।

सत्य—[ठाढ़ भ' कए] श् श् श् श् श् श् श्......

राम—[गट्टा पकड़बाक लेल अगुअबैत छथि कि सत्य भागि जाइत अछि। सत्य क प्रस्थान क बाद ओ शिव क स्थान पर दर्शक क दिसि मुँह क' कए बैसैत छथि आ' दुनू हाथ सँ माथ कें दाबैत छथि] ओह !

[सीता प्रविष्ट होइत छथि।]

सीता—की भेल ? [राम कें एसगर देखि] ओ सब कतय गेलाह ?

राम—जहन्नुम मे ! [कहि कए पुनः राम दुनू हाथें माथ धैने बैसल रहैत छथि।]

सीता—[किछु काल चुप रहबाक बाद] अहाँ क माथ मे दर्द भ' रहल अछि की ?

राम—[माथ बिना उठौनहि] हूँ।

सीता—हम टीपि दियह ?

राम—[चौंकैत माथ उठा कए] की ? नहि नहि।

सीता—कियैक ? हम अछूत थिकहुँ की ?

राम—न नहि, से नहि, तखन...

सीता—अहाँ सब कृपा क' कए एखन धरि धकेलि कए बाहर नहि क' देने छियैक, तकर मोल त चुकाबहि पड़त।

राम – हम से नहि कहैत छलहुँ।

सीता—तखन ?

राम—हम नशा कैने छियैक। तैं...

सीता—हमरा शराब सँ घृणा अछि, पीयैबला सँ नहि। लोग त हजारटा व्यर्थताक संगहु जिनगी बिताबिते अछि। भरिसक तकरहि किछु देरक लेल बिसरै चाहैत अछि... शराब पीबि कए... जे हमर बाबू करैत छलाह।

राम—जकरा पास धन रहैत अछि, सबटा सुख जकरा उपलब्ध छैक, से कथी लेल पीबैत अछि ?

सीता—के कहलक अहाँ कें जे धन रहनहि लोग कें सबटा सुख भेंटि जाइत छैक ? धन अछि त देह क सुख नहि, से सुख अछि त यश नहि, यश अछि त धन नहि। ई एकटा वृत्त थीक, जतय हम सब घुरैत रहैत छी। जकरा आन सबटा वस्तु रहैत छैक, अभाव नहि रहैत छैक— तखन तकरहि लेल ओकरा दुःख भ' जाइत छैक। दुःख की थीक ? एकटा चिन्ता-विलास।

राम—तखन अहाँ कें दुःख नहि होइत अछि ?

सीता—कियैक नहि हैत ? हमर पछिलुका दिन सब भरि जिनगी दुःख करबाक लेल बहुत अछि। [वार्त्ता क मध्ये राम क पाछाँ आबि कए हुनक माथ दाबै लगैत छथि।]

राम—[किछु काल चुप रहि कए] अहाँ क बाबू कियैक पिबैत छलाह ? हुनका कोन दुःख छलन्हि ?

सीता—ओहो आपन अतीत ल' कए दुःखी छलाह। दुःख देमैवाली छलथिन्ह

हुनकर पत्नी।

राम—माने, अहाँ क माय ?

सीता—हँ; माइये कहल जाय त ठीक।

राम—कियैक ? अहाँ क जन्मक बादे ओ मरि गेलीह की ?

सीता—नहि। [सोचैत] हँ; मरिये गेलीह। जकरा सँ जीवन भरिक लेल सम्बन्ध टूटि जाइत छैक तकरा मृते कही। [दुनू गोटे किछु काल चुप रहैत छथि।] हमर बाबू गाम क चौपाड़िक पंडित छलाह। माय छलीह अपूर्व सुन्दरी। बाबू एहि पृथ्वी क प्रति एहन सुखी जीवन क लेल कृतज्ञ छलथिन्ह। [थम्हैत] मुदा माय क स्वभाव छलन्हि आने तरहक। ओ बाबूजी कें उकसा कए शहर मे आबै लेल बाध्य क' देलथिन्ह। शहर मे बाबूजी कें परिश्रम बेसी करै पड़ैत छलन्हि। पाइ कमे भेंटैत छलन्हि, मुदा माय पास-पड़ोसक लोग जकाँ खर्च करैत रहैत छलीह। ओ किछुए दिन मे बुझि गेल छलीह जे ई पंडित पति कोनो सुख नहि द' सकताह। ओ बजार मे आपन मोल अपनहि परखै उतरि गेलीह। ताहि दुःख सँ बाबू शराब मे डूबै लगलाह। हम पड़ल रहलहुँ अनचिनहार जकाँ। एक दिन सैह भेल जकर प्रतीक्षा छल। माय चलि गेलीह।

राम—आ बाबूजी ?

सीता—जत्तेक दिन जीवित रहलाह आपन उपवीत निकालि कए समस्त पृथ्वी कें अभिशाप दैत रहलाह। एक दिन अभिशाप क पूँजी शेष भ' गेलन्हि; आ' ओहो चलि गेलाह।

राम—अहाँ ? अहाँ क की भेल ? [एहि प्रश्न पर सीता क हाथ राम क माथ पर स्थिर भ' जाइत छन्हि।]

सीता—सैह भेल, जे आइ देखि रहल छी। नौटंकी-रामलीला करैत-करैत एतय आबि गेल छी। जहिया धरि मोल देबै बला क्यो नहि रहत एतय छी। तकर बाद—।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

पंचम दृश्य

[नेपथ्य सँ पुनः पाठ सुनल जाइत अछि ।]

तकर बाद
देवीक विश्वास-घातिनी आत्मा
चलि गेल देवीक देह कें राजा क हाथ मे छोड़ि कए । और राजा
सहस्र चुम्बन सँ जरा देलथिन्ह देवीक मरल ठोर ।
देवीक शरीर कोरा मे लए बैसल रहलाह कतेको युग धरि ।
ग्रीष्म, वर्षा, शीत, हेमन्त, शरद, वसन्त सब
चुपचाप देखैत रहल प्रेमी क तप ।

एक दिन राजा बुझलन्हि जे—
शरीरे थीक सब किछु,
आपन छाया कें अनका मे देखब भेल प्रेम !
राजा जानलाह— प्रेमक हजारटा भाषा छैक,
शरीर क एकहिटा
जे कि शरीरे बुझि सकैत अछि ।

पुराण कहैत अछि,
तखनहि आकाश सँ उतरि ऐलाह प्रजापति
स्वस्ति क चेन्ह छलन्हि हुनक माथ पर
आश्वस्त भेलाह जे बाँचल नन्दन
बाँचल स्वर्ग क राज
उद्‌भट प्रेम क तप सँ ।

राजा वर मागलन्हि।
पितामह कहलथिन्ह—
नारी मात्रहिक देह क भीतर
प्रवेशाधिकार हैत अहाँ कें।

घुरि ऐलाह ओ पृथ्वी पर।

विश्व क समस्त मनुज कें कहलथिन्ह—
देहक आपन भाषा मे जौं
देह करै आवाहन,
तखनहि तकरहि प्रेम कहैत छैक।
एना एक नव धर्मक सर्जन कैलन्हि राजा।

एक दिन अहिना नारी क देहक भीतर
बूढ़ भ' गेलथिन्ह राजा।
जहिया बहरैलाह ओ अन्ध गुफा सँ
नजरि पड़लन्हि एक नारी पर।
देहक भाषा व्यर्थ भ' गेलन्हि तइखन ;
ऐलीह नहि ओ नारी।
आपन पुरातन आँखि उठा कए हुनका दिसि देखि कए
चौंकलाह वृद्ध राजा।
ओहि नारी क मुँह छलन्हि कालगर्त्त मे पड़ल देवी केर मुख सन।
धर्म क बन्धन और अनुशासन खसि पड़लन्हि
भए चूर-चूर।
फेर हृदय यन्त्र पर मृदंग बाजल बिना बजौनहि।

[मंच आलोकित भ' उठैत अछि। मंच पर कोनो वस्तु नहि रहैत अछि। शिव आ' सुन्दर कें एक दोसरा क बीड़ी मे आगि लेसैत देखल जाइत छन्हि।

दुनू बीड़ी पीबै लगैत छथि। तखनहि सत्य प्रविष्ट होइत अछि।]

सुन्दर—की भेलौक ? की देखलें ?
सत्य—नहि छथि।
सुन्दर—[हँसैत] कहने छलियौक ने ?
सत्य—मुदा एहन त कहियहु नहि भेल छलैक।
सुन्दर—आब कह !
शिव—एकटा लोगक लेल ब्रम्हनारायण बाबू सब कें गरियौने छथि।
सत्य—की कहलथिन्ह ओ ?
सुन्दर—कहताह की ? पहिने आश्चर्य भेलन्हि। सोचलन्हि हम सब चुगली क' रहल छियैक। जानितहि छें ओ चमचाबाजी पसिन नहि करैत छथि।
शिव—ओ काजक लोग छथि, सब सँ काजे क हिसाब लैत रहैत छथि।
सत्य—सैह जौं होइक, त रामू दादा एक महीना सँ की हिसाब देने छथि ?
सुन्दर—सैह सोच !
शिव—की कहने हेताह ? गप मारने हैताह; फूसि बाजने हैताह।
सत्य—किन्तु ओ त एहन काज कहियो नहि करैत छलथिन्ह।
शिव—कहियो नहि कैलथिन्ह तें मालिक ने सन्देह नहि कैलकन्हि।
सुन्दर—[सत्य कें देखा कए शिव सँ] एकरा एखन धरि विश्वास नहि भेल छैक जे रामू साला ओहि कलमुँही लड़किया क संग खूब मौज मारि रहल अछि।
सत्य—विश्वास कोना हैत ? हमहूँ त रहितहि छी। हम त से कहियो किछु नहि देखने छियन्हि।
सुन्दर—ठीक अछि। तों जखन रहितहि छें, तोरा सबटा बात क पता रहितहि हैतौक !
सत्य—से त रहैत अछि।
सुन्दर—बेस, तखन बता, ओ दुनू कतय गेल छथि ?

सत्य—से हम कोना कहियौक ? एतबा कहि सकैत छी जे ई पहिले बेर अछि जे हम दुनू कें कतहु बाहर जाइत देखलियन्हि।

शिव—एखनहि तों कहलह जे तोरा सब बात क पता रहैत छैक। तकर माने हम सब ईहो लगा सकैत छी जे तों जानैत छें जे ओ सब कतय गेल छथि। तों जानि-बुझि कए नुका रहल छें।

सत्य—[प्रतिवाद करैत] नहि !

शिव—और ई बात मालिक सँ आइ कहै पड़तौ। आइये साँझखुना ओ बजा पठौने छथि तोरा सँ सबटा बात क पता क' कए कहबाक लेल।

सत्य—[भीत स्वर मे] हम क-की कहबन्हि ?

शिव—हम त कहबन्हि जे तोंहू रामू क संग... [वाक्य कें अर्ध समाप्त राखि, मुसकिया कए इङ्गित करैत छथि।]

सुन्दर—आ' तकर माने, तोरो आपन रामू दादा क संग ..

सत्य—[भयार्त्त कंठें] नहि।

शिव—से नहि हेतौक जौं तों हमरा सभक संग मालिक क पास चलें,...

सुन्दर—और जे किछु जानैत छें आ' देखने छें से साफ-साफ बता दहीं।

शिव—की ? चलबें कि नहि ?

सत्य—[धीरें] हूँ।

सुन्दर—बस, त देर कथीक ? चल !

[सत्य, शिव आ' सुन्दर प्रस्थित होइत छथि। आन दिसि सँ ओहि शून्य मंच पर सीता और राम अबैत छथि।]

राम—तकर बाद ? तकर बाद की भेल ?

सीता—हैत की ? जे होइत अछि, सैह भेल।

राम—[असन्तुष्ट भए] मुदा अहाँ कखनहु किछु खोलि कए नहि कहलहुँ। इयैह शुरू भेल आ' इयैह शेष भ' गेल।

सीता—हमरा कोना पता चलत जे अहाँ कें जखन हम आपन अतीत दय जे किछु कहब तकरा रुचिगर बना कए कहै पड़त।

राम—[आहत स्वरें] अहाँ हमर बात बुझलहुँ नहि। रुचिगर बनैबाक बात नहि अछि। बात अछि सबटा सुनैबाक। ने रुचिगर बनबै कहैत छी, ने छोट [थम्हैत], मुदा अहाँ जौं से कहै नहि चाही त...

सीता—नहि, कहब कियैक नहि ? नारी क देह पर पुरुषक लोभ क कथा सबटा एकहि रंग क होइत छैक। मात्र पात्र-पात्री आ' परिवेश आन होइत छैक। [थम्हैत] हमर अतीत कें नरक बनैबाक लेल दायी छलाह दू गोटे। जहिया धरि बाबूजी जीवित रहलाह, समस्या एहन नहि छल। मुदा रामलीला क ओहि घटना क बाद शरीर नाम क वस्तुए पर घृणा होमै लागल।

राम—की भेल छल ?

सीता—ओहि दू गोटे मे सँ एक छल हमरा सभ क मेकअप मैन। ओ बूढ़ भ' गेल रहैक, मुदा देह क भूख कम नहि भेल छलैक। केहनो नारी रहैक, तकरा देखितहि जेना ओकर आँखि सँ लोभ क लेर चूबै लागैत छल।

राम—आर एक गोटे ?

सीता—राम क पार्ट खेलाइत छल, गाबै छल नीक, तैं ओकरा नीक पार्ट भेंटैत छलैक। मुदा, देखै मे कुरूप छल। ओकर उमरो कम नहि छलैक। ताहि पर ओकर बाजब-भूकब पुरुष सन छलैके नहि। माने......

राम—बुझलहुँ। त ओ सब कैने की छल ?

सीता—ओहि दिन जखन हम......

राम—[बाधा द' कए] कोन दिन ?

सीता—जहिया अहाँ सभक अड्डा मे आनल गेल छलहुँ।

राम—ओ !

सीता—ओहि दिन हम रामलीला बला सब कें छोड़ि कए जा रहल छलहुँ।

राम—कियैक ? की भेल छल ?

सीता—हैत की ? बहुत दिन सँ दुनू क नजरि छल हमरा दिसि। आन-आन लड़की सभक दिसि त जैबाक साहस नहि छलैक ओहि दुनू कें। हम एक त नव छलहुँ आ' दोसर देखै मे......। भरिसक तैं सोचने छल जे

फुसलैबा मे असुविधा नहि हैत।

:ाम — हूँ।

ीता—ओहि राति जखन रामलीला शुरू हैबा मे देर छलैक, तखनहि सँ मैनेजर सब कें चरिऔने घुरि रहल छल। आन-आन जगह त देरे सँ शुरू करैत छलाह ओ सब। ओहि दिन भरिसक मेला मे कोनो बड़का अफसर वा क्यो आबैबला छलाह, तैं ओ हड़बड़ा रहल छलाह। मुदा, के हुनक सुनतिहन्हि? हमरा सुनै पड़ैत छल, कारण हम नव छलहूँ— हमर नौकरी गेने आर कोनो सहारा नहि छल। हमहीं पहिने गेलहुँ मेक अप करैबाक लेल। तखन मेक-अप मैन सेहो तैयार नहि भेल छल। ओहो सबटा सामान सजा कए तैयारे भ' रहल छल, कारण ओहि दिन हम सब आयले छलहुँ। तैं सबटा तैयारी पूरा नहि भेल छलैक। तैयारी माने की? एकटा टेबुल, कैकटा कुर्सी आ' मेक अप क रंग तंग……।

[एतबा कहबाक संगहि संग मंच अन्हार भ' जाइत अछि। अन्धकारहि मे कैकटा कंठ स्वर सुनल जाइछ।]

ृपलाल—[नेपथ्य सँ] अरे अरे एम्हर नहि… हँ, कनेक हँटा कए। हँ बस, ओत्तहि ध' दहीं। कुर्सीयो सब नेने आबें। एकटा ध' दहीं टेबुल क पास, आ' तीन चारिटा एम्हर ओम्हर। और ऐ! कि दन ने नाम थिकौ, ओहि कमरा मे एकटा बक्सा भेंटतौक, पैघ नहि, छोटे सन— से ल' आन… ओ इयैह त आबि गेल अछि। हँ; आबह आबह। एत्तहि, एहि टेबुल पर… ध' दहक। बस ठीक अछि। तों सब आब जा सकैत छह।

[कैक मुहूर्त्तक मध्य मंच आलोकित भ' उठैत अछि। रूपलाल बक्सा मे सँ मेक-अप क सामान सबटा निकालि कए टेबुल पर सजा कए राखि रहल छलाह। सीता धीरे-धीरे प्रविष्ट होइत छथि।]

सीता—भेल सैतल?

रूपलाल—[घुरि कए भरि मुँह हँसैत] आउ, आउ।

सीता—एखन धरि सबटा सजाओल नहि भेल अछि ? [कहैत कुर्सी पर बैसैत छथि ।]

रूपलाल—[लोभी जकाँ देखैत] आब अहाँ आयल छी, सबटा भैये जायत की।

सीता—जल्दी करू। ओम्हर मैनेजर चरिया रहल छथि सब कें।

रूपलाल—से त हुनक काज थिकन्हि, तैं ओ करैत छथि। मुदा एखन क्यो एतय मेक अप करावै आओत थोड़बे ? एखन बस अहाँ आ' हम रहब एतय।

सीता—शुरू करू।

रूपलाल—[व्यस्तता देखा कए] हँ, इयैह कैलहुँ। देखू ने, एत्तेक हड़बड़ी सँ कत्तहु काज भेलैक अछि ? ई सब काज धीरे-धीरे करब उचित थीक। [सीता कें निरुत्तर देखि कए आपन काज करब बन्द करैत] आन लोगक बात छोड़ू, हमहीं कि मैनेजरबाक परबाहि करैत छियैक ?

सीता—तखन अहीं कियैक हड़बड़ा कए टेबुल सजा कए बैसल छी ?

रूपलाल—से त ओ कहलन्हि अहाँ सब सँ पहिने मेक अप करायब, तैं। अहाँ लेल हम टेबुले कियैक, कत्तेक किछु सजा कए बैसल छी। [कहैत एकटा कुर्सी घिसिया कए सीता क कुर्सी क पास आबि कए बैसबाक प्रयास करैत छथि।]

सीता—[रूपलाल क बैसबा सँ पहिनहि] बैसल रहबाक काज नहि, अपन काज करू।

रूपलाल—[अपन वृद्ध आ' निष्प्रभ आँखि सँ तन्मय जकाँ सीता कें निहारैत छथि। सीता क कथन सँ बाधा पाबि कए] हँ; से त करैये पड़त। [कहैत टेबुल पर क दुइ एकटा वस्तु हाथ मे ल' कए पुनः घुरैत छथि।] मुदा हमरा सँ पुछू त आइ ई सब करबाक इच्छा नहि होइत अछि। एत्तेक लोगक भीड़ मे अहाँ सँ नीक जकाँ एकहु दिन बातो नहि क' सकैत छी। आइ जी भरि कए बात करै लेल......

सीता—ककही दियह।

रूपलाल—[तत्पर भ' कए ककही सीता क हाथ मे धरावैत] नीक जकाँ केस थकरि लियह। आरम्भे हैत सीता क वनवास सँ ने, तेँ केस रहत खुजल।

सीता—से कि हम नहिं जानैत छी ?

रूपलाल—हँ, से जानब कियैक नहि। एकटा जवान जहान लड़की बहुत किछु जानैत अछि, मुदा तैयहु तकरा कहै पड़ैत छैक, कहि कए बुझावै पड़ैत छैक। इयैह जेना, अहाँ कत्तेक सुन्दर छी, अहाँ कत्तेक... खैर, से जाय दियह। [उठि कए उपविष्ट सीता क माथ पर हाथ रखैत] लाउ हम केस थकरि दैत छी।

सीता—[थकरब बन्द क' कए] रहै दियह, से हम अपनहि क' लेब। पहिने अहाँ केस क मेक-अप चढ़ा दियह।

रूपलाल—[किछु क्षुब्ध भ' कए टेबुल लग घुरि अबैत छथि। एकटा सस्त फाउण्डेशन क्रीम क डिब्बा सँ कनिटा क्रीम निकालि कए सीता कें दैत] लियह, ई पहिने नीक जकाँ... अहाँ त जानितहि छी। [सीता क्रीम ल' कए रूपलाल क वार्त्ता क उपेक्षा करैत समस्त मुख पर नीक जकाँ लगा लैत छथि। रूपलाल और एकटा डिब्बा सँ किछु सफेद चूर्ण ल' कए सीता क मुँह मे लगैबाक लेल अगुआ जाइत छथि। एकटा कुर्सी पर बैसि कए ओ सीता क मुख पर रंग लगाबैत छथि आ' स्पर्श सुख क अनुभव करैत छथि।]

सीता—[रूपलाल कें बहुत देर धरि रंग लगाबैत देखि] भ' गेल ?

रूपलाल—[तखनहु घसैत] आह, अहाँ बड्ड अधीर जकाँ भ' जाइत छी। [कहैत हाथ हँटा लैत छथि।]

सीता—हैब नहि ? ओम्हर मैनेजर हमरा तखनि सँ... आ' एम्हर अहाँ—

रूपलाल—[दुनू गाल पर रूज लगबैत छथि। तकर बाद एकटा तूलिका मे कारी रंग लगा कए भौं रंगै लागि जाइत छथि।] अहाँ त अधीर हैबे करब, मुदा हम त कहब जे तकर कोनो प्रयोजन नहि— एखन भरि

जिनगी पड़ल अछि......

सीता—की बेकार बात क' रहल छी? कथी क प्रयोजन नहि छैक? हम की जिनगी शेष हैबाक बाद स्टेज पर उतरब? लियह। हाथ चलाउ!

रूपलाल—[सीता क आँखि क पल्लव मे काजर जकाँ कारी रंग लगबैत] बात ई अछि जे हाथ त हम चला सकैत छी। मुदा, बेसी जल्दी चलायब त अहाँ सीता नहि बनि कए शूर्पणखा बनि जायब!

सीता—ठीक अछि। अहाँ अपनहि हिसाब सँ काज करू। हमरा की अछि? देर हैत त मैनेजर बुझा देताह!

रूपलाल—एखन शो शुरू हैबा मे डेढ़ घंटा बाकी अछि। तेँ मैनेजर किछु नहि कहत। [दोसरो आँखि पर काजर लगाबैत छथि। तकर बाद दुनू हाथेँ सीता क मुँह धरैत कहैत छथि।] हँ, ठीके भ' रहल अछि। मुदा की ने एकटा सून-सून लागि रहल अछि। ओ हँ...... ठोर दे त......

[वाक्य कें अर्ध समाप्त राखि कनेक ललका रंग ल' कए सीता क मुँह कें एक हाथें ध' कए दोसर हाथें ठोर रंगब शुरू करैत छथि। रंगैत-रंगैत आपन मुँह कें सीता क मुँह क पास ल' जाइत छथि।]

सीता—[रूपलाल क हाथ हँटाबैत] भ' गेल अछि!

रूपलाल—नहि, देखैत छी अहाँ सबटा चौपट क' देब!

सीता—कियैक?

रूपलाल—[टेबुल पर सँ अयना उठा कए सीता क हाथ मे दैत] अपनहि देखू—की भेल अछि। लेधड़ि गेल ने रंग! [सीता अयना सँ अपना कें देखि कए पुनः तकरा घुरा दैत छथि] आब फेरो एकरा उठैबाक लेल एकटा झमेला हैत। [एकटा पुरान कपड़ा मे कनेक तेल लगा कए ओ ठोर क पास लेधड़ल लाली कें मेटा कए ओतय पुनः सफेद चूर्ण घसैत छथि। तकर बाद पुनः सीता क मुँह कें नीक जकाँ निहारैत छथि।] हँ, आब एकटा सिनूर क बिन्दिया... [कहि कए ललका रंग सँ कपार पर एकटा पूर्ण चन्द्राकृति बिन्दिया लगा कए कनेक मांगो मे लगबैत छथि।

एकटा तिलबा बना दैत छथि ठोर क नीचाँ। तकर बाद पीयर रंग क साड़ी निकालि कए सीता क हाथ मे द' कए कहैत छथि।] एकरा पहिरि लियह, तखन हम केस ठीक क' देब !

[सीता साड़ी ल' कए प्रस्थित होइत छथि। रूपलाल अयना निकालि कए अपना कें निहारैत रहैत छथि। ककही सँ एक बेरि अपन केस थकरि लैत छथि। रूमाल सँ मूँह पोछि कए कनेक क्रीम ल' कए मुँह पर लगा लैत छथि। तकर बाद कनेक अत्तर ल' कए देह मे छींटि लैत छथि। तावत सीता वनचारिणी क वेश मे कनेक ऊँच क' कए बिना ब्लाउज क साड़ी पहिरि कए प्रविष्ट होइत छथि।]

वाह! अपूर्व! एखन लियह। कनेक क्रीम आ' सफेद रंग आपन गोर पर औंसि लियह!

[सीता रूपलाल क कथनानुसार क्रीम आ' रंग पैर पर लगाबैत छथि। रूपलाल तावत् लोभी जकाँ सीता कें देखैत छथि। लगाओल भ' गेलाक बाद सीता सप्रश्न दृष्टियें रूपलाल क दिसि देखैत ठाढ़ होइत छथि। रूपलाल कनेक रंग हाथ मे ल' कए अगुआ अबैत छथि।]

आउ! आब अहाँ क पीठ पर रंग लगा दी।

[सीता पाछाँ घुरि कए ठाढ़ होइत छथि। रूपलाल पहिने नीक जकाँ क्रीम लगा दैत छथि। तकर बाद रंग लगायब शुरू करैत छथि। रंग लगबैत - लगबैत धीरे -धीरे ओ सीता क एकदम पास आबि जाइत छथि। सीता असहिष्णु जकाँ अपन स्थान-परिवर्त्तन करैत छथि।]

जाह! गला आर मे त रंग लगैबे नहि कैलहुँ।

[सीता कें घुरा कए गला मे रंग लगा दैत छथि। लगबैत - लगबैत दुनू हाथ सँ कन्हा पर रंग लगैबाक छल सँ पूर्ववत धीरे - धीरे सीता क पास चलि अबैत छथि। रूपलाल क दुनू हाथ पीठ दिसि चलि जाइत छन्हि। रूपलाल सीता कें आलिंगन करबाक चेष्टा करैत छथि। सीता आपत्ति सूचक शब्द कहैत अपना कें छोड़ैबाक चेष्टा करैत छथि। तखनहि मंच पर

गौरीनन्दन क प्रवेश होइत छन्हि।]

सीता—[धक्का द' कए रूपलाल कें हँटा दैत छथि।] शैतान ! चिता पर चढ़बाक वयस भ' गेल छन्हि आ' एखनहु......

[रूपलाल उत्तेजना सँ हाँफैत रहैत छथि।]

गौरीनन्दन—की भेल अछि सीता !

सीता—[पाछाँ घुरि कए गौरी क पास आबि कए एकटा हाथ ध' कए काँधें कँपैत] देखू ने ; ई हमरा...... [कहैत कनमुँह भ' जाइत छथि।]

गौरीनन्दन—बुझलहुँ। अहाँ जाउ ! हम देखैत छी। [सीता प्रस्थित होइत छथि। किछु काल गौरी आ' रूपलाल एक दोसराक दिसि देखैत रहैत छथि। तकर बाद रूपलाल टेबुल क दिसि घुरि कए काज करबाक अभिनय करैत छथि। गौरीनन्दन किछु काल रूपलाल क सबटा गतिविधि कें देखैत छथि। तकर बाद अगुआ कए रूपलाल क पास आबि कए हुनक कन्हा पर हाथ रखैत] तोहर मरबाक दिन लगिचाओल छह।

रूपलाल—कियैक ? के मारत ? तों ?

गौरीनन्दन—हम नहि त आने क्यो। मैनेजर कें पता चलतन्हि त......

रूपलाल—थम्हह ! मैनेजर क नाम ल' कए डरैबाक चेष्टा नहि करह। कोना पता चलतन्हि हुनका ? तों कहबह ?

गौरीनन्दन—भ' सकैत अछि।

रूपलाल—तखन तोरो पोल खोलि देबह हम। तों कोन छौंड़ी कें कोना की कैने छह— सबटा हमरा पता अछि। चाही त ओहि छौंड़ीयहु सँ कहबा सकैत छियह। अहुना ओहि मैनेजरबाक हम परबाहि करैत छियैक थोड़बे ? ओ त अपनहु—

गौरीनन्दन—ठीक अछि। के ककर परवाहि करैत अछि, से देखल जेतैक। एखन मेकअप लगाबह— आपन काज करह। कालिह सबटा फैसला भ' जेतैक।

रूपलाल—[क्रीम आ' रंगक डिब्बा धरा दैत] चलह, लगाबह। कालिह फैसला भ' जेतैक ! ओ कालिह कहियहु आओत कि नहि तकरे कोनो ठीक छैक ?

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

छठम दृश्य

[आलोकित शून्य मंच पर सीता आ' गौरीनन्दन ठाढ़ रहैत छथि। रामलीला क एकटा आख्यान मे दुनू अभिनय करैत छथि।]

सीता—आर्यपुत्र !

गौरीनन्दन—कहू प्रिये !!

सीता—आइ देखल अछि, एहि वन मे एक,
अद्‌भुत स्वर्ण हिरण।
शैशव राति क, स्वप्न क छन्द मे,
नचैत स्वप्न-सुमन।
सूर्य अस्तमित, वन क चतुर्दिक
तैयहु छल आलोकित।
पवन कियत्क्षण, मन्द अनुरणन,
गबइत अनुपम गीत।
पट क चन्द्रमा, हिरणगात्र केर
छल सम्बर्धित शोभा।
भीत नयन केर, सजल दृष्टि पट,
छल सुन्दर मन-लोभा।
ओहि हरिणी दिसि, हमर तरुण मन,
ईप्सा मे धावित अछि।

ई वन-जीवन एहन जीव बिनु
व्यर्थ अलोपित उन्मन।

गौरीनन्दन—अहीं धन्य धनि पुष्प प्रसूनित,
सुख क गीत छी सीता।
स्वर्ण हिरण की ? पृथ्वी आनि दी
धवल पूर्ण सुस्मिता।
कतय हिरण अछि ? गेल कोन दिसि ?
दच्छिन दिसि वा उत्तर ?
एतबा जानितहि, स्वर्ण हिरण हम,
एतय आनि देब सत्वर।

सीता—उत्तर दिसि सँ नचैत दच्छिन
गहन वन क दिसि गेल अछि...

गौरीनन्दन—हमर धनुष आ' तीर कतय अछि
ई हमरा लै खेल अछि।

[सीता गौरीनन्दन कें पथ देखा कए प्रस्थानोद्यत होइत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि। अन्हारहि मे शूर्पणखा क स्वर-वार्त्ता परिश्रुत होइत छन्हि।]

नारी कण्ठ—[नेपथ्य सँ] हा-हा-हा-हा-हा !
रामचन्द्र अपना कें बुझैत छलाह बुद्धिमान।
हमर प्रेम केर अश्रद्धा कए प्रत्याख्यान कैलन्हि।
और एखन, ओ अपन सरल और मूर्ख पत्नी कें
सुखी करबाक लेल दौगलाह हमरहि पाछाँ।
आ' कि तखनहि ओम्हर सरल जानकी
फँसतीह रावण क जाल मे [थम्हैत]
मन पड़ैत अछि ओहि कुदिवसक

जहिया प्रेम क नाक कटल छल,

लंका जा कए अश्रुसिक्त भए कहने छलियैक सबटा कथ्य !

[एतबा कहैत-कहैत धीरे-धीरे नेपथ्य क नारी स्वर म्रियमाण भ' जाइत अछि। मंच अर्ध आलोकित भ' उठैत अछि। पार्श्व दिसि मुँह कैने एक गोटा कें श्राव [प्राम्प्ट] करैत देखल जाइछ। ओत्तहि ठाढ़ भ' कए सीता आ' गौरीनन्दन ओहि कातक मंच पर रामलीला क शूर्पणखा आ' रावण क वार्त्तालाप क दृश्य देखबाक अभिनय करैत छथि। शूर्पणखा आ' रावण क वार्त्तालाप एक दम मद्धिम स्वर मे भ' रहल छल; आ' तैं नीक जकाँ श्रुत नहि भ' रहल छल।]

गौरीनन्दन—[शूर्पणखा क वक्तव्य क शेष हैबाक बादे घुरि कए] ई शूर्पणखा बनैवाली लड़की क की ने नाम थिकैक ?

सीता—[मन पाड़बाक चेष्टा करैत] हमहू बिसरि गेल छी। कियैक ?

गौरीनन्दन—ई सत्ते नीक अभिनय करैत अछि। लगैत नहि अछि जे नव आयल अछि।

सीता—कैने हेतैक आनो ठाम !

गौरीनन्दन—हम त देखैत छी जे हमरा सभक कम्पनी मे पुरान सँ नवे लड़की सब नीक अभिनय करैत अछि, गबैतो बेसी नीक अछि, जखन कि उन्टे हैबाक चाही छल।

सीता—सब कतय नीक करैत अछि ? हमरा त शूर्पणखा टा......

गौरीनन्दन—आइना कतहु अपन आँखि कें देखैत अछि ?

सीता—माने ?

गौरीनन्दन—और जकरा दय जे किछु कहू, एक गोटा क अभिनय आ' गीत सब सँ नीक लगैत अछि हमरा।

सीता—ककर ? शूर्पणखा क ?

गौरीनन्दन—नहि।

सीता—तखन और ककर ?

गौरीनन्दन—[गम्भीर स्वर मे] अहाँ जानि-बुझि कए...... हम अहाँ दय कहि रहल छी।

सीता—हम ? धत्। अहाँ तखन अभिनय क किछु नहि बुझैत छी।

गौरीनन्दन—भ' सकैछ। [सीता क पास आबि कए] मुदा हम अभिनय सँ बेसी बुझैत छी जीवन कें। हम रामलीला क राम नहि, सचौंका राम बनै चाहैत छी।

सीता—त बनू गय ! अहाँ कें के मना करैत अछि ?

गौरीनन्दन—हम त बस अहीं सँ डरैत छी!

सीता—हमरा सँ ? कियैक ?

गौरीनन्दन—डरैत छलहुँ— अहाँ जौं नहि कहि दी। आइ हम निश्चिन्त भेलहुँ। अहाँ— अहाँ हमर जीवन क सीता छी। [कहि कए सीता कें आलिंगन करै चाहैत अछि।]

सीता—ई की ? ई की क' रहल छी ? [छोड़बैत] छोड़ू ! छोड़ि दियह— नहि त हम चिकरब। [डरें सीता कें छोड़ि दैत छथि और उत्तेजित भए काँपै लागैत छथि।] शैतान— कुकुर नहि तन। [क्रोध सँ आत्म विस्मृत भए गौरीनन्दन क मुँह पर थूकैत छथि आ' तीव्र गतियें मंच सँ निष्क्रान्त होइत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

सातम दृश्य

[मंच आलोकित होइत अछि। पहिलुके जकाँ सीता आ' राम ठाढ़ रहैत छथि।]

सीता—बस, इयैह भेल हमर खिस्सा और हमर जीवन। ओहि राति राम-लीला क बाद हम स्थिर सिद्धान्त कैलहुँ जे......

राम—जे ओतय सँ भागी, सैह ने ?

सीता—हँ।

राम—मुदा जौं कोनो और खराब जगह पर पहुँचि जैतहुँ, तखन ?

सीता—[व्यंग्यात्मक हँस्सी हँसैत] से कोनो नीक जगह पर पहुँचल छी थोड़बे!

राम—[किछु काल चुप रहैत छथि] सेहो त ठीके कहैत छी। ईहो त नरके थीक, जकर यमराज छथि ब्रम्हनारायण बाबू।

सीता—और चित्रगुप्त छी अहाँ।

राम—नहि, हमरा सन कतेको चित्रगुप्त अछि। हुनकर एकटा अड्डा छन्हि थोड़बे। हमरहि सन सन सैयो लोग हुनकर जाल मे फँसल पड़ल अछि।

सीता—कहियो निकलबाक मन नहि करैत अछि एहि जाल सँ ?

राम—इच्छा त कहियो कखनहु होइ त अछि। एतहुका जीवन तखन असह्य लागैत अछि। मुदा......

सीता—की !

राम—तखनहि सोचैत छी, कतय जायब ? ककरा लेल एहि जाल कें छिन्न-भिन्न करबाक कोशिश करब ?

सीता—तेहन क्यो नहि भेंटल अछि एतबा दिन मे ?

राम—[सीता क दिसि देखैत] भरिसक भेंटल अछि। मुदा वयसक संग-संग साहसो अथर्व भ' जाइत अछि। साहस नहि होइत अछि जे......

सीता—जे की ?

राम—इयैह जे तकरा सँ पूछी जे...। जाय दियह। अहाँ क जीवन क बात सुनैत छलहुँ— अहीं क बात चलै दियौक!

सीता—हमर आब कोन बात रहि गेल अछि ?

राम—सब सँ जरूरी बात।

सीता—की ?

राम—बात नहि, एकटा प्रश्न।

सीता—पूछू।

राम—अहाँ क बाबूजी क मुइलाक बाद की सब भेल त कहनहि छी। मुदा ई नहि कहलहुँ— तकर पहिने एहि दीर्घ जीवन मे कि क्यो नहि भेंटल छल

जकरा लेल अहाँ मने मन प्रार्थना करैत छलहुँ ?

सीता—नहि ! कहनहि त छी। नेनपने सँ हम माय आ' बाप क ओहि विचित्र सम्बन्ध क शिकार भेल छलहुँ। हम आपन उमिर क और पाँच जन साधारण बच्चा जकाँ चिन्ता नहि करैत छलियैक, यद्यपि छलहुँ सब सँ साधारण— देखबा मे। बाबूजी जा' धरि जीवित रहलथिन्ह, ता' धरि घर क काज, पढ़ब-लिखब आ' अद्‌भुत सब चिन्ता मे जीवन बीति जाइत छल।

राम—आश्चर्य ! तें जीवन भरि मे कोनो पुरुष कें प्रेमक निमंत्रण नहि देलहुँ ?

सीता—निमंत्रण नहि देने छी। मुदा निवेदन त कैनहि छियन्हि, बिना ककरहु कहनहि।

राम—सत्ते। के छथि ओ ? कोना की भेल कहू ने ?

सीता—साधारण नारी क साधारण प्रेम। अहाँ त सबटा जनितहि छी।

राम—सबटा कहू त हम अहाँ कें हुनका सँ मिला देब।

सीता—मिला देब ? मुदा हम त प्रत्याख्याने क डरें...।

राम—बेचबाक लेल अहाँ कें एतय आनल गेल छल। से जखन नहियें भेल तखन अहाँ कें कतहु ने कतहु त हँटाबै पड़बे करत तें जौं हुनकर अता-पता कहियन्हि त ओत्तहि...। ओतय अहाँ जीवन भरिक लेल निश्चिन्त जकाँ रहि सकैत छी, मुदा एतय त से नहि भ' सकैत अछि।

सीता—नहि भ' सकैत अछि ?

राम—कोना हैत ? हम सब त खूनी और बदमाश छी। हमरा सभक जिनगीयेक कोन भरोस ? कहिया की भ' जाय !

सीता—मुदा हम त... [कहिये कए दुनू हाथें मुँह झाँपि कए कानै लागैत छथि।]

राम—[सीता कें कानैत देखि माथ पर हाथ धरैत] सीता ! की भेल ?

सीता—[राम क हाथ अपना हाथ मे लैत अश्रु सजल कंठ] हम त अहीं कें सबटा निवेदन क' कए बैसल छी। हमर की हैत ?

राम—[दुनू हाथेँ सीता क मुँह ध' कए] ई की कैलहुँ सीता ? हुम खूनी छी। हम . ...

सीता—अहाँ जे किछु छी जेहन छी— हमर छी। अहाँ कहू अहाँ हमर नहि छी ?

[सत्य, शिव आ' सुन्दर प्रविष्ट भ' कए सबटा देखैत छथि।]

शिव—वाह! अपूर्व !!

[शिव क मन्तव्य सुनि कए राम आ' सीता पाछाँ घुरि कए देखैत छथि।]

सुन्दर—[सत्य सँ] की ? आबहु तोरा हमरा सभक बात पर विश्वास भेलह कि नहि ?

राम—तों सब एतय की क' रहल छह ?

सुन्दर—तकर पहिने हुजूरे एक गो बात क जवाब देथि। अपने एतय की क' रहल छियैक ?

राम—[खिन्न भ' कए] हम ? हम की करब ? हम त—

शिव— —प्रेम क' रहल छलियैक !

सुन्दर—नहि-नहि, गप क' रहल छलथिन्ह।

राम—हम जे किछु करी, ताहि सँ तोरा सभ कें कोन मतलब ?

सुन्दर—वाह रे दादा !! मौगी ल' कए मजा लूटबह तों आ' हम सब साछा मौगी उड़ा कए आनबैक ?

राम—खबरदार ! जबान सम्हारि कए बात करह।

सुन्दर—कियैक तों साला हमर बाप छह की ?

राम—के ककर बाप अछि से एखनहि बता दैत छी। सीता ! अहाँ भीतर जाउ।

शिव—नहि, ओ भीतर नहि जैतीह। [सत्य, शिव आ' सुन्दर राम आ' सीता कें घेरि लैत छथि।]

राम—तों सब चाहैत की छह ?

सुन्दर—कैफियत !

राम—से हम ब्रम्हनारायण बाबू कें देबन्हि।

सुन्दर—[छूरा निकालि कए] ब्रम्हनारायण बाबू कें ? [उच्च स्वरें हँसैत]
ओ त नहि अयलाह— एहि छूरा कें पठा देलन्हि......

शिव— ...तोहर कुसल-मंगल पूछबाक लेल।

[तावत् सुन्दर आ' शिव राम क पास आबि जाइत छथि। सत्य सीता कें घींचि कए राम सँ अलग क' लैत छथि। सीता चीत्कार करैत छथि और अपना कें छोड़ैबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा सत्य सीता क दुनू हाथ पाछाँ दिसि मोड़ने रहैत अछि।]

सुन्दर—साला, अड्डा क माल सँ परेम क' रहल छलह ?

शिव—तखनहि एकरा भगबै नहि देने छलह; की ? त खर्च ऊपर करै पड़लैक !

सुन्दर—अहिना खर्च ऊपर भ' रहल छल, ऍं ?

राम—[डरें विवर्ण भए राम छूरा निकालै चाहैत छथि। मुदा सबटा जेबी हँसोतियहु कए किछु नहि निकलैत छन्हि। से देखि कए शिव आ' सुन्दर अट्टहास करै लागैत छथि। राम जीबाक लेल मिनती करैत कहैत छथि।]
मुदा... हम प्रेम केलहुँ त कोन पाप कैलहुँ ?

शिव—पाप नहि, पुण्य कैलें साला।

सुन्दर—प्रेम नहि, लीला कैलें। लीला रामलीला।

राम—[चीत्कार करैत] हमर प्रेम...

सुन्दर—इयैह लहक तकर मोल ! [कहैत चाकू चला दैत अछि। ओम्हर सँ शिवो आपन छूरा सँ आघात करैत अछि।

सीता—[सत्य क हाथ मे बन्दिनी रहितो चीत्कार करैत] न-अ-अ-अ-हि !!!!

[राम पेट सँ सुन्दर क छूरा निकालि कए फेंकि देत छथि। पेट सँ खून बहिराय लगैत छन्हि। एक हाथ सँ पेट धैने आ' दोसर हाथ सँ ओ एकटा डूबैत मनुष्य जकाँ किछु पकड़बाक चेष्टा करैत खसि पड़ैत छथि और निस्पन्द भ' जाइत छथि।]

लेखक परिचिति :

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

भाषाविज्ञानक सान्मानिक स्वर्णपदक प्राप्त स्नातक,
कलकत्ता विश्वविद्यालयक १९७२ क ईशान स्कालर।
भाषाविज्ञानक स्नातकोत्तर अध्ययनहु मे स्वर्णपदकप्राप्त।
एखन दिल्ली विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान विभाग मे
यू० जी० सी० फेलो।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ :
कवयो वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संकलन)
अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संकलन)
नायकक नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)
एक छल राजा (१९७३, मैथिली नाटक)
नाटकक लेल (१९७४, मैथिली नाटक)
प्रत्यावर्त्तन (१९७६, मैथिली नाटक)
रामलीला (१९७७, मैथिली नाटक)
आन्दोलन (१९७७, मैथिली नाटक)
जनक आ' अन्य एकांकी (१९७८, एकांकी-संग्रह)

स्थायी निवास :
ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिला—सहरसा।

वर्त्तमान पत्राचारक पता :
भाषाविज्ञान विभाग, आर्टस फैकल्टी एक्सटेन्शन,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७

समकालीन मैथिली कविता

सम्पादक

भीमनाथ झा

मोहन भारद्वाज

साहित्य अकादेमी

नचिकेता

नवीन अध्याय

हम काँचकेँ हीरा बुझने छलहुँ,
तेँ आब नहि भरमायब।

किन्तु, एखन तँ बकुल झरि गेल अछि,
ओ झरल फूल—
अपन समस्त शोभा-छलनाकेँ हटा कए
नग्न विभीषिकाक रूपमे
आत्म-प्रकाश केने अछि।

तेँ, अपन पुरातनक शृंखलासँ—
हम सब मुक्त भेलहुँ।
एखन हवा नवीन रूपेँ बहतैक।
स्निग्ध शुभ्र पुष्प
सलज्ज आत्मसमर्पणसँ
पुनः नवीन रूपेँ मनकेँ उत्फुल्ल कऽ देत।
आ नवीन दिनक, नवीन युगक मनुष्यक
अभिनन्दन करतैक नव वसुन्धरा।

एकटा वैप्लविक जागरण
उद्वेलित करैछ आकाश-बतास
आणविक शक्तिक विषाक्त धुइयाँकेँ
हँटा देबा लेल जे अछि दृढ़प्रतिज्ञ।
ई सभ्यताक पुनर्नवीनीकरणक समय अछि
दिगन्तक आह्वान युगान्त सृष्टि करैछ।

एखनहि भोरहि एकटा गाड़ी आबि कए
पुरातन झरल बकुलकेँ निर्मम रूपेँ
पीसि कए चलि गेल।

(कवयो वदन्ति सँ, '66)

सुरुज

आ आरो एकटा भोर हैत।
बन्धु ! बहुत सहल। सहल बहुत।
आब देर नहि ! डर कथीक ?
सुरुजक ?
अहाँ कदाचित् सोचने होइ,
नव विहानक नवीन किरण अहाँक पुरान
आ सड़ल दिशाशून्य जिनगीकें प्रकाशमे लाओत।
कथीक डर बन्धु ?
अहाँक ओ गहीर दाग थीक चानक कलंक जकाँ।
अहाँ दिस जे तकैत अछि द्वेष-विषक दृष्टिसँ
ओ तकर मनक सड़ल घावक छाया थीक।

ओ किछु नहि !
बन्धु ! अहाँ बढ़ैत रहू कदम-कदम।
देखि की रहल छी ?
रास्ताक कातमे
ललित लवंगलताक लावण्यपर ईर्ष्या सँ
'कु' गाबि रहल अछि कोकिल
ओकरहि डारिमे बैसि।
बन्धु ! वसन्त-पालित कोकिल वसन्तक पूर्णताक
करैछ समालोचना।
ओहि सबमे कान नहि दियौक।
आगाँ बाटे चलू, चलैत रहू।
हारल मनुक्ख पठाओल अछि अहाँकें
प्रतिनिधि बना।
फाड़ू ई रातुक अन्हारक ओढ़ना !
हमर सहानुभूति अहाँक संगे अछि !
बंधु !
उतारि लियह अपन चारूकातक
तथाकथित महापुरुषक मुखौटा।
ओकरा सभक कदर्य स्वरूप उद्भासित हैत प्रभात-किरणमे।
हाथ ने काँपै !

कोनो ममता नहि।
ओहि सभकें टूटा कऽ कए हाथ-पैर-आँखि-कान छन्हि।
तैयो मनुक्ख नहि छथि,
मकड़ा छथि ओ सब।
जाल हुनक तोड़ि फेकू।
बन्धु !
अविचारक मकड़जालमे,
अत्याचारक कारी कोठरीमे,
अनाचारक कारागारमे
अहाँक पुत्र-कन्याकें ओ सब खून कैलन्हि अछि।
अहाँक स्त्रीकें कैलन्हि घर्षित !
अहाँक बूढ़ माय-बापकें धकेलि देलन्हि अछि
निराशाक खाधिमे, संत्रासक कुँइयामे।
हताशाक भेख धर प्रगति-पथयात्री अहाँकें
टाङ धऽ कए पाछाँ घीचने छलाह।
तें, क्षमा नहि। करुणा नहि कोनो।
ओहि सबकें जीवन्त समाधि दए
फाँसीक फंदामे टाङि अहाँ बढ़ैत चलू !

हमर प्राण ! हमर बन्धु !
भोरुकवा ऊर्द्धाकाशमे अछि एखनहुँ।
अहाँक लेल। हजारो हाहाकार अहाँक कण्ठमे
अछि गूँजि रहल।
वेदनाक अग्नि-परीक्षामे परीक्षित अहाँक
आँखिमे अछि कतेको उपवासीक अश्रुजल।
बन्धु ! जीतब अहाँ अवश्य।
मरलहुँ बहुत। हारलहुँ बहुत। सहलहुँ बहुत।
झंडा राखू ऊँच। देखू चितामे होइछ अहाँक कोहबर।
आब नहि हारब ! मरब नहि ! नहि सहब !
आब जीतब अहाँ, हमर बन्धु ! देखू—
ललका सिनूर जकाँ आनन्द-अबीर छिड़कैत
उगि रहल अछि सुरुज ! सुरुज ! नव युगक ! नव विहानक !

(अमृतस्य पुत्राः सँ, '70)

सामूहिक आकाश झूठ होता जा रहा

परमेश्वर का बड़ा-सा आकाश
जैसे छोटा पड़ गया
हम लोग अपना-अपना आकाश
नन्हा-नन्हा आकाश तोड़े ला रहे हैं
उस आकाश को दीवारों और छतों से
घेर-घेर कर निश्चिन्त हो गये
बाहर का आकाश आज भी आदिम आकाश है
विशाल और मोहक और मन को ललचाने वाला…
मगर आदिम आकाश आज भी
तेंदुओं से भरा पड़ा है।
हम सभी लोग आदिम आकाश को
भुला कर भुला नहीं सके हैं
घरों में रेंड़ी तेल के दीए ले आए हैं
शायद रेंड़ी के दीए में और
आकाश के चाँद में कहीं समानता है
घर-घर में जलते दीए
लोगों को इतना अंधा बना चुके हैं
कि आकाश के हज़ारों तारे
और मुकम्मल चाँद
और इत्ता बड़ा सूरज
यूँ ही फीका पड़ता जा रहा है,
आकाश रोज़-रोज़ छोटा और वैयक्तिक
…और खंडित हो रहा है
और सामूहिक आकाश और ललचाने वाला आकाश
सचमुच छोटा और
झूठा होता जा रहा है…

कवि द्वारा मैथिली से अनूदित

□ उदयनारायणसिंह 'नचि

दमयन्ती को उपदेश

तीर के आसपास
पसरे रहते हैं लोग—
निरंग अशक्त लोग !
घासपात घेरे रहती है उन्हें
शैवाल में लिपटा तक्षक हवा में डोल रहा है
झाड़ियों में पगली आग सुलग रही है
दमयँन्ती, ओ दमयन्ती—सुनसान जंगल सिहर उठता है,
फूल-पत्तों के बीच होकर अनाथ सूरज घिसटता है
बहुत सावधान होकर—
आलोक चीरता है हिरण्य का पेट।

यहाँ तैंतीस अदद चेहरे दिखाई देते हैं,
मगर एक भी सुन्दर नहीं !
पेड़ सारे उपदेश देते हैं—
इधर आओ, उधर घूमो, उधर देखो—

दमयन्ती, ओ दमयन्ती, जंगल
पार मत करो !
अंधेरे में ईशान कोण में
देह के दलाल प्रतीक्षा कर रहे हैं
दमयन्ती, समय
मत पार करो !
नैॠत कोण में छिपे हैं नलदेव।

गाछ-बिरीछ
अब समझ चुके हैं
कविता कैसे आती है।
जान चुका है इतिहास, मनुष्य की क्रूरता,
कोई महावन निर्विचार उजाड़ उच्छन्न हो गया है
पोसे हुए पेड़ सारे धीरे-धीरे क्यों
भूल गये अपनी भाषा ?

दमयन्ती, मनुष्यों का विश्वास मत करो
वे तुम्हें बाँध लेते हैं
कथा, कविता और अफ़वाहों से
तुम जंगल मत पार करो !
वह होने से सारे पेड़
तुम्हें लेकर पहली कविता लिखेंगे।

मैथिली से अनूदित : जीवकान्त

संकल्प 5

मैथिलीक अनियतकालीन संकलन

संस्थापक

श्रीरामकृष्ण झा 'किसुन'

सम्पादक

केदार कानन

संकल्प : 5.
अंक : जून 1995.
संपादन : अवैतनिक.
संचालन : अव्यावसायिक.
प्रकाशन : अनियतकालीन.
वित्त : जन-सहयोग.

कलानन्द भट्ट आ गोविन्द माधव भारद्वाजक स्मृति मे.

परामर्श एवं सहयोग : डा. महेन्द्र. डा. सुभाषचन्द्र यादव.
महाप्रकाश. डा. शिवेन्द्र दास.
प्रो. राजेन्द्र झा. अशोक अशु.
विनोद कुमार. राजकुमार झा.

अक्षरांकक : धर्मदेव.
भीतरी पृष्ठक : प्रकाश कुमार.
प्रबंधक : डा. नवीन कुमार दास.
मुद्रक : धीरेन्द्र कुमार गुप्ता. सौरभ प्रेस. सुपौल.
सम्पादक : केदार कानन.
प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक. किसुन कुटीर. सुपौल-852131. बिहार.

एहि अंकक सहयोग राशि
भारत मे : बारह टाका
नेपाल मे : बीस रुपया
अन्य देश मे : दू अमरीकी डॉलर

नचिकेता

कत्ते बरसक बाद
आबि कए ठाढ़ भेलौं अछि
अहाँसभक अंगिना पर
हमरो एकटा कविता पढ़ै देब ?
कत्ते वर्षक बाद

मौन यै
भगा देने छलौं हमर कविता सुनि
कोन नेनपने मे नचिकेता
छंद भंगक जुरमाना
कोना कोना कऽ जुटौने छलहुँ
मोन यै ?

हमर कविता मे
एतय एकटा बड़क गाछ होइ छलै
ओतय बुचकुन बबाक दुआरि
पोखरि कातक घास-फूसक जंगल एहि दिसि
ओम्हर बाट लवटोलियाक
पछबरिया मे आमक शीतल गाछी
गेल कतय गोशाल हमर नहि जानि
सौरी घरक निशानो धरि नहि छइ
कतय गेली ओ सुगमा वाली दादी ?
एतबे समै' मे मेटा कोना गेल सबटा विंदु
बड़दगाड़ीक लीख टाटक अढ़
सिमरी बख्तियारपुरक सड़क
कत्ते वर्षक बाद

लगमा धार सँ अबै छल दूध-मलाइ
सोहा सँ अबै छला माह्टर-साहेब
गणितक पोथी अबै छलइ सहरसे सँ
बरसो सँ बन्न पड़ल भगवती थान
हमर कविता मे
बजैत बजार दिसि सँ आटा-चक्कीक पिपही
ने जानि कोना अबै छल बाढ़ि तिलावै मे
खूब कमाय छला खेसारी-का' फेरी सँ
ने जानि कोना अपनहि फेरो
सूखि जाइ छली तिलावै
मोन यै ?

बभनटोलीक बाट
रौता सँ आयल बर-बराती
राति-बिरातिक नौटंकी
उद्धम सिंहक तीन घोड़ाक खेल
सोनबरसा सँ आयल तीनगो हाथी
मौन यै
ताड़ी पी कए नचइ छलइ महेसरा
जानि कऽ झगड़ा-फज्झति करैत सराती
हमर कविता मे दाय छली बड़ दुखी
अन्न छलनि ने साल मे चारि महीना
झरकल अनोन अल्हुआ छलनि त्राता
नेना-लोकनिकेँ पहिराबै लै नहि कपड़ा
छठिक तँ कोनो नहिये छलनि जोगाड़
हमर कविता मे

आब
कत्ते बरसक बाद फेरो
आबि कए ठाढ़ भेलौं अछि
हमरा एकगो कविता पढ़ै देब ?

जानल–पहचानल

अहाँक शरीरक पृष्ठ पर पृष्ठ पढ़ि जाइत छी हम
तँ जीवनी लगैछ बड्ड जानल-पहचानल
लगैछ, हम अपनहि कहानी पढ़ि रहल छी

अपन गर्द आ गर्वक कथा
अपन तह आ गह्वरक गीत

पृष्ठ पर पृष्ठ पढ़ि जाइत छी
तँ लगैछ हमरा पता अछि सबटा अर्द्धविरामक,
जे किछु अछि बन्न कैने असमाप्त वाक्य हमर
भरल अछि गलत हिज्जै मुद्रण-प्रमाद,
तँ लगैछ ई शब्दकोश बड्ड जानल-पहचानल

अहाँ कहल, हमर
शब्द पर सँ विश्वास उठि गेल
अहाँ कहल, हम
जनै छी मात्र स्पर्शक भाषा
मृदुल मधुर मदिर अस्पष्ट—
छूअब खोजब हौंसथब हाथ फेरब
भूलि गेलहुँ अछि हम मुदा
स्वाभाविक ई भाषा हमर,
कतेको युग सँ बाजि रहल छी हम
बाजारू मिश्र भाषा अति साधारण
प्रयोजन बदलिते जकर व्याकरण बदलि जाइत अछि

कतेको शताब्दी सँ
अछि मात्र एकटा ग्रामीण अनुभूति,
जकर व्युत्पत्ति नहि दऽ सकै अछि क्यो;
दशक पर दशक तकरा जीबै छी हम
तँ ओ अनुभूति लगैछ बड्ड जानल-पहचानल

कियैक ने बैसै छी दू पल ?

अहाँ कियैक ने हमर पास आबि कए
बैसै छी दू पल
निकालि कए अपन जिनगी सँ जँ अनेरो
किछु शब्द बजबे कैलहुँ हमरा सँ तँ किछु वाक्य
बाजि ने उठत निदारुण सुर-सप्तक मे
अर्थक अनर्थक जटाजाल केँ छोड़ि आबू ने
आबहु एहि अकारण दौगैत हाँफैत
समय-सचेत काल-रथ पर बैसि आमने-सामने

आर बाजी किछु किछुओ निचक ।

ई मौनता चुप्पी कतहु नहि पहुँचाओत हमरा दुनू केँ
लऽ जा सकैछ अगिला स्टेशन किछु शब्दे
किछु यांत्रिक किछु स्वाभाविक किछु कष्टकल्पित
प्रच्छन्न जादू होइ छै यैं शब्द-लब्ध-संपदाक भीतर
भीतरक दुख-दर्द-अप्राप्ति-असुखकेँ
मास-समास सर्ग-उपसर्ग सँ झाँपि-तोपि कए
लऽ अनैत अछि ई लज्जारुण नवकनिञा जकाँ
निर्वाचित भेल छी अहाँ आइ हमरहि सँ बजबा लेल
नहि तँ बाजल भेल आइ तँ भरि जिनगी
निर्वेद निरुक्ति रहि जायत घेरने यात्रा-पथक
भंगठल स्मृति-पट पर ताहि सँ नीक इयैह
जे किछु बाजी किछुओ

बजबाक लेल तँ भेल बहुत किछु हैत
लेने हैत छीनि क्यो रातुक निन्न कि क्यो
जानि गेल हैत हृदयक बीजमंत्र
आ कि भऽ सकैछ
ओ ठग प्रतारणे छल कैने अहाँ सँ
आरो कतेको अनाघ्रांता केर घ्राणो सँ
घृणित कैने छल प्रतिश्रुतिक शब्द सबटाकेँ
लूटि कए हरि कए चलि देलक कतहु कि भऽ सकैछ
तेँ छी मौन अहाँ निःशब्द

बजबाक लेल तँ हैत कतेको टूटल शैशव
भांगल स्वप्न सब आधा-छीधा गीतक कली
बेकल शरीरक यंत्र सामाजिक शव
पुरुषक शासन मे दबायल वासना इच्छुक अंतरक
अकथित आलाप, वाद-प्रतिवादक स्वर सब
आवहु नहि उठायब तँ ई मौनता
नहि कतहु लऽ जायत अहाँकेँ नहि बाजऽ
अबैत अछि तँ कम-सँ-कम
नारा तँ उठा सकै छी द्रोहक स्वरेँ नहि किछु
तँ कियैक ने हमर पास आबि कए
बैसै छी दू पल चुप्पे-चाप

किछु तँ हमरो बुझऽ दियह अहाँकेँ
किछु तँ सीखऽ दियह इतिहास सँ ! □

तीनटा कविता

● डॉ॰ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

(१) समार्थपद

सपना बाजि नहि सकैत अछि
मूक बधिर निरुपाय दर्शनक वाचा अछि तकर,
नहि त अहाँक सवो नाम
बाजि सकैत छल एखनहि

एहन सब शब्द
जकर ने धातु मे दुर्बलता
ने प्रत्यय केर अभाव
कतेको उपसर्ग इर्द-गिर्द उड़ैत
चलि गेल अश्वखुरक गर्दा सङे
स्तब्ध भोथ अश्रव्य दर्शनक भाषा अछि तकर,
नहि त अहाँक प्रतिशब्द
हजारो उचरि सकै छल एखनहि

एहन सब शब्द
जकरा ल' कए हमरा लिखै पड़ैत
नवीन अमरकोश
नव कविता।

हैदराबाद
3.10.94



(२) तों

तोहर वाक्य हमर
अंतर धरि
हाँफैत, हकमैत
हिचकैत घुसै छौ!

तोहर तापत हाथ
हमरा धरै छौ
धीपल कड़ाही जकाँ।
ने जानि की सब
झरकि बरकि
पकि रहल अछि

धधकैत आगि मे हमर
हम छी,
तों छें,
छै कल्पतरुक डारी
बुढ़िया नानीक खिस्सा कोनो

आइ एहि आगि मे हमर
छै पकि रहल दसो दिशा
भ्रमित भ्रांति-पथ
नवो महीना गर्वक गर्भक
दीर्घ पहर, पंचम ऋतु
छठम रिपु

राग विलंवित
ताल त्रस्त द्रुत
भानु अस्तमित

(३)

एक जोड़ आँखि

सोचू त कनेक
अहाँ छी घर मे एसगरे
सजैत सँवारैत अपना कें आ' एक जोड़ आँखि
ओत्तहि
अहीं क शयन-कक्ष मे
जोहि रहल हो अहीं कें
देखैत कोना बदलि जाइत अछि
मानचित्र शरीरक, भाषा-भूगोल कोना
बदलि दैत अछि सबटा संकेत
आँखिक – काजरक लिपि सँ
ठोरक – लालीक लेख सँ
सिउँथक – सिनूरक रेखा सँ
कानक – डुलकैत पालकीक छवि
नाकक – नथनीक नचैत नेपुर सँ

सबटा
सब किछु देखि रहल अछि
आँखिक जोड़ा,
योजित कऽ रहल अछि भरिसक
देत कोना मेटा सबटा संकेत शरीर सँ
लेत कोना सोंखि सबटा शोणित अहाँक शरीर सँ
मांसक स्वाद, अहो-हड्डीक गुनगुन !
धन्य-धन्य कऽ रहल अछि आँखिक जोड़ा
देखि भीतरक घृणा, कारीखक क-ख,
देखि अंतरक प्रदूषण, वासनाक रेख,
देखि अंदरक कल्पना क्लेशक कविता
देखि पंजरक पजरैत आगिक सनेस

सबटा
सब किछु देखि रहल अछि आँखिक जोड़
आ' आब निश्चित कऽ देत अहाँक भंडाफोड़ !
एहि सँ पहिने
कि वैह अहाँकें बान्हि लैक अफवाहि मे कोनो
फोड़ि दियऽ तोड़ि दियऽ आँखि कें पाँखि कें दुनू
कि रहि जाय रहस्य अहाँक झांपल-तोपल
बहि जाय जिनगी अहाँक कोमल कोमल

सोचू त कनेक-
नहि त की भ' सकै छल आब धरि?

हैदराबाद
18.12.95

टोकू नई

△ उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'

आब ने हमरा टोकू मङ्गनी माय
भाग लिखल छथि आब अविद्या दाय
भोगि चुकल साहित्यक अत्तरदाय
आब ने सीखब काव्यकलाक उपाय
रचना रोग सँ हमरा दियऽ छोड़ाय
आब ने टोकू हमरा मङ्गनीमाय

करै छलौं कविता तखन भाषा की
जटिल चटुल जर्जर दुर्वर वाचा की
अर्थ ढहल आ' रूप बहल उपवन मे
लक्षण व्यंजन सब उपमानक मन मे
रोग घुसल अछि गद्यक शब्द सधाय
आब ने हमरा टोकू मङ्गनी माय
शब्द झरकि कए तत्त्वक पर्दाफाश
अर्थ बदलि कए महत्त्व मृदु आभास
जीर्ण ध्वनिम पर स्वन-रेखा केर वास
वाक्य अनम्र विबुधित विरुधामस
आब अहाँ केँ जानब नहि धरि आइ
आब ने हमरा टोकू मङ्गनी माय।

× × × ×

नव किछु करै नहि दैछ परमेसरा

नव किछु करै नहि दैछ परमेसरा
जनै' छी नव किछु करै नहि देत परमेसरा, तैयहु

दुइ दर्जन शब्द चूड़ाक संग बान्हि
बहिरौलहुँ पुत्रपूजाक कुत्रपीठ दिसि नहि जानि—

औ बाबू, पास करा' दियह हमर नेना केँ
बड़ मोसकिल सँ जुटैलहुँ अछि परीक्षाक राशि।

औ बाबू पढ़ि लियह ओ जे किछु नहियो लिखलक अछि
लिखै' लेल शब्द चाही अर्थ स्याही

बड़ मोसकिल सँ बजबौलहु अछि ओकरा सँ भाषा।
अहां की चाहै' छी ओकर जिनगी बिगड़ि जाय ?

औ बाबू, पुछड़ी बढ़ा दियह ओकर डिगरीक
बड़ मोसकिल सँ छियाह ठीक कनै छियै' एहन ठाम

जे दहेजक संग पासक शर्त अछि लागल।
ई आब इज्जतिक प्रश्न थीक

मात्र दुइये दर्जन शब्द द' सकै' छी अहां केँ
बाजि-भाँजि कए सुखी रहो'क अहाँक धिया-पुता कनिञा

नव किछु करै नहि देत परमेसरा

नहि त की की ने सपना देखने छलियै'
ठीके क' नेने छलहुँ

चुहड़ा केँ नहि रहै' देबै आब आपन डीह पर,
सूदि आ असलक बोझ सँ

धकिया कय भगायब पूरन महतो केँ
एक्को पाइ नहि बढ़ायब हमर खेत पर खटनिहार

लोग सबहक मजुरी
ठीके क' नेने छलियै

दूटा फौजदारी आ' एकटा देआमी ठोकि देबन्हि
बुचकुन तुनूक नाम
मात्र दुइ दर्जन शब्द
पीसि कए गारिक चटनी बना देबन्हि बुच्ची माईक लेल
पितिऔत कनक सुगमावाली संग लड़' लेल
हुनका चाहबे करियनि नब नव गारि
नव किछु करै नहि दैत अछि परमेसरा
तऽ आब हम की करू ?

सम्पर्क : केन्द्रीय विश्वविद्यालय
हैदराबाद-५००१३४

मोक्षक महजाल

★ सारस्वत

हे भगवन !
भंग बन
जे थिक सुतक सुरंग
रमणीक सुख - स्रोत
आ प्रकृतिक मुखारबिन्द
क' रहल अहाँक स्वागत
वीर विहीन सन धरती केँ देखि
सुरसा-सुख नेत्रक
हे प्रणम्य देव !
बजरंगीक सुर अङ
चाहि रहलोह ई धरती,
हरितमाक हिय पर
ढहि रहलीह ई धरती,
आ मादकताक आँच
उठि रहल अकास मे
किन्तु खेद, तरेगण ओहिनाक ओहिना
देखि रहल हमरा लोकनिक खेल
एकटा गवाहक पर्याय सन

हे उर्जस्व धरतीक बौद्धिक आहार !
वरण करू अपन हार
ओ—यज्ञस्थलक
आ बहार करू
स्वच्छ छविक स्वर
कोखि सँ
ताकि भंगक कण
उतरि सकय
आ ई धरती घुलि सकतीह
एकटा स्वतंत्र साँस तर
अप्पन पैरूख लऽ,
आ विशाल शाल तर
परवर्त्ती केँ तर्पण कऽ,
आ बुनि सकतीह
एकटाक सुनसान जगतक बीच
"मोक्षक महजाल" ।

सारस्वत, C/o-विजय महतो लॉज
रूम न० ४ लक्ष्मीसागर, साधुगाछी,दरभंगा-८४६००४

उकरू काकाक उकटा-पुरान

लेखक-नचिकेता

—:❀:—

उकरूकाकाके जखन वर मिललैन्हि जे ओ अमर हैताह तखन सोच-लथिन्ह जे पहिने तीर्थ सब मे घुमना चाही। कियैक तँ तीर्थाटन मे मरै कें डर नहि छैक, जे ताहि डरें घरक कोनमे घुसियाओल रहताह अथवा ई सोचताह तीर्थ घुमैत घुमैत जौं जीवन बीति जाय त' भोग करब कोना ? तैं लोटा-कम्बल ल कए चलि देलन्हि।

जखन ओ बोतलाक दुआरि द कय चलि जाइत छलाह तखन बोतला पाछाँ सँ टोकि देलक, "ऐं ओ ऊकरूकाका —"

उकरू कका तमसा कए गरजि उठलाह "ऐं रे, तोरा हम हजार बेरि कहि देलियौ जे हमरा पाछाँ सँ नहि टोकी; तैयो तों बात नहि बुझैत छहीं"।

उकरू काकाक मिजाज गरम देखि बोतल बाजल, "ओते कियैक गोसबैत छी कका ? हम अहां लेल कतेक कीमती बनारसी तमाकुल मँगौने छलहुँ।"

तमाकुलक नाम सँ उकरूकाकाक मनक आगि मे पानि पड़ि गेलन्हि। ओ विहुँसैत बजलाह, "सांचे कि झुठ्ठे" ?

बोतल दुनु कान पकड़ि बजलाह, "राम राम ! हम कि कहियो अहाँ सँ झूठ बाजि सकैत छी ! एहन बात हमरा जुनि बाजू।" कहैत कहैत ओकर आंखि डबडबा एलैक। नोर देखि कए उकरू कका स्थिर नहि रहि सकैत छलाह। ई अहाँ उकरू ककाक दोष मानू वा गुण। ओ निकट आबि पुनः पुनः प्रतिश्रुति दैत किरिया खायत एहन बात बाज-बाक प्रायश्चित करैत छलाह। जा ओ बोतलक निकट ऐलाह, बोतल चट दए हुनक हाथ पकड़ि कए हँसि कए कहलक, "आब कहू कका, की आवि-ष्कार करें लेल अहां भोरे भोर दरबर मारैत छलौं ?

उकरूकका झटका मारि हाथ छोड़ा कए बाजलथिन्ह, "अही लेल तों हमरा बजा आनलें !"

"आ—हा—हा, तमसाऊ जुनि, बैसू ने"। कहि कए बोतल धूरा झाड़ि कए बैसै कें इङ्गित करैत हुनका हाथ मे हुक्का धरा देलै। उकरू-कका आराम सँ बैसि क बाजलथिन्ह—"हम जखन आइ गाछी मे दतमैन करैत छलहुँ तखन भगवान राम आबि कए हमरा वरदान दियै चाहलन्हि। हम पहिल पहिल राजी नहि भेलहुँ। जखन ओ बहुत नेहोरा-पाँती करै लगलाह तखन हम अमरत्वक वर माङ्गल"।

"सांचें कहैत छी!"

बोतलक प्रश्न सँ फेरो तमसा कए कका कहलथिन्ह "सांच नहि त कि झूठ बाजि रहल छी?"

बोतल कहलक "हमहूँ ओहि समय गेल छलहुँ तें कहैत छी।"

तों कि हमरा झुट्ठा सोचैत छैं?

'नहि नहि से कियैक? कनिक आरो तमाकुल लेल जाय।"

जा कका तमाकुल लैत छथिन्ह बोतल बाजल, "ऐं ओ कका, अहीं त बाजने रही :जे मनुष्य अछि अमृतस्य पुत्राः। तखन अहाँ कियैक अमरत्व चाहल! अहाँ त एहन भूल नहि करि सकैत छी। एहेन बड़बकी त...

"की, तों हमरा वुड़बक कहलें? रह, आइ तोरा ......"

वाक्य असमाप्ते रहैत बोतल बाजि उठल, "तमसाउ जूनि। हम अहांक ओ सुदभरना जमीन छोड़ा देब मोफतें मे"।

हम ओतेक लोभी नहि छी — ई कहि उकरू कका चलि देलन्हि अनिर्दिष्ट दिशाक लेल।

परंच एक त घरक चिन्ता आ दोसर दुपहरियाक रौद हुनका एकटा गाछतरमे विश्राम करबा लेल बाध्य क देलकन्हि। किछु देर बाद ओ निन्न पड़ि गेलाह आ सपना देखं लागलन्हि।

ओ भारतक राजधानी दिल्ली मे विचरण क' रहल छलाह। घुमैत-घुमैत राष्ट्रपति-भवन लग ठाढ़ भ' गेलाह। ओतय देखैत छथि जे वड़ भारी मेला जकाँ लागल अछि। मिस्सम-मिस्स पड़ि रहल अछि। पुछलथिन्ह त पता लागलन्हि जे प्रवेश पर कोनो प्रतिवन्ध नहि छैक। बड़ कौतुक हेवाक संभावना छैक। एक कियो महान् गुणी आयल छथि; परम सिद्ध छथि। ओ राष्ट्रपति लग जा कए एक अद्भुत घोषणा क' आयल

छथि। हुनक ई दावा छन्हि जे हुनका एहन क्षमता छन्हि कि ककरहु माथ मे सुलफा भोंकि देथिन्ह तँ ओकरा पतो धरि नहि चलतैक आ ’ओकर माथ सँ केवल बुद्धि टो निकलि जेतैक। राष्ट्रपति आश्चर्य-चकित छलाह। हुनका कौतुक देखबाक इच्छा भेलन्हि। ओ बुद्धिमान जानि कतिपय मैथिल मंत्री तथा प्रमुख एम० पी० कें बजौलथिन्ह। हुनका विश्वास छलन्हि जे मैथिल सँ बढ़ि कए बुद्धिमान कियो भ ’नहि सकैत छथि। तैं हुनकहि लोकनि कें बजाओल गेल छलन्हि। जनता मे सेहो उत्सुकता बढ़ि गेल छलैक। ओ गुणी पुरुष तखन भाला पर भाला चलाबै लगलाह। भाला सन द’ कए हुनका सभक माथ सँ निकलि जायत छल, किन्तु एकहु बुन्द रक्त नहि खसैत छलैक, ताहू सँ बढ़ि कए आश्चर्यक विषय ई जे ओ मन्त्री तथा एम० पी० लोकनि दाँत निपोड़ैत सब उपस्थित जन-समुदाय कें सलाम करैत कानि रहल छलाह। पुछला पर कियो सारक लेल लाइसेंस तथा कियो बेटा भातिज लेल नौकरी माँगि रहल छलाह। हुनक कायरता तथा आँखिक दहो-बहो नोर देखि लोग स्तम्भित छल। लोक सबकें सब सँ बेसी आश्चर्य त एहू लेल भेलैक जे ओ सब अपन-अपन मातृभाषा तथा चिन्हा परिचय धरि भूलि गेल छलाह।

उकरू कका कें इच्छा भेलन्हि जे ओहो कानै लागथि, कि लगलहि हुनक निन्न टुटि गेलन्हि। जागितहि ओ सब सँ प्रथम अपनहि माथ हँसोथैं लगलाह। सब किछु ठीकहि बुझि पड़लन्हि। ओ तीर्थ-यात्रा छोड़ि लगलहि दौड़ल ऐलाह बोतलाक घर दिस। ओकरा गप्प सुनबैक लेल मन अहुरिया काटि रहल छलन्हि। —क्रमशः

व्यंग्य-विनोद

सुन्दरी कली कें देखलन्हि तँ कली खिल गेल, ओ चाय कें देख-लन्हि तँ चाय क प्रचार घर-घर मे भए गेल, सुन्दरी माछ दिस देखलन्हि तँ माछ क दाम दुगुन भए गेल, सुन्दरी पाथर दिस देख-लन्हि तँ पाथरक पूजा होमय लागल, सुन्दरी परमात्मा दिस देख-लन्हि तँ परमात्माक पूजा संसार भरि मे होमय लागल, किन्तु सुन्दरी जखन मनुष्य दिस देखलन्हि तँ मनुष्य पागल भए गेल।

गवेषणा : 63-64/1994/157-167

र० ना० श्रीवास्तव स्मृति अंक

बहुवाचनिक भाषायोजना*

उदयनारायण सिंह

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

इस निबंध में तृतीय विश्व तथा भारत के संदर्भ में बहुभाषिकता की समस्या को लेकर विस्तार से आलोचना की गयी है और निष्कर्ष के रूप में "बहुवाचनिक भाषा योजना" के मॉडल को सामने रखा गया है। रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव आदि भारतीय समाजभाषा-विज्ञानियों ने अपनी युक्ति-तुर्कों से यह तो सिद्ध कर ही दिया था कि पश्चिमी "एकवाचनिक" मॉडल को जबरदस्ती भारत जैसे देशों के ऊपर प्रयोग नहीं किया जा सकता है, क्योंकि सामान्यत: बहु-भाषा हमारे लिए अभिशाप नहीं अपितु आशीर्वाद ही रही है। "बहुवाचनिकवाद" इस बात पर जोर देता है कि कुछ व्यवहार-क्षेत्र ऐसे हैं—जैसे विज्ञान तथा तकनीकी गवेषणा और प्रयोग के क्षेत्र जहाँ एकवाचनिकता तथा एकभाषिक योजना ही अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है, लेकिन ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं"—जैसे शासन, न्याय तथा शिक्षा के क्षेत्र, जहाँ भाषा-योजनाकार को अपनी योजना के लिए आवाम की बहुमुखी वाग्-विधि तथा भाषिक बहुलता को ही आधार मान कर चलनी पड़ती है। भाषा-योजना के क्षेत्र में इस Ellecticism को ही बहुभाषिकता-वाद से हटकर बहुवाचनिकता-वाद कहा गया है।

आज तृतीय विश्व में सर्वत्र अशान्ति, असंतोष एवं आशंका की स्थिति ने मनुष्य के भाषा-भूगोल की तस्वीर को हिला दिया है। भारतवर्ष इस ज्यामिति के क्षेत्र में कोई व्यतिक्रम नहीं है। पर भारतीय ऐतिह्य की सबसे सदर्थक परंपरा यह रही है कि इतिहास ने हमें सभी

---

* इस निबंध की प्रस्तुति स्वर्गीय धीरेन्द्र वर्मा स्मृति व्याख्यान-माला के रूप में की गई थी जिसका शीर्षक था 'बहुवाचनिक भाषा-योजना : सुनीति कुमार चट्टोपाध्याय के स्वप्न से कठोर सत्य की भूमि'; भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता; 1990.

प्रकार के आघात तथा विपर्यय को सहन करने की क्षमता दी है, जिसका प्रमाण भाषा तथा समाज के इतिहास में हमें बार-बार मिलता है। आज फिर एक बार इसी प्रकार की परीक्षा की घड़ी आयी है। पर इस बार भाषा-विषयक एक ऐसी समस्या उठ खड़ी हुई है जिसे लेकर हमारे देश में कभी संघात की स्थिति नहीं आई। यह है बहुभाषिकता की समस्या।

बहुभाषिकता कभी भी हमारे लिए समस्या नहीं थी। मध्ययुग के राजपूत घर हड़ौती में बात कर रहे हैं, संस्कृत के माध्यम से उन्हें धर्मशिक्षा मिल रही है, ब्रजभाषा में वे काव्य-चर्चा कर रहे हैं और प्राकृत में दर्शन की चर्चा—ऐसी छवि के साथ हम 'Language in Plural Society' (1977) ग्रंथ में प्रबोध पंडित द्वारा वर्णित बम्बई शहर के गुजराती मसाला-व्यवसायी के वाग्व्यवहार की तुलना कर सकते हैं। ये घर पर कच्छी बोलते हैं, सब्ज़ी खरीदते हैं कोलाबा अंचल से आये हुए सब्ज़ी-वालों की एक विशेष उपभाषा में, कभी-कभार समाचार पत्र पढ़ रहे हैं अंग्रेज़ी में, सपरिवार जाते हैं हिंदी फिल्म देखने के लिए, सबर्बन रेलवे के आंग्ल-भारतीय कर्मचारियों के साथ बतियाते हैं एक तरह की 'बाज़ारू हिंदुस्तानी' में (सुनीति बाबू की दी गई संज्ञा है) अथवा 'मिश्र हिंदी' में और मसाला बजार में वे प्रयोग करते हैं बहुत सारी भाषाओं का, जिनमें कोंकणी, गुजराती तथा मराठी शामिल है। अथवा हम चुन सकते हैं कालिदास द्वारा रचित किसी भी नाटक को जहाँ राजा, रानी, पुरोहित, पार्षद, भृत्य तथा सेविका कभी एक ही भाषा-शैली में वार्तालाप नहीं करते हैं। ऐसा नहीं है कि कालिदास ने सर्वत्र वाग्व्यवहार के परिपार्श्व का यथार्थ चित्र अंकित किया है अथवा उनके द्वारा वर्णित वार्तालाप ही एकमात्र यथार्थ है—पर यह अवश्य सत्य है कि उस ज़माने में भी बहुभाषिकता थी, लेकिन बहुभाषिकता के लिए सम्प्रेषण में किसी प्रकार की बाधा नहीं होती थी। इसी लिए हम उस युग में विद्यापति तथा उन्हीं के जैसे अन्य अनेक स्रष्टा को पाते हैं, जिन्होंने एक ही जीवन में बहुत सारी भाषाओं में साहित्य-स्रष्टि की है।

फिर आज क्यों ऐसा लग रहा है कि संपूर्ण संप्रेषण-व्यवस्था टूटने जा रही है? या, भारत की जनता अब एक जाति, एक प्राण और एक देशीय होकर रहना नहीं चाहते हैं? 1940 ई० में ऑक्सफोर्ड से छपी एक छोटी सी किताब में (जिसका शीर्षक था 'Languages and the linguistic problem') आचार्य सुनीति कुमार चाटुर्या ने कहा था कि पहले से आज भाषिक अनेकता बहुत अधिक उच्चारित होकर हमारे सामने आयी है और यही हमारी भाषिक समस्याओं का मूल है। उनका वक्तव्य कुछ ऐसा था : "We feel that we ought to have a common language for the whole of India as a symbol of a common Indian nationality, which would both check the centrifugal or fissiparous tendency of the provincial languages and meet the unsympathetic argument that India cannot be a single nation with so many languages." इसका एक समाधान भी उन्होंने प्रस्तावित किया है : हिंदी की एक विशेष शैली का प्रचार, प्रसार और उन्नयन एवं लेखन के लिए अन्य एक सर्व-भारतीय लिपि के रूप में रोमन लिपि का चयन। उन्होंने हिंदी को संप्रेषण-माध्यम और अंग्रेजी को सांस्कृतिक माध्यम के रूप में बढ़ावा देने की बात भी कही है।

इससे इतना पता चलता है उस समय 55 वर्ष की अवस्था में भारत के प्रमुख के भाषा-विद् के रूप में विश्व-विख्यात ध्वनि-विज्ञानी और ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान के यह मूर्धन्य विद्वान जिस किसी पाश्चात्य देश में भी गये हैं, वहीं भारत की बहुभाषिकता, धर्माधिक्य और सांस्कृतिक बहुलता को लेकर उन्हें बहुत बातें सुननी पड़ीं। और पश्चिमी भाषा-विज्ञान के प्रभाव के कारण

वे इसी सिद्धांत पर पहुँचे कि संख्याधिक्य की दृष्टि से बहुभाषिकता ही इनके लिए उत्तरदायी है—यही इन सभी 'समस्याओं' की जड़ है। यहाँ यह कहना पड़ेगा कि आइनर हॉगेन ने (जिन्होंने सर्वप्रथम 1959 ई० में अपने एक निबंध में 'भाषा-योजना 'की बात कही थी) 1961 ई० में भाषा के 'मानकीरण' के संदर्भ में इसी को भाषा-विषयक 'सक्रिय सिफारिश' के रूप में अभिहित किया था। आज हम जानते हैं कि शोध-क्षेत्र के रूप में 'समाज-भाषाविज्ञान' यानी 'Sociolinguistics' यह शब्द भी 1952 ई० के बाद में ही प्रयोग में आता है (जो कि 1962 ई० में आकार ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर में गृहीत शब्द के रूप में चालू हो सका)। अत: 1940 ई० में कही गई इस बात को हम केवल एक ऐसे समाधान के रूप में देख सकते हैं जिसे पश्चिम के द्वारा प्राच्य को गलत समझने का उदाहरण कहा जा सकता है।

यह भी सही है कि हम लोगों में बहुत से लोग ऐसे हैं जो यह नहीं जानते हैं कि बहुभाषिकता आज किस स्तर पर पहुँची है। 1961 ई० की जनगणना के बाद भारत सरकार ने हमें सूचित किया था कि इस देश में मातृभाषा की संख्या 1,652 है। यह अवश्य ही बढ़ायी-चढ़ायी बात लगती है, क्योंकि इनमें 471 'भाषाएँ' ऐसी हैं जो जनगणना के अनुसार पाँच लोगों से ज्यादा की मातृभाषा नहीं रही है। 695 भाषिक नाम ऐसे हैं जिनके बोलने वालों की संख्या छह से तो अधिक है, पर 999 से कम ही है। इसलिए ऐसा कहना उचित होगा कि इन 1,652 'मातृ-भाषाओं' की संख्या में संभावित भ्रांति को छोड़ कर हम 221 ऐसी 'भाषाओं' का नाम ले सकते हैं जिनको मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वालों की संख्या कम से कम 10,000 है। इनमें से 33 भाषाएँ ऐसी हैं जो दस लाख से भी अधिक वक्ताओं की भाषा है एवं 49 ऐसी हैं जिनके वाचकों की संख्या एक लाख से भी अधिक है। 1981 ई० की जनगणना को देखें तो पता चलता है कि इन संख्याओं में भारी परिवर्तन हुआ है। अब मात्र 90 ऐसी भाषाएँ हैं जो 10,000 बोलने वालों की संख्या को पार कर सकती हैं, जिनमें से 9 की बोलने वालों की संख्या दस लाख से अधिक है; 20 भाषाएँ ऐसी हैं जिनके वाचक लाख भर से ऊपर हैं, और 139 के बदले मात्र 61 भाषाएँ ऐसी हैं जिन्हें प्रयोग में लाने वाले 10,000 से अधिक हैं पर एक लाख से कम हैं। जनगणना में घोषित यह परिवर्तन इस बात का प्रमाण है कि भाषिकता नापने की सरकारी पद्धति में कहीं कोई मूलभूत गलती रह गई है, जिसके बारे में पॉल ब्रास ने अपनी 1974 की पुस्तक में बहुत खूबी के साथ आलोचना की है। अथवा ऐसा भी हो सकता है कि शासकीय राजनीति में भाषिक और सामाजिक समस्या के विषय में चिंतन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आया है जिसके दबाव में आकर जनगणना के गणित में स्वेच्छाचार प्रकट हो गया है। इसकी एक तीसरी व्याख्या भी हो सकती है। यह भी संभव है कि एक बड़े पैमाने में 'भाषा-प्रयाण' (language attrition) अथवा 'भाषिक विस्थापन' (language shift) हुआ है। ये दोनों परिस्थितियाँ काफ़ी आशंका-जनक हैं—विशेष कर भाषिक संख्यालघुओं की प्रतिरक्षा की दृष्टि से। भाषिक संरक्षण के पक्ष में हमारे देश में जितने आंदोलन हुए हैं, उनमें से बहुचर्चित आंदोलनों के बारे में शायद सभी लोग जानते हैं। इनमें से कई भाषाओं के संदर्भ में सफलता की कहानी भी है। जैसे, सिंधी भाषा के पक्ष में जनमत गठन की कथा तथा कोंकणी की भाषा-रूप में स्वीकृति मिलने की कहानी भी शामिल है। बहुत ऐसी भी भाषाएँ हैं जिन्हें संपूर्ण राष्ट्र की दृष्टि को आकृष्ट करने में सफलता तो मिली (जैसे बोड़ो तथा नेपाली के समर्थन में सशस्त्र आंदोलन अथवा मैथिली के समर्थन में अहिंस गण-आंदोलन), लेकिन राजनैतिक तथा प्रशासनिक दृष्टि से सफलता या तो नहीं मिली, या मिलने में काफ़ी देर हुई। कुछ और भाषा-गोष्ठी के आंदोलन भी हैं जो किसी भाषा-विशेष के अधिकार की मांग को लेकर नहीं हुए—जैसे कि झाड़खंड के समर्थन में आंदोलन।

इसके अलावा, उर्दू, कश्मीरी तथा डोगरी-पंजाबी भाषाओं के सपक्ष में अनेकानेक स्तर में बहुत सारी माँगें भी सामने आई हैं।

इन सभी बातों को पीछे रखकर एक महत्वपूर्ण सवाल उभर कर सामने आता है और वह यह है : तृतीय विश्व में—जिसमें भारत अग्रगण्य देशों में एक है—जहाँ भाषा-संरक्षण ही नियम है और की अपमृत्यु एक व्यतिक्रम ही है—वहाँ बहुभाषिकता पर शोध शुरू हो तो कैसे हो ? पश्चिमी देशों के समाजभाषा-विज्ञानी अपनी गवेषणा की शुरूआत करते हैं 'क्यों' और 'कैसे' भाषा अपना अस्तित्व तथा अपने वक्ताओं को खो देती है'—ऐसे सवालों से। उधर प्राच्य के समाजभाषाविद् इस बात को जानने के लिए उत्सुक हैं कि भाषा-संरक्षण के पीछे जो विराट ऐतिहासिक शक्ति काम कर रही है—इस देश में तथा अन्यत्र भी—उसका उत्स कहाँ है ? यहाँ उल्लेखनीय है कि भारत में जो चार प्रमुख भाषा-परिवार हैं, उनके अलावा अभी तक भाषा-परिवार की दृष्टि से वर्णित और वर्गीकृत न हो सकने वाली भाषाओं की संख्या भी कम नहीं है। 1,652 'मातृभाषाओं' में 601 इसी प्रकार की हैं। साथ ही यह भी सत्य है कि अगर हम 20 भारोपीय और 17 द्रविड़ भाषाओं को ही लें तो 98.1% भारतीय इस सीमा के अंदर आ जाते हैं। साथ ही यह भी ठीक है कि 1981 की जनगणना के अनुसार भारत में केवल 1.9% जनता में ही 53 ऐसी भाषाओं के बोलने वाले हैं, जिनमें से सभी भाषियों की संख्या कम से कम 10,000 हैं। अगर ऐसा है तो हमें यह भी सोचना पड़ेगा कि इन 53 अल्पसंख्यक भाषा-भाषियों का भविष्य क्या है ? संविधान की अष्टम अनुसूची में जिन 95.6% लोगों की मातृ-भाषाएँ स्वीकृत हुई थीं, उन्हें छोड़कर भी ऐसी 22 महत्वपूर्ण भाषाएँ हैं जो सभी सुख-सुविधा से वंचित रही हैं। इन्हें लेकर भी समस्या कम नहीं है। 1981 की जनगणना के हिसाब से इन मान्यताहीन भाषाओं में भीली, डोगरी, गोण्डी, खांदेशी, कुरुख/ओराओं, संथाली तथा तुलु—संख्या की दृष्टि से 13 से 44 लाख बोलने वालों की भाषा है—इनमें कोंकणी तथा नेपाली/गोर्खाली भी शामिल थी, पर इन्हें आगे चल कर मान्यता मिल गई। मजे की बात यह थी कि सभी जनगणनाओं में 'बिहारी' एवं/अथवा 'मैथिली' के नाम से जिस भाषा (वर्ग) का नाम सर्वदा उपस्थित था, 81 की जनगणना में पता नहीं किसके इशारे से वह लापता हो गई। यहाँ यह कहना उचित होगा कि एक लाख से दस लाख बोलने वालों की भाषाओं में कम से कम कुछ भाषाएँ ऐसी हैं जो आज नहीं तो कल इसलिए स्वीकृत भाषा होने का दावा करेंगी कि उनके पृथक प्रदेश अथवा भौगोलिक अंचल की सृष्टि पहले ही हो चुकी है। वह हैं आदि (अरुणाचल प्रदेश), गारो तथा खासी (मूलत: मेघालय), लुशाई अथवा मिज़ो (मिज़ोरम), एवं त्रिपुरी अथवा टिपरा (त्रिपुरा)। अर्थात्, मणिपुरी या मेइतेइ की सफलता से शिक्षा लेकर सांविधानिक स्वीकृति का प्रश्न उठाने वाली बीसिओं भाषाओं में इस श्रेणी की भाषाएँ प्रमुख होंगी।

यह राशिविज्ञान का खेल और अधिक जमेगा अगर हम स्वीकृति की अन्यान्य मान्यताओं की ओर देखें। बहुभाषिक भारत में साहित्य के सार्थक माध्यम के रूप में साहित्य अकादमी ने 22 भाषाओं को स्वीकृति दी है, 35 भाषाओं में संवादपत्र तथा अन्य पत्रिकाएँ प्रकाशित होते हैं, प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में 67 भाषाओं का प्रयोग होता है, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन ने कम से कम 80 भाषाओं में साक्षरता का प्रचार तथा प्रसार करने का निर्णय लिया है तथा आकाशवाणी के संचार-माध्यम से 104 भाषाओं में किसी न किसी अनुष्ठान का प्रचार किया जाता है। यहाँ इस बात पर गौर करना उचित होगा कि जिन प्रदेशों में अष्टम अनुसूची के बाहर बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या अधिक पायी गई (जैसे, '71 की जनगणना के अनुसार ऐसी भाषाओं

की संख्या हरियाणा में जहाँ मात्र 0.2% है, उसके विपरीत बिहार में 7%, असम में 14%, जम्मू और कश्मीर में 28% और मणिपुर में 97% थी), ठीक इन्हीं स्थानों पर भाषिक-सामाजिक असंतोष तुंग पर उठा, विशेष कर अगले बीस वर्षों में। इस दृष्टि से समस्याजनक स्थान और भी हैं, जैसे गोआ (66%), अरुणाचल प्रदेश (87%), अन्दमान और निकोबार (23%), त्रिपुरा (29%), सिक्किम (96%), नागालैंड (93%) तथा मेघालय (86%)—जिनमें कइओं की समस्याओं का समाधान 1971 से 1991 के भीतर हमारे सामने उभर कर आया, जैसे मणिपुर, गोआ तथा सिक्किम की समस्याओं का हल मिला मणिपुरी, कोंकणी तथा गोर्खाली की स्वीकृति के बाद। यहाँ इस बात की ओर ध्यान देना पड़ेगा कि भारत की सीमित आर्थिक क्षमता को लेकर देश का संचालन करते हुए अगर सरकार को इन सभी भाषा-भाषियों के सरकारी पृष्ठ-पोषण की मांग को मान लेना पड़ता है तो इनके आदर्शीकरण तथा आधुनिकीकरण के लिए जो भयंकर आर्थिक दबाव पड़ेगा, उसका सहन उन 95·58% जनता को ही करना पड़ेगा, जिनकी मातृभाषाएँ अष्टम अनुसूची द्वारा स्वीकृत हैं।

जब आर्थिक दबाव और अर्थनीति की बात आ ही गई तो इस प्रसंग में पश्चिम के समाज-भाषा-विज्ञानियों का वक्तव्य जान लेना अच्छा होगा। जोनाथन पूल (1972) ने हाल ही में कहा था : "A country that is linguistically highly heterogeneous is always under-developed, and a country that is developed always has considerable linguistic uniformity." हमें अक्सर इस तरह के तर्क बहुत लोगों से सुनने को मिलते हैं। वस्तुतः इस देश के शासक-वर्ग के अधिकांश नेता ही इस तरह की चिंता-धारा से प्रभावित हैं। इसी प्रसंग में जोशुआ फिशमैन (1972 : 39) का कथन भी उल्लेखनीय है : "Just as it is hypothesised that experiences previously undergone by more developed entities (such as polities, economies, societies, languages) can help to clarify the future course to less developed ones, so it is hypothesised that the experience currently undergone by less developed entities can help to reconstruct those formerly undergone by those more developed today."

पूल और फिशमैन दोनों समाज-भाषाविज्ञान के अच्छे गवेषकों में हैं; फिर भी उनके वक्तव्य के खिलाफ तृतीय विश्व की तरफ से बहुत सारी युक्तियाँ दी गई हैं। इस विश्व की ओर से प्रबोध पंडित (1977) और रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (1977) आदि प्रमुख समाज-भाषा-विज्ञानियों ने अकाट्य युक्ति देकर इस बात को सिद्ध किया है कि विश्व में कई एकभाषी देश हैं (जैसे, सोमालिया) जिनकी आर्थिक क्षमता बहुत ही नगण्य है तथा ऐसे कई धनी देश हैं (कैनडा आदि) जहाँ भाषिक एकता नहीं है। परंतु यह अवधारणा और भी अधिक बेबुनियादी कही जा सकती है कि जो परिकल्पनाएँ पश्चिम के देशों में सार्थक रही हैं (चाहे वह समाज संस्कार की हों अथवा आर्थिक परिकल्पना की किंग भाषा-योजना की हों) वही प्राच्य के देशों में भी अच्छी तरह चल जायेंगी। अगर ऐसा मान लें तो यह भी मानना पड़ेगा कि योरोप और अमरीका में भाषा और साहित्य के उन्नयन का जो आदर्श रहा, वही आदर्श हमारे लिए भी अनिवार्य है। हमें इन बातों को मानो प्राकृतिक नियमों की तरह मान लेने को कहा जा रहा है। इन्होंने इस बात को स्वतः सिद्ध मान लेने को कहा है कि अंततोगत्वा बहुभाषिकता तृतीय विश्व के देशों के अधिवासियों की बौद्धिक दरिद्रता का कारण बन जाती है। इसी कारण ऐसे देशों में सांस्कृतिक शून्यता (cultural anomic) तथा संप्रेषण के विघटन (communication breakdown) की तस्वीर हमें देखने को मिलती है—ऐसा भी बहुभाषिकता के विरोधियों ने कहा है।

इन तर्कों के उत्तर में रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने यह स्पष्ट कर दिया था कि बौद्धिक दारिद्र्य या सम्प्रेषण की समस्या अगर सच होती तो विश्व में बहुभाषाभाषी और बहुभाषालेखी बुद्धिजीवियों का अभाव दिखाई पड़ता। तृतीय विश्व में ऐसे बुद्धिजीवियों का अभाव तो नहीं ही है, प्रथम और द्वितीय विश्व में भी ऑस्कट वाइल्ड, बेकेट अथवा सोलझेनित्सिन की संख्या भी कम नहीं है। वस्तुतः सांस्कृतिक शून्यता-बोध मानव में तभी आता है जब उसके व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन में एक ही साथ अनेक संस्कृतियों का प्रतिघात देखने को मिलता है। पर अनेक भाषा तथा संस्कृति के उपस्थिति मात्र से यह प्रतिघात नहीं आता है। अधिकांशतः पार्थक्य की भूमि के नीचे बहती रहती है समेकता तथा तुलनीयता की अन्तः सलिला। सबसे कठिन है यह मान लेना कि भाषिक तथा साहित्यिक उन्नति का कोई पूर्वनिर्दिष्ट पथ है। उन्नयन के इतिहास का अध्ययन करें तो इस बारे में कोई सामान्य सूत्र मिलना असंभव प्रतीत होगा। वह इसलिए कि बहुभाषी समाज में एक ही साथ संस्कृतीकरण और प्रति-सांस्कृतिक शक्तियों का संघात तथा सम्मेलन चलता ही रहता है—इसी डायलेक्टिक्स के कारण संस्कृतायन और प्राकृतायन की दोहरी स्रोत बहती ही रहती है। अतः एक ही बहुभाषिक समाज-संस्कृति में भाषासरण, भाषा-प्रयाण तथा भाषा-संरक्षण की विविध धाराएँ देखने को मिलती हैं। और फिर उन्नयन-कामी भाषाएँ प्रगति-पथ पर विभिन्न बिंदुओं से अपनी अपनी यात्रा शुरू कर सकती हैं। जिन भाषाओं का उल्लेख मैंने पहले ही किया है वे सभी उन्नति की तुला पर एक वजन की नहीं हैं। भाषाविज्ञानी यह मानकर चलते हैं (चाहे वह पश्चिम के हों चाहे पूर्व के) कि आदिम समाज (primitive society) हो सकता है, लेकिन आदिम भाषा नाम की कोई वस्तु नहीं है। पर यह भी सही है कि आदिम न होते हुए भी कुछ भाषाएँ ऐसी हैं जो अनुन्नत अवश्य हैं। इस लिए यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि प्रत्येक भाषा का उन्नयन एक ही गति से नहीं होता है। हमेशा ऐसा नहीं होता है कि हर भाषा के लिए उन्नयन की एक जैसी सुविधाएँ नहीं होती हैं—ऐसा भी संभव है सभी समाज में स्वभाषा-प्रेम एक जैसा नहीं है। बहुत लोग अपने प्रति अन्य भाषा-भाषी अथवा समाज का किया हुआ अवमूल्यायन को मान लेते हैं। कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपनी भाषा को जीवित रखने में इतने उत्साही नहीं हैं, यद्यपि अपनी संस्कृति को जीवित रखना चाहते हैं। अर्थात्, उन्नयन के इतिहास में अनेक प्रकार की धारा, विधारा तथा प्रतिधारा देखी जा सकती है।

यह भी सही है कि इन सभी भाषाओं के उन्नयन का लक्ष्य भी एक नहीं है। जैसे, हिंदी को केवल सरकारी काम-काज की भाषा नहीं रह कर राष्ट्रभाषा बनने की चाहत है—कम-से-कम वह आम जन-संपर्क की भाषा बनना चाहती है। तमिल भाषी चाहते हैं उनकी भाषा हिंदी के तथाकथित 'सम्प्रसारणवाद' की विरोधी विन्दु बने क्योंकि उनकी नज़र में उनकी भाषा अत्यंत उन्नत विचार-माध्यम तथा साहित्यिक सम्प्रेषण का माध्यम सदियों से बना हुआ है। बंगला भाषी एक महान साहित्यिक ऐतिह्य बनाने में जुटे हुए हैं और कुछ हद तक हिंदी की विरोध-विंदु भी बने हुए हैं। सिन्धी की समस्या यह है कि उसे जो शासकीय और सांविधानिक सुविधाएँ मिली हैं—अपनी सर्जनशीलता का प्रमाण देकर उसकी यथार्थता साबित करना, बोड़ो भाषी के लिए समस्या यह है कि उसे जो शासकीय शक्तिओं से मुक़ाबला करना है उसके लिए किस प्रकार की शक्ति से हाथ मिलाया जाय—आंचलिकतावादी ताकत (असमिया लिपि का चयन अथवा बंगला लेखन प्रणाली ?), अथवा राष्ट्रीयतावादी शक्ति (नागरी लिपि का प्रयोग) किंवा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी तत्व के साथ (जिसे मानें तो रोमन लिपि का चयन करना पड़ेगा)। नागामी नामक

मिश्र-भाषा का लक्ष्य है तेरह पृथक् नागा भाषाभाषी गोष्ठियों के बीच संयोग-साधन की कृत्रिम भाषा से उस प्रदेश के शासन की भाषा के रूप में उन्नति होना। झाड़खंड अंचल की कृत्रिम भाषा सदनी के सामने भी कुछ ऐसी ही समस्या है, पर उसे प्रशासन का माध्यम बनना नहीं है। इसी तरह विभिन्न भाषाओं के भिन्न-भिन्न लक्ष्य की ओर देखें तो ये एक ही बात को सिद्ध करते हैं— भाषिक उन्नयन का न ही एक लक्ष्य है, न ही उन्नयन का तरीका एक है।

मुश्किल यह भी है कि हम मात्र संख्यातत्व की दृष्टि से यह सोच कर लज्जित हैं कि हमारी निरक्षरता का आंकड़ा ऐसा है अथवा बहुभाषिकता की संख्या का इतना प्रतिशत है। हम लोग आशिस बोस (1985 : 378-9) की परिवार-नियोजन विषयक सावधान-वाणी को भूल जाते हैं, जहाँ उन्होंने कहा था कि किसी भी उन्नयन की एक गुण और मानगत विशिष्टता है, लेकिन उन्नयन का पश्चिमी मॉडल हमें दशमलव संख्या के घेराजाल में ही बाँध कर रखा है— वह हमें इसके बाहर निकल कर देखने ही नहीं देती है। हम लोग केवल इसी बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि अगर निरक्षरता सचमुच कम हो गई है तो साक्षरता की संख्या कितनी बढ़ी? हम लोग इस बात को लेकर चिंतित नहीं हैं कि ये सद्य-साक्षर लोग अब क्या करेंगे या क्या पढ़ेंगे? इन अक्षरकामी लोगों का व्यक्तिगत उन्नयन हम किस तरह से कर सकते हैं अथवा इन्हें हम कैसे काम में लगाएँगे? अगर हम यह चाहते भी हों कि उन्हें विभिन्न जन-संचार माध्यम के ज़रिये उनकी नव-लब्ध क्षमता—साक्षरता की क्षमता को बनाये रखने की कोशिश करेंगे तो भी यह इसलिए संभव नहीं है कि सभी प्रकार के संप्रेषण-माध्यम को जोड़ कर भी हम लोग 20% से अधिक भारतीय के पास नहीं पहुँच पा सकते हैं।

इस तरह अगर जन-संचार और भाषिक उन्नयन की ओर देखें तो संचार-माध्यम की राजनीति की बात आ जाती है। देवी प्रसन्न पट्टनायक ने (1986 : 87) हमें सावधान करते हुए पहले ही कहा है : "With 10% of the world population enjoying 90% of the world energy and 90% of the available radio frequency, it is not at all surprising that the developing world is information-starved." पश्चिम की उन्नत दुनिया में भी अंग्रेज़ी, फ्रांसिसी, जर्मन, स्पैनिश, रूसी तथा पोर्तुगीज आदि भाषाओं के बीच विभिन्न संप्रेषण-माध्यम में अधिकाधिक स्थान दखल करने की लड़ाई तीव्र हो उठी है और इसमें संदेह नहीं है कि यहाँ भी पश्चिम की परिचित बहुता को धीरे-धीरे हटाने के प्रयास में जुटी हुई है अंग्रेज़ी-भाषा। World Radio TV Handbook के तैंतीसवें संस्करण में जो आंकड़े दिये गए हैं उससे पता चलता है कि अन्य भाषाओं की तुलना में अंग्रेज़ी बहुत आगे है :

भाषाएँ	अधिक काल तक प्रयोग में	कुछ ही समय तक प्रयोग में
1. अंग्रेजी	90 देशों में	50 देशों में
2. फ्रांसिसी	44	22
3. स्पैनिश	27	12
4. पोर्तुगीज	10	7
5. जर्मन	6	16
6. अरबी	21	7

सभी देशों की रेडियो ब्रॉडकास्टिंग के अंतर्गत जो विदेशी भाषा की सेवा का प्रबंध है, केवल वहीं फ्रांसिसी के प्रयोग (51 देशों में औसतन हर दिन 170 मिनट तक) के साथ अंग्रेजी

की (69 देशों में औसतन 360 मिनट तक) तुलना की जा सकती है। येरनड (1987) ने सांविधानिक स्वीकृति की बात कहते हुए इस बात को दर्शाया है कि यदि हम पृथ्वी के किसी भी देश की सरकारी घोषणा को लें और कानून की भाषा की ओर ग़ौर करें या देखें कि संविधान किस भाषा में रचित हुआ है, अर्थात् अगर हम परोक्ष स्वीकृति की बात करें, तो यह देखेंगे कि सरकारी भाषा के रूप में सारी पृथ्वी में 32 देशों की घोषित सरकारी भाषा के रूप में अंग्रेजी को छोड़कर भी 52 ऐसे देश हैं जहाँ यह अप्रत्यक्ष रूप से सरकारी भाषा ही है। ऐसे अगर अंग्रेजी के साथ फ्रांसिसी की तुलना करें तो उसे हम पायेंगे 19 तथा 21 देशों में, स्पैनिश को 9 तथा 14 देशों में, पर्तुगीज केवल अप्रत्यक्ष रूप से 11 देशों में, आदि आदि। इसी तरह अगर हम बाल्डाउफ और येरनड (1987) के द्वारा दी गई संख्याओं की ओर देखें तो पायेंगे कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान तथा कारीगरी विद्या विषयक शोध-पत्रिकाओं में भी अंग्रेज़ी दूसरी भाषाओं के ऊपर अपना आधिपत्य विस्तार करती जा रही है। यहाँ भी उद्देश्य का पता चलता है जब देखते हैं कि येलोग पूल (1982 : 90) के उस वक्तव्य पर जोर दे रहे हैं जहाँ वह कहते हैं : "The development of science and the training of scientists is facilitated when there is a high level of communication of scientific infoma-tion." वुड (1967) ने हमें आँकड़ों के सहारे यह बताया है कि जीवविज्ञान, भौतिकी तथा इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अंग्रेजी की जीत अप्रतिरोध्य है, रसायनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र तथा गणित में भी 50.3% से लेकर 54.8% विज्ञानी अंग्रेजी का ही प्रयोग कर रहे हैं शोध-माध्यम के रूप में। यह भी देखने को मिलता है कि अंग्रेज़ी और जर्मन भाषा के विज्ञानी अपनी ही भाषा में प्रकाशित गवेषणा-कर्म को उद्धृत कर रहे हैं अपने लेख में। लेकिन दूसरी अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में लिख रहे विज्ञानी अंग्रेजी में छपे निबंधों से ही ज़्यादा उद्धरण होते हैं। इन सब बातों से हम दो निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं : पहला यह कि अत्यंत सुपरिकल्पित रूप से अंतर्राष्ट्रीय संप्रेषण तथा विज्ञान के क्षेत्र में अंग्रेज़ी आगे बढ़ रही है। पश्चिमी भाषाभाषी समाज ने 90% बेतार तरंग (radio frequency) पर अपना अधिकार जमाकर बौद्धिक साम्राज्यवाद का परिचय तो दिया ही है—लेकिन बात इतनी दूर आकर भी रुकी नहीं है। वे धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक घात-प्रतिघात के बीच से अपने भावी monistic या एकवाचनिक लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं। दूसरा निष्कर्ष यह है कि सुनीति बाबू ने जो कहा था संस्कृति की भाषा के रूप में अंग्रेजी को हम पूर्णतः त्याग नहीं सकते हैं—हमें उसे बदल कर 1963 में जवाहरलाल नेहरू ने जो बात कही थी उसी को दूसरी तरह से कहना है : विज्ञान तथा तकनीकी विद्या के क्षेत्र में अगर प्रगति लानी है तो अंग्रेजी को पूरी तरह से छोड़ने से काम नहीं चलेगा।

अब तक मैंने जो कुछ कहा उसमें एक अन्तर्विरोध जैसा लग सकता है। एक ओर तो मैंने यह कहा है कि सम्प्रेषण बहु-भाषा के व्यवहार से टूट नहीं जाता है, क्योंकि साहित्य का उन्नयन और प्रशासन का काम एक ही संग अनेक भाषाओं में संभव है (कारण बहुभाषिता मात्र सामाजिक न रहकर वैयक्तिक भी हो जाता है, जिसके फलस्वरूप ऐसे देश में बहुत सारे बहुभाषी और संपर्कभाषी मिल जाते हैं)। साथ ही मैंने यह भी कहा है कि ऐसा नहीं है कि पश्चिम के समाज-भाषाविज्ञानी केवल तृतीय विश्व के लिए ही एकवाचनिक भाषा-योजना का सुझाव दे रहे हैं, अन्य विश्व में भी एक विशेष भाषा की विजय-ध्वजा दिखाई पड़ रही है। देवी प्रसन्न पट्टनायक ने (1986) तृतीय विश्व को—विशेषकर एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका के देशों को—उन्नयन के वितर्क (debate on development) से अलग करने के विपक्ष में कहते

हुए जो 'बहुभाषिक योजना' (multi-lingual planning) की बात की थी, उसके साथ मेरी 'बहुवाचनिक भाषा-योजना' (pluralistic language planning) का एक दुर्बोध्य किंतु महत्वपूर्ण पार्थक्य है (द्रष्टव्य मेरी 1992 में प्रकाशित पुस्तक 'Language development and planning')। सबसे पहले यह बताना आवश्यक है कि बहुवाचनिक भाषा-योजनाकार भाषा परिकल्पना को एक अनुप्रयुक्त गवेषणा के रूप में देखता है और वह विश्वास करता है कि ऐसे क्षेत्र में एक मत, एक पथ और एक तत्व का होना नामुमकिन है। इसलिए वह यह भी मानने को तैयार नहीं है कि भाषा के आदर्शीकरण अथवा मानकीकरण की कोई पूर्वनिर्दिष्ट धारा है। 'योजना को एक सुनियोजित, सचेतन तथा चलमान प्रयास कहा जा सकता है, जिसके द्वारा किसी विशेष लक्ष्य तक पहुँचने के लिए संभाव्य बहुत सारे उपायों में से श्रेष्ठ उपाय को चुन लेने का प्रयास माना जा सकता है'(Waterson 1986 : 20)। यदि यह सच है तो संभावित प्रयास के इतने प्रकार-भेद और प्रक्रिया-भेद को देखते हुए और भाषा-योजना के इतिहास को सामने रख कर यह कहा जा सकता है कि भाषा-योजना का कोई अधितत्व (metatheory) का निर्माण कठिन ही है। यहाँ भाषा-योजना के तात्विक गठन के लिए दुआ ने (1985) जो सवालों को उठाया उनका उल्लेख करना आवश्यक है। यद्यपि मैंने इन सवालों को बदल डाला और जवाब में भी काफी परिवर्तन किया (द्र० सिंह 1992), उनके सवाल अब भी महत्वपूर्ण हैं: "Who defines language problems, what language problems are considered at different levels and when, and how language problems are defined, why certain language problems are defined and considered at a particular time in a speech community and how changes take place in the nature and scope of language problems" (Dua 1985 : 3)।

बहुवाचनिक भाषा-योजना को Crisis management या संकट-मोचन का साधन सोचना अनुचित होगा। लेकिन यह अवश्य है कि यह एक issue-oriented practicum अर्थात् समस्या-निर्भर समाधान-प्रक्रिया अवश्य है। योजनाकार यह भी समझते हैं कि भाषा-योजना को राजनीति से दूर नहीं किया जा सकता है। Rubin & Jernudd ने (1976×v) उनके द्वारा संपादित निबंध-संकलन ('Can language be planned ?') की भूमिका में लिखा था, "Language planning is deleberate language change; that is; changes in the system of language code or speaking or both that are planned by organizations that are established for such purposes or given a mandate to fulfill such purposes. As such language planning is focussed on problem-solving and is characterised by the formulation and evaluation of alternatives for solving language problems to find the best (or optimally the most efficient) decision."

अब तक मैंने बहुवाचनिक भाषा-योजना के बारे में जो कुछ कहा है उससे यह निष्कर्ष सामने उभर कर आता है कि इस तरह के भाषा-योजनाकार का विश्वास है कि जहाँ आवश्यक हो हमें किसी एक भाषा की प्रमुखता/प्रधानता को मानना ही पड़ेगा, पर सामान्य रूप से—बहुभाषा कोई अभिशाप नहीं है, अधिकंतु ज्यादातर क्षेत्र में वह आशीर्वाद ही है। बहुवाचनिकतावाद इस बात को मान लेना श्रेय समझता है कि कुछ व्यवहार-क्षेत्र ऐसे हैं—जैसे विज्ञान और तकनीकी गवेषणा का क्षेत्र (अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जहाँ अंग्रेजी का बोलवाला है अब) या जैसे दूर-संचार माध्यम से मनोरंजन का क्षेत्र (राष्ट्रीय स्तर पर जहाँ किसी व्यक्ति या भाषी-विशेष को यह पसंद हो चाहे न हो, हिंदी ने अपनी अनिवार्यता को सिद्ध कर अपनी vitality अर्थात् जीवनी-

शक्ति का ही परिचय दिया है), जहाँ एक भाषिक भाषा-योजना ही अधिकतर उपयोगी सिद्ध हो सकती है। लेकिन ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं—जैसे शासन, न्याय तथा शिक्षा का क्षेत्र (विशेषतः प्राथमिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा तथा विभिन्न अनौपचारिक शिक्षा के दृष्टांत को लिया जा सकता है)—जहाँ योजनाकार तथा सत्ता को आवाम के साथ तथा उनके आपस की वाग्व्यवहार-विधि के बारे में भाषा-योजना बनानी है, वहाँ भाषिक बहुता को ही आधार मान कर चलना पड़ेगा। इस eclecticism अर्थात् यथोपयोगी संकलनवाद को ही मैंने बहुवाचनिक भाषा-योजना कहा है। हालांकि यह सच है कि रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, प्रबोध पंडित, सुलतान तक़दीर, अलिश्जवाना तथा देवीप्रसन्न पट्टनायक अथवा मेरी भाषा-योजना की संकल्पना में सूक्ष्म पार्थक्य है और रहेगा, लेकिन हम सभी की राजनीति सुस्पष्ट है—और वह है गणतांत्रिकता तथा मानवाधिकार में विश्वास एवं बहुवाचनिक भाषा-योजना का आधार भी यही है।

संदर्भिका

Baldauf, R. B. & B. H. Jernudd. (1987). Communication and English language dominance in the International Scientific periodical literature'. AILA Congress, Sydney. 17th August.

Bose, Ashish. (1985). Demography beyond decimal points. Social Science Probings, 2.3 : 378-95.

Brass, Paul R. (1974). Language, religion and politics in North India. New Delhi : Vikas.

Census of India, 1961, 1971. 1981. New Delhi.

Chatterji, S. K. (1943). Languages and the linguistic problem, London : OUP (Pamphlets on Indian Affairs, 11).

Dua, H. R. (1985). Language planning in India. New Delhi : Harnam Publications.

Fishman, J. A. (1973/1983). Language in Sociocultural change, selected and edited by Anwar S. Dil. California : Stanford University Press.

Haugen, Einer (1959/1968) Language planning in Modern Norway, in J. A. Fishman, ed. Readings in the Sociology of Language. The Hague : Mouton.

Jernudd, B. H. (1987) World languages in radio broadcasting and as official languages, in D. C. Laycock & W. Winters, eds. World of Language : Papers presented to Professor S. A. Wurm on his 65th Birthday. Pacific Linguistics, C-100 : 297--308.

Pandit, P. B. (1977). Language in a Plural Society. New Delhi : Dev Raj Chanana Memorial Committee.

Pattanayak, D. P. (1986) On being and becoming bilingual in India in J. A. Fishman et al, eds. The Fergusonian Impact, Vol. 2 : 279-93. Berlin : Mouton de/Gruyter.

Pool, Jonathan. (1973), Mass opinion on language policy : the case of Canada In Joan Rubin & Roger Shuy. eds. Language Planning : Current Issues and Research. Washington, D. C. : Georgetrwn University Press.

Rubin, Joan & B, H. Jernudd. (1971). Introduction, in their edited vol, Can Language be Planned ? Honolulu : University of Hawaii Press.

Singh, Udaya Narayana (1992) On language development and planning : A pluralistic paradigm. Shimla : 11 AS and Delhi : Munshiram Mano : harlal.

Singh, Yogendra. (1972). Modernization of Indian Tradition. New Delhi : Thomson Press.

Waterson, S. (1986), Development planning ; Lessons of Experience.

World Radio T. V. Handbook, 33rd edn. (1979) Billboard. Publ.

Wood, D. N. (1967) The foreign language problem facing scientists and technologists in the U. K : Report of a survey, Journal of Documentation, 23·2 : 17-30.

SUMMARY

Pluralistic Language Planning : The paper explores an alternative paradigm for a planned language development for the third world nations. It is based on the assumption that language problems facing the developing nations are quite different from the ones experienced by the west. The paper argues with conviction and sufficient strength that a blind adoption of western monistic perspective would aggravate the language problems of India and other countries of the third world. It explores the possibility of a 'pluralistic paradigm' that may give us theory of language planning applicable to countries like India that are linguistically heterogeneous and socioculturally multeistic. The paradigm is difference from the 'pluristic' models proposed by a few sociolinguists in that it can accommodate both monistic and pluristic goals of language development.

How to honor someone in Maithili

UDAYA NARAYANA SINGH

Introduction

In this paper I wish to show how one of the politeness strategies that Maithili has could be correlated with a number of sociocultural variables such as kinship, age, sex, caste, socioeconomic status, setting, attitude, mood, and educational level. Toward the end of this paper, an attempt will also be made to find out if these sociocultural variables form a politeness hierarchy.[1]

Maithili is an eastern Indo-Aryan language spoken in North Bihar and South Nepal by a large chunk of the population. The strategy in Maithili that I am referring to is positive in nature. It has to do with the selection of pronominal levels in both second and third person. It also includes the verb agreement marking in Maithili that goes with each of these levels. As we will soon see, verb agreement plays an important role in pronominal-level selection because pronouns belonging to different levels are, in some cases, identical in shape. In such cases, verb marking alone shows the difference. It is for this reason that I call this strategy *pronominal/verbal-level selection* (henceforth, *P/V-level selection*).

Texts

My observations in the following sections are based on a detailed analysis of 16 texts in Maithili including 15 plays and a novel published between 1955 and 1975, although some were actually written as early as in 1945.[2] What is remarkable is that the *grammar of P/V-level selection* has remained more or less the same all these years despite the changes that have taken place in the life style and social pattern of the Maithils. The texts mentioned above were created by authors who represented a cross-section of population, including people belonging to different geographical background (and they included writers from the Terai of Nepal too), caste, and generation of litterateurs. These works depicted people belonging to different walks of life.

0165–2516/89/0075–0087 $2.00 *Int'l. J. Soc. Lang. (1989), pp. 87–107*

In all, I looked into 11 one-act plays of Amar (1967), Rajkamal Chowdhury (1967), Sudhanshu Shekhar Chowdhury (1967), Govinda Jha (1967), Harimohan Jha (1967), Ramdeva Jha (1967), Kiran (1967), Kisun (1967), Kumar Gangananda Singh (1967), P. N. Singh (1968), and Brajakishor Verma (1967). The full-length plays analyzed were by Dinanath Jha (1967), Gunanath Jha (1966), Malangiya (1972), and Ishanath Jha (1955). Yatri's (1965) *Paaro* was the only novel that was analyzed.

Verb agreement in Maithili

Maithili pronouns

In this section we will be looking into the problem of verb agreement in Maithili (see U. N.. Singh 1979, 1980a, 1980b). The pronominal pattern in Maithili is as follows:[3]

(1)	First person:	ham	
	Second person:	apnE	(honorific I)
		ahaa^{n}	(honorific II)
		to^{n}	(neutral; nonhonorific I; nonhonorific II)
	Third person:	o	(honorific and nonhonorific)

Notice that in the second person *to*^{n} and the third person *o*, different pronominal levels are combined. This means that there are three *to*^{n} and two *o* pro-forms. That these levels exist will be evident if we look into the agreement marking in verbs. Before that, a few points about the way these pronouns work. The pluralizer suffix is *-sab*. There is, however, another plural suffix *-lokan*^{i}, which is employed to show respect to persons being talked to or about. *-lokan*^{i} can be used with *apnE, ahaa*^{n}, and *o*. In other words, it can be used with pronouns that are honorific. Thus **to*^{n}*-lokan*^{i} and **o-lakan*^{i} (where *o* denotes third person nonhonorific) or even **ham-lokan*^{i} will be ungrammatical. It may also be mentioned that if one uses *-sab* with *apnE*, it will be a little lower in terms of degree of honorificity than *apnE-lokan*^{i} but still higher than *ahaan*^{n}*-sab*. Similarly, *ahaa*^{n}*-lokan*^{i} will be better than *ahaa*^{n}*-sab* but worse than *apnE-sab*.

Order of elements and tense marking

Within the verbal the elements are ordered in the following way:

(2) VERB STEM (+PARTICIPLE+AUXILIARY) + TENSE + AGREEMENT

In the optative, the tense suffixes as well as the agreement markers are different from those in the indicative. I shall not use optative marking in this paper, and therefore it need not be discussed here. In the indicative, the tense-aspect affixes and the auxiliaries involved are as follows (U. N. Singh 1979: 109):

(3) a.

Aspects	*Present tense*		
imperfect	-(a)it^{a} + ach-		
perfect	-al^{a} ~ el^{a}	+ ach-	
	-(a)nE		
progressive	-(a)it^{a} +	rah-	
		ach-	
habitual	-(a)it^{a} +	rah-ait^{a} + ach-	
		ach-	

b.

	Past tense		
imperfect	-al^{a} ~ -el^{a}		
perfect	-al^{a} ~ el^{a}	+ ach	+ al^{a}
	-(a)nE		
progressive	-(a)it^{a} +	rah	+ al^{a}
		ach	
habitual	-(a)it^{a} +	rah	+ al^{a}
		ach	

c.

	Future tense		
imperfect	-at^{a} ~ -ab^{a}		
perfect	-al^{a} ~ -el^{a}	+ rah +	at^{a}-
	-(a)nE		ab^{a}-
progressive	-(a)it^{a} + rah +	at^{a}-	
		ab^{a}-	
habitual	-(a)it^{a} + rah +	at^{a}-	
		ab^{a}-	

Agreement marking with single human nominal

Usually it is the *human* nominal that controls the scale of honorificity in verbal affixes. However, at times deities or superhuman beings as well as religious places and objects also receive honorific marking. The agreement markers used in sentences with one human nominal (which in most cases will be either surface subject or dative subject or passive oblique object) are of the following types:

(4)

Levels	*First person*	*Second person*	*Third person intrans*	*trans*
Hon, 1/2	-h^{un}	-h^{un}	-aah^{a} (Masc) -iih^{a} (Fem)	-anh^{i}
Neutral	-	-h^{a}	-∅ (Masc) -^{i} (Fem)	-ak^{a}
Nonhon 1	-	-hii		
Nonhon 2	-	-(h)E^{n}		

Notice that in the first person, the distinction of transitive/intransitive is missing. The first person does not have the distinction of honorificity/nonhonorificity either. In the third person, neutral and the nonhonorific levels 1 and 2 are merged in one and in the texts, therefore, they have been referred to as nonhonorific. Not everybody will agree that the two nonhonorific levels are as distinct as, say, the levels of honorific and neutral. In earlier studies (U. N. Singh 1979; 1980a), I myself did not point out this difference. However, I now feel that there is a difference, however subtle, between the two, although one can use both to the same persons in the course of a conversation in certain situations. It is similar to the difference that exists between two uses of the honorific level 1, *apnE*. It can be used in place of *ahaa*^{n} in simple active sentences. It can also be used in passivelike constructions to make them more honorific. I say *passivelike* because even if a sentence is intransitive, one can use *apnE* in this manner by simply adding *-al*^{a}*/-el*^{a} *+jaa-/ho-* to the verb stem. Consider the following examples:

(5) a. (apnE) aa-el^{a} jaa+o sarkaar (Dinanath Jha 1967: 28)
you+hon-I come+PASSIVE (?) + Imperative+Agreement sir
'Would you please come in, sir.'

b. (apnE) bais-al^{a} ho+au (Harimohan Jha 1967: 13)
you+hon-I sit+PASSIVE (?) + Agreement + Imperative
'Would you please be seated, sir.'

Multiple human nominals, agreement, and politeness

In sentences with multiple nominals which include only one human nominal or in sentences with one nominal, the verb agrees with the human nominal in whichever relational position it may be. If there are multiple human nominals, the agreement markers are selected depending upon the mutual person-honorificity level of the subject as well as nonsubject human nominal arguments present in the surface. If they are equi-referrent and therefore subject to the reflexivization rule, the markers are selected from the list given

in (4). Thus in Maithili, verb agreement is controlled not only by the subject but also by the nonsubjects, including various oblique objects (U. N. Singh 1979) in sentences with two or more [+human] nominals. In such cases the markers are selected from the list given below:

(6)

Subject control	*Non-subject control*	*Markers*	*Subject control*	*Non-subject control*	*Markers*
1p	2p H	-ah^{un}	2p NH	3p NH	-hii(k^{a})
1p	2p Neu	-iah^{u}	3p H	1p	-anh^{i}
1p	2p NH	-iau(k^{a})	3p H	2p H	
1p	3p H	-ianh^{i}	3p H	2p Neu	-thuunh^{a}
1p	3p NH	-iai(k^{a})	3p H	2p NH	
2p H	1p	-ah^{un}	3p H	3p H	-thiinh^{a}
2p H	3p H	-ianh^{a}	3p H	3p NH	
2p H	3p NH	-iai(k^{a})	3p NH	1p	-ak^{a}
2p Neu	1p	-ah^{a}	3p NH	2p H	
2p Neu	3p H	-ahuunh^{a}	3p NH	2p Neu	-kah^{u}
2p Neu	3p NH	-akak^{a}	3p NH	2p NH	-kau(k^{a})
2p NH	1p	-(a)E^{n}	3p NH	3p H	-kainh^{i}
2p NH	3p H	-ahunh^{a}	3p NH	3p NH	-(k)ai(k^{a})

A few examples will make the use of these markers clear:

(7) a. (*ahaa^{n}*) jenaa bhiitar sO^{n} *hunkaa* par
2p-H as if inside from him on
khisiaael^{a} ho-ianh^{i} (Malangiya 1972: 61)
angry be-AGR (SUBJN)
'As if you are very angry with him.'

b. *nitaai-kE^{n}* ta *apnE* ciinh^{i}te ch-ianh^{i} ? (Dinanath Jha 1967: 50)
Nitai-obj particle 2p-H know be-AGR (SUBJN)
'(I am sure) you already know Nitai.'

As can be seen from sentences (7a) and (7b), the oblique object *hunkaa par* and the direct object *nitaai-kE^{n}* together with the subject nominals determine the selection of the agreement marker *-ianh^{i}*.

Politeness levels and sociocultural factors

Levels

One can conclude from the account of pronominal pattern and verb-agreement marking given in the earlier section that there are *five* (or at least, *four*)

levels of politeness in the second person and *two* in the third person. They are as follows:

(8) a. *Second person*

level 1: *apnE* (i) in passive or passivelike constructions, (ii) in active;

level 2: *ahaa*^{n};

level 3: *to*^{n}, the *-ah*^{a} type (such as *kar-ah*^{a} 'do');

level 4: *to*^{n}, the *-hii* type;

level 5: *to*^{n}, the *-E*^{n} type (note that for some speakers, levels 4 and 5 are not different).

b. *Third person*

level 1: *o* (persons belonging to levels 1 and 2 as in (8a) are usually referred to in this manner);

level 2: *o*, which is used for persons receiving levels 3, 4, and 5 in second person.

Factors

In the following sections, I shall take up the sociocultural factors listed earlier and show how one can choose the correct politeness level in Maithili. In most cases, I will give examples from the texts analyzed. This account will also include a detailed discussion of violation of social norms. I am also interested in finding out if some of these factors play a more important role in determining politeness levels than others. Finally, I shall attempt to place the sociocultural factors in a tentative politeness hierarchy which will reveal an important aspect of the nature of the Maithili speech community.

Kinship, age, sex, and politeness rules: a kinship diagram

At this point, I can draw a kinship diagram tentatively in the manner shown in Figure 1. Figure 1 is relevant for understanding the kinship pattern of the Maithili speech community as well as for the discussion that will follow. In the following paragraphs, I will be using abbreviations for the kinship terms as well as for the texts. For the latter, however, the abbreviations will be italicized. The Maithili terms parallel to the kinship relations noted in Figure 1 are not given here, as they are irrelevant to our understanding of the nature of politeness rules.

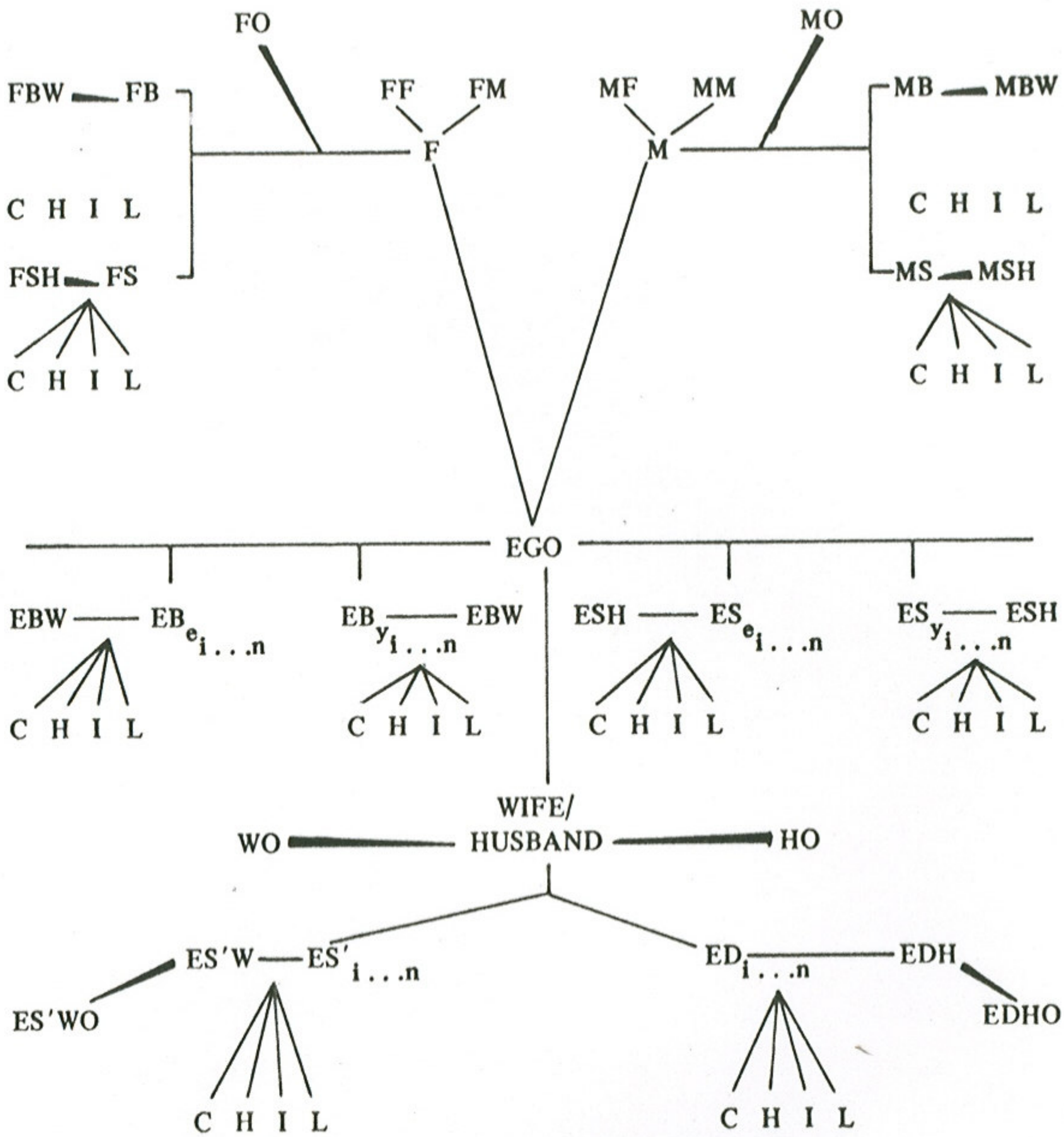


Figure 1. *A possible kinship diagram showing different branches of a typical Maithili family tree (F = father, M = mother, B = brother, S = sister, W = wife, H = husband, E = ego, S' = son, D = daughter, O = other, CHIL = children; the subscripts e = elder, y = younger, and i . . . n = one-to-many)*

Unequal relationships and politeness rules

The kinship diagram shown in Figure 1 is at best a simplified sketch of an otherwise complicated system. Since some relations occur more frequently than others in real-life situations, it is natural to expect that not all the relations will be utilized in the texts analyzed.

In the case of the F ⟷ S′ relation, it does not take long to discover that they do not always receive the same P/V levels from each other. Although F may choose, in the second person, P/V level 2 (as in *B*, where Hariva Nśa speaks to Nuunnuu baccaa in this manner) or 3 (as in *HK*) or 4/5 (as in *JK*, Śibuu ⟶ Niiluu), in return S′ almost invariably selects level 2. Even when he refers to F, S′ will select third person honorific (in *JK*, Jiibuu does so) marking. The pattern is almost the same for the F ⟷ D relation. In all instances, Ds select level 2 to address F. But an F selects either level 3 (for example, Profesar saaheb ⟶ Niiraa in *KP*, or Maadhav ⟶ Iiraa in *A*) or 4/5 (as in *PR*, Phucaai Jhaa ⟶ Maayaa).

What is interesting is that while in F ⟷ S′ and F ⟷ D relations, other things are similar, F is not likely to use honorific level 1 and 2 for his daughter(s); but he does use them for his son(s). In at least two texts I find that F uses honorific verb marking while talking about S′ with other people. The same F selects neutral or nonhonorific levels 4/5 while talking to his S′ directly. In *HK*, for example, F quite often uses 3p H pronoun for his highly educated son who is a government official. In *AM*, again, Ayaacii employs level 3 for his son Śankar in direct speech. But when Ayaacii talks to his wife and wants to make reference to their son, he uses an honorific P/V level.

When M talks to S′, she most often uses level 2 (as in *AM, SS*, and *MB*) or an honorific in the third person. She also uses 4/5 to him (as in *KP*: Anuraadhaa ⟶ Kamal; *JK*: Sanjhaa ⟶ Jiibuu). In these texts, I have not found a single instance where M uses the neutral level 3 to S′. Considering the P/V-level selection in real-life situations, this seems to be an accident. When S′ engages in a conversation with M, he is likely to select 4/5: for instance, in *KP, JK*, and *B*, and even in *P* when Grajakaanta talks to Gujiaa.

The M ⟷ D relation is more or less symmetric, in the sense that more often than not they are likely to use level 4/5. This pattern is attested in all the texts under consideration.

For grandparents, one invariably uses level 2. In return, one may get 3 (as in *P*) or even 4/5; this is very much the case in real life.

Equal relationships and politeness rules

In the case of a B ⟷ S dyad, the norm is that B will use level 4/5 (as in *KP*) or at times even 2, especially if S is much older than B. The latter use is, however, restricted. The sister may use level 4/5 (for example, *P*: Paaro ⟶ Brajakaanta) or 2 (as in JS: Campaa ⟶ Phuudar; *PR*: Maayaa ⟶ Mohan; *KP*: Anuraadhaa ⟶ Jagannath Miśra). Even between cousins, it could be either

2 (Maayaa–Mohan) or 4/5 (Paaro–Brajakaanta), depending upon factors other than kinship.

Between B ⟷ B, the level selected could be 4/5 (*JK*: Śiibuu ⟷ Baijuu), but this is not necessarily the norm. In *P*, we find the hero Brajakaanta using 4/5 for B_y but 2 for all three B_e. In *HK*, kanTiir, an uneducated villager, uses both honorific and nonhonorific levels to talk to his educated and highly placed brother. Thus he vacillates between two options. In *SS*, Vanviir selects an honorific level for his cousin Sangraam SiNH – the king of Mewar – whereas in *MB*, Saabar follows the same pattern even when he is talking to his elder brother Lorik, the mythical hero. In *JK*, Niiluu, a schoolboy, selects level 2 for his grownup and educated cousin but gets level 4/5 most of the time and level 3 rarely.

Between two sisters, in most cases I find that level 4/5 is used by both. However, in *A* one finds a slightly different pattern. Here S_y uses level 2 for her S_e, while the latter uses level 3 for the former.

Sex and politeness rules

There are in all 22 H–W pairs in these texts. Out of these, Kamal's F and M in *KP*, Jiibuu's F and M in *JK*, or Śiibuu and his wife in the latter text and Brajakaanta's F and M, as well as B and BW in *P*, are not found talking to or about each other. Even if we leave them out, Culhaai Caudharii–Paaro (*P*), Siital senii–her husband (*SS*), Vidyaapati–Mandaakinii (*MV*; also in *UMKG*), Gautam–Ahalyaa, Raam–Siitaa, Lorik–Maanjar[1], Śaileś–Kusumaa (all in *MB*), P.N. Thaakur–Taarinii (*MP*), Śiva SiNh–Lakhimaa (*MV*), Jagdiiś–Paarvatii, Suurtii–Pokhraamwaalii (*DB*), Śaastrii jii–Campaa (*JS*), Ayaacii Miśra–Bhaavanii (*AM*), Puurnendu–Niiraa (*A*), Jiibuu–Bindaa (*JK*), and Sundar–Nirmalaa (*KP*) – all of them use level 2 to talk to each other and opt for an honorific level to refer to each other. There is, however, a solitary instance, in the dialogue between PackauRii and Sugiaa (*B*) where both use level 4/5 to each other. At this point, I will refrain from comment on why this is so.

Skewed relationships

The skewed relationships, especially that of Ego and his or her in-laws of the same generation or one generation up, show interesting patterns of P/V-level selection. In *P*, one finds Paaro's mother Pratibhaamaa using level 2 and honorific in the third person for her DH Culhaai Caudharii. In *KP* too, ignoring the fact that her son-in-law as well as his father had tortured her daughter and driven her to the point of insanity, Anuraadhaa still uses level 2 for both.

A man is not supposed to talk to his younger brother's wife or to his daughter-in-law. B_yW includes all younger relatives, such as MSS′W, MBS′W, FSS′W, FBS′W, EMOS′W, and EFOS′W (where MO and FO are of the same generation as EF and EM). Similarly, daughter-in-law or ES′W will include wives of sons or those who are like one's son; that is, ES′W here will also include EBS′W, ESS′W, EWSS′W, EWBS′W, and such others. If one is forced to talk to B_yW or S′W, one uses passivelike constructions without using any pronoun in the second person. The subject pronoun is in the third person, and the pronoun selected must be honorific. An alternative is to talk to them through a child or any other person who can talk to both of them. In return, these women follow the same rules.

In the skewed relationships between persons who belong to the same sex (such as EHM, EWF, EHS, EWB), we find only one example in these texts. In *JK*, while talking to her mother-in-law Sanjhaa, Bindaa uses only passive-like constructions. Sanjhaa in return uses level 2 and active constructions. For example, throughout the play, Binda uses sentences like (9a), whereas Sanjhaa uses sentences like (9b):

(9) a. hinkaa kich^{u} hoit^{a} chalanh^{i} ? (Malangiya 1967: 71)
3p-H+obj something be+habit aux+past+AGR
'Did anything use to happen to her (= you)?'

b. hamraa ta bujhle nah^{i} chal^{a} je ahaa^{n} (1967: 69)
1p, sg+obj part. know+P.ptc. neg that 2p-H-2
'I did not even know that you . . . (would be coming).'

This is a commonly accepted pattern throughout the Mithila region. For *EWF*, one selects level 1 (that is, *apnE*) with or without passivelike construction but receives level 2 almost invariably. For EHS and EWB, one expects both sides to use level 2 unless they are much older in age than EH and EW, respectively. If the age difference is great, then the pattern is like that of EWF for EWB, or of EHM for EHS.

Other relatives

I shall briefly deal with P/V-level selection rules applicable to other kinship relations in this subsection. To S′WF or DHF, a male Ego would use level 1. It is not an accepted practice for him to talk to S′WM or DHM. If one has to, the level selected would be either 1 or passivelike constructions coupled with a third person honorific pronoun as subject in place of a second person pronoun. In return she would almost always select the latter option. To one's HS and HB, or to WS and WB, as the case may be, one does use level 2, as already noted, but interlocutors may come down to level 3 depending upon

how informal the relation becomes. In *KP*, for instance, Jagannath Miśra (Kamal's maternal uncle) goes to meet Profesar saaheb, Śyaamaa's father, for marriage negotiations but uses level 2 instead of level 1. In this case, Śyaamaa's father reciprocates in the same way because they happen to know each other. In *JK*, Baijuu uses level 3 for B_eW Sanjhaa. Śiibuu does the same. However, while Śiibuu, whom Sanjhaa holds in high esteem, gets back level 2 from her, Baijuu manages to get only 4/5. This is the same pattern that Sanjhaa's son Jiibuu follows while talking to Śiibuu and Baijuu. This may look contrary to the politeness rules given earlier, but one discovers the reasons as the play progresses. Jiibuu's reasons for selecting nonhonorifics are many. First, Baijuu is an extremely corrupt person. Second, he has tried to usurp their property. Third, as one discovers toward the end of the play, taking advantage of the fact that Sanjhaa has lost her husband, Baijuu first raped her and then tried to molest Śiibuu's daughter Śaanti. Since this is an unusual situation, the social norm is violated. In the same text, Niiluu uses level 2 for his cousin's wife; he is only a small child, but still he gets back level 2 from her, who is obviously much older. In *A*, Iiraa and her elder sister's husband Puurnendu use level 2 for each other. But in *JS*, Phuudar is infuriated on learning that Baalmukunda Śaastrii has eloped with his sister and later married her without his consent. He therefore uses level 4/5 and shouts at him, saying,

(10) rau mukunmaa, rau mukunmaa, buujhal^{a} nah^{i} chal^{a} je
Voc Mukund+derogative voc Mukund+derogative know+p.ptcpl. neg was that
bhaa^{n}R caTaa kae saa^{n}p pos^{a}lah^{u}" . . . paRh^{i} likh^{i} kae
pot lick+cause abs. snake keep+past+AGR read+abs. write+abs.
hamre ghar mE Daakaa delE^{n} re pissaac ?
(Kumar Gangananda Singh 1967: 90).
1p+poss+emph house in decoity give+past+AGR voc fiend
'Oh Mukund, I did not know that I had reared a snake. After receiving education, you devil, did you have to loot my house?'

This is yet another unusual situation, and it is for this reason that Phuudar selects level 4/5 in place of 2. In *P*, for SH Culhaai Caudharii, Brajakaanta selects level 2 and retains the same even when he comes to know that this man performs unusual sexual act with his wife Paaro, whom Brajakaanta loves passionately. This only points out that one does not invariably reduce the level of politeness in such instances. Phuudar and Brajakaanta behave differently with their respective SH, whom they do not like.

P/V-level selection rules: a summary

Let me summarize the *politeness rules* that have been discussed in the preceding sections:

(11)	a.	F $\rightarrow$ S′	= 2, 3, 4/5	S′ $\rightarrow$ F	= 2
		M $\rightarrow$ D	= 4/5	D $\rightarrow$ M	= 4/5
		B $\rightarrow$ B_e	= 2	B $\rightarrow$ B_y	= 4/5
		S $\rightarrow$ S_e	= 2, 4/5	S $\rightarrow$ S_y	= 3, 4/5
	b.	S′ $\rightarrow$ M	= 4/5	M $\rightarrow$ S′	= 2, (3), 4/5
		F $\rightarrow$ D	= 4/5	D $\rightarrow$ F	= 2
		B $\rightarrow$ S_e	= 2, 4/5	S_e $\rightarrow$ B	= 2, 4/5
		B $\rightarrow$ S_y	= 4/5	S_y $\rightarrow$ B	= 2
		H $\rightarrow$ W	= 2	W $\rightarrow$ H	= 2
	c.	E $\rightarrow$ WF	= 1 (+passive)	E,M $\rightarrow$ DH	= 2
		E′ $\rightarrow$ HF	= i. no talk; ii. passive+ 3pHSUBJ	E,M $\rightarrow$ S′W	= same as in (i) and (ii)
		E $\rightarrow$ WM	= 1 (+passive)	E,F $\rightarrow$ DH	= 2
		E $\rightarrow$ HM	= passive + 3p H SUBJ	E,F $\rightarrow$ S′W	= 2
	d.	E,M $\rightarrow$ S′WF	= 1, (2)	E,F $\rightarrow$ S′WF	= no talk (norm)
		E,M $\rightarrow$ S′WM	= no talk (norm)	E,F $\rightarrow$ S′WM	= 2
		E,M $\rightarrow$ B_eW	= 2	E,F $\rightarrow$ HB_y	= 2
		E,M $\rightarrow$ B_yW	= no talk	E,F $\rightarrow$ HB_e	= no talk
		E,M $\rightarrow$ SH	= 2	E,F $\rightarrow$ SH	= 2
		E,M $\rightarrow$ WB_e	= 2	E,F $\rightarrow$ HS_e	= 2
		E,M $\rightarrow$ WB_y	= 2	E,F $\rightarrow$ HS_y	= 2, 3
				E,F $\rightarrow$ BW	= 2

Apart from these, social behavior demands that level 2 be the most common choice between two male friends. Depending on a number of other factors, levels 3 and 4/5 are also selected. Two female friends are likely to shift to level 4/5 from 2 sooner than their male counterparts. Between unrelated members of the opposite sex, it is invariably level 2 that is selected. A man and a woman in love will also follow the same rule.

It is quite evident by now that along with kinship, other factors such as age and sex play almost equally important roles in determining the nature of politeness behavior. A closer look at (11a) through (11d) to find out which relations show a symmetrical exchange of politeness levels (that is, give and receive the same P/V level) and which show assymetry in this respect reveals the following:

(12) a.

	Relations				*Symmetric exchange*	*Asymmetric exchange*		
a.	F	↔	S′	=	2	2	↔	3, 4/5
	M	↔	D	=	2	4/5	↔	
	B_e	↔	B_y	=	–	–	↔	4/5
	S_e	↔	S_y	=	4/5	2	↔	3, 4/5
b.	S′	↔	M	=	4/5	2, 3	↔	4/5
	F	↔	D	=	–	2	↔	4/5
	B_e	↔	S_y	=	–	2	↔	4/5
	B_y	↔	S_e	=	2, 4/5	4/5	↔	2
	H	↔	W	=	2	–		
c.	WF	↔	DH	=	–	1(+pass)	↔	2
	HF	↔	S′W	=	i. no talk ii. passive + 3p H SUBJ	–		
	DH	↔	WM	=	–	2	↔	(+passive)
	HM	↔	S′W	=	–	pass + 3p H SUBJ	↔	2
d.	S′WF	↔	DHF	=	2	–		
	S′WM	↔	DHM	=	2	–		
	S′WF	↔	DHM	=	no talk	–		
	S′WM	↔	DHF	=	no talk	–		
	B_y	↔	B_eW	=	2	–		
	B_e	↔	B_yW	=	no talk	–		
	SH	↔	WB_e	=	2	–		
	SH	↔	WB_y	=	2	–		
	SH	↔	WS	=	2	–		
	BW	↔	HS_e	=	2	3	↔	2
	BW	↔	HS_y	=	2	2	↔	3

Serious consideration of (11) and (12) results in the following observations: first, irrespective of age difference, two female relatives are very likely to select the same P/V levels. For their male counterparts, the pattern is more asymmetrical. The only major exception to this is the HM ↔ S′W relationship. Between male and female relatives, the former almost always receive higher levels from the latter and give, in return, lower levels. (11b) shows this very clearly: in the first column, male relatives are found using level 4/5 most of the time to their M, D, and S, although they get back higher levels, as the right column shows. Only H and W behave as equals. Between two male relatives, on the other hand, the exchange is almost always asymmetrical. If two brothers are of different ages, the P/V levels selected have to be different.

Second, even in (11c) one notices that a male Ego is allowed to talk to WF or WM but that he has to show himself additionally polite by selecting level 1 (+passive) for both. To his own F and M, he selects levels 2 and 4/5, respectively. One can guess that here the reasons for acting more polite has to do with the fact that for one's in-laws, more than age, it is the factor of kinship that influences one's choice. To one's wife's brother, irrespective of his age, one has to select 2, as in (11d). Notice here that the female Ego is not supposed to talk to her HF and must use a strategy of passive sentences with a third person pronominal subject to talk to HM. In the case of both male and female Ego talking to DH, there is no problem, because both select level 2. A female Ego can do the same with S′W too. But a male Ego is not expected to talk to his son's wife. Here we see that the kinship relation between two prospective interlocutors will determine how one is to talk to the other. Age and sex appear to be secondary.

Third, the fact that the pairs HF/S′W, HB_e/B_yW, E,M/S′WM, and E,F/S′WF are not supposed to talk to one another should be interpreted in the following way: first, one shows the utmost respect to another when one does not talk, does not look directly into the other's eyes, and does not pass through a space where the other is present. At the same time, by making it a taboo to talk to one's S′W, B_yW, and S′WM, society expects a male Ego will treat these relations as sacred. In the first two pairs, age also plays an important role in determining speech behavior. Between HB_y and B_eW, where the man is younger than the woman, the relationship is very warm and cordial. It may be noted here that for a female Ego, HF will also include HFB, HFF, HFSH, HMB, HMF, or HMSH. Similarly, S′W will include those who are like one's S′, and B_yW will also include wives of all those B_y who may be one's cousins.

Finally, notice that (12d) shows the smallest number of asymmetric speech exchange, while (12b) rates highest in this respect. All pairs in (12b) show age as well as sex differences. (12a), which comes closer to (12b) in this respect, includes members of the same sex in each case. All pairs in (12c) show differences of age and sex as well as marital relationship. Here correct speech behavior requires that they be most polite – something that is more important than a mere selection of an asymmetric politeness strategy.

From the above discussion, one can conclude that (1) age is an important and decisive factor mainly in the case of male relatives; (2) in a male-female dyad, it is the male who gets a higher level than the female member of the dyad even when the latter is older; and (3) in a skewed relationship, sex difference is more important than age difference in the selection of the correct P/V level of politeness strategy.

Socioeconomic status and politeness rules

In this section I shall discuss how sociocultural factors such as social status, caste, religion, and educational level play important roles in determining politeness strategies. Two unrelated and unknown persons will open their conversation with level 1 or at least with level 2. A young man or a woman may select level 1 for an elderly person even if he or she gets back only 2. If this pattern is violated, there is always a reason for it. For instance, in *A*, when Kunaal first enters Maadhav's drawing room, just after the latter's creditor Vrindaavan has left, giving Maadhav a stern warning to repay his debt, Maadhav uses level 1 to talk to Kunaal, in spite of the fact that Kunaal is much younger. Kunaal responds in the same way. But Maadhav very soon realizes that this man has no business with him and is a vagabond. So he shifts to level 3, indicating that he is not interested in talking to Kunaal. Kunaal comes down to level 2 but no lower because Maadhav is almost twice his age. Similarly in *PR*, Mohan uses level 2 for his FSH Phucaai Jhaa – an extremely orthodox believer and a miser. He does so even though he does not like Phucaai Jhaa. So when he talks to Rameś (Mohan's friend who loves Maayaa, Phucaai Jhaa's daughter), he refers to Phucaai Jhaa as '*canDaal-cok*^{a}*Rii*' (meaning 'the worst of the Candals who by profession exhume human bodies') and uses third person nonhonorifics for him. One can see that there are special reasons for violation of the norm in such cases.

In these texts, only once do we find a Muslim talking to a Hindu. In *KP*, a Muslim tailor, Idris, comes to Profesar saaheb's house. He speaks a kind of broken Hindi (although in reality there are many Muslim speakers of Maithili in North Bihar) and uses *aap* in the second person, which in Hindi is equivalent to Maithili level 1/2. But in return, he gets only level 3 from Profesar saaheb as well as his very young daughter Niiraa. This, I suppose, is due not to religious differences but to the fact that a tailor occupies a lower socio-economic position in the social system than Profesar saaheb's family, which falls into the upper-middle-class bracket.

In *JS*, we find Ciranjiiv Jhaa, an upper-caste orthodox village priest, using level 4/5 for Domnaa, a Harijan leader who is bent upon opening the temple to all castes. The priest is seen trying in all possible ways to restrain him from doing that. At one point, in order to be more polite to Domnaa, Ciranjiiv uses other strategies, such as the use of *baabuu* in the vocative. Consider the following:

(13) rau Domnaa. Kane sun^{i} jai-hE^{n} baabuu (K. G. Singh
voc a little hear+abs go+AGR (Imper voc 1967: 81)
'Oh Domnaa, please come here for a moment.'

Here the use of *Kane*, *jai-hE*^{n} (in place of *jo* in the imperative, which sounds like an order), and *baabuu* makes it polite. The priest is as polite as possible to Domnaa because he needs the latter's help. Still, he is not expected to come up to level 2 to a lower-caste person.

I have already discussed the case of Phuudar in *JS* who is terribly angry with Baalmukund Śaastrii, who eloped with the former's sister and later married her against his wishes. Śaastrii is a harijan who received a higher education in Sanskrit in India and abroad. He has come back to his village to work for the uplift of the downtrodden. Phuudar is a Brahmin by caste but is uneducated and poor. Thus, although Phuudar uses level 4/5 for Śaastrii, he himself does not command much respect from the upper-caste people of his village. Darogaa-jii, a police officer, who otherwise used level 2 to Divaan-jii, manager of an estate, and Ciranjiiv Jhaa, the priest, selects level 4/5 for Phuudar when arresting him for beating up Śaastrii and his wife (Phuudar's sister).

This pattern is maintained even among women. In *AM*, we find Bhaavanii, wife of the famous scholar Ayaacii Miśra, using level 4/5 to Marmii-maay, a low-caste nurse, who had helped Bhaavanii enormously at the time of childbirth but could not be paid then because the family had no money. In all such instances, the person lower in the social hierarchy uses level 1 (or even 2) for those in a higher class or caste.

The most common P/V level used by members of lower classes and castes among themselves is 4/5. This pattern is noted everywhere, irrespective of sex difference. I have already noted that in *B*, a H/W pair (PackauRii-Sugiaa) uses level 4/5, although all other H/W pairs in these texts use level 2 for each other. Now it is easier to understand why they violate the norm. PackauRii and Sugiaa belong to one of the lowest castes and therefore follow a different pattern. Similarly, in *B* another landless low-caste villager, Thakaai, uses 4/5 for both PackauRii and Sugiaa and gets back the same. In *JS*, the Harijan leaders Domnaa and Mancanmaa use level 3 to address their community in a meeting, but for individual members both use level 4/5. All the Harijans use level 2 for Balmukund Śaastrii initially, after the latter has come back from abroad, because they take him to be an educated person who has come from outside to fight for their cause. But soon someone discovers that he is none other than Mukunmaa, a fellow Harijan from the same village. So they forget what his present status is and use level 4/5 without any hesitation:

(14) re mukun-maa thikE^n rau ? to^n
voc Mukund + derogative be + pres + AGR voc you
Śaastrii kahiyaa sO^n bhelE^n ? (K. G. Singh 1967: 88)
Shastri when from be + past + AGR
'Are you Mukund, eh? Since when did you become Shastri?'

In MMN, we find Maathura and Saamvahaka, (an exservant of Caarudatta, the nobleman), two lower-class gamblers, quarreling with each other over nonpayment of old debts. Both use level 4/5 for the other. In the same play, Śarvilaka, a thief, and Madanikaa, a maid of the famous prostitute Vasantasenaa, the heroine, who love each other, use level 3 in place of the usual level 2. This must be explained in terms of their membership in a low socioeconomic class. On the other hand, if the interlocutors belong to the upper class, they are most likely to use level 2 in most instances. Let us look at some examples. In *PR*, when three office-bearers of Mithilaa Sangha come to Phucaai Jhaa, the miser, to collect donations for their organization, they use level 1, but Phucaai Jhaa vacillates between 1 and 2. In *AM*, in the royal court, the ministers, the courtiers, and the royal pundit use level 1 for the king and receive level 2 in return. But among themselves they use level 2 only. When the famous court poet Vidyaapati uses 1 and calls the king 'Mahaaraaj' in *MV*, Śiva SiNha, the king, does not like it. Śiva SiNha and Vidyaapati have grown up together as childhood friends, and therefore the king wants his friend to use level 2. Vidyaapati tells him that their present relationship demands a certain type of behavior from him, and that they have to follow the norm. The non-Maithili-speaking characters in the plays follow the established norm and use level 2 mostly, whenever they have to speak in Maithili, as in the dialogue in *MP* between N. C. Roy, a Bengali government official, and P. N. Thaakur, a so-called 'specialist' in Maithili culture. In *PR*, however, the Bengali doctor Dr. KunDu is shown using *tum*/*tumi* (loanwords from Hindi and Bengali, respectively). All others are shown talking to him in Maithili and using level 2. In this case, Dr. KunDu is speaking in some kind of mixed variety of Maithili, using Bengali and Hindi expressions profusely. This is an example of a non-Maithil using some kind of Maithili without knowing it very well.

If a person of lower socioeconomic status uses level 4/5 to someone who belongs to the upper strata, the reason for this unusual behavior may be found somewhere else. In *KP*, for instance, the servant Budhnaa uses level 4/5 to his master's grownup daughters, Śyaamaa and Niiraa. He gets back 4/5 from them. The reason for this exceptional behavior is clear when we learn that Budhnaa brought up the girls after their mother's death. The mediators (called *ghaTak*) in marriage negotiations and messengers sent by one family to another are treated with honor. In *KP*, we find Jagannaath Miśra using level 2 for Budhnaa, the servant (*khabaas*), who comes as a messenger.

An educated Maithil speaking to another who is also educated would use level 2 or 3 symmetrically, depending upon how intimate they are. If their relationship is formal, the level selected would surely be 2. Between a teacher and his students, the level selected is 2 at the college and university level. At

lower levels, the pattern may be asymmetrical. In rural areas, the village pundit may use 3 or 4/5 for the children and receive 2 from them. Even in villages, it is the educated who at times violate the accepted social norm. For instance, in *B* we find two educated men, Dharaniidhar and Jayakaant, using level 2 for a low-caste worker, PackauRii Kaamat^{i}, who had been wronged by the village *Mukhiaa* (the headman). Here the *Mukhiaa* and his school-age son use level 4/5 when talking to PackauRii and his wife Sugiaa.

Attitude, setting, mood, and politeness rules

Other factors such as attitude, setting of the speech event, and mood may also lead to violation of the norms of P/V-level selection. In *UMKG*, Vidyaapati uses level 1 for Ud^{a}naa, the Lord Śiva in disguise (who was pleased with Vidyaapati's devotion and therefore came down to serve him), until he finds out who Ud^{a}naa is and what he wants from him. When he learns that he wants a servant's job, Vidyaapati can no longer use level 1 or 2, so he comes down to 3, the neutral level. Finally, he settles for 4/5. In *B*, the Mukhiaa taunts Sugiaa by using a 3p honorific pronoun for her husband PackauRii and by referring to him as *Nawaab saaheb* (the Muslim governor) and *liiDar saaheb* (the leader). He also uses a 3p honorific subject pronoun along with passive verbs for Sugiaa for a similar effect.

There is yet another instance in *MP* which shows how the politeness rules are violated. P. N. Thaakur, a self-acclaimed expert on *Mithilaa* art and *Maithilii* culture, wants his name to be included in a cultural delegation going to the USSR, so he requests Rekhaa, a charming 'modern' lady, to act as his wife when Mr. N. C. Roy comes to his house. (Mr. Roy is a top government official who handles the cultural exchange program.) He does this because his own wife Taarinii cannot speak anything but Maithili, and he is afraid that she may spoil his chances of going abroad. Rekhaa agrees to help Thaakur and comes to his house. Thaakur then happily goes to fetch Mr. Roy. In the meantime, the two ladies start talking. Taarinii knows why Rekhaa has been brought. In the first few minutes, she uses level 2 for Rekhaa, as is expected. Soon she starts calling her names (such as *ranDii* 'prostitute') and then shifts to level 4/5 in order to insult her. Taarinii begins using sentences such as the following:

(15)

paRaa	ekhan	hamraa	ghar	sO^{n},	nah^{i}	ta	ham
flee + imp + AGR	now	my	house	from	neg	particle	I

sau^{n}th	jharkaa	debauk^{a} (Govinda Jha 1967: 32)
hair-parting	burn + Cause	give + fut + AGR

'Get out from here, or I will burn your hair-parting [= destroy you].'

Here Taarinii selects level 4/5 because she is not in a compromising mood.

In *MV*, we find the queen Lakhimaa using a 3p honorific to talk about her personal maid. It may be proper for the royal family to do so, but this is not an accepted pattern. In *JS*, the priest uses the 3p honorific pronoun to refer to Domnaa, for whom he otherwise uses level 4/5. But then there is a special reason for him to do so: he is seen asking the Harijan leader Domnaa to call off the agitation which he has launched to force open the temple to all castes. When he fails to convince Domnaa, he tells *phakraa* (a proverb) and uses 3p honorific and level 3 in the second person instead of 4/5:

(16)

rau.	'Baabhan	gaa^{n}v	mE	raaR	pajiaaR' –	baR
voc	Brahmin-	village	in	low-caste	pedigree-keeper	much

mu^{n}h^{a}gar	bhel^{a}	chath^{i}.	bhaagah^{a}	kii	?
mouthed	be + pft	be + pres + AGR	get-lost + imp + AGR	what	

(Kumar Gangananda Singh 1967: 82)

'You ... (You think that) in a Brahmin-village, (you,) being a low-caste man (, can still be a) pedigree-maker. Get lost or (I will teach you a lesson).'

In *A*, Kunaal employs level 1 plus passive verbs (at times) along with a few highly honorific words for Puurnendu in order to insult him, because Puurnendu had agreed to desert his wife because his father was not satisfied with the dowry she brought. Here Kunaal should have used level 2. Thus we find people deviating from the norm (by moving up or down through the P/V levels) depending upon their attitude toward their interlocutor(s), their mood, and the setting or scene of the speech event.

Conclusion

In the preceding sections, I have demonstrated how certain sociocultural factors such as kinship, sex, age, socioeconomic status, educational level, attitude, setting, and mood determine what politeness rules in Maithili should be. These are also the factors that are responsible for violation of these P/V-level selection rules. However, the fact that attitude, setting, mood, and educational level are responsible for violations of the norm more frequently than are other sociocultural factors suggests that they will have to be put at the bottom in a *politeness hierarchy*. These factors will surely be preceded by kinship, sex, age, and socioeconomic status. I have already argued that kinship, sex, and age have to be kept in this order depending upon their importance in the selection of P/V levels. The section on socioeconomic status has undoubtedly shown that, irrespective of age and sex differences,

if members of a dyad have a different socioeconomic status, the interlocutors must adopt different politeness strategies. In other words, the factor of socioeconomic status is higher in the hierarchy than the factors of age and sex. At the same time, kinship is the most important factor because even if one's relatives belong to a lower caste (where intercaste marriage has taken place) or class, they must be treated according to the politeness rules determined by kinship. On the basis of these observations, I would like to propose the following politeness hierarchy in Maithili, which is purely tentative and is, of course, subject to further modification:

(17) *Politeness hierarchy in Maithili:*
KINSHIP ⩾ SE STATUS ⩾ SEX ⩾ AGE ⩾ OF (other factors, such as educational level, attitude, setting, and mood)

University of Hyderabad

Notes

1. An earlier version of this paper was presented at the Seminar on Politeness Hierarchy in Indian Languages held at Osmania University, 27–28 February, 1981. I am grateful to Professors D. D. Mahulkar and M. K. Nath, who very patiently listened to me in the course of informal discussions that I held with them and encouraged me to write this paper. I would also like to thank Professors Bh. Krishnamurti, H. S. Ananthanarayana, R. R. Kelkar, C. Ramarao, R. R. Mehotra, Anjani Kumar Sinha, K. V. Subbarao, Ramakant Agnihotri, D. M. Joshi, Kashyap Mankodi, Anoop Kumar Mahajan, and Gyanam Dave for their kind comments on different versions of this paper.
2. The following abbreviations are used for these 16 texts: *A* = Aagantuk (Dinanath Jha 1967); *AM* = Ayaacii Miśra (Harimohan Jha 1967); *B* = Brahmasthaan (Amar 1967); *DB* = Dulaarak bhuukh (Ramdeva Jha 1967); *HK* = HathTuTTaa Kursii (S. S. Chowdhury 1967); *JK* = Juaael^{a} kankanii (Malangiya 1972); *JS* = Jiivan sangharśa (K. G. Singh 1967); *KP* = Kaniyaa put^{a}raa (Gunanath Jha 1966); *MB* = Mithilaak beTii (Verma 1967); *MMN* = Maithilii MricchakaTik naaTak (Ishanath Jha 1955); *MP* = Mithilaak pratinidhi (Govinda Jha 1967); *MV* = Mahaakavi Vidyaapati (R. Chowdhury 1967); *P* = Paaro (Yatri 1965); *PR* = Premak rog (P. N. Singh 1968); *SS* = Śiital senii (Kiran 1967); *UMGK* = Ud^{a}naa re mor katae gelaa (Kisun 1967).
3. The following symbols have been used in transcribing Maithili data: The short vowels *a, i* and *u* have been doubled to indicate their longer counterparts, and for the half-short varieties they have been put in superscript. The superscript *n* marks nasalization. The vowel symbols *e, E, o,* and *O* stand for front higher mid, front lower mid, back higher mid, and back lower mid, respectively. *T, Th, D, Dh, R* and *Rh* are retroflexed consonants. The sibilants are *s* and *ś* and the nasals include *m* and *n*. The latter has been used capitalized – [N] – to denote the velar nasal. Other consonants are *p, ph, b, bh, t, th, d, dh, k, kh, g, gh, c, ch, j, jh, r,* and *l*. The semiconsonants are *y, v,* and *h*.

References

Amar, Chandranath Misra (1967). Brahmasthaan. In *Pratinidhi ekaaNkii*, Chandranath Misra Amar (ed.), 45–72. Darbhanga: Navaratnagosthi.

Chodhury, Rajkamal (1967). Mahaakavi Vidyaapati. In *Nava ekaaNkii*, M. S. Mahesh and P. S. Singh (eds.), 108–128. Bhagalpur: Maithili Prakashan.

Chowdhury, Rajkamal (1967). Mahaakavi Vidyaapati. In *Nava ekaaNkii*, M. S. Mahesh and Chandranath Misra Amar (ed.), 73–82. Darbhanga: Navaratnagosthi.

Jha, Dinanath (1967). *Aagantuk* (Maithili adaptation of an original Bengali play by Narayan Gangopadhyay). Calcutta: Mithila Kala Kendra.

Jha, Govinda (1967). Mithilaak pratinidhi. In *Pratinidhi ekaaNkii*, Chandranath Misra Amar (ed.), 23–44. Darbhanga: Navaratnagosthi.

Jha, Gunanath (1966). *Kaniyaa put^{a}raa*. Calcutta: Mithila Kala Kendra.

Jha, Harimohan (1967). Ayaacii Miśra. In *Nava ekaaNkii*, M. S. Mahesh and P. S. Singh (eds.), 1–16. Bhagalpur: Maithili Prakashan.

Jha, Ishanath (1955). *Maithilii MricchakaTik naaTak*. Darbhanga: Darbhanga Press.

Jha, Ramdeva (1967). Dulaarak bhuukh. In *Nava ekaaNkii*, M. S. Mahesh and P. S. Singh (eds.), 92–107. Bhagalpur: Maithili Prakashan.

Kiran, Kanchinath Jha (1967). Śiital senii. In *Pratinidhi ekaaNkii*, Chandranath Misra Amar (ed.), 97–118. Darbhanga: Navaratnagosthi.

Kisun, Ramkrishna Jha (1967). Ud^{a}naa re mor katae gelaa. In *Pratinidhi ekaaNkii*, Chandranath Misra Amar (ed.), 83–96. Darbhanga: Navaratnagosthi.

Malangiya, Mahendra (1972). *Juaael^a kankanii*. Lohna, Nepal: Ganga Prakashan.

Singh, Kumar Gangananda (1967). Jiivan sangharśa. In *Nava ekaaNkii*, M. S. Mahesh and P. S. Singh (eds.), 79–91. Bhagalpur: Maithili Prakashan.

Singh, P. N. (1968). *Premak rog*. Calcutta: Loka Sahitya Parishad.

Singh, Udaya Narayana (1979). Agreement rule, language universals and Maithili. *South Asian Language Analysis*, 1: 107–113.

– (1980a). Some aspects of Maithili syntax: transformational-generative approach. Unpublished Ph.D. dissertation, University of Delhi.

– (1980b). Verb agreement hierarchy and falsifiability. (Paper read at the Golden Jubilee Celebrations and Linguistic Society of India Conference, University of Delhi, Delhi, 1978). *Papers in Linguistic Analysis* 3.

Verma, Brajakishor (1967). Mithilaak beTii. In *Nava ekaaNkii*, M. S. Mahesh and P. S. Singh (eds.), 147–156. Bhagalpur: Maithili Prakashan.

Yatri (1965). *Paaro*, 2nd ed. Darbhanga: Granthalaya.

TOWARDS A HISTORIOGRAPHY OF MAITHILI LANGUAGE DEVELOPMENT

Udaya Narayana Singh
University of Hyderabad, Hyderabad.

1. Maithili: Speech Area

Grierson (1908) had described the speech area of Maithili to be the entire districts of Darbhanga and Bhagalpur of Bihar in the early 20th century. In addition, he had enlisted Maithili as a language spoken by the majority of people living in the districts of Muzaffarpur, Monghyr, Purnea and Santhal Parganas, although his population estimates based on his survey done in 1891 were not agreed upon by all. Grierson (1909) also wrote in his 'Introduction to Maithili' that Mithila has always been distinguished in common parlance as a distinct "country with its own traditions, its own poets, and its own pride in everything belonging to itself". During the Moghul period, a part of the northern speech area was permanently annexed by the Kingdom of Nepal. Therefore, at present, a large tract of the Terai region of Nepal is to be taken as a part of the Maithili speech area, as according to the official figures, about 13% population of Nepal—mostly living in this region, have returned Maithili as their mother tongue in Nepal.

During the Moghul era, the region was called 'Tirhut' (cf. 'Tirhutaa' was the name of the writing system employed by Maithili), and it formed a *sarkaar* (= division) of the *subah* (= province) of Bihar. Even in the early British period, as the District Gazetteer of Muzaffarpur says, there indeed was a large geographical space under the 'Tirhut division' bound on the north by Hajipur, Monghyr and Purnea divisions. The British used 'Tirhut' to designate a revenue division spreading over the districts of Muzaffarpur, Darbhanga, Champaran and Saharsa. Jayakanta Mishra (1976: 2) describes its area to be spreading over the following districts: "[this comprises roughly the districts of] Muzaffarpur, Sitamarhi, Vaishah, Darbhanga, Madhubani, Samastipur, Saharsa, North Monghyr, North Bhagalpur and a part of Purnea in the Indian republic and those of Rautahat, Saralahi, Saptari, Mohatari and Morang in the Kingdom of Nepal".

According to the Census of India 1901 (cf. Vol. VI, Pt 1; ch 10, pp. 32), at the turn of the present century Maithili was spoken in the following regions:

i. all Darbhanga and Bhagalpur,
ii. 6/7th of Muzaffarpur,
iii. 1/2 of Monghyr,
iv. 2/3rd of Purnea, and

v. 4/5 of the so-called 'Hindi' speakers (enumerated in the Census) under the Santhal Parganas.

It may be worth mentioning here that the earliest reference to the geographical space called 'Mithila' is found in 'Alphabeticum Brammhanicum' (published in 1771, vol. 5.1; pp. 23, as reported in Subhadra Jha 1958). The name used then was 'Touritiana'. The references to 'Mithila' in the RaamaayaNa and Yajnavalkasmruti are too well known to be mentioned. According 'to 'Mithilaa Maahaatmya', a Sanskrit work, "Mithila is the country bounded on the north by the Himalaya mountains, on the south by the Ganges, on the west by the river Gandak, and on the east by the river Koshi". The trouble with this definition is that the river Koshi as well as the other two changed their course so much that Shillingford (1895) had shown how the river shifted nine times between 1600 A.D. and 1893 A.D. The maps prepared by Grierson (1908:12) in his Linguistic Survey of India, Vol. V, pt. 2 show a number of differences in comparison to another map, made out by some Maithili organizations, following the description of the speech area in Subhadra Jha's (1958).

Finally, it should be mentioned that before the recent reorganization of the state, only 5 out of 17 districts (viz., Bhagalpur, Purnea, Saharsa, Darbhanga and Muzaffarpur) were generally taken as Maithili-speaking districts of Bihar. Paul Brass (1974) in his detailed study of the Maithili movement in his 'Language, religion and politics in North India' had taken these as broadly defining the geographical space of Mithila. After Bihar was split up into 31 districts in early 1980s, in a project report (entitled 'The Maithili language movement in North Bihar: a sociolinguistic investigation') prepared by me jointly with N. Rajaram and Pradip Kumar Bose, we had taken the position that 10 out of 31 districts should be considered as Maithili speech area: Bhagalpur, Katihar, Purnea, Saharsa, Madhubani, Darbhanga, Samastipur, Sitamarhi. Muzaffarpur and Vaishali.

2. Standard Literary Dialect

The speech variety based on the dialects spoken in and around Darbhanga-Shmastipur has come to be regarded as the standard literary medium, although the variety based on the Saharsa dialect has also been used by certain writers. The standardization had been accomplished quite some time back, particularly after 1940s. But the question of whether one should have unitary literary standard is still an open question.

In this context, it will probably be appropriate to mention the position of Grierson in the beginning of this century. In his Linguistic Survey of India, Grierson (1908: 13—4; Vol. V. ii) states that "Maithili is spoken in its greatest purity (Standard Maithili) by the Brahmanas of the north of the Darbhanga and Bhagalpur districts and by those of Western Purnea... It is also spoken with some purity, but with more signs of the wearing away of inflexions in the south of Darbhanga district, and in those portions of the

Monghyr and Bhagalpur districts which lie on the northern bank of the Ganges. This may be called *Southern Standard Maithili*. "He then goes on to mention its other varieties: *Chhikaa-Chhikii* born out of contact between Maithili and Magahi in the south, Western Maithili (which has a lot of Bhojpuri element in it), and the *Jolahaa bolii* (also known as the Shekhai or Musalmani, and has traits of Awadhi)—which is basically a cover term used for Muslim speech variety in Mithila. It must be borne in mind that by the name 'Standard', Grierson was referring to mainly accepted spoken standards.

3. Other Languages Spoken in the Region

The other languages spoken around Mithila are the languages also found within the Maithili-speaking districts for obvious reasons. Bihar being a multilingual state with great internal as well as external mobility, there can be found a number of Bhojpuri, Magahi, Nepali and Bengali speakers in the area where Maithils live predominantly. In addition, since Maithili speakers are found in good numbers in the Jharkhand region too, one has to take it that Oraon, Mundari, Ho, Birhar, Dhangar, Santali and a number of the smaller Austric language speakers too co-exist with the Maithils. Particularly among the non-Brahmin castes among the Maithils, the contact with Bhojpuri and Magahi speakers are also established through inter-marriages. And, of course, Hindi being the language of education and instruction and Urdu being the language of a sizable population are also available.

4. Linguistic Tensions

As I have mentioned, there are at least three major speech forms in Bihar, viz., Maithili, Magahi and Bhojpuri—all of which are usually described as dialects of Hindi. This seems to be the first source of tension which get manifested badly particularly during the decennial census enumeration work when the enumerators try recording the name of the 'language' (= Hindi) of which these are 'dialects'. These three speech varieties show varying degrees of structural differences with respect to Hindi, although it has been demonstrated by several linguists that among them Maithili is closer to the eastern NIA languages—Bengali, Assamese and Oriya rather than to Hindi. These three speech varieties of Bihar are regarded as L- varieties vis-a-vis Hindi occupying an H-position in a Fishman-type of diglossic situation by some sociologists. Grierson had long back branded them together as 'Bihari', and that name continued for quite some time.

There is no doubt that Hindi was first introduced in Mithila as a language of convenience, or one that can be used for administrative purposes in place of the traditional Persian language which was the language of the court earlier. Later, once Hindi entered into the educational arena, it gradually assumed the status of a superordinate language. In the 'Distribution of, languages in India in States and Union Territories' published by the CIIL, Mysore (1973: 9—11), we are told that 56.86% population of Bihar speak the language(s) recognized in the 8th schedule of the Constitution.

It has already been stated that Maithili is now found spread over Nepal too. In Nepal, it has Newari and Nepali as its immediately neighbouring speech communities. These are also spoken to a large extent, with varying degrees of competence, by the speakers of Maithili themselves (Cf. Yadav 1991 for a profile of multilingualism in the Maithili-speaking region of Nepal).

One should not forget that the fourth important socio-cultural region of Bihar is the Jharkhand region in South Bihar where too a large number of Maithili speakers live. According to the 1981 statistics prepared by Narottam Shah of the CMIE, Bombay ('Basic Statistics relating to the Indian Economy', table 19.3—1), the following is the distribution of space among different regions of Bihar:

REGION	*AREA in 1000 sq. km.*	*Population in lakhs*	*Density: persons per km.*
Mithila	33.4	163.7	490
Bhojpur	56.1	231.4	412
Magadh	44.7	179.4	401
Jharkhand	79.6	142.3	179

Finally, the administration quite often played the Urdu card to curb the movement for Maithili on which there are detailed studies. What is significant for us to know is that in 1980, through an amendment to the Offical Language Act, the Bihar government decided to announce Urdu as the second official language of the state (the first being Hindi), and that in the first phase the decision was to be implemented in those six districts of Bihar (Sitamarhi, Madhubani, Darbhanga, Katihar, Purnea and Bhagalpur; cf. The Statesman, Calcutta, June 12, pp. 10) that have the maximum speakers of Maithili. This is attempted to dissociate the Muslims living in Mithila for centuries from supporting the cause of Maithili. However, the Muslim-Urdu identification in Mithila is far from being complete. In the Census enumerations, the high returns for Maithili could be explained only by the fact that although 46.84% people living in the Maithili-speaking districts are Muslims, as against 31.06% Hindus in Mithila, there could not have been an overwhelming support for Maithili unless a good number of them returned Maithili as their mother tongue.

5. Population Figures

As far nack as in 1891, Grierson (1908) had estimated the number of speakers of Maithili as 9,289,376. As against this, Census 1961 figures showed 4,982, 615. This only confirms the allegations made by the Maithili enthusiasts that the pronounced official figures are unreliable. We see that there have been tremendous fluctuations in the decennial estimates of Maithili speakers as can be shown from a comparison of all Census figures since 1891 base:

1901—11: +3.120/o
1911—21: -0.77%
1921—31: +7.68%
1931—41: +9.13%
1941—51: Not conducted.
1951—61: ± 22.35%
1961—71: +20.89%
1971—81: +24.19%

Paul Brass (1974: 64—6) uses Gait's computation (cf. Census 1901) based on various documents available through 1885, and arrives at the figure of 16,565,477. The calculation here is based on Grierson's estimates plus the growth of overall population for Bihar over these 8 decades. On the basis of 1981 figures, and considering the figure of scatterred Maithils outside the Mithila area, and considering the population in the 10 districts (out of 31), Singh, Rajaram & Bose arrives at the figure of 22,972,807.

6. Literacy Rate

If we take the predominantly Maithili-speaking districts of Bihar as the area for Mithila, and if we do not include the Maithils living outside Mithila—particularly those in different states, the figures for 1971 and 1981 show 17.54% and 22.71% people to be literate, respectively, as against an all-Bihar figure of 19.94% and 26.01% respectively. But then these figures include the population in the age-group of 0—4 year old too. But if we take up literacy figures in different age-groups as per 1981 records, the picture is very distressing:

Age-group	*% of titerates in the group*
5—14	9.17%
15—24	7.98%
25—34	6.92%

What is more alarming is that before independence, Bihar was educationally the most backward state. It is also true that at the time (by the end of the period consideration—around early 1950s), when the language movement was launched only less than 7% people in Bihar could sign their names. And even in 1971, for every 1,000 literates, only 9 males and 1 female were above the graduation level and only 51 out of every 1,000 literates passed the School leaving examination. But it is also true that a large number of these literates possessed reasonably good reading and fair amount of writing skills because they were educated informally. Even if one looked as far back as in 1931, the all-Bihar showed 1,853.094 people out of 42,329,583, i.e., 4.37% were literate, although only 178,701, i.e., 0.42% were literate in English. If we add up the figures for the four Maithili-speaking districts, in 1931 out of 8,540,009 Hindus and 1,966,932 Muslims, only 4.008% and 3.854%, respectively, were literate and only

27,966 Hindus and 6,432 Muslims in Mithila had received English education. Most of the literate Hindus belonged to the upper strata of the society, as according to one calculation, in 1931, only 1.22% of the lower castes and tribes in Bihar were literate and only 0.02% of them were literate in English. 1931 Census data gave us caste-wise literacy figure, which is difficult to ascertain now. For instance, it is interesting to note that even then 37.2% Kayasthas were literate as against 18.48% Brahmins, 13.56% Bhumihars, and 12.05% Rajputs. It should not be surprising if the leadership of the Maithili language movement were drawn mainly from Brahmin and Kayasthas.

7. Language in Education

The State Government of Bihar had long back recognized the following as the media for primary education: Hindi, Urdu, Bengali, Oriya, Maithili, Santali, Oraon, Ho and Mundari, and of course, English for the Anglo-Indian schools. This decision was a result of the 1949 Provincial Education Ministers' Conference on the basis of which the article 350 A was prepared. The 17th Report of the Coin-missioner of Linguistic Minorities in India informs us that in pursuance of the provisions given in the article 350 A, there were about 358 separate classes or sections (as against 283 for Bengali, 317 schools and 78 sections for Santhali, nil for Oriya and 2,471 for Urdu) where instruction was imparted through Maithili. About 358 teachers were employed (as against 915 for Bengali, 398 for Santhali, and 6,466 for Urdu) for teaching Maithili in the primary sections for 2,937 students had opted for the Maithili medium. At the secondary level, there were 186 sections with 2,888 students taught by 186 teachers as in 1975—76.

It is possible to study Maithili in the honours as well as in the pass course at the B.A. level in various constituent and affiliated colleges under the following universities: Patna, Mithila (at Darbhanga), Bihar (at Muzaffarpur), Bhagalpur and Magadh (at Gaya). It is also possible to do MA. and Ph.D. in Maithili—for which there are reasonably good number of students—from these and from Ranchi. At Calcutta, the provision to do M.A. in Maithili exists but it has to be a private M.A. because there is no core faculty in Maithili at present.

It is also possible to take up Maithili as a subject in the Bihar Public Service Examination, and this provision makes this option attractive to those who hail from Mithila.

8. Introduction of Maithili in Education

1860 marked the establishment of a good number of schools in the province of Darbhanga by the British administration. It was at the same time that the period of Maharaja Lakshmishwarsimha began after the death of Maharaja Maheshwarsimha. Maharaja Lakshmishwarsimha himself had given a tremendous boost to English education in Mithila by establishing a school in 1880 in Darbhanga. As a consequence, by 1895, there were 9 High Schools, and 11 Middle Schools with English medium, 17 Middle Schools using the vernacular medium, besides 1,405 primary schools in the region within the old boundaries of Darbhanga and Muzaffarpur. The scholarly

atmosphere created by the Maharaja permeated into all spheres of knowledge and creativity. Maithili found itself being used not only for softer arts and literature, but also for history, geography, philosophy, ethics, mathematics, grammar, rhetoric and prosody.

Already, Maithili was put in the map of higher education and learning by a few scholars and patrons from both Bengal and Mithila. In 1917, a chair for Maithili was established by Sir Asutosh Mookerji in the University of Calcutta as a part of the Modern Indian Languages studies, thanks to the contribution of Raja Tankanath Choudhuri of Purnea and due to the efforts of Kumar Gangananda Sinha, Babu Gangapati Singha, Brajmohan Thakur and others besides the Bengali Scholars including Nagendranath Gupta and Sharadacharan Mitter. By 1919, Maithili was recognized as an independent subject for examination.

In 1931, the then Maharaja of Darbhanga, Kameshwarsimha made an endowment of Rs. One lakh to the University of Patna to create a Maithili development fund. These had the desired result of spurt in literary activities and publication, and ultimately in 1937, the language came to be recognized in the field of higher education. However, in 1941 the cause for spreading education in Maithili suffered a setback because the Bihar Primary Education Reorganization Committee rescinded its earlier decision to use Maithili as a medium of instruction at the primary level. After 1947, the Tribhuvan University also gave a place to Maithili studies in Nepal, recognizing it as an important vernacular of that country. And in 1949, the government accepted the demand to use Maithiti from the primary level upto the seventh standard. The newer University in Bihar—Bihar University (1952—), Bhagalpur University (1960—), Ranchi University (1960—) and Magadh University (1962—), introduced Maithili at the highest level almost since their inception.

9. Number of Newspapers and Literary Journals

Around the time the printing establishments came up in Mithila, a number of literary magazines like 'Mithila Hita Saadhana', Jaipur (1905), 'Mithila moda', Benares (1906) or 'Mithila Mihir', Darbhanga (1908) were begun.

In 'Maithili patrakaaritaak itihaas' (1981: Patna: Maithili Academy), Chandranath Mishra 'Amar' discusses in detail the successes and failures of Maithili periodical publications—journalistic as well as literary. One can also find some of these references in Jayakanta Mishra (1956; 1976) and Radhakrishna Chaudhury's (1976) literary histriographies. Until 1980s, one finds 78 literary journals and magazines, 11 of them being weeklies, 5 fortnightlies, 31 monthlies, 8 quarterlies. 2 half-yearlics, and 21 others with unpredictable periodicities.

10. State of Printing and Publishing

The oldest among the periodicals was 'Maithilii hita saadhan' which began in 1905 and lasted only for three years. It aimed at publishing classics and other valuable works in different fields. 'Mithilaa moda' (1906—) from Benares, first under the

editorship of M.M. Muralidhar Jha for 14 years, and then under others 'until it ceased publication in 1941, published creative pieces of different types and shaped many writers. The best known among these early magazines turned out to be 'mithilaa mihir' which began publication since 1980 under the patronage of the Maharaja of Darbhanga. For a brief period, it was bilingual, and even trilingual in Maithili, Hindi and English. It started from Darbhanga, but the new series began from 1960 from Patna published by the Indian Nation group of newspapers. After 1920s, a number of other serious magazines came out, including 'Maithila prabhaa'. Ajmer (1920—24), Agra (1924—26), Maithili prabhaakara, Aligarh (1929—30), which were meant for maintaining contact among the Maithils living outside Mithila and 'Shrii Maithilii (1925—27) and 'Mithilaa' (1929—31) from within Mithila. Among them, 'Mithilaa mitra' (1931—32) which initially started as a fortnightly, and later turned into a monthly, stands out in its effort to bring out the best among the contemporary writers. In the next phase appeared 'Maithila bandhu' (1935—43) and 'Maithil yuvak' (1938—41), both from the far away Ajmer and 'Jiivan prabhaa' (1940—50) from Agra, which were again organs of sociocultural organizations. Among the purely literary journals that made their mark during this period included ‘Mithlaa moda', new series (1936—). 'Bhaaratii' (1937—), and 'Vibhuuti' (1937—). These were all serious literary endeavours. But the magazine that truely shaped up the prose-writing of the modern era, and one which was responsible for the language standardization was 'Maithilii saahitya patra' (1937—39), a quarterly under the editorship of Pt. Ramanath Jha. After 1947, many magazines appeared, and some of them lasted very long too. The ones that continued for very long and had long lasting effect on creative writing were 'Vaidehii' (1950—confinuing) from Sitamarhi and Darbhanga, 'BaTuk' (1950—) from Allahabad, and 'Mithilaa darshan' (1953—1988, continues sporadically) from Calcutta.

In the first half of the present century, the following magazines were published:

Weeklies

I. Mihthilaa mihir, Patna (1908—)
2. NirmaaNa, Laheriasarai (1941—)
3. Mithilaa, Darbhanga (1952—)
4. Mithilaa sevak, Calcutta (1954—)

Fortnightlies

5. Mithilaa mitra, Bareilly (1931—; later a monthly)

Monthlies

6. Maithilii hita saadhan, Jaipur (1905—)
7. Mithilaa moda, Benares (1905—)
8. Maithil prabhaa, Aligarh/ Agra/ Mathura (1920—)
9. Mithilaa, Laheriasarai (1921—)
10. Shrii Maithilii, Darbhanga (1925—)

11. Maithilii yuvak, Ajmer (1930s?—; later renamed 'Jiivan prabhaa')
12. Mithilaa bandhu, Ajmer (1935—)
13. Bhaaratii, Darbhanga (1937—)
14. Saahitya Patra, Darbhanga (1937—)
15. Vibhuuti, Muzaffarpur (1937—)
16. Svadesh, Darbhanga (1948—)
17. Mithilaa jyoti, Patna (1948—)
18. Pallav, Nehra (1948—)
19. BaTuk, Allahabad (1949—)
20. Vaidehii, Sitamarhi / Darbhanga (1950-)
21. CaupaaRi, Patna (1952—)
22. Mithilaa Darshan/Maithilii Darshan, Calcutta (1953—)
23. Mithilaa duut, Kanpur (1955—)

As far as publication of book-length material is concerned, the situation was far from satisfactory in the first three decades of the century. Right from the end of the 19th century attempts were on to have printing presses in Mithila. That was how several such establishments sprang up: Union Press 1880: Shri Rameshwar Press 1901: Maithila Printing Works, Madhubani 1905; Kameshwar Press or the Raj Press 1908. But Maithili was yet to resolve its problem of script, that of standardization, and Maithils still had the confusing priorities as the literate and educated ones did not know if they should concentrate more on Maithili, their mother tongue, or Hindi—the language of administration and national awakening, English—the language of higher education, or Sanskrit—the language of traditional learning which still had a place of pride in Mithila. It was only after 1930s, the situation improved with many of these uncertainties having been removed. The establishment of special endowment funds, availability of more printing presses, use of Nagari writing system, and emergence of certain very powerful creative writers—all these had their desired effect in the field of publication. It was comparable with the surge of publication after 1960s.

11. Manuscript/Scribal Tradition

Even after the establishment of Maithili Academy in 1970s, it was discovered that a large number of manuscripts in Maithili produced in this century were lying uncared for and unpublished. A good number of them have now appeared in print. During the period 1901 — 1951), there surely was a tradition of manuscripts, and in certain cases, the knowledge in different fields, particularly in philosophy and grammar, were preserved and transmitted through the scribes. The most important of all, one must mention the tradition on ‘panjiikaara's, i.e., the clan of record-keepers who preserve the lineage and family histories—and who have often been helpful in establishing/finding out the authorship of certain manuscripts or personal/familial histories of authors, or even in locating manuscripts of important but undiscovered works,

12. Oral Transmission of Written Literature

The tradition of poetry that is possible to be rendered into songs—evidenced in

the lyrics of bhajan or various forms of songs—was firmly established by the great Maithili poets of earlier centuries including Vidyapati, Umapati, Govindadas, Mahesh Thakur, Chaturbhuj, Lochana, the Malla kings (Jagajjiyotirmalla, Yoganarendramalla, Jagatprakashamalla, Bhupatindramalla or Ranajitamalla), and Chanda Jha continued further in the modern era. By then, the immortal songs of the poets of yester-years had entered into the repertoire of daily life of the common man and women—educated or illiterate. This surely was the test of the power of their per\. The 'Maithili Chrestomathy' (1882) of George Grierson or his '21 Vaishnava Hymns' (1884) as well as two other collections published in the '20s—Bhola Jha's compilation: 'Mithilaa-giita-sangrah' in 4 parts (1917) and Laliteshwarsimha's edited collection 'Maithila bhaktaprakaasha' (1920)), all prove this point once again that the written literature was indeed finding their way into oral traditions, The tradition was continued by the later lyrical poets of Maithili in the '30s and '40s, and even beyond the '60s.

13. Literary Achievements and Awareness of the Illiterate class

Although the illiterate class was aware of the names of some great poets of different ages, and although through songs and readable poems the poets did retain contact with the masses, it is difficult to expect that the illiterate classes would be aware of the achievements of the creative writers of Maithili contributing and enriching in different genres. However, Maithili drama—yet another area of literature with performance application could have attracted the uneducated masses. But modern Maithili dramatic traditions during 1911 and 1950s did not have the width or range of coverage as either the earlier 'ankiyaa naaT' had or the developments in the recent decades had.

14. Condition of Writers

The general economic condition of the writer is not very favourable. But nobody hopes to be able to live on one's writing in Maithili. It is a different matter that certain writers have been extremely popular, and their books have seen several editions or reprints. But most of them have other professions to fall back upon. Only one magazine, 'Mithilaa mihir' has a provision to pay for nominal remuneration for different kind of writing. In general, the publishers do not pay royalty, barring a few exceptions. They usually give a number of copies of books of the author. Some have been bilingual writers writing in both Hindi and Maithili, and making a livelihood on the basis of their publication in other languages. In general, the majority of writers are teachers in schools, colleges and Universities. Some of course were traditional pundits in different centres of oriental learning. A few have also been journalists and editors. Some are government servants at different levels. But very few have come from other professions such as doctor, lawyer, engineer, research scientist, managers or political administrators.

15. Public Stages

Although the number of performances of plays of various kinds may only be an

indicator of popularity of performing arts, it alone will not show the development of Maithili theatre. The public stages are almost non-existent in Maithila. But the folk-theatre tradition continues. However, the amateur theatre groups in big cities within or outside Mithila have been very active since the publication and staging of 'ciniik laDDu' (1948). There are theatre festivals every year. A lot of plays that were performed in the initial phases of the amateur theatre movement, i.e., in the early '50s were translations or adaptations. Most of them came from Bengali, English and Sanskrit, and a few from Hindi.

16. Major Writers

The important poets who published during the period 1901— 1950 included: Kalikumar Das (1902—48), Raghunandan Das (1860—1945), Gananath Jha (1869—1914; but his padaavalii appeared in 1938), Jivan Jha (1848—1912), Jivanath Jha (19 10—1977). Riddhinath Jha (1891— 1977), Sitaram Jha (1881—1975), Surendra Jha 'Suman' (1910—), Shyamanand Jha (1906—1949), Tantranath Jha (1906—1984), Upendranath Jha 'Vyas' (1917—). Vedanand Jha (1916—1980). Kedarnath Labh (1934—), Laldas (1856—1911), Baidyanath Mishra 'Yatri' (1911—), Kashikant Mishra 'Madhup' (1906—1987), Srikrishna Mishra (1918—), Raghavacharya (1918—1961), Arsi Prasad Singha (1911—), Buddhidhari Simha 'Ramakar' (1919—), and Upendra Thakur 'Mohan' (1913—1980).

To my mind, the most outstanding poets, comparable to the best in other major literary languages were only the following: Laldas, Jivan Jha, Sitaram Jha, Suman, Vyas, Yatri, and Madhup.

The only playwrights worth mentioning were Munshi Raghunandan Das (1860—1945), Anand Jha (1914—1988), Damodar Jha (1925?-), Harischandra Jha 'Harish' (1920s-), Ishnath Jha (1907— 1965), Jivan Jha (1848—1912), Jivanath Jha (1910—1977), Sharadanand Jha (1920s-), Suryanarayan Jha (1906?-?), Yoganand Jha (1922—1986), Laldas (18S6—1911), Chandranath Mishra 'Amar' (1925—), Kashinath Mishra (1921—), Triloknath Mishra (1900—1960), and Yadunath Thakur 'Yadav'. Among them, Jivan Jha, Ishnath Jha, Jivanath Jha, and Yoganand Jha have been reasonably more successful as dramatists.

In the field of essays which took several forms in Maithili—serious, satirical and humorous, the following major writers could be named: M.M. Muralidhar Jha, Ramabhadra Jha, Kumar Ganganand Sinha, Bhuvaneshwar Singha 'Bhuvan', Baldev Mishra, Bholalal Das, M.M. Dr. Umesh Mishra, Ishanath iha, Tantranath iha, Sudhanshu Shekhar Chowdhury, and again, Harimohan Jha.

The literary historiographers and critics during the period 1901 — 1950 included the following: Chanda Jha, Sitarain Jha, Damodar Jha, Vedanand Jha, Ramachandra Mishra, Riddhinath Jha, Umanath Jha, Durganath Jha 'Sreesh', M.M. Dr. Umesh Mishra, Ramanath Jha, Srikrishna Mishra, and Babua Mishra.

Although the beginning novelists in Maithili—Jibach Mishra and Srikrishna Thakur made their mark as early as in 1915, and although even before 1920s there were a few other published novels including Rasbiharilal Das's 'Sumati' (1918) and Punyananda Jha's 'MithilaadarpaNa' (1923), it was surely Harimohan Jha who revolutionized the scene of fiction writing in Maithili with his novels and short stories. Harimohan Jha and his father Janardan Jha 'Jansidan' were regarded as the harbinger of modernity. The best among the next generation was Baidyanath Mishra 'Yatri'. The period under consideration saw the emergence of many other fiction writers of great calibre who included Kumar Ganganand Singh (of the 'Agilahi' fame; the book in parts was published in 1935 but a complete edition was brought Out in 1964), Upendra Jha 'Vyas', Yoganand iha. Shailendra Mohan Jha, and Brajakishor Verma 'Manipadma' (emerged mainly as a story writer then but later, after 1956, turned into by far the best-known novelist; b. 1918, d. 1986).

What Yatri was to novel, Rajkamal Chowdhury (1929—1967) occupied a similar position of prestige in the arena of short stories. Like Yatri, Rajkamal too was well-known to the Hindi-reading public. Although until 1930s there were many short story writers, the following were prominent among who were Kalikumar Das and Harinandan Thakur 'Saroj'. After 1940, Maithili literature gained some great short writers including Surendra Jha 'Suman', Prabodhnarayan Chaudhury, Upendra Jha 'Vyas', Manmohan Jha, Buddhidhari Simha 'Ramakar', and of course. Harimohan Jha.

17. Women Writers

There were a number of women writers and researchers after 1956. They include the following: Kameshwari Devi b. 1928—: 'Maithilii samskaar-giit'; Anima Singh b. 1924— with a number of studies on Maithili folk songs, Chandrapriya Dcvi:
'Srikrishna bhajanaavalii' published in 1965, or Usha Chaudurani: Shrii Raamakathaa (BaalakaaNDa)', Shyam Jha: 'Giitasangraha bhaj anamaalaa', 'Binu maayak beTii' 1967, and 'Paschaataap' 1980, Kalindi Devi: 'Kalindii-giitaavalii', Medheshwari: 'Giitaanjalii' 1967, Ilarani Siogh b. 1945—: 'Vindantii' 1972 and a number of translations as well as research work, Shyama Devi: 'Kaamanaa' 1959, Shephalika Verma b. 1943— both poet and fiction writer: 'Vipralabdhaa' 1978, and other fiction writers including Shakuntala Chauclhury: 'Aashaak ant' 1978, Chitralekha Dcvi: 'Ubaait aakhar' 1976, Jayanti Dcvi h. 1944—: 'Anupamaa', Adya Jha b. 1924—: 'Videshii kathaamruta', and a hook for children 'Maithilii paaThamaalaa' 1970, Gauri Mishra b. 1934—: 'Thehiyaael mon shiital chaahari', and biographists like Tulika Jha b. 1924—: 'Raajalakshmii: ek bhaavacitra' and other miscellaneous works like Rajlikshmiji's (1915—1976) religious discourses later brought out as 'Shrimad Bhaagavat prakaash' 1969, or 'gruha vijnaan' 1971 by Aparajita Devi. It is also true that even in early or middle Maithili, there have been women writers (e.g. Chandrakala—described as the daughter-in-law of Vidyapati by Lochana). But there have not been much published hook-length work by women writers during the period under consideration. One does find a few stories or poems published by Shyama Devi, Prabba Devi, Kamakhya Devi, Lakshmivati 'Lila', Shambhavi Devi, and others but these are not exceptional literary creations.

18. Most Popular Form of Literature

There have been more successful poets than fiction writers. The drama surely lags behind. But the immense popularity of some of the novelists and short story writers makes one believe that 1901 —1950 was the period when fiction was slowly taking over the popular appreciation from poetry.

19. Literary Translations into Maithili

One way of judging the popularity of writers from other languages is to see who and from which languages have been translated the most. In that respect, among the other Indian languages, Sanskrit and Bengali have been the major source languages for translations. There are however, a few translations from Assamese, Gujarati and Hindi too. It is needless to say that a number of translations from English have also been made.

There are at least six translations of Bhagavadgita, just as there were renderings of classical critical texts such as Lochana's (1625—1685) 'Raagata— rangini' by Baldev Mishra in 1934, Mukund iha's 1924 translation of 'Amarakosha Mithilaa bhaashaa vivruti', or Ramachandra Jha 'Chandra's translation of the Sanskrit work on prosody 'Shrutabodha' said to have been written by Kalidasa. There are three renderings of Bbartrihari's poems: Yageshwar Jha's 'Aaryashatakatray' (1961), Buddhidhari Simba 'Ramakar's 'Bhartruhari—trishatii' (1969). and Krishnanandan Si mba's 'Bhaavabhartruhari' (1973). Kalidasa's 'Kumaar-samhhava' (tr. by Ramachandra Jha 'Chandra'), 'Raghuvamsba' (two translations—by Achyutananda Datta 1937, and by Surendra Jha 'Suman' 1970), ~Meghaduuta (four translations—Paramanand Datta 1937, Ramachandra Jha 'Chandra' 1971, Jayakant Jha 'Srutadhar' 1973, and Arsi Prasad Singh 1976), 'Shrungaaratilaka' (Surendra Jha ~Suman', two edn, 2nd t969), 'Maalavikaagnimitra' (Govind Jha 1947), 'Shakuntalaa naaTak' (Ishanth Jha 1939, and 'Vikrmorvashiiya' (Bhavanath Jha 1957), 'Ritushringaar' from his 'ritusamhaara' (tr. by Surendra Jha 'Suman 1964) as well as 'Maithilii shrutabodha' (Ramachandra Jha 'Chandra. 1964) were also quite popular. Jayadeva's 'Giitagovinda' has been translated as under the title 'Kumudaprabhaa' (1967) translated Kumudnath Mishra 'Kumud' (1967). Shankaracharya's 'Aananda laharii' and 'Saundarya laharii (both translated by Surendra Jha 'Suman' 1969 and 1972, respectively) as well as Bana's play 'Paarvatii pariNay' Tr. by Paramanand Jha 1956) also found their way into Maithili. Bhasa's plays were translated, edited and published in four volumes by Jivananda Thakur in 1945, 1947, 1948 and 1967, Bhavabhuti's 'Uttara-raamacarita' (Rajkumar Mishra 1954), Sriharsha's 'Ratnaavalii' (Paramanand Jha 1956), Shudraka's 'MrucchakaTika' (Ishanath Jha 1955) and Vishakhadatta's 'Mudraraakshasa' (Sudhakar Jha Shastri 1970, 2nd edn.) were received well in Maithili. For children Tantranath Jha's 'Hitopadeshasaar' (1954), Surendra Jha 'Suman's 'Hitopadeshikaa' (1970s?) and Rudrakant Mishra's 'Pancatantra' (1968) are also important. Vidyapati's Sanskrit works—'BhuuparikramaN' (tr. by Munishwar Iha 1976), 'Kiirtipataakaa' (Umesh Mishra 1970) and his Apabhramsha text 'Kiirtilataa' (tr. by Umesh Mishra 1970s?) desrve special mention. Also important are his 'PuruSapariikSaa' translated and edited by four

different scholars: Chanda Jha (1888), Ramanath Jha (1960) Tejnath Jha (1961), and Surendra Jha 'Suman' (197t)), and 'Likhanaavalii' (translated by Indrakant Jha 1969).

From Bengali, we find Michael Madhusudan Datta's 'Meghanaadabadha' translated by Gauri Shankar Jha (1942), 'Virahinii Brajaanganaa' by Bhuvaneshwar Simba 'Bhuvan' (1944), and Tagore's ‘Giitaanjalii' translated by Jayakant Jha 'Srutadhar' as well as by Surendra Jha 'Suman' 1969. The novelists who were popular in almost all contemporary Indian Languages were acceptable here too. They included Bankimchandra Chattopadhyay and Sharatchandra Chattopadhyay. Bankim's 'KapaalakuNDalaa' (tr. by Shivanand Chaudhury with two editions 1960/ 1963) and 'ViSa-vruk-Sa' (Ilarani Singh 1968), Sharatchandra's 'BaRkii didi' (Surendra Jha 'Suman' 1969), ~Baabhanak beTii' (Upendranath Jha 'Vyas' 1967) and 'Vipradaas' (Upendranath Jha 'Vyas' 1977), and Bibhutibhushan Mukhopadhyay's novel translated as 'Koshii praangaNak ciTThii' (Brajakishor Verma 'Manipadma' 1979) were extremely popular. The translated plays included D.L. Ray's 'Chandragupta' (adapted by Mohan Chaudhury 1974). Narayan Gangopadhyay's ‘Aagantuk' (Dinanath Jha 1967).

From Hindi, one can find Bharatendu Harischandra's 'Anher nagarii' (Prabodh Narayan Singh 1965). Since Hindi does not pose any intelligibility problem even for ordinary readers of Mithila, it is not surprising not to find any major translation attempts from Hindi.

From Assamese, Shankaradeva's (1449— 1558) plays were translated and edited: 'PaarijaataharaNa naaT' (Tarakant iha 1975), and 'Raamavijay' (translated twice: Prem Shankar Singh 1967 and Ramdev Jha 1967). Prom Gujarati, we have only Shivakumar Joshi's novel 'Sonal Chaayaa' (Anima Singh 1965?) translated.

As far as the translation scene from foreign languages is concerned, we get, from or through English, Aesop's fables 'Isop kathaa-shatak' (tr. by Vaidyanath Chaudhury 1967), Henrik Ibsen's 'Bhuutak chaayaa' (= Ghosts) translated by Damodar Jha 1965, Shakespeare's 'Kumaar HemleT' (Nisbikant Mishra 1973), 'DeshamaNi' (Rajendra Jha 'Swatantra' 1957) and 'RajarnaNi' (also by Rajendra Jha 'Swatantra' 1960’s?), Molliere's adaptation 'Premak mg' (Prabodh Narayan Singh 1968), Oscar Wilde's 'Salomaa' (Ilarani Singh 1965), oliver Goldsmith's Vicar of Wakefield translated as 'VekphilDak paadrii' (Dinanath Jba 1939), and Samuel Johnson's 'Rasselas' (Dinanath Jha 1959).

20. Literary Achievements

20.1. The background

In the 308-page history of Maithili literature (cf. Jayakant Mishra 1976), the Modern Maithili period received very little attention (only 88 pages) considering the volume of creative writing that have come to light in this period (1901—195t)). Moreover, the ‘Modern' according to N4ishra (1976:221) covered the period 1860—1970 A.D. The periodization of Maithili literature thus differs from the conceptualization of time fragments for identification of literary movements as has been done by Sisir Kumar

Das (1991). While detailing the tentative periodization offered by him, Das (1991:352) labelled the period of 1800 A.D. onwards (until at least 1910 A.D., if not later too) the period of 'Western impact: Indian response', although the first significant stirrings of contact with the West was felt in the Mithila only after 1860. That makes sense as to why most historians of Maithili literature identified this moment as historically significant time for Maithili literature.

In 1860, when the period of Maharaja Lakshmishwarsimha began after the death of Maharaja Maheshwarsimha, the Maharaja was a minor, and it was thought both necessary and possible to influence the mind of the young prince under the Court of Wards, so that when he was reinstated he was encouraged to spread the cause of western education at the school level. At the level of administration, he was advised to adopt Hindi, rather than Persian or Urdu—the twin languages which were introduced by the Court of Wards by abolishing the use of Maithili for administrative purposes. This move of delinking Maithili, the language of the area from the domain of workplace and attempts to confine it to the home alone obviously had a devastating effect on the development of Maithili literature—a curse from which Maithili could be freed only in the beginning of the 20th century. The movement to re-establish the language and culture of Mithila, or the search for its independent identity culminated into the creation of Mithila Mahasabha in 1910. To that extent, 1910 becomes an important year for Mithila and Maithili, too.

The other important literary events during the period under consideration, i.e., 1860—1910, included death of three important writers—Lakshminath Gosain (b. 1787, d. 1872), Gopinah (b. 1788, d. 1881), and Chanda Jha (b. 1831, d. 1907)—all three being poets of distinction. Although we find records of birth of about 20 important creative writers during this period in Das (1991: 519—765), most of them made positive contributions only during 1911—1956. I should like to mention the following under this category: Bhuvaneshwar Jha 'Bhuvan' (b. 1874, d. 1966), Ramlochan Sharan (b. 1877, d. 1968), Dinabandhu Jha (b. 1878, d. 1955), Trilochan Jha (b. 1878, d. 1938), Haimavati Devi (b. 1880, d. 1940), Rasbiharilal Das (b. 1885, d. 1941), Ishanath Jha (b. 1907, d. 1965), Kashinath Mishra 'Madhup' (b. 1907, d. 1908) as well as the living geniuses—Suman (b. 1907) and Yatri (b. 1907).

This means that during 1860—1910, there were five major writers in Maithili including Raghunandana Das (b. 1860, d. 1938)—the author of plays such as 'Mithilaa NaaTak' and 'Duutaangada viyog' as well as a collection of narrative poems, Jivacha Jha (b. 1863, d. 1923) who wrote the first novel in Maithili— 'Raameshwar' as well as published a collection of essays under the title 'Ankur'. Tejnath Jha (b. 1868, d. 1919) who wrote devotional songs ('Bhakti ratnaavalii'), narrative poem ('Raamajanama'), and a religious play ('Gauriishankara vinoda naaaTaka'), Muralidhar Jha (b. 1869, d. 1929) who was also a novelist ('Arjun tapasyaa') and travelogue writer ('Kashmir yatra') besides editing the literary magazine 'Mithilaa moda', and Janardan Jha 'Jansidan' who is still considered to be the first modern prose-writer of Maithili because of his three novels: 'Nirdayii saasu', 'Shashikalaa' and 'Punarvivaah', although he also published many poems. Besides the five above, there were others who were

also well-known historians (M.M. Mukund Jha 'Bakshi'), philosophers (M.M. Ganganath Jha) and other scholars writing in Maithili.

It is my reading (and not many may fully agree with it) that Tagore's publication of 'Bhanusimha Thakurer Padavali' had a positive effect in the form of spurt in literary activities in Maithili. We will, of course, have to leave out Chanda Jha from it because he was independently creating a field for himself at the same time with his 'Vaataahavaana' (1883). Mithilaa Bhaashaa RaamaayaNa' (1886/ publ. 1891), 'Lakshmiishwara vilaas' (1888) or by translating Vidyapati's Sanskrit work: 'PuruSa pariikSaa' (1888). The establishment of printing presses in Maithila or creation of literary and cultural organizations (Mithila Viddvajjan Samiti, Benares 1896; Maithili Hitasadhan Sainiti, Jaipur 1904 or Mithila Rgsearch Society, Darbhanga 1905) culminated into the establishment of Maithili Mahasabha in 1910. It was at this time that major periodical publications (‘Mithila Hita Saadhana', 'Mithila moda', 'Mithila Mihir') were started, or classical works like the saTTaka plays ('Maithilii saTTaka' 1906 and 'Narmadaa saTTaka' 1906) as well as the drama entitled 'Saamavatii punarjanma' (1908) by Jivan Jha were created. This is the background against which we have to view the literary developments after 1910. All these I believe were necessary to state as to why the literary historians of Maithili find the development after 1911) to be a cosequence of the activities after 1860.

20.2. The Age of Reawakening and the New Registers

The establishment of Maithila Mahasabha (or 'Maithili Conference' as it was known to some) saw a further spurt in the debates on the education that was best suited for Mithila, particularly for the preservation of her rich cultural heritage. Stipends were made available to numerous capable students to pursue higher education. Several research societies came up. A number of literary and cultural organizations were established—both within and outside Mithila. As a result, it clearly dawned upon the new generation that was taking the lead in the beginning of the 20th century that the future for Mithila lay in what steps they would take. A beginning was made by study and publication of the classics in Maithili in the 1910s. Besides Vidyapati, they concentrated on Umapati (of the 'PaarijaataharaNa' fame), Ramadasa and Bhanunath Jha's works. This was also the time when MM. Haraprasad Shastri was to discover the Caryaa texts, one of the most important works in the Eastern NIA languages. The influence of Grierson's work on Bihar in general, and Mithila in particular, must be also recalled here. His studies on the Bihar Peasant Life, folklore of Mithila. Maithili grammar besides his niagnuni opus—the Linguistic Survey of India, had tremendous effect on this work of regeneration and re-evaluation of the past heritage.

1911—1956 marks the beginning of serious Maithili prose writing. And this was possible only because a number of literary magazines flourished during the early period and with them flourished the journalistic register in Maithili. The Hitasadhana from Jaipur published essays on a number of topics: grammar, philosophy, geography, mathematics or even hygiene besides those on current political affairs. The Moda published longish translations, poems. stories, and essays on current affairs. The Mihir,

which is still surviving, and which initially had both English and Hindi editions too, has been the backbone of Maithili journalism. There were other significant magazines too during this time: 'Maithila Prabhaa' from Ajmer first (August 1920 until the end of 1924) and later from Agra (only for a year) and 'Maithila Prabhaakara' from Aligarh (1929—30) which mainly aimed at maintaining the contacts among those outside Mithila, although these too created several important writers. Their efforts were revived later once again through the publication of 'Maithila bandhu' from Ajmer (1935—43), 'Maithila Yuvak' (1938— 41), and 'Jiivan prabhaa' (1940—50). Then there were 'Shrii Maithilii' (1925—27), 'Mithilaa' (1929—31) and 'Mithilaa mitra' (1931—32) which maintained very high standard as literary magazines, even though they were all short lived. 'Maithilaa Moda' started once again in 1936. and so were begun a few other secular literary magazines including 'Vibhuuti' (1937—38) from Muzaffarpur under the editorship of Bhuvaneshwar Simba 'Bhuvan' and 'Bhaarati' (1937) from Darbhanga under the editorship of Babu Bholalal Das, the latter publication being the organ of the Maithila Sahitya Parishad which was established in 1931. The Sahitya Parishad provided the creative writers, grammarians, philosophers and critics with a common meeting ground besides giving encouragement to the publishing activities.

Already, Maithili was put in the map of higher education and learning by a few scholars and patrons from both Bengal and Mithila. By 1919, Maithili was recognized as an independent subject for examination and there was naturally a need for organizing the Maithili studies in 1920s, in which Suniti Kumar Chatterjee was a great help. His close association with Pt. Babua Mishra resulted in the detailed study of the first prose piece in Maithili as well as in the eastern NIA—Jyotirishwara's 'VarNaratnaakara'. In this respect, N4aihili was fortunate enough to have been studies in the beginning of the century by George Grierson whose works had a tremendous effect on the effort that went into promoting the study of Maithili.

By 1930s another important decision was taken. Gandhiji gave a call to the protagonists of different Indian languages to give up their scripts in favour of Devanagari to achieve one more step in the direction of national integration. Maithili reacted positively to the call because it was soon realized that if Maithili printing and publishing were to grow, the on-again and off-again attempts to revive the Tirhuta writing system had to be disposed off once for all. The change over to the Nagari already had a positive effect of allowing the language and literature to be used in writing by the other castes in the society who knew English and Nagari but who did not use the Tirhuta system which was restricted to the Brahmins and certain Kayasthas. Moreover, it had to grow up as the literary language for the whole Mithila rather than being restricted to a few geographic pockets. Consequently, there was also a realization that Maithili must undergo the processes of standardization now that the language was being used in so many registers and over such vast geographic areas. The net result was that by 1936, a Shailii NirdhaaraN Samiti had gone through a questionnaire-based survey of the problems of spelling and style, under the direction of MM. Dr. Umesh Mishra, and decisions were taken on the standardization of Maithili. In implementing these decisions, the role of the most important serious literary journal of the time— 'Maithilii Saahitya Patra', under the editorship of critic and grammarian Pt. Ramanath Jha is

worthy of special mention. All these surely made printing and publishing in Maithili and reaching a wider reading public (thanks to Devanagari) easier and the cumulative effect of all these steps was predictable: a tremendous boost to the literary publication in Maithili.

20.3. The Rise of the Prose Genre

Maithili did not have to prove its credentials of producing great poetry. Starting from Vidyapati, it already had a great tradition of poems and poetic plays. But considering the fact that most Modern Indian languages could already boast of a rich prose tradition by 1920s and '30s, Maithili still was to establish itself in this new genre which already had a history of hundred years in other sister languages. Although the first novel(s) in Maithili ('Raameshwar' 1915 by Jibach Mishra according to Jayakanta Mishra 1976, and 'Candraprabhaa' 1909 by Srikrishna Thakur according to the bibliography of Dutt (1990: 114)) appeared before 1915, even before 1920s there were a few other published novels including Rasbiharilal Das's 'Sumati' (1918) and Punyananda Jha's 'MithilaadarpaNa' (1923). But it was Harimohan Jha with whom the fiction writing in Maithili changed dramatically. Harimohan Jha was himself a product of a family of scholars and litterateurs. His father, Janardan Jha 'Jansidan' was regarded as the first modern fiction writer. His didactic fictions included: 'Nirdayii Saasu' and 'Punarvivaah'. Harimohan Jha, himself a Professor of Philosophy, but better known to the common man for his humor and satire, particularly for his immemorable character, KhaTTar Kaakaa, raised the novel to a new height. He made his entry through 'Kanyaadaan' (1933) which later ran into six editions, and which projected the importance of introducing a much-needed (but resented by orthodoxy) social reform and emphasized on the spread of education among women. 'Dviraagaman' (1942) came as a sequel to it. This period saw many serious novelists, the most well-known among whom was Baidyanath Mishra 'Yatri' whose works achieved great sophistication and raised a lot of debates and discussions. His ‘Paro' (1933 with several editions). 'Navturiaa' (1954) and 'Balchanmaa' (1967) established him as a progressive novelist who writes in an inimitable style that marks his poetry a different entity in comparison to his fiction. The period under consideration saw the emergence of many other great fiction writers: Kumar Ganganand Singh, Upendra Jha 'Vyas', Yoganand Jha, Shailendra Mohan Jha, and Brajakishor Verma 'Manipadma'. Rajkamal Chowdhury (b. 1929, d. 1967) was another established name of that period. Although his famous novel, 'Adikathaa' (1958) appeared almost at the fag end of this period, his stories began appearing in print much earlier some of which were published in the form of an anthology 'Kathaa paraag' (1958). His other well received works—'Lalkaa paag' (1968). 'Nirmohii baalam hammar' (1970s), 'Paa— tharphuul' (1967), etc., were published posthumously but these too were written earlier. Although until 1930s there were many short story writers, prominent among whom were Kalikumar Das and Harinandan Thakur 'Saroj' (book-length work: 'Maadhav Maadhavii' 1937), most of them made use of stock emotions. It was only after 1940s that Maithili literature witnessed the emergence of some great short story writers including Surendra Jha 'Suman' (collection: 'Kathaamukhii' 1940), Prabodhnarayan Chaudhury (collection: 'Bichal phuul' 1940), Upendra Jha 'Vyas' ('ViDambanna' 1952), Manmohan Jha ('AshrukaN' 1948:

'Sanchayitaa' 1953), Buddhidhari Simha 'Ramakar' ('Prayaas' 1946; 'Vardaan' 1947) and a number of others. Besides them, there was of course Harimohan iha's good number of collections including 'Rangashaalaa' 1949, 'Tiirtha yaatraa' 1953, 'Gappak phoRan' 1954, 'Carcarii' 1960 and 'Ekaadashii' 1971. His best known collections of stories and ones that are still popular are: 'PraNamya devataa' (1933/ 1949) and 'KhaTTar Kaakaak tarang' (1967).

21. Where it Lacks: Limitations and Deficiencies

There are several genres where there had not been much development during the period under consideration (i.e., 1901—1950) in the otherwise rich field of Maithili literature. The prominent among them are Essays. Literary Criticism and Plays.
This is not to say that there had not been powerful essayists at all. M.M. Muralidhar Jha (1869—1929) was the first major essayist whose prose and style have remained exemplary for the later generation. His satire and irony are still unparalleled. Although many tried following his footsteps, only a few made their mark independently. They included Ramabhadra Jha, Kumar Gangananda Sinha, Bhuvaneshwar Singh 'Bhuvan', Baldev Mishra and Babu Bholalal Das who made noteworthy contributions. Most of them showed social concerns and need to work for all round development and cultural re-awakening. Among the next generation of essay writers including M.M. Dr. Umesh Mishra, Ramanath Jha and Dmabandhu Jha, there was a tendency to write in argumentative and expository style, and their contribution to the field of criticism, aesthetics, philosophy and language studies must be underscored. But once again, the more successful of the later generation essayists were those who made humour their weapon. They included Harimohan Jha, Ishanath Jha, and Tantranath Jha, although there were a few earlier essayists writing in this form. But travelogue and related writing did not attain much significance during this period.

In the area of literary theory, the Maithili critics have mostly been derivative. Sitaram Jha (‘AlankaaradarpaNa' 1934), Vedananda Jha ('Alankrti-bodha' 1933) or Ramachandra Mishra 'Chandra's monumental work on rhetorics ('candraabbaraN' 1938), or even in the unpublished major work ('Shabda-shakti-triveNikaa') by Riddhinath Jha (as well as in his published book on poetics, 'VishwabhuuSaNa' 1944) have all been modelling their work after the Sanskrit classics. A few other scholars who began making impact during this period, but whose major books on literary theory appeared after 1956, viz. Durganath Jha 'Sreesh' ('Saahitya vimarsha' 1959), Umanath Jha ('Aalocanaa:samakaaliin pravrtti') and Damodar Jha (When he analysed the Bhakti movement) merely reproduced the arguments of the traditional western scholars and views of the Marxist critics. Some critics have been more innovative (e.g., Jayadhari Singh in his essays and in two volume 'Kaavyamiimaansaa' published in 1962) but then he was a lone exception. There have rather been better analyses of Maithili works by critics such as Chanda Jha, Umesh Mishra, Ramanath Jha and Srikrishna Mishra, but by and large, the field of criticism and appreciation have not progressed satisfactorily.

Although there have been a large number of translations and adaptations (A four-volume transhition of Bhasa's plays by Jivananda Thakur brought out between 1945

and 1948. only the fourth volume appearing later in 1967; Bhavabhuti's 'Uttar-raamacarita' 1954; Bana's ‘Paarvatii pariNay' by Paramananda Jha 1956; Ananda Jha's 'Siita-swayamvar' 1938; Sriharsha's 'Ratnaavalii' by Paramanand Jha in 1956; Shudraka's 'MrcchakaTika' by Ishanath Jha in 1955; Krishnamishra's 'Prahodh-candrodaya' by Ananda Jha in 1941; or Kalidasa's three plays published by different translators in 1939, 1947 and 1956—57 are but some examples), there have been only a few original plays worth mentioning during this period, particularly in the early phase. They included Jivan Jha in the early phase who is not only well known for his SaTTaka-plays (1906—8), but also for other dramas— 'Saainavatii punarjanma' 192(1 and 'Sundar samyoga' 1906, and Raghunandan Das Munshi with his ~Mithilaa naaTak' (1933) and 'Duutaangadaviyog' (1933), Suryanarayan iha's 'Jaanakii naaTak' (1931) or his later play 'Graduate girl'. Towards the end of the period, coming to 1950s we find a renewed interest in play-writing. It was at this time that many good plays were written and produced. They included Ishanath Jha's 'Ciiniik laDDu' (1947), Yadunath Thakur's 'Dahej' (1948), Sharadananda Jha's 'Pheraar' (1950), Parameshwar Mishra's 'TriveNii' (1950), Yogananda Jha's 'Munik matibhram' (1953), Krishnakant Mishra's 'Aatma maryaadaa' (1953), Kanchinath Jha 'Kiran's' 'Jay janmabhuumi' (1955), Chandranath Mishra 'Amar's, 'Samadhaan' (1955) and Harischandra Jha 'Harish's' 'Chiik' (1956). But by and large, the spurt in writing and production of plays that we witness after 196t)s was not witnessed during 1911—1956.

Apart from these areas, there was also dearth of work in a number of other fields such as studies on language and linguistics, travelogue, light essays, biographical literature, science fiction, review literature, belles letters, etc. Some of these, however have not developed even till this day, although the situation has improved considerably on all other counts.

22. Concluding Remarks

This paper attempts to fill up a gap in the literature on language planning and development for the minor languages of India with special reference to the Maithili speech community in North Bihar. To appreciate the course that this particular language movement has taken since mid-1950s when the movement was launched with renewed vigour, about which two completely divergent accounts are given in Brass (1974) and Singh, Rajaram & Bose (1985), it is important to know the background of development of this language. It, therefore, aims at pointing out the attainments and failures of the speakers of Maithili who have been making efforts to gain their rightful place in education, administration and literary recognition to restore their language rights since the beginning of this century.

REFERENCES

AMAR, CHANDRANATH MISHRA. 1981. *Maithilii Patrakuarituak Itihoas*. Patna: Ivlaithili Academy.

BRASS, PAUL, R, 1974. *Language, Religion and Politics in North India*. New Delhi: Vikas. Census of India 1981, Vol. II. The Lower Provinces of Bengal and their Feudatories. [by C.J.O'Donnell] Calcutta: Bengal Secretariat Press.

----1901. Vol. VI. *The Lower Provinces of Bengal and their Feudatories*, part I: The report [by E. A. Gait] Calcutta: Bengal Secretariat Press.

----1931. Vol. VII. *Bihar and Orissa*, part II. [Tables by W.G. Lacey] Patna: Superintendent. Government Printing, Bihar and Orissa.

----1971, *Portrait of population*. New Delhi. Central Institute of Indian Languages 1971. Distribution of Languages in India in the States and Union Territories. Mysore.

CHADHURY, RADHAKRISHNA. 1976. *A Survey of Maithili Literature*. Deoghar: Shanti Devi. Commissioner for Linguistic Minorities, India. 1976. The Seventeenth report, 1974—75. New Delhi.

DAS, SISIR KUMAR. 1991. *A History of Indian Literature*, Vol. VIII. New Delhi: Sahitya Akademi.

DUTT. K. C.. Ed. 1990. *The National Bibliography of Indian Literature*, fifth volume: 1901 — 1980. New Delhi: Sahitya Akademi.

Government of Bihar, Directorate of Statistical Evaluation. 1978. Statistical Handbook. Patna.

Government of India, Ministry of Education and Culture. 1980. *A Handbook of Educational and Allied Statistics.* New Delhi.

GRIERSON, G.A. 1908. *Linguistic Survey of India*, Vol. V. part I. London. [reprinted 1968. New Delhi: Motilal Banarsidass].

----1909. An Introduction to the Maithili dialect of the Bihari Language as spoken in North Bihar, part I: Grammar. [2nd edn.] Calcutta: Asiatic Society.

JHA, SUBHADRA. 1958. The Formation of Maithili Language. London: Luzac & Co.

MISHRA, JAYAKANTA. 1956. *History of Maithili Literature*, Vol. I & II. Allahabad.

----1976. *History of Maithili Literature.* Delhi: Sahitya Academy.

NIGAM, R.C. 1971. *Language Handbook on Mothertongues in Census*. Calcutta.

SHAH, NAROTTAM. 1981. *Infrastructure for the Indian Economy*. Bombay: CMIE.

SHILLINGFORD, FA. 1985. *On the Changes in the Course of the Kusii river, and the Probable dangers arising out of them'*. JASB, Vol. LXIV, Part 1: 1—24.

SINOH, U.N., N. RAJARAM & PRADIP KUMAR BOSE. 1985. *The Maithili Language Movement: A Sociolinguistic Investigation.* Project report, MSU of Baroda and South Gujarat University, Surat.

THAKUR, UPENDRA. 1956. *History of Maithila*. Calcutta: University of Calcutta.

YADAV, SHREE KRISHNA. 1991. *Language Planning Problems in Nepal.* Ph. D. dissertation, University of Rajasthan, Jaipur.

THE MAITHILI LANGUAGE MOVEMENT: SUCCESSES AND FAILURES

Udaya Narayana Singh

In this paper, I recapitulate the genesis of the Maithili language movement in eastern India, discuss the reasons behind it, and look into its future directions.[1] Toward the end of the paper, I will also be concerned with an evaluative judgment (Brass 1974) concerning its successes and failures.

Most of the data presented in this paper have been collected from three sources: (1) the magazines and weeklies published in Maithili, in particular, Mithila Darshan (henceforth MD), a monthly published from Calcutta for the last thirty years, and Mithila Mihir (henceforth, MM), a weekly published by the Indian Nation Group of newspapers, Patna; (2) tape-recorded or personal interviews of some of the leaders of this movement who have been actively associated with it for about the last forty years; and (3) resolutions passed and actions taken by thirty-odd organizations, including the following prominent groups: Maithil Mahasabha, Maithili Sahitya Parishad, Mithila Samiti, Mithila Sewa Sangha, Mithila Kranti Doot (all from Darbhanga), Chetana Samiti (Patna), Vidyapati Parishad (Sindri), Vidyapati Gosthi (Patratu), Maithili Sansad (Mython), Akhil Bharatiya Maithili Sansthan (Saharsa), Maithili Parishad; (Dalmiyanagar); and

from a few organizations formed outside Bihar as formidable pressure groups, such as: Maithil Sangha, Akhil Bharatiya Maithili Mahasangha, Akhil Bharatiya Mithila Sangha, Mithila Kalakendra, Maithili Prakashan Samiti, Maithili Rangamancha (all from Calcutta), Akhil Bharatiya Mithila Sangha (Delhi), Maithili Sahitya Kala Parishad, Mithila Sangha (Kanpur), and Mithila Mandal (Bombay).

The region called Mithila has Nepali, Bhojpuri, Magahi, and Bengali (in the north, west, south, and east, respectively) as its neighboring speech-communities and Hindi as a superposed variation in that region. Maithili is now spoken in the districts of Darbhanga, Madhubani, Muzaffarpur, Bhagalpur, Saharsa, Purnea, in some parts of Sitamarhi, Champaran, and Santhal Parganas of Bihar, in some pockets of Malda and West Dinajpur in West Bengal, and in the Tarai of Nepal.

The story has it that Nimi, a king in the Tairabhukti dynasty, was once cursed by the royal priest, as a result of which he died. After his death, on seeing that there was no heir to the throne, the king's body was churned and thus a son called Mithi was produced. Mithi is said to have laid the foundation of the city of Mithila, which later came to be used as the name of a very wide area (Srutadhar 1968, 41-4). Misra (1976, 1, n3) reports that "the Bṛhad-Viṣṇu-Purāna (circa fifth century A.D.) defines the boundaries of Mithila as 'surrounded by the Kauśikī river on the East, by the Gaṇḍakī on the West, by the Ganga on the South, and by the Himālaya, on the North'" (see also Chaudhary 1976; Aquique 1974). We are told that Maithili, as a language, has been

mentioned even in Āin-Ī-Akbarī (Subhadra Jha 1958, 1). At different stages, this language was called Desila ba'anā, Tirhutiā, Touritiana, Tirhuti, etc.

Historians of Mithila tell us that Akbar had granted what is now known as the districts of Darbhanga and Muzaffarpur to Mahesh Thakur, a Brahmin (Radhakrishna Chaudhury 1976; Upendra Thakur 1956; Jnanendranath Kumar 1933). It is claimed that until the eighteenth century, the Sarkar of Tirhut was an independent kingdom, but after the British annexation of Mithila and other areas of Bihar, the maharaja of Darbhanga was recognized only as a zamindar and was never accorded a princely status. Not only were there attempts to assert language and territorial rights for Maithili and Mithila, but also a national movement received patronage from the maharajas of Darbhanga--particularly from Maharajas Lakshmishwar Singh, Rameshwar Singh, and Kameshwar Singh. Not many people know that Majaraja Lakshmishwar Singh contributed 10,000 rupees to the Congress after its inception and gave a large sum to the National Fund even before that upon requests of the Rev. K.M. Banerjee, its president. He did not want to publicize these contributions, and these, therefore, were always entered as "donated by a Friend."[2] Maharaja Rameshwar Singh's contributions to the University of Calcutta, BHU, and to various Sanskrit institutions throughout the country were well known. It is he who had established the Maithil Mahasabha in 1910 to initiate a reformist movement among the Upper Caste Hindus of Mithila.[3] Kameshwar Singh had also followed the glorious examples of his predecessors. In fact, they identified themselves with the na-

tional movements and with the struggle for independence to such an extent that "to bring about national integration, he [Lakshmishwar Singh] introduced and popularized Devanagari script which gave a death blow to the old indigenous Tirhuta script of Mithila but made Bihar a homogenous state to that extent" (Ramanath Jha 1968, 7).

However, it does not matter what is done to bind the heterogeneous state of Bihar into one unit; the fact remains that the administrative boundaries of what is now known as Bihar have always been artificial and arbitrarily drawn. It has changed at least in the following three stages: first, during the annexation of the territory west of Bengal in the nineteenth century; secondly, by the Treaty of Sugauli[4] in 1816 when, after the wars with the Gurkhas of Nepal, a part of the Maithili-speaking Tarai was ceded to Nepal; and thirdly, in 1912, 1936, and 1955 when parts of it were given to (West) Bengal and Orissa.

In the 1971 census, Maithili was described in the following manner:

> Serial No. 950. Name of the mother tongue: Maithili. Basic Linguistic Information: One of the dominant speeches in Bihar spoken by a large section of population. It was recorded as a dialect of Bihari in the LSI scheme. Although grammatically nearer to Bengali or Oriya Maithili speakers have cultivated Hindi as their language of education and instruction. For strength of speakers and for currently appearing literature in Maithili it will perhaps be more practical to consider it as an important language of the Eastern group of Indo-Aryan family like Bhojpuri. (Nigam 1971, 154)

The figures shown for Maithili, Magahi, and Bhojpuri (for the

last, if only its speakers in Bihar are considered) are: 4,984,811 for Maithili, 2,818,602 for Magahi, and 7,842,722 for Bhojpuri. The Maithili enthusiasts would, however, claim that the correct number is twenty-five million, and not five million. Paul Brass (1974, 66), following Gait's criteria, has shown that the actual figure may be around sixteen million.[5] Whatever the actual figure, it is true that the figures projected in the census reports are not dependable and are, rather, bewildering. For instance, while in 1951 the Bihari languages were shown to be spoken by 0.29 percent of the state population as against 80.74 percent Hindi,[6] in the 1961 census, the former was 44.30 percent as against 35.39 percent Hindi. (For a detailed discussion, see Brass 1974). It may be noted here that the Urdu-speaking population in Bihar in 1971 was shown as 4,993,284, that is, 8.86 percent of the state population. Compared to this, the figure for Muslims in Bihar is 13.47 percent (7,594,000) of the population. Thus the Muslim-Urdu correlation in Bihar is only 65.75 percent, and the returns for Urdu show a decennial decrease of 0.07 percent, compared to the national rate of decrease of 3.11 percent (see Pandit 1977, 52-53).

It is interesting to note that between 1951 and 1961, the working force in Bihar increased at the rate of 41.82 percent (compared to the all-India rate of 35.05 percent, and especially in the secondary sector (which includes household industries, other manufacturing industries, and construction), the increase in working force is amazing: 204.54 percent (Census of India, 1961, vol. IV, pt. 1-A(ii), 447). Compared to the first five-year (1951-55) plan, where expenditure on industry

was Rs. 1,038,000, expenditure during the second plan was Rs. 89,759,000, and this explains the increase in the working population in the secondary factor in these years. The per capita income in Bihar has also increased from Rs. 154.81 in 1951 to Rs. 196.44 in 1961 (compared to the national rate of Rs. 250.3 and Rs. 293.2, respectively). But given the fact that Bihar has 10.58 percent of the total number of people living in India, although its land area is only 5.4 percent of the total, it would be interesting to know whether the fruits of economic progress are equally shared even within the state by the Mithila and other regions. It turns out that Darbhanga and Muzaffarpur have a per capita income of only Rs. 50 to Rs. 75, and only Saharsa (Rs. 100-125) and Purnea (Rs. 125-150) are better off, while Bhagalpur falls in the Rs. 75-100 range. Thus, if we compare these 1955-56 figures with the state or national figures given above, it turns out that the claims of Maithili movement leaders concerning the economic backwardness of the Mithila region are not incorrect.[7]

The major demands of the Maithili language movement included:

(1) Maithili should be accepted as an optional (or obligatory for the students in north Bihar) subject as well as medium of instruction in primary education;[8]

(2) Maithili should be accepted as a subject in the universities;

(3) there should be a Mithila university or a university in the Mithila region that will project the language, literature, and culture of Mithila;

(4) there should be a Maithili Bhasha Parishad or a Maithili Academy in Patna along the lines of the Bihar Hindi Grantha Academi and Bihar Rashtrabhasha Parishad;

(5) there should be a radio station in Darbhanga to cater to the special needs of the Maithili-speaking population;[9]

(6) Maithili should be accepted by the Sahitya Akademi[10] and such other official and cultural bodies;

(7) there should be a separate state of Mithila; and

(8) Maithili should be made the associate official language of the state of Bihar.

In addition to these, there were a number of minor demands, too, many of which were met in time.[11] These minor demands included publication of official notices and advertisements in Maithili, use of Maithili script in the names of railway stations in Bihar, introduction of a Mithila express, regular display or exhibition (to be organized by the government) of books and periodicals published in Maithili, and so on.

In this and the following paragraphs, I will discuss, in the order given above, the reactions to the major demands. As an expression of gratitude to the maharaja of Darbhanga, who gave a huge grant to the University of Calcutta, Maithili language and literature as a subject found a place in the Modern Indian Languages Department of this university in 1918.[12] In the early 1950s when the university closed this department, the Maithili organizations in Calcutta protested (MD, January 1954.5), and in the first quarter of 1968, Calcutta University started allowing pupils to take Maithili as a subject again because of the pressure.

It may be recalled that in 1950, Patna University was the only university in Bihar, and it was in this year that it started full-fledged courses in Maithili as a subject at the undergraduate and postgraduate levels. A beginning was, however, made as early as in 1938 (Das 1971, 7). It may be noted here that in 1914, in the annual meeting of the Hindi Sahitya Sammelan in Bhagalpur, a resolution was passed that since Hindi was the mother tongue of Bihar, the medium of primary education should be Hindi (Rajmohan Jha 1979, 38).

The question of recognizing Maithili as a subject as well as a medium of instruction at the primary level was raised first in 1925, when a few cultural organizations made this demand, and again in 1929-30, when the case was taken up by the Mithila magazine group (Das 1971, 5-8). One Mr. Fawcus, an English D.P.I., visited the Mithila region in 1931 to find out about the popular support behind this demand, but he decided that Maithili would be accepted as a medium of instruction only after it was accepted by Patna University. In 1940, the demand was met in principle, but the administration at different levels either blocked or discouraged the people concerned in actual implementation of this program.

As far as secondary education was concerned, following a central government directive in 1967, the Bihar government decided to carry out instruction in minority languages (under which it included Maithili, Bengali, Oriya, Urdu and a few Austric tongues), but the Seventeenth Report of the Commissioner for Linguistic Minorities in India (1976, 33) tells us that by 1966-67, Maithili could be offered only as a subject at the secondary level. The Bihar Text-book Corporation

Limited published in the next few years books on Maithili language and literature for classes I to VII (ibid., 35). Maithili could now be offered as a subject at all levels of education, and as of July 1972 (see editorial, MD) even the Public Service Commission of Bihar recognized Maithili as a subject. Professor Amarnath Jha, during his tenure as the chairman of the Union Public Service Commission (UPSC), made efforts to include Maithili as an optional subject in the public examinations, but with his sudden demise the proposal was shelved.

After 1950, a number of universities were established in Bihar, and three of them were in the Mithila region (Darbhanga, Bhagalpur, and Muzaffarpur), but all these were created while ignoring the demands for a Mithila university. These universities included the following:

Year	Name	Place
1952	Bihar University	Muzaffarpur
1960	Bhagalpur University	Bhagalpur
1960	Ranchi University	Ranchi
1961	K.S. Darbhanga Sanskrit University	Darbhanga
1962	Magadh University	Gaya

The demand for a separate Mithila University was first put forward by different social and cultural organizations, and in 1947, supporters of this cause even formed a Mithila University Committee. But nothing happened until 1967, when during the first non-Congress ministry in Bihar, it was rigorously pressed. Under pressure, the minister for education of the state government accepted the demand in principle

(see Indian Nation, 9, 16, 24 April and 1 June 1967) and agreed to place a proposal before the University Grants Commission (UGC). In 1968, a UGC committee visited Darbhanga and other places and suggested that the K.S. Sanskrit Univeristy in Darbhanga be converted into Mithila University. Later, in early 1972, Kedar Pandey, a non-Maithil chief minister of Bihar,[13] announced in the assembly that the preparations for establishing a separate Mithila University in Darbhanga would start very soon, and in May-June 1972 a proclamation of Governor Debakanta Barua to this effect was issued (MD, June 1972, 2). But it was only in the middle of 1975 that the university was established and was named after L.N. Misra, a popular political leader from Mithila who was brutally murdered a few months before its institution. However, in September 1977, during the Janata regime, it was renamed Mithila University, deleting the prefix 'L.N.'[14] Initially, the new university faced a number of problems, but with the grant of the royal secretariat and library of the maharaja of Darbhanga in August 1975, many of its problems were solved.

At this point, in 1975, preparations were afoot to start a Bhojpuri Academy, and therefore the Maithili pressure groups in the government, led by Jagannath Misra, who became the chief minister in 1976, forced the government to establish a Maithili Academy in Patna. Immediately afterwards, as if to maintain the balance, a Magahi Academy was also started. In 1978, the government of Karpuri Thakur wanted to establish separate academies for Santhali, Mundari, Ho, and Kuduk to diffuse the tension in the Jharkhand region,[15] but the pro-

posal was shelved, and now that Jagannath Misra of the Congress (I) is back in power, this seems to be a remote possibility.[16]

It may be noted here that although in 1971 the Bihar government ordered the departmental and district officials to issue important notices, rules, and notifications in minority languages in those areas where speakers of these languages constitute 15 percent or more of the population, "it seems that no headway has been made so far in this direction" (Seventeenth Report of the Commissioner for Linguistic Minorities in India, 1976, 37). In 1976, Jagannath Kaushal, the governor of Bihar, and Jagannath Misra, the chief minister, for the first time, established the tradition of using Maithili in government notices and advertisements by publishing (on 7 December) the Flag Day appeal in Maithili (see MD, editorial of January 1977; MM 26 December 1976).

We may mention here that because Jagannath Misra, the present Maithili-speaking chief minister, has all along lent his support to the Maithili-language movement, the Hindi enthusiasts in the state are apprehensive. Thus, in the Sunday Standard of 12 April 1980, these fears were voiced (see news item, "Dialects pose threat to Hindi," p. 4). Noticeably, the Bihar Hindi Sahitya Sammelan is now practically defunct, and a three-crore, five-year plan of the Bihar Hindi Pragati Samiti (established in 1976) has been rejected. The Bihar Rashtrabhasha Parishad is said to be reeling under the impact of political appointments. The performance of Bihar Hindi Grantha Adcademy does not seem to be much better either. To top it all, by the end of 1976, after a gap of a few years,

English was reintroduced in the educational system in Bihar to undo Karpuri Thakur's action in this regard (MD, January 1977, editorial). And if the newspaper report mentioned earlier is correct, since this decision, the number of English-medium schools has gone up in Patna by 10,000. The number may be exaggerated, but the trend definitely threatens Hindi supremacy in Bihar.

The demand for a radio station was an outcome of Patna AIR's refusal to allot more than an hour a week for programs in Maithili. The appeals were made by prominent scholars and citizens in 1948 and again in 1952, and a pamphlet in support of this demand was published in 1956 (see Jayakanta Misra 1956) to make the Information and Broadcasting Ministry of the central government aware of this demand. All this happened only after the state showed unwillingness to go beyond the provision of existing facilities for Maithili programs. In 1964, a delegation including members of parliament such as Yogendra Jha (CPI) and Yamuna Prasad Mandal (Congress) supported the demand and presented the case before Indira Gandhi, then the minister for information and broadcasting. In 1965-66, Chetana Samiti launched a movement in its support, and finally when a Maithil (Satyanarayan Sinha) became the minister in the center of information and broadcasting, he visited Darbhanga to discuss this matter (see MM, 24 July 1976) and assured that a separate radio station of 10 kilowatts would be opened there.[17] There was then a demand to make it into a 100-kilowatt station to cater to the needs of the Maithili speakers. In the meantime, radio stations were set up in Ranchi and Bhagalpur. Finally, by the middle of

the 1970s, the demand for a separate AIR station in Mithila was acceded to.

The demand to include Maithili in the list of languages recognized by the Sahitya Akademi, the national aca ny of letters, was first formally made by Dr. Jayakanta Misra on the 31st of March, 1963, in a memorandum called "The case of Maithili before the Sahitya Akademi," although such a demand had been raised earlier. Before this, in 1947, the Poets, Playwrights, Essayists, Editors, Novelists Club, or PEN, and its Indian branch had accorded recognition to Maithili (MM, 11 September 1947). The leaders of the movement quite correctly thought that recognition by the Sahitya Akademi would bring in government funds for the promotion of Maithili literature. And also, even though the Akademi is an independent body, recognition by it was thought to be necessary to remove the stamp of Maithili being described as a dialect of Hindi. This recognition, in later days, could be utilized as a precedent for other demands. Two statements that inspired the supporters of this cause most included the following:

> Maithili is a language and not a dialect. . . . It differs from Hindi and Bengali both in vocabulary and in grammar, and is as much a distinct language from either of them as Marathi and Oriya. (Grierson 1909, 2)

> Maithili is a language by itself, with its own special characteristics. It is a language which has a character of its own . . . By any stretch of imagination it cannot be described as a dialect of Hindi. It has a literature which goes back to at least the beginning of the 14th century, and down through these centuries, it has never ceased to be cultivated by its speakers." (S.K. Chatterji, as quoted in Babusaheb Chaudhury 1968, 2)

Before the case for Maithili was formally presented before the Akademi, almost as preparation for this, the following organizations were created: Maithili Sahitya Parishad (Darbhanga), Granthalays (Darbhanga), Mithila Samiti (Darbhanga), Loka Sahitya Parishad (Calcutta), Maithili Prakashan Samiti (Calcutta), and Tirbhukti Publications (Allahabad).

Apart from these organizations, a good number of journals and magazines were also started by different groups. _Mithila_, _Mihir_, _Mithila Moda_, _Mithila Darshan_, _Mithila_, _Vaidehi_ and many others are instances of such efforts. Attempts were even made to publish a daily newspaper in Maithili in the early 1960s called _Swadesh_, but it soon had to be given up (MM, 13 July 1969, 6). Thus, when in 1963 Jawaharlal Nehru was called upon to inaugurate an exhibition of books and periodicals published in Maithili in New Delhi, he and others in the government and Akademi were amazed to see the tremendous amount of literature in modern Miathili. And, of course, the tradition of Jyotiriswara, Vidyapati, Umapati, and Canda Jha from the fourteenth century onward was well known. Jayakanta Misra and others had searched out the manuscripts of these and other works of ancient and medieval Maithili periods in the Royal Library of Nepal and in other places, and these works were later published. These were also exhibited at that time.

By this time, Jayakanta Misra's _History of Maithili Literature_ in two volumes (1956) and Subhadra Jha's _The Formation of Maithili Language_ (1958) had also appeared, which provided the much-needed detailed study of this type

and contributed to the standardization of Modern Maithili. Later, Janardan Jha 'Paramesh' (1963) and Ramanath Jha (1967) also contributed to the debate on the standard written Maithili. At this point, Satyanarayan Sinha, then the minister at the center had also lent his support to this cause (see MD, 1963, 47-51, reports).

Nehru, while inaugurating the 1963 exhibition, had agreed that Maithili deserved to be encouraged but expressed the government's inability to stretch the list of languages recognized by the Sahitya Akademi because that would mean additional financial burdens on the government. He said, "Nobody opposes the issue (of Sahitya Akademi). But the question is, if we publish a book, it is to be translated into seven, eight, or ten languages. If it is increased to eleven, the burden is multiplied. . . . Therefore, delay was there or still continues" (Nehru, as quoted and translated by Sinha 1969, 3-4). Nehru commented after seeing the exhibition that "This demonstrted thát Maithili has been for a long time and is today a living language among the people of that area. The language deserves encouragement."

In the beginning, at the May 1963 meeting of the Akademi, a decision regarding the recognition of Maithili was deferred. But finally, the expert committee of the Sahitya Akademi met on 25 September 1964 and members S.K. Chatterji, S.M. Katre, Sukumar Sen, and Subhadra Jha decided to accord recognition to Maithili. The fifth member, Hajariprasad Dwivedi, was away at Calcutta on that day and could not be present in the meeting.

The statehood demand was first raised in a resolution of the Maithil Mahasabha in 1940 (MM, January 1942; also see Brass 1974, 53). It was repeatedly referred to in the lectures of the maharaja of Darbhanga between 1940 and 1949 at the annual meetings of the Mahasabha. Similarly, between 1952 and 1954, Dr. Lakshman Jha, a social scientist with a large following in the academic community, published nine pamphlets and undertook an extensive tour of the country to include as many Maithili organizations as possible in this movement.[18] Some of these organizations went a step further to suggest that India should have twenty-two linguistic states, including besides the four Dravidian states, Mithila, Magadh, Jharkhand, Bhojpur, Awadh, Baghelkhand, Chattisgarh, Bundelkhand, Brajbhumi, Kurukshetra, Rajasthan, Punjab, Kashmir, Gujarat, Maharashtra, Utkal, Assam, and Bengal (MD, January 1954, 4).

It is reported (Brass 1974, 54) that politicians in search of a political base and platform utilized the statehood demand and that one of them, Janakinandan Singh,[19] presented a memorandum to the States' Reorganization Commission (see Singh 1954). But at this point, the movement was very timid and the people could not be mobilized, as a result of which the Commission ignored the demand. However, the demand did have an objective basis.

We have already described the economic backwardness, poverty, and rich literary heritage. We have also presented a historical sketch which pointed out that Mithila had a more-or-less defined territory. To this, in the later days, one could add many other points.

In brief, the arguments given in favor of the demand for Maithili did not differ substantially from those for Andhra Pradesh or Maharashtra. These were the arguments that convinced the governments in India and elsewhere for other linguistic groups. In addition to these arguments, one could also point out that the administrative boundaries of Bihar were largely artificial and arbitrarily decided. Also note that male literacy in English in the whole of north Bihar (which includes two Bhojpuri-speaking districts, Saran and Champaran, in addition to Mithila) ranged between 0.32 percent in 1901 and 0.70 percent in 1931, and that among the Maithils, according to the 1961 census, the percentage for the same is merely 1.73 percent (Brass 1974, 92-93). The _India Literacy Atlas_ (1978) tells us that Muzaffarpur, Darbhanga, Saharsa, and Purnea districts have 10.0 to 19.99 percent literacy, although Bhagalpur and Monghyr districts are better off in this respect. Also, between 1961 and 1971, the decennial variation in literacy rate is 0.08 percent to 2.50 percent as against a national average of 5.36 percent. The rural literacy in the whole of Bihar is 17 percent, where the female literacy is 1.66-9.99 percent only. These figures show that over half a century of Hindi education has not been able to accelerate the literacy rate in Bihar, especially in the Mithila region. On top of this, the unemployment rate in Bihar, and especially in Mithila, was very high and almost alternatively drought and flood affected north Bihar every year. The government, in the initial stages, seems to have done precious little to change such situations.

The demand for a separate state was soon given up because

it did not receive the kind of political support and mobilization of manpower that was needed to make it a success. Attention to this demand was drawn afresh in 1977-78, during the Janata regime at the center, when the talk of reorganization of U.P. and other large states was going on (see Ramlochan Thakur 1978; MD, January 1978, editorial; Gopal Thakur 1978). With a change of government, it seems to have died out again.

To press for the two other demands, namely, inclusion of Maithili in the Eighth Schedule of the Constitution and recognition of Maithili as an associate official language of Bihar, the organizations in Mithila and outside have been trying relentlessly. The movement gained momentum only after 1956, that is, after the initial failure to get a separate state. The pressure groups became active before the 1957 elections and asked people not to support those candidates in north Bihar who did not support the cause of Maithili. Posters were pasted and handbills distributed, and different organizations tried to mobilize the people in different ways. The poets and writers were asked to write poems, street plays, stories, songs, and riddles that could be used during the elections to arouse the consciousness of the people of this region. This period saw famous slogans emerge, such as the one that roughly translated as follows:

> There is fire in the matchboxes,
> Will it light if not rubbed?
> Will you ever get your rights
> Without fighting for the cause?

This tradition continued until the recent elections for the state assembly, and in the posters and pamphlets the ideal candidate was characterized as a person who was supposed to have done at least the following: (1) deliver election speeches in Maithili; (2) print posters, pamphlets, and other materials in support of his candidature in Maithili; (3) promise to promote Maithili and work for getting a rightful place for it; and (4) promise to struggle for socioeconomic development of this region.

In the October 1960 issue of Mithila Darshan, a call was given to observe the 1st of December of every year as Mithila Day. The tradition of celebrating the Vidyapati Jayanti on a large scale had been established since the 1950s. Now, even the Chanda Jha celebrations began. In Pandaul, Darbhanga, on 3 October 1960 different organizations got together to form a Maithili Janaganana Samiti so that the census figures could not be distorted by interested persons to project lower returns for Maithili (see also Sewak 1960). Since then, the government has started granting symbolic concessions, and more and more political leaders and other dignitaries have started taking part in these celebrations. Quite often, they have voiced the demands discussed earlier from the rostrum but were quick to forget them once they got off the stage. For instance, Jagannath Misra as the chief minister on 16 November 1975 (Maithili Prakash, December 1975) supported the demand for a Maithili Academy and as a member of parliament had raised the issue of Maithili in the parliament in mid 1976 (MD, May 1976, editorial). Vidya Charan Shukla, the minister at the center, came to Patna to inaugurate one such

celebration in 1975 and announced that Maithili would find due place in the AIR network (MD, June 1976, 28-29). Nagendra Jha, then the minister for health, supported the claims of Maithili to be included in the Eighth Schedule while speaking in 1971 at the thirty-sixth annual meeting of the Maithili Sahitya Parishad in Patna (MD, November 1971, 8). On 3 October 1971, another minister, Kailashpati Misra, said in Saharsa that his party would like Maithili to be recognized as an associate state language (MD, November 1971, 28). Congress ministers of other states (such as Subrata Mikherji,[21] then the home minister, West Bengal) have also supported the cause of Maithili.

The left parties also seized these opportunities to gain popularity. For instance, on 24 November 1971, the Communist Party of India took a mass procession of 15,000 people to Laheriasarai (MD, December 1971, 36) to demand a Mithila University and the inclusion of Maithili in the Eighth Schedule. Recently, Digambar Thakur, the (Janata) minister for primary education, revealed (on 22 January 1978, during the Vidyapati Jayanti at Calcutta) that the Bihar government will support all the residual demands of Maithili (MD, February 1978, 30).

At different stages, dignitaries such as Fakhruddin Ali Ahmad (the late president of India) and G.S. Pathak (a former vice-president of India) also came to take part in the Vidyapati celebrations to show sympathy for the demands of the Maithils. In 1970, the demonstrations, gheraos, and other acts forced Prime Minister Indira Ghandi to promise before a parliamentary delegation comprising Yamun Prasad

Mandal, Shivachandra Jha, Tulmohan Ram, Gunanand Thakur, and Kameshwar Singh that in the next session of the parliament the government would introduce a bill to grant constitutional recognition to Maithili. But she soon backed out of this promise, and then came the 1971 elections. On 30 April 1972, the proposal was raised as a private member's bill but was not accepted by the government (MD, October 1971, 9).

It is clear that since 1970, politicians as well as different political parties have paid more attention to Maithili (obviously to make political capital out of it; but, nevertheless, they did and that is important) and that some of its major demands were fulfilled only after this period. These demands included a Maithili Academy, an AIR station at Darbhanga, a Mithila University, Maithili as a subject in the Public Service Commission examinations, among other things.

While trying to evaluate the language movement for Maithili, Paul Brass (1974) commented that Maithili-speaking people had not so far been able to transform their objective differences from the rest of the people in Bihar as well as from the rest of India into a significant subjective consciousness and had thus failed in getting their demands fulfilled because of the following reasons:

(1) Ethnic values are emphasized by an elite which has failed to communicate these values effectively to the majority and which was ambiguous about the priority of its identities between Mithila and India.

(2) Internal processes of social mobilization have been very slow. Socioeconomic modernization has been almost nil there. In contrast, in all political movements, north Bihar has been in the forefront.

The political elites have chosen not to emphasize regional symbols in the state political arena.

(3) Maithils outside Mithila are either absorbed by the dominant ethnic group of the region or are over-conscious of their language and culture and hence take a disproportionate share in the Maithili language movement.

(4) Political action on behalf of Maithili has been minimal. The movement lacked dynamic leadership and strong organization. The Bihar government has thus folowed a policy of symbolic concessions, granting sympathy and rights to Maithili-speakers, but no effective protection to the Maithili language and no effective implementation of rights conceded.

(5) Religion has been the more powerful symbol in North India during the past century (for instance, the Urdu and Punjabi movements), and the Maithili language movement lacks association with religion.

While we agree with some of Brass's observations, we must note here that his comments were based on surveys and interviews conducted between 1966 and 1969 and that some of the unfulfilled demands that he quoted as instances of the failure of this movement were met in the 1970s.

Thus, as we now in 1980 look back at the movement, its successes and failures, we find that the situation has changed greatly in the last decade and that except for two major demands, all others have been acceded to. We could not, therefore, call the outcome of this movement a failure at this stage. Rather, we should closely watch what directions are given to it now that the Maithili-speaking chief minister, Jagannath Misra, is again back in power.

For the present, we would like to bring into focus a small

news item that might otherwise go unnoticed. It appeared in the Statesman, 12 June 1980 and it reads as follows:

Urdu Given Official Status in Bihar

> PATNA, June 10--The Bihar Cabinet, at its first regular sitting today, declared Urdu as the Second Official Language of the State, reports UNI.
>
> An official spokesman said the decision would be implemented through an Ordinance making amendments to the Official Language Act.
>
> The decision would, however, be enforced in six districts of the State--Sitamarhi, Madhubani, Darbhanga, Katihar, Purnea and Bhagalpur--in the first phase.

We may recall here that it is to be effective in at least four districts of Bihar where Maithili is the language of the majority. Let us wait and see how the Maithili enthusiasts react to this step.

NOTES

1. I am grateful to a number of individuals associated with the Maithili language movement with whom I discussed the state of the movement. Among them are Babusaheb Chaudhury, Prabodh Narayan Singh, Devnarayan Jha, Rajmohan Jha, Ramlochan Thakur, and Srikant Mandal, who have been very kind to me. I am also grateful to D.P. Pattanayak, E. Annamalai, B.P. Mohapatra, P.K. Misra, Subhadra Subba, B.M. Dahal, G. Sambasiva Rao, Joan Rubin, E.A. Afendras, Björn Jernudd, and Y. Hookoomsing for their comments and criticisms.

2. The dependence of the leaders of Congress upon this help is clear if we look into the letters of A.O. Hume writ-

ten to the maharaja. Consider the following quotation from Hume's letter of 20 March 1893: "I write to acknowledge the receipt through W.C. Bannerji of £611-9-7 the equivalent of your princely subscription of Rs. 10,000/- for 1892 and to thank you most heartily in my own name. . . . I cannot tell you what a weight this has taken off our hearts. . . ." (Ramanath Jha 1968, 6).

3. He, however, did not get along well with the leaders of the Congress at a later stage (see Ramanath Jha 1968; Rajmohan Jha 1979).

4. See Laksman Jha (1955).

5. The criteria include (1) all Darbhanga and Bhagalpur, including the present Madhubani and Saharsa districts, (2) 6/7 Muzaffarpur, (3) one-half Monghyr, and (4) two-thirds Purnea speak Maithili.

6. The projected figure for Hindi is 81.03 percent where the figures for Bihari languages are included.

7. In a recent article, Radhakanta Misra (1979) prepared a sketch of the economic condition of Mithila taking only Darbhanga, Madhubani, and Samastipur, the three core districts of the region, into consideration. This is taken from Radhakanta Misra's forthcoming thesis entitled "Primary Sector Income Estimate of Darbhanga District 1949-1971." According to this study, compared to an All-India amount of Rs. 180 needed as the minimum to survive throughout the year at 1960-61 prices, people in these areas earned only Rs. 80 annually. During the floods and droughts of 1966-67, it fell to Rs. 71. The people of this region get only 0.14 hectare of cultivable land per person. Although an Indian adult should consume at least 394 grams rice/chapati, 84 grams pulse, 281 grams vegetables, 281 grams milk, 56 grams sugar, and 113 grams of nonvegetarian dishes per day, in Mithila, one takes only 243 grams of rice/chapati, 26 grams pulse, 66 grams of vegetables, 41 grams sugar, and 113 grams of milk. Finally 56 percent of the people of this region are below the poverty line.

8. This also included, at a later stage, a demand for inclusion of Maithili as a subject in the Public Service Examinations of the state government.

9. This demand originated from an earlier demand of allotting more time for Maithili in the AIR, Patna programs. Toward the end of 1964, members of parliament, including Yamuna Prasad Mandal, Yogendra Jha, Shyamananda Misra, Rameshwar Prasad Sahu, Narayan Das, Bhola Raut, Md. Tahir, Tulmohan Ram, Rajeshwar Patel, (Mrs.) Ramdulari Singh, and Vishwanath Gahmari, handed over a signed petition to the information and broadcasting minister.

10. The demand for recognition of Maithili was never formally put before the PEN, although the latter did recognize Maithili.

11. There were many more minor demands. We may enumerate some more here: Muhammadpur railway station be renamed Chanda Jha station, after the great Maithili poet of the nineteenth century (MD, June 1967, 22-23); AIR stations in Darbhanga, Bhagalpur, and Ranchi must broadcast regular news bulletins in Maithili (MD, July 1972, 41); the documents, applications, and other governmental papers written in Maithili should be recognized at various levels of presentation (ibid.).

12. Sri Brajamohan Thakur and his associates were also supposed to have mobilized support for this proposal (Das 1971, 5).

13. It is interesting to note that one of the Maithili-speaking leaders of Bihar who was to later become the chief minister of the state (Bindeshwari Prasad Mandal) at one stage had announced that if he had the power, he would close down the Mithila University (see MD, July 1972, editorial). In this context, when in reply to a question of Nagendra Jha in the assembly, the non-Maithili-speaking chief minister of Bihar announced that the demand had already been conceded by the government, it assumed a special importance (MD, May 1972, editorial).

14. This fact was condemned by many and it seems that the original name will at a later stage be revived (see MD, October 1977, editorial).

15. See <u>Sunday Standard</u>, 12 April 1980, 4.

16. It appears that during his tenure as the chief minister of Bihar, Karpuri Thakur tried in all possible ways to discourage the Maithili language movement. One instance has to do with a demand for an impartial language survey of Bihar to be conducted by an unbiased body aided by the state government (and not by the census). Under pressure, he agreed to form a survey organization for this purpose but entrusted the task to Dr. Lakshmi Narayan 'Sudhanshu' (a sworn supporter of the cause of Hindi in Bihar) to be conducted through the Bihar Rashtrabhasha Parishad (Narendra Jha 1968, 23).

17. In early 1968, Satyanarayan Sinha (by that time shifted to the Ministry of Health and Family Planning) had confirmed that the demand would be fulfilled (see Searchlight, 16 Februry 1968).

18. Personal communication from Babusaheb Chowdhury, one of the prime leaders of the movement.

19. Janakinandan Singh was involved in a factional fight in the Congress Party and had later formed the Jana Congress, which he eventually deserted to join the Swatantra Party.

20. See Singh 1954.

21. He expressed his support in a function organized at Calcutta on 30th April 1972.

REFERENCES

Chaudhury, Babusaheb
1968? Claims of Maithili for inclusion in our Indian constitution. Calcutta: Akhil Bharatiya Maithili Mahasangha.

Chaudhury, Radhakrishna
1976 A survey of Maithili literature. Deoghar: Shanti Devi.

Das, Bholalal
1971 Janasiksā mE Maithili. Mithila Darshan. December, 4-8, 33-4.

Grierson, G.A.
1909 Introduction to the Maithili dialect of the Bihari language as spoken in North Bihar, 2nd ed. Calcutta: Baptist Mission Press.

Jha, Harinandan
1954 Maithilī mahasabhāk ālok. Mithila Darshan. May, 11-14.

Jha, Lakshman
1955 The northern border. Darbhanga: Mithila Mandal.

Jha, Narendra
1968 Bhāsā sarveksana. Mithila Darshan. February, 23-4.

Jha, Rajmohan
1979 Maithili āndolan: Kichu ātmālocan. Mithila Darshan. December, 4, 33-46.

Jha, Ramanath
1956 Mithilākṣarak ṭāip. Mithila Darshan. August, 13-18.

1967 Maithilīk vartamān samasyā. Mithila Darshan. April, 2-3, 21-6.

1968 Darbhanga raj and Indian nationalism. Maithili Prakash. 2:3-8.

Jha, Subhadra
1958 The formation of Maithili language. London: Luzac and Co.

Kumar, Jnanendranath
1933 The genealogical history of India. Calcutta.

Misra, Jayakanta
1956 History of Maithili literature, 2 vols. Allahabad.

1963 The case of Maithili before the Sahitya Akademi. New Delhi.

1976 History of Maithili literature. New Delhi: Sahitya Akademi.

Misra, Radhakanta
1979 Garībīk āgi mE jarait Mithilāk lok. Mithila Darshan. December, 9-12.

Misra, Srikrishna
1968 Maithilī bihārak rājbhāṣā ho tathā Maithilī bhāṣā pariṣadak sthapana ho. Mithila Darshan. January, 18-20.

Nigam, R.C.
1971 Language handbook on mother tongues in census. Calcutta: Census of India.

Pandit, P.B.
1977 Language in plural society: The case of India. New Delhi: Dev Raj Chanana Memorial Committee.

Paramesh, Janardan Jha
1963 Maithilī bhāṣā tathā sāhitya. Mithila Darshan. December, 16-21.

Sewak, Ramsewak Thakur
1960 Janaganana evam Maithilī bhāṣī Janata. Mithila Darshan. October, 33-6.

Singh, Janakinandan
1954 Memorandum for the formation of the Mithila state. Darbhanga.

Srutadhar, Acharya
1968 Mithilā deśa tathā Mithilā purī. Maithili Prakash 12:41-4.

Thakur, Gopal
1978 Mithilā rājyak māng lel seminar. Mithila Darshan. January, 27-30.

Thakur, Ramlochan
1978 Rājya punargaṭhan ā Mithilā rāj. Mithila Darshan. August, 16-9.

Thakur, Upendra
1956 History of Mithila. Calcutta: University of Calcutta.

Journal of Asian and African Studies, No. 26, 1983

Classification of Polar Verbs in Maithili[1]

SINGH, Udaya Narayana
South Gujarat University, Surat

0. Introduction

The problem of defining and identifying the functions of a set of verbs known as VECTOR verbs (or call them 'aspectual', 'auxiliary', 'operators' or 'explicators', if you may) has been tackled on both formal and functional grounds by many with varying degree of success. However, there are certain other aspects of the problems of COMPOUND VERB which have not been paid much attention to. This paper deals with some such relatively less explored areas of compound verb studies with special reference to Maithili, an eastern NIA language. In particular, the following aspects have been looked into:

i. What is the relative frequency of occurrence of vector verbs in Maithili?
ii. Which verbs cannot function as polars no matter what follows as the vector?
iii. Can polar verbs be classified depending on which vectors they combine with, and on how many they can occur with?
iv. Do polar verbs show at least some sort of (partial) complementary distribution as regards to their selection of particular vectors?

---

1) An earlier version of this paper was presented in the Seminar on Lexicography at the Central Institute of Hindi, Agra (10–22 December, 1979) under the following title: 'Dictionary-Representation of Polar Verbs on the Basis of their Combinability with Vectors in Maithili'. I am grateful to K. V. Subbarao, Peter Hook, Prem Singh, R. N. Srivastava, Gopal Sharma, B. G. Misra, E. Annamalai, and Sudhir Mathur for comments and criticisms.

1.1 Polars and probable vectors selected

To provide an answer to each of these questions, it was obligatory for one to look into polar+vector combinations in Maithili on a larger scale. For this purpose in all about 200 polar verbs and 19 more which could act as both polar and vector verbs were selected. This made the total number of verbs selected for polar slot 219. The 19 verbs that were selected as 'probable' vectors were those that in languages related to Maithili functioned as 'vectors'. One could easily eliminate non-vectors from this list if one found out (i) that no verb could act as a polar member if a particular 'probable' vector was used, or (ii) that if one or more compound verb tests (which would include DO-insertion, Verb interrogation, Negation, By-the-time, Until, Phasal verb, Apprehension, Compound verb reduction, Contradiction, and Incompletion[2] tests) failed a particular verb in its bid to 'vector'-ship. Probably, one should also suspect if a particular 'probable' vector turned out to be able to occur with all the polars. One could guess that in such a case, it was acting as a regular functor marking aspect of some kind. The probable vectors that were taken in the present study included the following: *le* 'take', *de* 'give', *jaa* 'go', *mar* 'die', *uTh* 'get up', *bais* 'sit', *aa* 'come', *paR* 'fall', *rakh* 'keep', *cal* 'move', *paThaa* 'send', *dekh* 'see', *maar* 'kill', *nikal* 'come out' *dhar* 'place, hold', *nikaal* 'bring out', *aan* 'bring', *phe*ⁿ*k* 'throw' (cp. Bengali *phEl* 'throw'), and *khas* 'fall'. A list of 219 main verbs is given in the appendix along with gloss, and hence the meaning of these will not be repeated in the frequency and co-occurrence matrices in the text.

1.2 Frequency of occurrence of 19 probable vectors

Having taken into account all possible permutations and combinations that would involve 219 polar and 19 'probable' vectors, and by separating the acceptable compound verb combinations from the unacceptable, a few things could be observed quite clearly. First, the list of polars contained at least two verbs which did not participate in such combinations at all, no matter which of the 'probable' vectors was selected, and these included *caah* 'want' and *aan* 'bring'. Hook (1978: 144) noted that in Hindi too there were some such verbs, and that they included *caah* 'want', *rakh* 'possess, have' and *kahlaa* 'be called'. In Maithili, *aan*—*V* combination, wherever possible, would give a verbal compound reading. Therefore these two verbs could be excluded from the list of 219 for the purposes of calculation. Secondly, of the 217 verbs, *phe*ⁿ*k* and *khas* could not occur with any polar verb. This would be clear from the table 1 which gives an account of the number of polars a particular probable vector can occur with:

2) For details regarding these tests, see Singh (1980), especially chapter 6.

Table 1: Frequency of occurrence of 19 'probable' vectors with 217 verbs used as polars

VECTORS	GLOSS	NUMBER OF OCCURRENCE	PERCENTAGE (in %)
le	Take	128	58.99
de	Give	119	54.84
jaa	Go	104	47.93
mar	Die	66	30.41
uTh	Get up	55	25.34
bais	Sit	44	20.28
aa	Come	26	11.98
paR	Fall	23	10.69
rakh	Keep	18	8.29
cal	Move	13	5.99
paThaa	Send	11	5.07
dekh	See	8	3.69
maar	Kill	6	2.76
nikal	Come out	5	2.3
dhar	Hold	5	2.3
nikaal	Bring out	5	2.3
aan	Bring	2	0.92
phe^{n}k	Throw	0	0.00
khas	Fall	0	0.00

This table would thus clearly show that the last two 'probable' vectors must be dropped from the list of vectors, thereby making the total 17 instead of 19. Notice that the percentage calculation in Table 1 was done for each vector from a total of 217, and hence the last column would not add up to 100.00.

1.3 Mono-vector polar verbs in Maithili

Table 1 also shows that the major vector verbs in Maithili are the following: *le, de, jaa, mar, uTh, bais, aa* and *paR*. These occur with more than 10% of the polars. Now if one looks for verbs which can occur with only 'one' of the vectors, and not with any other, one would find out that there are 38 such verbs in this list of 217. If these eight vectors are the commonest in Maithili one would expect that all the 38 'mono-vector' polar verbs (i.e., those that can select one and only one vector) should select vectors only from this list of eight. It turns out to be true when we find out that they occur with only the following:

Table 2: Mono-Vector Polars in Maithili (38, in total) and Their Vector-Selection:

VECTORS	NUMBER	POLARS
le	2	aj^{a}maa; 10
de	2	ugar; jhaTak
mar	2	daug; phaa^{n}s
paR	1	khas

jaa	31	a^{n}Tak; a^{n}T; aR; aa; upaj; utar; unaT/ulaT; kaT; kasaa; ghaT; ghasak; chiTak; chuuT; juRaa; jhul; TuuT; Duub; Dhak; Dhah; pac; paak; pasar; paab; pha^{n}s; phaT; phaaT; phuut; bac; baraa; ba^{n}T; ba^{n}Taa.

These two tables together would help us classify 17 vectors into three broad types depending on their frequency of occurrence: (I) Very frequent: *le, de, jaa, mar, paR*; (II) More or less frequent: *uTh, basi, aa, rakh, cal, paThaa*; (III) Infrequent vectors: *dekh, maar, nikal, dhar, nikaal* and *aan*. Towards the end of this paper, more evide nces in support of the above frequency-based arrangement of vectors will be presented.

2.1 Hook's classification of polar verbs in Hindi and logical possibilities of polar-types in Maithili

Coming to the question of classification of polar verbs on the basis of their co-occurrence (restrictions) with the vectors, one has to admit that the only serious attempt to classify polar verbs depending on this criterion that has come to light recently is that of Hook (1978) where he summarizes the findings of Hook (1974), and tries to go beyond the latter work. In this paper, Hook (1978: 144) suggested the following classification of polar verbs in Hindi:

Table 3: Classification of polar verbs in Hindi (cf. Hook, 1978):

CLASSES	NATURE	VECTORS TAKEN	POLARS
*hu*waadi	Intransitive	*jaa*	*ho* 'become', *bETh* 'sit', *uTh* 'get up'
*ru*waadi	Intransitive	*de*	*ro* 'cry', *ha^{n}s* 'laugh', *cal* 'set out', *muskaraa* 'smile', etc.
*samjh*aadi	Transitive	*jaa, le*	*samajh* 'understand', *jaan* 'find out', *maan* 'accept, admit'
*li*yaadi	Transitive Reflexive	*le*	*le*, 'take', *khaa* 'eat', *dekh* 'see', *chin* 'grab', etc.
*di*yaadi	Transitive	*de*	*de* 'give', *nikal* 'eject', *phe^{n}k* 'throw', *choR* 'let go off', etc.
*kar*aadi	Transitive	*le, de*	*kar* 'do', *karaa* 'have (someone) do', *rakh* 'put, set', etc.
*jaa*di	Exceptional	—	*jaa* 'go', *bhuul* (*-jaa*) 'forget', *le* (*-aa*) 'bring', *bajaa* (*-laa*) 'carry out', etc.
*cah*aadi	Stative	None	*caah* 'want', *rakh* 'possess/have', *kahlaa* 'be called', etc.

The author of this typology had himself noted that 'this classification' of the main verbs in Hindi is highly approximative if not actually misleading' (Hook, 1978: 144). In fact, it is both approximative and misleading. In the first place,

it gives an impression that Hook somehow tries to force the PaaNinian classification of Sanskrit verbs into Hindi polar verbs. There is nothing objectionable if such a classification works in this case but the fact is that it does not. Since Hook has about 22 vectors in his study of Hindi compound verbs, one would expect him to use all of them in such a classification. But he concentrates only on three vectors: *jaa, de* and *le*. Secondly, *jaadi* seems to be a storehouse for exceptions and irregularities. Thirdly, if one takes up the logical possibilities of combination one will probably guess that the higher the number of probable vectors in a language, the greater is the number of (polar)verb-types. In that case an eight-way classification as in table 3 is bound to look very simplistic[3].

The last point needs a little more elaboration. Let us take up the case of Maithili where the probable vectors are 17 in number. Now some polars are found to be occurring with only one of the 17 vectors and not with others. Such verbs were called mono-vector polar. It was also noted that they were 38 in number. Similarly, one would expect some polars to allow only two of the 17 vectors to occur with them. This would make logically possible 'Two-Vector Combinations' 136 in total. One can, thus, go on calculating the possibilities for mono-vector to those instances where some polars could hypothetically take all the 17 vectors. Such a computation would give rise to the following table :

Table 4: Logical possibilities of polar-types on the basis of their occurrence with *n*-number of vectors (out of a total of 17) *r*-at a time:

TYPES OF COMBINATIONS		MAXIMUM POSSIBILITIES
a.	Mono-Vector	17
b.	Two-Vector	136
c.	Three-Vector	680
d.	Four-Vector	2380
e.	Five-Vector	6188
f.	Six-Vector	12376
g.	Seven-Vector	19448
h.	Eight-Vector	24310
i.	Nine-Vector	24310
j.	Ten-Vector	19448
k.	Eleven-Vector	12376
l.	Twelve-Vector	6188
m.	Thirteen-Vector	2380
n.	Fourteen-Vector	680
o.	Fifteen-Vector	136
p.	Sixteen-Vector	17
q.	Seventeen-Vector	1
	Total number of polar verb-types:	131071

3) Hook (in personal communication) told me later that the purpose of this classification was not to be exhaustive and that was why out of 22 vectors only a few were used (cf. table 3).

To this total of 131071, one could probably add one more type which has verbs that do not take any vector. Now, this total would increase if a language has more than 17 vectors—a language such as Hindi. Therefore, this again goes on to prove that a classification such as in table 3 is only impressionistic.

2.2 Grammatically possible polar-types in Maithili

If one considered all the 217 verbs to find out as to how many of these logical possibilities as noted in table 4 were grammatically possible the result would be the following:

Table 5: Grammatically possible polar-types as compared to the logical possibilities in table 4:

	TYPES OF COMBINATIONS	GRAMMATICAL POSSIBILITIES[4]
a.	Mono-Vector	5
b.	Two-Vector	15
c.	Three-Vector	20
d.	Four-Vector	18
e.	Five-Vector	11
f.	Six-Vector	7
g.	Seven-Vector	3
h.	Eight-Vector	4
i–q.	Nine to Seventeen-Vector	None
	Total number of polar verb-types	83

Table 5 suggests that there are probably 83 types of verbs that 'can' function as polars in compound verb formation. One can, however, talk of eight broad 'generalized' classes of polars depending on how many vectors a particular polar can occur with. The mono-vector polars have already been listed earlier. In the following section all other combinations are explored into.

2.3 Distribution of polars in different vector-combinations: A summary

As noted in table 5, there are about 15 two vector combinations and they include mainly four possible sub-types: (i) *le* and another vector, (ii) *de* and another vector, (iii) *jaa* and another vector, and (iv) *aa* and *rakh* forming a class by themselves. In all, there are 59 verbs that fall into two-vector category distributed over these 15 sub-types. Similarly, one can try to find out how many of these 217 verbs fall in one of these eight broad combination-types. This will give rise to the following table:

4) Notice that some of the scores in this and other tables may change if one searches through the whole verb lexicon of Maithili, and comes out with a few more types of combinations involving these vectors.

Table 6: Distribution of polars in different vector-combinations (out of a total of 217 polars)

	VECTOR COMBINATIONS	NUMBER OF POLARS OPTING FOR IT	PERCENTAGE (%)
a.	Mono-Vector	38	17.51
b.	Two-Vector	59	27.19
c.	Three-Vector	63	29.03
d.	Four-Vector	27	12.44
e.	Five-Vector	15	6.91
f.	Six-Vector	8	3.69
g.	Seven-Vector	3	1.38
h.	Eight-Vector	4	1.84

Now it would be natural to expect that in the 83 grammatically possible vector-combinations (cf. Table 5), more frequent vectors would participate comparatively in a greater number of instances than the less frequent or the infrequent ones. Thus, if one prepares a frequency-table on the basis of occurrence of 17 vectors one can test whether the general frequency table 1 in 1.2. is correct. In all 17 vectors are selected 317 times in the 83 vector-combinations. This gives rise to the following table:

Table 7: Frequency of occurrence of 17 vectors in 83 vector-combinations where they occur 317 times:

VECTORS	NUMBER OF OCCURRENCE	PERCENTAGE (%)
le	50	15.77
de	50	15.77
jaa	39	12.30
mar	37	11.67
paR	14	4.42
uTh	28	8.83
bais	32	10.09
aa	12	3.79
rakh	14	4.42
cal	10	3.15
paThaa	7	2.21
dekh	6	1.89
maar	5	1.58
nikal	2	0.63
dhar	5	1.58
nikaal	4	1.26
aan	2	0.63

A comparison of tables 1 and 7 will establish beyond doubt that the three-way

classification of vectors (into frequent, more or less frequent and infrequent) as in 1.3. stands out to be correct.

2.4 Occurrence of 17 vectors in different combinations

In this section the detailed frequency of occurrence of 17 vectors in Mono-Vector to Eight-Vector combinations will be looked into first. After this combinatory possibilities will be analysed in detail. The following table showing a detailed frequency is yet another proof in favour of frequency-based arrangement of vectors talked about in the earlier sections (cf. tables 1 and 7):

Table 8: The detailed frequency-based table showing occurrence of 17 vectors in different combinations (where the total number of vectors occuring in a particular combination-type is indicated in parentheses):

VECTORS	MONO (5)	TWO (30)	THREE (60)	FOUR (72)	FIVE (55)	SIX (42)	SEVEN (21)	EIGHT (32)
le	20.00	13.33	20.00	15.28	20.00	14.29	9.52	9.38
de	20.00	13.33	16.66	18.06	18.18	14.29	9.52	12.50
jaa	20.00	30.00	15.00	8.72	7.27	7.14	14.29	9.38
mar	20.00	6.66	8.33	15.28	10.90	14.29	9.52	12.50
paR	20.00	3.33	6.66	—	1.82	9.52	4.76	6.25
uTh	—	3.33	11.66	5.56	9.09	14.29	9.92	9.38
bais	—	6.66	5.00	11.11	12.73	11.90	14.29	12.50
aa	—	6.66	5.00	4.17	1.82	—	9.52	3.13
rakh	—	6.66	1.66	5.56	3.64	2.38	9.52	6.25
cal	—	3.33	—	2.78	3.64	2.38	4.76	9.38
paThaa	—	—	1.66	4.17	3.64	—	—	3.13
dekh	—	—	1.66	1.39	3.64	4.76	—	—
maar	—	—	3.33	1.39	—	2.38	—	3.13
nikal	—	3.33	—	1.39	—	—	4.76	—
dhar	—	3.33	1.66	1.39	—	2.38	—	3.13
nikaal	—	—	1.66	1.39	1.82	—	—	—
aan	—	—	—	1.39	1.82	—	—	—

It can be very clearly seen from the frequency table given above that there are more gaps in case of the vectors which have been rated low independently. Moreover in this table the higher one goes, the greater is the percentage-wise frequency of occurrence.

2.5 A detailed distribution of 217 polars in different vector combinations

Now one could probably go into the detailed distribution of 217 polars into different vector-combination types. This will lead one to a more generalized classification of these verbs than simply grouping them into 83 types. Leaving aside

the 38 polars that can participate only in Mono-Vector combinations, we will now look into the rest of the verbs. The following 59 verbs can participate in Two-Vector combinations of the following types:

Table 9: 59 polar verbs as distributed in 15 Two-Vector combinations:

le & de:	au^{n}s; ukhaaR; oRhaa; kaaT; katar; kuuT;khaT; khurac; kheh; ghas^{a}kaa; chap^{a}waa; jiitaa; tyaag; thamh; thop; dhuus; palaT; pha^{n}saa; bhaR^{a}kaa; bhuuj; ochaa; Taar; Tiip; Thak; bacaa; rakh; maar
le & jaa:	suut; uTh; bais
le & rakh:	dekh
le & dhar:	oRh
de & jaa:	it^{a}raa
de & mar:	phe^{n}k
de & bais:	paThaa
jaa & mar:	aghaa; tiit
jaa & paR:	cuuw; dhas; paR
jaa & uTh:	gaR; jaag; jhalak; Dar; Dol; thaak; bhaRak
jaa & bais:	a^{n}eTh; dab
jaa & aa:	odar; kam; khul; khap; juR
jaa & cal:	baj
jaa & nikal:	chap; tar; phar
aa & rakh:	gher

The Three-Vector combinations have 20 possible triads which are selected by about 63 polars, and this fact could again be tabularly presented in the following manner:

Table 10: 63 polar verbs as distributed in 20 Three-Vector Combinations:

le, de & jaa:	utaar; unTaa; chiRiaa; jhar^{a}kaa; saj; jhal^{a}kaa; Tap; dabaa; baa^{n}c
le, de & mar:	khodh; khol; gaaR; gan; guu^{n}th; chaa^{n}T; jap; jaa^{n}t; joR; Taa^{n}k; Thuus; Thel; Thok; Dho; daab; duuh; naap
le, de & uTh:	aa^{n}c; kaan; Thaan; Daa^{n}T; dhop; baar
le, de & bais:	galaa; ghaTaa; choR; nikaal
le, de & rakh:	paRh
le, de & paThaa:	mang^{a}waa
le, de & dekh:	ciikh; cobh
le, de & maar:	Daraa; anThaa
le, de & dhar:	pasaar
le, de & nikal:	taak
le, jaa & mar:	mar
le, jaa & paR:	leT
jaa, mar & paR:	ruuk
jaa, mar & uTh:	jharak; laag
jaa, uTh & paR:	cau^{n}k; bar
jaa, uTh & bais:	akhaR

jaa, uTh & aa:	kas; jam; phur; saR
jaa, paR & aa:	ukhaR; gal; jhuk; nikal
uTh, bais & aa:	ucar
uTh, mar & maar:	aunaa; jhapaT

In case of Four-Vector combinations we find as noted earlier only 27 polars to be occurring. The number of such accepted combinations is 18 as the following table would indicate:

Table 11: 27 polar verbs as distributed in 18 Four-Vector combinations:

le, de, jaa & mar:	uR
le, de, jaa & bais:	jiit
le, de, mar & uTh:	naac; niip; haa^{n}k
le, de, mar & bais:	thakuc; pakaa; phaaR; phoR; kiin; giij
le, de, mar & dekh:	gaab; cabaa
le, de, mar & aan:	gaRh
le, de, uTh & paThaa :	bajaa
le, de, bais & dhar:	odaar
le, de, aa & nikaal:	chaap
le, jaa, mar & bais:	giiR
le, de, bais & maar:	khii^{n}c
de, mar, bais & rakh:	khuaa
de, bais, rakh & paThaa:	de
de, jaa, mar & aa:	aguaa
jaa, mar, uTh & aa:	jar, khisiaa
jaa, mar, cal & nikal:	bhaag
jaa, bais, rakh & paThaa:	jaa
mar, uTh, rakh & cal:	cikar

Five-Vector combinations number 11, and 15 out of 217 verbs opt for them as the following table would show:

Table 12: 15 polar verbs as distributed in 11 Five-Vector combinations:

le, de, jaa, uTh & aa:	bhar
le, de, jaa, bais & dekh:	khaa
le, de, jaa, mar & bais:	lep; luuT
le, de, mar, uTh & bais:	phaa^{n}k; baa^{n}T; noc; rok
le, de, mar, uTh & rakh:	Tok
le, de, mar, bais & rakh:	jot
le, de, mar, bais & paThaa:	maang
le, de, bais, dekh & aan:	kamaa
le, de, uTh, bais & cal:	toR
le, de, uTh, paThaa & nikaal:	aa^{n}k
le, de, mar, paR & cal:	ha^{n}T

There are fewer verbs, in all 8, that opt for Six-Vector combinations, and they are as follows:

Table 13: 8 polar verbs as distributed in 7 Six-Vector combinations:

le, de, jaa, uTh, bais & dekh:	kO (~kar)
le, de, mar, paR, uTh & bais:	jhagaR; phaan
le, de, mar, paR, uTh, & cal:	ha^{n}s
le, de, mar, paR, uTh & dekh:	baaj
le, de, mar, bais, rakh & dhar:	dhO (~dhar)
le, jaa, mar, paR, uTh & bais:	rah
de, jaa, mar, uTh, bais & maar:	ag^{u}taa

Only 3 polars opt for Seven-Vector combinations such as follows:

Table 14: 3 polar verbs as distributed in 3 Seven-Vector combinations:

le, de, jaa, mar, uTh, bais & rakh:	piib
le, de, jaa, paR, bais, aa & rakh:	jaan
jaa, mar, uTh, bais, aa, cal & nikal:	ug

Of the 217 polars that we looked into, only 4 selected 4-types of Eight-Vector combinations, and they include the following:

Table 15: 4 polar verbs as distributed in 4 Eight-Vector combinations:

le, de, jaa, mar, paR, uTh, bais & cal :	ruus
le, de, jaa, mar, bais, rakh, cal & dhar:	raT
le, de, mar, uTh, bais, rakh, paThaa & maar:	kah
de, jaa, mar, paR, uTh, bais, aa & cal:	cal

2.6 The generalized vector-combination-types

In the preceding section the following questions were considered in detail: Which vectors are selected in forming different combinations, and how many polars opt for a particular combination. By tracing the commonalities in the vector-combination patterns, 83 combination-types could be reduced into the following 35 generalized types:

Table 16: The generalized vector-combination-types:

a. Mono-Vector Combinations: (1) With *le*, (2) With *de*, (3) With *jaa*, (4) With *mar*, (5) With *paR*;

b. Two-Vector Combinations: (6) With *le* and another vector, (7) With *de* and another vector, (8) With *jaa* and another vector, (9) With *aa* and *rakh*;

c. Three-Vector Combinations: (10) With *le*, *de* and another vector, (11) With *le*, *jaa* and another vector, (12) With *jaa*, *paR* and another vector, (13) With *jaa*, *uTh* and another vector, (14) With *uTh*, *bais* and *aa*, (15) With *uTh*, *mar* and *maar*;

d. Four-Vector Combinations: (16) With *le*, *de*, *mar* and another vector, (17) With *le*, *de*, *bais* and another vector, (18) With *jaa*, *mar*, and two other vectors, (19) With *de*, *bais*, *rakh* and another vector, (20) With *le*, *de* and two other vectors, (21) With *jaa* or *mar* and three 'more or less frequent' vectors;

e. Five-Vector Combinations: (22) *le*, *de*, *jaa* and two other vectors, (23) *le*, *de*, *mar* and two other vectors, (24) *le*, *de*, *uTh* and two other vectors, (25) *le*, *de*, *bais* and two other vectors, (26) Four 'very frequent' vectors with another vector;

f. Six-Vector Combinations: (27) With *le*, *de*, *mar*, *paR*, *uTh* and another vector, (28) With *jaa*, *mar*, *uTh*, *bais* and two other vectors, (29) With *le*, *de*, *bais*, and three other vectors;

g. Seven-Vector Combinations: (30) With *le*, *de*, *jaa*, *bais*, *rakh* and two other vectors, (31) With *jaa*, *mar*, *uTh*, *bais*, *aa*, *cal* and *nikal*;

h. Eight-Vector Combinations: (32)–(35) As in Table 15.

3. Conclusions

In the preceding paragraphs the problem of selectional restrictions on the polar verbs in terms of taking or rejecting a particular vector was looked into from a new angle. First, 219 polar verbs were taken from Maithili lexicon to pair with 'probable' vectors and it turned out that only 17 verbs could function as true vector in this language. These vectors were classified into three broad types depending on their frequency of occurrence in general (table 1) and in different vector combinations (tables 7 & 8). Secondly, a recent attempt at classification of polars (Hook, 1978) was evaluated. Thirdly, it was shown that although logically there could be a large number of polar-types if the classification of polars depended on which vectors they took and how many they could occur with (table 4), grammatical possibilities were only 83 (table 5). Fourthly, it was suggested that there were only eight broad vector-combinations in Maithili starting from Mono-Vector to Eight-Vector types and that a polar verb in Maithili could not occur with more than eight vectors. Languages could differ in respect of this uppermost limit as is shown in another study of polar-vector combination of seven Indian languages (cf. Singh, Subbarao and Bandyopadhyay, forthcoming). Fifthly, a very elaborate distribution of 217 Maithili polar verbs into 83 different vector-combinations was presented (tables 9 though 15), and finally, a list of generalized vector-combination-types was reached (table 16).

Appendix

Note that abbreviations *I* and *Tr* stand for *Intranstive* and *Transitive*, respectively. Raised vowels are half-short phonetically and a raised *n* indicates nasalisation of the preceding vowel. The cerebral consonants have been transcribed as T, Th, D, Dh, N, R and Rh. Infinitive marker *–ab* has been dropped in each case. The order followed in this list is the same as in *devanaagarii* writing system.

Verbs	Gloss
akhaR (I)	seem improper
aguaa (I)	move forward
ag^{n}taa (I)	hasten
aghaa (I)	be content/bored
aj^{a}maa (Tr)	test
a^{n}T (I)	be accommodated
a^{n}Tak (I)	get stuck
anThaa (Tr)	avoid, slacken
aR (I)	stiffen
aa (I)	come
aa^{n}k (Tr)	draw, paint
aa^{n}c (Tr)	light a stove
aan (Tr)	bring
it^{a}raa (I)	vulgarise
ukhaR (I)	be uprooted
ukhaaR (Tr)	uproot
ug (I)	rise
ugar (Tr)	vomit, disclose
ucar (I)	seem, caw
uTh (I)	get up
utar (I)	descend
utaar (Tr)	bring down
unaT/ulaT (I)	turn upside down
unTaa (Tr)	reverse
upaj (I)	grow
uR (I)	fly
a^{n}eTh (I)	be obstinate
ochaa (Tr)	prepare bed
odar (I)	be shaven off
odaar (Tr)	uproot
oRh (Tr)	cover (oneself)
oRhaa (Tr)	cover (someone)
aunaa (I)	be vexed
a^{n}us (Tr)	smear
kaT (I)	cut
katar (Tr)	scissor up
kam (I)	be less
kamaa (Tr)	earn
kar (Tr)	do
kas (Tr)	tighten
kasaa (I)	get tightened
kah (Tr)	say
kaaT (Tr)	cut
kaan (I)	weep

Verbs	Gloss
kiin (Tr)	buy
kuut (Tr)	mince
khaT (I)	work for
khap (I)	fit in
khas (I)	fall
khaa (Tr)	eat
khii^{n}c (Tr)	drag
khisiaa (I)	cold
khuaa (Tr)	feed
khurac (Tr)	scrape
khul (I)	open up
kheh (Tr)	row
khodh (Tr)	dig out
khol (Tr)	open
gan (Tr)	count
gaR (I)	prick
gaRh (Tr)	concoct
gal (I)	melt
galaa (Tr)	melt
gaa(b) (Tr)	sing
gaaR (Tr)	bury under
giij (Tr)	mix, spoil
giiR (Tr)	swallow
guu^{n}th (Tr)	wreathe
ghaT (I)	be less
ghaTaa (Tr)	subtract
ghasak (I)	go off
ghas^{a}kaa (Tr)	dislodge
gher (Tr)	encircle
cabaa (Tr)	chew
cal (I)	proceed
caah (Tr)	want
cikar (I)	shout
ciikh (Tr)	taste
cuu(b) (I)	leak out
cobh (Tr)	lick
ca^{n}uk (I)	shudder
chap (I)	printed
chap^{a}waa (Tr)	get published
chaa^{n}T (Tr)	sort out
chaap (Tr)	publish
chiTak (I)	splash
chiRiaa (I/Tr)	scatter
chuuT (I)	get past

choR (Tr) leave
jap (Tr) pray
jam (I) accrue, freeze
jar (I) burn
jaa (I) go
jaag (I) be awake
jaa^{n}t (Tr) massage
jaan (Tr) know
jiit (Tr) win
jiitaa (Tr) help win
juR (I) be glued
juRaa (Tr) be glued
jot (Tr) yoke, plough
joR (Tr) join
jhagaR (I) quarrel
jhaTak (Tr) throw
jhapaT (I) stir
jharak (I) be roasted
jhar^{a}kaa (Tr) roast
jhalak (I) show up
jhal^{a}kaa (Tr) be shown up
jhuk (I) bend down
jhuul (I) hang
Tap (Tr) overtake
Taa^{n}k (Tr) stick, tack
Taar (Tr) avoid
Tiip (Tr) knead, wink
TuuT (I) break
Tok (Tr) interrupt
Thak (Tr) cheat
Thaan (Tr) be adamant
Thuus (Tr) fill, insert
Thel (Tr) push
Thok (Tr) tap, beat
Dar (I) fear
Daraa (Tr) frighten
Daa^{n}T (Tr) abuse
Duub (I) drown
Dol (I) swing
Dhak (I) cover
Dhah (I) crumble
Dho (Tr) carry
tar (I) cross
taak (Tr) look for
tiit (I) get wet
toR (Tr) break
tyaag (Tr) relinquish
thakuc (Tr) trample
thamh (Tr) support
thaak (I) be tired
thop (Tr) lay upon
dab (I) be under
dabaa (I) be under
daab (Tr) trample under
duuh (Tr) milk
de (Tr) give
dekh (Tr) see
daug (I) run
dhar (Tr) keep, hold
dhas (I) crumble down
dhuus (Tr) scorn, beat
dhop (Tr) chide
naac (I) dance
naap (Tr) measure
nikal (I) come out
nikaal (Tr) throw out
niip (Tr) annoint
noc (Tr) scratch
pakaa (Tr) cook
pac (I) be digested
paThaa (Tr) send
paR (I) fall
paRh (Tr) study
palaT (I) turn back
pasar (I) spread
pasaar (Tr) spread out
paak (I) be cooked, be scorched
paa(b) (Tr) get
pii(b) (Tr) drink
phaT (I) be torn
phar (I) bear fruit
pha^{n}s (I) be trapped
pha^{n}saa (Tr) trap (indirectly)
phaa^{n}k (Tr) throw eatables in mouth
phaaT (I) be torn
phaan (Tr) jump
phaaR (Tr) tear off
phaa^{n}s (Tr) trap (directly)
phur (I) strike in mind
phuuT (I) be broken

phe^{n}k (Tr)	throw	mar (I)	be killed
pho (Tr)	break, dissolve	maang (Tr)	demand, ask for
bac (I)	be saved	maar (Tr)	kill
bacaa (Tr)	save	rakh/raakh (Tr)	keep
baj (I)	ring	raT (Tr)	memorize
bajaa (Tr)	call	rah (I)	remain, stay
ba^{n}T (I)	be distributed	ruuk (I)	stop
ba^{n}Taa (I)	be distributed	ruus (I)	be piqued
bar (I)	be lit	rok (Tr)	stop
baraa (I)	be lit up	laag (I)	touch at, feel
baa^{n}c (I)	be saved	luuT (Tr)	loot
baaj (Tr)	speak out	le (Tr)	take
baa^{n}T (Tr)	distribute	leT (I)	lie down
baar (Tr)	light	lep (Tr)	plaster
bais (I)	sit	saj (I)	dress up
bhar (Tr)	fill	saR (I)	rot
bhaRak (I)	be unnerved	suut (I)	sleep
bhaag (I)	run away	ha^{n}T (I)	withdraw
bhuuj (Tr)	fry	ha^{n}s (I)	laugh
mangwaa (Tr)	get someone bring	haa^{n}k (Tr)	shout

Works Cited

Hook, Peter E.

1974 The Compound Verb in Hindi. Ann Arbor: Centre for South and Southeast Asian Studies, University of Michigan.

1978 The Hindi Compound Verb: What It is and What It Does *in* Singh K. S., ed. Readings in Hindi-Urdu Linguistics. New Delhi: National Publishing House. 130–57.

Singh, Udaya Narayana

1980 Some Aspects of Maithili Syntax: A Transfomational—Generative Approach. Ph. D. Dissertation, University of Delhi.

Singh, Udaya Narayana, K. V. Subbarao and S. K. Bandyopadhyay

Forthcoming Classification of Polar Verbs in Selected South Asian Languages *in* Krishnamurti, Bh., Colin P. Masica and Anjani K. Sinha, eds. South Asian Languages: Structure, Convergence and Diglossia. Delhi: Motilal Banarsidass.

SUBJECTHOOD HIERARCHY IN MAITHILI[1]

Udaya Narayana SINGH
South Gujarat University, Surat.

ABSTRACT : In this paper a few syntactic rules of Maithili such as Passive, Dative Subject Formation, Conjunctive Participle Formation, Raising, Reflexivization, and Equi are examined to find out whether the relational notion 'Subject of' (SU) is non-discrete in Maithili. On the basis of Hindi-Urdu, Panjabi, and Kashmiri, Kachru et al. (1976) proposed the following hierarchy: (i) Intransitive/Transitive SU, (ii) Dative SU, (iii) Oblique SU, and (iv) SP or transitive patient SU when passivized. This paper shows that consideration of relative performance of different SUs in Maithili under different syntactic environments gives rise to a different hierarchy of SUs in Maithili, with derived subjects occupying the second slot and oblique subjects the last slot, leaving dative subjects between them. It suggests that SU must be a non-discrete notion because it behaves differently in different but related languages and that trans-relational rules also operate in a non-discrete manner in that they do not promote or demote grammatical relations in the same way in all languages.

1. Introduction There has been a recent claim by some (Kachru et al. 1976) that 'Subject of' is not a discrete relational notion because in at least three Indian languages—Hindi-Urdu, Panjabi, and Kashmiri—different kinds of subjects form a hierarchy of the following sort :

1. *Hierarchy of Subjects* (Kachru et al. 1976:94)
   SI, ST $\leq$ SD $\leq$ S OBL $\leq$ SP
   (S: Subject, I: Intransitive, T: Transitive, D: Dative, S OBL: Transitive Agent When Passivized, SP: Transitive Patient When Passivized)

This position was challenged by Klaiman 1979, who argued that as far as Hindi was concerned one could find a number of examples violating the hierachy in 1, and that 'Subject of' (SU) was a discrete category at least in Hindi. I am not aware if similar arguments have been advanced against the Panjabi and Kashmiri data that formed the basis for postulating a hypothesis such as 1. In this paper I do not wish to evaluate arguments for or against 1. It is assumed here that the hierarchy in 1 was well-founded for at least some Indian languges (such as Kashmiri and Panjabi), if not for Hindi-Urdu.

In this paper, I wish to demonstrate that the notion of SU is non-discrete in Maithili as well as in Universal Grammar (UG) of three counts. First, different kinds of subjects behave differently in Maithili under certain syntactic opeartions. Secondly, for some syntactic operations in Maithili grammar, no clear picture emerges in respect of one or more types of SUs. This is especially true of S DAT(ive) and S OBL in Maithili. Thirdly, different SUs in Maithili form a hierarchy which is different from 1 above, and since the 'Subjecthood Hierarchy' differs from language to language, SU must be taken as a 'non-discrete' notion in UG.

2. Rules interacting with SUs There are at least the following rules that interact with different kinds of subjects in Maithili and are responsible for giving rise to a hierachy of SUs in Maithili : Passive, Dative Subject Formation, Conjunctive Participle Formation (or CPF), Equi, Raising, and Reflexivization. I shall first discuss briefly how some of these rules work in Maithili.

2.1. Passive Rule In relational terms, the passive rule in Maithili could be written in the following way :

2. *Passive Rule* (DO :: SU)[2]

i. DO (x, V_i) + $\left\{ \begin{matrix} \text{kEM} \\ \phi \\ \ldots \end{matrix} \right\}$ :: SU (x, V_i) + ϕ

ii. SU (y, V_i) + ϕ :: X (y, V_i) $\left\{ \begin{matrix} \text{sOM} \\ \text{+ dwaaraa} \\ \text{ak-haathEM} \end{matrix} \right\}$

(where the desinence is replaced with participle + *jaa* + desinence)

Although *sOM* 'from', *dwaaraa* 'by', and *ak-haathEM* 'of.... in-hands' are all post-chômeur oblique markers, there are certain restrictions on the selection of these markers in particular instances. Also, passives typically show the verb *jaa-* 'go' (as in 3bce) or *ho-* 'be' (3a) as auxiliary appearing after the main verbs concerned which receive the participial markers *-al^a*, *el^a*, or *ol^a*. The agreement marking in the verb changes wherever necessary. The future marker *-ab* in active sentences is replaced with *-Et^a∼-et^a*. The derived subject receives a nominative case-marking which is null. It is not necessary to shift the relationally affected nominals here (the 'Derived SU' and the 'X') although one can interchange them if one wants to. In Maithili, the promotee nominals affected include not only the actor or agent (as in 3 ab) but also the patient or victim (as in 3 c) and the goal (3d). Here are a few sentences which have undergone passivization :

3a. ahaaM $\left\{ \begin{matrix} \text{sOM} \\ \text{?dwaaraa} \end{matrix} \right\}$ sabdin Diin'-e haaM kal^a haEt^a

"You from/by always tall-talk called will be"

'* Tall will always be talked by you'

b. amarbaabuu $\left\{ \begin{matrix} \text{?sOM} \\ \text{dwaaraa} \end{matrix} \right\}$ ketaarii khaael^a jaa rahal^a ach^i

"Amarbabu from/by sugarcane eaten go being is"

'Sugarcane is being eaten by Amarbabu'

c. banjaaraa- $\left\{ \begin{matrix} \text{sabhak haathEM} \\ \text{sab dwaaraa} \end{matrix} \right\}$ kabilaak sardaar maaral^a gel^a

"wanderers-at-hand-of/by settlement's leader killed went"

'The leader of the settlement was killed by the wanderers'

d. kak^{a}rah^u $\left\{ \begin{matrix} \text{*sOM} \\ \text{dwaaraa} \end{matrix} \right\}$ baat pradhaan-mantrii $\left\{ \begin{matrix} \text{kEM} \\ \text{dhari} \end{matrix} \right\}$ pahuMcal^a

"someone through/by matter Prime Minister to reached"

'The matter reached the Prime Minister through someone'

e. ok^{a}raa $\left\{ \begin{matrix} \text{?sOM} \\ \text{dwaaraa} \end{matrix} \right\}$ ham niik jakaaM khuaaol^a gelahuM

"him from/by I good way fed went"

'I was nicely fed by him'

2.2. Dative Subject Formation Rule The dative subject formation rule in Maithili would look like the following :

4. *Dative Subject Formation* (SU :: X)

i. DO (x, V_i) + $\left\{ \begin{matrix} \text{kEM} \\ \text{kaa} \\ \text{raa} \\ \phi \\ \ldots \end{matrix} \right\}$ :: SU(x, V_i) + ϕ

ii. SU (y, V_i) + ϕ :: X(y, V_i) + $\left\{ \begin{matrix} \text{kEM} \\ \text{kaa} \\ \text{raa} \\ \ldots \end{matrix} \right\}$

(where $\begin{bmatrix} V_i \\ \text{+Cause} \\ \text{DO} \end{bmatrix}$ :: $\begin{bmatrix} V_i \\ \text{−Cause} \\ \text{(+BE)} \end{bmatrix}$)

The above rule shows that in the dative subject constructions, apart from a change in grammatical relations of nominals, the verbs change their agree-

ment suffixes and take up direct bases as against the causative ones (as shown in 5b, 5d and 5e). Moreover, verbs of 'doing' are either deleted or are replaced with the verbs of 'being'. The reason behind the deletion of the causative-indicator do-verb may lie in the 'non-volitional' nature (Klaiman 1980) of the dative subject constructions. Here are a few examples of dative subject sentences (in 5) along with their nominative subject counterparts (as in 6):

5a. ham-raa o niik bujhaait^{a} chalaah^{a}
"I-to he good seemed was"
'To me, he seemed good'

b. ham-raa sankaT mE visNu bhagmaan mon paR^{a} laah^{a}
"I-to crisis in Vishnu god mind fell"
'In crisis, God Vishnu struck my mind'

c. ham-raa aam pasand (hoit^{a}) ach^{i}
"I-to mango like be is"
'To me, mango is dear'

d. ham-raa s'eyar-maarkeT mE paai laagal^{a} achi
"I-to share-market in money invested is"
'Money has been invested in the share-market to (by) me'

e. ham-raa ii baat bejaae laagal^{a}
"I-to this matter bad seemed"
'To me, (I) felt bad about this matter'

6a. ham hun-kaa niik bujhait^{a} chalianh^{i}
'I thought him to be good'

b. ham sankaT mE viSNu bhagmaan kEM mon^{a} paaR lianh^{i}
'I remebered God Vishnu in crisis'

c. ham aam pasand karait^{a} chii
'I like mango'

d. ham s'eyar-maarkeT mE paai lagaelahuM
'I invested money in the share-market'

e. * ham ii baat bejaae lagaelahuM
'I felt bad about this matter'

2.3 Equi The equi rule deletes a subordinate subject nominal if it is identical with any of the relational terms in the immediately superordinate sentence. It operates on sentences such as 7a to form 7b:

7a. [$_S$laajo caahait^{a} ach^{i} [$_S$je laajo naihar jaathi]]
"Lajo want(ing) is that Lajo (her) parents' place goes"
'Lajo wants that Lajo goes to (her) parents' place'

b. [$_S$laajo [$_S$naihar jaa-e] caahait^{a} ach^{i}]
'Lajo wants to go to (her) parents' place'

2.4 Conjunctive Participle Formation Rule
The rule of Conjunctive Participle Formation (CPF) operates on certain coordinate structures (as in 8a), deleting the repeated nominal in one of these sentences and introducing a conjunctive participle marker -^{i} + *(kae)* after the verb of the first (in linear order) sentence. Addition of *-kae* ('having ...en') is optional and it has been therefore put within parentheses (notice, however, that 8b also undergoes other syntactic operations such as dative subject formation):

8a. ?[$_S$[$_S$ham hun-ak gaayan sun^{a}lahuM] aa [$_S$ham baRe gulaam aalii kEM mon paaR^{a}lhuM]
"I his singing heard and I senior Ghulam Ali-obj mind fall + cause + past"
'I heard him singing and I remembered Ghulam Ali, Senior'

b. [$_S$ [$_S$hun-ak gaayan sun^{i} kae] [$_S$ham-raa baRe gulaam aalii mon paR^{a}laah^{a}]]
"his singing heard-having I-to senior Ghulam Ali mind fell"
'Having heard him singing, I was reminded of Ghulam Ali, Senior'

3. Subject behaviour in different environments I shall not discuss raising and re-

flexive rules here because the examples in the following paragraphs will make it clear how they work in Maithili. Having briefly looked into the nature of these rules in Maithili, one can now show, in a tabular form, how different subjects behaved differently under different syntactic environments. If it was true, one could easily demonstrate that Maithili differed from Hindi-Urdu, Panjabi and Kashmiri on many counts. Wherever this could be indentified, it has been italicized in the following table:

Table 1

The Behaviour of Subjects Under Different Syntactic Environments in Maithili

SUBJECTS	ENVIRONMENTS REFLX	EQUI CONT	EQUI ACCESS	CPF CONT	CPF ACCESS	RAISING
SU, INTR	: Yes	Yes	Yes	Yes	Yes	Yes
SU, TR	: Yes	Yes	Yes	Yes	Yes	Yes
SU, DI-TR	: Yes	Yes	Yes	Yes	Yes	Yes
SU, DAT	: Yes	Yes	Yes	Yes	*Yes/?*	?
SU, OBL	: Yes/ *Ambig*	Yes	*Yes*	Yes	?	?
SU, DERIV	: Yes	Yes	*Yes*	*Yes*	*Yes*	*Yes*

There are a few things this table clearly shows. First, in the six environments mentioned above, intransitive, transitive, and ditransitive subjects do not differ from each other. This is not to say that they would not differ on these or on any other counts in Maithili (if the corpus is enlarged) or in any other language. If table 1 above is true for Maithili, it also shows that the so-called derived subjects (or SPs) are probably to be put higher in the subjecthood hierarchy than the dative subjects in Maithili. This should not be very surprising because both S DAT and S OBL are results of demotion rules of some kind whereas S DERIV (or SP) is derived by a promotion rule. Thus a language-particular hierarchy that places underlying SU derived SU and demoted SU in this order is what one would normally expect. In the following paragraphs, I shall deal with derived and X-rated SUs in detail.

4. X-Rated and Derived SUs

4.1 Dative subjects Dative Subjects in Maithili (like those in Hindi and some other NIA languages) control Reflexivization (the marker being *apan*) and CPF, and are accessible to the Equi rule as the following examples indicate:

SU, DAT controls Reflexivization:

9. ham-raa apan sankaT mE viSNu bhagmaan mon paR^{a}laah^{a}
"I-to own crisis in Vishnu god mind fell"
'In my own crisis, God Vishnu struck my mind'

SU, DAT controls Equi:

10. ham-raa [$_{S}$tahiyaa niik lag^{a}baak] baat aaiyo mon ach^{i}
"I-to long-back good feeling matter to-day-till mind is"
'Till today, I remember having felt good long back'

Su, dat is accessible to Equi:

11. ham [$_{S}$sankaT mE viSNu bhagmaan mon paaRo dea] yamraaj aa citr^{a}gupta -dunuu-kEM bataone chalianh^{i}
"I crisis in Vishnu God mind fall +

cause + ing about Yama-king and Chitragupta both-obj informed did"
'I had told both Yama, the king and Chitragupta about my having remembered God Vishnu at the time of crisis'

Su, dat controls CPF :

12. [$_S$baR^a jhanjhat mE paRi kae] ham-raa viSNu bhagmaan mon paR^{a}laah^a
"big trouble in fallen-having I-to Vishnu god mind fell"
'Having fallen in a big trouble, God Vishnu struck my mind'

It has to be noted here that in a number of instances with Dative Subject, Raising produces ungrammatical results. There are, however, some instances where this does not happen. The same goes for accessibility to Conjunctive Participle Formation. In Hindi, it seems, these constructions are blocked. At this stage I do not know why this should be the case. But the fact that the following sentences are allowed shows that Maithili Dative Subjects are nearer to Underlying Subjects than their counterparts in Hindi. This explains the '?' in table 1 under CPF-access and Raising for SU, DAT. Consider the following examples (where the raised Dative Subjects have been underscored) :

Raising of SU, dat :

13. raam ham-raa coriik iljaam lagaaol^a paolanh^i
"Ram I-to theft charge put found"
'Ram found me with a theft charge (against me)'
14. baabuujii ham-raa hriST^a boit^a dekhal^a-thiinh^a
"Father I-to happy being saw"
'Father found me (being) happy'

Su, dat is accessible to CPF :

15. [$_S$ [$_S$sankaT mE viSNu bhagmaan mon paR^i kae] [$_S$ham tar^i gelahuM]]
"crisis in Vishnu god mind fallen-having I salvation went"
'By remembering God Vishnu in crisis, I attained salvation'
16. [$_S$ [$_S$siitaaphal pasand bhO kae] [$_S$ham-raa lel^a aaphat bhO gel^a]]
"pumpkin like been-having I-to for problem be + inf went"
'By liking pumpkin, it was almost vexatious for me'

4.2. Oblique Subjects Instrumental and other oblique subjects in Maithili can control reflexivization, equi and CPF in the same way as is done in Hindi, Panjabi and Kashmiri. Consider the following examples :

SU, Obl controls reflexivization :

17. ahaaM sOM sabdin apan Dhol-e-Taa piiTal^a haEt^a
"you by always own drum-emph beaten will be"
'Your own drum will always be beaten by you'

SU, Obl controls equi :

18. amarbaabuu sOM [$_S$ketaarii khaael^a jaebaak] baat nukaael^a nah^i gelanh^i
"Amarbabu by sugarcane eaten go + inf matter hidden not went"
'The story of eating sugarcane could not be kept undisclosed by Amarbabu'

SU, Obl controls CPF :

19. [$_S$ [$_S$ahuu umari mE pahuMc^i kae] [$_S$amarbaabuu sOM ketaarii khaael^a jaa rahal^a chanh^i]]
"this-emph age in reached-having Amarbabu by sugarcane eaten going was"
'Even after reaching this age, sugarcane was being eaten by Amarbabu'

In Maithili, unlike in Hindi, oblique subjects are accessible to equi rule as 20 and 21 below would show. In these, *amarbaabuu*

sOM and *ahaaM sOM* have been deleted (they do not appear in surface) under identity with the higher sentence nominals *amarbaabuu* and *ahaaM*, respectively (which occur). As 22 and 23 would show, SU, obl in Maithili can be raised if higher sentence verb is *dekh* 'see'. But in most cases, these nominals cannot be raised. Similarly, 24 will make it clear that although oblique subject is not accessible to CPF, the resultant strings can be made less odd if the controller nominal is a non-subject. Consider the following sentences :

SU, Obl is accessible to equi :

20. amarbaabuu vriddhaavasthaa mE [$_S$ ke-taarii khaael[a] jaaeb[a]] pasand karait[a] chalaah[a]
    "Amarbabu old-age in sugarcane eaten go + inf like doing was"
    'Amarbabu liked to be able to eat sugarcane in old age'

21. ahaaM [$_S$cahuMdis[i] apan Dhol piiTal[a] jaaeb[a]] caahait[a] chalahuM
    "you four-directions own drum beaten go + inf want(ing) was"
    'You wanted (your) drum to be beaten in all four directions'

Raising of SU, Obl :

22. ham hun-kaa dwaaraa [$_S$Diin' haaM-kal[a] jaait[a]] dekh[a]lainh[i]
    "I him by tall-talk called going saw"
    ' * I found tall being talked by him'

23. ham hun-kaa sOM [$_S$dhaRaadhaR[a] madhur khaael[a] jaait[a]] dekh[a]lainh[i]
    "I him by repeatedly sweet eaten going saw"
    '* I saw him sweetmeat being eaten (by him) repeatedly'

SU, Obl is NOT accessible to CPF :

24. [$_S$sabdin Diin'-e-Taa haaMkal[a] bhO kae]
    { ? ahaaM kEM kon laabh bhel[a]? / * ahaaM kon laabh kaelahuM ? }
    "always tall-talk Emph-class called been-having"
    { "you-to what profit came ?" / "you what profit made ?" }
    *; What did you gain by always tall being talked by you ?

4.3. Derived subjects Maithili differs from Hindi, Kashmiri, and Panjabi most in the behaviour of Derived Subjects or SPs. The derived passive patient or victim of an action in Maithili does not usually show any case-marking. Thus in the examples given below, the SU, deriv *kabilaak sardaar* 'the leader of settlement' appears without *kEM* 'to' or any such suffix. In Hindi-Urdu SP controls only reflexivization and equi whereas the following examples suggest that in Maithili derived subjects also control CPF, allow raising, and are accessible to CPF and equi. Consider the following examples which substantiate this claim :

SU, deriv controls reflexivization :

25. (banjaaraa-sab dwaaraa) *kabilaak sardaar$_i$ apan$_i$* Diih[a] par maaral[a] gel[a]
    "wanderers by settlement's leader own house on killed went"
    'The leader of the settlement was killed at his own place (by the wanderers)'

SU, deriv controls CPF :

26. [$_S$[$_S$otae jaa kae][$_S$kabilaak sar-daar maaral[a]gel[a]]]
    "there gone-having"...
    'Having gone there, the leader of the settlement was killed'

SU, deriv is accessible to CPF :

27. [$_S$[$_S$maaral[a] jaa kae][$_S$kabilaak sardaar tar[i] gel[a]]]
    "killed gone-having . . . salvation went"
    'Having been killed, the leader of the settlement attained salvation'

SU, deriv controls equi :

28. kabilaak sardaar [$_S$pachbaRiaak pokhar[i]

lag jaae caahait[a]] maaral[a] gel[a]

"...backyard's tank near go + inf willing..

'Having wished to go near the tank of the backyard, the leader of the settlement was killed'

SU, deriv is accessible to equi :

29. [$_S$kabilaak sardaar [$_S$maaral[a] jaae] caahit[i] chal[a] [$_S$taa kii baaMkii sabhak jaan bacae]]

"settlement's leader killed go + inf want-(ing) was so that rest of all life is saved"

'The leader of the settlement wanted to be killed so that life of the rest is spared'

SU, deriv allows raising :

30. [$_S$ham kabilaak sardaar-kEM [$_S$maaral[a] jaait[a]] dekhnE chalianh[i] . . . mudaa [$_S$DOrEM kich[u] nah[i] kahalianh[i]]

"I settlement's leader killed going seen was but fear-out-of something not said"

'I saw the leader of the settlement being killed but I did not say anything out of fear'

5. Conclusion To conclude this discussion on some relation-changing rules in Maithili and their syntatic behaviour in certain environments it may be mentioned here that there are ample evidences to suggest that not only is the hierarchy of subjects in Maithili different from that in Hindi-Urdu, Panjabi, and Kashmiri, but it is also possible that relation-changing rules (at least, some of them) promote or demote terms in a non-discrete manner. Further research could also show that these status-changing rules are in some kind of hierarchy depending on how non-discrete they are. Table 1 and the subsequent sentences (9-29) which formed the basis for the postulation of the former suggest that subjects in Maithili have a hierarchy of the following sort :

31. Hierarchy of Subjects in Maithili (Singh, 1979:95) SI, ST, Sdt $\leq$ S DER $\leq$ S DAT $\leq$ S OBL (where SI, ST and Sdt are Intransitive, Transitive and Di-Transitive Subjects, respectively; S DER is Derived Subject; S DAT is Dative Subject; and S OBL is Oblique Subject.)

NOTES

1. An earlier version of this paper was read at the Second International Conference of South Asian Languages and Linguistics (ICSALL) at the Central Institute of Indian Languages, Mysore, on 12-16 January, 1982. I am thankful to K. V. Subbarao, Yamuna Kachru, Probal Dasgupta, E. Annamalai, and Rajeshwari Pandharipande for comments.

2. In the text, the raised vowels are half-short phonetically; M indicates nasalization of the previous segment; T, Th, D, Dh, N R, Rh, S are cerebral sounds; n' is a velar; s' is a palato-alveolar; E and O represent lower mid front and back vowels, respectively. A double colon (::) stands for an arrow.

REFERENCES

Kachru, Yamuna; Kachru, B. B.; Bhatia, Tej K.1976. The notion of 'subject': a note on Hindi-Urdu, Kashmiri and Panjabi, in M. K. Verma, ed. The notion of subject in South Asian languages. 79-108. Madison : University of Wisconsin. South Asian Series of Publications no. 3.

Klaiman, M. H. 1979. On the status of subjecthood hierarchy in Hindi, international Journal of Dravidian Linguistics 8:1. 17-31.

—.1980. Bengali dative subjects, Lingua 51: 4.275-95.

Singh, Udaya Narayana. 1979. Some aspects of Maithili syntax : a tranformational generative approach. University of Delhi Ph. D. dissertation.

Vol. 1. November, 1980

NEPALESE LINGUISTICS

CONTENTS

Linguistic Society of Nepal
Tribhuvan University
Kirtipur, Kathmandu

RELATIVE CLAUSE FORMATION IN MAITHILI*

UDAYA NARAYANA SINGH
M. S. University of Baroda, India

0. INTRODUCTION

0. 1. In this paper, I wish to discuss a few aspects of Relative Clause Formation (henceforth, RCF) in Maithili. Maithili is an Eastern New Indo-Aryan language currently spoken by over 10.73 % population of the total inhabitants in Bihar (Census, 1961) in the districts of Darbhanga, Madhubani, Muzaffarpur, Bhagalpur, Saharsa, Purnea and in some parts of Champaran and Santhal Parganas. It is also spoken in the Tarai region in Nepal, and in a few pockets of Malda and West Dinajpur of West Bengal. Maithili being a Central Magadhan language is very closely related to Assamese, Bengali, Magahi and Oriya. The normal word order in Maithili is Subject-Object-Verb. This order is changed only under special kinds of emphases. Modern Maithili has 13 vowels and 31 consonants[1], two numbers (**sab** and **lokan**[i] being the common pluralizers), traces of the Old Indo-Aryan gender system, especially of the feminine gender in a few constructions (where indefinitive adjective and verbs derived out of participial bases mark gender agreement), three persons, three tenses, four aspects (imperfect, perfect, progressive and habitual), a special set of markers for the optative (see Singh, 1979), a very complicated pattern of verb agreement, especially in respect of honorific marking,[2] and an order of elements within the verbal complex such as follows :

(1) $_{Vb}$[Vs + (Participle + Auxiliary) Tense-Asp + Agr]$_{Vb}$

0. 2. In the following paragraphs, I shall first discuss the different relative clause markers as used in different stages of Maithili language[3] and give a list of relative and correlative adverbs. The similarities between relative, interrogative and complement clause markers will also be discussed and differeut uses of **j**-words will be enlisted The nature of modifiers originating from a relative clause structure will then be touched upon. Finally, different RCF strategies (Keenan and Comri, 1977; Givon, 1975) such as participialization/nominalization, equi-case, anaphora, gap, non-reduction, verb-coding and word order will be discussed with reference to RCF in Maithili. Familiarity wlth the literature discussing the notion of RCF-strategies is assumed here. It is important to understand here that human languages can and do use a 'mixture' of different strategies at times (Givon, 1975:61), and that since WH-strategy is not used in all languages (e. g., Tankhul Naga, as reported in Sachdeva, 1977), no attempt is made here to formulate Relativization tranformation(s) on the basis of the Maithili data presented here.

1. RELATIVE MARKERS AND A BIT OF HISTORY

1. 1. In Maithili, **j**–forms mark, among other things, Relative Clauses (hencefor RCs). The same **j**–form assumes different shapes depending upon the case–marking it tak Some other factors such as animateness, possessiveness and honorificity also come into pl in determining the exact shape of an RC–marker. The paradigm for Modern Maithili RC markers is as follows;

(2)

		ANIMATE		INANIMATE
		HONORIFIC	NON–HONORIFIC	
DIRECT	:	je	je	je
OBLIQUE	:	ja (k^{a}raa)	jan^i(kaa)	jaah^i
POSS	:	ja (kar)	jani (k^a)	jaah^i (–NP+ak^a)
			jani (kar^a)	jaah^i (ker^a)

1.2.1. In the earliest stage of Maithili, however, there were more forms than these. Fo instance, in the **Caryaapada** 9th–11th century A.D.), one finds the following shapes of RC markers:

(3) NOMINATIVE : je; je je; ja; jo
ACCUSATIVE : jaa
INSTRUMENTAL : je (na)
LOCATIVE jahi; jasu
GENITIVE jaa (hera)

1.2.2. The following sentences from the **Caryaapada** will illustrate this point:

(4) a **jo** managoara[4] so uaasa (KaahNu, 7.2 2)
REL+cognizable, CORREL unattached
"What is cognizable, that is unattached".

b **je je** aalla te te gelaa (KaahNu, 7.4.1.)
"Whoever come+pst+agr they go+pst+agr
Whoever came all went".

c **ja** ehu[5] jaati[6].. (Santi, 26.5.1)
REL it win+pres+agr
"(He) who wins it.."

d **jaa** lai[7] acchama taahera[8] uha[9] Na dis[10] (Lui29.2.5
REL take+pte be+pres+agr CORREL+gen direction NEG purpose
"Whom taking I be, of him (is) neither a direction, (nor) a purpose".

e **jahi** maNa india–(pa) bana [11] ho[12] NaThaa (Aajadeva, 31.1.1.)
REL+loc mind senses breath be+pres+agr destroyed
"where mind, senses and breath are destroyed".

kaa–baak–cia[14] jasu Na samaaya [15] (KaahNu, 40.2.2.)
body spedch heart REL+loc NEF fathom+press+agr
"Where body, speech and heart fathom not".

g **jaahera** baana–cihna[16] ruuba[17] Na jaaNii . . (Lui, 29.3.1.)
REL+gen colou form appearance NEG know+press+agr
"Whose colour, form (and) appearance NEG know, . . I do not known, . .".

1.2.3. A few centuries later, especially in the beginning of the Middle Maithili period (14th century A.D.), the shapes of these markers changed considerably. Thus, coming to the days of Vidyapati's lyrics, Jyotiriiswara's **VarNaratnaakara** (a socio–cultural discourse) and Umaapati's **PaarijaataharaNa** (a play), the RC–markers assumed the following shape:

(5)

		ANIMATE	INANIMATE[18]
NOMINATIIVE	:	je (ha)	jaa
ACCUSATIVE	:	jaahi; jehe; janhi	—
INSTRUMENTAL	:	jeni	—
LOCATIVE	:	—	ja
GENITIVE	:	jaaka; jaake; jaaheri; janikari; janhik (a)	jasu

1,3.1. Wherever a pronominal RCF–strategy is used, reiative pronoun is normally followed by a correlative pronoun which in Maithili has a **s–/t–** base like in many other Indo–Aryan languages. The correlative pronoun can also be classified in terms of animateness, case, possessiveness and honorificity, and it is as follows:

(6)

		ANIMATE		INANIMATE
		HON	NON–HON	
DIRECT	:	se	se	se
OBLIQUE	:	ta (n^i kaa)	ta (k^a raa)	$taah^i$
POSS	:	ti (nak ^{a})	ta (kar^a)	$taah^i$ (–NP+ak^a) $taah^i$ (ker^a)

1.3.2. Apart from these relative pronouns, there are a number of relative and correlative adverbs such as the following: **jenaa... tenaa** "as...so", **jataE...tataE**"where...there", **jat^a baa ... tat ^{a} baa** .. 'also, **jatek^a ... tatek^a** , bot meaning) "as much...so much", **jakhan . . takhan** "when...then", **jahiaa . . tahiaa** "which day . . that day", **jaa jaa . . taa taa** (also, **jaa . . taa**, both meaning) "by the time...by then", and many others. One can construct these relative linkers by drawing parallels from a long list of open or K–question words in Maithili as given in Singh and Bandyopadhay (1978), and hence I shall not go into the details of various types of relative markers.

1.3.3 It must be mentioned here that like in Bengali, **je**–word in Maithili marks a number of constructions other toan RCs. These include at least the following: (i) **je** as a finite complementizer (as in 7a that follows), (ii) **je** as a marker for conditional and other adverbial

clauses (7b), (iii) **je** showing a purpose-interpretation (7c), and (iv) **je** used as a pronoun constructions like **je kyeo** "anyone/anybody" and **je kich**^{u} "anything". The following are t example of **je** as described in (i) to (iii) above:

(7) a o kah^{a} laah ^{a} S_2[**je** o nah^{i} aotaah ^{a}]S_2
he say+pst + agr that he NEG come+fut+agr
"He said that he would not come".

b [[o **je** otae gel^{a} chalaah^{a}] S_2] takar^{a} kii bhel^{a} ?
ADVP
he ADV there go+ptc have+pst+agr that+gen what happen+pst+agr
"What happened to that-to his going there ?"

c ham hun^{a} kaa otae paThaolianh^{i} [**je** o hamar^{a}
I he+opj there send+pst+agr so that he I +gen
baalak-kE^{n} khoj^{i} aanath^{i}]S_2
son+obj search+abs bring+opt+agr
"I sent him there so that he finds out my son (and) brings (him) back".

To these, one can add another use of **je** in certain constructions where it mar direct speech. The following is an example of the quotative **je**:

(8) o ham^{a}raa rokal^{a} thiinh^{a} **je** nah^{i} jaau
he I+obj stop+pst+agr QUOTATIVE NEG go+imp+agr
"He stopped me (saying) 'Don't go'."

1.3.4. It may be mentioned here that unlike in English where Relative and Interrogati markers are strikingl similar (both WH), in Indo-Aryan languages the first normally sta with **j**-and the second with **k**-. English is not an isolated example in this respect. It is t same in case of Hittite (Berman, 1972) Georgian (Aronson, 1972), Albanian (Morgan, 197 However, if we view Relative Clause, Complement Clause, Open Question and Yes/N Question forming some sort of quadrangle-morphologically as well as syntactically[19] (cf. Da gupta, 1979), then one might expect that there would be languages where markers for any oth pair of categories would be similar. This is true of most of the Eastern NIA languages whe Relative and Complement Clauses have the same markers :**j**-, and the two questio markers start with **k**-. In this respect, these languages show similarities with Sanskrit (y for RC and Comp-both), French (**que/que**), Russian (**chto/chto**), and many other language Hindi and some other IA languages show a totally different type of marker similari in that here Complement clause and two Question constructlons start with **k**-, whereas RC marker iis always **j**-. Thus here similarity is found at three points in a quadrangle whi has bee called a Q-Clause quadrangle (cf. Dasgupat, 1979). Though it would be interesting see if these different types of similarities in marking reflect syntactic differences, it ts n attempted to investigate here. The Q-Clause quadrangle in Maithili would look as follows:

c *maugii–lokan^{i} giit^{a} haar^{i} kataE geliih^{a} ?

d baalak raamak^{a} hamraa ta niike laagal^{a}

e dimaag^{a} tohar^{a} (ta) unTe chOha^{a}

f kavitaa kunaalak^{a} niike chalanh^{i}

2.1.3. The un–grammaticality of (11) c seems to stem from the fact that here t head–noun is in plural. If one pluralizes the other head–nouns in (11) a through f eith by adding **sab–** the post–positive word, or by prefixing a quantitative numeral such **paa^{n}c** "five", most of these constructions will become unacceptable. I am not sure this could be taken as a supporting evidence– though a weak one, in favour of (S)–N orde At this point of research I do not know why plural nominals tend to favour a 'Modifie Noun' order such as in the following :

(12) a ? paa^{n} c–go diyaa barait^{a} baR^{a} sundar lagait^{a} ach^{i}

b *duudhbaalaasab bhiim^{a} sen aa sah^{a} deb aael^{a} chal^{a}

c *maugii–paa^{n} coTaa giit ^{a}haar^{i} kataE geliih^{a} ?

d ? baalak–sabTaa raamak^{a} hamraa ta niike laagal^{a}

3. POSITIONAL OR WORD ORDER STRATEGIES OF RCF

3.1.1. If one considers the relative position of head nominal vis–a–vis the restrictin clause, there appear to be at least four strategies in which these elements could be arrange in a RCF structure. These included the following : (i) Postnominal RCF, where the orde is **head NP**+S_2 , (ii) prenominal RCF, where the order is S_2 + **head NP** , (iii) Intern RCF, where the head occurs within the restricting clause[20], and (iv) Displaced RCF, whe the head NP and the restricting clause are intervened by different kinds of sentential element Maithili uses all the four strategies. The b–sentences in (13) through (16) will demonstra this fact clearly. The **NPs** being relativized are underscord in a–sentences. Consider th following sentences :

(13) a ham **panc–sab–kE^{n}** niik jakaa^{n} janait^{a} chalianh^{i}
I 'Panch' + pl + obj good way know+ptc be+pst+agr
"I knew all the Panch very well".

b **panc–sab** jan^{i}kaa–sab–KE^{n} ham niik jakaa^{n} ...
"All the Panch whom I knew very well . ."

(14) a **o mukhiaa** hamraa khuub Daa^{n}Tal^{a}thiinh^{a}
DEM village–chief me much scold+pst+agr
"That village–chief scolded me a lot".

b je hamraa khuub Daa^{n} Tal^{a} thiinh^{a} **o mukhiaa...**
"That village–chief who scolded me a lot..."

(15) a o ekTaa **baRad** kiinal^{a} thiinh^{a}
he one+det ox buy+pst+agr
"He bought an ox".

b o ekTaa je **baRad** kiinal^{a} thiinh^{a} hamraa pasiin^{a}
me like

nah^{i} paRal^{a}
not fall+pst+agr
"The ox that he bought was not likable to me".

(16) a **o baalak** kaalh^{i} etaE khasal^{a} chal^{a}
DEM boy yesterday here fall+pst.ptc. be+pst+agr
"That boy fell off here yesterday".

b je kaalh^{i} etaE khasal^{a} chal^{a} ham **oh^{i} baalakak^{a}**
I that boy+gen

bhaai thiikahu^{n}
brother be+pres+agr
"I am the brother of that boy who fell off here yesterday".

3.1.2. There is no doubt that (13) b, (14) b and (16) b are typical examples of postnominal, prenominal and displacement strategies of RCF, respectively. But one may have doubts whether (15) b really shows an internal RCF in the sence of Keenan and Comrie (1977) as Bambara or Diegueño would show. It is important to note that in (15) b the matrix sentence does not have a head noun. One may, therefore, argue that this sentence has undergone some sort of deletion–strategy, and that is not relevant for a discussion of internal RCF here. Now, alternatively one can use a correlative se or a full NP **se baRad** in the matrix sentence while retaining **je baRad** in the RC unchanged. This would result in (17) a. What makes it interesting is the fact that one can alternate the positions of **je baRad** and **se baRad** and can come up with a construction such as in (17) b which can surely be considered as an instance of internal RCF in Maithili. Consider the following sentences :

(17) a o ekTaa **je baRad** kiinal^{a} thiinh^{a} **se (baRad)**
hamraa pasiin^{a} nah^{i} paRal^{a}

b o ekTaa **se baRad** kiinal^{a} thiinh^{a} **je** (?? **baRad)**
hamraa pasiin^{a} nah^{i} paRal^{a}

4. OTHER STRATEGIES

4.1. The presence of 'positional' strategies of RCF as discussed above does not indic[ate] that it does not involve any of the other ssrategies. Rather, the two go hand-in-hand. In t[his] and the subsequent paragraphs, I shall look into various other strategies employed [in] Maithili. The first among these is the "non - reduction' stratgy. Consider the follow[ing] sentences:

(18) a [jaah^{i} panc-sab-kE^{n} ham niik jakaan^{n} janait^{a} chalianh^{i}] o panc-sa[b]
"All the Panch whom I knew very well, the (same) Panch..."

b [je mukhiaa hamraa khuub Daa^{n}Tal^{a} thiinh] o mukhiaa
"The village-chief who scolded me a lot, the (same) village-chief.."

In all these examples, the relativized nominal occurring twice. The typical examples [of] non-reduction strategy as given by Givon (1975: 62) show that the nominal concerned [is] present at least in the restricting clause, although it may or may not be present in the mat[rix] clause. In the sentences as given above, however, both the nominals are present. It m[ay] also be mentioned that normally non-reduction is accompanied with a subsequent shift [of] the restricting clause to a 'topic'-position (which is sentence-initial in Maithili and Hittite and sentence-final as in Bambara). In case of (18)a, for instance, if this was n[ot] done, the resultant construction would have been cumbersome, though acceptable:[21]

(19) [(o) panc-sab [jaah^{i} panc-sab-kE^{n} ham niik jakaan^{n} jana[it^{a}]
chalianh^{i}]$_{S}$]$_{NP}$...

4.2. Japanese shows typical examples of 'Gap'-strategy where the nominal being relativiz[ed] is gapped in the restricting clause and even the pronoun which one would expect in its pla[ce] would be missing. In a restricted number of cases, Maithili does show this RCF-strateg[y]. For instance, consider the following sentences:

(20) a [ham { jaah^{i} muruut-kE^{n} / jan^{i} kaa } ciTThii likhnE chalianh^{i}]
I which guy+obj/whom letter write+ptc be+pst+agr
{ o / se } muruut kyeo dos^{a} re rahath^{i}
DEM/CORREL guy someone else+EMPH be+pst+agr
"The guy I wrote the letter to was a different man".

b [ham ϕ ciTThii likhnE chalianh^{i}] { ? o / se } muruut kyeo dos^{a} re rahath[^{i}]

A close look at (20) a and b would reveal that not only the nominal, but also the [pro]noun attached to it can be gapped. Here, ϕ indicates the place of gapping. se seems to gi[ve] a better sentence as in (20) b, probably beeause it is associated with relativization-process, an[d] therefore. makes the recoverability easier in gapped RCs.

4.3. Obviously, 'Relative Pronoun' (WH in English) strategy is the commonest of all in IE family of languages. Examples of this strategy have been given in earlier paragraphs (cf. 13–16). In Maithili, this strategy involves the following steps:
(i) replacement of the relativized nominal in the restricting clause by a **j–pronoun**, and optionally (ii) attachment of a corresponding correlative **s–/t–** or demonstrative **o–pronoun** to the head nominal in the matrix clause. These pronouns (**j–;s–/t–;o–**) show the grammatical relation of the nominal which they replace or are attached to, irrespective of whethere the original nominai (s) show (s) up in the surface. These pronouns also copy the [± honorific] feature of the nominals. **jan^{i}kaa** in (13) b and (20) a prove this point, because a [–honorific] nominal would have attracted a [–honorific] relative pronoun **jak^a raa.**

4.4. 'Anaphoric Pronoun'–strategy is very common in Arabic and Hebrew where in case of object+position RC, the restricting clause shows an anaphoric pronoun in place of the deleted nominal apart from a relative marker attached to the embedded clause. If one tries to apply this strategy in English, one would generate constructions such as in (21) c. consider the following:

(21) a Ramesh gave a kiss to Rakhi
b The kiss that Ramesh gave ϕ to Rakhi...
c ?* The kiss that Ramesh gave **it** to Rakhi...

Maithili employs this strategy in a limited number of cases, mainly for the purpose of disambiugation or deletion–recall. In the following set of sentences, (22) b is a simple relative equivalent of (22) a. Now, if (22) a is itself embedded in a sentence such as in (23) a, the resultant RCF operation may give rise to an anaphoric pronoun placement such as in (23) b. At present, I do not know of any other situation in Maithili than the one below where this strategy could be used. Consider the following examples:

(22) a ham oh^i laRkaa–kE^n janait^a chaliaik^a
I that+obl boy+obj know+ptc. be+pst+agr
"I knew that boy".

b { jaah^i / jak^a raa } laRkaa–kE^n ham janait^a chaliaik^a, { o / o laRkaa }

"The boy whom I knew, he..."/ "*Whom I knew, that boy"

(23) a ahaa^n socait^a chalahu^n je ham oh^i laRkaa–kE^n...
You think+ptc. be+pst+agr that
"You thought that I knew the boy".

b jaah^i laRkaa–kE^n ahaa^n socait^a chalahu^n
je ham { ϕ / **ok^a raa** } janait^a chaliaik^a, ...

"The boy whom you thought that I knew **him**..."

4.5. The 'participialization' or 'Nominalization'-strategy is a very common meth[od] of RCF in Indian languages, and especially in the Tibeto-Burman languages; this is eit[her] the only or the commonest strategy available. Here the verb in the restricting clause appe[ars] in a non-finite nominalized shape, and 'normally' the subject nominal receives a genit[ive] case-marking. We can take up (13) a here to show how it works :

(13) a ham panc-sab-kE^{n} niik jakaa^{n} janait^{a} chalianh^{i}
"I knew all the Panch very well".

(24) a [hamar panc-sab-kE^{n} niik jakaa^{n} jaanab]...
I+gen know+inf. non-pst.
"My knowing all the Panch very well..."

b [hamar niik jakaa^{n} jaanala^{a}] panc-sab...
I+gen know+inf. pst.
"*My very well known all the Panch..."

In the above examples, (24) a is an instance of non-finite complementizer-placement (wh[ich] is '**ar...ab**' here) and it must be differentiated from (24)b where participialization-strat[egy] has been applied. The points of difference are as follows : (i) first, in the latter case, t[he] participial form shows even the tense of the original verbal as in (13) a, whereas in (24[)] addition of infinitizer **-ab** has neutralized the tense-marking; (ii) secondly, (24) b sho[ws] gapping of the relativized nominal while (24) a retains it; and (iii) finally, (24) b functio[ns] like an adjective where the head-nominal stands apart and while (24) a can be used as complement clause in a larger sentence with [+Complement] verbs or adjectives, (24) b can[not] function in that way.

4.6.1. 'Verb-Coding'- strategy is found in Philippino and a few other Malay[o-] Polynesian languages and in some Bantu languages. The nearest approximation as to w[hat] happens in these languages when this strategy is employed could be guessed (with a cauti[on] that it is still far from being parallel to the use of 'verb-coding' in these languages) from [the] following :

(25) a **I worked with the boy.**
b The boy I **worked with**

At present, I do not know of any other Indian languge whieh employs this as a producti[ve] strategy.

4.6.2. Another strategy which is inoperative in Maithili is what is known as [the] 'Equi-Case'-Strategy. Modern Hebrew and Tamil are languages where this is known to [be] productive. If the syntactic role of the relativized nominal is the same in the matrix as w[ell] as in the embedded sentence, some languages show the case-marking twice, whereas in so[me] other languages, 'Equi-Case'-strategy would require one of these markers to be dropped. T[he] following example[22] from English shows that here both the markers (underscored) [are] retained:

(26) John is sitting **on** the table **on** which there is a vase.

[I]t must be noted that this strategy is only abbreviatory in nature and that even if it is found [t]o be productive in a particular language, it is always matched with other strategies.

5. CONCLUSION

5.1. In conclusion, in this paper we have discussed the nature of relative clause formation in Maithili with- an emphasis on a few aspects only. First, we discussed the nature of relative clause markers in different stages of the Maithili language, multiple use of j-forms, and the Q-Clause quadrangle for Maithili in the first section. In the next section, we touched upon the modifiers resulting from RC-structures to discuss the order of elements within the nominal phrase in Maithili. In the thlrd section, 'Positional' or 'Word Order'-Strategies of RCF have been discussed which was followed by another section where all the other strategies were looked into with reference to Maithili. It was shown that except a few rare types, Maithili employed all the other strategies which included four positional and non-reduction, gap, relative pronoun and anaphoric pronoun strategies.

Notes

* I am grateful to a number of persons who very kindly helped me in various ways in writing this paper. I am particularly thankful to K. V. Subbarao, Probal Das gupta, Peter Hook, Bernard Comrie and S. K. Bandyopadhyay from all of whom I have learnt a lot in the last few years. I also thank Mimi Klaiman for giving detailed comment on an earlier work in the same line, and David Johnson for a number of insightful papers on Relational Grammar that he kindly sent to me.

[1]The vowels included the following : i, ii, ^{i}, e, E, a, aa, ^{a}, o, O, u, uu and ^{u}. The raised vowels are half-short and the double vowels are long. The nasalization mark is shown by a raised, i. e., superscript n. The consonants lnclude 16 oral and 3 nasal stops, 4 affricates, 2 sibilant and 1 glottal fricative, 2 flaps and a lateral and 2 semi-vowels.

[2]See Singh (1980) for the details. In Maithili, non-terms of varions types can trigger and control verb agreement in the same way as terms can do.

[3]Historically, Maithili can be divlded into three stages : (i) Early Maithili : 9 th- 13 th century (the language of the **Caryaapada, Sarvaananda, Praakrtapaingala** up to Vidyapati's **Kiirtilataa** and **Kiirtipataakaa**), (ii) Middle Maithili : 14 th-18 th century (the language of Jyotiriiswara's **VarNaratnaakara** down to **KrSNajanma** written in the 18 th century), and (iii) Modren Maithili (the language and literature from 18 th century onwards).

[4]Nilratan Sen (1973): **jo-maNa go-ara.**

[5]Shastri (1916) : **jachu.**

[6]Shastri (1916) : **jaati**; Sen (1948) : **juti**; Bagchi and Shastri (1956) : **jugati**; Mukherji (1963) : **juati.**

[7]Shastri (1916) : **jaalai.**

[8]Shastri (1916) : **acchamataa hera** ; Sen (1948), Bagchi and Shastri (1956) : **accha taahera** ; Mukherji (1963) : **accha ma taahera.**

[9]Sen (1948) : **uha(i).**

[10]Shastri (1916) : **dis** ; Sen (1948) , Bagchi and Shastri (1956) : **disa** ; Mukherji (1963) **diisa**; Nilratan Sen (1973) : **diisa.**

[11]Shastri (1916) ; **india(pa)baNa,** because the commentary had **pavanendriyakam** ; Shahidullah (1940) had the same reading; Mukherji (1963) : **indiabaNa**; Bagchi and Shastri (1956): **india pavaNa.**

[12]Bagchi (1938) : **hoi.**

[13]Shastri (1916) ; **Na Thaa**; others had : **NaThaa.**

[14]Shastri (1916) : **kaabaakcia**; Sen (1948) : **kaa baak cia**; Brgchi and Shastri (1956) **kaa vaak cia**; Nilratan Sen (1972) : **kaa-a baak-a cia.**

[15]Original, Bagchi and Shastri (1956), Nilratan Sen (1973) : **samaa-a**; Shastri (1916) **samaaya.**

[16]Sen (1948) : **baaNa-cihna-ruuba**; Mukherji (1963) adopts the same reading but drops the hyphen-marks; the latter also has **baana** with a dental nasal which could be typographical error; Bagchi and Shastri (1956) : **vaaNa-cihna**; Shastri (1916) : **baanacihna ruuba.**

[17]Bagchi and Shastri (1956) **ruuva.**

[18]See Singh (1979) for details.

[19]It would be interesting to try and find out syntactic evidences that would support postulation of a quadrangle. See Dasgupta (1979) for an attempt of this type. Note that (9) is typical of Maithili and Bengali. In Hindi, except in RCs. the markers in other cases start with k-words. In that respect, Marathi would come closer to Hindi with Comp-Open non-question **kii** (I am excluding the quotative **mhaNun** which parallels to **boli** an Oriya and **bole** in Bengali : Hook, Personal communication), and its question counterpart **kaa** as well as Open question markers such as **kon**, **kay** etc.

[20]See Keenan and Comrie (1977:64-5) for the first three.

[21]Although this is an ideal example of non-reduction, it may sound bookish to some.

[22]Bernard Comrie : Personal communication.

References

Aronson, H. L. 1972. 'Some Notes on Relative Clauses in Georgian,' In P. Peranteau et al, eds. 136-43.

Bagchi, P. C. 1938. 'Materials for a Critical Edition of the Old Bengali Caryaapadas,' Journal of the Department of Letters, University of Clacutta; 30 : 1-156.

——— & Shanti Bhikshu Shastri. 1956. **Caryaagiitikosa,** Shantiniketan: Vlshwabharati.

Berman, H. 1972. 'Subordinate Clauses in Yurok: A Preliminary Report,' In P. Peranteau et al, eds. 256-61.

Census of India. 1961. Vol. V, pt 2a : Tables. New Delhi : Government of India.

Dasgupta, Probal, 1979. 'Modern Bangla Yes/No questions, Complement Clauses, and Relative Clauses: Their Syntactic and Their Semantic Interpr etation,' Ms. New York University.

Givon, Talmy. 1975. 'Promotion, Accessibility and Case Marking: Towards Understanding Grammars,' **Working Papers on Language Universals** 19: 55–125.

Keenan, E.L. & B. Comrie. 1977. 'Noun Phrase Accessibility and Universal Grammar', **Liuguistic Inquiry** 8:1 63–99.

Morgan, J.L. 1972. 'Some Aspects of Relative Clauses in English and Albanian', **In** P. Peranteau et al, eds. 63–72.

Mukherji, Tarapada. 1963. **The Old Bengali Language and Text,** Calcutta: University of Calcutta.

Peranteau, P. et. al. eds. 1972. **The Chicago Which Hunt: Papers from the Relative Clause Festival,** Chicago: Chicago Linguistic Society.

Sachdeva, Vipla. 1977. 'Relativization in Tankhul Naga', M.A. dissertation, University of Delhi.

Sen, Nilratan. 1973. **Early Eastern NIA Versification,** Simla: Indian Institute of Advanced Study.

Sen, Sukumar. 1948. 'Old Bengali Texts', **Indian Linguistics,** III, Repr. in 1965. Vol. 9: 61–133.

Shahidullah, Md. 1940. 'Buddhist Mystic Songs' **The Dacca University Studies,** 4.2.

Shastri, Haraprasad. 1916. **Haajaar Bacharer Puraano Baangaalaa BhaaSaae Baubdhagaan o Dohaa,** Calcutta:Bangiya Sahitya Parishad.

Singh, Udaya Narayana. 1979. **Some Aspects of Maithili Syntax: A Transformational–Generative Approach.** Ph.D. Disseration, University of Delhi.

———. 1979. 'Agreement Rule, Language Universals and Maithili,'. **South Asian Languages Analysis**: I, 107–114.

———& S.K. Bandyopadhyay. 1978. 'Some Aspects of Interrogation in Bengali, Assamese and Maithili', **Papers in Linguistic Analysis,** II: 19–34.

॥ ক্রোড়পত্র ॥

নির্বাচিত

মৈথিলী কবিতা

ভূমিকা : অনুবাদ : কবি-পরিচিতি

উদয় নারায়ণ সিংহ

ভূমিকা

১৯৮৮ সালে কবি-বন্ধু অগ্রজ-প্রতিম অলোকরঞ্জন দাশগুপ্ত কলকাতায় সাহিত্য অকাদেমির হয়ে সাতটি ভাষার কবি-সাহিত্যিক এবং অনুবাদকদের নিয়ে কয়েক সপ্তাহের একটি অনুবাদ কার্যশালার পরিচালনা করেন। সে-বছরই আমি হায়দ্রাবাদ কেন্দ্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়ে জাতীয় স্তরে একটা অনুবাদ-বিদ্যা কেন্দ্র গড়ে তোলার চেষ্টা করছিলাম—যে জন্য ১৯৮৭-তেই দিল্লী বিশ্ববিদ্যালয় ছেড়ে আসতে হয়েছিলো। এই সময়ে এমন কার্যশালার কার্যকারিতার বিষয়ে বেশি কিছু বলা প্রয়োজন মনে করি না। তবে এই দীর্ঘ অনুবাদ-কর্মের তত্ত্বাবধায়ক হিসেবে আমরা যে-কজন অনুবাদ-বিশেষজ্ঞ জড়ো হয়েছিলাম তাঁদের সঙ্গে ছিলেন নবীন ও প্রবীণ বহু কবি যাঁরা অনুবাদে আগ্রহী কিন্তু যাঁরা কখনো এর আগে এই দুরূহ কর্মে হাত দেন নি। মনে পড়ে গোড়াতেই অলোকরঞ্জন ও সহ-পরিচালক অধ্যাপক জগন্নাথ চক্রবর্তী দুজনেই একটা কথার ওপর জোর দেন—অনুবাদ তত্ত্ব আসবে, জাগবে প্রকৃত অনুবাদ-কর্মের মধ্যে দিয়েই—অলোকরঞ্জনের প্রারম্ভিক বক্তৃতার শীর্ষক ছিল 'Translation : Practice creates theory'।

আজ এতোদিন পরে যখন আরো বহু বহু অনুবাদ কার্যশালা হয়ে গেছে, যখন অকাদেমি ছাড়াও আরো অনেক সংস্থাই এদিকে দিয়েছেন বিশেষ মনোযোগ, যখন শ'য়ে শ'য়ে (কিংবা হাজারে হাজারে) অনুবাদ-কর্ম প্রকাশিত হচ্ছে ভারতীয় ভাষাগুলিতে অথবা ভারতীয় ভাষা থেকে পশ্চিমা ভাষায়—তখন এই সহজ সত্যটির গুরুত্ব মনে পড়ে যাচ্ছে বারবার। বস্তুতঃ ১৯৮৪-তে যখন অকাদেমি প্রথম অনুবাদ কার্যশালা পরিচালনা করেছিলো তখন ভাষাতাত্ত্বিক এবং আমাদের বিভাগেরই অধ্যাপক রবীন্দ্রনাথ শ্রীবাস্তব এতে তত্ত্বের ভাগে দিয়েছিলেন বেশি জোর যাতে আয়াপ্পা পাণিক্কর ও অন্যান্যেরা পরিবর্তন আনেন পরে। কাজেই ১৯৯৩-৯৪এ যখন মৈথিলী ভাষার কোনো একটি বিধা নিয়ে অনুবাদ কার্যশালা করার কথা উঠলো তখন যে তত্ত্বের চেয়ে প্রায়োগিক দিকের ওপরেই বেশি জোর দেয়া হবে সেটা ধরেই নেয়া হয়েছিলো। তার আগেই 'শব্দ-সেতু'র নিরীক্ষায় গিরিধর রাঠী ও 'Survival'-এ ড্যানিয়েল উইসবর্ফ ও হরীশ ত্রিবেদী

একটা কাঠামো গড়ে তুলেছিলেন তত্ত্বের ও প্রয়োগের ভারসাম্যের—এটাকে আরো গুরুত্বপূর্ণ বলবো কারণ এখানে অনুবাদকদের বদলে অথবা তাঁদের সঙ্গেই অধিকতর গুরুত্ব প্রাধিকার দিয়ে নিয়ে আসা হলো লক্ষ্য-ভাষার সংবেদনশীল কবিদের। কবিরা কবিদের মুখোমুখি বুঝলেন স্রোত-ভাষী রচয়িতার শব্দ, কথা, চালচিত্র এবং গড়ে তুললেন শব্দ দিয়ে সেতু দশখানি।

আমি যখন প্রথমে কার্যশালার পরিকল্পনা করি তখন আর একটা বাসনা মনে মনে দিচ্ছিলো উঁকি। কার্যশালাকে ব্যবহার করবো একটা হাতিয়ারের মতো, সিদ্ধ করবো বহু পুরোনো যত্নে লালিত ইচ্ছা—এই সুযোগে অন্ততঃ দুটি, নিদেনপক্ষে—আর যদি সম্ভব হয় তিনটি ভাষায় পৌঁছে দেবো সাম্প্রতিক কালের মৈথিলী কবিতাকে। এটা তখনি সম্ভব যখন কার্যশালার প্রতিভাগী কবিদের মধ্যে চয়ন এমন হবে যাতে বিভিন্ন প্রজন্মের কবিরা থাকবেন—যাঁরা শুধু নিজেদের কবিতা নয়, সমসময়ের বা এক দশকের অথবা একই আন্দোলনের সহভাগী অন্য কবিদের কবিতার ব্যাখ্যা করতে পারবেন লক্ষ্য ভাষার কবিদের কাছে। এও আবশ্যক ছিলো যে অন্ততঃ ৫০ কি ৫৫টি কবিতা বাছা হবে যেখানে সমসময়ই প্রাধিকার পাবে, কবির সামগ্রিক যোগদান মাত্র নয়। যেসব কবি বয়সে ষাট সত্তরের (কিংবা আশীর) কোঠায় তাঁদেরও এমন কবিতাই নেয়া হবে যা প্রকাশিত হয়েছে গত তিন দশকে ও যাতে গঠনে বাচনে বিষয়ে বৈচিত্রে অধুনাত্মতা (বোঝাই যাচ্ছে 'আধুনিকতা' কথাটিকে এড়িয়ে যাচ্ছি) রয়েছে। এতে একটা মুস্কিল হলো কিছু কবি—অবশ্যই আমার পঠনে-পাঠনে—বাদ পড়ে যান যাঁরা মৈথিলী সাহিত্যের ইতিহাসে অত্যন্ত মহত্বপূর্ণ (যেমন আরসী প্রসাদ সিংহ বা কাঞ্চীনাথ ঝা 'কিরণ') অথচ এমন কবিও চলে আসেন (যেমন সুরেন্দ্র ঝা 'সুমন') যাঁদের রচনাশৈলী তুলনামূলকভাবে শাস্ত্রীয় কিন্তু যাঁরা বেশ কিছু কবিতা এমন লিখেছেন ও এমন ভাবে লিখেছেন যা যে কোনো দিক থেকে তথাকথিত আধুনিক বহু কবির সঙ্গেই পাল্লা দিতে পারেন। এক্ষেত্রে অবশ্যই যাত্রী কিংবা রাজকমল চৌধুরী যাঁদেরকে আধুনিক মৈথিলী কবিতার পুরোধা বলা যাবে—কিংবা রামকৃষ্ণ ঝা 'কিসুনে'র মতো বয়োবৃদ্ধ কবিরা—এঁরা নিজেদের রচনার ধর্মেই স্থান ক'রে নেবেন—একথা বলাই বাহুল্য। বেশ কিছু মধ্যবয়স্ক কবি-বন্ধুও (যেমন বিলট পাসওয়ান 'বিহঙ্গম' বা ফজলুর রহমান হাশমী) বাদ পড়ে গেছেন কারণ হয় তাঁরা এখনো গীত-গজলের পরম্পরাতেই আছেন আবদ্ধ হয়ে অথবা আমার মতে এমন রচনা পাওয়া কঠিন হয়ে যায় যেগুলি

বাংলা, তেলুগু বা ইংরেজী ভাষার কবিতা-পাঠকদের কাছে হবে আবেদনজনক। একথা বোধ হয় অনুবাদ তত্ত্বের এই বিস্ফোরণের যুগে মনে করিয়ে দেয়া বাতুলতা হবে না যে, যে কোনো ভাষারই অনেক মহান কবিতাই অন্য ভাষায় বা বিশেষ বিশেষ লক্ষ্য-ভাষায় অনুবাদের ব্যাখ্যাতীত রসায়নে হয়ে পড়ে খুবই সাধারণ মানের—সেক্ষেত্রে এমন কবিদের অন্তর্ভুক্ত ক'রে অন্যায় করা হবে।

সেবারে শেষমেষ জনা ৪০শেক কবির ৫৫টি কবিতা নেয়া হলো—তবে শেষমেষ দুচারটে কবিতা হলো পাল্টানো—কিছু নতুন কবিতা যোগ করা হলো, যেমন ধূমকেতুর কবিতা (আমি ও'কে গল্পকার ঔপন্যাসিক হিসেবেই বেশি সশক্ত মনে করি)—কিংবা এমন বহু কবিকে নেয়া হলো যাঁদের কাব্যজগতে প্রবেশ একেবারে হালের ঘটনা অথচ এসেই যাঁরা নজর কেড়ে নিয়েছেন কাব্য-গুণে। কোনো কোনো কবির একাধিক কবিতা নেয়া হয়েছে—কখনোই সম্ভব ছিলো না যে সাত দিনের কার্যশালায় সবারই দুটি বা তিনটি ক'রে কবিতা নেয়া হবে—বিশেষ ক'রে কবিদের সংখ্যা যখন এতো বেশি। তবে অনেক সময়ে দুটি কবিতা নেয়া হয়েছে কবির একাধিক শৈলীর প্রতিনিধি রূপে, কখনো কবির কবিশক্তির প্রতি যাথার্থ্য করার জন্য—যা যাত্রী, রাজকমলের প্রতি যেমন প্রযোজ্য, তরুণতম প্রজন্মের কেদার কাননের বেলাতেও তাই। অনেকের দীর্ঘ কবিতা নেয়া হয়েছে ব'লে দুটি নেয়া হয়নি—তাও দেখা যাবে। সঙ্গত কারণেই যে কবিতা বাংলায় অনুবাদে আসবে ফুটে হয় মূলের মাটির গন্ধ ও শব্দের রঙ নিয়ে অথবা বাংলায় এসে পাবে এক বিরল সুষমা তা হয়তো ইংরেজিতে ধোপেই টি'কবে না। এজন্যে যখন কার্যশালার শেষে সম্পাদন ও পরিপূরণের (বকেয়া অনুবাদ ক'রে দিয়ে গ্রন্থটিকে পূর্ণাঙ্গ করা) ভার আমার ওপরেই পড়লো, তখন ঠিক করলাম সর্বপ্রথম বাংলাতেই অনুবাদের পাণ্ডুলিপি তৈরী করবো যাতে অনুবাদের মান ও সমতা দুইই বজায় থাকে। পরের খেপে ইংরেজীতে হাত দেয়া সহজ হবে এতে।

কার্যশালার অভিন্ন অঙ্গ হিসেবে মৈথিলী থেকে বাংলা এবং মৈথিলী থেকে তেলুগুতে অনুবাদের ক্ষেত্রে যে প্রত্যক্ষ মুখোমুখি অনুবাদের পদ্ধতি নেয়া হয়েছিলো যার ফলে অনুবাদের মান হলো উচ্চ—সেই একই কারণে সব ক'টি কবিতার অনুবাদ শেষ করা সম্ভব হয়নি। বাংলায় প্রায় ৩০-৩১টি এবং তেলুগুতে ১৫-১৬টি কবিতার অনুবাদ সম্ভব হয়েছিলো প্রাথমিক সংশোধনের পর। বাংলাতে দুজন কবি ছিলেন জড়িত, তেলুগুতে একজন মাত্র। সেই

তুলনায় ইংরাজীতে ৫৫টির মধ্যে প্রায় ৫০-৫১টির অনুবাদ করে ফেলেন পাঁচ-ছয় জন অনুবাদক মিলে—যাঁরা সবাই মূলতঃ ভাষা-কর্মী বা অনুবাদকই। তবে বলাই বাহুল্য, মৈথিলী (বা কোনো ভারতীয় ভাষা) থেকে ইংরেজীর দূরত্বের জন্যই বটে—তবে অনেকাংশে কবিদের করা কবিদের মুখে কবিদের বোঝার যে সুবিধা বাংলা ও তেলুগুতে সম্ভব ছিলো, তা এই ইংরেজীতে অনুবাদকদের পক্ষে ছিলো অসম্ভব। দুজন মৈথিলী কবি—গোবিন্দ ঝা ও রমানন্দ রেণু, দুজনেই ভাষাশাস্ত্রী ও কোশবিদও বটে—যাঁদের মধ্যে প্রথম জন ছিলেন আমাদের স্রোত-মনীষীও—ইংরেজী অনুবাদকদের সাহায্য করতে এগিয়ে এলেন ইংরেজী অনুবাদের জন্য একটা cultural glossary বা 'সাংস্কৃতিক টীকা' রচনার ভার তুলে নিয়ে। অন্য স্রোত-শাস্ত্রী, যাদবপুরের তুলনামূলক সাহিত্যতত্ত্বের অধ্যাপিকা শুভা চক্রবর্তী-দাশগুপ্ত বরাবরই ইংরেজী অনুবাদ গোষ্ঠীর কাজের সঞ্চালনেই নিজেকে ব্যস্ত রেখেছিলেন। ফলে, সেভাবে দেখতে গেলে বাংলা অনুবাদের চেয়ে ইংরাজীর প্রস্তুতি সহজতর হওয়া উচিত ছিলো। কিন্তু বাস্তবে যাঁরাই ভারতীয় ভাষাসমূহের মধ্যে এবং ভারতীয় ভাষা থেকে ইংরেজী—এই দুই ধরনের ভাষা-যুগ্ম নিয়েই অনুবাদের অভিজ্ঞতা-লব্ধ তাঁরা সহজেই বুঝবেন ও বলবেনও যে ভারতীয় ভাষাসমূহের মধ্যে (তা ভিন্ন ভাষা-পরিবারের ভাষা হোক না কেন) অনুবাদের যে স্বাচ্ছন্দ্য সহজলভ্য সহজে প্রাপ্তব্য তা ইংরেজীতে পাওয়া অসম্ভব না-হোক অত্যন্ত দুরূহ। দুটি পাণ্ডুলিপি নিয়ে একই সঙ্গে ঘাঁটাঘাঁটি করতে গিয়ে আমি তা হাড়ে-হাড়ে বুঝেছি।

তবে অনুরাধা মহাপাত্র ও তাঁর পরের প্রজন্মের কবি দিলীপ বন্দ্যোপাধ্যায়—দুজনেই আমার অতি প্রিয় কবি এবং তাঁদের ওপর ভরসা করতে পারা গেছিলো ব'লে যে ক'টি অনুবাদ তাঁরা করতে পেরেছেন সেগুলিতে অল্প-স্বল্প রদবদল (যা স্বাভাবিক সম্পাদকীয় অধিকারের আওতায় পড়ে) ছাড়া খুব কম কবিতাই এমন পেলাম যাতে বেশ বড়ো ধরনের পরিবর্তন করা দরকার ছিলো। অনুরাধার বেলায় এমন কবিতার সংখ্যা ছিলো দুই থেকে আড়াই, দিলীপের দুটি। একটি কবিতায় এতো বেশি পরিবর্তন করতে হয়েছে যে অনুরাধার সঙ্গে যুগ্মভাবে আমার নামটা জুড়ে দিয়েছি। তবে পরিবর্তনগুলি করা হয়েছে সম্পাদকের টেবিলে, কলকাতায় কার্যশালায় নয়।

কিন্তু যা ছিলো সবচেয়ে কঠিন কাজ তা হলো বাকি ২১-২২টি কবিতার অনুবাদ করার ভার আমাকে এতোদিনের পরে নিজেরই কাঁধে তুলে নিতে হলো।

কাজটা হয়তো ডাকযোগে বা কখনো পরে কলকাতায় দীর্ঘতর বাসের সময়ে ওই দুজন কবিকে ডেকে করানো যেতো তবে তাতে যতোটা পরিশ্রম ও সময় কিংবা অর্থব্যয় হতো তার চেয়ে সহজ ছিলো চ্যালেঞ্জটা নিজেরই কাঁধে তুলে নেয়া। এতে সমতা ও মানের একরূপতাও অনেকাংশে বজায় রাখা সম্ভব হয়েছে। 'জনপদপ্রয়াসী'-এর বর্তমান সংখ্যার এই ক্রোড়পত্রে এইসব কবিতাগুলিই স্থান পেয়েছে।

এই ভূমিকা লিখতে গিয়ে একবার মনে হয়েছিলো মৈথিলী কবিতার একটা পরিচয় দিলে ভালো হয়—কারণ বাঙালী পাঠকের কাছে মৈথিলী মানেই বিদ্যাপতি ও পদাবলী সাহিত্য। মাঝে রয়েছেন ঊনবিংশ শতকের বিদ্যাপতি —যাঁকে ভানুসিংহ বলে জানি ও যাঁর কলমের ভাঁজে রবীন্দ্রনাথকে স্পষ্ট চেনা যায়। এর বাইরে সাম্প্রতিক কালে মৈথিলী ভাষায় কেউ কথা বলেন কি না, বললেও তাতে পর্যাপ্ত সাহিত্য-রচনা হয় কিনা, হলেও কবিতা বিধা হিসেবে কোথায় দাঁড়িয়ে ও সবশেষে বাংলা, অর্থাৎ কিনা কবি ও কবিতার ভীড়ে প্লাবিত বাংলার তুলনায় মৈথিলী কবিতা কদ্দুর কেমন—এসব বিষয়ে বাঙালী পাঠকের একটা ধোঁয়া ধোঁয়া ধারণা আছে। আমার পরের প্রতিক্রিয়া হলো কবিতার পরিচয় ইতিহাস নয়, কবিতাই হতে পারে। অতএব, এই গুচ্ছে আকলিত কবিতাগুলি, অথবা তাদের কিছু কবিতাও যদি বাংলাভাষী কবিতাপ্রেমী পাঠকের নজর কাড়তে পারে—যা আমি নিজে বাংলার প্রাবন্ধিক সমালোচক হিসেবে জোর দিয়ে বলতে পারি, নজর কেড়ে নেয়ার মতো বেশ কিছু তরুণ কবি আছেন এই পূর্ণতর সংকলনে, কথা বলবে তাঁদের হয়ে তাঁদের শব্দের স্বাক্ষর, তাহলেই আমি মনে করবো মৈথিলী কবিতা নিয়ে কটা কথা এমনিতেই বলা হয়ে গেলো। তবে যদি কেউ তেমনই উৎসাহী হন এবং শাস্ত্রীয় ধাঁচে লেখা সাহিত্যের ইতিহাস পড়তে ভালোওবাসেন তো খুব শিগ্গির অকাদেমি থেকে আমার করা বাংলা অনুবাদে জয়কান্ত মিশ্রের 'মৈথিলী সাহিত্যের ইতিহাস' বেরুচ্ছে—সেটা একটা ভালো সন্দর্ভ শুরু করার পক্ষে। তবে সেখানে দেখা যাবে তরুণতম কবি বলতে আমার (নচিকেতা) আমাদেরই মতো দু-একজন— বাদে এই সংকলনে চয়িত অধিকাংশ কবিই বাদ পড়বেন। মৈথিলীতে অকাদেমির মোহন ভারদ্বাজ ও ভীমনাথ ঝায়ের সম্পাদনায় 'সমকালীন মৈথিলী কবিতা' (যেখানেও শেষ পর্যায়ে আছি আমরা ক'জন) ছাড়া আনন্দ মিশ্র ও গোপেশের

সম্পাদনায় 'পরম্পরা এবং আধুনিক কবিতা', রমানন্দ ঝা 'রমণ'এর ১৯৮২-এর 'নবীন মৈথিলী কবিতা' ও ১৯৯৩-এর 'মৈথিলী নব কবিতা' প্রভৃতি আরো বেশ কটি গ্রন্থ আছে—যা থেকে মৈথিলীতে কবিতা রচনার গতি-প্রকৃতি জানা যাবে।

তাহলে আসুন পাঠক, দেখি কিভাবে কবিতারা নিজেদের কথা নিজেরাই বলে।

হ্যাঁ, ওই এলো বরষা

যাত্রী

প্রতীক্ষায় কেটে গেলো কত না প্রহর
প্রতীক্ষায় চুঁইয়েছি কয়ঘড়া ঘাম
প্রতীক্ষায় স্তব্ধ সব রয়েছে গাছের পাতা-পাতা,
বাতাসের হিহি-শিস্ গেলো না শোনা
প্রতীক্ষায় সূর্য রয়ে যায় ঢাকা তোলা
না-জানি মেঘের আড়ে কতো কতো কাল
প্রতীক্ষায় শুনেছে গালি বড়ো বেশি আষাঢ়ের মাস
হ্যাঁ, ওই এলো ঋজু বরিষণ
হ্যাঁ, ওই বুঝি ভেজে সংসার
হ্যাঁ, এবার হাল্কা হলো মন
হ্যাঁ, এবার উঠেছে সূর্য
এবার গিয়েছে দেখা পাখি-পাখালি
বীজ হবে অংকুর, নয়নাভিরাম, প্রতীক্ষা সুফল দেবে তাকে
খেত ও খামার হবে সবুজ ও জুড়াবেও ধরণীর প্রাণ
কদম ফুলের গাছ গায়ে দেবে হলুদের ফুলেল ঝালর
ঠিক-ঠাক করবেই ভগত-ঠাকুর রাজা সলেসের পূজনের বেদী
ঘাস-পুস ছুলে-ছেঁটে নিকিয়ে ফেলবে আঙিনাকে
ভরে যাবে পুষ্করিণী টইটম্বুর জলে ছড়াবেই লাল
কুমুদিনীর পাতাও…
ভরদিন সারাদিন ভিজবে মানুষ
পুরোপুরো দিন ধরে ধান বোনা চালাবে মানুষ
আলে বসে জম্পেশ দুপুরের ভাত খাবে লোক
আশার দোলনে দুলে না জানি কি ভাববে মানুষ
কল্পনার স্বর্গ হতে স্বর্গ চলে বেড়াবে মানুষ

বিশ্লেষণ

রামকৃষ্ণ ঝা 'কিসনু'

এই নবীন স্বর
রেখেছো সামনে যার
জটিল যথার্থ দিয়ে গড়ে তোলা
প্রশ্নের পাহাড়
কিভাবে কিভাবে বলো
দিতে পারে দিয়েছে উত্তর ?
এইসব নির্ণয়ের অসন্দিগ্ধ পৃথিবীর পর !
যার আছে জানা
ঘোষণার দলিলটাও জাল
শান্তি
প্রেম
সমাজবাদ
মুক্তির উদ্‌ঘোষ
আরো শব্দ বহু হয়ে গেছে শূন্যগর্ভ খালি
কারখানায় গড়া সমাধান গেছে মিথ্যা হয়ে
দুরভিসন্ধির জীর্ণ-জরা
মূল্যবান মৃত্যু গেছে মারা
কোকনলে উঠছে জ্বলে ঘুণধরা পুরনো প্রমাণ
তাই যুগ করে চলে
নতুন মূল্যের তাজা অনুসন্ধান ।

এ নবীন স্বর
সামনে রয়েছে যার
ক্লীব-কালের এই বৃদ্ধ জর্জর
নপুংস আক্রোশ আর
দিশাশূন্য বিকরণ
নিয়োজিত শুদ্ধ বিরোধ

বিধবা মান্যতার
পচা গলিত আদর্শ তার
কুৎসিত অসুস্থ বিদ্রোহ
সমস্ত পরিবেশে যেন উচ্ছৃঙ্খল ক্রোধ কোনো
বিসংগতি আর অবরোধ
কিন্তু এবার জন্মাবে জেনো
জ্যোতি-জনের পৌরুষ—তার দায়িত্ব-বোধ।

এ নবীন স্বর
যে মানবে না
চায়না মানতে জানতে কোনো
আঁধারের অনুবন্ধন ;
দেয়নি কোথাও বাঁধা
নিজেদের মন
পেয়েছে প্রচুর যে
স্বাধীন মুক্ত ক্ষণ
নগ্ন বর্তমান তার সব সম্বোধন
আধুনিক চেতনার সমগ্র স্পন্দন
দেশ ও সমাজ হতে
জীবনের যথার্থ্য
যার আছে প্রতিজ্ঞা শ্রুতি কথা দেয়া
নিজের অস্মিতায় যে আছে সম্পৃক্ত জেনো
নির্ভয় সেও কটিবদ্ধ।

কষ্ট

ধূমকেতু

সমানে গুনে-ধুনে যাওয়া
গিঁটের পরে পড়ে গিঁট
শুদ্ধ নগ্ন ও প্রত্ন রূপে তুমি কে
যাকে আমি 'হেম' বলে থাকি ?
যেই হও নিশ্চিত নও তুমি বুঝি
কেমন ক্রূর হলো বীভৎস ফাঁকি
আলোকের ছোঁয়াতেই প্রতিমা মিলিয়ে গিয়েছে
ঠিকরাল বোধ করে ধূমকেতু তাই
শতকোটি ধূ ধূ করা মরাকাঠী হাতে
চিতাতে আগুন দিতে ঘুরে-ঘুরে দেখে
বাকী আছে কে বা ?

গিঁটের ওপর পড়ে গিঁট…
                তাও খুলে যায় বন্ধন
সেলাইয়ের ওপর সেলাই
                তাও খুলে গিয়েছে সেবন
ভাঁজে-ভাঁজে কুঁকড়েছে খুলেছে সেলাই
জাতি বংশ ও জনয়িতাদেরও
                ভাই-বোন সব ভুলে গেছে
ধান-ক্ষেত পাড়া-টোল
ঈর্ষা-দ্বেষের ভয় হর শোক জয় জয়
হিতে-মিতে প্রীতি-রীতে
                আতপ বর্ষা শীত বসন্তেরও
টেনি গিঁট বাঁধা গাঠ জনমেরও
                খুলে গিয়েছেই
সত্যবানের গিঁট শ্বেত প্রাণ-কণ
                যমের ফাঁসের থেকে মুক্তি পেয়েছে

অগণনীতি পড়ে থাকা অস্তিত্বে কোনো
কোণে-কোণে তলে-তলে হাপুস কেঁদেছে
শূন্যকে চিরে কেন অনাবৃত চীখ চিৎকার
একি নির্জন নির্বনে তুঙ্গ পাহাড় গিরি-কন্দরে
ফিরে পাওয়া কণ্ঠে গোঙানো আক্রোশ ?

সে কি তুমিই ?

কীর্তি নারায়ণ মিশ্র

চন্দ্রাগিরি থেকে মহেন্দ্রগিরির পথে পায়ে হাঁটতে গিয়ে
তোমাকে ছেড়ে আর তো কেউ ছিলো নাকো সাথে
আদিবাসীদের দুলকি
আর তিব্বতী শরণার্থীদের সাইকেলের টুনটুন ছেড়ে দিলে
আর তো কিছু করেনি শান্তি-ভঙ্গ

তুমি কখনো অবোধ শিশু
কখনো অন্তরঙ্গ মিত্র
কভু অভিজ্ঞ অভিভাবকের মতো
আমাকে চলতে
মুগ্ধ হতে
প্রত্যেক পদে নিজেকে লুটাতে দেখে
কই একবারও তো বললে না—
বাপু হে, সমস্ত পর্বত প্রদেশই তো এমন
নিজের হৃদয় কোথায় কোথায় হারাবে
সৌন্দর্যের এই উপত্যকায়
কজন সুন্দরীকে দেবে ডাক ?

না-জানি কখন তুমি
আমাকে নিয়েছো বেঁধে

নিজের দাড়িতে
তারপর হামাগুড়ি দিতে
উঠে পড়ে চলতে গিয়ে
মন-ভরে দৌড়তে গিয়ে
শক্তি-ভর উড়ে উঠে গিয়ে
সমস্ত গিরি-প্রান্তর গেছি ছাড়িয়ে
ওই যে 'পঞ্চাম' মোড়ে
দাঁড়িয়ে সে তিব্বতী বালিকা
(ছেব্বা, টসী, টে'সী)
সে কী তুমিই ছিলে ?

ওই জাপানী মঠ, বৌদ্ধ মঠাধীশ
(ৎসোরু মনি) দিয়েছিলো
অজ্ঞাত শিখরে যেতে আশীর্বাদ
দু হাত জড়ো করে
সে কী তুমিই ছিলে ?

ওই যে নিভৃতে একান্তে বসে
রাস্তার জঙ্গলে
দেশলাই ঠেসে চলে
আদিবাসী কন্যা
(ডামোনী, কুনি, কস্তুরী, শুবা)
সে কী তুমিই ছিলে ?

ওই যে হাজার-হাজার ফিট নিচ থেকে
জল টেনে পাহাড়ী 'টেরেস'কে
কৃষির যোগ্য ক'রে তুলছিলো উৎকলপুত্রী
(বসন্তী, রাধা, যমুনা)
সেও কী তুমিই ছিলে ?

ওই যে লোহাগড়ী, চন্দ্রীপুট, লবরসিংহীর ঘাটীতে
'সলহু' আর 'মহলী'র নেশায়
বন্ধুর বাঁধন থেকে নিজেকে ছাড়াচ্ছে এমন
আদিবাসী যুবককে দেখি
সেও কী তুমিই ছিলে ?

ওই যে 'তপ্তপানী'র গরম কুণ্ডে চান করা
'কন্ধুনী'-মার জলমগ্ন পাথরের 'পরে মাথা ঠেকানোর জন্য
বার বার অনুরোধ করছিলেন বুড়ো-মানুষ
সে কী তুমিই ছিলে ?

তুমি বলো অথবা না বলো
আমি কি করে ভুলি
মনে ক'রে বলেছিলে কতো কথা
বুঝিয়ে দিয়েছিলে
নিজের ইশারায়
কতো-না রহস্য অজানা

আমি কি ভুলতে পারি
গাছে-গাছে ঘেরা কতো শিখর পাহাড়
নিজের সপ্তাশ্ব রথ থেকে নেমে এসে
নতুন বরণ-করা বরের মতোন
কিভাবে থেমে-থেমে পা বাড়াচ্ছিলেন
নিজের এ শ্বশুরবনখণ্ডে
এক লজ্জারুণ সূর্য রবিদেব !

ভুলবো কী পাখিদের মঙ্গল গীতি
কিভাবে ভুলতে পারি চঞ্চল চড়াইয়ের
বরপক্ষকে দেখে অব্যাহত পালি গানখানি

কি করে ভুলতে পারি ঘোমটার তলে কতো
সুন্দর লাগছিলো ঋতু সুকুমারী

আমি তো কিছুই ভুলবো না বঁধু
ভুলবো না কখনো কিছুই

এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো

কুলানন্দ মিশ্র

এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো
যেমন জংলী ফুলের থেকে টপ-টপ করে ঝরে পড়া হিম
তোমার সতী দেহ
আমার ঘা-খাওয়া পৌরুষ
গ্রাম-ঘরের ওপর ধীরে ধীরে ছেয়ে যাওয়া সান্ধ্য-রাগ
নামছে যে রাত্তির, তারই চিন্তায়
বটগাছের তলায়
পরপর দাঁড় করানো গোরুর গাড়ির লাইন
নিভন্ত উনোন থেকে উঠে আসা ধোঁয়া
এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো

যেমন
আমার থেকে পৃথক্ আমারই চেতনা
ভাঙাচোরা স্বপ্নের মতো
আমাদের খণ্ডিত একাকীত্ব
রোদ্দুরে হাঁপায় কুকুর
ল্যাংড়া আমের গাছতলায় পাথর ছোঁড়া ছেলের দল
নির্বাচনের বুথের দিকে লাফিয়ে আসা গণতন্ত্রী মানুষের ভীড়
ব্রেথ্‌তের ভাড়াটেদের যুদ্ধ-বিরোধী মিছিল

এটমী লিপিতে লেখা শান্তির প্রস্তাব
এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো

যেমন বরষায় কাদা-কাদা বাঁশ-বাগান
ছাদ থেকে ঝরে পড়া চাঁদীর স্রোত
নাভির কাছে বিঁধছে এমন কাঁটা
কারো নাম নিচ্ছি আমি আর ডুব মারছে পায়রা পাখি
সারা দিনের রোজগার-উদাসতা
সারা রাতের নিশ্চিন্ততা-পিপাসা
গ্রাম থেকে তাজমহলের দূরত্ব
যুদ্ধে যাওয়ার আগে তরোয়াল ওঠানোর বিবশতা
কিছু করবো কি করবো না এ নিয়ে আটকে থাকা নির্ণয়
যে হাত বাড়ছে তাতে ঠাঁই পায় শঙ্কার লাঠি
গলার কাপড় থেকে ফাঁসির দড়িতে উত্তরণ
ভাঙা চবুতরা
ধ্বসে পড়া ঘর
এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো

যেমন
ভাদ্রমাসের আঁধার রাতে হাতুড়ি মারছে এমন কাঁপানো শরীর
অন্ধকার গুজগুজে কুঠুরীতে নড়ে কাঠি শরীরের পার
শাশ্বত অলসতা ছেড়ে ওঠা রাজকীয় দেহ
বাদ্যযন্ত্র-পেটা মেঘের গরজে ওঠা রাক্ষসী দেহ
করতল মুখের আস্বাদে রাগ রঞ্জিত মুখ-মুদ্রা
দুই কাঁধে ভার তুলে শ্রমে ঘামে রঞ্জিত মুখ-মুদ্রা
দুহাতে মেগেছি ভীখ গ্লানি-রঞ্জিত মুখ-মুদ্রা
ভুলে যাওয়া নির্মোহীর দিকে অপলক সজল দৃষ্টি
চির-রোগী প্রিয়তমের এলিয়ে পড়া দৃষ্টি
ভোগ্যবস্তুর দিকে সহজ হিংস্র ভাবে বেঁধানো এ দৃষ্টি
সহজ দীনভাবে পায়ে প'ড়ে থাকাটার অবিচল দৃষ্টি

ফুঁসে-ওঠা জোয়ারের হৃদয়-বিদারী এই অট্টহাসখানি
ভেসে যাওয়া দড়ি ছেঁড়া নৌকোর করুণ কাহিনী
এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো

যেমন
হাট থেকে ফিরে আসা চাষী
দালানবাড়িতে ব'সে তাস পেটা গেরস্ত লোক
রান্নাঘরের চাতালে শুয়ে আড়মোড়া ভাঙছে এমন ঝি
কোণের ঘরে বড়ি দেয় বড়ো বউ একা
ইস্কুল থেকে দৌড়ে বাড়ি ফিরছে অাবছা কোনো শিশু
বস্তা নিয়ে পিছু হটছে হঠাৎ কোনো শিশু
গাড়ি চালিয়ে গুন-গুন ক'রে গাইছে কেউ গীত
ধান-পোঁতা করতে গিয়ে ঝুলে ঝুলে গাইছে কোনো গীত
কারখানার ভেঁপুর সঙ্গে সঙ্গে বাইরে বেরিয়ে আসা জনসমুদ্র
সময়ের কুরূপতা নিয়ে তর্জন-গর্জন করছেন এমন প্রবন্ধ
দরোজার ওপর সেলাম ঠুকছে এমন নিমগাছ
পিছনের বাগানে পাহারা দেয় আনারের গাছ
এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো।

যেমন
গোরুর গাড়ির ঘণ্টা শুনে ছিঁড়ে যাওয়া রাত্রির শান্তি
মন্দিরে পাশ ফেরে দেবতার সাথে এক দৈবী শান্তি
পুরোহিতের চেহারায় জ্বলজ্বল কপট এ-কান্তি
জজমানের চেহারায় ছড়িয়েছে করুণ অশান্তি
মিসিবাবার গায়ে চড়া ম্যাক্সীর প্রকৃত গোল মাপ
রমুয়ার মেয়ের গায়ে যে শাড়ীর নামে ন্যাতা ঝোলে তার দীর্ঘতা
বাড়ি থেকে হাটে যাওয়া বৌঝির নখরা
পথপাশে বাঁদর-নাচিয়ে মাদারীর লাফড়া
সন্ধ্যে থেকে নামতা-পড়া শিশুদের কম্পিত স্বর
থেকে থেকে আসছে আর দূরে যাচ্ছে এমন কোনো স্বর

বর্ষার রাত জুড়ে ঝিঁঝির অকারণ প্রলাপ
নিভৃতে একান্তে সার্থক হয় প্রেমালাপ
এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো।

যেমন
জীবনের কাছে যেতে সংকুচিত এমন কবিতা
ন্যাংটা মানুষের সাথে কথা বলার শরমে কবিতা
সত্যের পাট ছেড়ে অসত্য বলে ফেলে এমন কবিতা
মানুষের মাঝে থেকেও মানুষেরই বিরোধী কবিতা
ভাষার ছদ্মবেশ ছেড়ে আসা নির্বিকার কবিতা
লঘুতাকে পিছে ছেড়ে বিরাট বিশাল হওয়া কবিতা
অচেনা চেহারা থেকে পরিচয়ে উত্তরানো কবিতা
নতুন নতুন দেহে পোষাকে ও পরিধেয়ে স্বীকৃত এই কবিতা
আস্থা দিয়ে তৈরী নব ভূমির ও কামনার কবিতা
নীরব শিথিল রাতে বংশীর তান কবিতায়
নতুন ছাওয়া ঘরে প্রদীপের আলোর প্রকাশ
পরম স্নেহের সাথে চোখ খোলা ভোরের আকাশ
এমনিতে বলার আমার অনেক কিছুই ছিলো।

ঐ দীপমালিকার জন্য

উদয়চন্দ্র ঝা 'বিনোদ'

এ গান তার জন্য নয়
যার কাপড় এখনো শুকোয়
গগন-সুন্দরী
হাল যার চলে স্বর্গেও
এই গান আমার সমর্পিত
ঐ বোবা-কালা মানুষের প্রতি

জাহাজে আটকে পড়া
ঐ মানুষজনের জন্যে
যারা একথা জানে না যে
জাহাজ যাচ্ছে ডুবে।

এই গান ঐ নারীকে
দেবো না কখনো
যে একদিন রাতে
প্রিয়তমের শয্যা ছেড়ে
পালিয়েছে পরদেশী মানুষের সাথে
এই গীত আমার সংবাদ সন্দেশ
জিজ্ঞাসু ঐ দ্রষ্টার জন্য লেখা
জানালায় প্রতীক্ষায় পড়েছে যে ঢুলে
বিলম্বের প্রতি পলে
অসীম বিরক্ত যে।

এই গান আমি মন্দির, মসজিদ অথবা
গীর্জাঘরের নামে চাইনা লিখতে
ভাবনা আজ এমনই ধর্মভীরু
যে মনের শুদ্ধি আজ স্বপ্ন
আর জন্ম হয়না কোনো বুদ্ধের
মসজিদে উঠছে আজান
মার-খাওয়া লোকের গোঙানি
মন্দিরের ঘড়ি-ঘণ্টা যেন
মুখ দিয়ে শব্দ তুলে বাছুরকে ডাকা
অদ্ভুত ব্যাপকতা
ধর্মের ক্ষেত্রে এখন
বিশুদ্ধ অরাজকতাই।

আশ্রমে জন্ম নেয়া এই গানখানি

মুনি-কন্যার সঙ্গেই নয়
বনরাজ সিংহের সঙ্গেও খেলে গেছে
আজ অবধি হয়ে আছে
হিন্দুর পরিশ্রম, মুসলমানের শরাফত
এই রাগ-রাগিনীকে বন্ধ করতে
পারেনি কোনো গুলি-গোলা
তবে
স্থিতি আজ এমন দাঁড়িয়ে গেছে যে
রাজনীতি নিয়ে কথা বলারও
কিছু আর বাকি নেই কোনো।

এই গানে তার কোনো নেই অধিকার
যে একা একগুঁয়ে চলেছে নিজের
শুধু ব্যক্তিগত আগ্রহে!
সত্যি, কি হবে জেনে
কি বা আসে যায়
গিয়েছে কে কোন্ পথে
যখন সবাই সবশেষে
পুকুরেই হয়েছে বিলীন!
তাঁকেও দেবো না এই গীত
কোনো দিনও
একদিকে গুলি চালিয়েও
গুলি খাওয়া মানুষের ঘরে
গিয়ে মিছে গায় যে কাঁদুনী
গণতন্ত্রের নামে নিতান্ত অগণতান্ত্রিক
যিনি স্থিতির সঙ্গে ক'রে বলাৎকার
বুঝে নিয়েছেন দাম স্বাধীনতারই।

এই গান গাইবো না আমি
ওই বাচাল মানুষদের নামে

যারা দিনমজুরদের ছোটো হওয়া
পরিধেয়ের মতো
টেনে-টুনে চালায় শাসন
যারা অনুশাসনের পরিভাষা খোঁজে
দিনচর্চাকে নষ্ট ক'রে
যাদের যাবে না বোঝানো কতো গুরুত্ব
সুস্থ জীবনের যাপনের
তা না-হলে কে বোঝাবে কি-ভাবে
বেইমান বাবার কপালে
লেখা থাকে যাবতীয় সুখ ?
এই গান আমি সমর্পণ
করি সেই পিতার নামেই
যিনি পৌষের রোদের মতো নরমে-আদরে দোলাতেন
শিশুকালে আবার আমাকে
ভীষণ শীতের দিনে যিনি
উষ্ণ প্রস্রবণ হয়ে ঘিরে থেকেছেন
আরামের বোধ এনে দিয়ে ।

তুমি চিন্তা ক'রো না
যেমনটা কথা হয়েছিলো
আজ আর সেইমতো হয় না বন্ধু কেউ
আঙিনায় আজ কেউ
দাঁড়াবে না ক্ষীর হাতে কোনো সুজাতাই
এ গান জানবে কোনো ডুবন্ত সূর্য, কোনো
উদীয়মানের তরে নয়,
কারণ তারাও জেনো মৌলিক রাজনীতি করে
এই বুঝি গদ্য হলো—
এই আবার গান হয়ে থাকে ।

এ গান রইলো ঐ দীপমালিকার জন্যই

রাতের জন্য যে নিজেকে জ্বালিয়ে যেতে পারে !
অনর্থক চিন্তা করা
আদিম জাতির বিষয়েও
যারা বরাবর প্রয়োজনে হাত কচলায় !

আমিই পিপাসা

শেফালিকা বর্মা

আমি চাইছি একবিন্দু জল
কিন্তু সাগরের চেয়েও দূর আমার পিপাসা
তাপসী বালিকার মতো আমার জীবন উদাসীন
কোনো কথায় আমার মন ব্যথিত হয় না।
ওষ্ঠ থেকে কোনো অনুযোগ ওঠেনি
কেন মেঘ আমার উঠোনে আর ঝরছে না
মরুভূমির রোদে কেন জ্বলছে আমার পা
কিন্তু আমার পিপাসা নেই
ছায়ার কিনারা থেকে দূরে
জলের আবর্তে ঘোরে
কাঁপা ঢেউয়ের মতো ভাগ্য আমার
সুখের কি আর সওগাত হবে বলো
দুঃখও রয়ে গেলো অকথিত

এই অশ্রুর বৃষ্টি, ভেজা স্বপ্ন
কিন্তু উপচে পড়ছে না
আলোর কিরণ ছড়িয়ে পড়লো
কতো শর্তের সাথে
ফুলের থেকে আর গন্ধ কোথায় আলাদা
আমি আছি বাঁধা পড়ে তমিস্রা-পাশে

যেখানেই থাকো রবে ভালোবাসা তোমার সাথেই
যেখানেই থাকো রবে ভাবনাও তোমার সাথেই
আমার জীবনে আজো আসেনি সেদিন
যতদিন তোমা হতে থাকবো আমি বহু দূরে
গেয়ে যাবো গান শত বিরহের, প্রায়
মূর্ছিত প্রাণের বীণায়।

কে তুমি ?

ইলারানী সিংহ

এখানে
এই জায়গায়
এই পৃথিবীর 'পরে
নীল আকাশের নিচে
যেখানে একদিন শ্রুত হতো
হতো উচ্চারিত
উজ্জীবিত আশার উদ্ঘোষ
'মধু বাতা ঋতায়তে
মধু ক্ষরন্তি সিন্ধবঃ'
সেখানেই
অস্ফুট স্বরে
ঠোঁট নেড়ে নেড়ে
নিজেরই বাণীতে
নিজেই চমকিত
বিস্মিত
প্রায় প্রশ্ন-চিহ্নের মতো দাঁড়িয়ে
কে তুমি ?

মহাকালের
বজ্রদন্তের ছায়ায়
প্রায় প্রশ্নচিহ্নের মতো দাঁড়িয়ে
কে তুমি ?

কুঁড়িটি বসন্তের ঝড়ে পরেশান
অকালে পাকা আমের
শুকনো টিকুলির মতো
লটকানো চিবুকে
আক্রোশের বাঁকা রেখাখানি নিয়ে
প্রশ্ন-চিহ্নের মতো প্রায়, দাঁড়ানো—
কে তুমি ?

রেগে উঠে
নিজের মাথার চুল
নিজেই ধরেছো টেনে
অথবা
বিরক্ত হয়ে
নিজের অবিরোধী গালের ওপর
চড় মেরে এলোপাথাড়ী
অথবা নিজের ছায়া থেকে
নিজেই চমকে উঠে
আর যা কিছু হোক
যুগকে পাল্টানো যাবে না !
নিজের মুখে
নিজেই কালো রঙ মেখে
প্রায় প্রশ্ন-চিহ্নের মতো দাঁড়িয়ে
কে তুমি ?

হিসাব

নচিকেতা

নিজের তামাটে ছেঁড়া
ন্যাতানো শাড়ীর তলা থেকে
ঝোলীকে রোজ দেয় হিরিয়া কাক-ভোরবেলা
পাঁচ পাঁচ-খানা শব্দ না
যখন সে যায় মাঠে
গতর খাটতে পুবপাটে।

একটা শব্দ হয়
প্রতিদিন অপব্যয়
উৎকট দ্বিপ্রহরে
পিপুল গাছের ছায়া তলে
আধপোড়া রাঙা-আলু
পান্তাভাতে মেখে খেতে খেতে

আধেক খরচ হয়
যখন বরষা নামে ঝেপে
ভুসহু মালিক দেখে
ঝোলীকে ছায়া-তলে গা খানি বাঁচাতে
আধ-রোপা ছেড়ে এসে ধান
তল-পেটে টেনে মারে লাত—
'বাবু, বাঁচান বাঁচান!'

দেড়টা খরচ বাঁধা আছে
চামারটুলীর পিছুয়াড়ে
চুহড়ার দেশীর ঠেকাতে
ধারের বোতল ধরা হাতে

আর থাকে বাকি
সাত দু গুণে হয় চোদ্দোটা শব্দের ঢাকি
সে ক'টা বাঁচিয়ে রাখে হাটেতে বাজারে
নুন-তেল-হলুদের দাম তবু বাকি

রাত্তিরে হিরিয়ার
বুকের ওপর সে যে রাখবে বাক্য কোনো
তেমন একটি শব্দ বাকি থাকে নাকো ;
আর বিনা শব্দের
হিরিয়াও খোলে না হৃদয়

সারারাত
আঙিনায়
শিশির মাথায় ক'রে
ঝোলী দাঁড়িয়ে থাকে
কবে ভোর হবে

বনের শৃঙ্গার

অগ্নিপুষ্প

শ্বেত হরিণীর মতো দৌড়ে দুর্নিবার
দিন ; কুসুমের কলি করে বনের শৃঙ্গার
পূবের হাওয়ার থেকে পশ্চিমা বায়ু
আমাকেই ছুঁয়ে যায় ধরে পরমায়ু
ঠোঁট ফেটে চৌচির ধান-ক্ষেতে হাড়
শরীকী বিভেদ হয়ে দালানে পাহাড়
আর ছাওয়া হবে নাকো এ ঘরের ছাদ
গোয়াল ঢুকেছে ঘরে ঘর গেছে বাদ
সমুদ্র মন তুমি ভেসে গেছো নায়ে

হাত হলো নিভরসা জোর নেই পায়ে
চোখে এলো অরণ্যের বুনো অন্ধকার
চারিদিকে খুঁজে মরি আলোর পশার
ছোট্ট জানালা যদি রয়ে থাকে খোলা
বন্ধ দরোজা সব ; কিছু যাবে ভোলা
কে গিয়েছে মারা আজ কে পড়েছে ধরা
বলবে কি বলবে না কাগজের পড়া
কিন্তু সিঁদুর থেকে ঢেলে নেয়া রঙে
আমাকে গিয়েছে চেনা, কোকিল পবনে
কুহুকি কুহুকি করে কবে হবে ভোর
কোথায় কোথায় রবে পাহাড়ের জোর
উচ্চতা কতো কতো কালচে সিলেটে
লেখা আছে নাগরীর অক্ষর মেটে
শিশুদের আঁকিবুকি রাস্তায় প'ড়ে
শিউলির ভিড়ে যেন দেখা দেয় ঝড়ে

সময়ের অতল গভীর

কেদার কানন

আমি চাই
জীবনের উষ্মা দিয়ে
লেখা হোক কবিতা আমার
হাতিয়ার খুঁজে চলা কোন যুদ্ধভূমি
কোথায় হারালো সখি শব্দ আমার

আমি চাই
সাবধানে সযতনে
কোনো তাড়াহুড়ো ক'রে নয়

হঠাৎ অবাক ক'রে নয়
প্রাণের ভিতর থেকে
অন্তস্থল থেকে
বের হবে যেন সব শব্দ

শীতকালে সরিষার তেল হাতে নিয়ে
সারা হাতে গায়ে মেখে
রোমকূপ দিয়ে আমি
মিলিয়েছি শরীরে কবিতা
জীবন-রাগের থেকে বাদ যেন না পড়ে
আমার কবিতা

সে যখন বলে
মানুষেরই কথা যেন বলে
তারই দুঃখের কথা শোনে
দিশেহারা না-হয় কবিতা
এইজন্যেই আমি রয়েছি সদাই সচেতন
হঠাৎ হঠাৎ যেন আজেবাজে কথা কোনো
বলে নাকো আমার কবিতা

সময়ের অতল গভীর
জীবনের সমগ্র তার
সুবিশাল পূর্ণ বিলাপ
যেন ফুটে ওঠে
আমার কবিতা গম্ভীর

আমি চাই জীবনের
সমস্ত উষ্মা দিয়ে
লেখা হোক
আমার কবিতা

সামনে দাঁড়ানো একটা আকৃতি

চন্দ্রেশ

সিধে চাইতে
কোনো রাস্তার মোড়ে দাঁড়িয়ে
যখন কোনো
সৃজনের পীড়া এবং
বেদনার ভাবলোকে ডুবে থাকি
তখনি হঠাৎ তাঁর দেখা হওয়া
গুজু-গুজু আহ্লাদী মৃদু স্বর
যেন ভাজা শুরু করে
মরুভূমির ভীষণ গরম বালুপটে
পটাপট ফুটে যায় টগবগ
হলদেটে হয়ে যাওয়া মন ও আত্মা।
একান্তের ওই ভাঁজা স্বর
দীনতাকে মাথায় রেখেই
ঠোঁটের তলায় ঐ হাসিটিকে চড়িয়ে
উল্লসিত হয়, হয়ে যায়
ভোরের আলোয় ধরা নিজের আকৃতিখানি দেখি।

সংক্রমণের কালে জন্ম আমার
অনুভবের চোখে মনের বাসনা সব
অপ্রন খুলে ফেলে
সইতে পারতে হয় হঠাৎ প্রহার
ভরমায়ু মিঠে বোল
গিদ্ধের দেখার আমেজে।

অবাক্ হয়েছে খাড়া,
ছত্রিশ পৃথিবীর স্বর

সময়ের চাকায় পিষে যাওয়া
জঙ্গলী নাগের দুই জিভেতে ফাঁসানো
আর্থিক বিষমতা
বিঁধে বিঁধে যায়
দেহের প্রতিটি রোঁয়ায়

চোখের সামনে
কুলটা সত্তার গুমোরে
জড়ো হয় সুখীদের ভীড়
ফটফকে হাসির ধমকে ওঠে উজ্জ্বল ;
একই সাথে আমার এ ভাঙা ছবিখানি
ক্লান্ত মাংসপেশী বেয়ে
উঠে আসা থর-থর কোনো এক লয়
স্বর্নিম সূর্যের আভায় দীপ্ত আলো
সিঁদুরে সকাল হয়
লোহিত কালভৈরব ।

তার অস্থিরতা

রমেশ

সত্যি,
যখন ও মারা যাচ্ছিলো
মুখটা গেছিলো ফাঁক হয়ে
দাঁত কঁটা ছিরকুটি মেরে
চোখে নেমে এসেছে আঁধার
আর উঠেছে হয়তো এক হেঁচকি
বয়ে গেছে এক হাঁড়ি
শরীরের নব রসখানি

ভিজে গেছে লালাতেই
গৈরিক বস্ত্রখানিও
ঘায়ের সমস্ত পুঁজ
গলগলে হয়ে গেছে বার
কথাও হয়েছে শেষ তার
শুধু আছে বাকি
চুরমার দেহখানি যম-যন্ত্রণা
ঠুঁঠো হয়ে তুলসীর কাছে—
কিন্তু এসব দুখ ছাড়িয়েও
মনে তার পড়েছে হয়তো
রোজগেরে ছেলেটার কথা
কুটনীর কাজ করে থাকে
বাড়িতে গতর খেটে থাকে
দিয়েছিলো অক্ষর-বোধ
কিন্তু হতেই চোখ-মুখ
ফুটে উঠে উড়ে গেলো ফুর্
মায়ের কোলের পাঁজা থেকে !
তখনি হৃদয় ভেদ ক'রে
সখের শাড়ীর আঁচলায়
চোখের জলের স্রোত ভরে
বুকের ভেতরে হায়-হায়
ভেসেই গিয়েছে বুঝি স্মৃতি
তবু মনে হয় এক পল
কোথাও চোখের মণি কোণে
মনে পড়ে ভুলের ফসল
তার ছেলে-বৌ মনে পড়ে
কিভাবে ছেলেকে নিলো কেড়ে
চেটে-পুঁছে নিয়েছে হৃদয়
গর্ভের থেকে ধুয়ে স্মৃতি
বিন্দুমাত্র নেই মনে

শৈশবে হাহারব ভুল।
মরার প্রয়াসে ঝরা হায়
ঈপ্সিত এতটুকু সুখ
একমুঠো ছায়া চেয়ে তার
অনন্ত পেঁছেছে দুখ—
যখন ও যাচ্ছিলো মারা
তখ'না কি বয়েছে ত্রিধারা ?

রামকে প্রণাম করো

বিভূতি আনন্দ

অতো জোরে হেসো নাকো তুমি
জানো না-কি তুমি এক নারী
দৌড়িও নাকো ওইভাবে
জেনে রাখো তুমি এক নারী
বাবাকে-ভাইকে পেয়ো ভয়
জানোই তো তুমি এক নারী
চোখটা নামিয়ে চলো পলকটা ঝেপে
একা তুমি বেরিও না যুবতী কুমারী
জানো জানো তুমি এক নারী

গায়ের ওপর শাড়ী
শাড়ীর তলায় রেখো আবরু তোমার
হেঁসেলের হাঁড়ি-কুঁড়ি
আঙিনাকে লেপে-পুতে নিও
কাজ সেরে গেয়ো গো পরাতী
জানোই তো তুমি এক নারী

—৩

ব্রত-উপবাস করো
শান্তি পাবেই
সেবা করো বুড়ো ও বুড়ির
ওরা দিয়ে যাবে পরম্পরা
আর নিজেদের শীল ও স্বভাব।

ধরিত্রী তুমি হও সর্বংসহা
নিজের নিচের থেকে সামলাও গোটাও আঁধার
এয়োতীর বাতি জেবলে রাখো অবিচল
জানোই তো তুমি এক নারী

তুমি তো সীতা, তাই
নিজের বিষয়ে ভেবো না
তোমার ভেতরে আছে বহু যুগ ধ'রে বঞ্চনা
বর্জনা ব্যাকরণ খনি
আড়ালে আছেন রাম, ধনী
রামকে প্রণাম করো তুমি
জানো না কি তুমি এক নারী ?

॥ কবি-পরিচিতি ॥

অগ্নিপুষ্প—জন্ম ১৯৫০ ; বরৌনী, দরভঙ্গা। সাংবাদিক। প্রকাশিত গ্রন্থ : কবিতা সংকলন—সহস্রবাহু। 'মুক্তি প্রসঙ্গ'-এর মৈথিলী অনুবাদ করেছেন। বর্তমানে, আর্যাবর্ত, ফ্রেজর রোড, পাটনা-১। পত্র-পত্রিকার সম্পাদনাও করেছেন, বিশেষত কলকাতায় থাকতে।

ইলারানী সিংহ—১৯৪৫—১৯৯৫ ; সাহমৌরা, সহরসা ; এম. এ. (হিন্দী, মৈথিলী), পি. এইচ. ডি, ডি. লিট। অধ্যাপনা করেছেন। প্রকাশিত গ্রন্থ : কবিতা ; বিন্দন্তী ; বহু অনূদিত নাটক—সলোমা, প্রেম ; এক কবিতা, অনূদিত উপন্যাস—বিষবৃক্ষ। হিন্দীতে কবিতা সংগ্রহ—রয়ি এবং অনুবাদ—তীন বিশ্বোঁ মে' রার্ত-দিন প্রকাশিত ; হিন্দী থেকে বাংলায় প্রসাদের অনুবাদ করেছেন। লোক-সাহিত্যে বিশেষ গবেষণা ও রুচি ছিল।

উদয়চন্দ্র ঝা 'বিনোদ'—১৯৪৩— ; দুলহা, রহিকা, মধুবনী। এম. এ, এ. জী. বিহারে কার্যরত ; প্রকাশিত গ্রন্থ—সংক্রান্তি, মেসিম অয়লা পর এ হনা স্থিতি মে, ভরি দেহ শোৗরা ; গল্পসংগ্রহ—জাঁত। বৈদেহী পুরস্কার-প্রাপ্ত। বর্তমানে, রহিকা মধুবনী।

কীর্তিনারায়ণ মিশ্র—১৯৩৬— ; শোকহরা বরৌনী, বেগুসরায়। এম. এ., এল. এল. বি, জনসম্পর্ক অধিকারীরূপে সেবানীবৃত্ত ; প্রকাশিত গ্রন্থ : কবিতা সংকলন—সীমান্ত, মহানগর, হম স্তমন নহি লিখব, ধ্বস্ত হোইত শান্তি স্তূপ। মৈথিলী ও হিন্দীর বিভিন্ন পত্রিকার সম্পাদন, বিশেষ 'আখর'-এর। বহু নিবন্ধ গ্রন্থেরও সম্পাদন। বর্তমানে, পশ্চিমবঙ্গের কোনো চটকলে।

কুলানন্দ মিশ্র—১৯৩৯— ; পকড়ী কোঠী, সীতামঢ়ী। বি. এ., পাটনায়

সচিবালয়ে কার্যরত ; প্রকাশিত গ্রন্থ : কবিতা সংকলন—তাবত এতবে, ভোরক প্রতীক্ষা মে ; সম্পাদনা—সন্নিপাত ও ফারাক। বর্তমানে, ৭১৪ শাস্ত্রীনগর, পাটনা-২৩।

কেদার কানন—জন্ম ১৯৬৯— ; সুপৌল, সহরসা। প্রকাশিত গ্রন্থ ; কবিতা সংকলন—আকার লৈত শব্দ ; সম্পাদন—সংকল্প ও ভারতী মণ্ডল ; বহু কবিতা গ্রন্থের অনুবাদ ও সম্পাদন। গল্পও লেখেন। বর্তমানে, কিসুন কুটীর, সুপৌল, সহরসা।

চন্দ্রেশ—জন্ম ১৯৫৬— ; মঁউ বেহট, পুতই, মনীগাছী, দরভঙ্গা। এম. এস.-সি.। অধ্যাপক। প্রকাশিত গ্রন্থ ; গল্পসংগ্রহ—জিনগীক ভূগোল, নচৈত পৃথ্বী, লালকী কিরিন, ঘিরনী ; কবিতা সংকলন—জাগরণ-গীত, আঁখি-পাঁখি, কালকণ্ঠ। হিন্দীতেও নাটক লিখেছেন। বর্তমানে মনমীত কুটীর, রাজপুত কলোনী, মৌলাগঞ্জ, দরভঙ্গা।

জীবকান্ত—জন্ম ১৯৩৬— ; ডেওড়, ঘোঘরডীহা, মধুবনী। বি. এ.। শিক্ষকতা করেন। প্রকাশিত গ্রন্থ ; উপন্যাস—দু কুহেসক বাট, পণিপত, অগিনবান, পীয়র গুলাব ছল, নহি কতুহ নহি ; গল্পসংগ্রহ—একসরি ঠাঢ়ি কদমতরুরে প্রভৃতি ; কবিতা—নাচু হে পৃথ্বী, ধার নহি হোইছ মুক্ত। বৈদেহী পুরস্কারপ্রাপ্ত। ঠিকানা—জন্মস্থানই।

নচিকেতা—জন্ম ১৯৫১— ; কলকাতা। এম. এ., পি. এইচ. ডি. ; বরোদা, সুরাট, দিল্লী ও হায়দ্রাবাদে অধ্যাপনা। বাংলাতে সম্পাদনা ও বহু নিবন্ধ / গ্রন্থ। বহুভাষা থেকে অনুবাদ। প্রকাশিত গ্রন্থ ; কবিতা-কবয়ো বদন্তি, অমৃতস্য পুত্রাঃ, অনুত্তরণ ; নাটক—নায়কক নাম জীবন, এক ছিল রাজা প্রভৃতি ১১টি ; বহু গ্রন্থ ও নিবন্ধ ভাষাবিজ্ঞানে প্রকাশিত। বর্তমানে, CALTS কেন্দ্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়—হায়দ্রাবাদ।

ধূমকেতু—জন্ম ১৯৩২— ; কোইলখ, মধুবনী। এম. এ. (অর্থশাস্ত্র) ; অধ্যাপনা। প্রকাশিত গ্রন্থ ; 'অগুরবান তথা অন্যকথা' (১৯৮০)।

বর্তমানে গ্রাম, পোস্ট কোইলখ, মধুবনী, বিহারে থাকেন এবং সেবানিবৃত্ত হয়ে পুরোদমে লেখন-কার্যের সঙ্গে যুক্ত রয়েছেন।

বিভূতি আনন্দ—জন্ম ১৯৫৫— ; শিবনগর, মধুবনী ; অধ্যাপনা। প্রকাশিত গ্রন্থ ; কবিতা—ডেগ, উপক্রম, পুনর্নবা হোইত ও ছোঁড়ী ; গীতগজল—উধা রহুল ঘোঘ তিমির, ঝুমি রইল পাথরমোন ; গল্পসংগ্রহ—প্রবেশ, খাপাড় মইক ধান ; উপন্যাস—অপরাজিত। বর্তমানে রাজকীয় ইণ্টার কলেজ, জিলা স্কুল, মুংগের।

যাত্রী—জন্ম ১৯১১— ; তরোণী, দরভঙ্গা। মূল নাম বৈদ্যনাথ মিশ্র। সংস্কৃত সাহিত্যের অধ্যাপক, পরে বৌদ্ধ ভিক্ষু। 'নাগার্জুন' নামে হিন্দীতে লেখেন। প্রকাশিত গ্রন্থ ; চিত্রা, পত্রহীন, নগ্ন গাছ ইত্যাদি কবিতা ; উপন্যাস—পারো, নবতুরিয়া ও বলচনমা। একাদেমী পুরস্কার, মৈথিলীশরণ গুপ্ত সম্মান, ভারত-ভারতী, রাহুল, রাজেন্দ্র পুরস্কারপ্রাপ্ত।

রমেশ—জন্ম ১৯৬১— ; মেঁহথ, মধুবনী। এম. এ. (ইতিহাস)। বিহার প্রশাসনিক সেবায় নিযুক্ত। প্রকাশিত গ্রন্থ ; কবিতা—সঙোর, গজল—নাগফেণী। বর্তমানে কেয়ার অফ সিয়ারাম ঝা 'সরস' ছপকী, লক্ষ্মীসাগর, দরভঙ্গা।

রাজকমল চৌধুরী—১৯২৯—১৯৬৭ ; মহিষী সহরসা। বি. কম ; প্রকাশিত গ্রন্থ : উপন্যাস—আদিকথা, আন্দোলন, পাথর ফুল। গল্প—ললকাপাগ, একটা চম্পাকলী আ বিষধর প্রভৃতি। কবিতা—স্বরগন্ধা। হিন্দীতেও প্রচুর উপন্যাস ও গল্প প্রকাশিত—দুই ভাষারই প্রথিতযশা সাহিত্যিক।

রামকৃষ্ণ ঝা 'কিসুন'—জন্ম ১৯২৩—১৯৭০ ; সুপৌল, সহরসা। সংস্কৃত শাস্ত্রী। অধ্যাপনা। প্রকাশিত কবিতা—আত্মনেপদ। ইদানীং চারখণ্ডে কিসুন রচনাবলী প্রকাশিত। সম্পাদনা—মৈথলী নব কবিতা।

রামলোচন ঠাকুর—জন্ম ১৯৪৮— ; সরকারী কর্মচারী ; প্রকাশিত কবিতা ইতিহাসহন্তা, মাটিপানীক গীত, দেশাক নাম ছেলে সোনাচিধেয়া প্রভৃতি। সম্পাদনা করেছেন অগ্নিপত্রের ও বহু গ্রন্থের। বর্তমানে, বিধাননগর, কলকাতা।

শেফালিকা বর্মা—জন্ম ১৯৪৪— ; মধেপুরা, বিহার। এম. এ., পি. এইচ. ডি. অধ্যাপিকা। প্রকাশিত কবিতা—বিপ্রলব্ধা ; গল্প—স্মৃতিরেখা। বর্তমানে, পশ্চিম আনন্দপুরী, পাটনা।

USING PRAGMATICS AND SURFACE STRUCTURE IN LANGUAGE TEACHING AND LEARNING : EVIDENCE FROM BENGALI AND MAITHILI

Udaya Narayana Singh
University of Delhi

INTRODUCTION

In this brief paper, I wish to point out that while much of linguistic theory and analysis have, since the days of Saussure, been concerned with *la langue*, (or *competence*, if you may), it is in the *parele* that we must build our theory of language teaching. This is especially true of second language teaching. A second or foreign language learner wants to acquire knowledge of a particular language because he wants to *perform* in one or more (or, all) social domains. It is, therefore, necessary that as language teachers, we must tell him the rules of speaking: Who speaks (or does not speak) why and how in what situation, setting and time to whom, i. e., the pragmatic rules. It is also important to make the learner beware of the surface variations and alternations. I am not suggesting that we teach him only a list of such language fluctuations. Language teaching, based only on taxonomy of surfacc variations, can indeed be taxing. It is necessary to teach him the general underlying principles. Nevertheless, it is a crime to let him proceed to perform on the basis of knowledge of such abstract rules.

To illustrate this point, let us take up the case of Bengali with its unique diglossic situation (Cf. Singh & Maniruzzaman, 1983). Our study reveals that in spite of a general decline in the use and attitude of Sadhu Bangla (with a mean of 7.2203 as against Calit Bangla 20.0339, ibid, pp 38; 63-68% for Calit as against 18-26% in favour of Sadhu, ibid, pp 51), our subjects still believe that Sadhu must be taught along with Calit to non-Bengali learners learning Bengali and that 37.29% of them felt that the language teaching should begin with Sadhu, 54.24% felt the same in favour of Calit, while only 1.69% advocated that both should be taught to the beginners at the same time. Obviously, our decision to design a course for LT in Bengali

will depend on what kind of *performance* the learner aims at. For instance, if he wants to learn Bengali because he wants to read Bengali literature without going through translations of the same available in his language, he has to be taught both styles with an introductory lesson on the use of these studies in the literary history of this language. If he is interested in only being able to speak in Bangali, there is no point in teaching him Sadhu really. But for those who belong to neither of these categories, it will be unfair if we do not make him aware that he is expected to use different styles in different sociolinguistic contexts depending on who their interlocuters are and what are their social backgrounds (See Singh & Maniruzzaman, 1983, Singh, 1976, for details).

Similarly, for someone learning Maithili (yet another eastern NIA language), unless we teach him the complicated nature of the pronominal behaviour (See Singh, 1979 for the nature of such constructions), it will be impossible for the learner to verbalise in actual speech situation. Maithili verbal construction is notorious not only for showing agreement with non-subjects including elements within PP (bearing locative and ablative case-marking, for example), the problem is in the five-level second personal pronoun (two honorifics, one level and two non-honorifics) and a complicated rule of selection. I have shown elsewhere (cf. Singh, forthcoming) that the matters are more complicated than they seem because the sociolinguistic factors are somewhat graded in Maithili speech community and that selection of a particular pronoun rather than any other does not merely depend upon power and solidarity relations. The hierarchy shows Kinship, Sex, Socio-Economic Status, Age and Other Factors (including educational level, attitude, setting, mood and others) in this order. The exchange of pronominal levels may or may not be symmetric (i.e., both members of a dyad getting the same level or otherwise). If we only look into the kinship factor, we will discover that selectional rules are likely to be following:

(1) Pronominal/Verbal level selection rules and kinship.

		Symmetry-Level	*Asymetry-Level*
a.	*M*other—*D*aughter	4/5	—
	*S*ister—*E*lder *s*ister	4/5	3←→2
	*E*go *Fe*male—*H*usband's *M*other	—	2←→ passive
	E' Fe F—*S*on's *W*ife's *M*	2	—
	E+Fe—*B*rother's *W*	2	—
b.	*F*ather—*So*	2	2←→3 or 4/5
	B—E.B	—	4/5←→2
	*E+Ma*le—*W*'s *F*	—	2←→ I or passive
	E+Ma So's *W*'s *F*	1,2	—
	E+Ma—*S*'s *H*	2	—
c.	*So—M*	4/5	2 or 3←→or 4/5
	F—D	—	2←→3 or 4/5
	B—E.S	2 or 4/5	4/5←→2
	E.B—S	—	2←→4/5
	H—W	2	—

The above table of speech behaviour shows that between certain kin relations, speech exchange is symmetric, in that both select the same levels for each other. For some others, it is asymmetric, i.e., they give and receive pronouns of different honorific levels. Between some others, both strategies are used. Anyone learning Maithili has to know these rules.

I. EVIDENCE FROM BENGALI

In this and the following sections, I shall present more evidence in favour of my suggestion that a teaching/learning grammar must include pragmatic rules and informations on surface structure variations.

Let us first take up the case of Bengali negative formation. The theoreticians and typologists may still be wondering whether to posit an underlying V+NEG or NEG+V order for Bengali since the time Singh (1976) was published (See Bhatia, 1978 and Subbarao, 1984 for other problems).

The facts about Bengali negation are as follows. First in terms of frequency and scope of occurrence, in all probability, negation marker *na* follows verb. In the neighbouring IA languages such as in Maithili, Magahi and Bhojpuri as well as in languages like Hindi and Panjabi, the basic as well as the most frequent order is NEG+V, although for stylistic reasons, one is allowed to follow a V+NEG order in certain constructions. In this respect, Bengali has similarities with the Dravidian languages (Cf. Rangan, 1971; Ravindran, 1971; Gowda, 1971). The Austric and the Tibeto-Burman too seem to favour V+NEG order in most cases. Hazarika (1968) tells us that Assamese too has NEG+V order like the Magadhan languages.

Secondly, there are a number of constructions where even in Bengali, the order conforms to the general IA pattern of NEG+V. They are following: (i) the 'Neither-nor' constructions, (ii) before the 'But'-clause, when the main clause in present indicative, (iii) in infinitive complement constructions with *er-a*, (iv) in 'As if' *jEno*-sentences, (v) in 'If' or *jodi*-clauses, (vi) in constructions involving *na-hOe* and *ba*, (vii) in a double-verbal adverbial constructions, (viii) when the verb is in precative mood, (ix) in negative verb constructions (Assamese has them too), (x) in archaic/poetic expressions, (xi) and partially in lexical negation. Let me give an example of each of these constructions (Sentences or constructions I-II exemplify the types i-xi as noted above):

1. na Se eSeche, na ami gechi 'Neither he has come, nor have I gone'.

2a. ami pari na, kintu Se to pare} 'I cannot (do it) but he
 b. ami na pari, Ø Se to pare} surely can'

3a. Se (ram-er na jaw-a-r) kOtha bolle 'He gave the news about Ram's not going'
 b. Se (na jaw-a) sthir korlo 'He decided against going'

4. Se jEno na jane (je ami eSechilam 'He should not know that I had come'

5. tumi jodi na jao, ami jabo 'If you don't go , I will'

6a. tumi na-hOe na-i gele}
 b. tumi na-i ba gele } 'Let you not go'

7. kajTa na hObe to na hObe, amar tate ki? 'If the work is not done, let it not be done, how am I concerned?'

8. Se na aS-uk, ami ja-bo 'Let him not come, I will go'
9. NEG-hOe→nOe/noi; NEG+ach→nei, etc
10. keho nahi jane, kar, aobhane...'Nobody knows...'
11. O-ggEn, O, SombhOb, etc. 'Without knowledge', Impossible', etc.

These, added to the fact that Old Bengali showed a fairly wider use of NEG+V constructions (Cf. Sen, 1958:100), only suggest that here is an example of a syntactic change in progress and that the reason for change probably has to do with areal pressure (Cf. Klaiman, 1977 for other areas of pressure on Bengali syntax). This suggests that by simply teaching that Bengali has a basic or prevalent V+NEG order, and by not making the learner aware of the surface structure variations noted above, we will not do justice with teaching Bengali.

Also note that leaving aside the genuine cases of homonymy, Bengali grammar is rich with instances where there are extended usages of certain items. Let us take up *na* once again. There are at least the fol owing types of lexical extensions of *na* where there is a loss of its negative import:

12a. ke jabe na ? 'who will not go ?'
b. ke na jabe ? 'who will not go (=Everybody will go)'
13. tumi jao-na 'please go'
14. Se as-uk (na), tar pOr dEkha jabe 'Let him come, (the rest) we will see later'
15. tumi jabe (,) na? 'You will, go won't you?'
16. tumi na Ramke bhalo bolechile. 'But didn't you say Ram was good'
17. ami na-hOe gelam 'Suppose I went'
    2 ′ 333 22 22
18. Se naaa eSechilo 'He, you know had come' (in the speech of women and children, in the intonation indicated)

Not all the uses as listed above are completely devoid of the negative meaning. These bring us to yet another instance of lexical extension in Bengali (first noted in Singh, 1980b, and later extensively studied by Subbarao, 1984), the one involving *bole*, the verb 'to say'. We will not go into the details of this

issue here. It will be enough to indicate that *bole* in Bengali is found to be used in a number of constructions such as follows: (a) complementizer, (b) non-lexical or empty head-noun, (c) quotative, (d) reason adverb, (e) manner adverb, (f) disjunct and post-position, (g) as 'almost' and (h) designation-marker. For a Bengali learner from the Southern states in India, it is easy to explain this phenomenon because these are such extensions of the verb SAY in Telugu and other Dravidian languages. But for others, we have to adopt a different strategy. Thus, a learner's grammar of Bengali has to have separate lessons to equip the prospective speaker in Bengali with surface variations in *form* as well as *meaning*.

II. EVIDENCE FROM MAITHILI

In this section, I shall be concerned with mainly pragmatic considerations of speaking. To begin with, I would like to mention that it has already been established (Cf. Singh, 1982) that depending on what one is *doing* with language, one has to select adequate speech strategies. For instance, while giving false testimony in a court of law, one does use a different strategy (Cf. Levinson, 1978; Levi, 1982). Similarly, for flirting, one has to use 'asymmetric strategy' in Bengali (Singh, 1982).

In case of Maithili constructions included in this section, we would like to show that certain factors (factors beyond grammar) trigger certain types of sentences or sometimes makes certain constructions more or less grammatical and more or less factual. We begin with the concept of 'weight' and its role in determining sentential acceptability. (See Singh, forthcoming (b) for greater details.) The raising rule in Maithili on sentences such as 19 will demand that the lower sentence adjective compliment is also shifted along with the raised nominal as in 20. If this element is left behind at the sentence final position, the resultant sentence is odd. This oddity goes once we begin to make the adjective compliment heavier as 21 shows:

19. ham bujhait^{a} chalah^{un}(je o niik (log) chathi)
    'I thought that he was a nice (person)'
20. ham hunkaa niik (log) bujhait^{a} chalah^{un}/chalianhi
    'I thought him to be a good (person)'

21a. ???Ham hunkaa bujhaita chalianhi niik
 b. ??ham hunkaa hujhaita chalianhi niik log
 c. ham hunkaa bujhaita chalianhi ahaank saaRhuk bhagin-jamaal 'I thought him to be your sister-in-law's sister-in-law': husband'

If we now look into the right dislocation rule in Maithili where the NPd (i.e., the dislocated NP) goes to the extreme right corner of a sentence leaving behind an appropriate form of trace pronoun, it seems to work alright in case the NPd is other than SU(=Subject of). Here the pronoun *o* '3p sg' may or may not show up. But if the original sentence has an SU which is itself *o* 'he/she', the resultant sentence is unacceptable as in 22. However, as we can see in 23, the same structure is increasingly acceptable, if the 'weight' of the NPd is more :

22. * *o* hamraa inglEnD mE bhenTal chalaaha, *o*
 'He met me in England, he'

23a. ? *o* hamraa inglEnD mE bhenTal chalaaha, raamcandar
 'He met me in England, Ramchandra'

 b. *o* ... chalaaha, { ahaa"k bhaaisaaheb / baraahii-balaa dulhaa-jii / baraahii-balaa dulhaa-jiik pitiauta bhaai }

 'He met me in England, your elder brother/the brother-in-law from Barahi/the cousin brother of the brother-in-law from Barahi'.

The above discussion only emphasizes the point that in a teacher's grammar, factors beyond grammar must find place.

REFERENCES

Bhatia, Tej K. 1978. *A syntactic and semantic description of negation in South Asian languages*, ph. D. dissertation, University of Illinois, Urbana-Champaign. Unpublished.

Gowda, K.S.G. 1971. Negation in Kannada. In H.S. Biligiri, ed. *Papers and talks.* CIIL, Mysore. 9-20.

Hazarika, B. 1968. Negative formation in Assamese. *IL*, 29:34-9.

Klaiman, M.H. 1977. Bengali syntax: possible Dravidian influence. *IJDL*, 6.2:.

Levi, Judith. 1982. Language and the law in the U.S.A. Ms.

Levinson, Stephen C. 1978. Activity types and language. Ms.

Rangan, K. 1971. Negation in Tamil, In H.S. Biligiri, ed. idid. 9-20.

Ravindran, N. 1971. Negation in Malayalam. In H.S. Biligiri, ed. ibid. 5-8.

Sen, Sukumar. 1958. The position of the negative particle in Bengali. *IL*, 19:100-2.

Subbarao, K.V. 1984. *A study of linguistic typology, language contact and areal universals in the Indian subcontinent.* Unpublished Project Report submitted to the UGC. Department of Linguistics, University of Delhi.

Singh, Udaya Narayana. 1976. Negation in Bengali and the order of constituents. *IL*, 37:295-303.

——. 1979. Agreement rules, language universals and Maithili. *SALA*, 1:107-114. University of Illinois at Urbana-Champagin.

——. 1982. Flirting as an asymmetric speech act in Bengali. *IJDL*, II, 2:226-35.

——. Forthcoming (a) How to honour someone in Maithili. *International Journal of Sociology of Language*.

——. Forthcoming (b) Of line, site, fact, weight and relation. In Yamuna Kachru & D.P. Pattanayak, eds. *Relational grammar : A Colloquim.* CIIL, Mysore (1984).

Singh, Udaya Narayana & Maniruzzaman. 1983. *Diglossia in Bangladesh and language planning*. Calcutta ; Gyan Bharati.

MAKING OF INDIAN LITERATURE

A Consolidated Report of Workshops on Literary Translation 1986-88

Edited by
Ayyappa Paniker

SAHITYA AKADEMI

A Survey Report of the Translated Literature in Maithil

Uday Narayan Singh

Introduction

Maithili, as we all know, has had a rich literary heritage. Its written as well as oral traditions have already been described in detail in different histories of Maithili literature (see, in particular, Jayakanta Misra, 1948-50). It is one of the Eastern NIA languages sharing many grammatical features with other languages of this group such as Assamese, Bengali, Oriya and Nepali (see, Subhadra Jha, 1958; Uday Narayan Singh, 1979 for details). The language has a publication history of less than a century, although modern Maithili writings could be found as early as 1850 AD. The Old (1300-1600 AD) and Middle Maithili (1600-1850 AD) stages saw many important poets and playwrights whose names are well known to all - Vidyapati, Umapati, Chanda Jha and many others. Maithili had a writing system of its own called Tirahuta which was given up in favour of Nagari for both writing (the older system is used only in certain culture/ritual functions) and printing, publication in Maithili saw a tremendous upsurge. This also meant that a number of translated works appeared in print in Maithili since the early 20th century; The translation of smaller pieces such as poems, short stories, essays and short plays began appearing in literary magazines in the post-Second World War period. We furnish here a partial list of 86 major translated books published in Maithili as well as 75 translated works published in magazines. The appendix also includes a tabular description of the old Maithili script compared with other writing systems.

General Trends

If one considers the translated books published so far, a few general statements can be made. Let us consider the source languages that received favourable treatment. There are 46 translations from Sanskrit which only re-emphasizes the importance attached to the Sanskritic tradition of learning in Mithila and also the fact that Maithili writers felt the need for presenting the major classics to the common readers in Mithila who would not have the access to the original.

Translations from Sanskrit could be grouped into several types : First, there are translations of our traditonal works such as Rāmāyana, Gītā (by different persons), Rgveda, Hitopadesikā, Skandapurāna (partly).

Secondly, there are translations of literary texts such as Kālidāsa's Srngāratilaka, Abhijnāna Sukuntalam, Raghuvamsa, Meghaduta, Kumarasambhava and Srutabodhi, Sriharsa's Ratnavalī Natikā, Sudraka's Mrcchakatika, Bhasa's Udayana Kathā, Visakhadatta's Mudraraksasa, Bānabhatta's Pārvatī-parinaya, Bhartrhari's Bhartṛhari-triśati, Sankaradeva's Rāma-Vijaya, etc. Thirdly, we also have other miscellaneous works in philosophy, poetics and other works translated from Sanskrit such as Sankarācārya's Soundarya Lahrarī, Kalhana's Rāgatarangini̅, etc. Finally, there are translations of Vidyapati's own works in Sanskrit such as Purusaparīksā or Manimanjarī-nātikā. These works have, in many cases, multiple translations. This is particularly true of all works of Kaḷidasa. It may also be noted that there are translations of Dhammapada from Pali.

That Maithili litterateurs have been inspired by the rich Bengali tradition of creative writing can be made clear by pointing out that as many as 14 works from Bengali were translated. Bankimchandra Chattopadhyay's Viṣavṛkṣa, Kapalakuṇḍalā, Rabindranath Tagore's Gitanjali (translated twice), Sharat Chandra Chattopadhyay's Pallisamaj, Babhanak beti, Baṛakidai, Dwijendra Lal Ray's Candragupta, Bibhutibhushan Mukhopadhyay's Kosi Pranganak Ciṭṭhi, Narayan Gangopadhyay's Agantuka, Jogendra Nath Bagchi's Mahamati Vidura as well as some lesser known works such as Chabi Bandyopadhyay's play Cor, Prabir Mukhopadhyay's Prem: Ek Kavita and others were translated from Bengali.

In addition to the above, there are representative works of other languages too which included 7 from English, 2 from French, 3 from Persian, 4 from Hindi, 1 from Gujarati and 5 from Nepali. Notice that Nepali being a contiguous language also received the same kind of special treatment as Bengali. There are translations of Lakshmi Prasad Devakota's Munamedan, Lekhnath Paudyal's Satya-kali Samvada, Modnath Prashrit's Manav, M.B.B. Shah's Usaiko Lagi and another work of Yaduvemshalal Dhandra. The first three works are classics in Nepali.

Also there are two collections of poems translated from different languages.

Translations in literary magazines

In the appendix, there are details of translated works published in 11 major literary magazines of Maithili: Mithila Darsana, Mithila Mihira,

Vaidehi, Maithili Kavita, Agnipatra, Sannipata, Sikha, Pharak, Sonamati, Abhiyana and Pallav. The list is not exhaustive in that it did not include all major magazines or all the issues of the magazines mentioned here which are still continuing. Nevertheless, this will give us an idea of the on-going translation activities in Mithila.

Although in book-form we get works translated only from about 10 odd languages, in the literary magazines, the source languages are many. We can present a brief picture here :

(a) From European Languages

English	11
German	10
Spanish	6
French	4
Russian	3
Italian	2
Greek	1
Norwegian	1
Total	38

(b) From other Asian Languages

Japanese	9
Korean	3
Chinese	1
Total	13

(c) From Afro-Asian Languages

Arabic	2
Senegalese	1
Total	3

(d) From Indo-Aryan Languages

Sanskrit	3
Bengali	9
Assamese	1
Sindhi	2
Total	15

(e) From Dravidian Languages

Tamil	1
Telugu	1
Total	2

Preferences of translators are quite clear from the above statistics.

Major Translators

Among the major translators, one will have to include the following whose works we have already included in the lists appended: Surendra Jha "Suman" (translated 11 books), Upendranath Jha "Vyāsa" (5 books), Sunder Jha Shastri (3 books), Ramchandra Jha "Chandra" (3 books), Prabodh Narayan Singh (3 books), Ila Rani Singh (3 books), Dinanath Jha (2 books), Ishanath Jha (2 books), Tejanath Jha (2 books), Kulananda Misra (2 books), Sudhakar Jha Shastri (2 books). In the literary magazines, we find a large number of translations of Devendra Jhan, Ramlochan Thakur, Muralidhar Jha, Kulananda Misra, Kunal, and Uday Narayan Singh "Nachiketa".

Uday Narayan Singh 'Nachiketa'

You

Your words,
tired,
tattered,
unsure
enter into my heart

Your warm hands
hold me
as a heated pan
on which I don't know what
burns
bubbles
get cooked up

In this blazing fire
there is you
there's me
and are the branches of the wishing tree
swinging afar like one of grandma's tales

Today
in this hearth of mine
are baked
all the ten sides
mistaken allies—full of confusion
nine months of long wait for fruition
stories of
our pride
and conceiving
of five seasons
of the sixth sense
in a melody of ease
played on a rhythm bewildered

at the setting of the late sun
in this bare invision
there's you
there's me
and only the wishing tree visible
the rest is all empty
desolate
lonesome
trailing unto my heart.

An Old Love

A very old love of mine
appeared today and stood before me
asking for the price of each of my songs
which I had, long ago, without her asking
handed over to her upto the last line
gifted away to her name

From behind a few-year-old road
appears my old love
and engages me in a question-answer streak;
but when did I learn at all
how to ask queries or to find a quip
in the school of nature?

But she won't listen to me,
my old love—
ever ready
to punish me for each passing day

She knows now, my old love,
I have power no more in my arms
to sing what I could've said in words;
knows that my tale of love is now
contained between textbooks and pages of history

Having shrunk, my old love
is asking me the hardest of queries—

it tells me— Use all the old words in sentences
Warns—Your syntax is at fault;
Add it, repair, reprove my dear!
Says— Check if all what you say is true or false!
Asks me to explain, elaborate
on the point she is making!

But I too have become a lot clever,
eye-sight no more unclear as before;
steps do not trip any more
forcing my hand to look for her support;
eyes can now read
the pain of the metre octave
ears can measure now
the celibacy of a pure symphony
my blood has now known
the planned barbarity of algebra

A lot cleverer have I become;
my writ now runs large and far.
I speak with discretion now!
Even when I do, never in the past tense
My steps move up to the future of the doom-
as yet unknown unheard nor seen!
I think very little now;
even when I do
I think about facts, ficts, figures of speech!
My philosophy moves towards a feeling
neither stated nor translated as yet;

All other things
fade out
in a haze, every thing—
the river-bank
the hide-out across the cane-field
the hired labour in the wilderness
and the old love!

The Questions

Was this the night of doom immobile?
Was this the song so endless wild?
Could you read the lines of my poem agile?
Is this the day of the world's end
which prompt n' tickles me to God-send
the long-lost body or a boat divine?

What a poor temporary feeling is this?
Was this a sleep full of pain or a bliss?
Could this be the river of love no end?
Is this a mind restless pretend?
Were they the tears and false horrend—
the long-lost line of a poem benign?

Translated from Maithili by the Poet

□